गुसाईं-गुरुबानी

गुसाईं-गुरुबानी

(गुसाईं मत का गुरु-ग्रंथ)

प्राक्कथन

डा० गोकुलचन्द नारंग

एम० ए०, पी-एच० डी०, बार-एट-ला

भूतपूर्व मंत्री, पंजाब सरकार

भूमिका

डा० विजयेन्द्र स्नातक

एम० ए०, पी-एच० डी०,

रीडर, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सत्गुरु सिद्ध बाबा साईंदास सेवक संघ, दिल्ली

के निमित्त

नेशनल पब्लिशिंग हाउस, दिल्ली

द्वारा प्रकाशित

प्राक्कथन

बाबा साईदास के सेवक और प्रेमी इस पवित्र ग्रन्थ के प्रकाशन के लिए 'सतगुरु सिद्ध बाबा साईदास सेवक सघ' के अत्यन्त आभारी है। इस ग्रन्थ के विषय मे कुछ कहने से पहले बाबा साईदास के सम्बन्ध मे कुछ कहना अप्रासंगिक न होगा। वे संत थे और उनका जन्म गुजरावाला (अब पाकिस्तान में) के पास एक छोटे-से गाव में हुआ था। कुछ समय पश्चात् वे अपने प्रिय शिष्य बहो—चीमा कबीले के एक जाट—के साथ अन्यत्र चले गये। वहा उन्होने बहोकी गुसाईं नामक गांव की स्थापना की। वही उन्होंने तपस्या की और शीघ्र ही ईश्वर-भक्ति और आत्मज्ञान के लिए प्रसिद्ध हो गए। उनके उत्तराधिकारियो ने उनके पुनीत कार्य को उनके नाम मे एक गद्दी स्थापित करके चालू रखा। उनके उत्तराधिकारी लगभग ५०० वर्षो तक गद्दी को सफलतापूर्वक चलाते रहे। देश के बटवारे के समय पंजाब के अन्य हिन्दुओं की भाति उनके उत्तराधिकारियो को भी गाव छोडना पड़ा।

गुसाईं जी के उत्तराधिकारियो के कार्यकाल मे उस गाव की महत्ता और भी बढ गई, क्योकि वहा पानी का एक तालाब था जिसके बारे में यह समझा जाता था कि उसमे बीमारियो को ठीक करने की एक अद्भुत शक्ति है। सेवकों की सख्या बढ़ती गई और उनके सेवको मे से एमनाबाद (गुजरावाला के पास एक सुप्रसिद्ध नगर) का प्रमुख नन्दा-परिवार भी था। जब दीवान कृपाराम जम्मू और कश्मीर के प्रधानमंत्री थे, तब उन्होंने वहां एक बडा मंदिर और एक लम्बा-चौडा तालाब, जो पहले एक छोटे तालाब के रूप मे था, बनवाया। गुसाईं जी के सेवकों के लिए यह स्थान तीर्थ यात्रा-स्थल बन गया। 'यज्ञ' नाम से एक बड़ा मेला मई मास में यहां होता था। इस मेले के अवसर पर गुजरावाला जिले के सभी कोर्ट और स्कूल बन्द रहते थे और भारी सख्या मे हिन्दू और मुसलमान इस मेले मे भाग लेते थे। पूर्णमासी की रात को यहा संगीत का मोहक कार्यक्रम होता था इस कार्यक्रम में आसपास के सभी प्रसिद्ध सगीतज्ञ भाग लेते थे और कार्यक्रम रात भर चलता रहता था

बंटवारे के बाद भी साधारण रूप से गद्दी चलती रही और अब भी गद्दी पर एक महन्त बैठते है और सब के तत्वावधान मे प्रत्येक वर्ष अब भी एक प्रकार का मेला उत्तराधिकारी महन्त की अध्यक्षता मे भारत में होता है।

इस 'गुसाई गुरुबानी' ग्रन्थ मे बाबा साईदास तथा उनके वंशजो, अनुयायियो और कुछ शिष्यो की रचनाए संगृहीत है। ८०० पन्नों के इस महाग्रन्थ मे अनेक पुस्तके सम्मिलित कर ली गई है। पहली पुस्तक—रत्नज्ञान—सभवतः बाबा साईदास का अपना मुख-वाक् है। इसके बाद वार श्री भागवत,अमृतवाणी, दशावतार तथा विभिन्न पद, हरिश्चन्द की कहानी, बाबा साईदास की जीवनी, महादास की जीवन-गाथा, अमरदास और काशीदास—जो बाबा साईदास के अनुयायियो मे से थे—के वार वर्णित हैं। धन्ना भगत की कहानी का भी वर्णन है। इसमें गुरु नानक और बाबा साईदास की, (जो गुरु नानक के समकालीन थे—और जो नानकजी से कुछ महीने पूर्व या पश्चात् पैदा हुए थे) सभावित भेंट का भी वर्णन है। पुस्तक मे रामनाम के गुणगान पर ही जोर दिया गया है, ठीक वैसे ही जैसे कि सिक्खो के गुरु ग्रन्थ साहिब मे उपलब्ध होता है।

शहशाह जहांगीर जब शिकार के लिए हरनमुनारा गये थे उस समय महन्त काशीदास के साथ हुई उनकी मुलाकात का भी वर्णन पुस्तक मे किया गया है।

मुझे यह ग्रन्थ इसलिए भी प्रिय है कि बद्दोकी गुसाई ही मेरा जन्म-स्थान है और मुझे प्रसन्नता है कि यह ग्रन्थ सुन्दर रूप मे प्रकाशित हुआ है। मुझे विश्वास है बाबा साईदास के सेवक, प्रेमी और उत्तराधिकारी तथा साहित्य मे रुचि रखने वाले महानुभाव इसे काफी पसन्द करेंगे।

—गोकुलचन्द नारंग

भूमिका

मध्ययुगीन संत साधको के इतिवृत्त तथा साहित्य के सम्बन्ध में अद्यावधि जो शोध-कार्य हुआ है वह इतना अपूर्ण है कि उसके आधार पर न तो संत परम्परा का सम्यक् आकलन संभव है और न उनकी उपलब्धियों का ही हमे पूरा ज्ञान होता है। पन्द्रहवी-सोलहवी शती में उत्पन्न हुए पजाब तथा राजस्थान के सत साधको की जो विशाल सूची प्रकाश मे आ रही है वह इस तथ्य को पुष्ट करती है कि सगुण भक्ति के उन्मेष से पूर्व संत साधको की रहस्यमयी भावधारा का प्रवाह समस्त देश में व्याप्त हो चुका था। आचार्य क्षितिमोहन सेन, प० परशुराम चतुर्वेदी, पं० वियोगी हरि, डा० बडथ्वाल, डा० माधव आदि विद्वानो ने अपनी कृतियों में सत परम्परा का विभिन्न दृष्टि-बिन्दुओं से वर्णन किया है। किन्तु इन सत्प्रयत्नों के बाद भी संत साधको की सम्पूर्ण जानकारी अभी तक हम उपलब्ध नही कर सके हैं। पजाब के सत और भक्त कवियो की रचनाए अभी तक अज्ञात बनी हुई हैं क्योंकि गुरुमुखी लिपि मे होने के कारण उनका विधिवत् अध्ययन ही नही हुआ है। पटियाला में ही शताधिक ग्रन्थों की सूचना शोधकर्ताओं द्वारा प्राप्त हुई है। इन महत्त्वपूर्ण ग्रन्थो को प्रकाश मे लाने का कार्य शनै-शनै प्रारम्भ हुआ है। 'गुसाइं गुरुबानी' इसी परम्परा की दुर्लभ एव अत्यन्त महत्त्वपूर्ण कृति है।

बाबा साईंदास मध्ययुगीन सत साधको की परम्परा के उज्ज्वल रत्न है जिनके व्यक्तित्व एव कृतित्व के विषय मे हिन्दी-जगत् को कोई प्रामाणिक जानकारी नही है। ज्ञान और भक्ति की समन्वित भावधारा से जिज्ञासुओं को परम शान्ति का सन्देश देनेवाले बाबा साईंदास किसी पन्थ या मत के अनुयायी न होकर स्वय एक सन्त मत के प्रवर्त्तक थे जिसे 'गुसाईं पथ' या 'गुसाइं मत' के नाम से व्यवहृत किया जाता है।

बाबा साईंदास ने 'गुसाईं पन्थ' का प्रवर्तन क्यों और किन परिस्थितियो मे किया, यह प्रश्न कई सदर्भो मे विचारणीय है। किन्तु मैं इस प्रसंग को यहा विस्तार मे प्रस्तुत नही करना चाहता, केवल इतना ही सकेत करना चाहता हू कि गुरु नानकदेव के ... ीन होने से बाबा साईंदास ने तत्कालीन धार्मिक,

सामाजिक और राजनीतिक स्थितियो को उसी परिप्रेक्ष्य में ग्रहण किया था जिस परिप्रेक्ष्य मे गुरु नानक ने। गुरु नानक की उपासना-पद्धति मे एकेश्वरवाद के निर्गुण स्वरूप का आग्रह था जिसे ज्यो का त्यो उनके पुत्र श्रीचन्द ने भी स्वीकार नही किया। फलत. श्रीचन्द ने अपने पिता के पन्थ से कुछ हटकर स्वतन्त्र उदासी सम्प्रदाय का प्रवर्तन किया और अपनी धार्मिक भावनाओं की अभिव्यक्ति के लिए उपयुक्त अवकाश खोज निकाला। बाबा साईदास गुरु नानक की विचार-धारा से पूर्ण परिचित थे। दोनो सत एक ही जिले के निवासी एव समकालीन थे, समाज के उद्धार मे रुचि रखनेवाले उच्च कोटि के साधक थे। गुरु नानक ने जिस धरातल पर हिन्दू धर्म की धार्मिक मान्यताओ एव परम्पराओ को स्वीकार किया उसमें राम और कृष्ण जैसे अवतारी महापुरुषों के लिए वह स्थान नहीं था जो सगुणोपासक भक्तो की आस्था-श्रद्धापूर्ण दृष्टि मे चला आ रहा था। बाबा साईदास ने हिन्दू धर्म की आत्मा को अक्षुण्ण रखते हुए राम और कृष्ण के अवतारी रूप को भक्त की भावना मे अनुरूप बनाया। साथ ही, योग मार्ग की साधना को सहज-साधना का रूप देकर प्रस्तुत किया जो गुरु नानक की पद्धति से सर्वथा भिन्न स्तर पर है। साधना के क्षेत्र की प्रतिक्रिया के रूप मे बाबा साईदास ने अपने पन्थ मे ज्ञान, भक्ति और योग के समन्वय पर बल दिया तथा एक ऐसा सहज पन्थ खोज निकाला जो हिन्दू धर्म की परम्पराओ को निर्गीर्ण करता हुआ सत साधना का नवीन पथ प्रशस्त करने मे सक्षम हो सके। यह एक संकेतमात्र है जिसके द्वारा बाबा साईदास के पन्थ-प्रवर्तन के मूल कारण का उद्घाटन सभव है।

बाबा साईदास गुसाई सम्प्रदाय के आदि प्रवर्त्तक तथा मूल पुरुष माने जाते है। 'गुसाई गुरुबानी' के 'साईदास जीवनी' प्रकरण मे साईदास का जन्म सवत् १५२५ लिखा है। तिथि, मास आदि का पूरा विवरण इस प्रकरण मे मिलता है। यदि इसे प्रमाण माना जाय तो ईसा की पन्द्रहवी शती के उत्तरार्द्ध मे इनका जन्म मानना होगा। साईदास शैशव से ही विरक्त स्वभाव के थे किन्तु बचपन मे ही विवाह हो जाने से साधु बनकर घर-बार छोड नहीं सके। सद्गृहस्थ के रूप मे शान्त वृत्ति से जीवन-यापन करते हुए अपने विचारों का प्रचार करते रहे। अपने पुत्रो को भी इन्होने अपनी विचारधारा के अनुकूल बनाया।

बाबा साईदास वैष्णव परम्परा के भक्त है या निर्गुणधारा के समर्थक सत साधक, यह प्रश्न विचारणीय होने के साथ बड़े महत्त्व का है। इस प्रश्न का समाधान दो मार्गों से संभव है। 'गुसाईं गुरुबानी' के अध्ययन से उपलब्ध निष्कर्ष तथा सम्प्रदाय मे प्रवर्तित उपासना-पद्धति के अनुशीलन से प्राप्त तथ्य। इन दोनो स्रोतो के अवगाहन के बाद मैं इस को उस प्रकार का वैष्णव भक्ति

सम्प्रदाय नही मानता जैसा कि रामानन्द का सम्प्रदाय है। रामानन्द की भक्ति-पद्धति का अनेक संत सम्प्रदायों पर गहरा प्रभाव देखा जा सकता है किन्तु उन सबको वैष्णव सम्प्रदायो मे समाविष्ट नही किया जा सकता। यही स्थिति गुसाई मत की भी है। वस्तुत: यह पथ पूर्ण रूप से विकसित सम्प्रदाय नही है अतः वैष्णव साधना की मर्यादा भी इसमे नहीं है। राम और कृष्ण की कथा को 'गुसाई गुरुबानी' मे पूरे उल्लास के साथ इस मत के संतो ने गाया है किन्तु कथा के पल्लवन में न तो वैष्णव भावना है और न सिद्धान्तो मे अवतारी राम या कृष्ण की वैसी स्वीकृति है जैसी वैष्णव साहित्य मे मिलती है। राम और कृष्ण को उपास्यदेव मानते हुए भी उनके रूप, गुण, शील वर्णन मे निर्गुण भावना का विचित्र ढग से आरोप किया गया है। रामानन्द की परम्परा में अपने को मानते हुए और गुरुमत्र या दीक्षा मत्र से राम का स्तवन करते हुए भी ब्रह्म, जीव और जगत् के विषय मे इनकी विचारधारा ज्ञान मार्ग के मेल मे है। उपनिषद् और वेदान्त को स्वीकार करते हुए "एको एक सब मे बसे, अवरि न दूजा कोय। साईदास जो जाने दरि दूसरा, दरि दरि वाला होय।" आदि वाक्यो द्वारा अद्वैत भावना का ही समर्थन है। ब्रह्म वर्णन मे इन्होने अपने आध्यात्मिक तत्त्व को बड़े स्पष्ट शब्दो में व्यक्त किया है—

आदि निरंजन जानियो निर्भो तुम निरंकारि।
अगम अगोचर सुनि मै रचना राचनि हारि॥

सक्षेप मे, ब्रह्म, ओंकार, माया, जीव और जगत् के नानाविध वर्णनों को पढकर हम इसी निष्कर्ष पर पहुँचते है कि उपनिषद् और वेदान्त के प्रतिपाद्य को स्वीकार करते हुए गुसाइयों ने राम और कृष्ण के चरित को अपनी शैली मे ढाला है। राम की उपासना तो है किन्तु वह उपासना वैसी ही है जैसी निर्गुणधारा के अन्य मतों या पथो मे स्वीकृत है। इस पथ की विशेषता है कि इन्होंने कृष्ण भक्ति को भी अपनी वाणी मे स्थान दिया है। राम और कृष्ण को अवतारी सगुण ईश्वर के रूप मे गाकर भी निर्गुण रूप में ध्यान का विषय बनाना ही इस पंथ की विशिष्टता समझी जानी चाहिए।

निर्गुण और सगुण का जिस सामान्य धरातल पर मेल सभव है उसे देख पाना और प्रस्तुत करना कठिन काम है किन्तु मध्ययुगीन अनेक संत महानुभावों को यह दिव्यदृष्टि प्राप्त थी और उसी के द्वारा यह विलक्षण चमत्कार इन संतों ने कर दिखाया है।

'गुसाई गुरुबानी' मे साधना के जिन सोपानों का स्थान-स्थान पर उल्लेख आ है वे भी इस तथ्य के समर्थक है कि गुसाई गुरुओ के सामने समन्वय का आदर्श

था। गुरु नानक के सिख पथ ने तथा श्रीचन्द के उदासी मत ने जिन दो विचार-धाराओं को साधना के क्षेत्र मे उस समय प्रस्तुत किया था, इन गुसाईं गुरुओं ने उनके पार्थक्य को विस्मृत कर हिन्दू धर्म की परम्परागत मान्यताओं के भीतर ही अपने गुसाईं पथ की नीव रखी। योग के प्रपंच को भी इन महानुभावों ने त्याज्य नही बनाया, वरन् बड़े विस्तार के साथ अपनी वाणी में उसका वर्णन किया। सहज साधना के नाम से मध्ययुग मे जो उपासना पद्धति चल पड़ी थी और जिसका मूल नाथ सम्प्रदाय के भीतर था, इस पंथ में भी किसी न किसी रूप में स्थान पा गई है। जप, तप, नाम स्मरण आदि सामान्य साधन मार्गों का भी उल्लेख इस पथ मे मिलता है। आचार-विचार में पवित्रता के प्रति उसी प्रकार का आग्रह इस पंथ मे है जैसा कबीर आदि संत महात्माओं ने व्यक्त किया है।

'गुसाईं गुरुबानी' एक सकलित रचना है जिसमे व्यक्ति-भेद के साथ काल-भेद भी है अतः अभिव्यजना कला में भी एकरूपता होना संभव नही है। बाबा साईंदास की वाणी अन्य गुसाइयो से अधिक प्रौढ एव परिमार्जित है। उसमें विस्तार भी औरो से अधिक है। दशावतार वर्णन मे इनकी सरस काव्य शैली का रूप द्रष्टव्य है। पद शैली परम्परागत रागो पर आश्रित है, उसमे कोमल कान्त पदावली का वैभव स्थान-स्थान पर लक्षित होता है। यों सामान्यत. जैसा काव्य वैभव वैष्णव कवि सूर, तुलसी, मीरा आदि मे है वैसा इस वाणी मे नही है किन्तु निर्गुण धारा के अनेक मत-पथो के सतो की तुलना मे इस वाणी की काव्य-सुषमा अधिक आकर्षक है। सुदूर पजाब प्रान्त में ब्रजभाषा को मेरुदड बनाकर काव्य सर्जन करने वाले इस पथ के गुरुओं की वाणी का अभी तक मूल्यांकन नही हुआ है। मैं समझता हू कि काव्य-सौष्ठव तथा भाषा-वैभव की कसौटी पर भी इसका अध्ययन होना चाहिए।

'गुसाईं गुरुबानी' के अनुशीलन से मैं इस निष्कर्ष पर पहुंचा हूं कि बाबा साईंदास की रचनाओं में इसका प्राण है, शेष पाच अन्य महानुभावों की रचनाओं मे विभिन्न विषयो पर विचार व्यक्त हुए हैं। साईंदास जी विरक्त परम्परा के साधु नही थे। उनकी उपासना मे गृहस्थ भक्तो को भी पूरा अधिकार था। गुसाईं नरहरिदास जी बाबा साईंदास के आत्मज थे, अपने पिता के बाद गुसाईं गद्दी के स्वामी बने और उन्होने श्रीकृष्ण लीला वर्णन द्वारा अपनी भक्ति भावना का परिचय दिया। इनके पुत्र कांशीदास जी गुसाईं गद्दी के तीसरे महन्त हुए। इन्होंने योग विषयक पद रचना की है। गुरुबक्शदास, सवायाराम, और सांवलदास के सम्बन्ध मे वाणी ग्रथ के आधार पर कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध नही होती। इनके अतिरिक्त कुछ और सतों के नाम भी वाणी में मिलते हैं किन्तु न तो उनकी रचना

प्रभूत मात्रा में है और न उनकी गुणवत्ता ही आलोच्य बनने योग्य है।

'गुसाई गुरुबानी' के सम्बन्ध में आज से लगभग पांच वर्ष पूर्व मुझे सूचना मिली थी। भारत विभाजन के बाद इस मत के अनुयायी गुसाई वृन्द तथा उनके सेवक गुजरावाला छोडकर भारत चले आए और उनका पूज्य ग्रथ पाकिस्तान मे ही छूट गया। ग्रथ की प्रामाणिक हस्तलिखित प्रति का इस पथ के अनुयायियो मे उसी प्रकार पूज्यबुद्धि से पाठ होता चला आ रहा था जैसा सिख पथ के गुरुद्वारो मे 'गुरुग्रथ साहब' का होता है। अतः इस अमूल्य निधि के पाकिस्तान मे छूट जाने की वेदना सामान्य नही थी। फलतः एक भक्त ने प्राणो की बाजी लगा पाकिस्तान जाकर इस वाणी-ग्रथ को लाने का संकल्प किया और अपनी निष्ठा-शक्ति से वह इस ग्रथ को अक्षत रूप में लाने मे समर्थ हुआ। जिस समय यह ग्रथ मुझे दिखाया गया था, उस समय तक इसका महत्त्व केवल गुसाई मत के अनुयायियो तक ही सीमित था। मैंने ग्रन्थ को देखकर अवकाश के दिनो मे इसके अध्ययन का वचन दिया था किन्तु न तो मुझे अवकाश मिला और न ग्रंथ के स्वामी को इतना धैर्य रखना संभव हुआ कि अनिश्चित काल तक वे ग्रंथ मेरे पास छोड़ सके। फलतः अन्य व्यक्तियों के सहयोग से इसका लिप्यन्तरण, टंकन तथा बाद मे मुद्रण हुआ। मुझे हार्दिक संतोष है कि अब बड़े सुन्दर रूप में गुसाई श्री ओमप्रकाश जी के प्रयत्न से ग्रंथ का प्रकाशन हो रहा है। भारत-विख्यात विद्वान् डा० गोकुलचन्द नारग इस पथ के प्रवर्त्तक की जन्मभूमि के है। इस पथ की उन्हें अच्छी जानकारी है अत. उनके प्राक्कथन ने इस ग्रथ की उपयोगिता द्विगुणित की है, इसमे कोई सन्देह नहीं।

मैं आशा करता हूं कि 'गुसाई गुरुबानी' के प्रकाशन से संत-साहित्य की परम्परा मे एक नवीन कड़ी जुड़ेगी और संत साधना से अनुराग रखने वाले विद्वानो का ध्यान इस कृति की ओर अवश्य आकृष्ट होगा।

हिन्दी विभाग
दिल्ली विश्वविद्यालय
३० जुलाई, १९६४

—विजयेन्द्र स्नातक

विषय-सूची

गुरुबानी पढ़ने की विधि

इस ग्रन्थ का लिप्यन्तरण, टंकन अथवा मुद्रण करते समय हमने किसी प्रकार का परिवर्तन करना उचित नहीं समझा। हिन्दी के जिन मूर्धन्य विद्वानो से हम परामर्श प्राप्त कर सके, सब का यही मत था कि प्राचीन पाण्डुलिपि यथावत् रूप में ही प्रकाशित होनी चाहिए। अतः मुद्रित रूप में यह ग्रन्थ प्राचीन हस्तलिखित प्रति का अक्षरशः प्रत्यंकन ही है। प्रूफ पढ़ते समय कुछ स्थानो पर जो त्रुटियाँ रह गई हैं, उनका निवारण दूसरे संस्करण में सम्भव हो सकेगा।

ग्रन्थ का अध्ययन करते समय पाठक महानुभावों को जहाँ-जहाँ कोई त्रुटि प्रतीत हो, वे हमें सूचित करने की कृपा करें। हमारा यत्न होगा कि इस ग्रन्थ का दूसरा संस्करण सब प्रकार की त्रुटियो से मुक्त हो।

जिन सज्जनों को प्राचीन हस्तलिखित ग्रन्थ पढ़ने का अभ्यास नहीं है, उन्हे इस ग्रन्थ का प्रस्तुत रूप में अनुशीलन करते समय थोड़ी-सी असुविधा का अनुभव हो सकता है। उनकी सुविधा के लिए हम निम्नलिखित संकेत दे रहे हैं।

१. कई स्थानों पर ' ि' का अतिरिक्त प्रयोग हुआ है, जैसे :

आधुनिक व्यावहारिक रूप	ग्रन्थ में प्रयुक्त रूप
गम्भीर	गंभीरि
पूर्ण	पूरिण
प्रसाद	प्रसादि
प्यास	प्यासि
शरीर	सरीरि
मृ	मृ

२. उो—इस ग्रन्थ में जहाँ-जहाँ 'उो' का प्रयोग हुआ है, पाठकजन उसे 'ओ' के रूप में ग्रहण करें।

'कीउो', 'उठिउो', 'लीउो' आदि शब्दों को क्रमश: कीओ, उठिओ (उठ्यो), लीओ के रूप में पढ़ा जाए।

३. ष—'ष' का उच्चारण 'ख' किया जाए !

४. ई—'ई' का उच्चारण 'ई' के समान किया जाए

५. श्र—कई स्थानों पर 'श' के स्थान पर 'श्र' का प्रयोग हुआ है जैसे 'शुकदेव' के स्थान पर श्रुकदेव।

६. नि—कुछ स्थानों पर 'नहीं' के स्थान पर 'नि' का प्रयोग हुआ है। 'नि' नही का संक्षिप्त रूप है।

हस्तलिखित मूलग्रंथ साहेब के प्रथम पृष्ठ का चित्र

ऊँ स्वस्ति श्री गणेशाय नमः

॥ अथ रतन ज्ञानि लिष्यते ॥

दीनानाथ दयाल प्रभ दुष दूर कर्न विसवास।
औगिनि मेटे गुण कर्न गुरि पूर्न साईंदासि॥
बाबा रामानदि जिस सिमरे होति अनंदि।
जिह समरनि ते पाईए लक्ष्मी परिमानंदि॥
गुरि नरिहरि पूर्न सकल करिणा बुद्धि विवेक।
औरि नहीं कोई आसरा एक तुम्हारी टेक॥
गुरि कांशीदासि के दर्स कों सुरि नरि धरे ध्यान।
मनि की देत है वांछना पूर्न पुर्ष निधान॥
विहारीदास केविल गुरि भेटआ मिटि गए सकल विकार।
कर्मचदि गुर चर्न लगि भौजलि उतिरे पारि॥
कु॰—ग्यानि रतन जपि जौ पडै सुनते मुक्त सिधाह।
साईंदास गुरि चर्न लगि भ्रम भौ जलि तिस नाहि॥

अथ रतन ज्ञानि लिष्यते—रतन ज्ञानि बाबा साईंदास जी की रचना है इसलिए "अथ रतन ज्ञानि लिष्यते" यहा से बाबा साईंदास जी की वाणी समझी जाएगी किन्तु यहा "दीनानाथदयाल प्रभ दुष दूर कर्न विसवास" से लेकर "कर्मचदि गुरचर्न लगि भौजलि उतिरे पारि" तक बाबा साईंदास जी की वाणी नही है। वस्तुत. यह गुसाईयों की "अरदास" (प्रार्थना) है। इस मे—साईदास, उनके सुपुत्र रामानंद, नरहरि तथा परवर्ती गुरु काशीदास, विहारीदास और कर्मचद आदि को नमस्कार किया है। इसके अनन्तर ज्ञानरत्न का प्रारम्भ है।

सलोकु—यह श्लोक का अपभ्रंश है। यह हिन्दी का दोहा छद है। रचना के प्रारम्भ मे इसी श्लोक या दोहा का प्रयोग है। अनंतर २० अर्द्धालियों या ५ चौपाइयों के प्रयोग के बाद दोहा या श्लोक मिलता है। ज्ञानरत्न की रचना इसी रूप में प्राप्त है

आदि नरजनि जानियो निर्भौ तुम निरकारि
अगिम अगोचरि सुनिमैं रचना राचन हारि ॥

१

आदि निरजनि हय निरकारा। रहिता सुन्नमसाध निआरा ॥
वपि विस्थारि कीनो विस्थारा। उपिजे तीनि देव अधिकारा ॥
अलिष पुर्ष अकास बनायो। पौनि थह्मि मिल पौन उठाओ ॥
पौन मध्य जब तेज नवासा। ताते जलि धरि कीनी आगा ॥
जलि के ऊपरि धरनि बनाई। आगा मनिना नहीं समाई ॥
धर्मधुजा ते धौल विचारा। धर्नी राषे गगन हारा ॥
ताका बधन वासव कीना। पौनि थह्म दस नारि प्रवीना ॥
जोति प्रकास चंदि रवि तारे। रचना रावी राचनहारे ॥
जो जो जीवि जनिम जुगि करिआ। सोई सोई नाम ताहू फुनि धरिआ ॥
माया मोह पटल जवि कीआ। तापरि उरिझ रह्यो एह जीआ ॥

अलिप पुर्ष की धारना क्या कोई सके विख्यानि।
साईदास अछरि साधू हुकम प्रभ सो मति हिर्दे मान[2] ॥
रगि रगि बहु रगै मै सभ रंगि रह्यो संमाई।
जेता बूझे प्रभ साईदास तेता दीओ बताई[3] ॥

२

कौनि वेला कौन बीचारि। कृति थित जुगि रहा कौन बारि[4] ॥
नछत्रि लग्न जोगि बीचारि। जिह समै होइआ ओंकारि ॥

---

१. आद नरंजनि जानियो—इस दोहे में बाबा साईदास जी ने एक अगम अगोच[र]
तत्त्व से जिसे "आदि निरजन" कहा है, सृष्टि रचना हुई मानी है। यह सृ[ष्टि]
किस प्रकार बनी आगे की पंक्तियों में इसी का वर्णन है। यहां सृष्टि रच[ना]
सम्बन्धी सारा पौराणिक वर्णन सामने आ जाता है।

२. अलिख पुर्ष की धारना—यहां सृष्टि रचना का वर्णन समाप्त है।

३. रंगि रंगि बहुरंग मे—प्रभु की सर्वव्यापकता वर्णन है।

४. कौनि वेला कौन बीचारि—यहां ओंकार स्वरूप अव्यक्त परमात्मा के अजन[्मा]
होने का वर्णन है। यही बात गुरु नानक देव जी ने रौरास में कही है। तुल[ना]
परिशिष्ट में देखिए।

ओंकारि सभ अपर अपार। सभ रचना सोई राचनिहार॥
सुति शास्त्र सिमृति वर्न भेष। सभ औरे औरे पूछ देप॥
पूछया सुने मुनयां मन लेइ। ताकों सतिगुर परिचा देइ॥
परिचे की मनि को परिलीति। तवहूं टुटे भर्म की भीति॥
षगि नगि जगि मगि होइ रह्यो इह मनुआ मनि पोह।
साईदास गुरि चर्न लगि मलि तजि निर्मल होइ॥
सूषमि सुर्त विचार के आनदि मगिन भयनि।
कहु नरिहरि गुरि कृपा ते पसरी किर्ण अनति॥
अलप अगम्य अगाध प्रभि सुरि नरि जाकी सेव।
अनदि लै मस्तक धर्यो श्री चर्न कविल गुरि देवि[1]॥

३

गुरि चर्नी मति चित जनि राषी। तांते सुनि द्रोपत की साषी॥
गुरि चर्नी राता प्रहिलादि। पिता सग कीनो उपिवादि॥
नार्दमुनि का राष्यो मान। गुरि चर्नी पावन परिवान॥
गुरिगोविद से नाहीं भेद। पूछो शास्त्र सिमृत वेद॥
सभ सभ नीच ऊचा तेरा नाम। गुरि विनि कौनि बतावै थाउ॥
थाउ लहे दरि ठाक न पावे। मिल रहे विछर्या नहीं जावे॥
मिलना हो सतिगुरि की दात। साईदास फरि जनम न जाति॥
अस्थावर जगम सभै सर्व व्यापी ताह।
साईदास नाम अनेक अनंति गुनि जपि जपि संति तराह[2]॥

४

तेरे नाम सो तुही अनंता। अंतु ना पावै कविला कंता[3]॥
दीनानाथ नाथन कों दाता। श्रीमोहिन मनि हित करि जाता॥
अघनासन गोपाल गोसाई। सभ मैं पूर रह्यो सभ थाईं॥

---

[1] आनंद लै मस्तक धर्यो श्रीचर्न कविल गुरि देवि—यहां से "गुरु महिमा" वर्णन प्रारभ है।

[2] साईदास नाम अनेक अनति गुनि—यहां से एक ही प्रभु के अनेक नामों का वर्णन है।

[3] कविलाकंता—कौला या कविला शब्द कमला के अपभ्रंश है। कमलाकांत कविला कंता

विशु रूप धर्नी धान करुणासिध सर्ग कार तारन
तू करिता कर्नहारि अविनाशी । केविल ब्रह्म तू सर्वनिवाशी ।
निर्भौ निरंजन निरकार । नाम न अन्त अन्त नही पार ।
प्रभ क्रपाल पूर्न वीचारी । गर्व देन प्रभ गर्व प्रहारी ।
अलिष पुर्प पतता को पाविन । नारिसिघ परसराम अरि बावन ।
राम क्रष्ण गोविद बनिचारी । जुगि जीवनि गोवर्धन धारी ।
तार्न तर्न सरन जगि तार्न । भगित निधानि सो लाजि निवार्न ।
गोविद केशवि संतन सुपिदाई । जुगि जुगि जोति सुजादिवराई[1] ।
कर्म धर्म सभाह[2] रहता । साईदास प्रभ रूगि विअन्ता ।
तीनि ताप तन को भए आदि उपाध विआध ।
साईदास जिहते पाईए परमपद, सो उत्तम दर्सनिसाध[3] ॥

५

दर्सन ते उपिजे मनि बुद्धि । दर्सन ते तनि होवे सुद्धि ।
दर्सन ते मैल मन ते जाइ । दर्सन चोटा बहुड न पाइ ।
दर्सन सिध साध वैरागी । दर्सन ते दुरमत उठ भागी ।
दर्सन सिद्ध साध संतोष । दर्सन ते तनि रहे निर्दोष ।
दर्सन दूष भूष को नास । दर्सन मुक्त परायण वास ।
दर्सन होइ अतर की प्रीति । दर्सनि ते दुरमति मिल जीत ।
दर्सन ते विगसे घटि चन्दा । दर्सन ते मनि होइ अनंदा ।
दर्सन पर्सन प्रेम रस जि पूरण बडि भागि ।
साईदास ध्यास मिल रहिन दोष अनिरागि ॥
नरिहरि नाम न वीसरे सदा साध के संग ।
रसना रसीए राम रस और न लागे रंग ॥

---

[1] सुजादिवराई < सुयादवराय—श्रीकृष्ण भगवान् का नाम ।
[2] 'सभ मांह'—होना चाहिए (लिपिकार से 'म' छूट गया है)
[3] साईदास जिहते पाईए परमपद सो उत्तम दर्शन साध—यहां से साधु द की महिमा का वर्णन है ।

अलषकोटि ब्रह्मंडि मै सर्व निरंतर सोइ।
साईंदास जिह् किह् तिन जानआ तुझ बिनु औरि नि कोइ[1] ॥

६

तू कर्ता तुझ बिनु नहीं कोई। सर्व निरंतरि बसआ सोई ॥
आपे करि करि आप करावे। आपे मति आपे भरिमावे ॥
आपे गुनी ज्ञानी आप। आपे देषो थापो थाप ॥
आपे धर्म कर्म वीचारी। सभ मै अपुनी जोत पसारी[2] ॥
जोगि जुगत जागे जुगितांई। एको नामु महंसी नाई ॥
जिन जान्या तिना हरि लिव लाई। तेऊ बडे जिन्हा दरों वडिआई ॥
दरि की दात होवै दरिवान। कागत फार परे परिवान ॥
परै परिवांन तौ उपिजे साति। साईंदास फिर जनिम न जात ॥
जोग जुगत अर ज्ञान ताते सहिज समाधी होइ[3]।
साईंदास उलिट पलिट का षेलना बिर्ला चीन्हे कोइ ॥
वडि भागी हरि रस जानिआ छाडि क्रोध अर काम।
साईंदास अष्टधाति सभु यगित[4] है पारस हरि को नामु[5] ॥

७

जपि तपि संजम कर्म ध्यान। सभ ते ऊंचा तेरा नाम ॥
नाम जपत गज गनका तारचो। नाम जपति प्रह्लादि उधारचो ॥
सुति हित नाम अजामल लीना। नाम जपति ध्रू निहचल कीना ॥
नाम जपति नृप कन्या तरी। वकी दैत विध प्रगिट पुकरी ॥

---

१. सर्वत्र एक ही तत्त्व की प्रधानता है। आगे की पक्तियों मे इसी विषय क प्रतिपादन किया गया है।

२. **सभ मैं अपनी जोत पसारी**—जडचेतन मे इसी की ज्योति का प्रसार है गुरु नानकदेव से तुलनीय —**जाति महि जोत जोतमहि जात।**

३ जोग जुगत अर ज्ञानते सहज समाधीं होई। बाबा साईंदास सहज समा के लिए दो बातों को प्रधानता देते हैं—योग युक्ति और ज्ञान।

४. यगित < जगत्।

५. यह ससार अष्टधातु के समान है और हरि का नाम पारस है जिससे अष्टधातुएं भी कचन बन जाती है। यहां से नाम की महिमा का वर्ण है

गोतम त्रीअा चर्न लगि तरी । हरि हरि करित पार बहु परी ।
जनिक सुता हरि हरि धरी । लंका सहत बभीछनि मदोदरी ।
हरिणाषस रावरा अरि सिसपाला । तीनि जनिम प्रभ भए क्रपाला ।
बृजिवासी हरि की गति जानी । उनि की गति हरि हिरदे मानी ।
को गुनि सुने श्रवन धरि प्रीत । को कीर्तन करे राग मिल गीति ।
को ले माला सिमरन करे । को पादागविनी तीर्थ फरे ।
को अरिचा पूजा रो चितु लावै । इकि कर दडोति परम गति पावे ।
इक घटि दर्सन के होवै दास । इकि होइ सहाई पूर्न आस ।
इकि आतम अर्पि मिले भगिवान । नविगुन भगति[1] सो गुणानिधान ।
जो जो इनि भगिती चितु लावै । मुनित वकिल वैकुंठ सिधावै ।
नाम जपै मंनन की सापी । नाम जपै द्रोपत पत राषी ।
नाम जपे सभ सुषको दाता । नाम जपै पाडनि को भ्राता ।
नाम जपे सोई हरि को दास । ज्ञानि रतन चीन्हे साईदास ।

अविगत गति मै सभ बसे जाका नामु बिअति ।
जो कछु कीया सो तुम कीआ मैं कित विध पावो अतु[2] ।।

८

अतु नही जीई अतु नही जत्री । अंतु नही पोण पाणी नछत्री ।
अतु नहीं धर्नी अतु नही गोणी[3] । अतु नहीं निसी अतु नही रैणी ।।
अतु नहीं मुरिती अंतु नहीं ध्यानी । अंतु नहीं वेदी अतु नही ग्यानी ।।
अतु नही रगी अतु नही रूपी । अंतु नहीं तडाग अतु नहीं कूपी ।।
अबृति महात्म गति क्या कहीए । निज पद साध सग ते लहिए ।।
साईदास अनदि प्रभ मूल । सुन्न सविद राच्यो स्थूल ।।

एको एक अनेक मै घटि घटि कीयो निवास ।
पूर्ण पूरे सभन को प्रणवति साईदास ।।

---

[1] नविगुन भगिती—यहां नवविधा भक्ति का उल्लेख है । साईदास ईश्व
प्राप्ति मे इसे भी साधन मानते हैं ।

[2] मैं कितविध पावो अंतु—यहा प्रभु को बेअन्त (अनन्त) माना है, उसी अन
की महिमा गाई है ।

[3] गौणी > गगनी

अतु न पावे जगितगुर हरि जी अगम अगाहि।
हरिद्वारे केती षडी करिती सिफत सलाह[1]॥

६

केते वेद ब्रह्म मुष गांवे। हरि जी तेरा अतु न पावे॥
केते शकरि धरे धआन। केते विष्ण[2] चढति निशान॥
केते इद्रासन सुरि इंद्र। केते वासक सेस फुनेन्द्र॥
केते जोगी धियान लगावे। केते सुरि किनरि गुनि गांवे॥
केते असरि रहे हरिद्वारि। अतु न पावे अलिष अपारि॥
केते रंगरूप बहु भेष। केते दरि दरि वानी सेष॥
केते धर्म कर्म बिचारी। कागिज मसि केते लेपारी॥
साति सिध करियो मनि बाणी। कागति धर्न गगन का वाणी॥
भारि अठारा लिप्यन लाए। एह थौड़े बहु गुनि अधिकारे[3]॥
जो लिषिए सो हरि का रगु। दर्सन होइ साध के संग॥
सभ अतिर प्रभ तेरी वासु। ज्ञानि रतन चीन्हे साईंदास॥
गातनि गरियों गर्ब मैं ना हरि भजिनि पिआस।
जनिनी गर्भ किस राषयों पोटि बांध दस मास[4]॥

---

१ यहा मूल ग्रंथ में शब्द 'दरिद्वारे' है पर उपयुक्त 'हरिद्वारे' ही लगा। हरि के द्वार पर कई उसकी अगाध महिमा को गा रहे हैं। पर कोई भी उसका अत नही पा सका। यहा 'सिफत सलाह'—ये शब्द फारसी के है। प्रशंसा और गुणवर्णन करना इनका अर्थ है।

२ 'विष्ण' यह शब्द विष्णु है, इसे प्राचीनकाल मे 'को इस रूप में लिखा जाता रहा है।

३ सात सिंधु ही स्याही बनाऊं धरती तथा आकाश को कागज और सभी अठारह भारयुक्त वृक्षराशि को लेखनी बनाऊ तो भी प्रभु गुण लिखे नही जा सकते। तुलनीय—

कबीर सात समुंदहि मसु करउ कलम करउ बनराइ।
बसुधा कागदु जउ करउ हरिजसु लिखनु न जाइ॥
संतकबीर सलोकु—८१ (डॉ० रामकुमार वर्मा)

४. यहा से प्रभु के गुणों का वर्णन है तथा प्रभु को भूलकर संसार मे लगे जीवों को चेतावनी दी है

१०

मैं औगिनहारि कोई गुनि नाही । हरि हिरदे ते किउ बिसरांही ।।
तांका नामु नही किउ भाख्यो । अगिन कुड ते जिन प्रभ राख्यो ।।
जिउ तबोली राषे पान । इउ तू राषे गुणनिधान ।।
तेरा कौन सहाई बाला । जिन गर्भ बीच करि प्रतिपाला ।।
नैन नासका श्रविण बणायों । मुपि बोलति बह लाड लडायो ।।
करि अरि चर्न गही पग धारे । नषि अषिरेष सो रोम सवारे ।।
जीविन नाम मर्न के ताईं । गर्भ अतर जपे गुसाईं ।।
गर्भते निकस आयों ससार । हरि गुनि बैठा मूढ बिसार ।।
माया मुष लागी जबि मीठी । नेत्री सुर्त पमार्न डीठी ।।
रच रहआ जबि दूध के स्वादि । बाला जनिम गवायों वादि ।।
साईदास नाम हरि चेति । भी मनि छुटे नाम के हेति ।।

रे बाल काल सरि सांधयों मिर्ग भयों इह जीय ।
अविपल तो विसवास क्या सो भोगो जो कीय ।।

११

माता पिता भाई संगि षेला । धर्म न सुर्त भयो जगि मेला ।।
दारा सुतु सो मोह बढायो । धनि अरि धाम देष बहुरायो ।।
मनि अभमानि सु लोए जाता । त्रैढी चाल अध मदि माता ।।
नहीं सूझति कोई मीति न भाई । हौमै धनु मदि वडी वडिआई ।।
राजछत्र चविर सिरि झूला । मनि अभिमान देप करि भूला ।।
रे सेर चूंनि विन सकल विरान । इह तुम जान लेह सुनि काना ।।
सेति मिले वग उडिरे कागा । जोविन देप देह ते भागा ।।
पिंडरि केस भए अविचारी । जूया षेलति बाजी हारी ।।

कबिहूं चेति अचेत मनि जूये जनिम नि पोइ ।
पछतावा पाछे रह्यो रास वोड किति रोइ ।।
जिउ जानो तिव ही करों जति कति समरन सार ।
साईदासि नाम हीनि गुनि वाहरा ध्रिग जीवनि ससारि ।।
अनाथ जी सभ तुम कीए तुम कित विध हये अनाथ ।
वर्न नि साकों मात्रिकी तेरी कथा अगाधि ।।

आपि आपि ते साजि के न्याजि करी बहु भांति।
निआज विराज पछान के सभ एक पुर्ष की दाति[1]॥

१२

पूर्न पूरे सभ विचारी। कोऊ दाता कोऊ दीन भिखारी॥
कोऊ भूपत को ठाढे द्वारि। कोऊ छत्रपति कोऊ ऊपर ढारि॥
कोऊ अस्व गज रथ के ऊपरि चड़िते। कोऊ उनि के आगे पागी भरिते॥
कोऊ पहिरे कोऊ उतारे। इक पाणी सेती चर्न पखारे॥
इक पखे सेती पौणु झुलावे। इकि टुकड़े मगि मंगि भोजन पावें॥
इकि दाते देनहारि प्रभ कीने। इक आतम परिमातम चीन्हे॥
इक जोगी इक जगम ध्यानी। इकि मुनि सिद्ध साध इक ग्यानी॥
इक जटि मुडि जती संन्यासी। इक तीर्थ भ्रमत फरित बनिवासी॥
इक मौनी नगिन फरे दगबिर। इकि भगवे करि करि पहिरे अबिरि॥
केऊ ब्रह्मचर्य केऊ ब्रह्मचारी। कोऊ निहस्वादी कोऊ पौन अहारी॥
कोऊ तपि ध्यानि पटि शास्त्र वकिते। कोऊ पटि कर्म जुगित सो रहते॥
इकि धोती सजम रहति सुचील। इकि होति असोच सदा जु कुचील॥
सुच असुच तुमते नही दूर। सभ मह तुही रहया भरि पूर॥
सर्व अंगि प्रभ कीयो निवास। इहि विध जाचे साईंदासि॥
औगिन राचे गुनि तजे या मनि छठे गवारि।
आइओ एक छिन पलक मै काल लेन करि वारि॥

१३

तेरा कीआ सभ दिआल तूं किसि ना कीआ।
सभ से माह वरतिआ जलि थलि जो जीआ॥
जेले जलि थलि जीव्र समाने। जेता जां को तेता आने॥
जाको बाध घाट नही देति। पूर्न पूर पूर सभ लेन॥
सभ ही अऊरे तुम ही पूरा। बाज बाजि के फाटे तूरा॥
बाजे फूटे रे भैआ रहे बजाविन हारि।
बहुडि वजावे थिरु रहै साईंदास एक विना सभ छारि॥

---

१. प्रभु की कृपा के कारण अनेक प्रकार की रचना हुई है। उसी एक पुरुष सबको देन है। सभी मे वही एक पूर्ण है। रूप-रूप अलग-अलग है। कोई हीन नहीं और कोई भी अपूण नहीं पूर्न पूरे सभ विचारी

साहिबु एक अनेक गुनि गिनिति न आवे मोह।
कोटि रसना सो जपु करो अतु न पावे तोहि॥

१४

गुनि अनेक तेरे रूप अनंता। नामि बिस्राति मो कैसे अना॥
अगम गम्य विर्ले को आवे। जांको सनि गुरि बूझ बुझावे[1]॥
बूझा पडे परिम सुष होय। तुरीआ ततिको बूझे कोय[2]॥
मनि विसवास आतम रस ज्ञाना। मनूआ उलिटया मनि माहि समांना॥
मन अरि ब्रह्म एक जवि भैया[3]। प्रगिटी जोत तिमरि नस गिया॥
पिड पड ब्रह्माण्ड सु लीना। सुन्न सविद अपिती जपतीना॥
आतम भेद परिचा भेया। शिवि नगरी मे बास लिया॥
तत्त सविद अनेक अनहद बानी। सुनि-सुनि सविद सो मुर्त पछानी॥
नाम निरजणि होति प्रकाश। इहि विधि जाचे साईदास॥
आदि अन्त की धारना करिता बुद्धि विवेक।
ग्यानि ध्यानि सग सरि रहे पसरी किर्न अनेक॥
रजि तम सातक तीन गुनि[4] चौथे पदि अलसानि।
लिव लागी धुनि जरा ते साईदास तहा समाने प्रानि॥

१५

त्रय गुनि थकत पदि चौथे अलिसाना। तुरीआ तत मैं जाइ समाना।
निहि कचिन जलि दुविकी पाई। भ्रम वादिर तहा गियो वलाई॥

---

[1] अगम गम्य विर्लेको आवे—वह परमात्मा अगम्य है किसी विरले को ही गम्य है अर्थात् उसका ज्ञान होता है किसे—'जांको सतिगुरु बूझ बुझावे' यहा 'गुरु' के महत्त्व का स्पष्ट उल्लेख है।

[2] तुरीआ तत्त—तुरीय तत्त्व चतुर्थ तत्त्व ब्रह्म है। शेष तीन हैं——जागृ स्वप्न सुषुप्ति।

जीव और ब्रह्म के ऐक्यभाव का यहां वर्णन है। तादात्म्य होते ही एक ज्यो (ज्ञान की ज्योति) प्रगट हुई जिससे अंधकार (अज्ञान) नष्ट हो गया।

[4] चौथे पद ब्रह्मपदमे 'सायुज्य' मुक्ति होने पर रज तम सात्विक तीनो गुणो रहित होना पडता है। कारण निर्गुण (गुणों से रहित) ब्रह्म में मिलने के लि जीव को भी निर्गुण (इन तीनो गुणों से रहित) होना पडता है।

अगिटि चिह्न दिपलाविन लागा। राग द्वेष परियों अनिरागा।
भौना टा अनि भैं[1] मिले विन अविनि सुन ध्यान।
साईदास नैन बिना जो देपना गुप्तन्तिहनि परिवान।।
बिनु देहा ध्याविन रहे बिन धुनि धरे ध्यान।
साईदास नवि जानीए टोटि बिना निशान।।
विमल सरोवरि मनि वसे अगिभे अगिम अपारि।
साईदास मनिगुरि ही दे जानीए नानिगदि को विवहारि।।

१६

अगम गम्य की कहज सुनावे। समझ पड कछु कहिन नि आवै।।
कहिन सुनिन ते भया निआरा। सहिज सभाव सदा जु सुमारा।।
अलिमस्ती लिव लागी जाको। जम जगात करे क्या ताको।।
बधन छूटे मुक्त पलौना। चदि सूरि मिल पौन बिलौना।।
जांका सीस सोई हो रह्या। साईदास कछु जाय नि कह्या।।
सभ का दावा धरत है साहिब अलष अभेवि।
साईदास जिनि प्रेम अपना जानआ सोई साध गुरुदेवि।।

१७

सभ को सेवक साध कहावे। सो सेविक जो साहिबि भावे।।
साहिवि जागे सेवक सोवे। सापनि कहा जु नीरि बिलोवे।।
साई गुर गविंद जो लागी। तत्त विचार भयो वैरागी।।
नवि जान्या जवि चेतन भया। प्रगिटी जोति तिमर नस गिया।।
अनिहदि मिल आनन्द हुआ। साईदास तवि जीवित मूआ[2]।।

---

[1]. भौना टा अनि भैं मिले—यहां भौन = भवन टा = स्थान अर्थात् घट (शरीर) मे ही ब्रह्म की प्राप्ति मानी है। उसमे दिव्य संगीत सुनाई देता है। वहां विदेह की स्थिति है। वहा इन इन्द्रियों की आवश्यकता नहीं है। इन इन्द्रियों से परमात्मा का दर्शन नहीं होता। इसीलिए भगवान् श्रीकृष्ण ने भी अर्जुन को विराट् रूप दिखाने से पूर्व दिव्य दृष्टि प्रदान की—

"दिव्यं ददामि ते चक्षुः पश्य मे योगमैश्वरम् ॥"—गीता ११-८

[2]. साईदास जीवित मूआ—साधक का सर्वोत्तम लक्षण है कि वह जीते हुए भी मृत है। जो संसार से लिप्त है वह जीवित है जो अलिप्त है वह मृत के समान है

सलोकु—जागृति सुफल सुपोपती। मनिमै मेटो तीनि ॥
तुरिया तति बिलम न करौं सारि सबिद लहो चिह्न ॥
जिहि ते पाइ परिमपदि सो गुरि दीग्रो बताइ।
धरि निशान जबि निकसते पद नापै दस माहि ॥
को रसीग्रा इह रमि मिले बिछुड्या बहु न जाइ।
सतिगुर ऐसा चाहिए जो दुभदा देत मिटाइ[1] ॥

१८

जोगी प्रान पुर्ष जब भया[2]। गुटिका पौन गंग ते जिग्रा ॥
निज भविनन में ग्रासन कीना। संध्या कूपी बूज मेपल दीना ॥
निहिकेवल जपि बहु ग्राधार्या। जुगिल उठानी सील पिग्रार्या ॥
सचमुद्रा करि मन पहिराई। त्रिगुटी सगि डिबी दिपलाई ॥
द्वादिसकपाली दसवे द्वारि। पीवै पौनि ग्रंवृत की झारि ॥
ग्रनहदि सबिदि किंडरी बाजे। सिंडी सुति सदा धुनि गाजे ॥
मनि ग्रकत्र भयो जु बिचारा। निर्भौ नगिरी का इह बिवहारा ॥
प्राप्त सतोष सुफल फल पाया। साईंदास इसिबिधि जोगी जोगु कमाग्रा।

सलोकु—वसुधा पिंजरि नाम बीज रे मनि बोईदग्रा।
कीर्तश्रविनी जिह्वा नाम कों शामु नेत्री देषलग्रा ॥
करि चरिदाने गबिन को सील सतोष सरीरि।
साईंदास मुनि जन जगति के ऊपरे पदिम जिवे ही नीरि ॥[3]

१९

ज्ञानी गुनी जोगी वैरागी। जुगि-जुगि जिनको ताडी लागि ॥
जिनकों लागा हरि का रंगि। ते भागे साधू का संगि ॥
साध सगि मिल प्रगिटी लोइ[4]। पारिस भेटिग्रा कंचन होइ ॥
कंचनि होइ सकल भ्रम भागे। ग्रषै मिलै फिर षेई[5] न लागै ॥

---

1. गुरु का लक्षण—द्विविधा (दुभदा) का मिटानेवाला हो।
2. योगी जब पुराण पुरुष बन जाता है अर्थात् साधक जब ब्रह्ममय हो जाता है उस दशा का रूपक द्वारा वर्णन है।
3. अलिप्त दशा—'पद्मपत्रमिवाम्भसा'—गीता ५-१०
4. लोई=ज्योति (उजाला) लौ।
5. षेई=धूल (मायाजाल)

सचु पाई ते सूचा हूआ। हिर्दै अविरि न जाने दूआ॥
एक रगि एको घरि वास। ज्ञानी रतनि चीह्ने साईदास॥
लोकु—कजुलु काला रे मना जगु कजिल थी न किरठि।
मै भी अंदिर कज्जले इकि होर भी पौदे डिठी॥
इक पै इक पेइ निकसे तेरे नाम लगि-लगि तजि-तजि भूपत राजि
अवि कछु करिए साईदास पलिके विनसे काज॥
पलिके अंदिर पलिक है जो इक आई गढ।
जनिम पदार्थ पोइयो पढ़ि पढ़िते जगि अध॥
पढ़िने नू मतु दोस दे वेदि वकावित सचु[1]।
साईदास पल्हे पिआ अविवेकीया कचन थीआ कचु॥

२०

मनि करि नाथ पच करि चेला[2]। सहिज मदान सदा वरि घेला॥
एक ध्यानि त्रिगुग अतीति। ताका नामु कहो रणजीत।
मनि रणजीते आश्रम करे। हौमा छाडि सु जीवत मरे।
जीवित मरे[3] मिले वड्यानी। साईदास सोई ब्रह्मज्ञानी।
लोकु—जोगजुगति अरि ज्ञानि गुन सहज समाधी होय।
साईदास उलिटि पलटि का खेलणा विर्ला चीन्हे कोई॥

२१

दयापत्र दंडा वीचार। मुद्रा मौनी पौन अहार।
पटिरस स्वादि ज्ञान घरि बसे। सभ मनि मैला दुर्मन नसे।
भाउ वभूति अंगि जब्रि लागीं। ताते कहीए मनि वैरागी
नादि विद राखै इकि ठौग। मनिते मार्न काले जौरा
चचल मनि का मारे मानि[4]। कहु साईदास जोगी परिवानु

---

१. शास्त्र झूठे नहीं—गुरुनानक कबीर आदि के भी यही विचार।
२. मन को नाथ (गुरु) बनाओ पचेन्द्रियो को उसका शिष्य (अधीन करो)
३. जीवित मरना ही—ब्रह्मज्ञानी का लक्षण।
४. चचल मन को नियंत्रित करना—'चंचलं हि मन : कृष्ण' गीता ६-३४। साधना मे चचल मन को नियत्रित करना आवश्यक है।

श्लोकु—साधू सहिज समाधि मै शिवि मिल शक्त हरति
साईदास मध्यम थीवे आपथी सभ ते ऊंचा दिसंति ।।

२२

जोगि जुगति मेल गुरि ते पाई[1] । मिटि गियों भर्म दूसरा भाई ।
रोकआ मूल बिछुं का पेटु । दो दल ऊपरि रान्ने मेल ।
नाडी तत्त मूल जवि जान्या । चतुर्दल छीन पटिदलि ठहिरान्या ।
अष्ट कविल दल पौना जाई । सूषम कुंडिली रह्यो समाई ।
रोक्या सूर सोम गृह आइआ । साईदास पदि गुरने पाआ ।
लोकु—सभे नाती कुडीआ तेरी वाह अनाति ।
तू दरि इको जेह्वा पुछे नाही जानि ।।
जाती को जरवधि परी किस पग्र करीं पुकार ।
नाम उधारे प्रभ पापा के केइ भारि ।।

२३

भगिवन्त पष्प की चाल अपर्सी । तवि अपर्स[1] होवे समदर्सी ।
लोभ मोह की तोडे फासी । ताकी थ्रिष्ट सकल होय दासी ।
चर्न दिष्ट ते राखे नयना । झूठे कविहूं नि बोले वैना ।
आतम ते परिमातम जाने । हरि का मार्ग तांवी पछाने ।
सील सजम जुगत सो रहे । इन्द्री पच्च आतमा गहे ।
साईंदास अपर्स कहावन । जो पापा के निकटि नि आवन ।

---

[1] योग युक्ति और ज्ञान—ये दो सहज समाधि के साधन है। यहां योगयुक्ति का वर्णन है।

[1] अपर्स—स्थित प्रज्ञ का लक्षण। वह योग युक्तियों के बिना भी मुक्त हो सकता है। समदर्सी बन सकता है। उसी का वर्णन यहा से प्रारम्भ है—
(क) लोभ मोह से रहित होना।
(ख) नीची नजर (चरणो पर दृष्टि)
"दृष्टिपूतं न्यसेत् पादम्," मनुस्मृति।
(ग) सत्यभाषण।
(घ) शील, सयम तथा युक्ति से रहना।
(ङ) पचेन्द्रिया तथा मन को वश करें।

सलोकु—जलि थलि मै जो जीवि है सभं तिहारी आस[1]।
भाणे अंतरि पाईए दुष सुष भोगि विलास ॥

२४

भाणे चले पौण अरि पाणी। भाणे बोले अनिहदि बाणी ॥
भाणे मूरष भाणे सुरता। भाणे नरिकी भाणे मुक्ता ॥
भाणे राज भाणे मुहिथाज। भाणे सर्व सवारे काज ॥
भाणे चले अचल होय भाणे। भाणे कर्म अकर्म कमाणे ॥
जनिम पाइ ते कहा कमाणा। जो कछु होय सो तेरा भाणा ॥
साईदास प्रभ जपिए ईस। जो कछु करे सोई जगिदीसि ॥

सलोकु—रचना राची अगम प्रभ धौल धर्न अकास।
जागृति सोवित दुष सुषी भाणे अतिर सास ॥

२५

भाणे भौन रषे ब्रहिमंडि। भाणे सप्त दीप नौषडि ॥
भाणे सलिता सिंध सवारे। भाणे थलि डुंगर[2] वीचारे ॥
भाणे धौल धरे सिर भार। तिस ते परे तुही निरकार ॥
भाणे भानि चले करि जोत। भाणे अतिर ससकी योति ॥
भाणे नक्षत्रन की माल। तिस ते परे तेरी टगिसाल ॥
तेरा कौनु शरीकु समरथ है कौन। तू मेटे प्रभ आवा गौन ॥
साईदास प्रभ जपीए ईस। जो कछु करे सोई जगिदीस ॥

राम नाम हरि सिमरीए मुषि से बारबार[3]।
साईंदास गुर क्रपा ते मनि के मिटे विकारि ॥
सप्तदीप नौषडि मै परिदछनि जो देइ।
साईदास समसरि नाही हरिभजिन जो एक वारि कहि लेय ॥

---

१. मुक्ति मिलना, नरको मे जाना सभी कुछ परमात्मा की इच्छा (कृपा) 'भाणा' पर निर्भर है। इसीका वर्णन यहा से प्रारम्भ है।

२. डोगर<डुगर<दुर्गम स्थान (पर्वतीय प्रदेश)

३. रामनाम का स्मरण और गुरुकृपा दो ही साधन 'मुक्ति के है'। यहां से अब केवल नाम की महिमा का प्रारम्भ है।

२६

जो प्रथिवी सकल प्रदछनि देय। मकर प्राग कलिवत्रि सिर लेय।
जीवित वहन देत जो प्राना। उर्द्धपाउ सो धरै धिआना।
कोटि जनिम जुक्त सो रहे। इद्री पंच आतमा गहे।
एक पलिक हरि सिमरनि कीजै। ता सम सरि कछु अविर न दीजै।
कोटि अस्वुमेध यग्य जो कीजै। तुल्हापुर्ष दान भरि दीजै।
सिह्जा भूम दान जो करे। लै दुविकी मनि काम न मरे।
निहि स्वादी नही पावे स्वादि। तजिए पनि सभ वादिविवाद।
बोलनि छाडि मौन धरि जांह। भी हरि सिमरणि समसर नाह।
कुभ करे शिव द्वादश वारा। प्रान देत जहां हैहि वंधारि
जोगि जुगित सो राषे ध्यान। पाच भूत का मारे मान।
रेचक पूरक कुभक साधे। वाउ पच अग्नि तटि बाधे।
उलिटि पौन पटि चक्र को भेदी। मगिन समाध सो भेदि विभेदी।
नौ दरि रोंक दसवे घरि जाह। भी हरि सिमरनि सम सर नाह।
बांधि जटा वभूति चडावै। गंग जमनि विच सुरसुरी नावै।
अविरि छाडि दिगविर होवे। निद्रा जोगि ध्यानि मै सोवे।
पीवे पवन सहज घर पानी। मडल गगन चडा वैवांनी[1]।
तालाकुजी की गति जाने। अंतिर ध्यान लाग मनि माने।
मूड मुडाय होत वैरागी। निंद्या चिंद्या सकली त्यागी।
तीरथ कोट सकल भरिमांह[2]। भी हरि सिमरनि समसर नाह।
साधे पचअग्नि त्रैकाल। जलि तपि सीत करे परिजाल।
शिषर बाध कुभनि की धारा। दयाहीनि मनि अभे विकारा।
करि पषडि चडावै पेह। बिन विवेक कित दडे देह।
मनि वच कर्म साच धरि रहे। जैसा हिर्दे तैसा कहे।
बधनि मुक्त हो जायगो प्रानी। मिटे वियोगि सहजि लिव ठानी।
मिल सतिगुरि ऐसी मति पावै। तौ साईंदास फिर जनिम न आवे।

---

1. वैवांनी < विमानी = जहाज।
2. भरिमाह = भ्रमण किये।

अषे निहारे नेत्र दो रसना पीविअ पीव।
साईदास अकास प्याले[1] क्या भ्रमे ते अतिर नरि षीव॥

२७

सो ज्ञानी सो पुर्षु कहावे। हौमै जल विच धर्न न पावे॥
त्रिगुण अतीत रहे लिवि लाइ। आतम भेटे तौ भ्रम जाइ॥
सभ आतम मैं एको देखा। लषी नि जाइ अलिष तेरी सेवा॥
सो सेवक साचा परिवान। जिस के रिदे वसे भगिवानि॥
भय ते भक्त भर्म को नास। इहि विध जाचे साईदास॥
नाविन मैल सो उतरे मलन[2] न उजिल होय।
साईदास यहि प्रर्वत ससार मनि विवेक मल धोय॥

२८

नाविण[3] सील सुजती को ससारी को दान।
छत्री नाविण वचनि को, संतोष विप्र को जान॥
राजा नाविण नीति को, स्त्री को नाविण लाजि।
भय करि नाविण मुक्त को अधिष्टा परि काज॥
जोगी नाविण जुगत को सन्यासी निरवध।
जुगति न जाणे जोग की किति विध पावे अंधि॥
सुर्त विवेकी बोलना सजम चेता ध्यान।
साईंदास नावे ता नामु सभाल लय इति विध करो स्नान॥
सलोकु—हौमै चिता जगत को मोह माया जजाल।
साईदास साति सहज घरि पीविना अंमृति नाम निहार॥

२९

नावे सचि ज्ञानी सूरा, गुरि मति मिले ते नाविण पूरा।
सति सजम अरि सील विचारे, रिदे ध्याय दुष्टा को मारे॥

---

१. प्याले < पाताल।
२. मलन < मलिन = मैला।
३. नाविण < स्नान (नौणा पजाबी शब्द) यहा वाह्यस्नान को शारीरिक पवित्रता का द्योतक माना है। मानसिक पवित्रता के के लिए प्रत्येक व्यक्ति का अपने कम क्षेत्र मे अलग-अलग रूप है। यतिकास्नान-शील है। ससारीका दान है। इसी प्रकार आगे वर्णन है

साध संगि सो धरे धियान, सांति ले सहज सों मनि मान।
अछरि नजिरी गुर बचिन मनि बवेक गनु पाय।
नही बधनि ताकों साईदास जीवन मुक्त सिधाय॥
सलोकु—भर्म न जाइ भगति बिन चूकति नाहीं भीति।
ओह निट रवे साईदास जो कछु कीन्हि अकीति॥
अकीति न कवि हूं लागिही कीये न आंन किनि जाइ।
साईदास कीति अकीत दोऊ मिटै हरि रानीं जवि पाइ॥

३०

शिवि दर्सन की सुर्त समावे। सांति कला तवि मनूआ पावै॥
सीतल भया थक्ति विध जाय। शिवि सोभा इस बिध ते पाय॥
सहजे आवे सहजे जाइ। सहजे बोले सहिजे पाइ॥
सहजे जागे सहजे सोवे। सहजे ते त्रैलोक त्रिलोवे॥
शिवि नगिरी मै आसुन कीना। सविदि विचारि निह्चल जनु भीना॥
ताते भर्म भूल सभ जाई। शिवि सोभा इसि बिध ते पाई॥
शिवि संतोष बिध जोग निवास। इहि विध जाचे साईदास॥
सलोकु—सिषा सूत्र सजम करम जो कछु निगम वीचारि।
साईदास सति संजम ते जानीए परिवानि कला वीचारि॥

३१

सिषा सूत्र संजम गति पाई। धर्म नेम चलो मेरे भाई॥
जलि इस्नान त्रिसंध्या धारन। षटि कर्मा बहु विध ओचारन॥
माला मन्त्रि दीक्षा गुर सेवा। संगनि साध सर्बमय देवा॥
सालग्राम तुलिसी की माला। दया दानि दिज चर्न पखाला॥
पूर्नब्रह्म सदा भगिवान। मानो बेद कला परिवान॥
परिवान कला का इह विस्थार। साईदास रिदे करो वीचार॥
सलोकु—इह मनि मारि मैदान कर पेलति सहज बिबेक।
साईदास कहिन सुनन को दोइ है जानिन कों प्रभ एक॥

३२

एको एक न दूसरा कोई। बाघ दर्सन ते ऐसी होई॥
मिहरिवांन मिहिर ते पावे। मिहिर बसो जिस आप वसावे॥
होइ निवाजि निवे सभ माही छाडि झूठ सचु मिस्त समाही

रोजा रिदे सतोपि विचारे। कूजा कर्म सील बीहारे।।
आसा एक साहब की कीजै। गुरु अतर मतर महि दीजै।।
मुसावे आप तां सचि घरि आवे। साईंदास फिर जनम नि आवे।।
सलोकु—दान पुंन्य अरि यग्य होम नेम धर्म व्यवहार।
साईंदास सांति सहिज हरि सिमरना इहि विध दर्सन चारि।।

३३

राम नाम रसना हित कीजै। ता सम सरि कछु और ना दीजै।।
धर्म नेम संजम हितकारी। नामु जपे तांसो बलिहारी।
सहज समाध रहे लिव लाइ। आत्म भेटे तौ भ्रम जाइ।
मिल सतिगुर ऐसी मति पावे। अहि निस मिल साहबि गुनि गावे।।
निर्मल साध सग जो करे। साचा नामु लै हिर्दे घरे।।
साईदास भजि इह विवहारि। इहि विध दर्सन कहु बीचारि।।
सलोकु—विष्यावुध व्यापे नही अनि इछया विसराम।
साईदास जती नामु सभ को कहे कठन धराविन नाम।।

३४

जती सोई जाने सभ माही। घटि प्रकास दूसरा को नाही।।
निर्प धर्न जो पगे पसारे। केवल ज्ञानि रिदे मैं धारे।।
आसा ही ते रहे निरास। वहेत सरोवरि रहे उदास।।
जती नामु कहु विध बीचारा। काम क्रोध ते रहे निआरा।।
जवि घृति अग्नि निकट नहीं आवे। हठि करि नाम सो जती कहावे।।
घृति ते उलटि भयों जवि पानी। सम सीतिल जलि अग्न समानी।।
रहति देव को करे प्रणामा। सभ रूपनि में तेरो नामा।।
जिहि सरूप तुम ही को जानो। गुरि प्रसादि दुभदा मत हरि आने।।
सर्व अंगि प्रभ कीयों निवास। इहि विधि जाचे साईदास।।
जहां देपो तहा एकु है दूसरा कोही नाह।
साईदास करे करावे आप ही तूं मनि कहा भरमाह।।

३५

बोध रूप की बुध प्रवीनी। सकल जगित कों जिहि बुध दीनी।।
जहा देषो तहा एको एका। सभ घटि पसर रह्यो जु अनेका।।
अंतरि बाहरि एको जाने गुरि प्रसादि साच करि मानि

एक ही विचर कीयो जु पसारा । जगित रचिना कों वहु विस्थारा ॥
सहज समाध रहे लिवि लाय । हम तुम कौन कहेगो आय ॥
कहा ते आआ कहा ते जाही । एह बीचारि देग गनि माही ॥
चक्र भेदि पटि भेदि बीचारा । अपनों चक्र भयो उजिआरा ॥
तबे बिलहाय मिलो पदि माही । तहा आनिण जाविण ही कछु नाही ॥
साईदास परिचे सो जांणे । एहि विध दर्सन बोध बषाणे ॥
सलोकु—पटि दर्सन मे लोक सभ मति मार्ग विसतार ।
साईदास जिन विध किनहू जानआ तिनिही पूर्न आस ॥

३६

पटि दर्सन अनिपेषन गए । अश्चर्य रूप में बिसमैं भए ॥
किनहू सुन्न हस्त का देक्षा[1] । उनि जान्या प्रभ एही सरेक्षा ॥
दूसरे बात आर जो बाही । ताका भर्म हीए ते नही ॥
कोऊ दत देप पतीआना । उनि बाही ले सच करि माना ॥
कानि निशानि हाथ जिन पगा । उनि जाना प्रभ ऐसा पगा ॥
अग नीशान हाथ जिह लागा । बाका याही ते भ्रम भागा ॥
किनि हू देषा पाउ पसारा । उनि जाना प्रभ यहि बिवहारा ॥
पूछ परो गिर तैसा जाना । औरि भूठ बाही सच माना ॥
देषनि कों रचना रची, अधि बिषनि को धयानि ।
साईदास सभ में एको बसि रह्या गगभे ते सचु मानु ॥
एको एक सभ मे वसे अविरि न दूजा कोय ।
साईदास जो जाने दरि दूसरा, दरि दरि काला होय ॥

३७

दरि एको दरिवान घनेरे । जिनि कों दाति सेऊ दरि घेरे ॥
एक जानि करि चेरा होय । ताकी चाह करे सभ कोय ॥

---

१. यहा—हस्ति-अधन्याय का वर्णन है । जिस प्रकार कुछ जन्म से अंधों ने हाथी को देखा । जिस जिस अधे ने हाथी के जिस भाग को देखा उसी रूप में हाथी को मान लिया । इसी प्रकार जगत् के अज्ञानी लोग जिस रूप से प्रभावित होते है, उसे ही परमात्मा मान लेते हैं, वस्तुतः परमात्मा की वास्तविकता को केवल ज्ञानी ही जानता है ।

जिनि सभ ही में एको जाना। बहु विध रंगी रंग पछाना ।।
षालक बन्या षलक के माही। षालिक पेल पाकि होइ जाही ।।
षालक हू ते पाक जिनावे। पुशी पालक की तविहूं पावे ।।
होमे मेटे ते अलिसाना। जीवित पाक होइ पसमाना ।।
षसिम मने तौ नौ-निध पावे। जिस को अपुना आपु जनावे ।।
साईदास प्रभ अकथ नीशानि। मै तेरी कुदिरत तो कुरिबानि ।।
सलोकु–करि करिवाल जो काल के काटति पलिक पलाहि।
तबि जान्या जवि गिर परा सनिमुष जूझे जाहि ।।
जो जूझे तेऊ भले अनि झूझति किह काज।
साईंदास तवि क्या झूझणा जवि जम के भए मुथाज ।।
निमिषि पलिक नही बीसरे होए तिहारो नामु।
करि पसार दोउ मागिते साईदास यहि विसराम ।।

३८

मूले चक्रे लागे बंधि[1]। इद्री चक्रे थिर भए कधि ।।
नाभे चक्रे उलटै पौना। ताते मिट गियो आवा गौना ।।
रिदे चक्रि मन कविल प्रकास। चूकी मार्न जीविन की आस ।।
कठी चक्रे टुटे ताला। जोगी होइ वृद्धि ते वाला ।।
शपनी चक्र भयों उजिआरा। जो चीन्हे सो जोगी सारा ।।
षटि रस भेद गगिन गडि गाजा। जिह परिचा अनहद बाजा ।।
आदि अनादि भओं ओंकार। जिह मिल सुर्त कीओ सचार ।।
सुर्त निर्त मिल एको भआ। जीवि सीवि मिल संसा गआ ।।
ससा गिआ भअ निहसम। जित देषो तित एको वसि ।।
उत्तम मधम तहा को नाही। साईदास पदि पूर्न घटि माही ।।
सलोकु–मूल रोक षटि चक्र कों रिदे पंकज को ध्यान।
सपनी ते सचु पाईए तहा समाने प्रान ।।

---

1. योग साधना द्वारा मुक्ति प्राप्त करने के लिए साधक को प्राणायाम द्वारा कुडलिनी को जागृत करना होता है। यह कुडलिनी शरीर में स्थित छः चक्रों को पार करती हुई सहस्रदल कमल मे पहुच जाती है, यही साधक की परम-सिद्धि है। उन्ही चक्रो का यहा वर्णन है। इनके विशेष ज्ञान के लिए परि-शिष्ट देखिए।

ब्रह्मरूप निर्लेपु है माया शक्त न कोय।
साईंदास ताको छेदे वल करे कर्मा वाला होय ।।

३६

एको परिमात्म निरमाया[1]। आत्म उपिजे ताकी छाया।
वपि धरि आत्म कर्म कमाया। कर्मा ही ते जीउ कहाया।
जबि जीउ इति उति डोलन लागा। ताते कहीए मनि अनुरागा।
मनि मनिसा मिल षेल बनाओ। चितवनि ही ते चित्तु कहायो।
जबि चितु फेर पिछौड़े जाया। तौ परिमातिम जाय समाआ।
षेचरी[2] साधे चितँ चितवनी जाय। भूचरी ते मनि उलिटि समाय।
अगोचरी ते आत्म लिवे लागे। उनिमनी ते ससा सभ भागे।
चाचरी साधे सहिज निवास। साईंदास आत्म भयो प्रकास।

कर्म करे सोई नाम ही समझि विचार विवेक।
साईंदास कहिन मुनिन को दोय है जानिन कों प्रभ एक।।
उपिज विनस क्या कहो सभी रहुअ भरिपूर।
साईदास किनहूं नेडे जानआ किनहू रामभयो दूरि।।

४०

किनहूं राम निकट करि जाना। किनहूं दूर दूर करि माना।
किनहूं साध लीओ घटि माही। किनहूं दिष्ट पडो कछु नाही।
किनहूं अपिना आपु पछाना। किनहू जान्या किनहू न जाना।
किनहू दीपक जोति प्रकासी। किनहूं भर्म परो उरि फासी।
साईदास जिह इह सुप मानयो। थान थननर रहया समायो।

धर्म नेम सभ को करे घाति करे नहीं कोय।
साईदास जप लीजिए जो कुछ होय सु होय।।

४१

राम नाम मनि लेह विचारी। भर्म की भीति चित हूं ते टारी।
राम नाम अमृति फल पायो। राम नाम घटि माह समायो।

---

१. यहा से ब्रह्म अश किस प्रकार जीव बना, इसका वर्णन है।

२ खेचरी, भूचरी, अगोचरी उनिमनी और चाचरी ये पाच यौगिक अवस्थ हैं। अधिक स्पष्टता के लिए परिशिष्ट मे देखिए।

राम नाम जपि निर्मल होय। राम नाम जपि दुर्मति षोय॥
राम नाम जाके घटि वसश्रा। पर्म भावि ताहू मन वसश्रा॥
राम नाम महिमा कों जाने। सत्य सविद ताहू मन माने॥
साईदास राम चित धारि। भौ जलि विषम उतारे पार॥
ब्रह्म रूप होय पसरश्रा देषो नैन पसार।
साईदास श्रंतिर बाहरि निर्षयो भक्त हेति चिति धारि॥

४२

देषो नैन पसार गुसाई। राम रमश्रो है सभनी थाई॥
श्रंतिर बाहरि लेह निहार। साध संगि मिल भ्रम मृग मार॥
कुसम माह वास सचारी। रिदे प्रतीत होय जिन धारी॥
जो प्रतीति रिदे नहीं आवे। सुनो वेदि सुन्न भाष सुनावे॥
गुरि जनि वचनि लीयो निज धारी। तौ प्रतीत होय मन भारी॥
कौन बचन कहिके समझायो। पूछो कोऊ को उत्तरि पायो॥
बिना जोत क्या माटी बोले। बिना जोत कहूं मार्ग डोले॥
विना जोति कहु कहा पसारा। बिनु जोते किउ कहा उजिश्रारा॥
ब्रह्म जोत सभ ही को जांनो। जो दीसे सो साच करि मानो॥
साईदास जिन ब्रह्म पछाना। बाका चूका श्राविन जाना॥
सलोकु—सरि भरिश्रा श्रनिभै जले, को जनि पीवे जाय।
साईदास जावित जावन जाविही फिरि सुध रही नि काय॥

४३

सरि श्रनिभै भरिश्रा लील्हाई। जो जावे जल सो श्रचिवाई॥
श्रनिभै जल जिनने श्रचिवायो। भौ जलि तिनने मनि बिसरायो॥
त्रिह्ना[1] त्याग दीनी तिसताही। ताह निकटि विला कछु नाही॥
सहिज भयो त्रैय ताप मिटाये। शिव नगिरी श्रासनि हि राये॥
मानि महति सभ दीयो बिसारी। घटि घटि श्रपिनी जोत पसारी॥
दूसरा भेद रिदो मिटि गयों। श्रपिना श्रापु पछाने लीयो॥
साईदास श्रनिभै पुर माही। विचरति है संसा कछु नाही॥

---

1. त्रिह्ना < तृष्णा।

संसा दीनो डार के निहसंसे मनि होय।
साईदास ताको क्या संसय पडै जिस रिद बसिआ होय॥

४४

ससा कहा जु हरिगुन गावे। नासि जपे दुभिदा मिटि जावे॥
अयगुन मनूआ सून परोवे। स्वास समान्हि अपंडि नही पोवे॥
एक स्वास हरि हरि गुनि गावे। स्वास अविर्था कोई नि जावे॥
कहु साईदास सदा सुप होय। गुरि प्रसादि लपे जनि कोय॥
स्लोकु–जिन के मनि मह उपजयों मुक्त भयो फुनि सोय।
साईदास गुरि कृपा सुप पायओ दुग दरिद्र भ्रम षोय॥

४५

जिन के मनि उपिजी परितीत। निर्मल होवे तांका चीत॥
भावे वेद पडे गुनि गावे। भावे मनि मडलि होय आवे॥
भावे उदिर भरि भरि षावे। भावे सूषम भोजिन पावे॥
भावे कपिडे अंगि हढावे। भावे नागा बनि उठि धावे॥
भावे सुंन्न सविदि सो राचे। भावे सोहं पदि सो माचे॥
भावे आप आप हो जाय। भावे अविगति अलिप लपाय॥
साईदास बिरथा जो जाने। सो सुप सागिर मांह गलताने॥
स्लोकु–हरि पदि मय गलतान जनि अविगति निसराय।
साईदास ममता मिटी दुभदा गई मति गुरि दीओं बताइ॥

४६

सतिगुर जिन के मनि मह भायों। पर्म पदार्थ तिनहूं पायो॥
सतिगुरि जिन को दीयो उपिदेसा। ताहू का मिट गआ अदेसा॥
सतिगुरि है दीपक की न्याई। पर्सति तिमर छिनमै दुर जाई॥
सतिगुरि दर्सन भेटति दुष गियों। महाअनंदि रिदे मह भयो॥
जीविन मूलि रिदे मह आयों। जो कछु इछआ सोई फल पायो॥
गुरि का मत्र राष रिदे माही। रापति ही सुष सहिज समाही॥
साईदास सतिगुरि बल जायो। तिहि प्रसादि हरि के गुन गायो॥
स्लोकु–प्रथमि बुद्ध व्याकल भई औरि प्रकासयो भाय।
साईदास आदि पुर्ष उतिपत करी सो मनि विसरयो ताह।

४७

जनिम लीयो सागिर भ्रम आयो । कौल करारि सकल बिसरायो ॥
जनिनी कों पय जबि ही पीयो । भजिन गुपाल तबिही तजि दीयो ॥
ममता के गृह माही आयो । म म वचन मुप ते सुनायो ॥
सुम माता के प्रगिटि आइ होयो । बिसर गियो रस माता मोओ ॥
त्रैय गुनि माटी पेलन लागा । गोविंद भजन रिदे ते भागा ॥
कनिक कामनी हेत बधायो । आपना मनि ताहूं चितु लायो ॥
ओंकारि को दीयो बिसारी । महा मलीनि मनि ले चित धारी ॥
साईंदास जिस हरि बिसरायो । अत समे बहुत दुष पायो ॥

अनिहदि बाजे रे भैआ निसबासरि पल छीन ।
साईदास सुर्त निर्त ताहू भई गुरि किरपा करि दीन ॥

४८

अनिहदि तार बजे मेरे भाई । निसबासरि तांको लिवि लाई ॥
जाकी लिव लागी फुन तांको । अनिहदि उपज रह्यो घटि आको ॥
त्रिगुटी भेद रह्यो उरिझाई । उनिमनी मै फुनि ध्यान लगाई ॥
तहा रचिति सोह पदि बोले । इनि उति मनूआ मूल न डोले ॥
तहा रचत सभ सुर्त पसारे । अनिहदि सबिद होन उजिआरे ॥
आवागवन ते भआ निआरा । छाडि दीयो सभ सकल पसारा ॥
साईदास गुरि मन्त्रि दिढायो । तिहि प्रसादि अभै पदि पायो ॥

तीन भविन मे विचरते सूषम अनि अस्थूल ।
साईदास जब जान्या तबि निकटि है पाओ जीविन मूल ॥

४९

ज्ञानी ध्यानी की सुन बाति । धरो ध्यानि बहु बेद बकान ॥
अतिर ध्यान वेद मुप भाषे । हरि रस माता अमृत चाषे ॥
जो अमृति हरि नाम कहीजै । सो अंमृति मिल साधनि पीजे ॥
सुष अमृति हरिनामु कहावे । जाके भागि सोई जनि पावे ॥
मिल साध संगि करे आनदि । सदा बसे घटि परिमानदि ॥
जाके रिदे आनंदि हूयो । सो नरि सदा सदा जुग जीयो ॥
गुरि प्रसादि साईंदास बताइयों । पूर्न नाम रिदे में आयों ॥

सलोकु—परिम पदार्थ पाइयो हरि सेवा चितु लाय ।
साईदास गुर प्रसादि भ्रम उतिरयो तिमर मिटायो जाय ॥

५०

पर्म पुर्प का ध्यानि करीजे। गुरि मंतरि अंतरमंह दीजे।
गुर मार्ग छिन मह दिपलावे। ठौरि ठिकाणा निकटि बतावे।
दर्पन न्याई मुप उलिटि दिगाई। दिष्ट पडो ममता मिटि जाई।
जबिते उलिटि परचो गृह माही। बूझे बूझे आप आप होइ जाही।
माईदास गोबिद गलतान। बूझो जनि को आविगत जान।
तुमरी गति अपार है लगी न जावे बानि।
माईदास ना काहू शो उपजयो निगमर हो निह गानि॥

५१

तू दियाल अपार प्रभ होई। लपी नि जाइ अवगति गति गोई।
दुषिभजनि हरि दीनदआल[1]। करुणामय गोबिंद गोपाल।
परिमानंदि सदा सुपदायक। भगित बछल हरि सदा सहायक।
गुनि निधान माधो मधसूदनि। सकल अगित पसर्यो मधुसूदन।
निर्मल जोत उजिआरा रूपा। अटल जोत प्रभ सदा अनूपा।
गिरवरि धारी नद के नदन। सकल जगत ताहू चिन बधन।
परिमानद मुकद मुरारी। बामिन रूप बन्यो नगिकारी।
नारिसिघ सूकर बपु धार्न। भगितहेत सभ काज सवारन।
बिमु रूप धर्नी ठहिराई। सकल सरूप रचना रचाई।
मनि मोहनि हरि कुंजबिहारी। श्री गोपाल भगितन हितकारी।
पतित उधार्न दीनदिआला। आदि अति मधि है रखिवाला।
सकटि काटिन दूप निवारन। भगित हेत प्रभ रूप पसारन।
मोहन मंछ गोवरधन धारी। पूर्ण पुर्प श्री कुंज बिहारी।
दीनबंध बृजिवासि ठाकुर। गुनिस पान सभ के गुनि आगिर।
सर्व अंगि प्रभ रह्यो समाई। कौलापति[2] हरि त्रिभुवन राई।
जो जो ताहू के गुनि गावे। मुक्त लहे पदि सानि समावे।
माईदास सुपि नाम निधान। गुरि किरपा पायो भगिवान।

---

१. यहा से प्रभु के अनेक अवतारों की महिमा का वर्णन है।
२. कौलापति <कमलापति।

आत्म मनि बुद्ध एकु है यामै भेद नि कोय।
साईंदास जौ माने तो मान लेह कहे होत नहीं दोय[1]॥

५२

एक रूप आत्म सभ माही। कर्म करे फुनि नामु सदाही॥
बुधि प्रकास परिमातम होई। आत्म मनि मिल दुर्मत षोई॥
सभ ही भीतिर ब्रह्म पछाना। अपिना आपि देप पतीआना॥
नैनन माही दीयो दिपाई। औरि नही कछु नाम सुहाई॥
एको राम रमयों सभ थाई। साईदास सुष आनदि माही॥
सलोकु—जोग ध्यान षटि कोटि को जाते जोगी होय।
विन जाते घरि ना बसे जतिन करे जो कोय॥

५३

प्रथमे मूल द्वारि रोकावे। दुतिए लघ दुआरे फुनि आवे॥
नाभि कविल वाउ धरि अहे। वर्तंत अदिभुन लीला कहे॥
उलिटि पविन जवि हिर्दे आवे। आनदि होइ अनद समावे॥
जीवित आइ वस्यो तिस मदर। अतिभुति रूप वन्यो अति सुदरि॥
विसर गियो जो काम कमावित। करि क्रीडा तवि सुप उपिजावत॥
त्रैगुनि गियों अगम घरि आवे। जगित माह सभ ही विसरावे॥
पचि दूति का कीनो पापु। षडग लियो सोहं करि जापु॥
अवि तो उनिमन माह समायो। भयो कछु था जो जगि आयो॥
लीयो पछानपरिमात्मसुपजविही। उनिमनि में राता जनि तविही॥
सोहं पदि सो रह्यो उरिझाई। साईंदास गुरि दीयों बताई॥
चिह्न चक्र ना वर्ग कछु दिप्ट पडो नहीं मीति।
साईदास अपिना आपु पछानियो निर्मल होइयो चीति॥

५४

चिह्न चक्र कछु दिप्ट न आयो। मानि गयो आतिम सुष पायो॥
जो कछु था सोई कछु भयो। ससा सोग रिदे मिटि गयो॥
मगिन होय पुरि माहि समाओ। अनिहदि तार बजे मनि भायो॥
वाजित वजत्र तारि अधिकाई। निर्त कर्त को कह समझाई॥

---

[1] साईंदास जी का सिद्धान्त—"अद्वैतवाद"।

कहे कौनु को निर्त करावे। कहे नवे गो विरवी आवे॥
सुनि भये चक्रति भयो लनि नाही। गुर्न निर्न कछु रहगो नाही॥
विसर गियो सभ भोगि बिलासा। जनि निरभग पर पायो बासा॥
साईदास निरभे पुरि माही। विगसी गंगा नाद गुर नाही॥

नामु अनन्ति नि अंन् है अन्तुलपे नहीं कोय।
साईदास बेद पुरान संक्रन कहहि अधि गरिमा गोय॥

५५

नारायण दुष टारन हारा। आदि पुर्ख है प्रान अधारा॥
दमोदरि भक्तन हितकारी। परिमराम संदिर अविनासी॥
दीनबंध सुष सागिर पूरन। नाम निधान सदा भरपूरन॥
भक्तिवछलि त्रिभवनि को नायक। गहिर गभीर सभ गुण दायक॥
मछि कछि को रूप पसारन। भगित हेत सो धरि वपि आरिन॥
महाराजि गोबिद गोपाल। धर्नी धारि सभ के प्रतिपाल॥
वमीधरि बावन वपु धारन। राम नाम अनिभै सुष कारन॥
मनि मोहनि मुकदि मुरारी। मधिसूदन हरि प्रान अधारी॥
करिन कराविन करिता आपे। जीवि जनि में रहआ विआपे॥
नदि नदन हरि प्रान अधारी। राधा-रविन[1] सदा बलहारी॥
केसि-दलन बृजि वासी लाल। काली नाथ परि भए क्रपाल॥
दावानलि को प्रानि अंचिवायो। निपीसरि को बेगही आयो॥
बाघासुरि को ले पटिकायो। नरि कंस को मारि चुकायो॥
विस्वरूप अविगति गति रूपा। सुंदिर रूप सदा ज अनूपा॥
परिमानंदि पूरन पति स्वामी। दीन दिआल गुर अंतिर जामी॥
कौलापति त्रिभवनि को राजा। सर्वअगि उत्तम गन गाजा॥
नारसिंघ सूकरि बपधारन। पूर्न पुर्ख प्रभ रूप पसारन॥
करिणामय परलवि पछारन। सुपलकि मुनि की चरित दिषारन॥
गोपीनाथ गोवरिधनि धारी। चरनकमल नित्त बलहारी॥
साईदास गोबिद गुनि गावो। जपो नामु फुन और जपावो॥

---

1. राधारविन < राधारमण—यहां से भगवान् श्रीकृष्ण की लीलाओं का वर्णन प्रारम्भ है।
2. ण पर बल

लोकु—जाके भाग फुनि जागिही हरिजनि सो चितु लाय।
साईदास हरि हरिजन अतर नहीं जे समझे जनि कोय[1] ॥

५६

हरि में साधि साध हरि माही। जा मे भेद भेद कछु नाहीं ॥
जिउ तुरगि जलि माह समायो। पिनि उपजयो छिन माह मिलायो ॥
जैसे दीपक जोत समाइ। पाविक लागी तिमरि मिट जाइ ॥
जैसे जीवि फुनि सीव कहावे। जहा तेज शिव तहा दिपावे ॥
पै[2] मे घिरत वसे है जैसे। साधनि में हरि हरि भयो ऐसे ॥
जैसे दिन मैथ रैन समानी। गुरु प्रसादि समझे को ग्यानी ॥
जैसे कुसम सुगध बिसारी। ऐसे साध जोत हितकारी ॥
जाको बूझ पड़ै सोही जाने। गुरिप्रसादि साईदास बषाने ॥
साधनि के सगि चित धरे विमल मोह भ्रम टार।
साईदास ताको बिघन न लागही मुक्त होति तति काल ॥

५७

जो साधनि मैय हर गुनि गावे। आपा त्यागे नीच[3] कहावे ॥
जीविति मुक्त होयगो सोई। साधि संगि मिल दुरमति षोई ॥
परिमपदार्थ तिस ही पायो। हरिभगतन सो जिन चितु लायो ॥
प्रभु उतिरचो तासो चितु लायो। साध क्रपा हरि भजिन कमायो ॥
भजिनि करति कछु दुष नि बिआपे। हरि सेवा त्रय गुनि न संतापे ॥
साई दास साधि संगि हू ते। साधि क्रपा उधरे तनि हू ते ॥
श्लोकु—ध्यानि धरो फुनि सिषर में तहा बसे सुप होय।
साई दास अपिना आपु पछानाआ हीये निर्मल जन सोय ॥

---

१. हरि और हरिजन में अभेद है। इसी तथ्य का उपमाओं द्वारा वर्णन है। पहली उपमा है—जल और जल की तरग। कबीरदास ने भी इस उपमा का प्रयोग किया है। दूसरी उपमा है—दीपक और ज्योति की। तीसरी उपमा है—दूध और घृत की। चौथी उपमा है—रात और दिन की। पांचवी उपमा है—कुसुम और सुगध।

२. पै < पय, घिरत < घृत।

३. नीच = नम्र।

५८

अर्न उलिटि मन गगनि नढायो । भर्म गिर्ग नानि श्री दन आयो ।
भूल गियो जो कछु था बकिला[1] । ओंग जुगनर जोग नां जुगला ।
भइ की भीति सुनै त्रिगरानी । अनभग पुर की गरी निजानी ।
चित्र रूपु कहन नहीं आवै[2] । जो मुग कहों कहा नहीं जावै ।
अविगत गति कछु लगी नि जावे । त्रिगम होत सुप साउ निगावै ॥
अतिभुति लीन्हा नैन निहारी । साईं दास जपि मिले मुरारी ॥
दयाल पुर्प सुग देन को दुपि विगिसानत हार ।
साईं दास तांकी सेना लागीए मोर कांति निन टार ॥

५९

दिआल पुर्ष की सेवा लागो । भजो गोपाल निसि बासर जागो ॥
जागृति चोर मुसे नहि घर कों । गुरु प्रसाद लहो हरि दरिको ।
जो कछु कहो सु हरि की बानी । नाही ना मोन भला है प्रानी ॥
ठौढ राप चितु नाह डुलावो । राम जपनि सहजे गुगु पावो ॥
हरि की भक्त लेहु चित धारी । वेद पुरान सभ एही पुकारी ॥
भक्त भाउ जोग सुष पायो । साईं दास जिस हरि गुनि गायो ।
श्लोकु—हरि प्रसादि भ्रम उतारियो हरिवानहारि पछान ।
साईदास साध सग्य सुपु पाइआ प्रेम भक्त चित आनि ।

६०

जो कछु कीयो सु हरि ही कीयो । जो सुगु दीयो सु हरिही दीयो ।
बिन भगिवानि और को नाही । गुरि मिल समझि देष मनि माही ।
बिनु रघुनाथ सूझति को नहीं । संमृति बेद सभ भाषि सुनाही ।
बिनु रघुनदनि कुंज विहारी । सूझति नाहु जो सुपि दिगारी ।
बिनु श्री क्रष्न मुक्त को पावे । रविसुनि फासी तेउ बिरावे ।
बिनु त्रिभवन नागिर सुपि आगिर । कौन दिपावे सुपि बिनु आगर ।
बिनु धरिनी धरि कौन उबारे । ससा मनि का कौन उतारे ।
बिनु मनिमोहनि को नहीं दाता । माति पिता बनिता सुति भ्राता ।

---

१. वकिता < वक्ता = वाचालता ।

२ प्रभु के दर्शन से जो सुख मिला वह अवर्णनीय तथा अनिर्वचनीय था।

बिन जगिदीस कौनु जगि परे। भौजलि बिषमञ्ञो पार उतरे ।।
बिन गिरधारी को सुषदायक। ऐसा औरि न सूझनि लायक ।।
बिनु मुकदि परिमानदि स्वामी। बिरिथा कोल है अंतिरजामी ।।
बिनु कौलापति प्रान उधारन। ऐसा औरि नहीं दुंष टारन ।।
साईं दास तौं सरिनी आयो। गुरिप्रसादि जसु भाष सुनायो ।।
देषो नैन निहार के चलिआ जाति जगबीरि।
साईं दास बिलम छोड हरि सिमर ले मानो गुरि अरि पीरि ।।

६१

जगि चलिआ नैन लिवि लायो। बिमल छाडि जसु हरि का गायो ।।
षिनि पलि जाति अविध तिहारी। घटि घटि जात मनि लेह बीचारी ।।
घडी घड़ी घड़ियाल बजावे। अविध घटित सठ समिझ न आवे ।।
आन अचानिक कालि गिरासी। उरि में डारि चलित ले फासी ।।
तवि पछुताउ रह्यो मनि माही। हरि का सिमरन कीनो नाहीं ।।
इहु पछतावा काम नि आवे। जोर न लागे नीर ढुलावे ।।
अवि तो तुमरे प्रान वसाई। काहे ना हरि सिमरओ भाई ।।
विनु हरि सिमरनि सुषु नही कोई। मीन बिछुरि जल बिना न होई ।।
कलवतर[1] रविसुत[2] सिर परिधरियो। काटि अविध तिहारी तरिवरियो
छाडो बिलम मनि लेह संवार। साई दास जनि कहिआ पुकार ।।
सलोकु—नरिपति सुरपति सभ भजे भजिन कर्त लिव लाइ।
साईं दास जात पाति पूछे नही जो सिमरे सुष पाय ।।

६२

नरिपति बेद भाष भषि जाने। आमि रिदे हरि जी की आने ।।
कहा भया नरिपति जो हूयो। ताह कर्न हरि ही दीयो ।।
मनि माही बहु लेति बीचारी। मोह नरिपत कीना गिरधारी ।।
तिह ऊपरि जिनही मरातावित। जो दुष देत बहुति दुष पावन ।।
इह प्रजोग आम मनि धारे। डरिपति डरिपति राज संभारे ।।
तिह नरिपति कों बहु सुषि दिषायो। जिसको अगिना आपु जनायो ।।

---

१. कलवत्तर <करपत्र (आरा) मराठी (करवत)।
२ रविसुत—यमराज।

जो जो हरिजनि रिदे बसाई। जीवित मुक्त होनि मेरे भाई।
साईंदास आनंदि घटि जाके। हरि का नाम बस्यो घटि तांके।
सलोकु—देवनहारा एक है ताहू के गुनि गाय।
साईंदास पर्म मुक्त गनि पाईए दुबिधा देत मिटाइ॥

६३

परालभित[1] जो कछु तिहारी। अनिबांछति है आविनहारी।
जो बांछति सो मिले ना आई। परालभत छनि मिलाई।
छोडि राप चितु ताहू फुलावो। जो कछु तुमरा है सो पावो।
हरि को जपो निसबासर छिआवो। परालभत ले ना उकिलावो[1]।
देवनहारि रह्यो भरिपूर। जाने निकिट अजाने दूर।
ससा छाड़ि भजो गोपाल। कारिणामें जो सदा दिआल।
साईंदास हरि नामु ध्यावो। सुधिसागिर घटि माहू बगावो।
अनेक राग अविनी सुनो नैन रूप समझाइ।
साईंदास उलिटि पडो जवि आत्मा परिमानम हो जाय॥
अविन धरो सुनो हरि की बानी। लघी नि जाइ अकथ कहानी।
अनेक राग बजे मेरे भाई। मगिन होत मनि अति अधिकाई।
ताल मृदगि बीनि धुनकारी। अनिहदि शब्द होति अतिभारी।
सुन्न सविद की सुर्त सभारे। निरति करनि गोबिंद चितारे॥
भगित भाउ रिदे माहू बसाई। सहिजे मनि दुभिधा मिटि जाई॥
नाचित निरत कर्त हरि केरी। काटि देत मनि भ्रम की जेरी॥
उनिमनि माहू सदा मगिन चित। जो गावित सो आप सुनावित॥
आपे बके सुनित फुन आपे। सर्वमाहू जो रह्या विआपे॥
साईंदास विचार घरि आयो। उलिटि पड़ा जवि आप सुझायो॥
जवि लगि रसीआ रस रह्यो होति व्याध को मूल।
सुधि विसरति दुष जागही परिसति अति असथूल॥

---

[1] परालभित < प्रारब्ध = भाग्य। यहा से भाग्य का वर्णन है। भाग्य से जो कु भी मिले उसे सहर्ष लेना चाहिए।

[1] अकलावो < अकुलावो। आकुल = व्याकुल होना (नाम धातु)

६४

जवि लगि रसत्रा रस मे रसिश्रा । तबि लगि जांनो दुष मे फसिश्रा ॥
जवि लगि मनु ना मोन करावे । कहा भया जिह्वा ठहिरावे ॥
जवि लगि मनु दहदिस भरिमाई । मोन कहा बहु मेरे भाई ॥
मनि चचल चतुराई करे । परि घरि मूसिन सो चितु धरे ॥
मारित मगि तसकरि पच भैया । तनि मनि माहि सताप जो दया ॥
नगिर माह कैसे ठहिराए । रहे सहिज जो रह णा पाए ॥
साईदास विकटि गति भाषे । गुरिकिरपा जनि विली लापे ॥
सलोकु—मुनित वकत मुक्ते भए जिन कीनी परितीत ।
साईदास पारिब्रह्म अतर वस्यो निर्मल होयो चीत ॥

६५

सुनित नाम हरि बहु मुक्ताये । हित करि जनि हरि के गुनि गाए ॥
गोविद नामु रिदे जिन लीना । ताति काल प्रभ मुक्ता कीना ॥
जाके रिदे बसे गोविद । सदा बसे घटि परिमानंदि ॥
प्रेम प्रीत जांके मनि आई । उज्जिल भयों मिटी तिमराई ॥
मानो कुस्म मिल्यो जलधारा । निर्मल रूप भयो उजिआरा ॥
तीनि ताप संताप चुकायो । ब्रह्म मिल्यो सुप आनदि पायो ॥
सकल माह हरि रूप दिषायों । मिट गयो दुष गुरि नामि दिढायो ॥
सतिगुर चर्न रह्यो लपटाई । तिह प्रसादि भ्रमि मनि का जाई ॥
साई दास आनद गलतानि । चूको तिन को आविन जान ॥
उरिध मति जनि त्याग के लेहो आदि पछान ।
साई दास वैरभाउ पाछे रह्यो निर्भो पदि लिव ठान ॥

६६

ध्यानि धरो धरि हरि गुन गावो । विष्या सुर्त सकल विसरावो ॥
गुनि गोविंद धरो चित माही । जठर अग्न ते जिन उबिराही ॥
दग्ध होन तुम कों नही दीयो । पान-पाति' जो रष्या कीयो ॥
रे सठि दसि मास वस्यो तू ताही । ताह वसति हरि के गुनि गाही ॥
भयो व्रतीत मास दस जविही । प्रगिटि भयो जगि भीतर तविही ॥

पानपति <प्राणपति (ईश्वर)

दीश्रो बिसारि रप्या जनि कीनी। श्रीर मन्न ननगिन निन लीनी।।
श्रपिना श्राप दीश्रो बिसराई। कौन लोनि ने लगिश्री भाई।।
म म बचन रुदनि करि भाख्यो। भूलां श्रंभृनि बिणु फल नाग्यो।।
रेजनिजोगनश्रपिनीकीश्रानांरो। साधि संगि मिन कुरमति तोरो।।
ताहू बंसति फुनि ना चितु श्रानो। यहि गोउम मिथ्या करि जानो।।
जिउ बाजीगरि बाजी पाई। छल करि प्रभ इह बचन बनाई।
श्रभ सो श्रंभ मिलयो मेरे भाई। माटी सो माटी होइ जाई।।
माटी पविन श्रभ ले साज्यो। नार्म जोन भरूप निगज्यो।।
श्रन माटी माटी होइ जाई। श्रंभ सों श्रभ सहजे मिल जाई।।
पौन सो पौन मिलयो मेरे भाई। नर्क स्वर्ग मह को ना जाई।।
जो इह बात पुकार सुनावे। जागत बसेरा करि ठहिरावे।।
जो कोकरिम करिलूत तिह माही। मानि महनि चनु दीनो नाही।।
सभ ते श्रापि नीच कर जानो। रिदे भगिवान भगित करि मानो।।
ताको नर्क स्वर्ग नहीं काम। जिम घटि पसरयो पूरण राम।।
जिन ने कह्यो जु मैं कछु कीयो। मान महनि ताहू चितु दीयो।।
गुरि के बचिन सुनित जनि भाये। श्रबिगत गत कछु वाहि लाये।
श्रबिगति गति गत सोई जाने। गुरि प्रसादि जो श्राप पछाने।
साईंदास हरि नाम धिश्रायो। गुरि के बचन मनि ना बिसरायो।

रवि सुति श्ररि जो देगते करिवति[1] आने सीस।
साईदास पलि पल छिन छिन श्रावध कों काटिन गुन धरि चीति।

६७

निस वासर जो जाति श्रवेही। पलि पलि छिन छिन श्रविध घटेही।
मनि मूर्ख कित स्वाद लुभाश्रो। पूर्न पुर्ख चित ते बिसरायो।
कौनि हेति श्रति श्रध श्रज्ञानी। जो इस्थर[2] सो दीयो भुलानी।
जो श्रनित तासो चितु लायो। जो इस्थर चित ते बिसरायो।
जानि बूझ किउ बिखु को पायो। पतित उधारनि को बिसरायो।
श्रंति न होई होति सहाई। मानि पिता बनिता सुति भाई।

---

१. करवति < करपत्र = श्रारा।
२. इस्थर = यहा इस्थर शब्द का श्रभिप्राय स्थिर है। उसमें 'इ' का 'स्वरागम' हुआ है।

जबि उरि फासी रवि सुति डारे। मुगिदरि सेती सीसु प्रहारे॥
ताहि समे द्रगि नीरि ढुलावे। हाथ पछोड़े बहु पछुतावे॥
ताहि समे कछु नाह सहाई। साईंदास जबु हरि सुपिग्राई॥
पूर्न पुर्ब निधान सुपि घटि घटि ताह निवास।
मनि रुचिकरि ता सेवए गुरि किरपा साईंदास॥

६८

जलि थल मीतिर रहया समाई। अविगति गत कछु लषी नि जाई॥
पसु पषी मे ताह निवासा। अस्थावर जंगम महं वासा॥
जो दीसे सो ताह सरूपा। गहिर गंभीरि जो सदा अनूपा॥
अनति रूप कछु वरनि न जाई। जिन को जानो होति सहाई॥
विना सहाय कहा कछु होई। साईंदास जपु हरि हरि सोई॥
सलोकु—सूरा सोई भाषीए सनिमुष झूझे जाय।
पीठि न देवे साईंदास हरि गुनि बान चलाइ॥

६९

सूरा सो सनिमुष जा लरे। मति गुरि शब्द षडग करि धरे॥
पंचि दूत का घाति करावे। निर्भौ नगरी माह बसावे॥
ग्यान ध्यान मे रहया समाय। तिमरि अज्ञानि मिटै सुष पाइ॥
निज पदि कों जबि ध्यान लगावे। आप सकिल बिसरावे॥
रवि प्रकास कीयो जबि हूते। तिमर विनास भयो तबि हूते॥
त्रयगुन मेटे ते अलसाना। चूकी गियो फरि आवन जाना॥
साईंदास अनिभै पुरि माही। सदा अनंदु त्रासु कछु नाही
बाजे बजित अनेक भांति सुर्त नर्त ठहराय।
साईंदास बिन देषे ध्वनि मुनो मुष ते भाष सुनाय॥

७०

बाजे वाजिन भाति अनेका। सुर्त निर्त करि समझ बिवेका॥
विनु पगि नाचै जिह्वा विनु बोले। नादि सुने ध्वनि नहीं षोले*॥
विना ताल करताल बजावे। बिन देहा करि जोत दिषावे॥

---

* यहा अनिभैपुरी (सहज समाधि) की अवस्था का वर्णन है। जहां नृत्य संगीत ध्वनि अनीन्द्रिय ज्ञान से प्राप्त है।

बिना भानि[1] उजिआरा होवनि । मनि की मैल सबिद गुरि[2] खोवनि ।।
आगि भआ जाँबे आर्सानिहारा । साई दास नाथि भ्रम भ्रम मारा ।।
महा बिकटि अंनि घाटि है मांग टहरनि नाहु ।
साई दास दाल बिथरी हाँथि न पाइए बिहुगम फासी पाह ।।

७१

महा बिगट मार्ग मेरे भाई । फिसलनि पागि फुनि धरियो नि जाई ।।
पागि ते मगि पगि धरिन न पाई । गुनिन वाकन गुर औन गहाई ।।
जो तुमरी किरपा जनि पर होई । ताते पार परौ जनि भाई ।।
अध कूप कछु नाहु सुझावन । सुझत नाहु न कछू दिखावन ।।
होइ हैरान रह्यो थकनाई । साई दास हरिदास सहाई ।।
गुनि आगिर भगिवान है नागिर गांको साघु ।
साई दास नाम अनंत अनति है सिमरो आठो जाम ।।

७२

गुनि आगिर भगिवान कहीजे । निमरनि आठो जाम करीजे ।।
एकु पलु बिलम नि करियो भाई । निमनाभरि साहु गुनि गाई ।।
बिमल बुद्धि उजिआरा होइ । जाँनि पात दूसर नि कोई ।।
रामा पदि के मंगलि गाऊ । जो गावो सो गरिना आऊ ।।
आनि देव फल को है दायक । ताते मुक्त और नही लायक ।।
जो आनि देव किरपा जनि धारी । जो बिरथा हरि होय बिनारी ।।
जबि किरपाल होवे जादोराय । तबि फल आन देव जनि पाय ।।[3]
ताते एहु भला मन आवे । राम नाम कित जान भुलावे ।।
नारायणि निर्भो सुषदायक । साई दास भजि लागो पायक ।

सलोकु—मूर्ष मनि समझाविहो समझत नाही काय ।
साई दास हरि प्रसाद सुष सहज मैं संसा चित ते लाहु[4] ।।

---

१. भानि < भानु—सूर्य ।
२ सबिद गुरि=शब्द ब्रह्म ।
३. अनन्य भक्ति पर बल—ईश्वर ही मुक्ति का दाता और देव केवल फल दाय
४ लाहु=उतारना (पंजाबी शब्द)

७३

मूर्ष मनि तुझ कहु समिझाऊ। करि बिबेक तुझ नैन दिषाऊ।।
जबि तैं जनिम जगति ते पायो। माति गर्भ ते कहा लइआयो।।
कहा आपि कहा मोहु दिषाई। जठिर माति ते जनिम्यो भाई।।
जिन ने धारि इहि दनित बनाई। गुनि अविगुन सभ नाहु सुझाऊ।।
जनिनी अस्थानि पें प्रगिटायो। प्रथिमैं पाछे जगि दिषलायो।।
वहुड बाल अवस्था त्यागी। भरि जोबिन नारी अगि लागी।।
तबि हरि तुम को ना विसरायो। जो परालभित सो आन पहुंचायो।।
नाना भांति रक्ष्या तुझ करी। रिदे विसार चिनि नाहै धरी।।
रे सठ ते एकु गुनि नाहीं मान्यो। रच्यौ औरि चित ते विसरान्यो।।
अनति स्वाद रसना जबि पायो। हरि के गुनि गाविन बिसरायो।।
श्रविनी नाद सुन्यो जवि हीते। मडिल ध्यानि चूको नवि ही ते।।
नैन जीवित जगित निहारयो। माति पिता वनिता चित धारयो।।
जहां हरि भक्त तहा नही जावे। जहा ठगित गनि तहा सिधावे।।
वह हरि गुन इहि तो गुनि कीने। मूर्ष सठ तैं ब्रह्म न चीन्हे।।
जो आवित आवित जानो। साई दास अवि उलिटि पछानो।।
नाना रगिहो पसरयो जिन जान्यो तिनि जानि।
साई दास जिन जानियो सुष पाइयो आनदि में गलतानि।।

७४

कोई नागा बनि उठि धावे। उनि वाही में अलिप लषावे।।
किनिहूं जटा बधाई सीस। उनि जानियो ऐसो जगिदीस।।
जोगी होके कान पडाए। उनि ऐसे हरि जानि लषाए।।
कोऊ अस्थावरि के है वासी। बाहू कें मनि माह हुलासी।।
कोऊ वैरागी जनि भए। द्वादिस तिलक अंग मैं दए।।
कोऊ मुष ते बचिन न भाषे। मोन गहे हरि ऐसे लाषे।।
कोऊ ज्ञानि विज्ञान विचारे। कथा कीर्तन हरि ज्ञानि चितारे।।
कोऊ पटि शास्त्र वीचारी। जपे नामु श्री क्रष्न मुरारी।।
जो कबुद्धि है त्यागन हारे। सो उधिरे लै ज्ञानि बीचारे।।

ईश्वर भक्ति अनेक रूपों मे की जाती है

अनेक भांत प्रभ रूपि पसारा। सभ दिश्टी जिस नैन निहारा॥
साईंदास जिस गम करि जाना। तांका भ्रम उतिरयो मनि माना।
सलोकु—तुमरी गति मैं क्या कहों मति थोरी मति आधि।
अमि चित नू करि आ रख्यो सरिन आयो निज नाथि॥

७५

तुमरी गति मैं कहा बखानो। मति थोरी नि कहनि न जानो॥
सेस नागि[1] कछु अंति ना पायो। सनकादि जोगि ध्यानि निर गायो॥
पंडित बेद पडित थकि जाने। नारद बैन प्रजाग भुलाने।
जम दग्नि परासर पतन कमायो। रिग रूमासरि जतन करायो।
गौतम तरीआ प्रीत रपाए। व्यास अगस्त रिषि के गुन गाए।
सुकि नाना विध ज्ञानि वीचारी। प्रंतु ना पायो निह वनिवारी।
साईंदास अविगति करि जानो। गुरि प्रसादि चिंता उतिरानो।
जो निर्भौ जनि मान के, साधे पंचो दूत।
निरमलि हो निरमलि भए, तंग्पति सकल अविभूति॥

७६

जिन हरि जाना आप पछाना। आप पछान ताहू सुख माना।
उलिटि विचार पडो जवि हीने। सुखि निधानि पायो नखि हीते।
साधू सहज अभिमाना जाय। मनि की दुबधा सकल चुकाय।
रूपि रेख हरि चिह्न समानो। भयो सोई जो दिस्ट परानो।
सुखि सागिर माहू समायो। परम पदार्थ तिस ही पायो।
प्रगिटि सुगंध बसे जगि माही। पर्म जोत सो सहजि मिलाही।
साईंदास प्रभ घटि मैं पेखा[2]। तत्त सरूप अरूप अरेखा।
मूल सम्हालो आपना, काहू जो कहा भइया।
साईंदास कौन रूप हो पसरयो, सभा सोगि गयो॥

---

१ तुलनीय रसखान—
सेस महेस गनेस दिनेस सुरेस हु जाहि निरंतर गावै।
जाहि अनादि अखंड अछेद अभेद सुबेद बतावै।
नारद सेसु व्यास रटे पचि हारे तऊ पुनि पार न पावै।
२ प्रभु के दर्शन भीतर ही हुए पर था वह निर्गुण

७७

रक्त बिंद ते उतिपति भयो। फुनि दस मास गर्भ मे रह्यो ॥
अस्त रोम तुचा फुनि नाडी। उनि सभ हूं करि देह सवारी ॥
तांके नवि द्वार घरे बनाईं। दसिवा गुपत द्वार मेरे भाई ॥
गुपत द्वारा सीस मझारी। मुनि ले हो रम रहियो मुरारी ॥
दोनो श्रवनी औंर सुनीजे। नासका गध सुगधे लीजे ॥
दोनो नेत्र धरे बनाई। मुखि दुआरा सुनहो मेरे भाई॥
मूलि द्वारा अविर बीचारो। इंद्री द्वारा रिंद जनि धारो ॥
अस्थन फुन रोम दो भए। होइ अनीत सोहम पवि गए ॥
नावा द्वार नभ पछानो। इहि फुन पोना को अस्थानौ ॥
दसों द्वार परिसिद्ध बताई। नीके बोल कछु मिलन न पाई ॥
साई दास इहि करो विचारा। सो जाने जो जानन हारा ॥
गुप्त द्वार की बाति सभ सुनि करि चित धरि लेय।
साईं दास ससा चूको हरि भजो रवि सुति श्रास नि देय ॥

७८

जवि आतम तहा जाइ समाया। सुर्त निर्त सभ यगि बिसराया ॥
अनिहदि सविद उठति जंकारा। निस वासर अनिभै झुनकारा ॥
देह सुर्त कछु रहनि न होय। ब्रह्म जोत सो जाय मिलोय ॥
नाना भांत वजत्र जु वाजे। ताल मृदगि झाझरो गाजे ॥
रह्यो बिलहाइ तहा जाय समाई। साईं दास कछु कहि न जाई ॥
सलोकु—श्रविन द्वार की बात सभ, सुनिए जनि परिधान।
कथा कीर्त्तन श्रविनी सुनो पूर्ण पद सुरि ज्ञान ॥

७९

श्रविन सुनो मुन हरि की बानी। कथा कीर्त्तन सुनो आनंद बानी ॥
भाउ प्रीति हरि जस सुन जानो। कर्म करों फल नाहन मानो ॥
प्रीति करो हरि हरि जस सुनही। गुर जनि बचिन रिदे पुनि धरिही ॥
भला बुरा फुन कर्म विचारा। श्रविन धारि जसि सुनित जैकारा ॥

१. देह के नवद्वारो का वर्णन। दसवे द्वार मे प्रभु हैं, इसे ब्रह्मरन्ध्र कहा है।
इसे ही गुप्त द्वार कहा है

साईंदास श्रवनन सुनि नीके। हरि जसु सुनो सुष चाहो जीके ॥
सलोकु–नैन कानि सभ भागो है, प्रेम नाहा सुनि नेह।
साईंदास दरिसन हरि का सभ माहि है सुनि बिन आनंद न देह ॥

८०

नैन पसारि रूप हरि देषा। नैनन माहि भेद हरि लेषा ॥
नैन निरषि चले मगि माही। वस्तु निरषि जानि मन सुषाही ॥
नैन निरषि सकल बिधि सूझै। बेद पढनि नैननि ते बूझै ॥
नैन निरषि भला बुरा पछानै। नैन निरषि हरि को जसु जानै ॥
साईंदास नैननि की बानी। को जनि जानै श्रद्धा गियानी ॥
सलोकु–गुप्त श्रवनि नैनन कहे नासिका कहिन बिगयान।
साईंदास रे नर सुनि मन मे धरो प्रेम प्रीति लैहो ठान ॥

८१

गंध सुगंध लेति ही रहे। तांका दहि बिउहार न दहै।
लेत सुगंध हर्ष बहु मानै। आनन सुष परिसन्न पछानै।
मानो बिरिछ[1] मिलयो जलि धारा। हरिआ होत संगि ले परिवारा।
मानो कुसम षिरयो मेरे भाई। हरिपवदिन तिन दीयो उघिराई।
गंध लेत बहु सुकिच करायो। और लेनि नार्पार ठहिरायो।
कहा भआ जो ऐसा कीयो। अति सुगंध गंध नै लीयो।
साईंदास तै भाप सुनायो। प्रेम भाउ कछु नाहि दृढायो।
सलोकु–सति गुरि नाम मंत्र दीयो[2], कीनो निभर बिनास।
साईंदास भौ चूका अनिभै भयो, होयो सहिज प्रकास ॥

८२

सति गुरि जबिही मंत्र द्रिडायो। सकिली मनि की भीत चुकायो।
जबिही भीत चुकी मेरे भाई। दुभदा सहिजे दीयो हराई।
जबि ही दुभदा मिटि गई मनि ते। पांच दूत भागे तब तनि ते।
गए दूत नगर सुषु पायो। निर्भौ होय सभ लोकु बसायो।
गृह गृह माही मंगल गायो। मगिन भैया सुष सहज समायो।

---

१. बिरिच्छ<वृक्ष।
२ साईंदास जी की मुक्ति—गुरुमंत्र द्वारा।

मुपि द्वारे हरि के गुनि गावे। हरि रस माला सदा झुभावे।।
जो बोले सो अंम्रित बानी। मुप द्वारे हरि नामु विपानी।।
हरि का नामु सदा मुप भापो। प्रेम पिआला अंमृति चापो।।
असथन भवित्र ही रोम द्वारे। सोहं शबिद सदा उजिआरे।।
नाभि दुआर में पविता रहे। सदा सदा हरि के गुन गहे।।
मुपि भापित जनि मुक्ता होवे। साईदास मुप सागिर सोवे।।

जबि इंद्री द्वार मैं ठहिरते, काम भोगि सुप मान।
साई दास तिरीआ अतर सभोगही बहु विध हो गलतान।।

८३

जबि इंद्री मनि मथन करावे। होइ व्याकल सुध विसरावे।।
मदि माता परि-धर्न[1] गिगाई। सूझति माति पिता नही भाई।।
गुर जनि वेद सिमृति विसरायो। मतिवारा मदि दिष्टी आयो।।
नैनन माह भयो अधआरा। भूलत विसिर जनि हारा।।
प्रथिमे वचन सो दीयो विसराई। जबि मतिवारा होय विपु पाई।।
हरि का भजनु तविही भुलानो। दारा सो चितु बहु विध मानो।।
साईंदास हरि दीयों तजाई। रे मठि तैं कछु समझ नि पाई।।
सो०—मूल द्वारे आइयो सहज भयो मन माह।
साईंदास जोगि ध्यान जनि उलिटि परियो मनि माह।।

८४

सहिजे मूल द्वारा सरिही। जो सरिही दुरगंध निकरिही।।
जो कछु सहिजि माह होइ भाई। सहिजे सहज सहजि बनि आई।।
सहिज समुद्रि ज्ञानि कहीजे। गुरि परिसाद राम रस पीजे।।
एते गुन हरि ताह जो दीए। तांको कहा विसारो हीए।।
निसवासरि तांको चितु दीजे। हरि सिमरन आलस नही कीजे।।
कनिक कामिनी मैं उरिझायो। मनिमथ[2] सो हेत बढ़ायो।।
मिथ्या रूप करि निहिचे जानो। सात्र कहो करि मनि मैं आनो।।

---

[1] परिधर्न=पर स्त्री।

[2] मनिमथ <मन्मथ कामदेव स्वर भक्ति

आठ एक घरि ताक चडावो। दसिवा द्वार कपाट षुल्हावो।
विना नैन गुर सिप मनि जीजै। गुरि प्रसादि आलस नहीं कीजै।
जो गुरि मार्ग नाह दिपाए। तौ लौ बात कहा सुध पाए।
जत्रि लगि दीपक करि नही होवे। तवि लगि वस्तु अगोचर पोवे।
गुर मतर दीपक करि जानो[1]। बांको करि लै राहु पछानो।
जो गति आपनी कीआ लोडो। साई दास तब भ्रम मृग मोडो।
जवि लग मनि सोधे नहीं, तबि लगि भ्रम करि जान।।
साई दास मृग पसु जो वनि मैं फिरै, चडति नहीं निर्वान।।

८५

जवि लगि मन सोझी नही पावे। तवि लगि मनि दह दिस भरमावे।
जवि लग सांध सग नही करे। तवि लग भ्रमता भ्रमता मरे।
जवि लगि हरि गुन नाही गावे। तवि लग मुक्त न कविहूं पावे।
जवि लग आत्म चीन्हे नाही। तवि लगि धृगजीविनि जगि माही।
जवि लगि तत्त नि रिदे वसावे। तवि लग मुघगि महादुपि पावे।
जवि ते तत्त सकल घटि जानो। साई दास प्रभु अपुना मानो।
सलोकु—मूर्ष मनि अज्ञान तू, हरि सिमरन चित धार।
साईं दास चडिते पदि निर्वानि मैं, प्रेम आदि वीचार।।

८६

रे मठि मनि किउ समझ नि आवे। कहा जनिम तू वादि गंवावे।
काहे मदि मतिवारा हूयो। विष्या फल मै पच पच मूयो।।
कहा हाथ कछु तुमरे आयो। जो हरि नामि रिदे विसरायो।।
कहा भया विक्ष्या उरि भायो। कहा भया जो मान बधायो।।
कहा भैया सिर जटा बधाई। कहा भआ जो मूंडि मुडाई।।
कहा भयो मिरगान उढायो। कहा भया वनि षंड सिधायो।।
कहा भओ मुप वेद बतायो। कहा भया जो जोग छनायो।।
कहा भआ जो कान छिदायो। कहा भआ वाभूति चडायो।।
कहा भयों प्रथिवीपति भयो। जु हरि को नाम नि मनि मे लियो।।
साई दास सोंई परिवान। गुरि का सविद घटि लये पछान।।

---

[1] गुरुमत्र को दीपक की उपमा दी है

रे मन हरि भजि लीजिए, तजीए मान गुमान।
साईदास प्रेम भावि सुप पाईए होइ न कविहूं हान ॥

८७

हरि का नामु सदा चित धारो। गुनाबादि हरि नाह विसारो॥
सुप सागिर हरि नामु ध्यानो। पर्म मुक्त गति तवि ही पावों।
नामि निधान सदा सुपिदाई। रे जनि हरि का नामु सहाई।
हरि प्रसादि सुप होवे तनि को। कलिपना मूल न व्यापे मनि को।
अनिहदि नामु निधानि विहारी। सुषि सागिरि हरि हिरदे धारी।
कौलापति दुषि नासन नामा। घटि घटि माह रहयो विसरामा।
साई दास गोविद गुनि गावो। प्रेम भाउ चित माह बसावो।
मनिमथ जविहो नाथयो, सहिज भयो मनि माह।
साई दास तीन ताप संताप सभ चूके दुषि कछु नाह॥

८८

मनिमथि[१] जविही नैन निहारे। तीन ताप संताप निवारे।
निर्ष रूप सहज मनि मानो। हर्ष माह सुप आनदि जानो।
प्रानि जीवि गोवर्धन धारी। पलि पलि छिनि छिनि में बलिहारी।
मोह मविद सदा धुन करति हो। अलिवरि ज्युं फुन[२] लुभद पडति हो।
कुमम रूप[३] जवि नैन करति हो। हिरदे ओर न आन धरत हो।
ताको धरि मस्तक गुर देवा। ताते प्रगिट भई जगि सेवा।
सुरि नरि रिप मुन सुप जनि पायो। तानि काल दर्सन को आयो।
दर्सग निर्ष भयो हैराना। अश्चर्ज[४] बाति नही जाति विषाना[५]।
अगिम अगोचरि भाष सुनायो। जिन बूझआ तिन ही सुष पायो।

---

१. मनिमथ < मन्मथ = यहा श्रीकृष्ण भगवान् के लिए आया है। श्रीमद्भाग[वत]
मे भगवान् श्रीकृष्ण को काम का अवतार माना है।

२. फुन—वैसे इस ग्रन्थ में फुन शब्द पुनः के लिए आया है। पर यहां फुन
फुल्ल = पुष्प से है। सम्भावना है कि लिपिकार फुल्ल के स्थान पर '[फुन]'
लिख गया है।

३. कुसमरूप—यह शब्द भी भगवान् श्रीकृष्ण के लिए आया है।

४. अश्चर्ज < आश्चर्य।

५. विषाना < व्याख्यान > बखान

षेचरी[1] पद जाके मनि वसे। ज्ञानि पदार्थ षिन मै नसे।
आप कहे कहा सुने न भाई। षेचरी पदि सो रह्यो विल्हाई।
जवि षेचरी पदि मनि माही लागा। ज्ञानि पदार्थ तिन ते भागा।
समझति नाहीं क्या समझावे। साई दास तत्त सविद विल्हावे।
हरिजनि[2] सोई भाषिए जिह घटि कपिट नि होय।
साई दास जिह घटि कपिट न होवही सदा सुषी नरि सोय।।

८९

हरि जनि के मनि सोई भावे। आपा तिआगे नीच[3] कहावे।
नीच कहावे तौ नौनिध पावे। जौ निध पावे सुष सहिज मिलावे।
सहिज मिलानो जवि ही भाई। नगिरी तसकरि[4] मूल नि पाई।
तसकरि तविही त्यागे जाई। सतिगुर मिल जवि बूझ बुझाई।
अतिर सोध लीआ जवि तवि ही। अति गभीर राता जनि जवि ही।
ससा सोक व्यापे कछु नाहीं। वहु निध पाई सुष सहज मिलाही।
ससा सोग नि कबि हु पावे। जबि ते दुभदा मनि मिट जावे।।
दुभिता चूकत है फुन वांकी। हरि सगि प्रीत लगी है जांकी।
हरि सो प्रीत अधक जवि लाई। सभ मो अपिनी जोत दिषाई।।
जवि ही जोति मिले सग सभ ही। उलिटि पडो हरि होयो तबि ही।।
साईं दास जिस आप बुलायो। मुषि आनदि अनंदि समायो।।
सो०—अविनी नाम निधान हरि, जिह सिमरनि गति होइ[5]।
साईं दास बिना नाम भगिवांन के और नहीं है कोइ।।

९०

सिमरो नामुनिधानि विहारी। कौलापति त्रिभवनि दातारी[6]।।

---

[1] खेचरीपद=अविनाशीपद—जहां खे शून्य मे रमण करने वाले मुक्ति शून्य वास का ही नाम है। वहा ज्ञान की आवश्यकता नही।
[2] 'हरिजन' (प्रभु का भक्त) की परिभाषा उसका लक्षण दिया है।
[3] नीच=नम्र।
[4] तसकरि <तस्कर=चोर—काम, क्रोध, लोभ, मोह आदि चोर है।
[5] प्रभु स्मरण से ही गति (मुक्ति) मिल सकती है।
[6] 'दातारा' शब्द यहां 'दाता' के अर्थ में आया है। 'दाता' √दा धातु से 'त कर्तृवाचक प्रत्यय (तच) से बना है। पजावी मे इस तृच् कर्तृवाचक प्रत्य के लिए आरी का प्रयोग मिलता है जैसे लिखारी लखक

धूरन नामु सुप देवन हारा। सकल सरूप ताहूं सिर भारा।
आपि एक अनेक दिषायो। जिन समझियो तिन आप लषायो।
अपिना आपि आप जिन लाख्यो। हरि रस अमृत निज परिचाख्यो।
हरि रस अमृत जिनही पीआ। ताको सति गुर क्रपा कर दीया।
सतिगुर किरपा ताहू धारे। रतन ज्ञानि जिन लीया विचारे।
जाके घटि मेय भयो उजिआरा। सो जनि प्रेम सो सदा षुमारा।
उजिआरा घटि नाहूं हूआ। जो नरि जवि ते जीवित मूआ[1]।
जीवित मूआ[2] सोई जानु। जिन ने मारा अपुना मानु।
अपिना मनूआ जिन ने मारा। सनि गुरि मंत्रु रिदे विचारा।
साईं दास सहज घरि मांही। सिमरो हरि सताप मिटाहीं।
कुसम रूप सुप सहजि मे निर्पयो रूप अचभ।
साई दास नैन अतिर निरपयो मानिस जनम दुर्लभ ।।

६१

मानिस जनिभ दुरलभ जो पायो। विन हर सिमरन वादि गवायो।
जवि लग कुसम रहित सगि वेला। तवि लगि होता रूप सुहेला।
वेल सो तोड डार जवि दीआ। औरि रूप निर्षत छिन लीआ[3]।
कुमलाना फिरि काम न आयो। डारि दीयो धरि राष मिलायो।
तैसो रूपु मानस को भाई। पुन्न कीए तैं देहरी पाई।
इसि देहरी को सुर नरि ध्यावे। जतिन करैं तौ भी नहीं पावे।
इहि प्रजोग हौ जतन करावे। देह पाई तै भगित कमावे।
रे सठि तै कछु मत्त[4] नि आवे। आवर दा सभ वादि गवावे।
सो समझै सो उलिटि पडीजे। साध सग मिल हरि जसु कीजे।
एहि समा फिर हाथ नि आवे। आलस करि करि जनमु गवावे।
भजि मनि राम नाम सर्नाई। तिह प्रसादि दुष त्रासु ना कोई।
सिमृति वेद पुराण सुनावे। समझि देष गुरि भाष सुनावे।

---

1. जीवित मूआ = जीते जी मरना साधक का लक्षण है।
2. यहाँ जीवित मूआ की परिभाषा दी गई है।
3. नश्वरता मे कुसुम को उपमान चुना है।
4. मत्त < मति।

समझ देष मनि मै जो कह्यो। तांते सत्त कछु अविर ना लह्यो।
उमिग उमिग जसिहरि का गावो। दुभदा मनि ते सकिल मिटावो।
जवि ते दुभधा मनि मिटि जाई। सहिज वैकुंठ सदा सुधि पाई।
साईदास सिमरण हरिकारी[1]। और तिआगि हरि सनं तिहारी।
सलोकु–प्रथिवीपति जवि होइयो कहा भयो मेरे मीत।
साईदास जवि लगि राम ना जानयो कसो निर्मल चीति।

९२

कहा भया प्रथिवीपति भयो। जवि लगि राम नाम नही लयो।
सकिली प्रथिवी भई दुहाई। कहा भआ कहु मेरे भाई।।
सकिल जगित ने सीसु निवायो। महाराज करि नासु बुलायो।
भांति भाति के महल उसारे। हाथी घोरे वहु विस्तारे।
सैना अधिक लै संगि फिराई। कनिक कामनी देख लुभाई।।
अति समै कछु सगि न जाई। माति पिता वनिता सुति भाई।
जवि रविसुति ले फांसी डारे। मुगदरि सेती सीसु प्रहारे।
रुदनु करे करि हाथ पछोरे। हा हा कर्त चलित नही जोरे।।
तज ऐ कहा रहिआ सभ पाछे। संगि नि चलिति बिना गुन आछे।।
बिनु भगिवान सकल विध वादि। साईदास गोविद करि याद।
सलोकु–निविली कर्म कमायो कहा भयो मेरे वीरि।
साईदास जवि लगि मनि सोधे नही चंचल चपल गंभीरि।

९३

निविली कर्म कहा भयो करियो। सानि गुमानि रिदे मै दीयो।
आपस को करि साध कहायो। हरि का नामु ना रिदे लिआयो।
जगति माह पसरी प्रभताई। महा कठन वहु जतन कमाई।
अतिर बाहर आने धरी। कठन तपस्या साधन करी।।
बाहरि अंतिर माही डारे। निवली करम कर ततिकारे।
इहि विध कीए मुक्त नही होवे। जवि लगि दुभदा मनि नही पोवे।।
विन भगिवान सकिल विध वादि। साईदास गोविंद करि यादि।।

---

[1] हरिकारी=हरि ब्रह्म (ईश्वर) बनाने वाला।

सलोकु—मूड मुडाय कहा भयो जवि लगि मनि न मुडाय।
साईदास मनि मूडे मुड मुडीए इसिविध मूड मुडाय[1]॥

६४

मूड मुडाय कहा जु भयोही। जवि ते मनि न करोध गयोही॥
मनि नही मूड मुडायो। भेष बनाइ जगति दिषिलायो॥
मूडे मूडे कहा कछु नाही। मनि मूडे मूड सहज मुडाही॥
वैरागी होवनि उठि धायो। मानो मृगि वनवासा पायो॥
बनि मैं मिर्ग रहति कछु थोरे। कहा जाति वनि दौरे वौरे॥
विनु भगिवान सकल विध वाद। साईदास गोविद करि याद॥

सलोकु—कान पडाय कहा भयो सिही उर न समाय।
षिथ उडाई कपट की जुगत न जोगि कमाय॥

६५

कान पडाए दर्सन करियो। मनि नाही चीन्हे परियो॥
नाथ नाथ मुष भाष सुनायो। अताकर्न नि हेत वधायो॥
भेष धरचो फुन कर्म विसारचो। नाथ नाथ फुन नाम चितारचो[2]॥
मनि चाहै कछु और करे। परि घरि मूसन[3] सों चित धरै॥
अनाहदि सविद न नादि बजायो। हीये मत्र गुर नाह सुनायो॥
षिथा क्षमा नि मनि पहिराई। कानि पडाय कहा भयो भाई॥
पत्तर सहिज विचार नि कीनो। डडा हाथ ज्ञानि नही लीनो॥
भाउ वभूति अग न लगाई। गुटिका पौन समाधि न लाई॥
पषिडी कला वबेक ना कीयों। मुकंद[4] परस सुष सहिजे दीयो॥

---

१ कबीर से मिलते जुलते विचार—
केसन कहा विगारिया जो मूडे बार बार।
मन को कहा नही मूडिये जहा भरया विषय विकार॥

२ पाखडी साधुओ की यहां निन्दा की गई है। वे कान फड़वाते हैं। मन का व नही करते। साधुओं का भेस धारण करते है। मुह से नाथ नाथ कहते हैं किन्तु मन मे कुछ और ही सोचते रहते है। दूसरे घर चोरी करने की ब सोचते रहते है।

३. मूसन < मुष्णाति = चुराना।

४. मुकद = श्रीकृष्ण—मुकददास साईदास जी के गुरु।

सोह पदि की वाति जु पाई। उलिटि विचारयों आप सुझाई।।
विन भगिवानि सकल विधि वादि। साईदास करि गोविद यादि।।
सलोकु—केसि बधाए सीसि पर मनि ना बढाई प्रीति।
कपिटि भक्त मनि मै धरी धरयो नि हरि सो चीति।।

९६

लिवि न लगाई केश बधाए। उभी भुजा करि जगि दिषलाए।।
मोन गहे मुष वचन न भाषी। करि पषड अन्न नाही चाषी।।
दधि ले अहार फलाहर करिही। मंकरि रूप परितक्ष जो धरिही।।
रूप धारि जगि कों वस आने। मूर्ष जगि क्या उत्तर जाने।।
निर्ष रूप हरि सकल लुभाए। बाकी मनि की वाति न पाए।।
मुक्त न होन कपिट मन कीये। जवि लगि साच न धरया हीये।।
विन भगिवान सकल विधि वादि। साईदास करि गोविद यादि।।
सलोकु—अगिम निगम की बात सभ जान करो बीचार।
साईदास मन मे क्रोध नि राषीए मुक्त होत ततिकाल।।

९७

अगिम निगम की बात वीचारो। करि बीचार रिदे नही धारो।।
मुषि भाषे मनि ना ठहिरावे। वेदि बके वकि रिदे न लिआवे।।
चतुर्परबीन आपस कों जाने। दूसरों को सरि आप नि माने।।
कहा जो हम सरि कौन कहावे। मानि गुमान रिदे में ल्यावे।।
जगि महि हमसर कौन सदावे। वेद पुरान सभ भाष सुनावे।।
मानि महति मै भइयों गलताना। रिदे विषे धरि मान गुमाना।।
पडति नामु कहाविन लागो। मानि महित के घरि अन्नरागो।।
सूषम पडै कहै जग माही। अविगति गत कछु कही नि जाही।।
वेदि पडित ही भर्म भुलाही। निगिम वाति कछु रिदे वसी ही।।
वेदि कहित हरि भजन करीजे। तनि मनि अर्थ गोविद के दीजै।।
सर्व माह भगिवान विराजे। पसि विहग मै आप समाजे।।
इहि विध तौ मनि माह न आने। आपस कों उत्तम करि जाने।।
विनि भगिवान सकल विध वादि। साईदास गोविद करि यादि।।

सलोकु—जती[1] नामु जगि मैं कहे इंद्री वस करि नाह।
सांईदास रूप कामिनी देष के आतम को भरिमाह ।।

९८

कामिनी रूपि जो निर्ष लुभाही। मिथ्या नाम सो जती कहाही ।।
मान महति जो बस नही आने। नामु जती मुषि झूठ वपाने ।।
द्रिढ करि रापे नही इद्री तांई। कौन जुगत ते जती कहाही ।।
ध्रिग एह जनिमु विना हर वानी। जवि लग अध न होता ज्ञानी ।।
करि विवेक इद्री वस करिही। गुरि का सविदु पड्गु[2] ले लरिही ।।
विना सविद जो सती कहावे। जो झूठी मुप वात बतावे ।।
विना भगिवान मकल विध वादि। साईदास गोविंद करि यादि ।।

सलोकु—सुनिहो साधो प्रीत करि अतर गति लिव लाय।
साईदास प्रेम प्रवाह सदा वहे वहुविध नीके नाय ।।

९९

प्रेम प्रवाह वहे घटि मही। यामै भेदु भेद कछु नाही ।।
समझि विचारि रिदे जो करिही। गुरि का सविद ले पचन लरिही ।।
अनिभै पदि सो रहयो मिलाय। गुरि प्रसादि सदा गुनि गाय ।।
गुनि आगिर भगिवानि नहारे। साध सगि मिल सदा षुमारे ।।
नैननि माह षुमार सदाही। बिना षुमारी कविहू नाही ।।
नाम रता मतिवारा होय। बिन मदि पीते सुध मति षोय ।।
हरिरस माता जबिही भयो। अनिरस तबि ही ते तजि दयों ।।
हरि रस माता ओर नि जाने। भाषे कहा जु नाम अघाने ।।
नाम अघाने भूप नि लागे। नाम अघाने दुभिदा तिआगे ।।
नामि रिदे जाके मनि वसे। सहिज सुमडिल रसि मै रसे ।।
साईदास सुष सागर माही। सदा सदा सुप सहिज समाही ।।

सलोकु—जो जो सरिनी साध जनि करिते तिआगि सभ माहि।
सांईदास जगि भीतिर सोभा मिले दरिगा होय परिवानु ।।

---

1. यति>जती यहां इसी जती की व्याख्या की है।
2. षड्गु=खड्ग=तलवार।

१००

सुनिहो साधो बात वीचारो। तसिकरि पंचा को परिहारो ।।
ब्रह्मि अग्नि मनि माह जरावो । दुभिदा मनि ते सकिल चुकावो ।।
आपि सहिज मिल आप लिषावहु । धर्न अकास आप मह लियावहु ।।
धरिनी को जलु अकासे धायो। सोह पदि मैं निज चितु लायो[1] ।।
ससा सोक सकल मिटाई। साधि सगि जवि होवे भाई ।।
बिन साधि संगि ज्ञानि नही पावे । विन गुरि कैसे बूझ बुझावे ।।
विधि अकर तविही प्रगिटाइयो। साध सगि सहिजे ही पायो ।।
जतिन कीए कछु होवति नाही। तटि तोर्थ चौसठ भरिमाही ।।
वीज बोय फल ऐसा कीजै। विना बीज फलु कैसा लीजै ।।
जौ लौ बीज न धरिनि बीजाई। कैसे फलि विनु बीज उपिजाई ।।
वीज बोइ फलु लीना भाई। विना बीज फलु ना उपिजाई ।।
ऐसे विध अकरि की वानी। विना अंकर क्या ब्रह्म पछानी ।
ब्रह्म पछाना तवि ही जाई। ज्ञानि आंच लागे मेरे भाई ।।
ज्ञानी अंचि कैसे करि लागे। सुभ लगि मति अज्ञान तिआगे ।।
अगियान मति कैसे तजि दीजै। इकि नीके विचार करीजे ।।
भली भाति सुनिहो चितु लाई। विना बीजि फल ना उपजाई ।
कथा कीर्तन श्रविन सुनि धावहु। गृहि कुटवि कार्ज विसरावहु ।
दैआ धारि सेवा चित कीजे। मिहिनित करि काहू कछु दीजे ।
हरि जनि वासु जहा सुनि पाई। विलम नि करीयो ततिषिन जाई[2] ।
जहा साध मिल ज्ञानि विचारे। नाना विधि करि वाति उचारे ।
श्रविनि धारि वाति सुनि लीजै। हरि रस रसना के सुप पीजे ।।
जो जो कहो मनि ठहिराई। समिझ विचार रिदे मैं आई ।।
जवि सुगंध सभि हूं मैं आई। भूल्यो आनि सुगध प्रगिटाई ।।
ऐसे हरिजनि बचनि कहिन है। जगित माहि फुनि कोउ लहित है ।।
जवि ते ज्ञान रिदे वसायो। अनेक वीचारि रिदे मैं आयो ।।
सभि विधि को जवि जानन लागा। मिटि गियो तिमर भांन जवि जागा।

---

१. यहा योग की युक्तियो का कूटात्मक वर्णन है।
२. यहां हरिकथा और हरिजन की सेवा के महत्त्व का वर्णन किया है।

रहिता रहिता सभ ते रहियो। गहिता गहिता जवि हरि को गह्यो
हरि जो उलिटि दिषायो आप। अमि तोरयो गुनि आगिर जाप ।।
रचि दूत तवि वस करि लीने। अबुद्धि अज्ञान तिमर दूर कीने ।।
बिना ज्ञानि कछु करिन न पावे। थकित होय चरिनी लपिटावे ।।
सूरा होय कायां गडि जीते। साधि सगि मिल वस गति कीते ।।
पायो ब्रह्म लप गति भाई। उनिमनी माह रहियो समाई ।।
अपिना आपु जो दीयो विसारी। सहिज समाध जो लषे मुरारी ।।
सांईदास जननि सो जाने। गुरमुपु लपे लप ब्रह्म पछाने ।।
दो०—जानि बूझ बूझे सकल कहि जो कहा नि जाइ।
सांईदास नैन विस्मम रसना थकित पगि हारे अलिसाय ।।

१०१

जानो कैसे भाष सुनावो। कहो तवी जो कहिना पावो ।।
जिहि नैनन करि रूप निहारा। चिहनि चक्र सभ घटि मै धारा ।।
रूप रेप जो कछु सो भाषे। अविगति गति वहु वाही लाषे ।।
सो तो नैन रहे विसमाय। अश्चर्जही कछु कह्या नि जाय ।।
अदिभुति वाति निरिष विसमाय। इहि प्रजोग विसमाद समाय ।।
जो नैननि विसमा पर होहै। नैन निर्प रसना जो कहियो है ।।
रसना थक्त भई अधिकाई। कही नि जाय प्रभ की प्रभिताई ।।
मडिल मगिन भयौ नही भाषे। अंति समे विधि रसना लाषे ।।
नैनि निर्ष रसना उचिरावे। विन रसना कहा भाष सुनावे ।।
जविही नैन रहे अलिसाई। पगि थकत जो रहआ उरिझाई ।।
रसना कहा जो भाप सुनाई। उनि को कछु पलु ना विसराई ।।
निश्चल घरि जवि वासा पायो। आविन जान सकलि बिसिराओ ।।
निर्भौ नगिरी मै पायो वासा। चूक गियो रवि सुति को त्रासा ।।
मगिन भयो निर्भै पुर माही। परिस जोति मंडल अलिसाही ।।
सहिजि सुमडिल जाय अलिसाना। भरिम चूको मिटयो आविन जाना
बसे तहा अनिभै पुर माही। मनि मै त्रास त्रास को नाही ।।
त्रय गुनि ते जो भआ निआरा॰। अनिभै परस्यो भयो उजिआरा ।।

॰ तीन गुणो से रहित होने पर ही मुक्ति। गीता में श्रीकृष्णजी ने भी यही कह
है—'निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन' २।४५।

अभै किडरी को जु वजावहु। प्रेम भाव फिर आप जसु गावहु।
मतिवारा सुध बुध नही काई। कहा भरिमु जवि आपि दिषाई।
निर्प आप सकिल भ्रमु त्यागे। सुपि मंडलि आनंदि मै जागे।
हर्ष माह जनि आनद पायो। निजि घरि मै जवि जाय समायो।
रहियो समाइ सहिज घरि माही। सहिज समाध सदा मुक्ताही।।
साई दास ईसरि जो जांने। गुरि प्रतीति निहिचे मनि आने।
दो०—तरिवरि सो फलु परिजयो तरिवरि जाइ समाय।
शविद आतिम परिकासीए आत्म शविद मिलाय।।

१०२

तरिवरि बीजि मै जाइ समाया। तरिवरि सो फुन फलु उपिजाया।
अज्ञानि तजे सो रहे मिलाय। तत्त ज्ञान सो रहे समाय।
रैन दिनस एक करि जाने। अरिस परिस जे हित करि माने।
जैसे शिवि शक्त मिल रहे। तां मै अतिरि कौना कहे।
ज्ञानि विज्ञान एक घरि माही। दीपक जोति वसे सभ माही।
राम रमियो ऐसे मेरे भाई। सभ मै अपुनी जोति दिषाई।
कहा ज्ञानि प्रकास भयो है। वही निकटि निकटि करि गहियो है।
समिता उपिज रही घटि तांको। निर्ष आपि समिझयो हरि जांको।
ताहू गुरि मिल अलप लपायो। साईदास सहिज घरि आयो।
दो०—अटि पटी वाति अपारि है अटि पटि होवे जान।
साई दास मतिवारा सुप जो रहे विन निर्षे परिवान।।

१०३

अटिपटी वाति अटि पटी होई[1]। इसि अटि पटी को बूझै कोई।
नगिर वावरा लोकु सुजान। कारजि करे सहज सुष मान।
कविहूं नगिरी दिष्टि न परिही। कविहूं तरिवरि जिउ करि फरिही।
देष रूप रहियो उरिझाइ। विन पगि पहुचे सो पहुंचाई।
जो जा बसे फुनि निकिसे नाही। वाविरा होत रहित सुध नाही।
आविन जाविन ते वहु रहे। निरिभौ नगिरी निज घरि अहे।

---

१ कूटात्मक बाते यहां कही गई हैं। यौगिक प्रक्रिया को बताने के लिए प्रकार कूट बाते सभी सत कवियो ने कही है।

मनि औरे रसना ठहिरानी। निरिषति विना नैनिन हरि बानी।।
कोटि सुन्न नगर अदिभुत होई। कहा कहो अविगति गति होई।
काचा कोटु दुआरे दस जाके। पांचि भए रषिवारे तांके।
रहित पचीस पांच के संगी। उमिग अभी सदा मन रंगी।
सो लाषाई देह दुआरे। चकिर बाउरा सहित सवारे।
बाविन किंगुरा है तिस घरि के। तसकरि फिरते निस दिन डरिते।
वसित लोक करि पगि सुधि नाही। चिहिन चक्र ते बाहर आही।
रसना तारा बासि कछु नाही। रूप रंग चिहिन अन्दिसाही।
करित कहा फुनि रहन न होई। आपे हरि आपे है सोई।
साईदास गूगा जो भापे। बिन भगिवानि गति कोई नि लापे।

नगिरी के विवहार सुनु विसम होति मनि माह।
साईदास रहित अनंदि विनोदि मै दुभदा ते आलिसाव।।

आनंद सदा कछु नि वियोगा। पर्म वसंति सुधि आनदि लोका।
आप आपि इनिही कछु पाया। सुति दारा अति वंधन माया।
षान पान कछु लेन न देना। नाहो अविगुन नाही गुने बपेना।
ना कछु रूप सरूप अरेपा। ना कछु चिहन चक्र तहा देपा।
ना कछु मीरि मलक सुलिताना। ना कछु ब्रह्म ना पौनि धियाना।
ना कछु निर्मल मैल पछाना। ना कछु ब्रह्म ज्ञान ध्याना।
ना कछु धरिन अकास दिपावे। रवि ससि कछु दिष्टी नही आवे।
ना सुगंध गंध तहा आही। ना मुष बको जो आप सुनाही।
ना आतम परिमातम कोई। ना कोई वेद उपारजि होई।
नाह पदिमनी संकर विष्णु। नाही सीत तहा कछु न उष्णु।
साईदास तहा जो कोई गयो। आपा आपु सकल तजि दयो।

दो०—बसे सहिज अनंद मैं विसिर्यो दूजा भाउ[1]।
साईदास आपे मिल आपे भयो कछु कौतिक कह्यो न जाय।।

---

1. ब्रह्म प्राप्ति की अवस्था का यहां वर्णन है। वस्तुतः वहा विरुद्ध धर्मों प्रभाव है। इस बात को साईदास जी ने इस रूप में कहा है कि—एक तो होवे दूया—(एक कहूं वे दो हैं) दोय होय ता एक बखानो। इसलि कह उठे—"दो एको एको दुय कहो" (दोनो एक है और एक ही दो वस्तुतः ब्रह्मजीव का अभेद या भेद कहना अति कठिन अतः—"ना क कहिया ना माप्या जावे

१०४

अभ मिले क्या कहे कहावे। तति सति सम करि रहे रहावे।
पौनि मिले पौन हो सोई। माटी मिल माटी ही होई।
जागृनि होवे मिल जागृत हूआ। एक कहे तो होवे दूया।
दोय होइ तां एक बषानो। एक कही ता दूजा जानो।
दो एको एको दुय कहो। तौ दूजा इसि माही लहो।
जो नही कहो तो अति बौरावो। जो मुष कहो तो कहि न आवो।
ताते एह भला मनि आवे। ना कछु कहिआ ना भाष्या जावे।
होइ रहियो विसमादि तिदाही। निरिपत आप अलिसाना जाही।
सुनिन वकिन ते भयो निआरा। मिटी आपि जवि कीयो पसारा।
परिस रह्यो द्रगि लागे वाही। कहो अचरज जिह नाही।
साईदास कहा मुष भाषे। आप लषो लषि आपा लाषे।
दो०—कहिन सुनिन गुरु है कहा कहेगौ कोय।
सांईदास हर भजि भर्म चित टारीए जो कछु होय सु होइ।।

१०५

हरि ते विना न कोइ सहाई। कहा कहो गति कही नि जाई।
तुम सभ विध विध राषनहारे। अघि[1] तोरत करि देत सुधारे।
हौ मतिहीनि सर्न जो आयो। पनित उधारन विरद सुनायो।
गही ओटि रिदे अति भारी। तुम किरिपा गति होइ हमारी।
भुजा गहे की लाजि धरति है। निस दिन सेवक दीन करति है।
होय क्रपाल्न क्रपानिध धारहु। आपुना जान चित नाह विसारहु।
जिन अपिना आपि आपु नराना। तिन को विनती न दरो भुलाना।
जो टारो जनु टरे न दरि ते। कहा कहो होया प्रति घरि ते।
दीनि दियाल क्रपाल दिआला। करि किरिपा जन ताह सभाला।
साईदास जो कछु हरि भावे। वेग करौ तौ किउ उकिलावे।
सलोकु—अपिने नाम की लाजि है पतित उधारन हरिनाम।
साईदास निसवासरि छिन पल घडी सिमरो आठो जाम।

---

१. अघि<अघ=पाप।

१०६

तुमि विन कहा कौनि गुनि आगिर। त्रिभवनि नाइकि सभि विधि आग
उत्तम मधम्य नामु तिहारा। सकिल सुरि नरि रिदे जनि धारा।
विगिसित आत्म हरि गुनि गाई। साध सगि मिल आनंदि पाई।
गुरि किरिपा ते साध सगु पायो। पावित ही जसु वहु मुक्तायो।
सुने वेद जो भाप सुनायो। जिनि सुनियो तिनही जसु गाइयो।
जनि किरपा ततिकाल करीजे। किरि किरपा अधिक नामु जनि दीज
आठ जाम जपि हरि को नामु। ओरि नही है हम कछु काम।
तुमरी भगित होय चित माही। विष्याबुध हम मति विसराही।
दीनि वचिन हमरा सुणि जीजै। सांईदास हरि गुन मन दीजै

दीन दियाल समरथ हो तुम जाचक सभ को।
सांईदास तुम जाचक परिवान है जिह घटि परिगटि होय॥

१०७

हे केशवि हे किरपाल, हे ईशनि ईश।
हे दियाल तू दैया करि, जगि जीवनि जगिदीस॥
तुझे छाडि कांसो कहो औरि नि कोई थाउ।
तू दाता सभ यगित का, सभ मै तेरो नाउ॥
कौनि मात्र मै कीटकी हो किन कीटो माह।
केते दुआरे रिप मुनी सिध साध फल माह॥
भागी हरि दरि पाईए, विन भागा कछु नाह।
भावी भाग्गे विच करे, तुझ भावे सोई करेह॥
मुक्ति ना पावे नाम विनु ते तटि तीर्थ भरिमाह।
साईदास जे प्रभ किरपाल होइ ता पतित भी मुक्ते जाह॥

इति श्री बाबा सांईदास जी विचिरने' ज्ञान रतिन संपूर्ण सुभं भवि

विचिरने—यहा लिपिकार का दोष विरचने होना चाहिए

श्रीः

उों सति सरूप बाबा साईदास जी नमः

वारि श्री भागिवत की ।

रागु असाविरी

कई जुगि रह्यो ध्यानि मो, कई जुग उदिम की
सांईदास जिविही किवही वसरयो, निश्चे जानो जी

पौड़ी—१

जुगो जुगतिर वरित्या हरि बैठा धुंधुकारे।
तवि सूरजु चन्दु न होता नारंजगु कंमु सवारे।
नाभि कौल ब्रह्मा कीआ, तैं बैठा वेदु वीचारे।
ब्रहिमंडि चतुर्दस रचिआ, फोडि फोडि कीआ निआरे।
धर्त अकास विछोडि के सिरि कूर्म दे धरि धारे।
सुति दलां दलि साजआ, वनराइ अठारा भारे।
नौ षंड कीति मेदनी, सति दीपि तहा समिसारे।
सिध सते ऊतपिजआ, बंध पाहन ते पीरि पारे।
वर्न विहीनी साजीआ महिमे ऊच संसारे।
सूर्जु चंदु उडिगिने दुइ दीप करे आधीआरे।
जाती चारि उपाईयो सूद्रि बसि ब्रह्म षतीआरे।
इति विधि जगुतु वणाइआ पुनु पापु कीआ विवहारे।
कंसराइ किस लषी अनरूपु अपारे

दोहिडा—

ध्रिति वेद बांनरिपु ले चल्यो निर्भौ तुमि निरीकारि।
सनिमुष भूभोऊ भेकरि जगपति करी पुकारि।

पौड़ी—२

दैतु होया अविलावली, षसि लै ग्ञा[१] वेदु सका
ओंकारि दरिगा[२] जगिपति सो ब्रह्मा जाइ पुकारे

---

१. ग्ञा=गया।
२. दरिगा<दरिगाह।

मेरा प्रभु सति उधारण आविसी औतारि आवे दसि वारे।
प्रिथिमे होया मछ रूपु दैतु पकड सुमुद्र मझारे॥
वेदि चारि ले आया धीरिजि ब्रह्मे धारे।
कूर्मि दा रूपु धारि के मथि कैटे दैत सघारे॥
दैतु मनोरथु वेद उनु वैराहु कीआ दडाने।
नारिसिंघ दा रूपु धारि के हरिनाकसि नघी विडारे॥
रलि बावनु विध दउन परिसराम सहस्रे मारे।
लंकि त्रिकुटी ओडीआ बधि पाहन सागिर तारे॥
दसि सिरि रावणु काटियो नभौर छेदउनि न सपारे।
कंसिराइ सो वेला मथरि[1] मझारे॥
दो०—याहि भ्रम भाई भाई डगि मगि डोलत चीत।
कहा कहो मैं कृष्ण जी तुम सभना हो मीति॥
पौड़ी—३
सगि लीए सभ देवते हरि दर्गा धरि[2] उकिलावे।
वटी वधे देवते तुझि वाझो कौण छुडावे॥
आसा नीद न सुत्या उसारी रैनि विहावे।
समिझे ना सिमिझाआ मनि कह्या नाहि सुघावे॥
कृष्ण जी कस इही कर्म कमावे।
दो०—धीरजु धारो जगिपती सुरि सगि कर्त वीचारि।
साईदास प्रिथमें हरि पहि जा वसुधा करि पुकारि॥
पौड़ी—४
मुक्ति पुरो अविलावली मथुरा पुरि है कसु राजा।
वध्या वली[3] न जाणदा मनि माणे करे सु काजा॥
वंदि पिवाए देवते असुरा दा करे निवाजा।
सुरि वझनि दैत मनीअन कंसराइ अवेही साजा॥
विणाहु अयो कंस राजा॥

---

१. मथरि<मथुरा।
२. धरि—पृथ्वी।
३. वध्या वली न जाणदा—कंस बला है। उसे वध्य अवध्य का कोई ध्यान नहीं है इसलिए मनमानी कर रहा है

दो०—अभिमानी अति गर्व महि वहु दुषि देव सहाइ।
गर्व प्रहारी सांईदास सिर परि सूझत नाह।

पौड़ी—५

मुक्ति पुरी अविलावली अभिमान भरिया हकारी।
जपु तरिपण अरि दान पुनु हरि भग्ति सुदैत विसारी।
वेद न सुणता भागवत कथा पडति कहिनि वीचारी।
नेमि धरिम न जाणिही नही वर्तु रहे निराहारी।
नर्क स्वर्ग नही जाणदा अहिमेउ करे धरि धारी।
वेटा उगिरिसैण दा कसिराइ वडा अविचारी।
पापु कमावे पैसवे सिरि सुभु सुनाह मुरारी।
कसराइ दहिसिर उतो तेरी वारी।

दो०—कहियो किष्ण वसुधा सुनो जो मै कहो सुनाइ।
मुक्त करो सुरि सकल की असुरनि मारि चुकाइ।

पौड़ी—६

हरि के सेवक जेतने सभ कस राजे डरि पाए।
वसुधरीआ भारी भई सो भारु न सक चाए।
ने वि विजीरो कोई कस राजा समिझाए।
कसु राजा मथुरा पुरी जुधि षेमे ताणावाए।
वंन्ह ल्यावेआ किआ असुरेरा जो वावाई।
द्रोही राजे कसि दी भण जा कोडि सवाए।
गहि भरिआ राजु पूरआ चिति अंदिर गर्वु हढाए
गहवहि ले रावणु ज्ञा अभिमानी सीम कटाए।
कसराइ दिन तेरे भी षोहे आए।

दो०—दीनानाथ दिआल प्रभ दुषि दूर्कनि विसवास।
औगिन मेटें गुनि करे पूर्न गुरि साई दास।

पौड़ी—७

हरि कहिआ धर्ती सुनो इकु केहा बचुनु हमारा।
तेरा भारु उतारिसा सो न्याउ करी तुम्हारा॥
सभ छिडाई देवते जो वदि परे वीचारा।
उदिर जु आवो देविकी नदग्रामु निवासु हमारा।

सुणि न सवियो कंसराइ सिरि सुभुस वधा पारा।
सो ऐग्रा वचुन हमारा ॥

दो०—इहि मित रची सकलपनि सुरि सगि कीयो वीचार।
निश्चो मारत कंस को भूमि उतारनि भारु॥

पौड़ी—८

ठाकुर कीनी ग्राग्या जदि ग्रादि 'कग्राहे दोऊ।
लछमनि दुर्गा सदयोने कसमारनि नू नरिषेउ॥
जो जो ग्राहे देवते बसि जादिव जनम सुभेउ।
प्रथिमे जनिमग्रा देवकी सकर्पण नामु सुचेतु॥
फिर उदिर समाराा रोहणी वलिभद्र महा वलिदेउ।
दुरिगा उदिर जिसोद के सो कन्या नदि गृहि सेउ॥
ग्रापि ग्रावे प्रभु देवकी सो ग्रावित नाथु सुचेउ।
ठाकुरि ठाटु रचाइग्रा कसि मारिनि नू निरिपेउ॥
राया ग्रौतार ग्राई सभ देउ॥

दो०—विध संजोग ग्रकर मिले जो कछु होवनि हारि।
साईदास मगल देविकी-वासिदेव वहु तुम कहो वीचार॥

पौड़ी—९

वीवाहु चलाई वासदेव सा वेटी सूरि सैनाणी।
नालि चलाया कसिराइ वीरुध्या रापविरि कराणी॥
मथुरा सभे जा ज्ञा कसि गगिनो सुनीयो सुवाणी।
वाणी सुगा के कसराइ करि खूह लई करिमाणी[1]॥
क्रोध वहुति लै चलग्रा धोगा काटिन देविकी ग्राणी।
ग्ररिदासी करे सुवासदेउ देवकी परी धमाणी॥
तू किउ क्रपिग्रो कसराइ इकि देह विपानी सानी।
उदिरि जु ग्रावे देवकी सो पडे देह कसानी॥
कंसा बनिता मारी नाह जसु क्या वजे जगत्र कहानी।
प्रिथमे होवे देविकी सो देवागा तै ग्राणी॥

---

१. करिमाणी—किरपाण (तलवार)

दो०—बालु भग्रा वसुदेव के वचुनु वीषारियो नाथ।
अति उछगि उरि मै धरियो दीयो कस के हाथ॥

पौड़ी—१०

प्रिथमे जनिमग्रा देवकी सो कसे ग्रान दितोसु।
ग्रनंदु होया कसराइ हसि बालक सो छडियोसु॥
कुछिड करि के बासदेवि सो बालक घरि पडियोसु।
तिनि ही नार्दु ग्राया कस ग्रासणि ग्राइ वैठोसु॥
नार्द शास्त्रु सोध के सभ कसे जोगु दितोसु।
उदिर जु ग्रावे देवकी रिपु तेरा राजु जितयोसु॥
वचुनु गवायोसु ग्रापणा बालु मारियोसु।
चित धरियोसु कसराइ तिति वेले विगाहु थीयोसु॥

दो०—जो कछु भाणा ग्राजु तै इहि पाछे कह्यो वीचारु।
मदि ठाढे ब्रह्मसुति कह्यो वेद बीचारि॥

पौड़ी—११

भौ ऊचे मथुरापुरी चडि बोले जोइ सुसारा।
पंडति पूरा सास्त्री दे जो इसदे वीचारा॥
देवां कुल ले ग्राया वासुदेउ तितेही बारा।
उदिर जु ग्रावे देवकी कसराय पिकाल तुमारा॥
सुणि कंसे होई सारा॥

दो०—निगम वचिन तुम दिज कहा कस पूछे ततकाल।
जो कुछु होसी सो कहो जित विध मारो बाल॥
बीचारि वचिनि ग्रबि कहें ग्रष्टि गर्भु रिपु ताहु।
साईदास धर्नी वपनपति कहो जनिमे मारो जाहु॥

पौड़ी—१२

सारि जु होई कंस नू सभ पंडति घरी सदाए॥
सास्त्र सोधे पडितो सभ पुस्तकि सुध पाए॥
चारे वेद पुकारते दिन तेरे मदे ग्राए।
राउ परे रो रोहया वासिदेव देबिकी वदी पाए॥
नौ दरिवाजे रास कर भैण भुणुह्या ढकाए।
ग्राजु बुरा कीग्रा कंसराए॥

दो०—वासुदेव अरि देउकी जो गरास होई वदसालि।
बालक जमनि जोनि जे सो कसु मरे दरिहालि ॥

पौड़ी—१३

पापी मारे पढि नाल हरि करे नही प्रतिपाल।
वसुधरीआ भारी भई हरि होवो तुसी दिआल ॥
आउ कंस देषय काल ॥

दो०—जो जो पाछे सुषि दीआ देव भूम महाराजि।
साईदास तुम दुषि निवारन संत को राषु विर्द की लाजि ॥

पौड़ी—१४

अधी रानी अष्टमी तिनि वेले रोहण सारी।
तिति ही वेले आया यादिव वम मुकदि मुरारी ॥
आवित ही विरथा भए मनि मोहनि लील्हा धारी।
पूछन लागी देवकी हमि है कौन भाग विहारी ॥
तुमरा दर्सनु पाआ हम पूर्व भगत सभारी।
दरिवाजे मुक्ते होहिगे सभ मुर्त पोई पतिहारी ॥
जमिना होगी त्रिमिल जलु हरि चर्नी लागनिहारी।
तवि जमुना जलु घडि सी जलु वीथनि देसी सारी ॥
दुर्गा उदिर जसोद के सो कन्या आदि कुआरी।
मुझि गोकल ले जाइयो ले आयो तुम हंकारी ॥
हौ वालक दा रूपु धारिआ पीतंविर चक्र पसारी।
मति भर्म भुलाने होइ जाहु वासुदेउ देवकी है महतारी ॥
सुणु नदान सुण देवकी इउ चितवलि वालि हमारी ॥
राधा इउ बोल्यो मुषो मुरारी ॥

दो०—याहि बचिन मोहनि कहे दहि राधो चीति।
साईदास वालरूप वपु धार्या प्रगिटि भए जगिदीसि ॥

पौड़ी—१५

देवकी सिधा वामदेउ इकु केहा कहे वीचारा।
देवकी नविही बैठे पहिरू नविही चडे किवाड़ा ॥
लषनि असा जाधा कंसराइ जो देवन सारा राह उपरे रो रोहीये।
उठि पौनो वहुति विकारा वसुदेव सिधा देवकी इकु केहा कहे वीचारा ॥

एहनादे की हथि है एह आप लीआ औतार।
सो प्रभु वालुक जनिम्या सभि संति उधारिण हारा ॥
सो प्रभु वालुकु जनिम्या बैकुंठ भए जैकारा।
सो प्रभु वालुक जनिम्या त्रैलोकि करे सुधारा ॥
मधिवनि इसि ले जाहु तू सुण के सवचिन हमारा।
राया बदि इसे दी पि

दो०—कति न भूलो याह मतु ले चलु सारंग पान।
साईदास छूटे नही किवारि जवि वहु तुम वंदि मै आनि

पौड़ी—१६

डरिदा जेहा वासुदेउ लै चल्या सारगिपान।
दरिवाजे मुक्ते होहगे सभ पाहर सौंदे जांन ॥
मथुरा मझे जा ग्या मनि सुधि कीनो तितथान।
बूद नि परिती स्याविरे जलु वर्षनि चारि इद्रानि ॥
सेसु सहंसि फुनि तानि के सिष ऊपरि रहहा तान।
जाइ पहूता जमिनि तटि जलि देष डरिय भैमान ॥
फेरि अपुठा चल्या सिध पडो सुति तिनै दीनो दान।
जमिना आइ मगु धारिआ ले जाहो गुणानिधानि ॥
जाइ पहूता नंदि ग्राम दे बालक लीनो कानि।
राया सग हलधरि ते सारगपान ॥

दो०—घोषि वचन सुनि लाल के चले देवि पगि मोरि।
साईदास गोदि पसारे देवकी रुदनि करे करि जोरि ॥

पौड़ी—१७

कुछडि करि के कन्या वसुदेव जु दई दिखाई।
जमिना के तटि आया फिर मगु दीआ जमिनाई ॥
दरिवाजे तबि ही भए फिरि पाहरुअ सुध आई।
रोवणि लागी जु कंनआ जवि देविकी कुछडि आई ॥
पुछणि लगे पाहरू क्या वालु भया रे भाई।
है इजी होई कनआ वसुदेव जा षबिर सुणाई ॥
षविरि दिती कंसराय नू कंसु तदि षडिआ आई।
क्या वालु भआ रे भाई ।

सलोकु—आनंदु चित सभ कंस मनि प्रगिट भए जादोराइ।
साईदास वासदेव अरि देवकी सुपि सो नीद वढाय॥

पौड़ी—१८

हथि षडा केसी पिलरी वदि साले कसु आग्रा।
आइ मिल्या वसुदेवि देवकी अभिमानी अदिर अभडवाग्रा॥
अरिदासी करे सु देवकी वडि राजे कंसे राग्रा।
भाई मुझ को दीजै दक्षरणा इहि कंन्या करों न घाग्रा[1]॥
पग्निलई कस कंनिग्रा अपिराधी पापु कमाया।
किसे थो छुडिक जाह कंन्या सजोगा वचुनु मुणाया॥
रिपु तेरा गोकल आया॥

दो०—कंस मानु तवि हारिया जवि सुनियोमु गोकल वाल।
साईदास वासदेउ अरि देवकी तुम वचो हमारे काल॥

पौड़ी—१९

छुडिक गई जवि कंनग्रा कंसि चुका माया मोहु।
कसि पाई गलि पगिडी अपिराधी हों ताउोहु॥
कसि कटाईग्रा वेडीग्रा लोहा चूगर कटे लोहु।
राया बगवते कीया वछोहु॥

सलोकु—आवितीर जदेवस भगवान भूति भवानहं।
क्रिता न ज्ञान भरिमान तां नह वेद विचरिते॥

पौड़ी—२०

बधाई बजी नंदि के।
वेद चारो अनंद थीएन, हरिषे होए देवते॥
सति साधू जसु करेन, जतु सतीग्रा अरु सिध्य साध
ते बैठे क्रष्न जपेन।
देपनि सभ महूर्ती मुनि अषे द्वादस एन॥
ब्रह्मा विष्णु महान सुषु सो बैठे वेदि ढूढेन।
सुरिपति सरिण इंद्रापुरी स्याम सुदिर नू चौर ढुलेन॥
नार्दि किंनरि सगती षटि दर्सन रागु करेन।
सरि वदिर अरि करि रवाब जसुमंडल वहुति वरोन॥

---

१. घात < घाग्रा।

ढोल ददामे सरा नालि सो भेरी धू लाहेन ।
किग मृदग उपगि संगि सणि अंबृती ताल वजेन ॥
नारी मगल गाइआ धनि ते बालक सगि नचेन ।
हरिख होए नदिराइ षटि दर्सन धनु षरिचेन ॥
नंदि जिसौदे वसुदेव देविकी अनदि वारि थीएन ।
वधाई क्रष्न दी सहिज सुणेन ॥

दो०—अभिमानी अति गर्वमैं वहु दुपि देव सहाइ ।
गर्वप्रहारी साईदास सिरि परि सूझति नाह ॥

पौड़ी—२१

सैना सभ सदाय कै कंसराइ संमूरति सारे ।
चगे चगे जोध सभ ते आइ वैठे मतिआरे ॥
कंसि राजा सैना सिघा मुपि वचनु कहे विच प्यारे ।
सभना आषे कसराइ इको वालिक नू जाइ मारे ॥
तिस हौ भला निवाजिसा ठौरि दूजी राज हमारे ।
तेही गला होईआ जु चारे वेदि पुकारे ॥
कस मतं सुणे परिवारे ॥

दो०—गर्वु छाडि सभु कंस जो उहु गर्व प्रहारिन हारि ।
उग्रसैण मतु भाष्यो तुम मनि मै करो वीचारि ॥

पौड़ी—२२

कसा आयो सुझेओकडिता तिसि नाल नि अडियो जाइ ।
जरेसी मुचुविग्णाहआ मारे सी चढिदाइ ॥
चारे वेद पुकारिदे हरि मथुरा लैसी आइ ।
कंसा तेये राज नू घुणु लगा षादा जाइ ॥
राया सुष लोढे ता वंदि छडाय ॥

दो०—जो मनि मनिसा मानीए जो माने मनिसा होय ।
साईदास कौल कडारी ना थीए तवि सुषु कैसा होय ॥

पौड़ी—२३

कंसा मनि मति जेही चेतिए सुषु तेहो जेहा होवे ।
तिवेहा ही चलु पाईए जिवे हा वीरजु वोवे ॥

अषी वेषनि चलीए पै मरिए टिवे टोए।
चगी मदी ले वासिना सुण लैये विचहु लये॥
दुरिगध मदी बुरी वासुना चग चंदन चोए।
जो विहु षाए जाण के विणाहु सिरे परि होवे॥
पिछले कम विणाहु के अभमानी राजनू रोवे।
कसराइ पछुताण कछू नि होवे॥

दो०—गर्व छाडि सभ कस जी उहु गर्व प्रहारन हरि।
उग्रसैन मतु भाक्ष तुम मनि मै करो वीचारि॥
जिउ जानो तिव ही करो जित कित सिमरण सारि।
साईदास नाम हीनि गुन वाहरा ध्रिगु जीविन ससारि॥

पौड़ी—२४

साईदास सुणाया वीचारु।
सुणेह्या करिणा कला जहा जो वाहिरा भुजि सागिरि
जाइ नि तर्नी॥
जो ममता मारे मति देसो क्रोधु नही चितु धर्णी।
सुना जाइ नि मारीए जो आइ पवे भजि सर्णी॥
जे पिउ होवे देवणा पुत्रि सिरे परि आवे भर्णी।
जलि मीना थलि सारगा अंकर वधक वस मर्नी॥
जैसो होइ पराक्रमी सिध समरथ कविहू नि हर्नी॥
कसराइ अभमानु नहीं कछु कर्णी॥

दो०—कंसा पाछे भया सो क्या भया पूछो वेद वीचारु।
साईदास जो जो पाछे गर्व्या ता को कीयो प्रहार॥

पौड़ी—२५

वेदि जिन चारे पडे दैतु वडा संषासुर सोई।
मधि कीटि मनोरथ छेदि उनि हणरूपु कहा मुणियोई॥
सिरि पथीआ हरिणाषसे जिन दिष्ट नि आवे कोई।
नरिसिघ दा रूपु धारि के प्रहिलादे इद्रु कीउोही॥
वाविन दा रूपु धार के वलि राजा जाइ छलिउोई।
षत्री सभ सषार के सहस्रवाहो धेनु भुलिउोही॥

दहिसिर जे वडि मडिलीकु सिरि लंका दे थीआ डिठोई।
कंसराइ दिन तेरे आए ओही ॥

दो०—कंसा तूं अधक नही जरासिंध ते दूरि।
जाकी मदति आयो कालजमनि पलिक नि मकियो धारि।
वे ससिपाल त्रिनेत्र था रुकमनि गियो जु हारि।
सांईदास जिउ रघिवसी राविणे तिउ यादव कस द्वार।

पौड़ी—२६

कंसा मनि विच बहुत समिझीए समझाइ सुने बोरावे।
रावुणु सीआ विलावली जाइ जमु सुवधा पावे॥
वासंतुरु धोवे कपिडे भाइ भग्नी अछे ल्यावे।
पौणु देवे वाहारीआ ससि सूरि रसोइ कमावे॥
षाई जुसुरारंथ है को सागरपाउनि पावे।
वनिता जिस मदोदरी सतिवंतो पापु नि भावे॥
नंदनि जिसको एक लपु सवा लपु नाती देय चावे।
आपि नाति ब्रह्म देवता दस लप आविदो पावै॥
सुष रही संजीवनी तिस पडिदे रावनि रावे।
रथु जु सदादामनी सो गगिने चमिकावे॥
सैना जिस अषूहणी जुधि जोध रावन समिसावे।
विहु माता क्रोध दले सो सक्रोपाण ल्यावे॥
लंकि त्रिकूटी वेष के मनि अंदिर बहुत वफावे।
दैंत भुलावनि तिति थानि जे जानकी बन्यन ल्यावे॥
राया सो रावणु पछोतावे॥

दो०—पदिम अठारा सगि करि चडे सु रघिपति जोरि।
सांईदास पाहन तारन मारि रिपु आनी सीआ वहोरि।

पौड़ी—२७

हरिजी गज दलि मेल के जा बाधां तवि द्री सेतु।
जलि पाहनि तवि हो तरे गौरतनि भएतु लंका दा गडु
तोडिने जोधे जुझनि षगिसहेतु॥
पाविस जेहे स्याम घटि दलि वरिष दे वेर केत।
गजि वेडे नरि तुल्य है भय ते रुडि दे जानि वहेत॥

लका तोडी गडु लुटिआ दसि कटे मिल्या भेतु।
रावा जिण सीआ ल्याया खेत ॥

दो०—राविण नू कहे मदोदरी तेरी मति हिरी।
मय जान्या लका पुगी ग्रोरी श्रौरि फिरी॥
छजीवंतरि चढि गए माईरु आग्रा हाथ।
माईदास काहे रावण गजीए जाट मिलो रघनाथ॥
लक द्वारे थम्मगाल द्रोणवन जु पुटी जोर।
पुत्रि जमे जगिरथि दे सुधे मारि लि कोर॥
धडि दैना दे कटिग्रनि लक होई होई पड पड।
माईदास दसि सिरी काटे राविरा भई मदोदरि रंडि॥
जो जो ग्रावे सन्मिल मिन्न तासों श्रहि मति देनि।
कम नि माने माईदास ग्रमरनि की मति लेति॥

पौड़ी—२८

मनि मैले बाहर उजिले कंसराइ दिवानु लगाया।
सो अघासुर मदिश्रा वघासुरि सगि न दाया॥
जानि सुमलि मुरुष्टि के मनि मगिन मही धरि चन्न आया।
परिलवे ग्ररि ग्रपिभासरे कहु होगु तुम्हारा भाग्रा॥
चंडूरे ग्ररि चाडवे कैसी जोरि बहुते आया।
जमिला अर्जन पूतना संगि सी घरि अठारह राया॥
वच्छासुरि ग्ररि धेनि के सग चूढि त्रिपभासरि नाल सदाया।
सभना नू आपे कमगड कोही मारे नदणा जाइग्रा॥
पहिला बोली पूतिना श्रसुरेटी पड्गु उठाया।
दासी जे मरेवा बालुकु नंदि दा कै पूतना कै कस राया॥
ग्रहु वेला तेरा ग्राग्रा॥

दो०—कोऊ मंठल कोऊ बलै जिह निध मारो वालु।
माईदास सिरिवकीके प्रथमे खडियो कालु॥

पौड़ी—२९

मारिन सुंदर स्याम नूं पूतिना मधवनि जासी।
लै हलाहल घसकर ले ग्रसथनि उते लासी॥

जाइ पहूती नदि ग्राम जाइ नदाएे दिषासी ।
ग्रासुणु दितोसु जसुदा वडि महरी करि ग्ररिदासी ॥
माति जिसौदा छडि कौर किते कम सिधाएो ग्रासी ।
रोवण लगा लाडुला इकु लील्हा चलित्रु दिषासी ॥
उनि कंवकी पिछाहाऊ सटी उमि मूडि ग्रस्थनि दे सुषिवासी ।
दासी ग्रसथनि वदनि मुषि हरि रोक लैग्रा सभ रासी ॥
सिर परिने ढठी विकराल विहालि भई जगि हासी ।
पहिली लाविसु नदिन सोर मोहन दी पषेऊ नपासी ॥
राया प्रथिमें लें कस दासी ॥

दो०—व्रिजि तजि ग्राए नदि जी मिले देव के ग्रगि ।
सांईदास वेगहि आवहु मथिपुरी चलो राइग्रा संगि ॥

पौड़ी—२०

जालगि ग्राया नद जी मथुरापुरि दमके देरण ।
ग्राइ मिले वसुदेव देवकी दुषि सुषि कीग्रा वात्ता लेरण ॥
नदे ग्राषे वासुदेउ मथुरा तजो मभेण ।
ग्राम तुसाडे नदि जी कछु उठे उलिकावेण ॥
नदि चलाया जोत रथु चल्या उडि रेरण ।
ग्रगे रुधि पई मग पूतना रथु जादा थीग्रा दुषेण ॥
वकी विकराल विहाल थी तनु कटि कीतो ने छेरण ।
राया मुणिग्रो नें वालाजेरण ॥

दो०—जो कछु था सोई भया कह्यो जु वेद वीचारि ।
साईदास ग्राह वचन सुनि के सुने नदि चले पगि धार ॥

पौड़ी—२१

वालि लील्हा विच स्यावरे इकु हरि जी चर्तु दिषाइग्रा ।
सुकठि सपूर्न पूर के नदि राजे ग्राएा पजाइग्रा ॥
माति जिसौदा लाडुला नौरगु स्ये ते पाइग्रा ।
रोवण लगा लाडुला जसुदा चित कमु वसाया ॥
हरिजी ग्राण उसरिग्रा मनि ग्रदरि क्रोध वसाया ।
भजनु सकिटे दा होया भज सकटा चूरि गवाया ॥

जा लगि आया नंदि राउ रथु भन्ना ते बालु रुआआ
अचुरुजु भया अजि वासीआ सभ गोकलि पुछणि आइआ ।।
पोतिडिआ विच नंदि सोर मनि मोहनि चिलत्रु दिपाआ ।
आपि संत उधारनि आआ ।।

दो०—इकि मारी सुनी पूतना अरि रथु भंजनि कीउ ।
कस असरि भैय जानआ धसि धसि कंपयो जीउ ।।
कंसे पायो त्रिणावर्तु ले चल्या तंबूल ।
पविन चक्रि अलि करि चल्ले कीनो रूपु बबूल ।।

पौड़ी—३२

मारिन मुदिरि स्याम नूं असुरेटे बीडा लीआ ।
कसे बीडा धिन के त्रिण राय सिधा णहठीआ ।।
उनि रूपु कीआ विलोहणे धरि गगिने धारि उठीआ ।
मात जिसोदे लाडुला निवलि पीडे मैं दीआ ।।
ओकडि डिठा दैत सुति भुजि गहु अपिने वस कीआ ।
मथिवनि भौली पै गई कीन्ह नाही अचिरुजि थीआ ।।
सभ ढूढ़नि गोप गवारीआ हरि पाए थीय पतीआ ।
देपनि देतु निआत्या नरिवस ञा सणजीआ ।।
जगु नंदि तहा रच्या पदार्थु टिका दीआ ।
हरि त्रिणावर्तु भी लीआ ।।

—अविनाशी तूं प्रभु जगित गुरि सभ सुरि को परिनाम ।
सांईदास दर्सु दें तुम गर्ग जी ताहू वचनि परिवानु ।।

पौड़ी—३३

वद साला बैठा नंद सुर गर्ग स्वामी दर्सु दिपाइआ ।
करि जोरि करी तिहु वदना वसिदेव जु वचिन सुणाइआ ।।
व्रजि कुलि मह तुम जाहि जी नाम कर्म बालक वलिकाइआ ।
सतिवादी मुनि देवता नंदि ग्राम पहूता आइआ ।।
करि दडौति मिल्या मुन नंदि जी सिघासन छडि विछाइआ ।
चर्न पषाले जसुदा पादोदिक सीसि चडाइआ ।।
गर्ग पूछे देब को मुपि अपिने वचनि सुभाया ।
नंदि जिसौदा गर्ग देवि वह सास्त्र सुघिवाइआ ।

आगे कर्षण हलि धरे वलिभद्र सु नामु कहाया।
ठाकर केरे नाम देष गर्ग देव रहआ भरिमाइआ ।।
गर्ग स्वामी देष एक नाम सहस्र कु साख गाया।
कान्ह क्रष्न करि टेरआ मुषि सास्त्र कूक[1] सुणाया ।।
बैकुंठ सकल व्रजि आइआ ।।

दो०—विंद्रावनि के विछै का मर्म नि जाने कोइ।
साईदास एक पुतर को ध्यान धरि सोई चतुर्भुजि होइ ।।

पौड़ी—३४

नंदि रचाया नामकर्न भानु वणिया जाणु द्वादसे।
गोकलि गौआ मिलाईआ लेहधा षीरु परिसे।
रिष प्रकारि घ्रितार सगु पाकु पका कोटि बणसे ।।
सुरि नरि मुनि जनि देवते दिज ब्रह्म सग विगसे।
तहा दिजी अरंभणु रचया मुषि अहूति दिचे ।।
निशा शो जसुदा चषे गो प्रवेशु पच अवृति पाविनि असे ।।
भोजनि दितोने विपा नू दे दक्षणा चर्न परसे।
जसुदा आषे कर्न विच चिर जीवे लष वरसे ।।
अगे कर्षण हलधरि बलिभद्र सुनामु कु असे।
कान्हा नाम धराय के नदि राजा चित विगसे ।।
देषे जगा होंदिआ कंस भूरे ते नद विगसे।

दो०—प्रहिलादि की रक्षा करी हरिनाक्स दीओ विडारि।
सांईदास सो ग्रह प्रगिटियो नंदि के हसि हसि पेलत द्वारि ।।

पौड़ी—३५

राम स्याम दोऊ भया चलि षेलो मुषि वलिहारी।
तरिताल मृदि भछन कीए बलिदेव जु भुजा पसारी ।।
तिन वलु थभ नि सकियो जाइ जसुदा जाइ पुकारी।
जसुदा चली त्याग ग्रह तहा सनिमुषि मिले मुरारी ।।
ते माटी षाई लाडुले लै करि की मुष परि मारी।
वदुनु उघारि निहारि अति क्रोध भई महतारी ।।

---

१ कूक कहना संस्कृत क्वणति>कुणदि>कुदि √क्वण कूना पंजाबी)

हरि का आननु उमिडआ विसु[1] अंदरि मुष के सारी।
भै चक्रति होई देष के क्या वरिने अपरि अपारी ॥
राया मुष मधे धारिन धारी ॥

—इहि ठाढि वचिनि मोहनि कहे सत्त कमरि दोऊ वीरि।
साईदास दर्स पर्स मुक्ते भए भेटे द्वारि अहीरि ॥

पौड़ी—३६

वेटे दोऊ कुमेरि दे नलि कूमलि ते मनि श्रीव।
इशनानु सग कुआरि को नार्द आए उति ही तीरि ॥
उनि गर्वु कीया नगिना रहे औंर सभो कीउ पटि चीरि।
सरापु दितोने ब्रह्ममुति मृति मडन्नि जाहु सपीरि ॥
उधरणु साडा आपदेह वस पासो वलि भद्र वीरि।
जसुदा बांधे क्रष्न नू अभमानी ग्वार अहीर ॥
इऊ उधिरे दोऊ वीरि ॥

—द्वारि नदि ठाढे रहे वतस सग लै वालि
साईदास ब्रजि वानी विच स्याविरे तुम षेलनि चलो गुपालि

पौड़ी—३७

जमना के तटि स्यावरा ले षेले यादिवराई।
दधि वेचन चली गूजरी सिरि गागर लई उठाई ॥
जो ब्रिज की संग सग पुस दल सो लई सगाति वुलाई।
सभ चलीआ प्रेम मदोरीआ करितारि जु वाति बुझाई ॥
सुदरि स्याम हटिकीआ सा ठाढी सको नि जाई।
गिरि गागिरि अरु तक्र ते दधि वीटे मापनु षाई ॥
दो निस पै जाइ पुकारसा जहा भूपति है कंसराई।
समिझे नाही नदि सोरु सुणुनु देषी वनाई ॥
भूपु ऐसा है कसराई ॥

०—धरती जिवे वनारिसी मथुरा पुरिआ माहि।
जमे मरे जमद्रीअहि ते बैकुठी जाहि ॥

---

[1] विश्व।

कोटि मरणा के अष्ट धात मिले सुमेरे अस ।
साईदास बेटा उग्र सैरण दा पार्स भेटउो कस ।।

पौड़ी—३८

हनु हनु हते कस दी क्या कहे होवे तेरे ।
कूकि विपाजे कूकना क्या होसी ढिल पछेरे ।
सभे चलिया गूजरीआ अकुलाए नदाणे डेरे ।
जाइ पहुती जमुदा पै अति क्रोध बोलन हनिनेरे ।
जसुदा नद उलाहरणे ब्रजि बाल सषा अपु केरे ।
हौऊ तुझ पह जाइ पुकारोगी यहि झगिरा कसु निबेरे ।
समिझाइ जसुदा बालु आपणा जे कहे लगे मेरे ।
नही दूत कस आविनगे तेरे ।

दो०—तुम नही देप वर्जन करो श्रविन सुनोगी बाति ।
जाहु सषी ग्रह आपिने यही कहियो जिसौदा माति ।।

पौड़ी—३९

हरि जी सोए नीदि भरि दधि मथन करे नंदिरानी
तक्रति परि नौनीति चिति तवि मोहन गही मंथानी
गिरि सागिर अरु अहिपती त्रैलोक भए हैरानी
दीपक हानिउ सुविद सुन सति कहु केते चरित्र वषानी
दधि भंजनि तवि तोडोउ निमिति माषन की पैछानी
ग्रहि देष माता हैरानी

दो०—जोगि ध्यानि आवे नही जगि भोग नहीं लेति ।
वांको गोकलि ग्वारिनी हसि हसि माषनि देति[1] ।।

पौड़ी—४०

वलिदा रूपु धारि कै आइ पडा जिसौदा पाही ।
वै लकिरी वै कांविरी वै गूजरि सगि सगाही ।।

---

१. तुलनीय—

नारद से सुक व्यास रटे, पचिहारे तऊ पुनि पार न पावे ।
ताहि अहीर की छोहरियां छछियाभर छाछ पै नाच नचावे ।।
(रसखान)

जसुदा हौई कोपवत हौ हारी निति उलाही।
हरि जी नठे देप के माति निवारो क्रोधु कि वाही॥
पकिडिनि कारन लाडले तिहि पाछे दोरती जाही।
जसुदा पकरिअ स्याविरा मुधि ऊपिर करिकी लाई॥
गोकलि सेली जेतडी ले बाधे ऊपलि माही।
दुइ दुइ उगिल मभ रही जो गोकलि सेली आही॥
राया विच सेली आवि सुनाही॥

दो०—वलि नार्द कपिलादि ऊधो दुह्न ववेकी गोधी।
कम्स रावरा ससेपाल पूतना इनि पाइ विरोधी॥

पौड़ी—४१

जसुदा चलित्र दिपाइओ विच सेली स्याम सरीरि।
उनि क्रोधि वहुते बांधआ अभमानी ग्वारि अहीरि॥
जमला अर्जुन दौ वही भ्रप दोवे आपमसीरि।
तनि मूमलि जा ठहिकया कलिधारी उधरनि धीरि॥
भजनि जुमले अर्जन ने कडि काडि दुहा समसीरि।
वेटे दोऊ कुमेर दे उधिरेही रम्मीरि॥
राया फलि पाए दुहा वीरि॥

दो०—जमिला अर्जनि की सुनी कंसि द्वारे वाति।
हठु नही छाडे साईदास प्रान न निकसे जात॥

पौड़ी—४२

आपु त्याग परितष होय करि ठाढे आगे जोरि।
होहु दिआलि क्रपालि जी मनि की दुभदा मोर॥
गुरा वाराी सो गाविदे हरि जी के भागि मथोरि।
करि करिमा सो रवि रहे मनु लागा साधा की उोर॥
राया वनि सुति की वरिषा भोर॥

दो०—जमिला अर्जन की सुनी कंस द्वारे वाति।
हठु नहीं छाडे सांईदास प्रान न निकसे जाति॥

पौड़ी—४३

करि वछासुरु वछ सरूपु असुरेटा कंस पठाइआ।
वालक हरि सग षेलते वछिरि के सग मिल आइआ

लील्हा धरि तब जान्या असुरेटे फदु रचाइआ ।
पूछ ते पकर आनदि कौर गगिनं तर लागि भवाया ।।
धरिनी धरि जो सटिआ सगि वसुधा के पछराइआ ।
टुकु टुकु होई सभ देह अजि लावनि मैं आइआ ।।
कस राय करि लागे मुक्ति सिधायआ ।।

पौड़ी—४४

जमला अर्जन भजे उनि कसे थेथीई कहाणी ।
अचिरुजु भया असुरेटिआ सुणु सैना सभ थहिराणी ।
धीरिज धरि तू कसराइ सतोषु करि तू गिरि सैनाणी ।
हो उसी वालिक मारसा नागि देह करि विसु धाणी ।
हौ आही सकल सवारआ जा आविनि गे मै थाणी ।
एह वडु कमु करे अघासुरु किनि कीचे एह कहाणी ।
मनि कंसे एहा भाणी ।

पौडी—४५

पासो जोधे कंसिराय असुरेटे बीडा लीआ ।
उरिग श्रूप करि धारिआ असुरेटे फदु रचीया ।
धरिनी धरि अकास ते अकासुरि वदुनि पसारे
सणु वछ आमणु गुजरा मुष अदिर यादम राए
असुरेटा अधरि मिलाइ ज्ञा सैना गोपनि के कहलाए
अति डेरघु होया मुपि मेध चरित्रु दिआया
वछि ग्वार उवारि उनि सो प्रीतमु है यादोराया ।
वतिनि गइओ तिति था लै बीडा जिथो आइआ ।
हरि जी अघासुरि मुक्त पठाआ ।

दो०—इउ अघासुरि पचाउनि जिनि कीने रूप भुअंगि ।
कसु नि जाने साईदास छीजित दीसे अगि ।

पौड़ी—४६

अघासुरि सुणआ मारिआ वाघासरि बीडा लीआ ।
हथिपछोरे कसराइ नि जाइसु पिछला कीआ ।।
कसे काले कपिडे षावणु पीवणु विसरि गिआ ।
कारिण वीरे आपणे वाघासुरि देसी जीया ।।
उनि विरिही वीडा लीया

पौड़ी—४७

जमुना के तटि लाडुला मनि मोहनि वछे चारे।
वगि सरूपु कीग्रा बघासरे ग्राइ ठाढा वनि मभारे ॥
सुणु वछय सणु गुजरा मुपि ग्रदिरि यादिम पाग्रारे।
मभ कछु जाणे लाडुला ग्रचेत सुगोप ग्वारे॥
ग्रति डीरघ होया लाडुला मुपि मधे कला पसारे।
दाडा दोवे ऊपाडिग्रा इकि सीस इक पगि धारे॥
पोटु जियो होउगिवे फिरि गोटु तिथाऊ मारे।
सारगि भूभे सिघ नाल सिधु केहा सुणु गुजारे॥
कसराइ विधवम्म भई दैतनारे॥

पौड़ी—४८

वन्हि दावा आया कौन रूप वनि मोह जु ग्रग्नि लगाई।
दहि दिस ते प्रगिटी ग्रगिन ब्रजिवासी कहे जु ग्राई॥
गोकलि सकिल पुकारिया तुमि राषो जादम राई।
पसु पषी ग्ररि कीटि मीनि ग्रकुलाविन ग्रपिनी थाई॥
हमि बोले नंदि लाडुला नैन मूंदो मेरे भाई।
नैनि मीटे ग्रगिन समाई॥
—या लीलहा मोहन करी सुनित सकलि ब्रजि लोक।
साईदास ग्रानंदि सुरि सकलि पायो कम वियोगि॥

पौड़ी—४६

ब्रह्मापठिग्रा देविलग्रा परितावरण मदन मुरारे।
तटि जमुना के ग्राइग्रा चित फंधक वेहा धारे॥
ब्रह्म वेद दुराउनि सण वछे गोप ग्वारे।
हरि जी तवि ग्रविलोकग्रा इह जगिपति कीने चारे॥
क्रप्न उठाई माया धरि ग्रविनाशी लीलहा धारे।
जिन्ही रंगी धेनि सुति धीए रगी गोप ग्वारे॥
गौऊ ग्रानदि हिल मिली ग्रत प्यारे।
नारी वालकि तिते रूप सुति माता बहु हितकारे॥
सो ग्रइसा मदिन मुरारे॥

१०—यहि लील्हा मोहनि करी प्रगिटि भए भगिवत।
साईंदास वालक षेले स्वर्ग मै जगिपति पायो अंत।

पौड़ी—५०

भए दिहाडे वर्ष दिन ता ब्रह्मा कल मल थीआ।
जमिना के आइआ वछि गूजरि देप भुलीया।
पुनिरपु[1] गआ स्वर्गलोक वछि गूजरि बैठ उठीआ।
लै तिनन हू को चलिआ लइ आइआ तिनहूं संगीया।
आइ मिलआ मेरे मोहने लजि माण निमाणा थीआ।
जे होवां वनि रेणका चलिदे[2] चर्न लगीवा।
वछि वाल निन्हा धनि भाग वडिभागि मुकरि लुटीवा।
द्रुम वेली तिन धनि भाग धनि कावरी कथ वसीवा।
जगिपति अंतु न पायो इहि चलित्र मोहन कीआ।
राया तवि ब्रह्मे थीआपतीआ।

१०—तुम पूर्न पारि ब्रह्म हम त्रिण तुछिक जीं
सांईदास कार्न कर्न समरथ प्रभ जो कछु कीआ सु कीं

पौड़ी—५१

सति वल भद्र गोप सुति ब्रिज षेलति स्याम मुरारी।
अति सुदरि फल पके ब्रजि वालक हितकारी।
ते वनि भूले सहिज मै फल तूट परे चुनि कारी।
तिहि सुनि धेनक आयो गधर्प की सैना सारी।
तिनिहूं उलिटि पलिटिओ निधरिने धरि उभारी।
चर्ना ते पकिड आनद सोरि इकि उलिटै औरु पछारी।
उतो वनो सुटिओने भै ढठा गति प्रहारी।
कसराइ फल आदे गोपग्वारी।

१०—जिह वनि नृप धेनिक वसे तिह वनि गोप ग्वार।
सांईदास द्रुम वेली नदि लाडुलै निभौ करी गुपाल।

---

[1] पुनिरपु > पुनरपि = दुबारा।

[2] चलिदे = चलते हुए।

पौड़ी—५२

राजा कसु महावली निति पापु करे नही सगे।
नेमु धर्मु नि जागिही चित रपे नही चगे॥
जो जो नाही धर्न परि अगिहोदे वारिजु मगे।
नालि अरि डदे सारिदूल कवेहा सुपु कुरगे॥
विरताहु आयो कस अगे॥

दो०—दैति द्रुपत अनि वहु कीए कम्स कविल की डोरि।
मांईदास विरद मुपि देन को प्रगिटि भए नदि सोर॥

पौड़ी—५३

वालि सपाई संग सभ मनि मोहनि गोदि[1] पिलंन।
वारी आयो आपणी ते वालक पेल करन॥
हरि जी गेदू मारआ त्रिच काली कुड परनि।
डरि दा काली कुंडि ते नहीं वालक जाइ मकन॥
कुसा लई हरि पुट के हरि नथण काली जान।
सहस्र फरणा पँ जा गए ते नारी वरिजनि॥
नेडा न आई वालिका सुरि किनरि अगिन सरनि।
क्रीडा चित मनि मोहने फनद के सीस तुडनि॥
यहि लील्हा मोहनि करी ते नारी चर्न लगन।
वरिषा भई महावली मथुरा पुरि कौल पडनि॥
सभे वंदी छुटीआ जो कस पवाईआ वदि।
काला दर्सनु पाइआ कंसि कुबिजा भागि थीअंनि॥
काली जलि ते काढ के राविरण के जाइ वसनि।
आया सति उधारिने नदि केरे ग्राम वसनि॥
कसराइ मथुरापुरी सुष वसनि॥

दो०—षगि पसु पषी पीविह जलु काली दह तिन नामु।
चर्न लाग अम्रतु कीआ सतनि पूरे काम॥
चाडो चाडी षेलते हरि सगि गोप ग्वारि।
वालि सरूपु करि आइआ प्रानि देत ततिकारि॥

---

1. 'गोदि' इस शब्द का अर्थ गेंद है।

पौड़ी—५४

जमना के तटि लाडुला लै षेले यादम राया।
वालिक दा रूपु धारि के परिलवु मिल्या बलकाया।
त्रिभवनि नाथ पछानिश्रा कौ दैत विरोधी श्राइश्रा।
जुगि कीने तिह् वालका उहु ह्लिधरि सगि जुराइश्रा।
वालक षेलनि चडी प्रथिमे ह्लिधरि चढाइश्रा।
वारी श्राई वलिभद्र दी चडि वैठो भारु सवाया।
ह्लि नि सके दैति तदि मिरजादा दूर दिपाश्रा।
सिरि परि मुष्टक मारश्रा दैतु मूश्रा हंसु सिधाश्रा।
इहि लाहा ह्लधरि श्राया।

दो०—नन्ही नानी वूद धरि जलु वरिषति वनि की उोरी।
साईदास गोपवाल सषा पेलते श्राये नदि किसौरि।

पौड़ी—५५

ग्रीषम रुति पीछे परी वरषा की श्रादि जिनाई।
लसि लसि चमिकै दामनी भिमि वूद वरसनि श्राई।
जगि जीविनि ह्रिषे भए पिक चात्रक टेरि सुणाई।
व्रजि के ह्रिषे लोक सभ मुषि निर्षत जादमराइ।
निर्ष निर्ष सभ दुष ह्रे श्रति श्रनंदि सो गुन गाई।
कसराय रुति देषी कौरि कन्हाई।

दो०—व्रजि वासी मिल सषा सभ जहा षेलति नदि लालि।
सरिदा रुति श्रति बहु वनी तुम षेलनि चलो गोपाल।

पौड़ी—५६

सरिदा रुति श्रति सुंदरि वनि सोभा श्रति क्या कहीए
सीतिल सुदिर जल पविन द्रुम वेलो ध्यानि सहीं पेहीए
मधिकरि भुनिकति पुसम परि ह्रि उोटि चर्न की गहीए
कोमल पांनि विराजिही वहु रगि वनाविन चहीए
राइश्रा रुति रूप देष नि रिवहीए

दो०—रुति ह्रि देषी स्यावरे मिले व्रजनि के लोव
साईदास श्रानंदि उपिजयों सकिल को पाउो कस वियोगि

पौडी—५७

सरिदा रुति अति सुदरी ब्रजिबाल बधू वनि आए।
वनि फुले आनदि सो जलि सुद्रिर भून सुहाए॥
त्रिग द्रुम वेली मवनि घनि हर्ष मु आनदि भाए।
निर्ष निर्ष हरि रूपि मो वहु लोचनि अति अघाए॥
सरिदा रुति स्याम सुहाए॥
—वनि कुजि जिह सघनि घनि तिह पेलत नदि को लाल।
साईदास लील्हा करी विच स्याविरे वंसी धरित गुपाल॥

पौडी—५८

एक समे नंदि लाडले मनि मोहनि वैन बजाई।
अस्थाविर गति जगम भई गनि जगम की इस्थरआई॥
रवि रथ थाके जलि पाविन पंगि मृग की सुध विसराई।
ते मोही ब्रजि नारिया पहिर उलिटे भूषन लिआई॥
काहूं वस्त्र लीए काहू न लीए काहू कंचुकी पाई नि पाई।
काहू एक पंष गुथे रहे काहू एक नि पष गुथाई॥
काहू एक नैन अंजुनु दीआ काहू एक न दई सराई।
काहू भरिता त्यागया सभ लोकनि की बात चुकाई॥
जैसी सी तैसी मिली मेल करी जु वांदी पाई।
जवि मोहन वैन बजाई॥
—वहु अविला मजिन चली कालिद्री के तीरि।
साईदास वस्त्र कर्षण करि लीए हरि हलधरि के वीरि॥

पौडी—५९

कर्नि सेवा सुरिकंनआ वर पाविह नंदि कसोर।
इश्नान कर्न तटि जमिन के सभ सषी आई करि जोरि॥
आए मदनि गुपाल जी सगि वालक नदि विलोर।
वसतरि कर्षण तदि भए जाइ बैठे कदम तरोर॥
नावे प्राती भुसमुसे सुनि आने मुरिली घोरि।
जाय देषे तहा नही क्या कहीए चले नि जोरि।
वस्तर देह मेरे मोहना सभ ठाढी ककत नि होरि॥

नगिना होइहा लै जाहु इहि मागी क्रष्न अकोरि
नगिना होय होय लै गईआ जलु त्याग अतररि की छोर
वस्तरि दीने किसोरि
ो०—आई नगिन सु ले चली वसु दीने नद नदि
साईदास इकि मुरिली इक दर्स पर्स भई जु आनंदि कदि
पौडी—६०
वछे चारे लाडुला मनि मोहनि वनि के मांही।
षुध्या चाये ग्वार सभ कछु मगे षाविरा ताही।।
हरि जी भेजे दिजा पहि दिजि देवरा देदे नाही।
भला किया दिज पतिनीआ हरि कीने लोप कि वाही।।
दिज पतिनी निर्भो करी क्रष्न क्रपाल तिदाही।
हरि आए आज्ञा माही।।
ो०—दिजि पतिनी निर्भे करी अनिभै मिले गुपालि।
साईदास प्रभ आगिर पूर्न प्रगिटि दिआल।।
पौडी—६१
नंदे आषे लाडुला मुप अपिने वचिन सुनाई।
जगु नि करिसो इद्र का इनि वाती कौन डराई।।
जगु करो जे इंद्र का हरि जगु निहफल जाई।
वालक परि गोवर्धने संतोषु करो तिस भाई।।
तिन लोका व्रजि वासीआ संपूर्न पाकु पकाई।
पकु संपूर्न पूर के तिस वालक नू पहुचाई।।
जो आंदा व्रजि वासीआ सो वालुकु लै मुह पाई।
नंदु पूछे करि वेनिती सतोषु भआ किउ भाई।।
लीलहा धरि तिह वोलआ कहु राजिन मैहक्या पाई।
वरुतदोनो होया इंद्र मगे लैदा जाई।।
नद स्याम मसलत लाई।।
ो०—वचन मान वसुदेव के जिह मानिति तेतीस
साईदास व्रजि परि वरिषे क्रोप करि तुम रायो जगिदीस

पौडी—६२

भेटि नि मलआ इद्र नू रथू हो रोपासा सारी ।
गहिर गभीरन पूरके धरि मेरी छुउ भारी ।।
चारे बेटे सदिओस जतु सावतु द्रोणु पुहकारी ।
चौहा रचाईआ चार घट पूर्व पश्चम उतिर दछनारी ।।
गगुनु गरिजे धरिन परि अति माआ मोहु अधिकारी ।
मूसलधारि वरषरा इहि क्रोपु करे अति गोप ग्वारी ।।
प्रभ गोवर्धन के उपिट के तल पानि दीये वनिवारी ।
वैन वजाई लाडुले षटि राग रगन मलहारी ।।
वरिपा भई महा वली दिन सप्ते रजनी सारी ।
गोकल की पति राषी उन व्रजि वस की पैज उवारी ।।
इद्रु पतीरा वेष आणु हरि अगे बाजी हारी ।
तदि भए गोवर्धन धारी ।।
–अविनाशी तुम पारिब्रह्म तुम ईसन के ईस ।
साईदास हम भूले तुम राष ले यगि-जीवनि जगिदीसि ।।

पौडी—६३

सुरिपति आए मानि तजि लागि चर्नन प्रेम वढाइआ ।
वडि जानआ उसि आप ते लघ दीर्घ देष जनाइआ ।।
वर्षन लागे पुसम परि अभ षेकुसु नंद रचाइआ ।
गोप वधू व्रज वाल सभ जसु जनिनी सीजोदो राइआ ।।
कसराइ इद्र लोकन द्वारे आइआ ।।
-कसा पुसप जल पानि ले दिज देव कर्तअ भषेष ।
साईदास दर्सन हलि केलि विषै हरि पूजा सदा विसेष ।।

पौडी—६४

निस उडिगनि सो सोभते नदिराइ सुमजनि आइआ ।
सुष आसरा सुता वरुणु पालु जलु डुलेते नीद जराइआ ।
साषी मत्र वेद का नदि पाह पहूता आइआ ।।
अतिरजामी जानिआ नंदि राउ प्याल सिधाइआ ।
व्रडि भागी वर्णु पालु था जलि भीतिरि दर्स दिषाया ।।
सुतु ताति छडाय लिआइआ ।।

पौडी—६५

जो जो साषी दसम की सो सता सुनित वीचारी।
था रचायो सुरास का मनि मोहनि मदिन मुरारी ।।
सुरि नरि देव गधर्व सुण मुनि ध्यानों छुटिकी तारी।
वेषिन मडिल आनदि सो तनि कांछे गोप ग्वारी ।।
मंदिरि तजि तजि आपणे आइ बैठे वनुहु मझारी।
गाविनि रगी आपिणी धुनि रगी रगि मलिहारी ।।
इक दे दे बुढिकी गाविती ब्रिज की त्रीआ वनि भारी।
इकि नाचिति इक गाविते आनदि भई विसु सारी ।।
जती जोगी तपी सकल तजि वैरागी वनि पै हारी।
मोनिदिगंवरि वारिनी संन्यासी अरि ब्रह्मचारी ।।
षटि दर्सन लालसा विसु लागी देषन हारी।
देषनि को नद लाडुला आनदि भई विसु सारी ।।
इउ रास रची वनिवारी ।।

दो०—गौऊ सुति अरि गोप सुति लील्हा करिल वलास
सांईदास मधिक वीच गोपी वनी अवि षेलन लागे रासि

पौडी—६६

दसिम सकंदे अतिरे मनि मोहनि रास रचाई।
नंद कौरि अरि स्याम तनि नौ जोबिन की चतुराई ।।
मोरि मुकिटि माथे वने लटिपटी काछ वनवाई।
भौहां अरि कौल नैन अरि मोतनि माल वलाई ।।
पीतांवरि असतक कुसम ग्रथ मगि मोभा कही नि जाई।
बीरी दातो पांन छवि कछु अदिभुति रूप दिषाई ।।
चद वदन छवि कौल नैन इहि सोभा वरिनी नि जाई।
त्रिभवनि नाथ निरंद गुनि निरंजन की विध पाई ।।
इउ मोहनि रास रचाई ।।

दो०—राजा को कछु सकल जगि तांकहि उपमा दीज
साईदास साध सरूपि तिह वर्णता चर्न रापु यहि जीज

पौड़ी—६७

नौरंगी लालु बुलाइआ कहु आविन सति सरभालि ।
कुसम-ग्रंथ सरिधनि षरी रुचि वेनी लटिकत नालि ।।
उरि कचिकी पटि चीरि सिर कटि बांधे नवे बंधाल ।
मारग नैनी चद मुषु सुकि नासक जैसी भालि ।।
श्रीफल कच अरु हेमतनि कटि के हरि गौन मराल ।
तिन अतर अवे नायका अति सुदिर रूप रिसालि ।।
तिन के ऊपिर राधका सो पिआरी मदिन गोपाल ।
आइ मिलआ मेरे मोहने प्रभ स्यामा स्याम तमाल ।।
संग सोभति नद के लालि ।।

पौड़ी—६८

ठाकुरि कीनी आगिआ सुरि किनरि गाविन आए ।
किनरी ताल रवाब डफ सो झालिरी सविद सुणाए ।।
तालि पपाविज अंवृती जो सुणिए तौ सुप पाए ।
सभना ऊपरि वसरी जो मदिनि गोपाल वजाए ।।
दिगि दिग ता थेई करे करि ताल चटाके पाए ।
ठाकुरि मोहे तीन लोक जसि वेद पुराननि सुनाए ।।
अस्थावरि यगम मोहीए नही अत न कोई पाए ।
सुरि मोनी शिव विरच अर ब्रह्मा निगम सुणाए ।।
वछि बाल अरि धेनु धुनि त्रिण दती गहे नि पाए ।
स्वर्ग मोहयो सुरि इद्रासण रथु सूर्ज का अटिकाए ।।
नाचित गावित षेलते व्रिज नारी सो चित्तु लाए ।
अतुरु राम का हिर लीआ संग राधा दुरब बजाए ।।
सौ अेसा त्रिभवनि राए ।।

पौड़ी—६९

विद्रा वनि विच पेलते मनि मोहन मदिन मुरारि ।
करित कतूहल आपि मै हरि संगि गोप गवारि ।।
गोप विराजह मडिली अति सुदरि काछ बनाए

षेलत रंगी आपणी संषचूड सुदर्सन आए।
लै कै गोपी उठि चलआ गोपी टेर सुसविद सुणाए ।।
धावण धाया चर्न की पडि पिछो देह भमाइआ।
टुक टुक कीता नद कौरि तवि सैना सकल उजिराए ।।
सो असा त्रिभवनि राए ।।

०—धरि के देह फनिद्र की आइआ वने मझारि।
सांईदास सषचूडिनवि लोडि उनि दीनानाथ मुरारि ।।

पौडी—७०

लैके वीडा कस प्रति विषभासर रूपु पसारिआ।
दुहि परि वलि मैं आइआ अभमानी वहु हकारिआ ।।
जिहि वनि षेलति लाडुला गोप वछ सुलता उवारे।
उलिटे चर्न चलाइओ नपुर पकरि सुधर्न पछारे ।।
त्रिषभासरि मुक्त सिधारे ।।

पौडी—७१

जमिना के तटि बालका लै षेले जादिव राया।
केसी वदुनु पसारिआ आइ मिलआ धाय धाइआ ।।
आगे पाहुनि की भुजि क्रस्न जी वलु सुनाह चलाया।
हरि जी अतिरि जान्या दैतु ढठा सिर तलवाइआ ।।
वातिनि गियो तित था लै वीडा जिथो आइआ।
हरि दर्सुन केसी पाइआ ।।

पौडी—७२

लीलहा स्यामि विलोकते अति षेलति है व्रज सारी।
आनंदिमै सभ षेलते सभ मोहे गोप ग्वारी ।।
पुत्र महामई दित्तदा चल आया वने मझारी।
गोप चला उनि सकल धरि मनि देषे मदिन मुरारी ।।
ऊमासुरु दैत निपात उनु व्रजि वस की सैनि उवारी।
कसराइ लै आए सारि सभारी ।।

—मता नार्द कंसराइ रंगभूम रच दूरि।
सांईदास ता सदाइयो नंद सुति पाठिव देह अकरूरि ।।

पौडी—७३

पासे जोधे कंसराइ नार्द षलोता आइ।
जाया उग्र सैण दा उठि मिलयो सनि मुप धाइ॥
भाउ भग्त करि पुछआ विप नार्द कंसराइ।
सभै दैत निपात उनि सभ मारेगा धाइ॥
करि रण औतारि तू असुरेटे सभ सदाइ।
जो व्रजिवासी लोक है सणु नदे लेहु बुलाइ॥
भगित पुरातनि अक्रूरपु चलि आए स्याम सगाइ।
कसराइ अक्रूरा मधबनि जाइ॥

पौडी—७४

लैके पतिआ राजे कस दी अंक्रूरा देव सिधाणा।
जाइ पहूता नदि ग्राम दर्सुनु मिलउोसु मनिभाणा॥
अक्रूरे दर्सन पाइआ पुरातिन तपु कमाणा।
अक्रूरे कीनी वाछना सो सारा रूपु समाणा॥
नदे आषे अक्रूरा रिपु दतु छड़े नाही माणा।
सैना सभु सदाई उस दैता णा॥

दो०—अवि हमारि भागि वडि दरसु देति दिजिराइ।
साईदास पूछ नि साको रमनि भर तुम आए किह भाइ॥

पौडी—७५

अक्रूरे पासो पूछदे कछु नदि जिसौदा वाति।
अकरूरि यदिन धंनि तुम जो आए अजो की रात॥
कस सदाए नंदि जी सगि कान्हा हलधरि भ्राति।
जोधे सगि भिडावने हम नाही कूडि कहाति॥
भइ चक्रति होए देषही नद जिसौदा ताति।
किउ जीविन नरपति माति॥

दो०—मनि की जीविन ले चले किह विध धीरे प्रान।
कान्ह छाडि सभ धेन हरि तवि मेरे कलआनि॥

पौडी—७६

जवि लग चले अक्रूर जी कछु नदि जिसौदे कहआ
कौन काजि मेरे लाडुले कस सगाती ढहआ

सभ कछु देवा कस जोग जो मंगे भूपति चहग्रा।
सकल हमारी धेन लेहु प्रभ गोकल जाइ नि वहग्रा।।
इरिदा कसो अक्रूरिरिपु इहु लोडो कार्ज न रिवहया।
सुपलकिसुतिमुभि काटिडारद्रिगजनिमवछोहा रहिग्रा।।
पाछो सूलु न जाए सहग्रा।।

दो०—सभ परिपाटी कस को तुम हरि भूलेह नाह।
साँईदास उलिटि फद ताहू परे तुम काहू डरि नाह।।

पौड़ी—७७

साँईदास महिज विच कंस रंग रच्याओतारि।
जोधे सारे सदिओसु महि देता है सिरिदारि।।
असुरेदे सभ अभमान विच लै फौजा करि विसिथारि।
हीडोली इक पालिकी इक जोडि रथा असिवारि।।
चारे कुडा मिल पले हरवति न मारनहारि।
नार्द किलका मारीग्रा जोगु कसारो पारिवार।।
परु कसे नू नाही सारि।।[१]

---

१ यहां पर "वार भागवत" की रचना समाप्त है। पर इस प्रकार भागवत की कथा की सहसा समाप्ति ठीक प्रतीत नही होती। कवि ने भागवत की कथा को पंजाबी के "वार" की शैली मे प्रस्तुत किया है। इसमे ७७ पौडिया हैं मूल ग्रन्थ में पौड़ी सख्या अन्त में है पर सुविधा के लिए उसे प्रारम्भ में रखा है

ओं स्वस्ति श्री गणेशाय नमः

अथ अंम्रत बानी'

—अम्रत हरि को नामु है जो चितु करि अचवाइ।
साईदास जरा रोग तन ना ग्रसे आवागउन मिटाइ ॥

अम्रत वानी अम्रत हरि नाम। श्रविनी सुनि पावै विश्रामु ॥
कोटि जनिम प्रभ मुक्ता करै। जो अम्रत वानी चित ते धरै ॥
जो अउगुन हो सभ मेटे। जो सत गुरि कर्पा करि भेटे ॥
आवागउन ते लये उवारि। अयसी अंम्रन वांनी सार ॥
अम्रन वानी अम्रत रूपु। सांईदास भज भये अनूप ॥ १ ॥

आदि अंति लग एक ओकारि। सर्व निरन्तर ति. बिस्थारि ॥
आपे साचा साचा नाउ। साचा साहव साचा थाउ ॥
साचा अमर साचा नीशानु। साचा हुकम साचा परिवानु ॥
साचा रूपु साचा भगिवानु। साचा पदि साचा निर्वानु ॥
साची वानी साचा रगु। साईदास वसत तिः संग ॥ २ ॥

साचे कर्म साची कर्तूत। साजी सापी साचा सूत ॥
साची प्रीति साचा निरंकारि। साची भक्त साचा दर्वारि ॥
साचा अम्रत हरि को नाउ। साची बुद्धहरि हरि गुन गाउ ॥
साचा मुल्ल साचा वापारि। साची प्रीति तरै संसारि ॥
साचा साचा हरि निज जानों। सांईदास यदि साच समानो ॥ ३ ॥

अम्रतवानी'—तत्सम शब्द अमृतवाणी है। यह बाबा साईंदास जी की रचना है। इसमे २४ अष्टपदिया है। प्रत्येक अष्टपदी के अंत में दोहा आया है। दस अर्द्धावलियों का एक पद है। इस प्रकार आठ पदो की एक अष्टपदी है "अष्टपदी" छन्द भक्तकवि जयदेव के गीत गोविंद में सर्वप्रथम प्रयुक्त हुआ है परवर्ती प्राय सभी भक्तो ने इस छन्द में प्रभु की महिमा पाई है

साचे गुण साची मनि बुद्धि। साचे भवन धरैं मन सुद्ध ।।
साची प्रीत साची तन जोत। साचे धरिम विषै सच होत ।।
साचे सिमरे साचे कर्तार। साचे दृढ हरि सेती प्यारि ।।
साची धर्न साचे ब्रह्मडि। साचे धारि धरे नउपडि ।।
साचो साचा जिसका वर्तमानु। साइीदास तिस्तो कुर्वानु ।।

साचे तर्ते साचे भा। साचे भान मिले सभ जा ।।
साचा गगन नरायणु साच। साची बुद्ध अउर परिकास ।।
साची वानी साचा आपु। साच उपाय जपे सच जापु ।।
साचे वरणत बरणाइ साचु। उपिजे बिनसे साचो साचु ।।
सर्व निरन्तर एको एक। गहु सांईदास दास तिः टेक ।।

साचे सिद्ध माध हरि ध्यावै। साचे तीर्थ अठ सठ नावैं ।।
साचे भक्त जो हरि रस राते। माचे जोग जुगत हित्लाते ।।
साचे शः साचे पातशाहः। राम नाम भजि पावे राह. ।।
साचे घटि मय सत्त सतोपु। साचे राचे लगे न दोपु ।।
साचे जीव जंत्र सभ साचे। सांइीदास सच सर्नी राचे ।।

साची माया हरि भक्त मिला। साच भक्त विच राषे भा ।।
साचे ऊधो साचे अविधूति। साचे जि बस कीने दूति ।।
साची बांनी अनिहदि भनिकार। साचे सो जनि हरि सो प्यारि
साचे सुंन्न मंदरि लिवलावे। गुरि प्रसादि सदा सुप पावै ।।
साची राम नाम की योट। साईदास जिः की हय योट ।।

साचा पाप साचा तिः रूपु। माचे घरि मै साच सरूपु ।।
साचा हरि साचा हरि जापु। साचा थापउ थापे थापु ।।
साचा अव्रत सच्च पसा। साचा साचा साच सुभ ।।
साचा साचा साचा साचु। जो कछु कीनो साचो साचु ।।
साचा साचा साचा एक। गहु साईदास दास तिः टेक ।।

—सर्व निरन्तर एक हय, सभ दिष्टी गुर एक।
सांइीदास मानस की क्या योट हय, राम नाम करि टेक ।।

अष्टपदी—२

एको पुपु सकल घट मा। धर्न अकास पताल सभ थाः ॥
एको एक एक प्रभ एक। आदि अति लग एको एक ॥
एको पुर्षु उपावन हारि। जो सिमरे सो उतिरे पारि ॥
एको नाम एको नीशानु। हुकम चले ति सकल जहानु ॥
एको आप आप फुन एक। साईदास गहु हर्की टेक ॥ १ ॥

एको एक अनेका रूपु। नाम अनन्त सरूप अनूपु ॥
एको ब्रह्म ब्रह्म हय एक। सर्व माहि पेले फुनि एक ॥
एको चिह्न चक्र ति. रगि। जयसे दीप दसदः पतग ॥
एको एक एक ओंकार। सर्वमाह ताका विसथारि ॥
एको एक कर्जाने जो। साईदास मत उत्तम सो ॥ २ ॥

साहब एक आप दातारि। सकल सिष्ट को देवनहारि ॥
एको राम एक गोपाल। एको भक्तां सदा दयाल ॥
एको क्रहन एक भगिवानु। साध सगि मल एको जानु ॥
एको कर्त्ता हर्त्ता एक। प्रान पुर्षु प्रानन की टेक ॥
मय वलहारि सदा बलिहारि। साईदास ता परि सदवार ॥ ३ ॥

एको ए नद नदन नंदिलाल। एको सभ जीयन प्रतपाल ॥
एको *महाराजि त्रैलोक। एको कर्ता सभ से थोक ॥
एको तिरआ पुर्ष ह एक। अनेक माह जांनो हरि एक ॥
एक हि कीनो सकल पसार। ताको अतु न पारावारि ॥
एको साचा दीनि दयाल। साई दास तिः दिष्ट निहाल ॥ ४ ॥

एक मछ कछ वाराह। एको नरिसिघ भयो सहा ॥
एको मदन मुरारी राम। एको पर्स राम हर्नाम ॥
एको विष्न महादेअबु। एको जौग जुगन्तर थापु ॥
एको ब्रह्म एको इन्द्र। एको सेस सहस्र फणिन्द्र ॥
एको सति सरूप तुम्नामु। सांईदास जो करै सु रामु ॥ ५ ॥

एको धर्ती अंबर ईस। एको हरि एको जगिदीस ॥
एको पवित्र पानी ससारि। एको एक एक कर्तारि ॥
एको मन्त्र माला को नाउ। एको ओंकारि पसरचो सभ थाउ
एको गुणा निधानि अपारि। अलष्य निरजनि गिनत न पार ॥
एको एक अनेकति' रूपु। सांईदास हय तत्त सरूपु ॥

एको मदन मुरारी श्री हरि। एको राम क्रहन बसी धरि ॥
एको रचना राचन हरि। एको कहित सबद बीचारि ॥
एको ब्रह्म जोति सभ माहः। एको सभ मय उलिटि समाह॥
एको ज्ञानी ध्यानी आपु। एको रह्यो सर्व बीआपु ॥
एको नरकारि नरि रूपु। सांईदास वह तत्त सरूपु ॥

एको पर्म पुर्षु सभ ठउर। एको राम रम्यो नहि अउर ॥
एको कउलापति परिमेश्वरि। एको गोंविद एक महेश्वरि ॥
एको सकल कला भरिपूरि। एको एक निकटि नहि दूरि ॥
एको करुणामय नंदलाल। एको पूर्नु पुर्षु गुपाल ॥
एको वर्तमान हरि जानु। सांईदास तूं जान प्रमानु ॥

०—आपे आपे आप प्रभ, दूसरि नाही कोइ।
सांईदास सर्व रगमय आप हय, जो सोझी मनि होइ ॥

अष्टपदी—२

आपे करिता हर्त्ता आप। आपे दारा भर्ता *आप ॥
आपे साधू आपे चोर। आपे वणियो नदि किसोरि ॥
आपे मोनी, बोले आप। आपे रह्यो सर्व बीयाप ॥
आपे पूत आप पित मात। आपे नीची उत्तम जाति ॥
आपे षेल पिलाविनहारि। सांईदास आपे परिवारि ॥

आपे हस्त आप हय घोडा:। आपे अरयन आप हय भोरा ॥
आपे ध्रू आपे प्रह्लादि। आपे पूर्न आदि जुगादि ॥
आपे मूरिष तत्त ज्ञान। आपे अठसठ को इसनानु ॥
आपे अपिनी जाणे बात। आपे उपिजे आप समात ॥
आपे सूर आप बलहर्तु। साईदास ताही सभसुर्त ॥

आपे पसु आपे सुजाति। आपे तरिवरि आपे पात॥
आपे सिद्ध साध अविधूत। आपे मुष परि मिले[1] भभूति॥
आपे जोगी अलष कहावे। आप डगम्बलीडी लावे॥
आपे अपिनी कीरति करे। आपे जीवे आपे मरे॥
आपे पउन पानी बसंतर। साईदास जो जाणे अंतर॥ ३॥

आपे ब्रह्म उपाविन हारि। आपे गगन गुफा निरधारि॥
आपे दाता आपे भुक्ता। आपे सकल घटामय जुक्ता॥
आपे तीरथ तवदोवासी। आपे अस्थर आप उदासी॥
आपे पूरन जलि थल माह्। पूर रह्यो घट घट मय ताह्॥
आपे ज्ञानी ध्यानी आप। साईदास हरि अयसे जापु॥ ४॥

आपे एक आप बिसथारि। आपे भउ, राइ, द्रगाहार॥
आपे जोध महाबल सूरि। आपे ब्रह्म सकल भरिपूरि॥
आपे राज महाबलि राज। आपे दीन सदा मुहस्थाजु॥
आपे कागा आपे हंस। आपे उत्तम मध्यम बंस॥
आपे नटूआ सकरा। वलि वलि सांईदास सदा॥ ५॥

आपे आपे ऊच आपे नीच। आपे न्यारो आपे वीच॥
आपे मनोहरि आपे राम। सकल सिष्ट के साजे काम॥
आपे पापी पाप कमावे। आपे प्रगट बैकुंठ सिधावे॥
आपे सहज रहे गलतान। आपे गहरि गभीरि सुजान॥
आपे विष्णु कहावे वीरि। सांईदास हरि चल वल धीरि॥ ६॥

आपे धूप आप हय छाउ। आपे चलति लहति विश्राम॥
आपे ससि अरि आपे भानु। आपे उडगण भयो बिमानु॥
आपे धर्ती आप अकास। आपे धउल धर्न की आस॥
आपे मीरि मलक मुलतान। आपे दीन रंक भी जान॥
आपे राम रमयो सभ थाह्। सांईदास अंतर कछु नाह्॥ ७॥

---

१ मिलो मले

आपे गोविद जनि कर्पाल। आपे पतित सदा दयाल ।।
आपे पर्म पुर्पु परिमेश्वरि। आपे सात सरूप महेश्वरि।।
आपे सिष्ट उपावनि हारि। आपे सकल सिष्ट करितार ।।
आपे आतम आपे जीउ। आपे तिरिआ आपे पीउ ।।
आपे सील आपे सतोपु। साईदास कछु लगे न दोषु ।।

।—सभ जगु विनसनिहारि हय विनसे नाही एक।
सांईदास अहिनस हरि गुण गाईये राम नाम की टेक ।।

अष्टपदी—४

एक न विनसे हरि चित लावे। एक न विनसे अहनिस ध्यावे ।।
एक न विनसे परि उपकारी। एक न विनसे सर्न मुरारी ।।
एक न विनसे हर्गुण गाय। एक न विनसे नाम ध्याय ।।
एक नि विनसे जिह घटि प्रेमु। एक न विनसे सिमरन नेम ।।
एक न विनसे हरि की सर्ना। सांईदास प्रभ सर्वस भर्ना ।।

एक न विनसे साध के सग। एक न विनसे प्रभ के रग ।।
एक नि विनसे जो प्रभ चीत। एक न विनसे जो हर्मीत ।।
एक न विनसे साध सग दरहे। एक न विनसे हरि हरि कहे ।।
एक नि विनसे हरि की सेउ। एक न विनसे आतम भेउ ।।
एक विनसे प्रेम वलभा। सांईदास उत्तम गत पा ।।

एक न विनसे बोले हर्बानी। एकनि विन से सर्व पछानी ।।
एक न विनसे सिमरण रीत। एक न विनसे मन पर्तीत ।।
एक न विनसे हरि रस पीवे। एक न विनसे निर्मल थीवे ।।
एक न विनसे भक्त कमावे। एक न विनसे सर्नी आवे ।।
एक न विनसे निर्मल ज्ञान। सांईदास घट लेय पछान ।।

एक न विनसे पज वस करे। एक न विनसे जीवित मरे ।।
एक न विनसे हर्सो प्रीत। एक न विनसे निर्मल रीत ।।
एक न विनसे क्रोध निवारै। एक न विनसे हरि चित धारै ।।
एक न विनसे विष्या ते रहे एक न विनसे हगुण कहे ।

एक न विनसे ब्रह्म पछाने । एक न विनसे सभ मम जाने ।।
एक न विनसे परम पुरातम् । साईदास जाणे जो आतम् ।। ४ ।

एक न विनसे नीच कहावे । एक न विनसे हरि चर्नी धावे ।।
एक न विनसे हर्गुन बानी । एक न विनसे ब्रह्म ज्ञानी ।।
एक न विनसे साधसगत मीत । एक न विनसे हर्गुण चीत ।।
एक न विनसे परि उपकारी । एक न विनसे नाम चितारी ।।
एक न विनसे जिह हरि सो प्यारी । साईदास तिस तो बलहारि ।। ५ ।

एक न विनसे लोभ गवाए । एक न विनसे हरि चित लाए ।।
एक न विनसे हरि सगत रत्ते । एक नि विनसे हरि कीर्तन मचे ।।
एक न विनसे ब्रह्म बिचारी । एक न विनसे त्रिभवनि दातारी ।।
एक न विनसे पूरन ज्ञान । एक न विनसे हरि सो ध्यान ।।
एक न विनसे हरि जस कहे । साईदास अनभय हो रहे ।। ६ ।

एक न विनसे पूरन परिमेश्वरि । एक न विनसे सर्व वसेस्वर ।।
एक न विनसे हरि को नाम । एक नि विनसे आतम राम ।।
एक न विनसे प्रभ सगत राता । एक न विनसे नाम पछाता ।।
एक न विनसे होय निरास । एक न विनसे साध निवास ।।
एक न विनसे हर्गुण गात । साईदास ता परि वल जात ।। ७ ।

एक न विनसे करि जप तप पूजा । एक न विनसे जिह नाही दूजा
एक न विनसे जाने एक । एक न विनसे हर्की टेक ।।
एक न विनसे कथा हर करे । एक न विनसे सर्नी परे ।।
एक न विनसे सुन्न समाध । एक न विनसे अगम अगाध ।।
एक न विनसे जिह आतम जीता । सांईदास तिह प्रभ वस कीता ।। ८.

—सभु जगु विनसत देषयो चला जात दिन रात ।
साईदास विन भक्त हरि धृग परिछाई पात ।।

अष्टपदी—५

विनसे सो जो गुण नहि गावे । विनसे सो जो हर्न धियावे ।।
विनसे सो प्रभ को नही जाने । विनसे सो विष्या मनि माने ।।

विनसे सो नहि साध सगत रहे । विनसे सो जो मिथ्या कहे ।।
विनसे सो रहे सदा अचेत । ताकों कबू न उविरे षेत ।।
विनसे सो परि निद्या करै । सांईदास सो जनमे मरै ।।

विनसे सो प्रभ को नही चेते । विनसे सो हरि सो नहि हेते ।।
विनसे सो बुरा साध को कहे । विनिसे सो विष्या रच रहे ।।
विनसे सो जो क्रोध मन करै । विनसे सो माया चित धरै ।।
विनसे सो जो रहे कुचील । हरि सिमरण बिनु कहा सुचील ।।
विनसे सो हर कथा न जाने । साईदास प्रभ क्रपा समाने ।।

विनिसे सो हरि सो ना रचे । विनसे सो हरि गुण ना मचे ।।
विनसे सो हरि गुण नहि गावै । विनसे सो हरि को नहि ध्यावे ।।
विनसे सो विष्या को ध्यावे । विनसे सो जो लोभ लुभावे ।।
विनसे सो जनि भूला आपु । विनसे सो जाणे विष जापु ।।
विनसे सो जो सदा विकारी । साईदास तिह वाजी हारी ।।

विनसे सो जो हर् न पछाने । बिन हरि अउरि रिदे करि जाणे
विनसे सो जो ब्रह्म दुखाए । विन भगवान आनर् वसाए ।।
विनसे सो हरि न नाम लए । अहि निस आतम विष को दए ।।
विनसे सो दूजा करि जाने । विन भगिवान अउर चित आने ।।
विनसे सो विकारि को धावे । सांईदास वहि गत नहि पावे ।।

विनसे सो हरि सर्न नही पडे । विनसे सो पचन नही लडे ।।
विनसे सो हरि सो नहि भेटे । विनसे सो हउमा नही मेटे ।।
विनसे सो जिन रिदे न प्रेम । हरि सिमरण को नही नेम ।।
विनसे सो हरि हेत न जाणे । प्रभ की प्रीत नि मन मय आणे ।।
विनसे सो हरि सिमरण हीन । साईदास वह सदा अधीन ।।

विनसे सो जिन मनि अभमान । विनसे सो हरि धरे न ध्यान ।।
विनसे सो पाषडी होइ । हरि सिमरण ते भूला सोइ ।।
विनसे सो विष्या फल मोह । विनसे सो जिस मन मो ध्रोह ।।
विनसे सो मन वस ना करे । विनसे सो विष्या संग भरे ।।
विनसे सो गुरि चर्न न लागे । सांईदास तिह देषु अभागे ।।

विनसे सो हर्कीत नहि करे। विनसे सो दुभधा चित धरे॥
विनसे सो जिस लालच दाम। विना भजन धारे अनिकाम॥
विनसे सो हर्को विराराइ। विन हरि सिमरण अउध गवाइ
विनसे सो गुरि मंत्र विसारे। जनिम अमोल लजान विकारे॥
विनसे सो जिस मर्मु न जाना। सांईदास वह मर्म भुलाना॥ ७॥

विनसे सो हरि पंथ न जाने। विनसे सो हरि साध न माने॥
विनसे सो ससा मन करे। विनसे सो हर्वित ना धरे॥
विनसे सो ममता मद माना। विनसे सो जिस हर् न पछाता॥
विनसे नाम विना तन अध। रोम रोम आवत दुर्गध॥
विनसे सो जिस आप भुलावे। वारि वारि जूनी भरिमावे॥
साईदास विनसे जनि सोइ। हरि सिमरण ते भूला होइ॥ ८॥

सोकु–हरि हरि नाम जनि जो जपै अउर साध दस द्वारि।
साईदास जरा मर्न ते न अचेता लितिह अपर अपारि॥

अष्टपदी—६

हरि सिमरे सो सदा सुखाला। ताके ऊपरि आप दयाला॥
हरि सिमरे तेऊ परिवान। अहि निस हरि सो धरे ध्यानि॥
हरि सिमरे सो कबूं न मरे। भउ जल सागर अनिभय तरे॥
हरि सिमरे सो सर्व ते ऊचा। सोइी जानो मुक्त पहूचा॥
हरि सिमरे सो सोभावानु। सांईदास तिस्तो कुर्बानु॥ १॥

हरि सिमरे सो जम ते छूटे। प्रभ की मत अतरि ते तूटे॥
हरि सिमरे सो सुंन्न विराजे। अहिनिस गह हर् वाको गाजे॥
हरि सिमरे सो राजनराजा। सुन्न सविद तिह अंतिर वाजा॥
हरि सिमरे पावे सु:खमानु। दुर्गा माही होय नहान॥
हरि सिमरे सो पुर्ष निर्धानु। साईदास सो पूर्न जानु॥ २॥

हरि सिमरे सो भउ जल तरै। गुर के सवद नि जनमे मरे॥
हरि सिमरे तिस दु.ख न विआपे। सर्व घटा हरि हर करि थापे॥
हरि सिमरे विष्या ते रहे। गुरि प्रसाद अंम्रत रस गहे॥

हरि सिमरे सोभा जगि होइ । दर्गा ठाक नि साके कोइ ।।
हरि सिमरे सो पाट हढावे । साईदास दु ख तज सुष पावे ।।

हरि सिमरे सो पूरन ज्ञान । जाके रिदे वसे भगिवानि ।।
हरि सिमरे निर्मल हो रहे । कबू न मुष ते मिथ्या कहे ।।
हरि सिमरे तिस सभ कछु सूझे । गुरि प्रसाद सुंन्न गृह विध बूझे ।।
हरि सिमरे मिटया' वागउनु । हरि सिमरे पर्से त्रय भउन ।।
हरि सिमरे तिस वात को जानु । साईदास सदा कुर्वानु ।।

हरि सिमरे सो सुष का वासी । सदा सदा मेटे अविनासी ।।
हरि सिमरे सो आप भर्मेरे । सकल जगत तिह सर्नी परे ।।
हरि सिमरे सो आप भगिवानु । जा के अंतर हरि रस ज्ञानु ।।
हरि सिमरे सो हरि का दासु । हरि सिमरे आतम परिकास ।।
हरि सिमरे उत्तम मत ताकी । साईदास गति क्या कहु बाकी ।।

हरि सिमरे अहि निस गुनि गाइ । गुरि प्रसाद सुंन्न लिव लाइ ।।
हरि सिमरे सो रत्ते साधा । गुरि प्रसाद छूडे मृग बांधा ।।
हरि मिसरे मेटे अभिमान । सोई होवे दर् परवानु ।।
हरि सिमरे सो निहजल आसनु । गुर्प्रसाद सर्व दुःख नासन ।।
हरि सिमरे पूरन्ता तया । साईदास तिह जगत वया ।।

हरि सिमरे आतम वस राषे । गुरि प्रसादि अंवृत रस चाषे ।।
हरि सिमरे सो पदि निर्वानि । राम नाम सो धरे धियान ।।
हरि सिमरे सोई मुरि ज्ञान । हरि दर्गा सोई परिवान ।।
हरि सिमरे उत्तम जगिदीस । हरि सिमरे सभ जगि को ईस
हरि सिमरे सो साध कहावे । सांईदास दास गति पावे ।।

हरि सिमरे सोई गत पाइ । सहज समाध रहे लिवलाइ ।।
हरि सिमरे सोई अविनाशी । प्रेम भक्त को घट घटि वाशी ।।
हरि सिमरे मन माह समावे । गुर प्रसादि अंवृत फल पावे ।।

'आ'' लिपिकार से छूट गया है ।

हरि सिमरे तिस विघन न लागे । गुरि प्रसादि अनदि घट जागे
हरि सिमरे जो ओहो कहे । सांईदास दास सो चहे ।। ८।।

दो०—सभ जगु सोया देषयो को जागृत हय नाह ।
जो जागृत हय सांईदास सोई सुप के माह ।।

अष्टपदी—७

जागे सो जनि मनि परितीति । जागे सो जिस निर्मल रीति ।।
जागे सो जिस ज्ञानि प्रकास । जागे सो जिस सुंन्न की आस ।।
जागे सो जिस सति गुर दया । जागे सो जिस हर घटि लया ।।
जागे सो जिस अंतर पीड । हरि सिमरण विनु विकल शरीरि
जागे सो जिस प्रेम रिद अंतर । साईदास कछु नाह निरन्तर ।। १ ।।

जागे सो जगिदीस पछाने । जागे सो हरि दरि को माने ।।
जागे सो जो ब्रह्म गियानी । जागे सो हरि कथा बपानी
जागे सो ममता ते रहे । जागे सो जो हरि जस कहे ।।
जागे सो बोले हरि बानी । प्रेम भक्त घटि माह पछानी ।।
जागे सो हरि रस मतवाला । साईदास तिह चन रवाला. ।। २ ।।

जागे सो जो सभ सम जाणे । जागे सो जो तत्त पछाने ।।
जागे सो चउरासी वेधा । जागे सो जो हरि रस गेधा ।।
जागे सो जो अहि निस जागे । जागे सो जो हरि सो लागे ।।
जागे सो जो हरि रस राता । जागे सो हरि अंन्नत माता ।।
जागे सो आप दे त्याग । साईदास तिह पूरन भाग ।। ३ ।।

जागे सो जो निगम विचारे । अहि निस रसना नाम उचारे ।।
जागे सो जो नर् बुध्यवानु । निस दिन सिमरे पुर्ष निधान ।।
जागे सो जो सति गुरि सर्नी । ताका चिहन चक्र क्या वर्नी ।।
जागे सो जिस हरि जस प्रीत । प्रेम भक्त की उपजी रीत ।।
जागे सो जो निर्मल जोत । सांईदास दास हरि ओट ।। ४ ।।

जागे सो जिस सभ कछु सूझे । अहि निस अगिमि निगम विध बूझे
जागे सो जिस आतम चीन्हा । कोटि जनम प्रभ मुक्ता कीना ।।

जागे सो जो हर्का मीतु। प्रेम भक्त सो निर्मल चीतु।
जागे सो जिस ब्रह्म गियान। सदा रषे मति गुरि सो धियान।
जागे सो जिस मनि पतयाना। साईदास द्वास दर्साना।

जागे सो जिस सीस न होवे। हरि जल सेती मुख को धोवे।
जागे सो जो पचन भाषे। तांको वस करि अहि निस राषे।
जागे सो जिस निर्मल ज्ञानु। पूर्ण पुर्ष सो लगो धियानु।
जागे सो जिस नाम हुलास। सदा रपे हरि रसकी प्यासि।
जागे सो जिस सत सतोषु। साईदास मिटया तिस दोपा:

जागे सो जस घटि मय पीडि। वेदना जाणे सकल सरीरि।
जागे सो जिस हरि संगत हेत। अहि निस लिउ आवे हर सेत।
जागे सो जिस हर्मुष जानी। सति गुरि मिल अतरि ठहिरानी।
जागे सो जो ब्रह्म गियानी। घटि घटि भीतिरि ब्रह्म पछानी।
जागे सो जिस सतिगुरि मया। सांईदास तिह मर्नी पया।

जागे मो जिस हरि हरि करिया। हर्रस अन्नत मन मोल्लय।
जागे सो जिम ब्रह्म रिद माही। दर्सन देषत जम डरि जाही।
जागे सो जिस प्रीत हर्कन। राम भक्त घट अन्तर्लीन।
जागे सो जिस हर्मन भायो। हरि भायो त्रयताप मिटायो।
जागे सो जिस अनहद वानी। सांईदास घटि माह समानो।

—हरि का नामु अमोल हय निग्मसुर्त[1] विष्यान।
सांईदास रंचक मन ते मन रखै पायो परिम निधानि॥

अष्टपदी—८

हर्कानाम जप पूरण भागि। तांते मिट गए सकल सताप।
हरि का नाम सोई जन लेवे। जीविपिनु अर्पे हरि देवे।
हरि का नाम जपे सुष पावे। वारि वारि जूंनी नहि आवे।
हरि का नाम महा सुषदाई। आदि आत्तमध्य सदा सहाई।
हरि का नाम विनासे पाप। सांईदास सदा हरि जाप।

---

[1]गम श्रुति।

हरि का नाम जगत सभ ऊचा । जो सिमरे मुक्त पहूचा ।।
हरि का नाम संत मन वसे । तिहि प्रसादि दूत जन मरे ।।
हरि का नाम जपे सो पूरा । ताके मनि के मिटे विसूरा ।।
हरि का नाम जपो रे भाई । याही मय तुमरी भलिआई ।।
हरि का नाम सदा सुषिदाई । साईदास दास लिउ लाई ।। २ ।।

हरि का नाम साध सग पाए । निस वासरि हरि के गुनि गाए ।।
हरि का नाम जप गनिका तरी । गउतमनारि जपति निसतरी
हरि का नाम गभीरि सुजान । जो सिमरे पूरिण निर्वान ।।
हर्कानाम जपे जो कोई । मनिका संसा डारे षोई ।।
हर्कानाम मुक्त को दाता । साईदास नवि षंडी जाता ।। ३ ।।

हर्कानाम संत जनि ओट । जपि हर्नामि तजो विष पोट ।।
हरि का नाम जनि तारण हारि । जो सिमरे सोउ तिरे पारि ।।
हरि का नाम चुकाये भीडि । दूरि करे तनि होवे पीडि ।।
हरि का नाम जपे वडिआई । जगि भीतिरि होवे प्रभताई ।।
हरि का नाम जपत दुख जाइ । साईदास पदि सात समाइ ।। ४ ।।

हरि का नाम जपे सो जागे । गुरि प्रसादि हरि सेवा लागे ।।
हरि का नाम जपति विश्राम । गुरि प्रसादि पूरण सभ काम ।।
हरि का नाम सर्व सुषिदाई । मिटे वियोग मन हरि राई ।।
हरि को नाम जपे जो कोइ । तीनि लोक ते न्यारा होइ ।।
हरि का नाम जपे दिन रयन । साईदास तिहि घटि मह चैयन ।।५ ।।

हरि का नाम जपे सुरि ज्ञान । गुरि प्रसादि हरि रिदे ध्यानि ।।
हरि का नाम जपे सन्यासी । गुरि प्रसादि काटी जम फासी ।।
हरि का नाम जपे जो प्रानी । गुरि प्रसादि मिटि आविण जाणी
हरि का नाम जपे परिवानु । जम वयरी की चूकत कानि ।।
हरि का नाम जपे सो पूरा । सांईदास मिटि सकल विसूरा ।। ६ ।।

हरि का नाम जपे वयरागी । गुरि प्रसादि भय सकल तयागी
हर्कानाम जपे मनि माह । गुरि प्रसादि अतर्कछु नाह ।।
हरि का नाम जपे नही मरे गुरि प्रसादि भय सागर तरे

हरि का नाम परिम पुरिषोतम । निराकारि निरवयरनरोतम
हरि का नाम जपे चितराता । सांईदास नही जूनि फराता ।। ७ ।।

हरि का नाम जपे चितु लाइ । गुरि प्रसादि दुर्मत मिटि जाइ ।।
हरि का नाम मुक्त को दाता । तिहि प्रसादि नही जून फिराता
हरिका नामु हय अमृत बाणी । तिहि प्रसादि सभ सुर्त पछानी
हरि का नाम जीविण को मूलु । तिस सिमरे तनि जावे सूलु ।।
हरि का नाम लिऊो रिदे संम्हाल । साईदास जपिए करितारि ।। ८ ।।

सलोकु—पतिति उधारण मैय सुणे काज सवारण राम ।
साईदास ताहूओट गहू पाप जाय सभ्य लिये हरिनाम ।।

अष्टपदी—९

सुनियत होय हरि भक्त जन तारन । सुनियत हो हरि काज सवारन ।।
सुनियत हो हरि पतित उधारन । सुनियत हो हरि असुरि सिहारिन
सुनियति हो गोवर्धन धारन । सुनियति हो हरि दुष्ट निवारन ।।
सुनियति हो हरि रघपति राइ । सुनिअति हो हरि भक्त सहाइ ।।
सुनियति हो मुरिली धरि माधो । साईदास प्रभ अन्तर्साधो ।१

सुनियति हो गोविद मुरारी । सुनियति हो हरि कुजि बिहारी ।।
सुनिये तो महाराजन राजा । सुनियनि हो हरि कारज साजा ।।
सुनियति हो त्रभवनि के दाता । सुनियति हो घटि घटि मे राता ।।
सुनियति हो हरि गगनि निवासी । सुनियति हो हरि प्रभ अविनासी ।।
सुनियति हो हरि पुर्ष निधान । सांईदास सुनि पति निर्वान ।२

सुनिअति हो त्रिभवनि के राया । सुनियति हो अनभय सुखदाया ।।
सुनियति हो पूरण परिमेश्वरि । सुनियति हो हरि आप महेश्वरि ।।
सुनिअति हो धर्नी धरि गोविंद । सुनियति हो पूरण परिमानंद ।।
सुनियति हो वसु देयुकि नन्दन । सुनियति हो हरि असुरिनकन्दन ।।
सुनियति हो निरकार अकलहर । सांईदास सुनियति हय जलधरि।

सुनियति हो मुकदि मुरारी । सुनियति हो संतन हितकारी ।।
सुनियति हो राविण को मारन सुनियति हो वमछनि तारन

सुनियति हो हरि सन्त सहाई । सुनियति हो भक्तन सुषिदाई ।।
सुनियति हो दुख नासननामा । सुनियति हो घटि घटि विस्रामा ।।
सुनियति हो धारन सभ धर्नी । सांईदास रूप क्या वर्नी ।४

सुनियति हो करुणानिधि स्वामी । सुनिअत हो हरि अतरजामी ।।
सुनियति हो भक्तनि सिर ताजु । सुनिअति हो महाराजनराजु ।।
सुनियति हो हरि मुक्त को दायक । सुनिअनि हो भक्ता के नाइक ।।
सुनियति हो हरि अपरमवासी । सुनियति हो हरि सास विलासी ।।
सुनियति हो हरि ब्रह्म गियान । साईदास पूरण पद जानि ।५

सुनियति हो हर्केवल ब्रह्म । सुनिअति हो हरि निर्मल धर्म ।।
सुनियति हो कउलापति केस्वर । सुनिअनि हो पूरण परिमेश्वरि ।।
सुनियति हो हरि नदि के नदा । सुनियति हो विद्रावनि चदा ।।
सुनियति हो हर्कीट पछारन । सुनिअति हो हरि वकी उधारन ।।
सुनिअति हो बृजवासी ग्वाल । साईदास भज भये निहालि ।६

सुनिअति हो हरि हरि हरिवर । सुनिअति हो माधो धर्नी धरि ।।
सुनियति हो हरि ईसनिईस । सुनिअति हो जगि के जगिदीस ।।
सुनिअति हो हरि राम के रामा । सुनिअति हो हरि पूर्ण कामा ।।
सुनियति हो निरवयर गोसाई । सुनियति हो व्याप्यौ सभ थाई ।।
सुनिअति हो बावन विपधारी । सुनियति हो दुख टारिण हारी ।।
सुनिअति हो जन पयज वढावनु । साईदास सत्त गुण गाविन ।७

सुनिअति हो हरिकेस गुसांई । सुनिअति हो सुदरि अधिकाई ।।
सुनियति हो हर्नदकुमारि । सुनियति हो हरि अपरि अपारि ।।
सुनिअति हो हरि हरि भगिवान । सुनियति हो हरि पुर्ष निधानि ।।
सुनियति हो हरि विश्वु के धारनि । सुनिअति हो हरि प्राण अधारन ।।
सुनियति हो सीतापति राम । साईदास सुनि अति विश्राम ।८

सलोकु—सुन्न सवद मनि बूझ के तत पद करि वियुहारि ।
साईदास अहि निस सति गुरि चर्न लग तारे तारण हारि ।।

अष्टपदी—१०

निस दिन सति गुरि चर्नी लागो। अंम्रत हरि रस विष्या को त्यागो।।
सति गुरि चर्न सर्न सो राचो। विष्या तज अवत सो मान्चो।।
सति गुरि चर्न जोऊ जन राता। सो जनि अवगति गत मे माता।।
सति गुरि चर्न मिले वडिभागि। प्रेम भक्त जिस आतम लाग।।
सतिगुर चर्न धारि मनि माह। सांईदास सति गुरि बलि जाह।१

सतिगुरि चर्न मुक्त के दाता। तिह प्रसादि हरि के रंग राता।।
सति गुरि चर्न जपत विश्रामु। वहुडो जनम सो नाही काम।।
सति गुर चर्न मय सुर्त समानी। गुरि प्रसाद हरि सो लिउ लानी।।
सति गुरि चर्न प्रीति करि ध्यावे। जम वयरी की तलवि न आवे।।
सति गुरि चर्न धारि मनि माह। सदा रहे सुख आनदि ताहि।।
सति गुरि चर्न पतित को तारन। सांईदास प्रभ अपरि अपारन।२

सति गुरि चर्न मिले मल खोवे। गुरि प्रसादि सर्व सुष होवे।।
सति गुरि चर्न जपो रे प्रानी। गुरि प्रसादि बोले हर्बानी।।
सति गुरि चर्न सकल जग तारन। भउ जल कठन सो पार उतारन।।
सति गुरि चर्न रचत दुपजाइ। भय सागर ते पार पराइ।।
सति गुरि चर्न जो परे। साईदास तांके दुष हरे।३।

सति गुरि चर्न जपति मुख होवे। जन्मि जन्म सकले दुख खोवे।।
सति गुरि चर्न रषो घट माह। सुरि नर्मुन तांके बल जांह।।
सति गुरि चर्न सीस परि धरो। गुरि प्रसादि निश्चल सुष करो।।
सति गुरि चर्न जास निज गहे। आविन जाविन ते वह रहे।।
सति गुरि चर्न प्रानि सुख दाई। साईदास घटि लिउो वसाई।४।

सति गुरि चर्न चेत घटि माहि। सुंन्न समाध रहो लिउ लाय।।
सति गुरि चर्न वषाने जोय। सदा सदा जग मुक्ता होय।।
सति गुरि चर्न कटे जम फास। निसवासरि विति माह हुलास।।
सति गुर चर्न मले दुषजाइ। जिउ गग्या जल जगत्तराइ।।
सति गुरि जर्न जपत कै तरै। सांईदास चर्ना पर परै।५।

सति गुरि चर्न लग पाप विनासा। सति गुरि चर्ण मन पूरण आसा॥
सति गुरि चर्न हय सर्व निधान। जो सिमरे सो पावे दान॥
सति गुरि चर्न जोड़ी चित लावे। आवा गउन को भर्म मिटावे॥
सति गुरि चर्न जोड़ी चित लावे। आवा गउन को भर्म मिटावे॥
सति गुर चर्न नाम सुष करे। साईदास चर्नो दुष हरे।६।

सति गुरि चर्न तीरथ इस्नान। जो सिमरे सो पूरण जान॥
सति गुरि चर्न चेत सुष अधक। जिउ पंछी मुक्ता बस वधक॥
सति गुरि चर्न मटावे पाप। मुष अ हिनिनिसि कीजे यहि जाप
सति गुरि चर्न प्रानि सुपदाता। जो सिमरे त्रैयीलोकी जात्ता॥
सति गुरि चर्न निर्मल नरि जोत। साईदास चर्नो की ओटि।७।

सति गुरि चर्न सेवै सुरि ज्ञानी। मुष अहिनिस उचिरे हर्बानी॥
सति गुरि चर्न रूप भगवान। जो सिमरे सो तरया जानु॥
सति गुरि चर्न क्या महिमा वर्ना। जो सिमरे हो वृद्ध ते तर्ना॥
सति गुरि चर्न प्रानि प्राना। सतिगुरि चर्न चेत ना हाना॥
सति गुरि चर्न प्रगिटि नीशान। सांईदास निसवासरि ध्यान।८।

सलोकु—नमो नमो हरिकेस' हरि पूरण पुर्ष निधान।
सांईदास आदि लग एक हय ओंकारि हरि जान॥

अष्टपदी ११

नमो नमो ओंकारि अकल हरि। नमो नमो पूरण वसी धरि॥
नमो नमो हरि मछ अवितारी। नमो नमो सतन हितकारी॥
नमो नमो सुपकरि धर्धर्ना। नमो नमो नर्सिह अपर्ना॥
नमो नमो हरि घटि घटि वासी। नमो नमो पूरण अविनासी॥
नमो नमो वावन विपधारी। नमो नमो सांईदास मुरारी।१।

नमो नमो जमिदिग्नक सुत हरि। नमो नमो श्रीपति सारंग्य धरि॥
नमो नमो क्रहन करुणा निध नमो नमो हरि वोध विमल वुध

नमो नमो त्रिभवन के राया। नमो नमो अनभय सुपदाया।
नमो नमो रिषकेश गोसाइी। सांईदास नमो हरिताइी।

नमो नमो मोहन रिदवानी। नमो नमो हरि सारग्य पानी।
नमो नमो गोवर्धन धारी। नमो नमो हरि पतित उधारी।
नमो नमो निरकारि निरजन। नमो नमो हरि द्रग मय अंजन।
नमो नमो प्रान के प्रान। नमो नमो पूरण भगिवान।
नमो नमो हरि ब्रह्म गियान। सांईदास नमो हरि जान।

नमो नमो हरि प्रानि उधारी। नमो नमो घटि घट उजयारी।
नमो नमो प्रभ स्याम सुन्दर हर। नमो नमो लक्ष्मन श्री रघवरि।
नमो नमो हर्मुक्त के दाता। नमो नमो त्रयीलोकी जाता।
नमो नमो दुख भंज्जन राम। नमो नमो हरि पूरण काम।
नमो नमो श्री हलधर वीरि। साइीदास मनि मे हरि धीर।

नमो नमो ओपाविन लोग। नमो नमो हरि पोपनि भोगि।
नमो नमो पूरण परिमेश्वरि। नमो नमो हरि सर्व वसेश्वरि।
नमो नमो हरि आदि जुगाद। नमो नमो करि मिटे उपाध।
नमो नमो हरि गनका वीरि। नमो नमो प्रभ स्याम सरीरि।
नमो नमो हरि दे दनदान। साइीदास नमो भगिवान।

नमो नमो धारिन ब्रह्मंडि। नमो नमो कर्ता नउखडि।
नमो नमो हरि साध सहाइी। नमो नमो भग्तन सुपदाइी।
नमो नमो हरि केवल ब्रह्म। नमो नमो हरि निर्मधरिम।
नमो नमो माधो अविनाशी। नमो नमो काटी जम फासी।
नमो नमो हरि दान दातारी। सांईदास नमो वविन वारी।

नमो नमो निर्मल हरि जोत। नमो नमो सभ डारी पोट।
नमो नमो हरि ज्ञानि विचारी। नमो नमो तारे अघि भारी।
नमो नमो हरि जोति प्रकास। नमो नमो हरि पूरण आस।
नमो नमो हरि पतित उधारन। नमो नमो हरि संगट टारन।
नमो नमो हरि सर्वस मानो। सांईदास नमो हरि जानो।

नमो नमो हरि कस विडारन। नमो नमो हरि रावण मारन ॥
नमो नमो हरिनाषस छेदन। नमो नमो दुसासनि वेधन ॥
नमो नमो पतिताको तारन। नमो नमो हरि पयज निवारन ॥
नमो नमो धारिन सभ धर्ना। नमो नमो हरि कारिन करिना ॥
नमो नमो हरि एको एक। साईदास मनि मोहरि टेक।८।

दो०—एको एक अनेक गत नाना रूप अपार।
साईदास जोगी जग्यम मुनि जना अन्त ना पारावारि ॥

अष्टपदी—१२

कै जोगी कै जोगि धियान। अंत न पावे श्री भगवानि ॥
कै जोगी के लिङ लडिकावे। सो भी प्रभ को अन्त न पावे ॥
कै मुन जनि जो मुषो न बोले। देस दिसतर माही डोले ॥
कैय वयरागी वनि को धावे। धाय धाय श्रम थक जावे ॥
बनि षडि सोवे माति नि आवे। साईदास समझे तै गत पावे।१।

कैई उदासी रहे उदास। वनि माही है ताको वास ॥
कबिहूं नगिरि माहि नही आवे। भरिमति भरिमत गत नही पावे
जवि लग सतिगुरि चर्नन भेटे। तबि लग तिमर कहा मनि मेटे ॥
घरि की सिद्ध कयसे करि पावे। जो वन मय भर्म चित लावे ॥
रहे उदास सदा मन माह। साईदास सोई गत पाह।२।

कैई रूप सन्यासी हूए। मनि पाखनु भ्रमत ही मूए ॥
हउमा मनि ते नाह भुलाने। तब ते वह पाखडी जाने ॥
जटा धारि भगिवे करि अवरि। भुजा खडी कर भए डिगबरि ॥
नेत्र मूद वह धरे धियान। कयसे गति पावे भगिवान ॥
प्रगट रूप हरि सभ घट माह। साईदास निज घन धरि ताहि।३।

कैई कहे जो हम भगवान। ताके रे मनि डूवा जानि ॥
कैई कहे जो हम भए साध। सो विष्या की फासी बांध ॥
कैई कहे जो जो हम भए पूरे। ताके कवूं न मिटे विसूरे ॥
कैई कहे हरि अउरि न कोई। आपस को करि थापे सोई ॥
कै भुल्ले विष्या अभिमानि साईदास अयसे अज्ञानि ४।

कहै जो हम निर्वानी। सो कयसे मिले सारग्य पानी।
कहे जो हम बुद्धवानु। सो मूर्ष करि अद्धे जान।
कहै जो हम सभ ऊचे। सोई हय सभ ही ते नीचे।
कहे जो हम परिउपकारी। सो कविहूं ना मिले मुरारी।
कहे हम ब्रह्म संग्य राते। साइीदास वह झूठ वकाते।

कहे हम सभ के राजे। ताके सदा न पूरे काजे।
कहे हम ते कछु होया। सोने सदा सदा सुख खोया।
कहे हम सरि कौ ना। सोई हय नीच जगत के मोना।
कहे हम ज्ञानि विचारी। ते डूवे भय धार मझारी।
कहे हम सभ ते रहते। सांइीदास विष्या मद वहते।

कहे हम हरि मतवाले। सो भर्मंत हय जिउ वरिवाले।।
कहे हम हय सुन्न वासी। सो फासे हय जगि की फासी।
कहे हम सभ के दाते। सोइी आनि लोक ते खाते।।
कहे हम हय पतवानु। ताको रे मनि धृग कर्जानि।।
कहे हम हय सुरि ज्ञान। साइीदास ते मूरष जान।

कहे हम विप्प कहावे। सो हय अध मुक्त नही पावे।।
कहे हम देवे दान। सो मूरष अधे अज्ञान।।
कहै हम सांत सरूप। क्षिन मय होवे गहरा रूपु।।
कहै हम विद्यावान। पढि पढि भूले वेद पुरान।।
कहे हम रषत पिंडु। सांइीदास सो काया डनु।

—माया सभ जगि व्याप हय एक रहे अनिनाह।
साइीदास प्रेम भक्त अह निस करे सो जनि उत्तम वाहि।।

अष्टपदी—१३

ते बोले अंव्रृत वानी। सोइी मुक्ते जानो प्रानी।।
ो बोले सभ ते नीच। ताको लगे न विष्या कीच।।
ो बोले हरि रस पीवे। सो तो आदि अत मध जीवे।।
ो बोले सहज सुभाइ। जिहि निज सुरा सभ जगत अघाइ
ते बोले राम उचारे। साइीदास ताह चल हारे।

मुष ते बोले हरि गुनि गावे। सो तो प्रगटि वकुंठ सिधावे॥
मुष ते बोले हरि रस राचे। विष फल त्याग सुधा रस माचे॥
मुष ते बोले ब्रह्म विचारे। सदा सदा हरि अंतरि धारे॥
मुष ते बोले अम्रत बयन। जिहि सुनि पावत हो सुष चयन॥
मुष ते बोले हरि रस चषे। सांईदास हरि सग्य चिति रषे।२।

मुष ते बोले हर हर हरि। ताके सवद सदा दृढ करि॥
मुष ते बोले सभ सुध जान। सो तो हरि दर्गा परिवान॥
मुष ते बोले हय मत्र वानी। महज सुध्व घटि माह समानी॥
मुष ते बोले हर्की नाम। जिह सुनि पावे जगि विश्राम॥
मुष ते बोले हरि इक जान। सांईदास ता परि कुर्वान।३।

मुष ते बोले आतम चीन्हे। सो तो हर्ने मुक्ते कीन्हे॥
मुष ते बोले उलिटे पउनु। ताके मिट गए आवा गउनु॥
मुष ते बोले हरि चित धारे। पचन वस करि ज्ञानि विचारे॥
मुष ते बोले दृढ करि ज्ञानि। जिहि सुन जगत लहत निर्वानि॥
मुष ते बोले हरि लिव लाइ। सांईदास सदा मुक्ताइ।४।

मुष ते बोले दुर्मत छाड। विषु फलि कटि सुधा फल गाड॥
मुष ते बोले षुल्हे कपाट। ताकों सूझे अठसठ हाटि॥
मुष ते बोले विप फल त्याग। हरि सिमरे ते पूरण भाग॥
मुष ते वोले हरि की गाल'। निस दिन सिमरे श्रीगोपाल॥
मुष ते बोले सुन्न विराजे। साईदास सुप गहरे गाजे।५।

मुष ते बोले हरि सग्य हेत। विष्या मनि तजि हरि हरि चेत॥
मुष ते बोले हर्की वानी। सोडी जानो ब्रह्म गियानी॥
मुषते बोले अगम्य अथाह। वाह वाह जे को वाहः॥
मुष ते बोले उनिमनि हरे। गुरि प्रसादि अनिभय जस कहे॥
मुष ते बोले हरि सो ध्यान। सांईदास तिह पूरण जानि।६।

गाल > गल्ल = बात।

मुप ते बोले ऋहन कन्हैया। सो नरि सदा सदा सुषैया॥
मुप ते बोले अनिहदि सूझै। सो नरि अगिमि निगम बिध बूझै
मुप ते बोले हरि विशान। तिस जनि परि जाईए कुर्बान॥
मुप ते बोले गुरि चर्न पषालु। तिस जन परि प्रभ आप दियाल।
मुप ते बोले हरि नाम धिआवै। साईदास सोई गति पावै।

मुप ते बोले हरि रस पीवै। सो नरि सदा ही जीवै॥
मुप ते बोले हरिचित धरै। सो जनि जीवै कबू न मरै॥
मुप ते बोले सीता राम। तिस जनि सो जम नाही काम॥
मुप ते बोले प्रेम कहानी। हरि सिमिरण गति तिन ही जानी
मुप ते बोले निज घरि रहै। साईदास अविगति गत लहै।

सलोकु–अगम निगम सभ सोधयो अत नाही गति पात।
साईदास एक रूप पसरयो ब्राह्मण षत्री जात॥

अष्टपदी—१४

अत नही करुणा निध स्वामी। अत नही हरि अतर जामी।
अत नही धरिनी धरि गोविद। अंत नाही पूरण परिमानद।
अत नाही सागर अरि सलता[1]। अत नाही जो हरि संग मिलता।
अत नाही हय सूरज चंदा। अंत नाही हय मेर मुकदा।
अत नाही घटि ज्ञान विचार। सांईदास अंत नहि पार।

अत नाही हय जल थल वास। अत नाही हय धर्न अकास।
अत नाही बोलण चुप कर्ना। अत नही हय जीवन मर्ना।
अत न नर्वरु अंत न पत्तर। अतु न पउन पानी बासतर।
अतु न सुन्न समाध हय अंत। अतु न सात उपाध हैय अतु।
अतु नही जो जल थल जीया। सांईदास अ अनत हर् कीया।

अत नही गंभीरि कउलास। अत नही हय जोत प्रकास।
अत नही हय सुरि नरि देवा। अत नाही हय प्रभ की सेवा।
अत नाही हय हर् के रूपु। अत नाही हय तत्त सरूपु।

---

[1] सलता > सरिता रलयोरभद

अत नही हय वेद पुरान। अत नही हर् कोर्त वपान ॥
अंत नाही अयुतार्ज कीन्। साईदास हरि अत को चीन्।३।

अत न सपना अंत न भूपु। अत न छाउ अत नहि धुपु ॥
अत न मूरप अरि बुधवानु। अत न राम क्रहन भगिवान ॥
अत न पडे, ज्ञान नहि अत। अत न चोट साध नहि अत ॥
अत न निरया पुर्ष न अत। अत न पुन्न पाप नहि अत ॥
अत न धउल पताल नहि अत। साईदास प्रभ अत बिअत।४।

अतहि स्वर्ग नर्क नह अत। अत नहि राग दोष नहि अंत ॥
अत नहि हस्त अत नह घोड। अत नहि निगम अत नह थोड ॥
अत न फुल फलन वृप न अत। अत नहि घाटि वाट नहि अत ॥
अत न देव दानू नहि अंत। अत न पशू प्रेत नहि अत ॥
अत न जुगत अजुगति नहि अंत। साईदास प्रभ सदा बियत।५।

अत न भूष तृपत नहि अत। अ त न उतपत षपत न अंत ॥
अ त न जीवण हतन न अंत। अ त न सोव जाग नहि अ त ॥
अ त न जोगी जोग धियानी। अ त न मूरप अर सुर ज्ञानी ॥
अ त नही सागर रतनागर। अ त नही प्रभ सभ गुन आगर ॥
अ त विअ त अ त, को पावे। साईदास धन नामि धियावे।६।

अंत न आन आप नहि अंतु। अंत पुछावण कहे न अंतु ॥
अ त न धरिण धारण ब्रह्म डि। अंत न सपत दीप नउपड ॥
अ त न सेस अ त नहि नागि। अंत अभागि अ त नह भागि ॥
अंत न दीप न अंत पतग्या। अंत अनंत अनंत तरंग्या ॥
अ त अनत अंतत निहारे। सांईदास दर्सन बलहारे।७।

अ त न पेपे ग्रह भगवान। अंत न हरि हर हर जान ॥
अ त नहीं कउलापति केस्वर। अंत नही पूरण परिमेस्वर ॥
अ त नही हर्नंदकुमार। अंत नही हरि अपर अपारि ॥
अ त नही, क्या अ त बषानू। अंत कविन बिध कर्के ज्ञानू ॥
अंत नही क्या कह्ये अंत। सांईदास हर् जानि विअंत ॥

सलोकु—सभना को प्रभ देत हय वर्धा कोइी नाहि।
साईदास जल थल जो जीव से सकले सिमरे ताह ॥

अष्टपदी—१५

साध देत हरि चोरिन देत। नरन्देत हरि ढोरन देत ॥
मूरिप सभ अज्ञानी देत। महा प्रसन्न सुरि ज्ञानी देत ॥
तिरिआ देत पुर्ष भी देत। पूरण पूर्पूरि सभ लेत ॥
भर्स देत हरि सालक देत। मद्धम देत कुल आगर देत ॥
देत देत क्या भाष सुनाऊ। साईदास प्रभ के बल जाऊ।१

दीना नाथ दयाल दियाल। सभ जीयनि को हय प्रतिपाल ॥
या बिनु दूजा अविरि न कोइ। जल थल भीतरि रहा समोइ ॥
स्वास स्वास में सभे सम्हारे। एक स्वास नाम नो विसारे ॥
जी जी की हरि सोभी धारे। पल पल छिन छिन काज सवारे ॥
अयसे प्रभ पर्सद सद वार। साईदास सदा बलहारि।२

सभ जीयन को आप सहाइ। कउलापति हरि तृभवन राइ ॥
सभ जीयन को जानण योग। वा बिन अउर न होया होग ॥
अयसे ठाकुर परि बल जाऊ। निसबासरि ताके गुन गाऊ ॥
गाय गाय गुण आतम तोपू। ब्रह्म अग्नि यह विध कर्पोषू ॥
प्राणनाथ को घट मय लय्ये। साईदास प्रभ के बल जय्ये।३।

दीन दियाल दया निध जानू। पूरण पुर्ष सदा भगिवानू ॥
वन तृण वृक्ष सलता परिवाह। जल थल भीतर वा हरि ताह ॥
या विनु अउर न सूझे कोइ। हरि समसरि, को दूजा होइ ॥
पलि पलि छिनि छिन ना बिसरावो। स्वास स्वास हर्के गुनि गावो ॥
प्रेम प्रीत करि चित लाए। सांईदास सदा गुण गाए।४।

अयसे प्रभ के बल बल जाईए। उमगि उमग मन हर् जस गाईए
प्रेम प्रीत चित में ठहिराइी। भ्रम प्रवाह को दिय वहाइी ॥
देवन हारि निरजनि देव। आठ जाम लग हर्की सेव ॥
साध संङ्ग मिल गावो गीत। त्याग डारि चित ते विपरीति ॥
ग्तरि गत हो भज भगिवान सांईदास निश्चे मनि मानि ५

पल पल प्रेम वढाओ राम। आदि अंत सुफलो यहि काम।।
अउरि लालसा चितवनि त्यागि। राम नाम की सेवा लाग।।
प्रगिटि निशान वजे जगि माह। कछु ससा चित उपिजे नाह।।
साहिब मिल जवि साहटु हूआ। ससा तउ जो होवे दूया।।
एकु दुयी का पोवे मूल। सांईदास मिल आनद भूल।६।

चउथे पदि माही घरि वास। सांत सरोवरि माह विलास।।
ज्ञान पंखडी षोल्हे जाइ। सहज भूलणे भूले आइ।।
करि ववेक तुरिया घटि लयन। चउथे पदि मय सभ भए चयन।।
ज्ञानि ववेक रहत कछु नाह। चउथे पदि मय जाय मिलाह।।
निश्चल मारग सांत पदि जानु। साईदास तत्त लेय पछान।७।

सकल घटा कों देत हरी हर। रे मनि सिमरण ताह करी करि।।
ताको त्याग न अउरी लाग। हरि रस रच विष्या सो भाग।।
सभ जगि देत कहाउ चिराऊ। अयसे हरि सभ माह् लषाऊ।।
सर्व घटा मय आपे रहया। विन भगिवानि न दूजा भया।।
प्रभ की कथा कहा कवि कह्ये। सांईदास हरि भज सुष लह्ये।८।

श्लोकु–मिथ्या विन हरि सिमरने तनि धन जोविन माल।
सांईदास मिथ्या विष्या चित धरय आए आए जज्जाल।।

अष्टपदी—१६

मिथ्या परि नारी चित राषे। मिथ्या सो विनु हरि कुछ भाषे।।
मिथ्या हरि गुण विन कुछ बोले। मिथ्या देस दिसंतर डोले।।
मिथ्या सो पर्द्रव्व चित धारे। मिथ्या सो विष्या संग भरे।।
मिथ्या धनि जोविन विन नाम। मिथ्या विन हरि सकले काम।।
मिथ्या विन हरि सिमरण देहः। सांईदास सिमरण विनषेहः।१।

मिथ्या हर्ष शोक जो व्यापे। मिथ्या विन हरि अउर जु जापे।।
मिथ्या सुति दारा परिवार। मिथ्या नाम विना अउतारि।।
मिथ्या पहरण षावन भोगि। मिथ्या ध्यानि विना सभ जोग।।
मिथ्या प्रेम विना मुष वानी। मिथ्या धरे आन विषानी।।
मिथ्या थान थनंतर वासा सांईदास मिथा सभ आसा २

मिथ्या भक्त[1] विना जो करे। मिथ्या परि प्रीक्षा चित धरे ।।
मिथ्या विन हरि सकले काम। मिथ्या विन रसना हर्नाम ।।
मिथ्या विन हरि कथा गियान। मिथ्या विन हरि आउना जानु ।।
मिथ्या रूप रङ्ग अभमान। मिथ्या माया को करि जान ।।
मिथ्या हस्त अश्व असिवारी। साईदास तू सिमर मुरारी ।३।

मिथ्या राम नाम विन वानी। मिथ्या प्रेम भक्त विन हानी ।।
मिथ्या पर्निद्या जो करे। मिथ्या लालच माया धरे ।।
मिथ्या विन हरि नाम जु लए। मिथ्या हरि को तज चित दए ।।
मिथ्या ग्रह कारज वियुहारि। मिथ्या हरि विन अउर विचारि ।।
मिथ्या सति गुरि चर्न न लागे। साईदास मिथ्या विन जागे ।४।

मिथ्या श्रविण परिनिद्या राचे। मिथ्या हर् तज विक्ष्या माचे ।।
मिथ्या राज विना हरि नाम। मिथ्या जोवन माने धाम ।।
मिथ्या अवरि अग हढावे। मिथ्या परि विकारि कों धावे ।।
मिथ्या परि धरि मूसन जाइ। मिथ्या चित जो लोभ लुभाइ ।।
मिथ्या पिंडु प्राण भय होवे। साईदास हर भज सुष सोवे ।५

मिथ्या साध हरि अंतर जाने। मिथ्या काम क्रोध मनि माने ।।
मिथ्या भूष प्यास जो व्यापे। मिथ्या सीत धाम को तापे ।।
मिथ्या बहुत नींद सो प्यार। मिथ्या वचनि न हो सच पारि ।।
मिथ्या पगि तीरथ नह जाइ। मिथ्या कर्ना टहिल कराइ ।।
मिथ्या विन बूझे सभ होइ। सांईदास मिथ्या सभ लोइ ।६

मिथ्या काम क्रोध हंकारि। मिथ्या नामि विना ससारि ।।
मिथ्या उपजि विस जगि माह। जवि लगि हरि सिमरण हो साह
मिथ्या हरि विन अउरि निहारे। मिथ्या हरि विन देहा जारे ।।
मिथ्या हरि विन अउरि जो ओटि। मिथ्या हरि विन धंधा पोटि ।।
मिथ्या विन भगवान सभ जान। सांईदास सोई परवानि ।।

---

१. भक्त=श्रद्धा।

मिथ्या साध चोरि जो होवे। मिथ्या तन धन हरि विन षोवे ।।
मिथ्या बहु पुत हित संग्य राता। मिथ्या नरि जोविन मदमाता ।।
मिथ्या विष्या उठे तरगा। मिथ्या विन हरि राचे रगा ।।
मिथ्या नयन भये जगि रूपु। मिथ्या सपनि भयो जो भूपु ।।
मिथ्या हरि विन तीनों लोक। सांईदास मिथ्या सभ थोक।८।

सलोकु–साधू हरि अतर्नही वेद पुकार्ल चारि।
सांईदास हरि साधू अ तिर करे सो ते सदा दु:पारि ।।

अष्टपदी—१७

हरि साधू अ तर जो करे। आवे जावे जनिमे मरे ।।
हरि मय माध साध हरि होइ। अयसो ज्ञान विचारे कोइ ।।
ज्ञानि विचारे सो मुक्ताइ। तांको हर्जी आप सहाइ ।।
हरि सहाइ कारज सभ सरे। जनिम जनिम के परि दुष हरे ।।
हरि सहाइ होइ मुक्ता करे। सांईदास हरि सर्नी तरे।१।

अ तर नाह साध अरि राम। साध मर्न पायो विश्राम ।।
साध के सग सदा सुष होवे। लोभ मोह मिल दर्सन षोवे ।।
साध का सग्य मिले वडि भाग। गुर प्रसादि हरि सेवा लाग ।।
हरि सेवा लागे जो कोइ। आवागउन को संसा षोइ ।।
सेवा लाग परिम सुष होइ। सांईदास जनि उत्तम सोइ।२।

सेवा करे सो नयुनिध पावे। साध राम करि एक धयावे ।।
साध राम कुछ भेद न जाने। हरि सेवा सेती मनि मांने ।।
जो नरि हर्की सेवा लागे। पचि भूत तांके उठि भागे ।।
हरि सेवा ते सभ दुष जाइ। वहुडि वारि जूनी नहि आइ ।।
लागे सेवा हर्जस करे। सांईदास भय सागर तरे।३।

सागिर तरे जु सभ सम जांने। साध राम अ तर नहीं आने ।।
जो अ तर जाने सो दुष पाइ। वारि वारि जूनी भर्माइ ।।
जूनी भर्मे विन गुरि पूरे। सो नरि सदा सदा मनि भूरे ।।
हरि सिमरे सो बहु सुष पाइ। आवा गउन कों भर्म मिटाइ ।।
भरिम मिटे लागे हरि भेतु साईदास सति गुर सेतु

महा कष्ट दुख लागे देहा। विष्या लागन को फल एहा।
भरिमत भरमत बहु थक जाइ। गुरि बिन कयसे मार्ग पाइ।
बूझे हरि गुर सेवा लागे। अमृत रस गह विष्या त्यागे॥
जवि विष्या का कीनो त्याग। उदे भए पूरण बल भागि॥
त्यागे विष्या सुषिया होइ। साईदास जनि मुक्ता सोइ।

भक्त होइ हरि भक्त पछाने। मोरि कीटि जीयु इक जाने।
जयसे हस्ती हस्त फुन जयसा। जयसे सोवे जागे तयसा॥
जयसे हर्ष तयसे ही सोग। सदा नद न कबू वियोग।
जयसे माटी कचन अयसा। जयसे पाथर हीरा तयसा।
सो दर्गा होवे परिवान। सांईदास तिस तो कुर्बान।

तिह वियोग शोक कछु नाह। जो हरि सोध लये घटि माह।
सोधे मन हरि अंतर माह। सहज समाध विषे उरिझाहि।
लावे लिवि अरि साधे पउनु। ताके मिटि जा आवा गउनु।
आवागवन भर्म मिटि जाइ। गुरि प्रसादि हरि दर्सन पाइ।
आवा गउन मिटे हरि सेवा। सांईदास सर्न गुरि देवा।

सर्न गुरों की जो को आवे। जनिम जनिम सोई मुक्तावे।
मुक्ता होइ परम गति पावे। रामनाम अहि निस लिव लावे।
लावे लिव विष्या ते रहे। गुरि प्रसाद अन भय पद गहे।
भक्त भाव जवि आतम लीना। सात सरोवरि वासा कीना।
साति सरोवरि को वियुहारि। सांईदास दास चित्त धारि।

सलोकु–साधो हरि रस पीजिये तजीए विष्या विकारि।
सांईदास सोहे हसा जाप जप तिह दर्स बलहारि॥

अष्टपदी—१८

साधो पीजे हरि रस नीक। जिहि पीए सुष होवे चीत
अमर होइ काल भय जाइ। या जग सोफन रूप दिषाइ।
महा परिम कलयाण सरूपु। मगल रूपी महा अनूपु
जिउ मदिमाते कुंजर डोले। जयसे मृग वाणी मध बोले
अयसो हरि रस पी मेरे भाई' साईदास अचो चित लाई

राम रसायण जिन्न रे पीआ। सो नहि मूआ जीविन जीआ॥
जीयन जीयन रह्यो समो। वांते नहीं अउर फुनि कोइ॥
सभ जीयन कों चेते सोइ। वावन दूजा अउर न होइ॥
हाथ जोरि करि ठाढे भए। करि डंडउत' पाहन पए॥
अयसो हरि रस जो जनि पीए। सांईदास सो जुग जुग जीए।२।

राम रसाइण अयसो वीरि। पीवित मिटि जा पीडि सरीरि॥
सुष मेटे दुष जाय भुलाइ। परिम पुर्ष जवि होइ सहाइ॥
पर्म पुर्ष को जाणें जोइ। ताको दुख न लागे कोइ॥
निर्मल पङ्कज जपो सरूपु। पङ्कज पद भज भए अनूपु॥
दुष को मूल काटि तिन दीन। साईदास सो सदा सुषीन।३।

दु:खु गिया जवि पायो राम। राम मिल्यो भए सुफले काम॥
राम नाम सो लागी प्रीत। भूल गई सभ जगि की रीति॥
लोक लाजि सभ दीनि डारि। भेटे पर्म पुर्ष इक वारि॥
रोम रोम भयो राम सरूपु। कहा कहु कछु अचरज रूपु॥
हर्जी भज हर्जी होइ रहे। सांईदास दास पद गहे।४।

हरि सो अपिना रूपु निहारा। भूल गिया जगि धंधा सारा॥
जित देषो तित पूरण राम। राम भयो पायो विश्राम॥
वाह वाह जी कयसा भया। मति उत्तम कछु जाइ न कहया॥
अयसो राम भजन परतापु। मिटे भजन हर्तीनो ताप॥
राम भजिन दर्गा नही हान। सांईदास दास परिवान।५।

राम नाम से राषे ध्यान। ताको क्षेम कुशल कलयान॥
सदा सुषी दुष भयो विनाश। आनंद मंगल सहज हुलास॥
मगल रूपी आठों जाम। जम वयरी सो कबू न काम॥
जम हो दास अधीनि हय सदा। गुरिचर्नी जो राषे रिदा॥
चूक गई हरि लीयो पछान। सांईदास नही जम काण।६।

. डंडउत=डंडौत >दंडवत्।

हरि सो जविही भैय सयान। मानो पायो परिम निधान।।
पूर्ण पुर्ष वसे मनि माह। चूक गए दुख सकले ताह।।
ससा चूका भ्रम भय भागा। अनिभय सेतीया मनि लागा।।
लागा मन जवि अनभय नाल। चूक गए सकले जजाल।।
सहिजे भेटे चतर सरूपु। साईदास भए आनदि रूपु।७

पङ्कज पदि घरि वासा कीना। डोल डुलावरण चित तज दीना।।
गावित गावत गावे फूल। उनिमनी कला झूलणे झूल।।
झूलति सहज पालणे माह। तीन ताप की गम ता नाह।।
पानी पउन अग्नि घरि वास। पांच तत्त ते रहे उदास।।
अयसी ठउर विषे मन दीना। साईदास तहा वासा कीना।८

दो०—दुष्यि विनासन स्याम वन नाथ अनाथन राम।
साईदास ताकी सर्नी आईये रे मन आठो जाम।।

अष्टपदी—१६

सख्यी राम विना को नाह। या तू समझ देष मनि माह।।
निकटि कठन जह होवे ठउर। हरि सहाइ विन नाही अउर।।
माति पिता वनता सुति मीत। छिनि मातर हय जगि की रीत।।
जव मह भयानक काल भय होवे। हर्का नाम सकल भय षोवे।।
अयसो नाम जपो मनि मेरे। साईदास सुष होइ घनेरे।१

प्रथिवी पति राच्यो सुष माह। हर्के सिमरण सम सरि नाह।।
दुखि विआपे विन हर्नाम। हरि सिमरण विन विर्थे काम।।
माया मोह तजो हो स्यानु। हरि सिमरण पायो निध ज्ञान।।
गुरि मिल लीजै अयसी सीख। जयसे अमृत उपिजयो ईख।।
आदि पुर्ष का पायो भेव। साईदास दास गुर सेव।२

गुरि मिल पायो निर्मल ज्ञानि। प्रेम भक्त कों लियो पछान।।
जांते उपिजे निर्मल प्रीत। प्रेम भक्त की एही रीत।।
लाष करोडी वंधन तोडि। आए श्री जगि पद की ओड।।
मार्ग अधकारि मिट गया। रोम रोम महि आनंद भया।।
गुरि मिल लीनो तत्त पछान साईदास दास यहि ज्ञान ३

हर्की नामु जपति दुष जाइ। प्रेम भक्ति जिह् उपिजे आइ॥
प्रेम भक्त करि गावो गीत। साध जनां की पावो रीत॥
हर के गुण गावो दिन रयन। मुष ते बोलो मीठे वयन॥
यह् वयनन सो हरि गुनि गाइ। महा अनंदि रिदे उपिजाइ॥
आदि अ ति हरि जी कों ध्यान। साईदास दास चित आन।४।

देषो साधो नयन उघाड़। वह्यो जात जग लेह्नु सम्हाल॥
पल पल घटे वछे नहि आइ। हरि सिमरण मनि मे उपिजाइ॥
मार्ग माहि सुहेला जा। हरि चर्नी लग ठाकनिपा॥
महासुषी करि हरि हय तुह जपसो। वधनि तोडि वही सुष सो॥
आवा गवनि भरिम मिट जा। सांईदास सदा हरि ध्याइ।५।

हरि ध्यायो पायो निध गियान। राम राम सो लागो ध्यान॥
राम भजन तन मनि सुष हो। वधनि तोडि वही सुष सो॥
वहुडे दुःख न लागे आ। वाके अ दर अ ग उढा॥
अनेक राग उपिजे छिन माह्। जिह् समान कछु होवे नाह्॥
सु षि पावे सिमरे वनिवारी। सांईदास दास गत नयारी।६।

एक दुई को कीजे नास। तवि निश्चल घरि होवे वास॥
पर्म पुर्ष तवि नयन दिखा। आशा उलटि आप समा॥
आप समाय भयो तेसो। जाते वहुडे हाल न हो॥
आतम रूपी रह्यो समाय। जित देषो तित आत्मरा॥
कहा कहे हय अयसा जयसा। साईदास दास हय तयसा।७।

देषों भाई अचरज वानी। या नयनन मय वसत पछानी॥
वाको घटि मय पायो भेवु। जो नरि लागो हरि की सेवि॥
हरि सेवा मय रह्यो समा। हर् भज आपा दीयो तजा॥
पांच भूत का कीनो नास्। रोम रोम मय भयो हुलास॥
जवि पायो तवि आप भुलाइ। साईदास दास सनाइ।८।

सलोकु—अविधू अविध सम्हाल लय सुफनो सो संसार।
सांईदास पाउ पलक लागे नही छिनि मय विनसन हारि॥

अष्टपदी—२०

अविधू लीजे अविध सम्हारी। पलि पलि घटे वधे नहि वारी ॥
कचन कोटि बहुड गत ले। बिन हरि भजन कहा कर्ले ॥
जिहि वस राग रग सभ भोग्। तिह सेती होवे सज्जोग् ॥
एक भात के पञ्च कहायन। अनेक भाति अ बिर अग लायन् ।
हरि भजि लीजे समा पछान। सांईदास दास सो जान।

याह समा फिर हाथ नि आवे। वहु जून भर्मे पचतावे ॥
जिउ जानो भज लय रघुराई। अटल राज महा सुपिदाई।
अवि जस के भजे रघुराई। राज न टले महासुष पाई।
अयसो राज नि कविहूं त्यागे। जो जनि हर्की सेवा लागे।
विष्या तजि हरि सो करि प्यारि। दुर्लभ देह का होय उधारि।
अअसे लीजि तत्त पछानि। सांईदास दास गुरि ज्ञान।

अविधू वाल अवस्ता वीती। हो अचेत हरि भक्त नि कीती।
भरि जोविन तिरया सङ्ग राता। अति अभिमानि जूए मदमाता।
तरन देही विष्या भरि डोले। सुप ते सीधे वचन न बोले।
वृद्ध भया तवि आलस देही। काज न सरे भए जवि क्षेही।
भजिए पूरण श्री भगवान। साईदास हरि लियो पछान।

जिहि प्रसादि होय सुप घनेरा। सारा जगत रहे हो चेरा।
जिहि प्रसाद पायो रसभोग। चर्नी लागे तीनो लोक।
जिह प्रसादि अवरि अंग्य लावे। रे मनि ताकों किउ विसरावे।
जिह प्रसादि पावे सुप मान। रे मनि रापों तांसो ध्यान।
एक निमष हर् नां विसरा। साईदास दास गुण गा।

धनि जोवन का तजए मान। निसि दिन भजए श्री भगिवान।
स्वास स्वास गुण गावो मीत। प्रेम भक्त की लीजे रीत।
एक पलिक विन भजन न खो। रे मनि अउसरि बीते जो।
भजिए पूर्ण पुर्ष निधान। तांके सिमरण कवू न हान।
अयसो भजिए तजिए मान। गोविंद गोविंद गोविद जानि।
अयसे प्रभ ते सद सद वारि। सांईदास दास वलहारि

कुल कुटबि की उोटि तियाग। राम नाम की सेवा लाग ॥
जिह प्रसादि कारज सभ सरे। धरिमराय धरि पायन परे ॥
करे बेनती दो करि जोरे। पायन लागे कबू न भूरे ॥
अयसो राम भजिन परितापु। निस वासरि हर्को जप जाप ॥
हरि भजिए तजिए अभिमान। सांईदास दास हरि ध्यान।६।

इह अउसरि पाए वडिभाग। कोऊ अक्षर पूरब जाग ॥
इह औसर जो राम सम्हारे। आवागउनि को संसा टारे ॥
निश्चल रहे चले नही कविही। हरि सिमरे गति पावे तविही ॥
कहूं तोह हरि लीजे कान। दृढ प्रतीत निश्चे जी जानि ॥
इह अउसर भज लय रघनाथ। साईदास दास सुप साथ।७।

हर्की कथा करो मनि ला। सदा सदा हर्के गुण गा ॥
साध सङ्ग सो धारो प्रीति। तिहि प्रसादि होइ निर्मल चीत ॥
देह रोग कों अउखध एह। साध सङ्ग मिल हर् भज लेह ॥
पल पल गावो गुण गोपाल। तातकाल मय करे उधारि ॥
निरभय पदि मय पायो वास। हरि दर्सन की पूरी आस ॥
आदिअंत हरि होय सहा। साईदास दास सर्नाइ।८।

सलोकु—तू राजा सभ मयन को तोरो वड परिताप्।
साईदास जिनि तू पाया प्रीत कर मेटे सभ संताप् ॥

अष्टपदी—२१

तूं राजा सभ भूम को सभ सयना तेरी।
तुही गरोविनवाज हय कटि वेडी मेरी ॥
निसवासरि तुमरे गुण गावो। प्रेम प्रीति चित माहि बढावो ॥
जो जनि तुमरी सर्नी आवे। तातकाल वयकुंठ सिधावे ॥
हर्की सर्न पडो रे भाइी। तिहि प्रसादि दुभधा मिटि जाइी ॥
जो जनि हर्की सर्नीपआ। साईदास दास तिह भया।१।

पाच भूत का सुनो विचारि। एक एक कों मनि मय धारि ॥
तिन्न तिन्न तिह घटि मय वास। जो चित उपिजे तिह पर्कास ॥
फुनि सुमावि तिन का सुन ले प्रेम प्रीत करि आतम दे।

एक एक के पाचों भेद। सुनो कान धरि कूकत वेद ॥
जो जनि पांच भूत से रह्या। साईदास दास तिह भया।२

पाच भूत का भेदि बताऊ। रे मनि तुझि को कह समझाऊ॥
फुन इह पाच कों करो वीचारि। चित अतर लियो श्रविनी धारि॥
फुन तत पाच सुनो मेरे भाई। ताको भेद सभ दियो बताई॥
जँउ पिङ निद्रा वस कीन। षुध्या तृपा सुनो परिवीन॥
पाच तत्त की सिष्ट रचाई। साईदास प्रभ बनत बनाई।३

कांनो धरि सुनि लीजै भाई। तिह सुभावि सभ दियो बताई॥
इनि पांचो का भेद वषानो। गुरि मुष होइ सोई जनि जानो॥
वहुडि पांच के भेद वताऊ। गुप्त वाति करि प्रगिटि दिषाऊ॥
माया मोह राग रस भोग। पाच भूत कों हय संजोगि॥
याको लीजे मनि मय धारि। सांईदास फुनि कीयो विचारि।४।

प्रथिवी को ग्रहि रिदा कहावे। द्वार गता ते वेद वकावे॥
खान पीनि अहारि पछानि। लालच लोभ विउहारि बषान॥
फुनि बानी को सुनो वीचारि। हरि प्रसादि करि अंतरि धारि॥
तुरिआ माह अहारि करी न। काम क्रोध मनि वस करि लीनि॥
नीकी वानी हर्जंस कीजै। सांईदास सोऊ घटि लीजे।५।

तपा तेज तत गृह जांनो। नेत्र माह द्वारि पहिचानों॥
दिष्ट अहारि मोह विउहारि। पच तत्त कों एही विचारि॥
नाम कदिल पायो घरि वास। पंखडी कला भयो परिकास॥
द्वादस द्वारे ताके कही। गध सुगध अहारि हय वही॥
नरि इछा विउहारि कहावे। साईदास को गुरि मुप पावे।६।

ग्रहि वृह्मंडि अकास पछान। फुन ते द्वारे कहो कान्॥
नादि अहार अहं विउहारं। सोहं हसा जाप विचार॥
या कुटम सभ नावक मा। तू षेवट हरि पार तरा॥
गुरि मिल लीजे मतरि वीरि। तवि भय सागर उतिरे तीरि॥
लष चउरासी भर्म न हो। भजि सांईदास दास गुरि सो।७।

गुरि सेवे हर्की गति जाने। हर्ष शोक मनि महि नही आने॥
निश्चल राज रहै हय बीरि। आविनि जाविन की मिटि पीडि॥
गहरि गभीरि गुपाल पछान। आठो पहिरि धरो हरि ध्यान॥
एक स्वास विर्था ना खो। हरि हरि सिमर लेय सुप हो॥
या सभ ही को ऊपरि कहो। हरि हरि सिमर सदा सुग लहो॥
चूक गयो सकिलो भ्रम भाई। साईदास दास हरि ध्याई।८।

दो०—मनि ते छाडो लालसा हर्जी रिदे वसा।
साईदास हरि दर्सन चित लाइए रहो तिसी अघा॥

अष्टपदी—२२

छाडि लालसा हरि गुण गा। हरि दर्सन की प्रीति वढा॥
सहिज सुभा मिले जो आ। हर्ष मान हो लीजे सा॥
अउर लालसा मूल नि कीजै। प्रेम प्रीति करि हरि रस पीजै॥
जिहि ठाकुर सो प्रीति अति हो। तिस सो करे वराविर को॥
जो भावे तो प्राप्त दे। साईदास भावे फिर से।१।

चर्न लागि करि जोरि खलो। जो कछु हरि भावे सो हो॥
ठाकुर हमरो अपरि अपारि। निमसकार् कीने सदवारि॥
जांको निमसकार मनि कीजै। कहु कयसे फिर उत्तर दीजै॥
ताकी लीजै आज्ञा मानि। जो कुछ करे सोई भगिवान॥
या विध लीजै अंतिर धारि। सांईदास दास वीचारि।२।

हर हरि हर हर हर हर हरी। आठ पहरि मनि हरि हरि करी॥
महा नद अनंदि आनद। स्वास स्वास सिमरो गोविद॥
क्षेम कुशल अनिरोगी देह। राम नाम सिमरण कर लेह॥
हरि आज्ञा लय मस्तक धारि। स्वास स्वास हरि करे जुहारि॥
प्रेम भक्त करि हरि दरि सूझै। साईदास दास यहु बूझै।३।

माति पिता भाई सुषिदाई। विन हरि रे मन कौन सहाई॥
जम को मारग महा दुख्वार। हरि सिमरण करि होय उधार॥
प्रेम प्रीत का वीजु वो। अनभय क्षेती नीकी हो॥

ए क्षेती नहि कबू न पूटे। अक्षे अपडि नहि हरि लव चूटे ॥
हरि हरि हरि हरि रिदे पछानो। साईदास दास यहु जानो ।

निर्धन को धनि हय भगिवान। रे मनि मेरे अयसे जान ॥
जिन कों मान आन हरि हो। अयसो अविर न होवे कोइ ॥
अउरि कउन की कीजे कान। जवि ते पाए श्री भगिवान ॥
वेर वेरि हरि परि कुर्वानी। साईदास दास गति जानी ।५

जो हरि भावे सोई भला। सो अविचल कविहूं ना चला ॥
अयसी धारि लेय मन माह। हरि प्रसादि होवे सुप ताहि ॥
फूली वेल लगो फल घना। हरि प्रसादि सुप होवे तना ॥
भजिए हरि तजिए अभमान। प्रेम प्रीत घटि अ तर आन ॥
हर्भजिए सुप रहो समा। साईदास दास सर्ना ।६

रे मन हरि हरि हर्ध्या। हर्के सिमरण बहु सुप पा ॥
हरि हर् कहते भागिन रोग। प्रापति होय महा सुप भोगि ॥
महा भोग हरि रस को पावे। नाम हरी यहु वेद वकावे ॥
तिहि समानि दूजा नही कोई। तीनि लोक ढूडो नहि होई ॥
अयसे गुरि मत लीजै ज्ञानि। भजि साईदास दास भगिवान ।७।

रे मनि तू भजि भगिवान। विन भगिवान न दूजा जान ॥
अयसो अउर समरथ हय को। जिह भजिए आतम सुप हो ॥
एक पलक मय जगत उपा। पलिक माह पर्लय दिखला ॥
हर् दर्गा जो पेखन हो। वहुड लालसो रहे नि कोइ ॥
हरि सिमरणु मनि मह उपिजा। साईदास दास चित ला ।८।

दो०—विना भजिन भगिवान के विर्थे सकले काम।
साईदास जिह्वा काटि नकारीए जो उचिरे नही नाम ॥

अष्टपदी—२३

भजिन विना विर्थे सभ काम। रसना काटो कहे न राम ॥
विर्थे नयनि जु हर्विन देषे। विन भगिवान न दूजो पेषे ॥
विर्थे कान परि निंद्या राते अ व्रत तज विष्या सो माते

विर्थे हाथ टहल नहि धारे। हरि सन्तन सेबा न विचारे॥
विर्थे पगि तीर्थ नहि जाय। साईदास कयसे सुष पाइ।१।

विर्था चित जो चले बिकारा। तटि तीरथ गुर मनि नह धारा॥
विर्था देह विना हनामि। बिन हरि नाम न कतए काम॥
विर्था राजि माल अभमान। विर्था रग रूप करि जानि॥
विर्था धनि हरि संत न काज। अंत काल आवे दलाजि॥
विर्था अउध विन हरि होइ। साईदास विर्थे अथलोइ।२।

दानि पुन्य तपस्या करे। विना कामन दुविको लय मरे॥
परिदछनि प्रथिवी सभ दे। ऊर्ध पांउ करि झूलरा ले॥
अग्नि विषे जो जारे प्रान। पउन अहार करे धरि ध्यान॥
मिहजा भूमि दान जवि धारे। जो को मेरि एही प्रन तारे॥
विना भजिन विर्था सभ हो। साईदास दास भज सो।३।

निउली कर्म करे चितु ला। चेतन हो जी दया वसा॥
जडम रूपी लिङ लडिकावै। जोगी होकै कान पडावैं॥
वयरागी वनि पड सिधारे। कुल कुटंबि तज होय नियारे॥
होइ अपर्सन पर्से काहू। मानि महत मय डूबे वाहू॥
भेप सकल विर्था विन नाम। हर्भज लीजै आठो जाम॥
मकल सिष्ट चेरी हो रहे। साईदास दास पदि गहे।४।

पडितु वेद पडे पडि मूआ। भेदी हर्के भजन न हूआ॥
वेद सार कछु हाथ न आयो। वेद सारि को मर्म नि पायो॥
आपस को पडित करि जाना। हर्को मार्ग रिदे भुलाना॥
परि निद्या सो रह्यो समा। प्रान पुर्प दीजो विसरा॥
हर्जी घटि घट भीतर लहो। सांईदास दास पदि गहो।५।

हरि विन अउध विहानी अयसे। मेघ विना हो क्षेती जयसे॥
हरि सिमरण विन किते न काज। पख विना हय जयसे वाज॥
जगि मय विर्था आवन भयो। हर्को नाम नि मन मय लयो॥
न चूकी कान न अनभय जी। वह नहि मिलयो अनभय पी॥
काम क्रोध माया मदि तजिए साईदास दास हर्भजिए।६।

तजो सग्रानप सकल सरीर। हर्को भजि लय निसि दन बौरि।
वहुड़ वारि नहि आविन हो। दर्गा ठाकि नि साके को।
माया मोह तियागो चीत। हरि सिमरण की लीजै रीत।
जो आयो क्या संग लियायो। अंत कालि आयो उठ धायो।
माटी देही जब कव हान्। तिहि ऊपरि क्या करहु गुमान।
विमल छाडि अउसरि वहि जा। सांईदास दास सर्ना।

इह अउसरि फरि हाथ न आवे। मानिस देही क्या फरि पावै।
अवि कै चूकै ठविर न को। लप चउरासी भर्मन हो।।
आतम हो परिमातम पा। मनि मनिसा नास करा।
ना मनूआ ना मनिसा को। जवि ते लीनि परम गत हों।।
कयसे विन सिमरण कल्यान। गहु सांईदास दास जी जानि।

दो०—सविद रूप अरूप हय अंत लषे नहि कोइ।
साईदास जो हर्भज जगि ते न्यारा हो।।

अष्टपदी—२४

सविद रूप लषे जनि सो। रूप रेप ते न्यारा हो।
जगि कीयाहु एक न लागे। ब्रह्म अग्नि घटि भीतिर जागे।।
अनाहद धुन सो लागो ध्यान। सो जनि पर्से श्री भगिवान।।
जिह जनि हर्का दर्सन पायो। वहुडि वारि जूनी नहि आयो।।
जहा बसे हरि चतर प्रवीन। सांईदास दास तहां लीन।

सत जना पायो घटि माह। हरि प्रसादि कछु अतरि नाह।।
देषो तो प्रभ की चतुराई। या जगि कयसी वनित बनाई।।
को कयसा को कयसा कीन। को मूरख को चतिर प्रवीनि।।
को काहू की जाणे नाह। सभ गलतान आप ही माह।।
अयसे नरि हरि रूप अपार। सांईदास दास बलहार।

अयसे प्रभ ते वल वल जाईए। आठ पहरां गुनि गाईए।
अक्षे षडि अषडि नहि को। पसर रह्यो हय जल थल सो।।
जो दीसे सोई हय आगे। कविहू सोवे कविहूं जागे।
जवि सोवे तबि सुन्न कहा। जवि जागे तवि चेत नरा।।
सोवित जागृत एको जयसा। सांईदास दास हो अयसा।

ना जागे ना सोवे भो। अयसो सुन्न समाधी होइ॥
आतम कों अयसो विमथार। तिह् धरि चीत हरि चेत निहार॥
कोटि अकास धर्न अरु प्याला। आतम को विसथारि निराला॥
जो दीसे सो आतिम राम। विना राम ना दूजो जान॥
आतम परिमातम इकु माने। साईदास दास यहु जाने।४।

अयसो आतम जाने जो। हरि सो मिले नि बिछडा हो॥
जयसे सलना सिंध मिला। वहुडि प्रवाह नि नकसनया॥
जवि अयसे आतम जनि जाना। तवि बोले पूरण भगिवाना॥
तुम निज भक्ता भक्त हमारे। तुम हम ते नहि कबू निआरे॥
निसवासरि हम तुमरे माही। हमय तुमय कछु भेद नही॥
हरि साथ कछु भेदि न जाने। साईदास दास सच माने।५।

जो जनि तुमरी सेवा करी। तुम वांछति करि मनि मय धरी॥
साध सत हरि एकोएक। समझ देप चित करो विवेक॥
हरि साधन मय अतरि नाही। साध जना पायो घटि माही॥
जयसे जल तरङ्ग नहि न्यारा। अयसे साधा हरि चित धारा॥
सो सेवा तुमरी ठहिराई। सांईदास हरि होइ सहाई।६।

हरि साधा नहि जोन नआरी। आदि पुर्ष होवित ततकारी॥
हरि सोधो मय भेद को नाह। या।तू समझ देष मनि माह॥
सेवक स्वामी होवत आयो। जिन मनि वच करि सेवि करायो॥
दृढ मति सो सेवा दृढ कीजै। विन सेवा कछु अवर न लीजै॥
अयसो पुर्ष भयो मतिकारी। सांईदास तिहि मिलयो मुरारी।७।

दीना नाथ दया निध स्वामी। करि किरपा प्रभ अतिर जामी॥
अपिना नाम दानि मोह दीजै। प्रभि जी मो परि किरपा कीजै॥
अउगनि हमरे नहि चितारौ। करि किरिपा पतिता को तारो॥
तुमरे दर्पर करो पुकार। हो दियाल मोह करो उधारि॥
हरि भावे तो होइ कृपाल। सांईदास प्रभ भयो दियाल।८।

दो०—अम्रत हर्को नामु हय जो अचिवे जन को।
सांईदास अम्रत वानी जो पडे मुक्त पराप्त हो॥

इति रामाय नमः अष्टपदी २४

॥ ओं स्वस्ति श्री गणेशाय नमः ॥

अथ भाषा लिखे दश अवतार

कर्त साईदास के दास नरोत्तमदास कित[1]

ओ श्री मत्स कर्म्म बाराह नृसिंह बावन पशुराम श्रीरामचंद्र श्री कृष्ण बोध निहकलंकी श्री दश अवताराय नमः॥

श्री सतगुर देवाय नमः। ओं श्री सत्यसरूप बावा साईदास जी नमः।

निरंकार निर्वैर अजूनी[2] स्वंभू अकाल मूर्त मुर्ली मनोहरि कर्ता पुर्ष शष चक्र गदा पीतांबर कौलापति केसर पूर्न पर्मेश्वर साध जना को बिस्राम आद अंतु जानो नाही हमिरा तिहि पर्णामु।

सत्य बावा साईदास दस्म सिकदह।

नमो नमो प्रभु आदि जुगाद। नमो नमो पावे विस्माद॥

नमो नमो निरकार अकल हर। नमो नमो माधो धर्नी धर॥

---

१. प्रस्तुत रचना 'दश-अवतार' बाबा साईदास जी के भाषा मे लिखे भागवत के दशम स्कद का एक अश है किन्तु रचना के उपोद्‌घात की यह पंक्ति "कर्त साईदास के दास नरोत्तमदास कित" संदेह का कारण बन जाती है। गुसाई संप्रदाय वाले परंपरा से यह मानते आए है कि साईदास जी का ही नाम नरोत्तमदास था। यद्यपि इसका कोई पुष्ट प्रमाण नही है। पर एक बात जो स्पष्ट है वह यह कि इस रचना मे स्थान स्थान पर छन्द की समाप्ति पर "साईदास" नाम की छाप है। वैसे तो साईदास नाम की छाप मात्र रचना के कर्तृत्व को सिद्ध करने में सहायक नही है। इतना सब होते हुए भी इस रचना में प्राप्त दोनो पुष्पिकाएं तथा दश अवतारो मे से भगवान् श्रीकृष्ण अवतार की महिमा के लिए प्रस्तुत श्रीमद्‌भागवत के दशम स्कद के हिन्दी अनुवाद का उपोद्‌घात बाबा साईदास के कर्तृत्व को सिद्ध करता है। इसी उद्देश्य से इसे हम बाबा साईंदास की रचना मानकर उनकी शेष रचनाओं के साथ प्रस्तुत कर रहे हैं।

२ अजूनी <अयोनि।

नमो नमो प्रभ सुन्न विराजे। नमो नमो जो अनहद वाजे॥
नमो नमो ईस्वन के ईसा। नमो नमो जग के जगदीसा॥
नमो नमो पर्मानंद स्वामी। नमो नमो गुरु अंतरजामी॥
नमो नमो ब्रह्मिमड के नायक। नमो नमो भक्तिनि सुषदायक॥
नमो नमो प्रभु धुधूकारा। नमो नमो सभहू ते न्यारा॥
नमो नमो रचनि रचाई। नमो नमो धर गगन बनाई॥
नमो नमो पूर्न अविनासी। नमो नमो ताके सभ वासी॥
नमो नमो महाराज गुसाई। नमो नमो त्रिभुवनि के साई॥
नमो नमो हरि अक्षिनि वानी। नमो नमो हरि रस्न बषानी॥
नमो नमो गोविंद सभि माही। नमो नमो हर सकल समाही॥
नमो नमो वाणी रिसाला। नमो नमो हरि सभि प्रतिपाला॥
नमो नमो हरि मुक्ति के दाता। नमो नमो पूर्न विधाता॥
नमो नमो कौलापति केसरि। नमो नमो पूर्न पर्मेस्वरि॥
नमो नमो निर्मल निर्जोता। नमो नमो तारे सभ स्रोता[1]॥
नमो नमो ब्रह्मंड के दाता। नमो नमो भक्तिनि सग राता॥
नमो नमो करहौं कर जोरी। नमो नमो करि गति हर मोरी॥
प्रथिमे जबि ठाकुर मछि होइआया। तिस का सभ विर्तंतु सुनाया॥

मत्स्यावतार

श्री मछ की माता सषावली पिता पूर्व ऋषि गुरु मानधाता।
क्षेत्र द्वारका पुर पटन निर्दलंत संषासर दानो।

प्रिथम मछि रूप हरि होए। ताते भक्ति सकल सुख सोए॥
करि, द्रिग, सीसु मानस को कीनो। और देहि सभ मछ को लीनो॥
सखासुर ब्रह्म पहि आया। करि जोरे मुषि आषि सुणाया॥
किहि विधि पावो पूर्न रामा। किति विधि हरि मिल हो वहि कामा॥
क्यु करि मोह मिलै प्रभ पूर्न। क्युं करि गति मेरी होइ मूढनि॥
ज्यं तुमि कहो तिवै मै करिहों। तुमरो कह्या हृदे मैं धरिहों॥
इहि अभिलाषा मो मन माही। मैं तुमरे पै आषी सोई॥

---

1 स्रोता<श्रोता

अैसी बात बतावो मोको। आषि सुणाई मैं प्रभ तोकों।
इहि सचरु मम मनहु चुकावो। पूर्न ब्रह्म तुम तबी कहावो।
को विधि कीए मम मिले गुसाई। किहि विधि राम सर्न चितु साई।
कैसे करि मै गति को पावों। कैसे कर बैकुठ सिधावो।
कैसे मुक्ति बंधन ते होवों। कैसे राम चरन मैं धोवो।।
जिसि बिधि कीए हरि तंत मिलाही। सोई विधि तुम कहो हमाही।।
एहि प्रश्न हमिरा सुण लीजे। गुर प्रसाद मम उत्तर दीजै।।
ब्रह्मा ऐसो मुष ते भाषा। अंतर ध्यान धरे मुष आषा।
सुनि संखासर वात हमारी। मोहि अततु लेह मन वीचारी।
जो मैं कहो सु मनि महि रोषो। सत्त सत्त वचनि करि भाषो।
तुमि तें भक्ति अराध न होई। भक्ति अराध न पावो सोई।
भक्ति अराधि कर्नि वहु भारी। तनु होमों तव मिले मुरारी।
तनु होंमो तो भी नही पावों। तनु होमति अति मनु सुकिचावो।
विरोध भक्ति तुमि ते क्षिण होवै। तव निर्भौ सुख मंदर सोवै।
विरोध भक्ति कर्नि चित धारो। जीवधार देषो तिसि मारो।
सत जना को दुख वहु देवो। मार कूट वस्त्र षसि लेवो।
जो हरि जपै तिसी सौ झूझो। तुमि कवहू मुष नामु न बूझो।
गायत्री जापु कर्ति कोऊ देषो। तांको दड देहु दगि[1] पेषो।
सध्या जापु कर्न ना देवो। जो कोऊ करे तिसे हनि लीवो।
इहि विधि मोह बताइ तुमको। इहि विधि करिण योगु ना हमिको।
जो तैं प्रश्न कीआ तवि कह्यो। नहीं त मै निश्चल सुख वह्यो।
इहि विधि करो त्रि पावो रांमा। सांईदास प्रभ पूर्न कामा।

सखासर चित धरेयो बिरोधा। नप सष ते ले अंतर सोधा।
अवर कवन सग विरोध उठावों। तांके कीए अधिक मुषु पावों।
अैसो अवर नाहि कोऊ सूझै। जासि वैर करि मुक्ता हूजै।
सोधि अंतर हीये चित धार्यो। ब्रह्म संग विरोध हमारो।
नेत्र मूंद ब्रह्मे ध्यानु धर्यो। गोविद का तव सिमरनु कर्यो।
तवी संखासर वेद उठाए। लीए वेद जा दधि ठहिराए

[1] यहा द्र होने से शब्द द्रगि दृक नेत्र भय होगा

ब्रह्मा ध्यानु छाड जब देषै। ना सषासुरु वेद न पेषै।।
चितवन लागे इहि क्या होया। वेद कवनु मोह ले गयो सोया।।
अति विस्वास रिदे मोह पर्‌यो। हाथ जोर अंतर ध्यानु धर्‌यो।।
एही थटु वाध्यो मन आनि। साईदास दास सो भयो वषानि।३।

वेद मोह सखासर लीने। प्रिथमे वैरु मोहि संग कीने।।
मोहि कह्यो मोस्यु उठि लागा। ध्यानु छाडि चितवन इहि लागा।।
असुर बुद्धि तौही ते कहीये। सब्द गुरू सो इहि विधि रहीये।।
अति क्रोधु ब्रह्म मन कीनो। तब वीचारु अंतर इहि लीनो।।
हाथ जोर कर विनती करी। हे कोलापति निर्मल हरी।।
हे प्रभ पूर्न सभ विधि रामा। सत जना के पूर्न कामा।।
तुमि अविनाशी नासु नि तेरा। तूं प्रभ सदा सहाई मेरा।।
तू विग्रु तु तेरो अंतु न कोई। आदि अंत लगि तूं प्रभ होई।।
हौ मति हीन हो एहि मति मेरी। कहा कहों प्रभ मैं गति मेरी।।
तुमि अवर्न वर्न नही जानो। कहा लगि उस्तति तोहि वषानो।।
रस्ना रंच कहैं प्रभ मोरी। किति विधि करो मै उस्तित तोरी
निरकार निरवैर गुसांई। तीन भवन को है तू साई।।
मै तोहि उस्तति कहा वपानो। किति विधि तोह नामु रिदे आनों
चिन्ह चक्रि कछू द्रिष्ट न आवै। ताको कछु मनि महि ठहिरावै।।
जो द्रिग दीसै ताको कछु कहीयै। विन देषै क्या मनि उचिरहीयै।।
तुमरी उस्तति कवनु वषानो। तुमिरी गति मिति प्रभ के जानो।।
मम विनती प्रभ जी सुण लीजै। साईदास दास को मुक्ता कीजै।४।

मो पहि सखासरु प्रभ आया। मो सो प्रश्न एहि आपि सुणाया
किहि विधि पावो नामु गुसाई। किहि विधि राम चर्न चितु लाई।।
क्युं करि मुक्ति मोह गति होवै। क्यु करि मनु मेरो भ्रमु षोवै।।
इहि मोकों देह बताई। जिहि गति होवै मेरे भाई।।
तौ मैं उसि को एहि वतायो। बिरोध भगति कानि चितु लायो।।
तौ तुम पावों पुर्ष अविनासी। जाके सकल जीव है दासी।।
इहि विधि कहि मैं ध्यान महि आया। तौ सषासरु वेद उठाया।।
वेद दुराइ लीए उसि मेरे। कहा कहों प्रभ आगे तेरे।।

मोको वलु तासो न वसाई। मारो उसि को दधि महि जाई।।
वेद षसोटन ताते ल्यावों। किति विधि दधि के भीतर जावो
मोहि पै इहि विधि कीई न जाई। साईदास दास हरि सदा सहाई।'

वेद मोहि प्रभ आणि कै दीजै। इहि करुना प्रभ मोहि पै कीजे।'
ब्रह्मो को प्रश्न सुनौ प्रभ पूर्न। दूर कर्न सता के विसूर्न।।
प्रगट भए वपु मछ हरि धर्यो। संत हेत इहि कारुण कर्यो।।
जहा जहा भीर सतन को होवै। तहा तहा प्रभु मेरा पोवै।।
जिनि जिनि दुष भक्तनि को दीडो। तासि सिहारु मेरे प्रभ कीडो।'
भक्ति हेत प्रभ यहि वपु धार्यो। गण गधर्व तव जै जै कार्यो।
तव ही ब्रह्मे उस्तति करी। जवि देषे सुदर प्रभु हरी।'
दधि महि जाइ सखासरु मार्यो। पकरि दैत को प्रभु विडार्यो।'
तव सखासरु युं करि वोले। मोहि गत कवन पूर्न प्रभु अमोले।।
इसी प्रयोग विरोध मैं कीजो। ब्रह्म ते वेद दुगड़ करि लीडो।,
दर्सनु पावों पुर्ब निधाना। तौ मुक्ता होवों मनि आना।।
तोहि क्रिपा तत्काले करी। हे किर्पा निधि पूर्न हरी।।
क्रिपानिधानि पूर्ण पर्मेस्वरि। साईदास दास प्रभ सर्वसेस्वरि।

तासि मिटे के शष वनाए। एक दछनि व्यापछमि उपाए।।
मुष्ट भरी लोहि की भगवान। डारी शख भयो तव जान।
तव प्रभ संखासर य्यु कह्यो। मुष अपने इह प्रत उचिर्‌ह्यो।
जो कोई भक्ति मेरो जनु करे। प्रिथम तिलकु तेरे परि धरे।
मोहि स्नानु पूर्न तव होई। जब अठसठि तीर्थ जलु आने कोई
जो जलु पर निकसे तुमि माहे। अठि सठि तीर्थ को जलु नाहे।।
इहि वरु तव सखासर पायो। तव ते शखु जगत परि आयो।
शख की महिमा प्रभु वताई। सांईदास सुनहो चितु लाई।

जो कोई भक्ति ठाकुर की करै। प्रथमै तिल्कु शंख परि धरै।
जलु तिहि पाइ स्नानु करावे। पाछे तिल्कु ले ताहि चिन्हावे।
वहुडो चर्णा चर्णाम्रतु ले पीवै। सो जनु सदा सदा सुष थीवै।
इहि विधि प्रभ मुष आपि वषानी। जो कोई जनु होइ लए पछानी।
सखासुरु हनि वेद ल्याए। तौ साईदास दास वल जाए

वेद आणि ब्रह्मे को दीने। हिर्ष मान होइ ब्रह्मे लीने ।।
वेद लए सचर मन भागो। सचर सोग्रा तब ही जागो ।।
अति आनंदु मंगल बहु गाए। वेद लीए हरि दर्सन पाए ।।
अनक अनक तिहि बहु सुप पाए। अति अनंद मगल जसु गाए ।।
तुही तात भ्रात जग केरा। तू सभि विधि पूर्न प्रभु मेरा ।।
तोहि रूप मैं कहा वषानो। तोहि कला को मै क्या जानों ।।
तू सभि विधि दाता है जन कों। तुमि प्रसाद होया सुप मन को ।।
पूर्न ब्रह्म सदा अविनासी। कौलापति पूर्न अवनासी ।।
भक्ति हेत प्रभ इहि वपु धार्न। भक्ति हेत प्रभ असुर सिहार्न ।।
भक्ति हेत तुमि इहि विधि कीने। भक्ति हेत तुमि इहि वपु लीने ।।
भक्ति हेत दधि महि प्रभ गयो। भक्ति हेत प्रभ पर्गट भयो ।।
भक्ति हेत इहि कीने कामा। भक्ति हेत पर्म प्रभ रामा ।।
तुमि भगतनि के सदा सहाई। तुमिरी गति कछु लपी न जाई ।।
कहा वषानो कौतकि तेरे। साईदास जपु नाम सवेरे। ९।

प्रभु दे वेद वैकुठ सिधायो। ब्रह्म त्याग अस्थल महि आयो ।।
आदि अदीन है प्रभु मोरा। रवि सुत ते छूटै जो होवे चेरा ।।
जो जो मछ रूप जसु गावै। जीवत ही वैकुठि सिधावै ।।
वहुर वार जन्मे नही मरे। जो हरि मछ रूप रिदे धरे ।।
जन्म जन्म के वधनि काटै। दसवे द्वार के छूटहि कपाटे ।।
रोम रोम सीतल होइ जाए। तपि मिटै सीतल ग्रहि पाए ।।
दुपि दरिद्र तांको नहीं लागै। नामु जपति सकला दुष भागे ।।
सदा सदा हर को जसु गावो। और बात कित्ते चितु न लावों ।।
जसु जपै पाय्यै सुष माण। साईदास सोई परवाण १०

द्वितीये प्रभ कछ रूप हो आया। ताको सकल व्रितातु सुणाया ।।

कूर्म (कच्छ) अवतार

मानसरोवर क्षेत्र कमल ऋषुताल है
पद्मावती सुमात सिरजा गुरु साक्षात है।
क्षेत्र मानसरोवर निर्दलंत मधुकैट दानव ॥

द्वितीआ कछ रूप प्रभु धारे। कछ रूप होइ असुर सहारे।
असुर अधिक सुर को दुष देवहि। मार कूट वस्त्र षसि लैवहि।
जवि असुरों ने वहु दुषु दीआ। तब सभि देवो मन इहि कीआ।
चलहो प्रभ पहि जाइ पुकारहि। हमि को असुर काहे को मारेहि।
सभि सुर दधि तटि जा ठहिराए। मुपि ते वचन उचार सुनाए।
हे प्रभ असुर अधिक दुषु देवहि। मारकूट वस्त्रि षसि लेवहि।
तुमि विनु हमरो कौन सहाई। जासि पासि भागहि हमि जाई।
अवर कवन सो आप सुनावहि। कहों उोर कवन पहि जावहि।
हमिरो वलु तिहि सग न वसाई। हे प्रभ पूर्न भक्ति सहाई।
जव सभ देवो विनती ठांनी। ताको प्रभु दीयो शार्ङ्ग पानी।
तुमि जावो उनि की सर्नाई। मै तुमि को इहि बात वताई।
जवि देवों इहि विधि गुण पाई। तव साईदास हृदय ठहिराई।

तव ते सुर सभि ही चलि आए। असुरो सर्न आइ ठहिराए।
जो कछु असुर कहे सोई मानें। तांके कहें अ तरु नही आने।
तव ते असुर इनि दु ख न देवहि। डड डाड इनिको न करेवहि।
श्री कौलापति सत सहाई। असुरो मनि इहि विधि ठहिराई।
मथहि समुद्र रत्न निकारहि। कौलापति अपर अपारहि।
असुरो के मनि महि इह आई। कह्यो सुरो सो सुनहो मेरे भाई।
चलहो दधि मथन रत्न निकारहि। अवर वात कछु रिदे न धारहि।
जो उनि कह्यो सुरो मनि लीनी। साईदास उोर वात न कीनी।

असुर चले दधि मथने ताई। सुर सभ सग लीए अधिकाई।
जाइ दधि तटि परि ठांढे भए। मनि अ तरि इहि मनिसा लए।
मेरु पर्वतु माधाना कीना। वासुकु उर्ग नेत्रा करि लीना।
सुरो को कह्यो कवन उोर लेवो। हमि को कवन उोर तुमि देवो।

तव सभि देवो मनि महि धारा। इही वात तिन्हां हृदे वीचारा॥
जो हमि कहहि सीस ओर लेवहि। तव हमि कों पूछ ओर देवहि॥
जो हमि पूछ लेह सुप होई। हमि को विघ्न न लागै कोई॥
येही वात सुरों मनि धारी। साईदास सो कहति पुकारी।३।

तव असुरों को येहि प्रतु दीना। सीस ओर हमि कर महि कीना॥
पूछ ओर तुम कर महि लेवहु। तात्काल दध मथनु करेवहु॥
असुर मत विधि उर्ध पछानहि। जो सीस गही पूछ करि जानहि॥
पूछ ओर सभ सुर को दीना। सीस ओर अपने करि लीना॥
तव ही दधि को मथने लागे। ओर्वात सक्ली उनि त्यागे॥
जत्न कर्ति दध मथ्यौ न जाई। महा अधिक वलु थाके लाई॥
कहु कैसे दध मथिओ जाई। गरै धर्नि परि जा थरिहराई॥
तव असुरो सुरो मनि महि धारी। महा कठनि जु वनी अति भारी॥
हाथ जोर सभ विनती ठानी। हे प्रभ पूर्न शार्ङ्ग पानी॥
तुमि विनु हर दधि मथ्यो न जाई। हमिरो कछु प्रभ नाह वसाई॥
जव सभहूं यहि विनती ठानी। कौलापति वेनती मति मानी॥
तात्काल कछ्छ को वपु लीनो। वेग विल्म तवि ना किछु कीनों॥
गिर कौ जाइ पिठ परि लीओ। तवि उनि सभ दध मथना कीओ॥
चतुर्दश रत्न दध मथ निकारे। तवि असुरो ने एहि मनि धारे॥
नेको होइ सो सभि हमि लेवहि। वुरो होइ सो इनि को देवहि॥
अ अति चाहति है इहि लीआ। विपु चाहति असुरो को दीआ॥
तव सभि देवनि मनि महि धारा। हे कौलापति प्रांन अधारा॥
इहि अ अतु पीवहि नही मरहि। तोहि जनि दुख देवनि चितु धरहि
हमि तुम सो प्रभु कहो पुकारे। तुमि प्रभ सभि विधि जाननिहारे
हमिरो कह्यो प्रभ जी सुण लीजे। ओर वाति कछु रिदै न दीजे॥
पाछे से तुम प्रभ पछुतावो। जो तुमि इति ओसर नही आवों
जब सभि देवन विनती ठानी। साईदास सुनी सार्ङ्ग पानी।४।

मोहनी रूप कीओ हर आयो। असुरो निर्ष्या चितु लुभायो॥
जाइ दुहूं महि ठाढा भयो। कौलापति इहि वपु करि लयो॥
तिन कह्यो काहे झगिरावों। किहि प्रयोग विरोध चलावो॥

तब देवन बिरतंतु सुनाया। हमि दधि मथिने को चितु लाय'
दधि मथ चतुर्दश रत्न निकारे। इहि असुरो मन महि इह धारे।
सभि ही रत्न आप इहि लेवहि। हमि कौ इहि कछु नाही देवहि।
असुर सभ प्रभ रूप लुभाए। प्रभ ने असुर सबही बौराए।
सभ असुरो ने येही पुकारा। सुनहो देवो कहा हमारा।
हमि तुमि झगिरा एह चुकाई। जो इहि कहे मनो मेरे भाई।
तब देवो एहि विधि सुरग लीनी। मनि अतरि बिनती उनि कीनी।
जो इहि कहे सोई मनि लेवों। ओर बानि कछु नाहि करेवों।
प्रभ एन' ओर असुर ठहिराए। एक ओर सभ अमर बहाए।
तब प्रभ ने येहो मनि धारा। साईदास सों कहति प्रकारा।

तिथसे अम्रतु बडिने लागा। ओर बात प्रभ सकल त्यागा।
अम्रति भरि देवन मुरो लाई। मधु देवन असुरो अधिकाई।
तब मधु कित असुर क्या कीआ। असुर छाडि ओर करि दीआ।
गमरो ओर आइ ठहिराया। प्रभि के करि मे अम्रतु पाया।
प्रभु जी सुर जान्यो उसि दीआ। ए कारण मधि केती कीआ।
तब ही पुकार उठै अधिकाई। पुकार कीओ सभ असुरो लाई।
हमि को अम्रतु नाही देवै। द्वितीया भाउ एहि हमहि करेवै।
जब मधु कीट इहि बात पुकारी। तब ही क्रोधु कीओ गिरिधारी।
सुदर्शन चक्र प्रभ लीयो बुलाई। तास कह्यो सुनहो मेरे भाई।
मधुकेती को सीस उतारो। ज्यु जानों त्यु तिसे प्रहारो।
जबि प्रभ की आज्ञा उनि पाई। वेग बिलम तिनि मूल नि लाई।
मधु केती को सीस उतार्‌यो। करि क्रोध ताको प्रहार्‌यो।
त अम्रति पीया कैसे मरई। निश्चल आसन जग महि करई।
राहु केतु तब ही ते थीओ। जब प्रभ ताहि सहारण कीयो।
सीसु राहु केतु तन होयो। तब उनि अमु सकला ही खोयो।
तब सभ असुर युद्ध को धाए। मानो घट बादल उमिडाए।
प्रभ ने सभ ही असुर सिहारे। एकु एक करि सभ ही मारे।

यहाँ शब्द "एक" होना चाहिए।

जिनि सकलो ही जगत उपाया। तिहि स्मसर और कौनु कहाया ॥
जहा जहां भीर परी तहा आए। साईदास सदा जसु गाए।६।

प्रभ चौदह रतिन लीए कर मांही। ताको भेद जाने कोऊ नाही ॥
तब ही सुर प्रभ लीए बुलाई। रत्नि वडिने लागे भाई ॥
लछमी कौस्तक मरणगष प्रभ आप लीओ। इहि कार्न प्रभ मेरे कीओ ॥
कामधेनि सुरपनि कौ दीनी। अरभा पात्र किर्पा कीनी ॥
ऐरापनि गज भी तिहि दीआ। कल्प ब्रिछ तिहि किर्पा कीआ ॥
अक्षनि धनुप ताहू को दीना। एहि किर्पा प्रभ तापरि कीना ॥
चदु ले प्रभ गगनि पठायो। ताते उजीआरा पायो ॥
धनतर जगति ऊपरि प्रगटायो। रोगु को क्षय कर्नि चितु लायो ॥
अम्ब्रु प्रभि जी रवि को दीनो। एहि किर्पा प्रभ रवि परि कीनो ॥
मदु दीनो प्रभि असुरों ताई। विपु दीनी शिव को अधिकाई ॥
जब विपु शिव जी ले करि पाई। कीयो जोर विपु अपना लाई ॥
तब प्रभ चद सीस टहिराना। सीतल भयो विपु वल हिवाना ॥
चतुर्दश रत्न प्रभ जी वडि दीए। जिम जिस क्रिपा करी तिस लीए ॥
सभ रत्न केरा पतिकार सुनावों। साईदास गोबिंद जसु गावो।७।

जिम पै लछमी को प्रकासा। सकल जगत तां की करे आसा ॥
कोसक मण जो तिमर महि होई। सकल तिमर उह पिन महि पोई ॥
तिमर मेटि उह करे उजीआरा। इहि कौस्तक मरण की पर्कारा ॥
तीनो तब आपि हरि लीने। ताह प्रकार वताहर दीने ॥
षष्ट वस्तु सुरपनि को दीनी। हिर्पमान होइ सुरपति लीनी ॥
अवि तिस को सुरण हो पर्कारा। घटि भीतर तुम लेह बीचारा ॥
कामधेन को प्रिथम सुनावो। एक एक करि सकल वतावो ॥
जहावि कक होवे अति भारी। त्रिपा गही या भूषि अधकारी ॥
सुप भोजन ताके उह देवै। वेग विलम ओह नाह करेवै ॥
जो जलु वांछत सीतल देवै। त्रिषा तोहि छिन महि हिर लेवै ॥
येहि प्रकारु कामधेन मांही। सांईदास और पहि नाही।८।

अरभा के परिकार सुनीजै। उौर बात कछु हृदे न दीजै।।
हरि की भक्ति कीयो हरपिवारी। सील चित ते टार्नहारी।।
ताहि देपि काम वहु व्यापै। अधिक सुदर काम अत धरा पै।।
निर्त बहुत भाति वहु करही। निर्त करी कर मन को हिरही।।
येह प्रकार अरंभा माही। जो इसि जीतहि सो भक्ति कहाही
महा कठानु जीतनि इसि भाई। साईदास समिझि मनि माही।९

ऐरापति तिहि वलु परिकाना। तांको वलु यै कहा वपाना।।
जो तिस चढि रण माहे जावे। हारे नही जीत घरि आवे।।
ताको मन भौ सकल पोवै। जो सवार ऐरापति होवै।।
सदा अजीत तिहि जीत न कोई। जाके गृह ऐरापति होई।।
ताके शत्र को परिहारे। साईदास इहि वात वीचारे १०

कल्प वृछ परिकार वषानो। सत्य सत्य श्रवन मन मानो।।
नग्न होइ तिसि वस्त्रि देवै। जहा घाम तहा छांउ करेवै।।
जिस मेवन की वाछा कीजै। सोई कहै आइ के लीजै।।
कल्प वृछि ऐसो ही भाई। छाया करे घामु निवाई।।
कल्प विर्छ पर्कार सुनाई। साईदास को मुनि ठहिराई ११

अ अ्रति प्रकार सुनो मेरे भाई। भलीभाति चित लेवहु लाई।।
मूए कों जो मुप महि परे। सो मूआ उठि वाता करे।।
जो पीवे सो कबू न मरे। निश्चल आसन जग महि करे
रवि सुत को उहु वासु न पाए। जो कोई अ अ्रतु ले पाए।।
पीवे अअ्रतु मेरे भाई। साईदास प्रभ सदा सहाई १२

धन्ष प्रकार सभी सुण लीजै। उौर वात कछु हृदै न दीजै।।
जो तिह धन्ष सो वानु चलावे। अन्यथा वान तासि नही जावै।।
जिस लागै तिस मार चुकावै। जहा कहै तह ही हनि आवे।।
इहि प्रकार धन्ष तिस भाषा। साईदास पुकार इह आषा १३

सस प्रकार सुन हो मेरे भाई। श्रवण धार सुन हो चितु लाई।।
गगनि चढे वहु होइ उजीआरा। ताका सुणहो सभि वीचारा।।

ता ससमे जो उत्पति होई। अति मिष्टानु तास्मि महि होई॥
इहि प्रकार है ससि के माही। साईदास प्रभ सकल समाही १४

धनतर प्रकार सुनावो। ताहि प्रकार मै सभी बतावो॥
जो कछु रोग होइ किसे ताई। द्रिष्ट परे सभ दूर कराही॥
जैसे मृगु सिह ते भागे। तैसे रोग तिस देषै त्यागे॥
तास्मि निर्प रोग सभु भागे। साईदास तिम पलु ना लागे १५

अस्नु जो प्रभ रविताई दीना। ताहि वीचार मोऊ है कीना॥
अति सुदर सोभा है ताकी। सुदरता कैसे कहों वांकी॥
नयन अधिक सुंदर है तांके। सुव अधिक सोभति है वाके॥
तिम परि चढि जो जनु कही जावै। जहां कहै तहा जाइ पहुचावै॥
अश्व प्रकार कह्यो ना जाई। साईदास सो भाव नि आई १६

मदु जो असुरो ताई दीना। ताहि वीचार सभहू ही कीना॥
जो मदु को ले पीवे सोई। प्रिथमे ताहि बुद्धि बोराई॥
देह की सुध ताको ना रहे। जो भावे सो मुष ते कहे॥
आपवसि ते परिवसि जो जावै। छिनु पल सुधि देही ना पावै॥
इह मद को परकार सुनीजै। साईदास त्याग एहि दीजै १७

बिपु जो हरि शिवताई दीनी। शिव ने ले पान वहु कीनी॥
जो उसि बिपु को अवरु कोई षाई। छिन जीवे नाही मरि जाई॥
षावन कहा कहे मेरे भाई। सिघति ही वहु प्रान तजाई॥
सिघति कहा हाथ जो लेवे। लेवत हाथ प्रान वहि देवे॥
हाथि कहा द्रिष्टि जो आवे। निर्पित ताह प्रान तजि जावै॥
सोई विषु शिवजी ले षाई। साईदास सभ बात सुणाई १८

सभि ही रत्न वंडि प्रभ दीए। येहि कार्न मेरे प्रभ कीए॥
रत्नि वडि वैकुंठि सिधाए। चले चले वैकुंठ महि आए॥
जहां जहां भीर जनहु को होई। तहूं तहूं गोविद जी षोई॥
मुनिहो सत धरो मनि मांही। राम नाम मुष तै उचिराही॥
सभि कोऊ प्रीत करो मनि मांही। जास कीए सभ दुष मिटि जांही॥
सदा सदा मनि महि ठहिरावो सदा सदा हर के गुन गावो।

और वात कछु रिदे नि आनो। सकल पारा ठाकुरु करि मानो।।
उत्पति सकली ताते होई। अवर न कर साकति है कोई।।
मछ रूप भी उनि ही कर्‌यो। कछ रूप उन ही वपु धर्‌यो।।
जो जो उसि भावै सोई करही। छिन महि धर्न गगन षडि धरही।।
अवर वात सकली तुम त्यागो। पुर्प निधान की सेवा लागो।।
कछ रूप त्रितंतु सुनायो। सांईदास विधि सकल बतायो १८

दीन दर्द दुख भजन स्वामी। सकल घटा के अंतरजामी।।
पुनि राजा शुक जी को कह्यो। स्वामी मम मनि सचर रह्यो।।
इमि का मोको देह वीचारा। सूकर को वपु क्यु प्रभ धारा।।
इहि सचरु हमिरे मनि आवै। तोहि किर्पा कर सचर जावे।।
तव जाने सूकर क्यु होए। सत जना के तिन दुप पोए।
सूकर रूप क्या करि कीनो। सुन्न छाडि क्यु इहि वपु लीनो।।
हम हि बीचार इमि द्या दीजें। एहि किर्पा पभ हमि परि कीजे।।
एहि विनती तुम पहि हमि करी। प्रभ कित प्रयोग सूकर वपु धरी।।
वार वार हम कहे पुकारे। तुम विनु सचर कोनु उतारे।।
हमि घरि मै भयो अधिक वसेरा। और त्याग हमि घर कीयो डेरा।।
ऐहि प्रभ हमिरा तव ही जावै। जो तुमि किर्पा उत्तर पावै।।
निसवासर हमि गणित विहाई। साईदास को देहु बताई २०

सिद्ध भर्मि महि इहि मनु पर्‌यो। मूल साप भरमति अति हर्‌यो।।
दिस दिस भ्रमति वक्ति ना पावै। इहि प्रयोग मनु वहु दुप पावै।।
इहि सचर हमिरो तनु दह्यो। अति भै चक्रितु मनु होइ रह्यो।।
साति सिद्ध हमि हृदे न आवै। इहि प्रयोग संचर नही जावे।।
कहो किर्पा कर पूर्न स्वामी। सकल त्रिथा के अतरजामी।।
फिरि फिर सचरु येही आवै। सूकर रूप किति विधि हरि पावे।।
तुमि पहि एह प्रश्न हम कीआ। जव सचरु हमरे मनि लीआ।।
जैसे जानो संचर निवारो। साईदास को पार उतारो २

तव सुकदेव जी वचन उचारी। सुन हो देवो वात हमारी।।
तुम प्रश्न का मै प्रतु देवो। संचरु तुमरा दूर करेवो।।

सूकर वपु प्रभ इहि विधि कीनो। हर्निकश्यव मन महि इह लीनो ॥
महापराक्रमी अति बलवतु। मोह् समसर कोऊ अवर न जतु ॥
कहा करे कोऊ गीस हमारी। मै वलिवतु मोह् वल अविकारी ॥
त्रैलोक को मोह् मन त्रासा। मोह् त्रास जलु पीव न प्यासा ॥
महा गर्व् ननि अ तर कीनो। अति अभिमानु मान मनि लीनो ॥
मही पलटि जल परिसे लीनी। सिद्ध[1] माह् जाइ अलपतु कीनी ॥
मह्री[2] गही चलित दिपायो। तिग ब्रह्मा मनि महि विस्मायो ॥
हे कौलापति त्रिभुवन राया। जीव जंतु सभ तुझे बनाया ॥
हर्निकस्यव मही ले कर गया। ताते तोय प्रगट सभि भया ॥
जब ब्रह्मे इहि मनि महि आना। साईदास गुन मनु माना २२
कोयो वीचारु कैसे करि होवै। किस विधि ब्रह्मा निर्भो सोवै ॥
करि वीचारु येही ठटु दाध्यो। सूकररूप होइ मरु साध्यो ॥
प्रगट भए प्रभ सूकर रूपा। ब्रह्म नामका दछनि सरूपा ॥

वाराह-अवतार

ताहनिकसि साढऋद्ध प्रभ तास मात लीलहा वती।
दिजराज गुरु पेत्र डुंगर पुर हर्नाकस क्षय आवती ॥

ताह निकस सिद्ध महि पर्यो। अति विस्थार पूर्न प्रभ कर्यो ॥
हर्निकस्यव तिहि देप भयाना। पूर्न प्रभ करि हृदे पछाना ॥
येह रूप अतिभुत द्रिग आवै। अनि अनूप कछु रूप दिपावै ॥
अति दीर्घ तिहि रूप दिपानो। कोलापति पूर्न भगवानो ॥
दतन उस्तति वर्न न साको। कित विधि उस्तति दंतनि भापो ॥
ताहि देखि मनि महि भो आवै। किस विधि ताको वर्नि न पावै ॥
महाराज पूर्न प्रभ स्वामी। आद अनाद हर अ तर जामी ॥
कहा रूप कोऊ ताह वपाने। कित विधि वांकी को गति जाने ॥
अद अनाद सग सर्व समान। भक्तिन भीर परी तहा धान ॥

---

१. सिद्ध <सिंधु=समुद्र।
२. 'मह्री' यहा "मही" होना चाहिए।

भक्ति हेत सूकर वपु धरिअ । भक्ति हेत इहि कारण करिअ ।
मछि कछि रूप तिहि कीनो । असुर सिहार भक्तिनि सुप दीनो
तिहि प्रयोग सूकर वपु पायो । जहा जहा भीर तहूं आयो ।
सदा सदा हरि को जसु गाय्यै । साईदास काहै अलिमाय्यै

हरनिकस्यबु जाइ सिद्ध महि गह्यो । इहि प्रयोग सूकर वपु लह्यो ।
मही लै ते दसनि परि राषी । सिद्ध त्याग दी ई विधि भाषी ।
मानो इकु त्रिणु लीयो उठाई । सक्ली प्रिथवी मेरे भाई ।
त्रिन को भारु अजिहू अति होई । यांके भार न लागो कोई ।
हरनिकस्यबु तब युद्ध को आयो । शस्त्र ले सन्मुष हर धायो ।
अति विरोधु असुर तव कीनो । कौलापति पगु वाहिर दीनो ।
आइ तोयं परि मही विछाई । जैसे प्रिथमे सी ठहिराई ।
ताह छाडि प्रभ सन्मुख होए । युद्ध कीउो हर असुरन पोए ।
असुर वुद्ध हरि सो युद्ध कीनो ।
कई सहस्र वर्ष युद्ध करायो । अत आनि प्रभि मार चुकायो ।
तव ही मार वैकुठ पठायो । वेग विलम प्रभ मूल न लायो ।
इहि प्रयोग सूकर वपु धर्यो । सुन्न त्याग इहि कार्णु कर्यो ।
ताकी गति मिति लषी नि जाई । वहु प्रभु रह्यो सर्वि समाई ।
करो भक्ति हितु अपना लाइ । सांईदास प्रभ सदा सहाइ

असुर मार वैकुठ सिधाए । जहां जहा भीर परी तहां आए ।
सतन को प्रभ ऐसो राषे । जैसे रसना मुप मै भाषे ।
भक्ति जना के कार्ज करे । सत हेत करि हर वपु धरे ।
एक ही द्रिष्ट सर्व कर जानो । कूकर घोरा चक्र इक मानो ।
तम शांत को एक पछानो । निर्धन धनवत एक वपानो ।
ना काऊ निर्धन ना धनवता । ना कोवे पति ना पतिवंता ।
ना कोऊ उत्पति सुंन्न न कोई । थान थनतर है प्रभु सोई ।
जो देषो सो हर करि मानो । जो देषो सो स्म कर जानो ।
सक्ल विस्थार ताह को भाई । जो कछु द्रिग महि देइ दिषाई ।
नाम अनेक अनंत विस्थारा । कहा करे कोऊ ताहि वीचारा ।
सूकर रूप जब प्रभ ने कीया साईदास हरि अम्रति पीआ

हर्निकश्यव जव मुक्ति सिवाया। दारा सुत तिहि रुदन कराया।।
अधिक रुदन जव उनि ने कीना। हरिनाकस तव इहि प्रतु दीना।।
हे भात्रज पालक मेरे भ्राता। रुदनु न करो इह लिख्यो विधाता
इसि को कालु सूकर ते होवे। जगत त्याग जा सुन्न महि सोवे।।
जो विधि लिख्या सो कवन मिटावैं। जो कछु होवैं जो प्रभ भावैं।।
विधि की कीआ कौनु ही टारैं। जो उनि लिख्या होवे तत्कारैं।।
जे ता कहा समझै ना वाही। रुदन करै कूके हा हा ही।।
देपि ताहि हर्नाकस बोले। ताहि सीस परि हाथु विरोले।।
हे मेरी भावज रुदन करहो[1]। मन अ तर तुम धीर्ज धरहो।।
एह पर्तज्ञा हम ने कीनी। एहो बात मनि अ तर लीनी।।
जिन मोह भ्रात हन्यों तित मार्यो। शस्त्र बाण कर सीस उतारो।।
तुम अवि धीर्ज मनि महि धरहो। कछु विस्वासु न मन महि करहों
मोह वचनु तुम मनि कर लेवहु।।
हर्निकश्यव के सुत दारा ने। वचन सुनो श्रवन धराने।।
रुदन छाड धीर्ज महि आई। रुदन छाड़ सतोप वसाई।।
जो तू एसे कदही कराई। हर्नाकस कैसे वैरू लहई।।
जवि नृसिंह को वपु हरि लेवहि। इहि प्रतु हमि तुम को तव देवहि
ताहि कथा महि इहु प्रतु आवै। हरिनाकस कैसे वैरु पावै।।
इहि प्रतु मै आषोंगा ताही। साईदास प्रभ सर्व स्माही २६

प्रभ जी वेनती तुम पै करहों। तोह प्रसाद पूर्न प्रभ हरहों।।
इहि विनती हमिरी सुण लीजैं। हमि को उसका उत्तर दीजै।।
हमि अजान कित विधि करि जानहि। नारसिंह वपु हरजु पछानहि।।
नारसिंह वपु किति विधि कीनो। किति प्रयोग इहि वपु हरिलीनो।।
नारसिंह वपु इउ प्रभि धार्यो। भक्ति प्रहलाद को दूप निवार्यो।।
हे प्रभ सभ विर्तुत सुनावो। हमरी वेनती मनि ठहिरावो।।
तब शुक जी बोले। अम्रत वचन सदा निर्मोले।।
सभ विर्तंतु सुनहो मेरे भाई। अवर त्याग सुनहो मेरे भाई।।
श्रवन धरों मै आष सुणावों। नारिसिंह वपु तुमहि वतावों।।

---

१ रुद न करहो—यहां ˙ न लिपिकार से छूट गया है

जिहि प्रयोग नृसिंह वपु धार्यो । हरिनाकस नप उदर विडार्यो ।
एक एक करि आप सुणावों । वेग विलम कछ्छू मूल न लावो ।
हम श्रवण धरे तिह प्रभ मेरे । कहा कहे हमि आगे तेरे ।
अवर त्याग करीये एहु प्यासा । ज्यु तिनि कर्क छवि परिग्रासा ।।
सकल बितातु लेह मेरे भाई । साईदास सुनहो लिव लाई २

हरिनकस्यव जवि मार चुकाया । तिहि सुत दारा रुदनु कराया ।
हरिनाकस ताकउ यु कह्यो । मारो ताहि प्रतज्ञा लह्यो ।
जिन मेरे भ्रात को आइ सिहार्यो । करि करोध तांको परिहार्यो ।
ताह मार पाछे कछु करहो । नाही तिस पाछे मै मरिहो ।
एह बात करि क्रूर गृह आया । सकल सैन को तब ही बुलाया ।।
तिहि कह्यो सुनहो मेरे भाई । वरुदाना सुर देह बताई ।
ताहि सेवा ले मस्तक धरिहों । उौर बात कछु नाही करहो ।
सकल सैना विधि एह बताई । ब्रह्मा बर दाना मेरे भाई ।
तिहि कह्यो ब्रह्मा कहा रहई । आस्रम सेनी जहा वहु वहई ।
कवन भवन तुमि ताहि बतावो । वेग विलम तुम मूल नि लावो ।
अस्थावर महि तांको बासा । नामु सुमेरु ताहि परिकासा ।
सभि ते सुणि आयो ग्रह माही । निसि समे चितवन लागो ताही ।
वासुर होवै भक्ति को जावउ । ब्रह्म अस्थ जाइ भक्ति कमावउं ।
इहि बीचार हृदे अतर लीनों । तब ही दारा का सग कीनो ।
रितवंती दारा भी ताकी । चितवन पूर्न भई है वांकी ।
भक्तिन वास ताहि गर्भ लीनो । हरिनाकसि चितु भक्ती कीनो ।
प्राति भयो हरिनाकसु गया । ब्रह्म भक्ति सेती चितु गह्या ।
सकल त्याग मार्ग तब लीनों । ध्यानु ब्रह्म का असुर मनि कीनो ।
जहा ब्रह्म ने अस्तलु छाया । ढूँढति ढूढति तहां ही आया ।
अस्थिल को प्रदक्षिणा दीनी । अति दडौत ताहि कौ कीनी ।
हरिनाकस कीयो इहि कामा । सांईदास प्रभ पूर्न रामा २

सुरपति सुनी वाति मनि माही । हरिनाकसु गृहि माहे नाही ।
केहरि केतकि संग ले आया । आइ नग्र को घेरा पाया ।
असुर मार कर पर्लो कीने । जो भागे तिन ने मगि लीने

लूटि नगरि सुरपति अधिकाई। तांकी वात कहा परताई॥
दारा हरिनाकस की लीने। सुरपति मगि अपने पग दीने॥
आण भार्जा ग्रहि महि राषी। ताको अवर नाह कछु आपी॥
छिन तवि ही नार्द चलि आयो। सुरपति को तव आपि सुणायो॥
हे सुरपति तै भलो न कीना। एह विरोध जो तैनै कीना॥
हरिनाकसि की दारा ल्याया। विनु प्रयोग विरोध उठाया॥
तव सुरपति नै वचन उचारे। सुन नार्द गुरुदेव हमारे॥
इहि प्रयोग दारा मै आनी। मन महि इहि विधि जान पछानी
इहि गर्भु वाहरि आवे मारो। इसि के गर्भि को मै प्रहारो॥
असुरो वीज धर्नि से षोवो। तव पाछे मै निश्चल सोवों॥
उोर प्रयोग कछु नाहि हमारा। तुम पहि इहि विधि कहो पुकारा
वहुरो नार्द वात चलाई। सुण हो सुरपति मेरे भाई॥
इहि वनिता तुमि हमि को देवहु। मेरो कह्यो मन महि धरि लेवहु
जिह समे इह गर्भु वाहरि आई। मै तुझै आण दिषालो भाई॥
जव नार्द इहि बात वषानी। साईदास सुरपति मन मानी २६

सुरपति दीई नार्दु ले आया। अपुने ग्रह मे आइ ठहिराया॥
तव उनि वनता वेनती करी। हे नार्द तुम पूरन हरी॥
हमिरी वेनती सुण करि लीजै। किर्पा करि इह हमि कों दीजै॥
नार्द कहा अैसो ई होई। जो तै कह्यो होवे फुन सोई॥
जव लगि मै मुष नाह वषानो। हृदे अंतरि एह वात नि आनो॥
मोह गर्भु वाहर ना आवै। जब लगि मेरे मन ना भावै॥
नार्द कह्यो अैसो ही होई। जो तै कह्यौ होवे फुन सोई॥
पाछे नार्द ने क्या कीआ। ताहि प्रवोधिनि कों चितु दीआ॥
भजो गोविद अवर ना जानो। अवर वात कछु हृदे नि आनो॥
वहि तो असुरु कहा उह जाने। जो नार्दु कहे सो कहा पछानें॥
तांके गर्भि महि भक्ति निवासा। जाकी गोविद परि ही आसा॥
जोह सुनो उसिउ तार देवे। सांईदास उह हृदे धरि लेवे ४०

हरिनाकस भक्ती चितु लाया। ऊभनि भुजा करि जतनु कराया
सहस्र वर्ष जव वीते आई। कठनु महा तव असुर कमाई॥

कपमान त्रैलोकी होई। ब्रह्म कह्यो कह आतम सोई ॥
जो कुछ मागे इसि को देहो। सुप्रसन्न प्रभ इसे करेहो ॥
अधिक भजन इनि ने ही कीआ। तोह भजनु मन महि करि लीआ
हमि तो कपमान सभि होए। इहि प्रयोग निश्चल ना सोए ॥
क्या जानो इहि क्या किछु करिही। कहा वीचारु मनि अंतर धरही ॥
जो सभ सुर ने इहि विधि ठानी। साईदास ब्रह्म मनि मानी ४९

ब्रह्मा प्रगटि भयो तव आया। तव मुपि ते येहि वचन सुणाया ॥
मागो कष्टु काहि तुम पाहो। मैं देवो जो कछु तुमि चाहो ॥
हरिनाकम्स तव विनती ठानी। हे पूर्न प्रभ ब्रह्म ज्ञानी ॥
अमरु होवां मै विनसा नही। छुरी कटारी तीरी पाई ॥
तीरी तुपने हथि नाले। कंपोई जीत जग को डाले ॥
निसिवासर अतरि अरु वाहरि। ना मै गुप्त मरा ना बाहर ॥
तिरीआ पुर्ष सौ ना मैं मरहो। एहि विनती मैं तुमि पै करहो ॥
ब्रह्मे तवि इहि मुषो वषाना। दीआ मै जो तै हृदे आना ॥
जो तै मांगा दिता साई। अवि जावौ अपुने ग्रह मांही ॥
काहे को तूं वहु दुख पाही ॥
ब्रह्मे हरिनाकस को वरु दीना। हरिनाकस दृढ़ मति कर लीना ॥
अवि मोह समरसर अवर न कोई। जिन अभिमानु कीओ मुयो सोई ॥
तव ही मार्गु ग्रहि को लीनो। इहि विचार मनि अतर कीनो ॥
इहि वर ब्रह्मे हमि को दीना। जग भीतरि हमि को थिरु कीना ॥
तव आयो अपुने ग्रहि माही। हरिनाकसु अति मनि सुष पाही ॥
ताके ग्रहि अनंदु वहु होया। साईदास सकल दुष षोया ४[illegible]

वधू सकल तव ही मिल आए। अति अनद मगल गुण गाए ॥
जोतकी, पंडित सकल सदाए। तांसो इहि विधि आषि सुणाए ॥
भलो समा मोह देहु वताई। कित समे वहो सिहासन जाई ॥
जोतकी पंडित ऐसे आपी। ब्रह्म महूर्त साइत भाषी ॥
जव हरिनाकसु ग्रहि महि आया। नारद तिहि वनिता ले आया ॥
ब्रह्म महूर्त्त दीयो वताई। तव तुमि वहों सिघासन जाई ॥
ले वीचारु ग्रहि अतर आया। महा वली तिसि वलु अधिकाया।

निस वीती वासुरु तव होया। हरिनाकसि सभु संसा पोया ॥
सिघासन परि जाइ पगु धरिआ। हुकुमु चतुर्दिशा परि उनि करिआ
चतुर्दिशा परि हुकुमु मनाया। है हरिनाकसु जाइ नि जाया ॥
जल हरिनाकसु थल हरनाकसु। है हरिनाकसु होइ हरनाकसु ॥
सकल जगत मनि जु हुकुमु सवाया।
साईदास तिह अधिक वलु जिन भजनु कमाया ॥ ४३ ॥

जग्त की वात मै आषा अवि या पुर की आषा।
जो कछु हुकुमु इस परि कीआ सोई मुष भाषो ॥
वसुधा को तत्काल ही तिन लीओ बुलाई।
सभ धनु हमिरी अमानतु कहूं न लाई ॥
अवि ही पकडो पकडि करि तुझै दीयो वहाई।
सभि ही जल सेतकी देउो दिषाई ॥
तव कपमान पृथवी भई मेरा क्या चारा।
तू वलवतु महावली जगका रषिवारा ॥
जो भावै सो तूं करै मै सर्नी तेरी।
जैसे जानो रापहो डूवते वेरी ॥
मोह अवज्ञा ना करी मुजरा तेरा कीआ।
जो सुनआ तेरा ही नामु सो मै भी लीआ ॥
जव वेनती एती सुनी सुप्रसन्न होए।
मेरी आज्ञा मान के निरभौ हो सोए ॥
समे समे का फलु हरिआ कर्के तूं राषे।
जिह समै मै तुझ कों कहों आण आगे राषे ॥
अघट मगो तव अघट मोह तू आण करि देवे।
मेरी आज्ञा मान करि मस्तकि धरि लेवे ॥
जो कछु मै तुमि ते मगो सोई तू आनें।
जो कछु तुमि ते उपजे सो सत्य कर मानें ॥
वसु लीओ मान के हरसाकस[1] कह्या।
साईदास सदा सदा प्रभ सो रचि रह्या ४४

---

१ यहां "सा" के स्थान पर ना चाहिए।

एहु वाति तुम को कही प्रिथमें समिभाई।
तू एहि विधि को समझि देषु आपने मनि माही।।
वसुधा वात वीचारीआ, अवि जल की आषो।
जो जल कों आज्ञा करी सोई मुष भाषे।
जल को लीओ वोलाइके ऐसे तिस कह्यो।
क्यु नाही आप तू पल्ह रेह रह्यो।
अस्थावर सभ षोद के डारो तेरे माही।
सभ वसुधा मैं कर लेओ जानति तू नाही।
मै तेरे दर कूकरा करि निकट बुलाए।
जो तू कहे सो मानहों उौरु कछू न करहों।
जो तेरी आज्ञा होवै सो मस्तिकि धर हो।
जल को एही आज्ञा करी घ्रित तेलु वहाई।
पर्जा मोह सुष पावही, दुष मूल न पाई।
जलु इहि विधि सभ मान के अपने ग्रह आया।
घ्रित तेल परिवाह कर उनि तबही वहाया।
सक्ल जगतु तिह वसि कीआ, जल हुकुमु मनाया
सांईदास जिन हरि भज्यो, तिन वहु सुषु पाया।

जल की बात वताईआ जंगम वपानां।
सुनहो साधो आप हों धरिहो तुम कानां।
जगम लीए वोलाइ करि तिह आष सुणाया।
रे जडो कवन वात तुम ने चितु लाया।
अवि ही मूल उपारि करि तुम को कटि डारो।
मूल साष तुमरी सभो अव ही उपारो।
तव जंगम वेनती करी हे नर वलवाना।
कित प्रयोग क्रोधु तैं मनि अंतर आना।
जो तैने आज्ञा करी सो मस्तिक धरहो।
उौर वात कछू हमि हृदे धरहो[1]?

---

[1] यहाँ "न" लगाना चाहिए अथवा प्रश्नवाचक चिह्न तभी अर्थ स्पष्ट होत

तव हरिनाकस य्युं कह्यो सुनहो मेरे भाई।
तुम सुष सेती वस्यहो अपने ग्रह जाई।
जो तुमि ते उत्पत्य हो मेवा सो राषो।
रचिक मेरे हुकुमु विनु तुम नाही चाषो।
जो मांगो सो आए देहो तुम मेरे पांही।
और वानि कछु हृदे महि तुमा आने नाही।
जगम भी विधि जाण के अपने ग्रह आए।
आयो अपुनो ठौर जाइ आस्रम उनि लाए।
सभि कौहु हुकुम मनाइया तिह वलु अधिकाए।
सांईदास जो हरि भजै वहुता सुप पाए।४६॥

हरिनाकस की भामने मुप वात वषानी।
राम रभि बाहर आवहो सुनहो मनिमानी।
तव गर्भि महि जो जीउ था सो बाहिर आया।
गर्भि तजि वाहरि आयो आनंदु सवाया।
ताहि रूप सुदर अति अधिकारे।
ससि अरु भान छपि गए जवि किर्नि उजारे।
जोतकी पौधे सदि के तव नामु रखाया।
भक्ति प्रहलादु नामु है विधि आनि कर लाया।
विप सभि ही स्सदिके तिह भोजनु दीना।
कहू सुणायो आइ करि दानु वहु कीना।
बंधु सभि मिल आए सभि देह वधाई।
कुशू केसरु माता कहे भल भयो सहाई।
माता गोदी पाइ करि तव क्षीर पीवाया।
अपुने देव मनाइ करि माथे तिलकु लगाया।
षष्ट सात जवि वसि का प्रहिलाद जी होया।
भक्ति अकरु मस्तकि लिष्यो निरभौ हो सोया।
निसवासर ओह कृष्न कृष्न मनि अपुने आषे।
भक्ति भाउ आधीनता मनि अंतरि राषें।

सडमर्क[1] पाडमाल जा पढिने पाया।
जलि हरिनाकसु थलि भी इहि जाइ न जाया।
पटीश्रा सढे लिष्य करि प्रहिलादि को दीनी।
प्रहिलाद भक्ति पटीश्रा लई के करि लीनी।
पटीश्रा माहे इहो वात उनि वेग लिपाया।
जल हरिनाकसु होइसी ना जाइ न जाया।
प्रहलाद भक्ति पटीश्रा लई लागा तिह भाषण।
अछर राम रसाइणी लगो अंतर राषण।
जव उह पटीश्रा नैत्र निहारी।
और लिष्यो कछु उनि हकारी।
जलि ते तिस ले पटीश्रा धो डारी।
पूर्न भक्ति जो ब्रह्म विचारी।
हरिनाकस नाम दूर कीना।
कृष्न कृष्न नामु लिख लीना।
जब सडेडो नेत्र निहारे।
लागो पकिडिन नैन पसारे।
मैं कछु और लिष्यो ईहा उरें।
इनि कछु आप लिष लीनो पोरे[2]।
सढे पटीश्रा षसि लई लेकरि उनि धोई।
जो कछु प्रिथमे लिष्यो लिष्या फुनि सोई।
तव रसना सो य्यु कह्यो, ऐसे जपि लीजे।
जल थल हरिनाकसु हय, कछु अवर न कीजे।
प्रहिलादि भक्ति पटीश्रा लई ले पढिने लागा।
है भी, कृष्न ही होवसी, जसु अतिभुत वांका।
वहुरो ले करि धायो, हरिनाकस नामा।
अंतरि अपुने राषयो, प्रभ पूर्न रामा।

---

१ संडेमर्के या सडे शब्द गुरु अथवा शिक्षक के लिए आया है। सभवतः मूल शब्द "संदीमणि" हो।

२. पोरे=बालक।

पटीआ परि फिर लिष्यो जो कृष्न सहाई।
तिस कौ किस का त्रासु है, जो तिस जपु लाई।
सडे पटीआ फेरि करि, षसि लीनी ताही।
मैं तुझै कहा पढावहो, तूं कहा पढाही।
सडे पटीआ ले करि, बहुरो उनि धोई।
जो कछु प्रिथमे लिखया, फुनि लिषयो सोई।
बहुरो दीई प्रह्लाद को, तूं एही पढिहो।
और काहू का नामु तू मन अंतर ना धरहों।
वेग प्रहलाद पटीआ लई, अछरु उनि देषया।
कहा करे गवारु, एहि कछु द्रिग ना देषया।
पटीआ बहुरो धोइ करि, फिरि लिषयो नामा।
कृष्न सहाई भक्ति को, पूर्न प्रभ रामा।
संडे लीता सद्दिके प्रहिलादे ताई।
और काहू को न जपौ हरिनाकसु साई।
प्रहिलाद भक्ति प्रगटि कह्यो मैं कृष्न पछान्यों।
हरिनाकसु कहु कवन है, तिस को उरि आनों।
सडे करि चाबकु लीयो, मारन तब लागा।
अनेक जतन उहु करि रह्यो, उनि कृष्न न त्यागा।
संडे कह्यो क्या करो येहि समझै नाही।
अबि जाइ आषो नृप को ऐसी मति माही।
अपने जेहा करि थका इहु कह्या न माने।
क्रोध मान सडा भयो अति क्रोध मनि आने।
तब ही जाइ पुकारआ हरिनाकस पासे।
तेरा नामु न सिमर ही ना मनि कर त्रासे।
पटीआ लिष्य मै दई ले करि ओहु धोवै।
कृष्न कृष्न तिह लिख्या तेरा नामु न पोवै।
सुत तेरा अबि ना जपे होर क्युं करि माने।
सभि ही त्यागहि नाम तोह, बाबा तू जाने।

जितना कितना करि रह्या माने नही कह्या।
मेरे मनि विच एसि ते लोह ही वह्या।
मै तैनू हुण आप ही सुण मेरे भाई।
सांईदास पुकारआ जो सी वो पाई।४७॥

हरिनाकस जब इह सुन्यां संडे दे पासों।
प्रहिलाद लीयो बुलाइ करि सुतु करे विनासा।
तब प्रहिलाद को य्यु कह्यो जपु मेरा नामा।
और बाति सभ छाडि करि करिहो इह कामा।
कित कौ करे विरोध तू सुण मेरे बाले।
मैं विनु और न कोई तुमरे रपिवाले।
प्रहिलाद भक्ति उत्तर दीयो सुणहो पिता मेरे।
क्रिष्न सहाई मोह है जाके सभ चेरे।
उसेडके[1] आपु तू होरु कित मे लागा।
जो सुषदाई आद अत तिस को क्यु त्यागा।
औरु नामु सिमरो नही कृष्न कृष्न पछाना।
विना नाम मै क्रिष्न के अवरु नहीं जाना।
जवि हरिनाकस य्यु सुन्यों प्रहिलादि इउ बोले
अति क्रोध मनि होयो धर्नी परि डोले।
तव मुपि ते इउ कहिआ जा करि गिरिवावो।
रचिक रचिक इसि करो करि मार चुकावो।
हरिनाकस इउ आपआ लै चल्यै ताही।
मानो वधिक उडीकिदे फडि लीना ताही।
प्रहिलाद भक्ति को लै गए जा करि चडिवाया।
अस्थावर परि चाड के फिरि तले वहाया।
क्रिष्ण क्रिष्ण मुप ऊचरे सभ जगत हंकारी।
ताकौ भौ व्यापे नही जो सरनि मुरारी।
प्रहिलादि भक्ति को दुष नहीं लागा।
साईदास जो हरि भजे तिह सभ दुष भागा।४८॥

---

१ यहां उसे छडके' शब्द चाहिए छ छूट गया है

संडे जबि इह देष्या प्रहिलादु न मूआ।
पूर्न ब्रह्म गोपाल को अमर इह हुआ।
फिरि ले आयो भक्ति को हरिनाकस पासे।
गिर ते गिराया ना मुआ अति विगसे हासे।
तब हरिनाकस य्यु कह्यो दावा सो जारो।
जैसे जानो तैसे ही तुम इसि प्रहारो।
संडे ओझे[1] भक्ति को दावा महि डारा।
दावा भक्ति अंगु ना दहे गोविंदु रषिवारा।
दावा जल बलि बुझि गई प्रहिलाद न मूया।
भक्ति गोविंद की मनि धरी अमर वह हुआ।
मानो सिहजा पुहप परि पगु जन ने दीना।
महा अनदु हृदे महि वाहू ने कीना।
हरिनाकस जब देष्यो इह नाही मरही।
अंतरु अपना सोधि करि वीचार जु करही।
काली लोह की घडो कूप महि खडि पावो।
तिसि महि इसि को डारि कें तुम मार चुकावो।
काली लोहेकी वडी कूप महि गहि पाई।
प्रहिलादि भक्ति को कूप महि फिर जाइ गिराई।
डार कूप महि भक्ति कौ वह उठि घरि आए।
तहा पालनलासां पद्द दीआ पीतंबर छाए।
तहा भक्ति ने सुष कियो दुष कोई न लागो।
जो कछु भौ सा तिस समे अतर तें भागो।
निसि वातो झालू भआ हरिनाकस कह्या।
जाहो देषो तिस कौ कित गति रह्या।
सडामर्का जाइ करि जब देषण लागे।
पालनि महि आनद माहि झूलेवने पागे।
सडे मर के जाइ कहा पालनि महि झूलै।
तांको दुख न लाग ही कैसे करि डोलै।

---

१. ओझा > उपाध्याय = शिक्षक गुरु (पंजाबी मे पांधा)।

हरिनाकस तब य्युं कह्यो उसि को ले आवौ।
मैं उसि कौं कछु पूछहों तुम विलम न लावौ।
संडामर्का जाइ करि प्रहिलादु ले आया।
भक्ति हेत भगवान जी सभ रूप दिषाया।
हरिनाकस बहु जतन कराए।
कुंजर बस धरि अधिक बुलाए।
भक्ति को बाधि गजि आगे डारा।
मदि माते गज अति बलु भारा।
निषित भक्तु गज पाछे धायो।
प्रहिलाद भक्ति के निकट आयो।
गज सार्थी अकस तिस मारे।
गज आगे पग मूलि न डोरे।
बहुरो राकस ने क्या कीआ।
ऊर्द्ध मन्त्र चित महि इ लीआ।
भक्ति कौ बाधि बसुधर उभीए।
महा त्रासु राषस दिषलाए।
बसुधर भक्ति के निकट नि आवहि।
दर्सनु करि पाछे कौ धावहि।
भक्ति गुण ताहि दिसहि मेरे भाई।
राकस देप समिझि ना पाई।
बहुरो भक्ति कों उर महि लीना।
बदनु चूम मुप ते बचु कीना।
हे सुत जप लेहु मेरो नामा।
और सो तेरो न कछु कामा।
मम डरि कुचरि तोह न मार्यो।
मनि महि डर्प पाछे पगु धार्यो।
मनि मै कह्यो जो मै इसि मार्यो।
अपने प्रान वेग ही जारो।
हरिनाकसु मोकौ प्रहारे।
सुत वियोग करि मो कौ मारे।

वसुधर भी ऐसे हृदे आनी
प्रिथ्वी निश्चे करि इहि जानी।
एह जो तुझ को नाह डुबायो।
मम डरि करि के तुझे बचायो।
दावा तुझ को जार्यो नाही।
मम डरि ते डर्पे मन माही।
मत तू कहै जो कृष्न छुडायो।
हमिरी रक्षा की नां गायो।
मोह नामु हृदे धरि लीजे।
ए सुत ओर कामु ना कीजै।
भक्ति सुणी जबि इहि विधि काना।
तब ही मुष ते वचनु वषाना।
रे पत कहा तूं रछ्छि करावे।
तुमरो बलु कहु कहा बसावै।
रछ्या मोह करति भगवाना।
तै हृदे कहा लीयो अभिमाना।
तजि अभिमान सरनि हरि आवो।
अपुने मनि का भ्रात चुकावो।
कहा तू भूल पर्यो मनि माही।
तुमरे मन कछु आवै नही।
जिन अभिमानु कीयो सो मूयो।
तांको नासु तात छिण हूयो।
काहे कौ तूं भर्मि भुलावै।
राम सर्नि काहे नही आवै।
बिन हरि नाम थिरु नाह न कोई।
जुगां जुगंतर थिरु प्रभ है सोई।
असी भक्ति नै बात उचारी।
सांईदास जन को बलु भारी॥ ४९॥

हरिनाकस जब य्युं सुन्यो बहु क्रोधु करायो।
अति क्रोधु मनि महि भयो लोचन ललायो।
राकस ने तब क्या कीआ।
भक्ति कौ थम्ह सहित बधि लीआ।
तब ही भक्ति सौ बचनु उचारा।
कहा कृष्ण तोह राषनहारा।
अबि तुमरी आइ करे सहाई।
सो प्रभु मोको देह बताई।
भक्ति कह्यो प्रभु मो महि तो महि।
सकल जगति महि अहो इसु घर थंम्ह महि।
थम्हे नामु जबि भक्ति उचारा।
तब ही उनि ते भयो टकारा।
नारसिंह को बपु प्रभु कीना।
थंम्ह सो तब पगु दीना।

नृसिंह-अवतार

चंद्रावती देवी है मात।
बन्ह ऋषि तांको है तात।
हिजगुरू गढु मुलतान।

हरिनाकस तब ही उठि भागा।
काल सरूप देप सिस के पागा।
नर हरि पकिड्यो राकस तांई।
रात दिवस महि को समा नाही।
संध्या परी रवि अंतर बाहर।
द्वार मध्य पकर्यो श्रीनरहर।
धर्यो जघ परि उदर बिडारा।
कर नष सो श्री प्रान अधारा।
पश्चचि बचनु पूर्न करि लीआ।
शस्त्रो का कोऊ घाउ न दीआ

कर पलो जोर करि रगायो।
तांकी सोभा अधिक बतायो।
मानो नीबि कलि देत दिषाई।
अनि ताह ललता डरि जाई।
अति सोभा ताहू बनि आई।
तांकी सोभा कही न जाई।
फोति आतिरी उौर नषावत।
राकसि आतिरी सकल फुरावत।
भक्ति प्रहिलाद प्रश्नु तब कीआ।
हे प्रभ कवन धर्म इनि लीआ।
अंतर फोरे जो निपर्वो।
एह किपा कर हमिह बतावो।
नरहर प्रतु दीनो जनि ताई।
सुनहो भक्ति तुम हितु चितु लाई।
एहि प्रयोग अतरी फोर डारो।
तोह साषी कोई भक्ति निहारो।
मनु कोई अवर होवै इस मांही।
इह उपजी घट उौर कछु नाही।
इहि कहि भक्ति को मान वधायो।
अपने जन को भ्रांत चुकायो।
अमरो ने कीनो जै जै कारा।
जै जै नरहर रूप उचारा।
कुसम वर्षा अमरो लाई।
नारसिंह हरि सदा सहाई।
साधो नाम सदा चित धारो।
साईदास हरि नाह विसारो॥ ५०॥

हरिनाकस जब मुक्ति मिधायो।
प्रहिलाद भक्ति इहि हृदे वसायो।

क्रियाकर्मि करने चितु धारा।
ब्रह्म भोजन कीनो ततिकारा।
वेद मृजाद भक्ति सभ कीआ।
पिता जान इहि मनि धरि लीआ।
वेन अधिक विपो को दीनी।
हाथ जोर कर विनती कीनी।
भक्ति को विपो तिलकु लगाया।
अशीर वचनु मुपि ते उचिराया।
नरहरि नव ही वचन उचारे।
सुरा प्रहिलाद तू भक्ति हमारे।
भयो हो क्रपाल मांगु कछु लेवहु।
मन महि सका कछु न करेवहु।
जो तुम मांगो देवो सोई।
और वात मैं करो न कोई।
भक्ति हाथ जोरे उचिरायो।
हे प्रभ करुगा जान करायो।
भक्ति सदा तुमरी मैं पावों।
नाम जपों कवना अलिसावों।
करुणा करि ये ही मोह दीजै।
विक्षा स्यौ जनि को वच लीजै।
तुमरो नाम वसै घटि माही।
और वात कछु जाचों नाही।
नरहरि प्रत प्रहिलाद सुनायो।
मोहि भक्ति तुम हृदे वसायो।
भक्ति सदा होवै तुम पाही।
अवरु मागु कछु सुकचो नाही।
फिरि भक्ति ने विनती ठानी।
तुमरी गति प्रभु मैं ना जानी।
मम परि क्रिपा करी अधिकाई।
ताकी विधि कछु कही न जाई

जो कृपाल भए प्रभ मेरे।
तौ विनती करो आगे तेरे।
जगत दुषी तिस मुक्ति पठावो।
वेग विलम हर मूल नि लावो।
जव प्रहिलाद येह वचुनु उचारा।
नर हर मन कीनो वीचारा।
भक्ति कउन वरु जाचनु कीना।
पीर अधिक भयो तिंहि लीनो।
जो न करौ बच भक्ति पुराइण।
मानु भक्ति होवे किह नराइण।
भक्ति बचन प्रतिपाल करेवों।
मानु भंगतिहि कनि न देवो।
वहुरो भक्ति स्यु वचनु उचारा।
सुणु हो भक्ति तुम वचन हमारा।
जगत दुषी को ले तुम आवो।
मोको कोई आण दिषावो।
तांको मै वैकुंठ पठावो।
वेग बिलम छिन मूल न लावो।
भक्तु सुनत हर वचन उठि धायो।
तजि ग्रहि अपुनो वाहरि आयो।
चड्यो षडावन थान तजि दीए।
सिष अंगोछा कटि धोती कीए।
जगत दुषी कौ लेने धायो।
कृपाल भयो प्रभ वचन उचरायो।
चलित चलित अंभ के तटि आयो।
तहा विष्ट मूत्र अधिकायो।
एक सूकरी तहू ठौर निहारी।
सहित कुटंब प्रोजन धारी।
एस ते अवरु दुखी कोऊ नाही।
महा दुर्गंधता महि उर्भाई।

प्रिथमहि इसि कौ मुक्ति पठावो।
नर हरि पै इसि ही लै जावो।
भक्ति तब ही मुष वचनु उचारा।
हो आतम रूपा सुण चितुधारा।
नर हरि मोह भए किर्पाला।
सुप्रसन्न होए दीन दियाला।
कहति दुषी जो जगत ल्यावों।
वेग विलम कछू मूल न लावों।
ताको मैं वैकुठ पठावों।
ततषिन महि तिहि दुख मिटावो।
आवो मोह सग तुम ले जाई।
तुम को प्रिथमे मुक्ति पठाई।
सूकरी तब ही कछू न भाया।
भक्ति वचनु तिन हृदे न राषा।
वहुडो भक्ति ऐसे उचिरायो।
आतम रूपी सब्द सुनायो।
सूकरी के हृदे एक न आई।
अति अनद महि वहु उर्भाई।
तीसरो वचनु जब भक्ति उचारा।
तब सूकरी मन्न लीयो बीचारा।
भक्ति को प्रतु दीयो ततकारे।
हे प्रहिलाद क्या षडा पुकारे।
मैं अनंदहि अति उर्भाई।
मोको दुख ग्रासे नही काई।
सकल कुटंब सहित मेरे भाई।
मनि महि विघ्न उपजे नही आई।
छत्री प्रकार को भोजनु पर्या।
सुत वधू उरि घेरा कर्या।
मम सर सुखी जग महि कोई नही।
तौर सर दुखी कोई द्रिष्ट न पाही।

सग अगोछा कटि धोती तेरे।
पगि षडावां दुप तुझ को नेरे।
अंबर ना जो अग हडावै।
पन्हों आना जो पग महि पावै।
पिता तोह नर हर हति कीना।
तैने सुष कवनु चिन लीना।
जवि इहि भक्ति सुनी विधि काना।
अति भै चक्रति भयो हैराना।
उौरु कवनु दुखी मै जोह न जावौ।
जग मह दुखी कोऊ नाही पावौ।
जो मेरे प्रभ उत्पत करी।
सग्नि भई जाहू महि जरी।
इहि हृदे धारि भक्ति फिरि आयो।
नरहरि का डडौत करायो।
तव प्रभ भक्ति सो कह्यो सुनाई।
भक्ति प्रहलादि सुनो चितु लाई।
कौनु दुखी जग से ले आयौ।
क्युं नहीं तै मोह आण दिषायो।
मोह दिषाइ तिह मुक्ति पठावों।
तुमरो वचु मैं पूर करावो।
तवही भक्ति मुषि वात उचारी।
तुमरी गति कछु पार नि वारी।
तुमरी गति कौ तुम ही जानौ।
तुमरी कथा अगाध पछानौ।
हमि मति हीन थोरी मत मेरी।
तुमे बात प्रभ तुम पै तेरी।
जग महि दुखी कोऊ प्रभ नाही।
सकले आनद महि उर्भाई।
जो तुम कीआ पूर्न कीआ स्वामी।
सकल विर्था प्रभू अंतरजामी।

भक्ति कों नर हर समभायो।
सुन हो भक्ति तुम हृदे वसायो।
जग महि दुखीआ नाही कोई।
सभ कल्याण हाल महि होई।
भक्ति को मान अधिक वढायो।
अपनो जान करि सुख दिवायो।
जो जो नर हरि सर्नी आवै।
सांईदास प्रभु सुष दिषावै।५१॥

सकल ऋषीश्वर ने सुण पाया।
हरिनाकसु प्रभ मुक्त पठाया।
सकल ऋषीश्वर मिल कर आए।
ताहि नाम कछुकहे न जाए।
एक एक जो नाम कछु कहे न जाए।
एक एक जो नाम वषानो।
का गति कहा जु लिख करानो।
हरि उस्तित करि के उठि धाए।
आगै अपने आश्रय आए।
एक ऋषीश्वर दर्सनु नां कीआ।
ताहि हृदे वहु भ्रात है लीआ।
वन माही उकिलावत फिरही।
करि सौ करि पटिकारत करही।
वधिकि दाम रषी तिहि ठौरा।
नर हर दर्सन विनु ऋषु भयो वौरा।
पग मृग जो फाही निकट आवै।
ऋषु बोलै फासनि नही पावै।
वधकु निर्ष रह्यो विसमाई।
ऋपि सों कहा सुनों मेरे भाई।
इति उति कहा फिर्ते उकिलावत।
कहा दुख तोह क्युं न सुनावत।

तोह दुःख को करो उपचारा।
सुनहो ऋषि तूं कहा हमारा।
तोह डरि षग मिृग फासे नाही।
हमिरे मन महि भौ उपजाही।
जवि लगि षग मृग हाथ नि आवै।
सुत वधू वनिता दुःख पावै।
भूष ग्रसे तिह को उकिलावहि।
कहा करो जवि वहु ना पावहि।
बंधिनि को ऋषि कह्यो सुनाई।
रे फधिक सुन हो मेरे भाई।
मोह मिृग भाग्यो ताहि हिरावौ।
जो हित हों ताहू कौ पावौ।
और रोगु हमि कौ नही कोई।
इहि प्रयोग आत्म दुःख होई।
वंधिकि जो सुनी इहि विधि काना।
फिरि करि ऋषि सो वचन वषाना।
मिरग चिहन हमि देहु वताई।
करो प्रतिज्ञा येहि मेरे भाई।
प्रथम मिर्गु तोह फधि देवो।
पाछे षग मृग मैं फधि लेवो।
ऋषि वधिक कौ रूपु वतायो।
वंधक ने सुनयो चित लायो।
कट ऊपरि सिहु है मेरे भाई।
नारि तले कौ देत दिषाई।
नारसिंह ताहूं है नाम।
सकल जगत को वहु विश्रामा।
वधिकि सुण प्रतु ऋषि कौ दीना।
भलो रूप मो कौ दस लीना।
शांत रूप होइ तुम ठहिरावो।
शांत कियो छिन ना उकिलावो

प्रिथम मिर्गु फंधो मैं तेरा।
तौ पाछे औरहि आनो नेरा।
वधिक ने परितज्ञा कीनी।
एहि प्रतज्ञा द्रिढ करि लीनी।
ऋषु अपुने आश्रम ठहिरायो।
वंधिकि मृगु फाहनि चितु लायो।
जो षग मृग होरु फाही फासे।
ताह देषि बधकु ताह हांसे।
ततक्षिण मुक्ति करो तिस ताई।
ताको बधकु बाधे नाही।
हृदे माह येही ठहिराई।
प्रिथम ऋषि मृगु लियो फहाई।
पाछे अवर मिर्ग निकट आवो।
नाहि तमरों प्रानि तजि जावो।
कठिन प्रतज्ञ मनि महि धारी।
सच्च प्रीत मन लई वीचारी।
नारसिंह प्रभ अतरिजामी।
सव विधि पूर्न पूर्न नामी।
नारसिंह को फिर वपु कीआ।
आइ वधिकि पाही पगु दीआ।
वंधिक तव ही कह्यो पुकारे।
आवो रे ऋषि तुम ततकारे।
सुनति ऋषीश्वर वेग ही आया।
निर्ष्यो प्रभु आनदु वहु पाया।
ददन सौ फांही कटि डारी।
वधिक को प्रभ लीयो उधारी।
उस्तति हर की ऋषि उचिराई।
जो विधि सी सो कह्यो सुनाई।
मछि रूप प्रभ तुमही कीआ।
सखासुर वेद दुराइ जवि लीआ।

कछ रूप प्रभ तुम ही होए।
सुरों सुष दीए असुर ते षोए।
वैराह रूप प्रभ तुम ही कीना।
हर्निकश्यवि मार पृथवी सुषु दीना।
वसुध्यीश्रा तिह ते ले आए।
तांके पाछे जगत वनाए।
तेरो रूपु क्या वर्नि सुनावो।
अति सरूप कछु कहिनि नि पावो।
कुदरति रूप सभ कुदरति कीनी।
कुदरति धार सकल लीनी।
तेरो अतु न पावै कोई।
कवन अंतु कछु अतु न होए।
सभ उस्तित करि कर के चाले।
धर्नि आकास को कीयो प्याले।
अतु न किनहू ताको पायो।
मनि विचार शाति धरि आयो।
तांको अतु कहा कोई जाणे।
तांकी लील्हा कहा बपाणे।
पारावार तांके कोऊ पावै।
रूप होइ ध्यान कोऊ पावै।
विनु ध्यान कहा नेत्र चलाए।
नारसिह औतार सुणायो।
सांईदास सुनो सुष पायो॥ ५२॥

सत्य सत्य रूप सभ सत्य।
सत्य सत्य सरूप सभ सत्य।
सत्य सत्य कीनो ॐ अकार।
सत्य सत्य कीनो विस्थार।
सत्य सत्य करुणा निधि स्वामी।
सत्य सत्य प्रभ अंतरिजामी।

सत्य सत्य गोविंद गोपाला।
सत्य सत्य सतनि रषि वाला।
सत्य सत्य मुकद मुरारी।
सत्य सत्य सतन हित कारी।
सत्य सत्य माधो धर्नीधर।
सत्य सत्य हर सभ कारुण कर।
सत्य सत्य पूर्ण पर्मेश्वर।
सत्य सत्य प्रभ सकल विश्वेश्वर।
सत्य सत्य प्रभ सकल वसेरा।
सत्य सत्य सतनि सुख चेरा।
सत्य सत्य गोविंद गुसांई।
सत्य सत्य पूर्न सभ थाई।
सत्य सत्य सत्य हर रूपा।
सांईदास प्रभ सत्य सरूपा॥ ५३॥

वावन रूप कहों क्युं कीना।
कित प्रयोग बावन वपु लीना।
एहि वीचार करुणा कर देवो।
हमिरे मन संचरु हरि लेवो।
जो सचरु हमिरे मनि आवै।
तुमि करुणा ते वहि मिटि जावै।
तुम प्रवीन विर्था को पावो।
हमिरा संचरु तुमहि चुकावो।
तुम प्रसाद भर्मु हरि भागे।
तुम करुणा ते दूषन लागे।
करि किर्पा हमि देहु वताई।
तुम किर्पा करि सचरु जाई।
श्रवन धरौ देवो वीचारा।
साईदास वावन वपु धारा।५४॥

राजे बल ने इह मन धारा।
एक लाप जग्य करो करितारा।
तौ पाछे इंद्र आसन लेवो।
जो मन भावै सोई करेवों।
इहि वाछा उनि मन महि कीनी।
नृप प्रतज्ञा इहि मन कीनी।
भोजन सहस्र विपो को देवो।
सुप्रसन चित ताह करेवों।
तिलक ले करि मस्तक लावै।
अति मिष्टानु भोजन पलावै।
क्षीर षडि ध्रित वहु डारे।
अपुने कर कर मषी उडारे।
पगि धोवै चरणाम्रितु लेवै।
इहि विधि तांकी सेव करेवै।
निता परित येही उनि कामा।
दधि घ्रित अंमृति ब्राह्मण धामा।
सुकृतु नितापर्ति वहु करई।
अपुना सीस ब्रह्मण पगि धरई।
ओह औसुरु बुद्धि सुरों की लीनी।
नेम धर्म्म व्रतु एहो कीनी।
एक सहस्र घट लपु यज्ञु कीना।
एहि विधि भोजनु ब्राह्मणो दीना।
कंपमान तव सुरपति होया।
आंसू नीर मुष अपुना धोया।
अति विस्वासु मनि अंतर कीना।
सांईदास मनि संचरु लीना॥ ५५॥

दारा सुरपति की यु बोले।
हे सुरपति तू काहे डोले।

कित कार्न संचरु मन पर्‌यो।
किन तुमरे मरिजोरा कर्‌यो।
तू भूपति सुरपति अधिकारा।
तुमरा किने न पायो पारा।
तुमिरा चितु कित विधि कप गया।
कित प्रयोग विस्माइ होइ रहा।
इमि का उत्तर हमि को देवौ।
मचरु त्याग सुख मनि लेवौ।
तब सुरपति ऐसे करि बोले।
इह प्रयोग मेरा मनि डोले।
बलराजे निश्चा येह कीनी।
औरं त्याग मन महि यहि लीनी।
लखु यज्ञ कर इंद्रासनु लेवो।
जो मन भावे सोई करेवों।
ब्राह्मण को मिष्टानु षौलावै।
अपुने कर कर तिलकु लगावै।
चरन पपार चर्णाम्रितु लेवै।
हिर्पमान होइ दछिना देवै।
एक सहस्र यज्ञु अवरु जो करिही
तौ इद्रासनु परि पगु धरिही
एक सहस्र घट लखु यज्ञु कीआ।
अति मिष्टानु भोजन विप दीआ।
कित प्रयोग हमिरा थिरु राजा
कित प्रयोग पूर्न होवहि काजा
इहि प्रयोग मन करो वीचारा।
साईदास हर अपर अपारा॥ ५६॥

तब दारा सुरपति य्युं कह्यो
इहि प्रयोग मै चक्रिति होइ रह्यो।

तुम देपो मैं क्या कछु करहों।
आसनु तोह निश्चल मैं धरहों।
मेरे कह्यो मान करि लेवों।
अवरु वाति कछु मन ना देवों।
सुर सभ ले ब्रह्मे पेहि जावों।
अपुनी विरथा आष सुणावो।
ब्रह्मा करसी तिस उपिचारा।
एही है मोह मन वीचारा।
सुरपति सुर ले करि सग धाया।
चला चला ब्रह्मे पहि आया।
विर्था अपुनी आष सुणाई।
ब्रह्मे ने तव ही सुण पाई।
वेद पढ्यो बेनती तिह ठानी।
हे कौलापति सारग पानी।
वलु यज्ञ करि इंद्रासनु लेवै।
मुगरु मनि विस्वासु करेवै।
सुरपति की विनती सुण लीजै।
अपुने जन परि किर्पा कीजै।
सुरपति ने जव अधिक कनतायो।
महा अधिक मन महि विस्मायो।
तवि अकास से वाणी होई।
रे सुरपति जाइ रहो सुष सोई।
कश्यप के ग्रहि मै लेऊो अवतारा।
ऐसी विधि प्रभ कह्यो प्रकारा।
तोह इद्रासन कोऊ न लेवै।
साईदास परि क्रिपा करेवै ॥ ५७ ॥

श्री गोपाल भक्तिन सुषदाई।
सदा सदा जन भीर मिटाई।

तज वैकुंठ वेग प्रभु आयो।
दित्य भूमि महि आइ ठहिरायो।
दित्य केत वही जात प्रकासी।
भयो उजीआरा तिमर विनासी।
मानो रवि ने कीयो प्रकासा।
कश्यप हृदे महि भयो हुलासा।
पश्च शकरु सुगुरु आयो।
और वर्न सभ सहित सिधायो।
दित्त दर्सु देषन को आए।
ब्रह्म उस्तित अधिक सुनाए।
ते उस्तित सुण हो मेरे भाई।
प्रीत वधै सुष उपिजै आई।
निरंकार हर नामु तिहारा।
अकाल मूर्ति सभ तोह सिर भारा।
पै समुद्र महि वेद उचारे।
विनती कीनी कह्यो पुकारे।
तव तुम कह्यों कश्यपि गृह आवों।
सुरपति का संतापु चुकावों।
तव ही हमि मन माहि विचारी।
मनि संचरु लीनों भौ धारी।
कहा जानें क्या भई है वांनी।
हे प्रभ हमि ऐसे मनि आनी।
आद अनादी हर तेरो नामा।
गर्भियोन तुमिरा क्या कामा।
भक्ति हेत प्रभ ऐसे कीनो।
भक्ति हेत ऐसे मन धरि लीनो।
पश्च चि आइ उस्तित करि धाए।
आपो अपने पुर महि आए।
भाद्रो मास तिथ द्वादसी भाई।
कपल मुनि जन्म लीयो मेरे भाई।

जन्म लियो प्रगटो उजीआरा।
कपल मुन ने लियो अवतारा।
त्र्योदश दिन जब भए व्रतीता।
कश्यप नामकर्नि तिहि कीता।
पंडित जोनकी अधिक सदाए।
भले महूर्त्त ताह सुछाए।
कपल मुन ठाकुर नामु रषायो।
जो कछु वेद माहे प्रगटायो।
दस्न कढे मुख बहु विधि कायनि।
पग सो षेलति कुज के मोहनि।
वडो भयो सभ सुरति सभारी।
प्रान पुर्ष जिन रचिनाधारी।
साधो चितु लावो गुण गावो।
सांईदास लिव हर सौ लावो।५८।।

इकि दिन बलि राजे क्या कीआ।
येही धार लीयो उनि जीआ।
मघिवापुर ताई उठि धायो।
अधिक सैन ले संग सिधायो।
जाइ घेरा पुर माहे कीना।
वलि ने गर्भ अधिक मनि लीना।
मघिवा सुर लेकर सग आयो।
वलि ने तास्यूं युद्ध मचायो।
बलि अपुने रथि को आज्ञा कीई।
मघवा रौरापति को दीई।
वल अरु मघिवा युद्ध करावहि।
सैना सैना सों झूझावहि।
उह उस मारे बहु उसि मारे।
दोनो बलि कोऊ नाही हारे।

महां अधिक युद्ध ताहि करायो।
दोनो महि किने नाहि हरायो।
मघिवा को भी वलु अधिकाई।
वलु राजा भी अत बल काई।
सैना दोनों के सग भारी।
एक एक सुरु बहु वलिकारी।
तांको नामु कहा वीचारो।
रसिना रचक नाहि उचारों।
कहा बुद्धि तिहि नामु सुनावो।
कहा वुद्धि जो सकल वतावों।
सूक्ष्म वाति मैं ले वीचारी।
गुर सांईदास क्रिपा जब धारी।५६॥

वलु मघिवापुर कौ तजि आयो।
मघवा अपुने पुर ठहिरायो।
कश्यपि भार्या दित्य हे नामा।
गोविद भजनु कीयो तेहि भामा।
महा कठनि तपु ताह करायो।
तब प्रभ प्रगटि दित्त पहि आयो।
कह्यो मांग लेवो मेरे भाई।
जो कछु तुमरे मन महि आई।
तब ही दित्त ने वचन उचारे।
हे पूर्न प्रभ प्रान हमारे।
तोह सार्पा इकु वालुकु पावो।
अपुना मनु तनु तासो लावो।
अवरु नाहि कछु हमरी प्यासा।
येही है हमरे मन आसा।
तब प्रभ तिह को दीआ वताई।
मै आवा तुमरे गृह मांही।

अति सुगंधि अंग कौ तू लाई।
तिम समे अपुने पति पै जाई।
मै तुम गृहि आई लियो अवतारा।
ये ही वचन तुम संग हमारा।
जो कह्यो प्रभ दित्त करायो।
पश्चिचि बच प्रभ हृदे बसायो।
मघवा कार्ज कर्न ताई।
जन्म लीयो आइ त्रिभुवन माई।
तब समुद्र त्याग करि आए।
आपो अपुनो गृह जाइ ठहिराए।
सुरपति निश्चलु आसनु कीनो।
मचरु मन का हरि हिर लीनो।
पूर्ण ब्रह्म भक्ति सदा सुपदाई।
संकटि काटन भयो सहाई।

वामन अवतार

पिता कश्यपि ऋषु प्रभ जी होए।
मात लजावती सभ दुष षोए।
त्रिलोचन ऋषि गुरू दीर्घ त्याग बावन बपु लीनों।
कर माला तिलक मस्तक परि दीनो।

जिहि नगरी बलु राजा रहे। छपरु छाइ तहां आसमु लहे॥
राजा बलु यज्ञु कर्नि तिताही। तहा भोजनु ब्राह्मण बहु पाही॥
बल के द्वार ठाढा जाइ भया। असीर्बचनु चिरजीव कया॥
तिह समे जलु ब्राह्मणा नृपु देवै। पूजा कर कर तिह पगि सेवै॥
जब ही असीरबचनु इनि कीना। बलि राजे श्रवण सुनि लीना॥
द्वारे परि ठाढा है कोई। मुहि कह्यो अंतरि ल्यावो सोई॥
अंतर लीयो बुलाइ गोसांई। अति सरूप सुंदर अधिकाई॥
चतुरबेद मुष पाठ सुणावै। राजा बलु भै चकित होइ जावै॥
अनिक भांति रस्ना नही डोलै। चतुर बेद मुख पाठै बोलै॥
राजे बल कह्या कछु लेवौ। साईदास परि क्रिपा करेवौ॥६०

हे प्रभ करुणा कर कछु लेवो। क्षीर घ्रित भोजन अघेवो ॥
लेहो जजु मैं तुम कौं देवों। जो तुम भापो सोई करेवो ॥
तव प्रभ इहि विधि मुखों वषानी। मै तेरी गति अजहू न जानी ॥
मै जलु तव करि परि धरि लेवो। चतुर वेद मुख पाठ सुणावों ॥
तव राजा निश्चल हो बह्या। चतुर वेद सेती चितु गह्या ॥
चतुर वेद मुख पाठ सुनाए। तांकी महिमा कही न जाए ॥
हर्षिमान वलु राजा होया। सांईदास भर्म सभ षोया ॥५

हे विप तै चतुर बेद सुनायो। मैं सुणयो मन वहु सुपु पायो ॥
जो कछु मागे सोई देवौ। वेग विलम कछु नाह करेवौ ॥
तव प्रभ जी मुख बचन उचारी। सुनहो बल नृप वात हमारी ॥
अढाई करू वसुधा हमि देवो। सुप्रसन्न मम मनु करि लेवौ ॥
तहा छपरि छाइ सुख करहों। हृदये मतोषहरि गुण उचरहो ॥
बलि कह्यो विपि जलु करि लेवौ। कहां मांग्यो हमि कौ देवौ ॥
अढाई करो क्या धनि कहावै। उौर मागो जौ तुम मन भावै ॥
तव प्रभ कह्यो अवरु ना लेवौ। उौर जाचना नाह करेवौ ॥
तव कह्यो अढाई करो धरि दीई। इहि प्रतज्ञा मैं मनि कीई ॥
वलु चाहन सकल्प करेवै। सांईदास हर वसुधा देवै ॥६

कुल प्रोहतु भुक्रजती तांका। छलनु वलनु देष्यो कह्यो वांका ॥
रे नृप वल पाछें पछुतावै। पाछे से कछु हाथ नि आवै ॥
वावन वपु मतु देष भुलावै। त्रिहु लोकनि महि एह न भावै ॥
मछ रूप जो है भगवाना। कछ रूप प्रभ पुर्ष निधाना ॥
वैराह रूप एहो ही होया। नारसिंह[१] हरिनाकसु पोया ॥
सोई आएा वावन वपु धरिया। परि प्रयोग कार्ण इहि करिया ॥
तोहि छले तू जाणे भाई। पूर्न प्रभ मुझे देहि दिपाई ॥
नृपु वलराजा य्युं करि वोलै। हे गुर मेरे कहा तू डोलै ॥
इसि ते भला अवरु क्या चहिए। पूर्न प्रभ जो दर्सनु लहीए ॥
जाका दीआ सो मांगे दाना। ताको दीजहि अपुने प्राना ॥
भुक्र जती कहि तू जाने। साईदास कहयो नहीं माने ॥६

लै करि वा जलु देवरण लागा। वल सकल भौ मन ते त्यागा ।।
तव शुक्र जती ने क्या कीआ। कर्वे का मुख जाकर लीआ ।।
जलु ना गिरे जतिन वहु कीने। त्रिणु ले तिहि कर्वे मुष दीने ।।
उहि त्रिण द्रिग शुक्र जती आयो। ताह त्याग मन वहु पछुतायो ।।
तव मुष ते इह वचनु उचारा। हे वल नृप तुझे वल अधिकारा ।।
मैंने जतन करे वहुतेरे। तू परिओ है घुमरि घेरे ।।
मेरे कह्यो न मन करि लेवै। अढाई करू वसुधा तू देवै ।।
तो का कह्या मनि करि लीना। जलते ताह् सकल्पु जु कीना ।।
अढाई करू ते धर्नी दीनी। तो प्रभ जल ले स्वस्ति है कीनी ।।
तव प्रभ दीर्घ प्रभ वपु धारा। ताका कोऊ न पावै पारा ।।
एक पगु ब्रह्म लोक जाइ धर्‍यो। दूजा पगु सभ पृथ्वी कर्‍यो ।।
वलु राजा भौ चक्रति हो रह्यो। तो शुक्र जती ऐसे कह्यो ।।
तव मेरा कह्यो माने नाही। अविकित करि मनि महि पछुताही
दोवे करो सभ पृथवी भई। साईदास आधा पाछे रही ।।६

तव प्रभ कह्यो सुनो वल राजा। तू ना कहू को मोहताजा ।।
आधु करों वसुधा हमि देवहु। नाहि ति जलु अपना फिरि लेवहु
कठिनि बनी क्या करीये भाई। धर्म्मु न छाडो राम सहाई ।।
तव वल कहा प्रभ जी सुरण लीजै। जलु दीआ फिरि कैसे लीजै ।।
जो तुमि कहो मनि करि लेवों। और वाति कछु नाह करेवो ।।
तब प्रभि तांकौ दीयो वताई। वल राजा सुरण हो मेरे भाई ।।
आधु करों तनु तेरा होई। हमि को देवो हो तुमि सोई ।।
जब इहि विधि प्रभ मुषो वषानी। तव दारा बल की भई स्यांनी ।।
तव कह्यो उनि हम तन लेवौ। जिसे जानों प्रभ तिसे को देवौ ।।
तव प्रभि कह्यो एहि नही कामा। तोह सरीर अपवित्र भामा ।।
तव वल कह्यो लेहु तनु मेरा। अवि मैं वधिवा भयो हो तेरा ।।
तव प्रभि बल को लंबा पाया। पगु धरि प्रिष्ट पताल पठाया ।।
वल करि सो यगि मुह किम कीने। मुह किम करि पग कर महि लीने
पग करते त्याग नही देवै। साईदास पूर्न गुरु सेवै ।।६

तव वलि मुष ते वचनु उचारा। महा वली तिह वलु अधिकारा॥
हे पूर्न प्रभ मुक्ति के दाता। तूं ही है पूर्न पुरुष विधाता॥
मध्य छडाइ प्याल मोह आना। तुझै न छाडो मम मनु माना॥
जतन कीबे वलु छाडै नाही। तव प्रभ बल सो वचन कराही॥
हमि होवे तुमरे अगवाना। ब्रह्म विष्णु महेसु समाना॥
तुमरे द्वार पालक हमि होवहि। तुमरे द्वारे आगे सोवहि॥
चतुर मास ब्रह्म इंहा रहे। चतुर मास शकर ईहा बहे॥
चतुरमास पाछे हमि वारी। साईदास विधि कही मुरारी॥

वचन कीयो तव वल ने त्यागा। तव प्रभु मग अपने उठि लागा॥
छलिन गयो आप ही छलाया। द्वारपाल कों तिलकु चढाया॥
इहि प्रयोग वावन वपु धरया। सुरपति को इद्रासनु थिरु करया॥
ताका अतु कौण काऊ पावै। वह प्रभ घटि घटि आप समावै॥
पूर्न पुरुष निधान विहारी। ताकी गति मिति अपर अपारी॥
जो उसि भावै सोई करही। जल ऊपरि वसुधा वहु धरही॥
तव सुरपति निश्चल कीयो राजा। वाके पूर्न कीने काजा॥
भक्ति हेत करि इहि वपु धार्यो। वलु छल सुरपति को निस्तार्यो
जो जो तिह चरनी चितु धारे। तातकाल प्रभु तिसे उधारे॥
प्रेम भक्ति को हरि मोहताजा। जिहि घटि प्रेम सो सर्व को राजा
ना वहु विनसे आवे नही जाइ। थान थनंतर रह्या समाइ॥
इहि विधि देष दया चित धरहो। नेमु धर्मु अपने चित करहो॥
जो जो हर की भक्ति कमावे। दु:ख नही व्यापे वहु सुषु पावे॥
तीन भवनि तां के है दासा। तांके दर्सन की करहि प्यासा॥
सुर नर मुनि जन सर्नी आवै। तिस की जो हरि भजनु कमावै॥
सदा सदा आनंद समावै। सदा सदा जो हरि गुण गावै॥
सदा सदा जन मुक्ता होवै। जो जनु भर्मि की जेवरी षोए॥
सदा सदा मुक्ता जग माही। हरि भजि तिहि दुख लागे नाही
वावन बिपु प्रतापु सुनायो। साईदास प्रभ सर्व समायो॥६

सच्च नामु करतारु गुसांई। सच्च नामु त्रिभुवन के साई॥
सच्च नामु निरंकार अकाल हर। सच्च नाम माधो धर्नी धर॥

सच्च नाम सतन रषिवारा। सच्च नाम सभ जगत उजारा॥
सच्च नाम त्रिभुवन के राया। सच्च नाम सभ माहि समाया॥
सच्च नाम निरकार न्यारा। सच्च नाम सभ ताहु पसारा॥
सच्च नाम कौलापति केसर। सच्च नाम पूर्न पर्मेश्वर॥
सच्च नाम मुकद मुदारी। सच्च नाम सतन हित कारी॥
सच्च नाम प्रभ सकल समान। सच्च नाम तन सुष दान॥
सच्च नाम महाराज के राजा। सच्चा नाम को सभ मुहिताजा॥
सच्चि नाम साईदास को दासा। सच्च नाम हरि को अभ्यासा॥६

गुण निधान भक्तिनि सुषदाई। गुण निधान सदा सत सहाई॥
गुण निधान सर्व सुषदाता। गुण निधान सर्व संग राता॥
गुण निधान करुनानिधि स्वामी। गुण निधान हरि अतरजामी॥
गुण निधान दु:ख को नासा। गुण निधान सतन की आसा॥
गुण निधान प्रेमु अधिकाई। गुण निधान सदा लुलाई॥
गुण निधान तू जाण अजान। गुण निधान हृदय माहु ज्ञान॥
गुण निधान दु:ख सुख ते न्यार। गुण निधान प्रभ अपर अपार॥
गुण निधान रग सभ राच। गुण निधान सर्व सग साच॥
गुण निधान पूर्न भगवान। गुण निधान सभ माहु समान॥
गुण निधान सदा सदा सग। गुण निधान अनेक तरग॥
गुण निधान तम्रि मन हिरीअं। गुण निधान सप्त मुन करीअ॥
गुण निधान साईदास जु दासं। गुण निधान सर्वसग दास॥

तुही तुही प्रभ सर्वसमानं। तुही तुही कौलापति रान॥
तुही तुही गोविद गोपाल। तुही तुही सतन रषिवाल॥
तुही तुही पूर्नधर ध्यान। तुही तुही पूर्न हरि ज्ञान॥
तुही तुही मोह गति को जानं। तुही तुही इस्थिर करि मान॥
तुही तुही प्रभ अपरि अपार। तुही तुही पूर्न करतार॥
तुही तुही प्रभ गगन वसेरं। तुही तुही सभ तोही चेर॥
तुही तुही धर्नीधर गोविंद। तुही तुही पूर्न पर्मानद॥
तुही तुही विर्था सभ पाव। तुही तुही संताप मिटाव॥
तुही तुही लील्हा प्रभ धारं। तुही तुही हरि पतति उधार॥

तुही तुही सचु तोह प्रवान। तुही तुही सभ तोह धिग्रान।
तुही तुही कछु दु.ख नि व्यापं। तुही तुही सभु तुझ कौ जाप।
तुही तुही सांईदास को दासं। तुही तुही हरि वोहत महि वास॥

उत्तम तुम उत्तम तुम नामा। उत्तम तुम उत्तम तुम कामा।
उत्तम ध्यानु ग्रात्म तुम कीना। उत्तम प्रेम भक्ति परिवीना।
उत्तम भक्ति तुम भक्ति कमावहि। तुमरो नामु उत्तम करि गावहि।
उत्तम नामु निधान तुम्हारा। उत्तम ज्ञान ध्यान हृदय धारा।
उत्तम कीर्त्ति नाम तिहारी। उत्तम रसिना वचन उचारी।
उत्तम निरंकार निरधार। उत्तम ज्ञान ध्यान वीचार।
उत्तम रसिना बात उचारे। उत्तम श्रवण हृदे सम्हारे।
उत्तम द्रिग निर्षिन हरि रूप। उत्तम धर्म तिहं सरूप।
उत्तम तीर्थ को इस्नानं। उत्तम पूर्न पुर्प निधान।
उत्तम बन तिन को है वासा। उत्तम तुमरो नाम प्रकासा।
उत्तम शब्द ग्रनाहद भुणिकारा। उत्तम यदु उत्तम विस्थारा।
साईदास उत्तम नारायण। निसिवासरि हर के गुण गायण

सुण हो साधो हितु चितु लाई। पर्शुराम जना सदा सहाई।
सहस्रार्जन भूपति ग्रधिकारा। यमदिग्न्य ऋपीश्वर जगत उजीग्रार
भार्जा ताहि ताहि दोइ भैणा। तांको कहो विचारो वैणा।
सहस्रार्जन भार्जा सो कह्या। ग्रतर सोच वीचारु इह लह्या।
तोह वहिण वनता यमि दग्ना। वहु ऋषु गोविद सो ग्रति मग्ना।
हमरे गृह सुत सुता न कोई। जव हमि विनसे नासु कुल होः
ग्रपुणी वहिण सों य्यु उ जाइ कहो। ताह द्वारे परि जाइ वहो।
हे वहिणा मम गृहि सुतु नाही। यहि प्रयोग हमि वहु दुःख पाही
तोह पति पूर्न है सव वाती। करे भजनु जागे दिन राती।
ता परि हमिरी विनती कहो। मोह कहा मनि ग्रंतर धर्यो।
इहि मम वहिण ग्राई तुम पाहे। सहस्रार्जन वनिता ग्राहे।
इसि कौ सुत सुता नही होवे। इहि प्रयोग मन ग्रंतरि रोवे।
तुम पहि ये ही याचन ग्राई। तुम किर्पा कर सुत इह पाई
ये ही बेनती जाइ करि कीजै। सांईदास को वहु सुख दीजै॥

सुनी बात श्रवणो उठि दौरी। सुधन सम्हारी अपनी षोरी ॥
चली चली तहा इह आई। जहा कुटीआ यमदग्नि बनाई ॥
निर्षी भैण उठि कै उर लाई। कुसल पूछ कुटीआ ले आई ॥
कहो किर्पा किस करि तुम कीने। कित प्रयोग कुटीआ पग दीने ॥
तब उसने मुख वचन उचारे। सुनहो बहिनीआ बात हमारे ॥
हमिरे गृह सुत सुता न कोई। इहि प्रयोग अतर दुपु होई ॥
तुम पति कर्नि कार्नि भगवाना। मै अपुने अंतर करि जाना ॥
मम विनती अपुने पति करहो। भेट मोह ले आगे धरहो ॥
तोह क्रिपा कर मै सुत पावों। तो क्रिपा ते अफुलु न जावो ॥
एहि बात तुम आप सुणाई। सांईदास सुणहों लिव लाई ॥८

तब यमिदग्नि वनता य्युं बोली। मम मनु भी इह कारण डोली ॥
मम गृह भी सुत सुता न कोई। जो प्रभ भावै सोई होई ॥
यमदग्नि पहि भार्जा चलि आई। जहा यमदग्नि राम लिवलाई ॥
हाथ जोर याम दिग्न सौ कह्यो। वहि तो ध्यान माह रचि रह्यो ॥
चर्न मले मल नेत्र निघारे। हे प्रभ पूर्न प्रान हमारे ॥
मोह भैण तुमरे पहि आई। सहस्त्रार्जन वनिता साई ॥
ना इसि पूतु न मम गृह कोई। जो वर्ले जाने तू सोई ॥
क्रिपा करो करि इहि कछु देवौ। इह मम ऊवरि क्रिपा करेवौ ॥
आस कीन तेरे पहि आई। तोह क्रिपा कर अफलु न जाई ॥
तब यमदग्नि कह्यो करो इहि कामा। पान पत्र ल्यावो तुम भामा ॥
इष्टि करों कर्के मै देवों। तुम उसि को दो सुत मै देवो ॥
जो मै कह्या करो तुम सोई। सांईदास कहे सोई होई ॥९

हर्ष मान पान पत्र ल्याई। दीए ऋषीश्वर अति हिर्पाई ॥
यमदग्न ले पत्र इष्ट जु कीना। इष्टु कीयो फिरि कर तिह दीना ॥
इहु तुम षावो इह उस देवो। अधिक सुषु मन महि करि लेवो ॥
ले आग्या यमदग्न ते आई। पान पत्र रगु लागो भाई ॥
अपुनी वनिती कौ इहि कीनो। अति मज्जनु भक्ति करि लीनो ॥
ताहि दारा को इहि करि दीनो। अति भूपति हंकारी दीनो ॥
दोऊ पान पत्र ले आई। हिर्ष मान होइ मंगलि आई ॥

ले मम बहिण ऋषीश्वरि दीने। हिर्पं मान होइ किर्पा कीने।।
इहि तुम देवो इहि मम कौ कह्या। ओंकार सभ जग रचि रह्या।।
इहि तुम षावो इहि मै षावों। ना तू अफल न मै भी जावो।।
जो उसि कह्यो सो कह्यो भैणा। औरु नाइ कछु जानो बैणा।
अबि मै इहि तुमरे पहि ल्याई। सांईदास सुण हो लिवलाई।।

तब बनिता मन महि इहि धारा। तांका सक्ला कहो विचारा।।
अपनो नीको तिह कह्यो होई। मोह मनि आपे लेवो सोई।
तब उसि बहिन सों वचन उचारा। मनि हो वचिन तू वचनु हमारा।।
अपनो मोह मोह तुम लेवो। एहि तुम लेहु ओहु हमि देवो।
उनि उसि का उनि उसि का पाया। भूल परा फलु विर्था जाया।
पान पत्र षाए गृह आई। नृप सों तब आइ कह्यो सुणाई।
हे पति मोह क्रिपा ऋषि कीने। हिर्पमान पान पत्र दीने।
एकु अपनी बनिता को दीनो। एकु हमिरे परि किर्पा कीनो।
मेरो उसि उसि का मै लेयो। सांईदास यहि कार्न कीयो।

जब बनिता यमि दग्न पहि आई। तब यमिदिग्न ने कह्यो सुनाई।
उसि का पान पत्र उसि दीना। हिर्पमान होइ करि उनि लीना।
तब बनिता यमिदिग्न की बोली। है प्रभ पूर्न श्रवण पोल्ही।
सुण हो विनती मोह जु करहो। तुमरे पगि परि मै सिरु धरहो।
जो तुम मोह क्रिपा कर दीनां। हिर्पमान होइ सो उसि लीना।
जो उमि दीआ सो हमि कौ दीना। इहि कार्ण उसि ने प्रभि कीना।
तब यमिदिग्न ने वचन उचारे। बुरा कीयो तुमि ने ततकारे।
ओह भी अफल तू भी संग ताही। जो उनि कह्यो होवे नही वाही।
उसि के गृहि ऋषु मुन अबि आवे। तुमरे ग्रह भूपति प्रगटावे।
एहि विधि कही शांत घरि याआ[1]। सांईदास सो प्रगटि सुणाया।

गर्भ भये इनि दोनो ताई। अति अनंदु अंग नाह समाई।
भए व्रतीत मांस दस तांकौ। प्रगटि भए गर्भ वाहर बांकौ।
प्रथिमे भूपति वात सुणावो। एक एक करि सकल वतावो।

---

1. "आया" होना चाहिए।

भूपति ग्रह ऋषीश्वर आए। ले करि मंडल वन को धाए।।
भूपति को माया मोह होया। तांके पाछे वहु मनु रोया।।
पाछे उसि के उठि करि दौरा। सुत हित मोह भयो होयो वैरा।।
हे सुत कहो कहा तुम जावो। निर्भमान होइ यहि वचुन्पावो।।
तोह् कारण वहुते दु.ख लीने। कौन उपाउ हमरे सुन कीने।।
जो तूं आयो हमि को छडि जावे। ठाकुर भक्ति तोह् वर नही ल्यावे।।
तव ही ऋषीश्वर ग्रेसे वोलै। हे पित काहे मन महि डोलै।।
जाहो राजु करो गृह माही। हमिरे क्षाल्न परो तुम नाही।।
हमि तो भक्ति करो गोपाला। आद अंत जो है रषिवाला।।
एहि विधि कहि के वनि को धाए। सांईदास नृप पाछे जाए।।७

फिरि आगे जाइ वहु उपलोवै। सुन्न समाध मांह् जाइ सोवै।।
छाडि समाधि वहुडि य्यु कह्यो। मै तो प्रेम भक्ति रच्नि रह्यो।।
तुमि काहे पाछे मोह आवो। क्रिपा करो अपने गृह जावो।।
जाहो राज करो वहु भांति। रख देवो अपनी तुम क्रांती।।
तव नृप मुख ते वचन उचारे। हे सुत निकसित प्रान हमारे।।
तुभ्के त्याग कैसे ग्रहि जावौ। तुभ्कि विनु कहु कैसे सुख पावौ।।
मै जावो पग मोह न जावहि। जो जावो फिरि करिईहा आवहि
तवही ऋषि सुण करि प्रीत जाती। साईदास गति कौन हमि ताती।।८

चलित-चलित फिरि ठांढे भए। तव नृप ने जाइ भुजि ते गहे।।
हे सुत तुभ्क विनु क्यु सुष पावों। तुभ्के त्याग किति विधि ग्रहि जावों।।
तवै ऋषीश्वर ऐसै कह्यो। कहा पूत पूत उचिरह्यो।।
नां तू पित ना मै सुत तेरो। आइ संजोग चढे इकि वेरो।।
केती वेर तू मै सुत होयो। अवि कहा पूत हेत करि रोये।।
त्याग ऋषीश्वर ताको चाले। राच रहे प्रभ जी के क्षाले।।
तव नृपि को सभु भ्रमु है भागा। ताहि त्याग गृहि मग हितु लागा।।
उसे त्याग अपुने गृह आया। सांईदास सोई आषि सुणाया।।९

अवि यमदग्नि की बात सुणावों। एक एक करि तोहि वतावों।।
इसि गृहि उत्पत भयो ततकारे। पर्षुराम तिह वलु अधिकारे।।

पाछे सात बर्स का होया। बालक ऋषि पेलनि भनु पोया।
बालक सेति पेलन जावै। मुष्ट प्रहार तिहि सीसु फुरावै।
तिह पिता मात उलहिना देवहि। तुम सुतु मम सुत को दु:ख देवहि।
जब यमदग्नि उलहिना पायो। पर्षुराम को आष सुणायो।
हे सुत तुम ईहा ते जावो। बन माही जा करि ठहिरावो।
बन महि जाइ तपस्या करहो। मेरो कह्या हृदे अंतरि धरहो।
पर्शुराम तब वचन उचारे। तोह आग्या चाहति हृदे धारे।
मेरी वांछा एही आही। सो तैं किर्पा करी मोह पाही।
जित समे भीर परे तुम ताही। तुम मोह नामु लेहु मनि माही।
तातकाल मै प्रगटि होवो। साईदास सकला दु:ख षोवो।

परशुराम अवतार

अगस्तमुन गुरु क्षेत्र कवलापुर

आग्या ले पर्शुराम सिधारे। पूर्न पुर्ष हर प्रान अधारे।
एक वन महि जाइ करि ठहिराए। पूर्न ब्रह्म मुक्त गति धाए।
महा अधिक भजनु तिह कीना। एको अगु वरसर लीना।
ध्यानु धरे . निसवासर जावै। छिन रजिक मन नाह डुलावै।
पूर्न नामु नामु पूराइण। निर्भौ कौलापति नाराइण।
ताको उस्तिति कहा बपानो। सांईदास उस्तिति नही जानो।

सहस्रार्जन कीयो अषेरा। बन यमदग्नि कुटीआ नेरा।
तहा जाइ पीतवर छाए। अति अनंद मंगल बहु गाए।
रेनका जलु लेने को जावै। नितापरति जलु वाही ल्यावै।
ताई महि जलु पोट वंधिआने। येहि वार्ता मोह बेद बषाने।
अवि जो गई जलु लेने ताई। सैना अधिक निर्षी विस्माई।
कह्यो कवन ईहा चलि आयो। कवन भूपति समानो छायो।
इति उतिते येही पूछन कर्यो। सांईदास मन अतर धर्यो।

नृप सहस्रार्जुन ईहा आयो। अखेर कीओ कर्के ठहिरायो।
तब रेनुका मन महि इहु आना। मम वहनीआपतु एह पछाना।
चाहित है रानि पहि जाया। वहिणि जाए के चितु लुभाया।

तव अगिवानु इसि जाए न देवै। अतर जाए ते मनहि करेवै ॥
इसि कौ कहे कहा तोह कामा। अंतर काहो जावौ भामा ॥
तव रैएका मुष वचन उचारे। इहि नृप वनिता वहिन हमारे ॥
इहि प्रयोग अंनरि मै जावौ। तांको देषो फिरि मैं आवौ ॥
रेणका चली अतरि महि गई। साईदास प्रगटि जाइ भई ॥

वहिण देप के वहु हिर्षाई। अति आतर उठि करि अग लाई ॥
इहि ऋषि वनिता भस्मि उढावै। वहु नृप वनिता अवर हढावै ॥
सकल सीगार ताहि ने कीने। पान पत्र मुखि माहे दीने ॥
अति सरूप कहा रूप वपानो। ताहि रूप सोभा क्या जानो ॥
तव रेनका ने बात उचारी। सुए हो वहिए तू बात हमारी ॥
तोह गृह सुतु होया कै नाही। इहि वीचारु देहि हमि ताहि ॥
तव नृप वनिता वचनु उचारा। सुत हमिरो वनि खंडि सिधारा ॥
नृप तिह पाछे उठि करि धाया। नृप का माया मोह चुकाया ॥
तुम अपुनी गृह वात सुएावौ। सांईदास छिनु बिलम न लावौ ॥

तव रैनका तिसि दीयो वीचारा। हमि गृह सुतु भयो एह पुकारा ॥
वडा भयो ऋषि सुत दु:ख देवै। जो कछु देपै सो पसि लेवै ॥
उनि ऋषि हमहि उलहिना दीना। तव ऋपि सुत को सदि करि लीना
कह्यो पूत वन को तुमि जावौ। तहा जाइ हरि भजनु कमावौ ॥
तव हमि मुन ने बचनु उचारा। मै इहि बांछति सा निरकारा ॥
अवि मैं जावौ वनि खडि ताई। जव तुम कप्टु होइ मोह मनि ल्याई
हमि सुत भी वनि खंडि सिधारा। सांईदास कीनो वीचारा ॥

रैएका वहिन तजि जल कौ ल्याई। कुटीआ महि आइ करि ठहिराई
अति विसमाद भयो चितु वाका। कहा वीचारु कहो मै ताका ॥
यमदिग्न ऋषीश्वर तिहि जोरि देक्षा। अति विस्माद रूप तिह पेक्षा ॥
कह्यो रैणका क्या विसमाई। कहा दु:ख तुम लागो आई ॥
जो तुम दु:ख लागा सों आषो। हमि ते तुमि दुराइ न राषो ॥
तव रैएका ने वचनु उचारा। कहा कहो ऋष प्राए अधारा ॥
मै गई जलु लेएो के ताई। तहा अधिक सैना निर्षाई ॥

तिस सैना स्यू बचनु उचारी। इस बनिता है बहिन हमारी ॥
मैं बहिन अपनी को देषो। इहि द्रिग रूप वाका मैं पेषों ॥
मैं गई चली वहिण के पाहे। अति सरूप सुंदर है वाहै ॥
मोह अग भस्मि लागी अधिकायन। उसि अग अबर अधिक उढायनि
तासो बिदग्रा ले जलु आनौ। कुटी महि खडि करि ठहिरानौ॥
मोहि बहिनीआ पतु चलि आयो। अखेर कीयो वन महि ठहिरायो॥
हमिरे गृह माहे कछु नाही। कहा ताहि आगे ठहिराही ॥
एहि प्रयोग ऋषि मैं बिसमाई। साईदास सों कह्यो सुनाई ॥८

तव ही ऋषि मुख ते इउ बोलै। इति कारन मनि माहे डोलै ॥
हमि निर्धन धन राम हमारो। हमि निर्बल बलु प्रान अधारो ॥
जाइ करि तिस भोजनु कहि आवों। मेरो कह्यो मन महि ठहिरावो॥
गोविद सभ कछु भलो करही। अपनी लज्जा आपे धरही ॥
रैणका इहि सुणि करि उठि धाई। चली चली फिरि बहिन पैं आई॥
कह्यो आइ सुणु बहिन हमारी। ये ही ऋषि ने कह्यो बीचारी ॥
जाहो नृप भोजन कहि आवो। आजु भोजनु तुम हमिरे पावो ॥
मेरो कह्यो सुण करि लीजै। साईदास कछु अवर न कीजै ॥८

तव नृप बनिता कह्यो पुकारी। सुन हो बहिनीआ बाति हमारी ॥
तुम ऋषीश्वर कहा करेदौ। कित विधि भोजनु नृप को देवौ ॥
सभ कछु तुम हमि को दीआ। जो करुणा तुम हमि परि कीआ ॥
काहे को एता दुख पावो। एहि बात मन महि ना ल्यावो ॥
फिरि करि रैणका तिह प्रतु दीना। हे मोह भैण कहा मन महि लीना
मोको ऋषि ने दीयो पठाई। इहि प्रयोग मैं तुम पैं आई ॥
तव नृप बनिता कह्यो भलो होई। जो तुम मन आवै करो सोई ॥
तव भोजनु कहि करि फिर आई। सांईदास अपने गृह ताई ॥८

तव ऋषि गयो ब्रह्म पुरी मांही। नदिनी काम धैन सुता ताही ॥
ब्रह्म ते नदिन ले आया। आइ कुटीआ माह ठहिराया ॥
जो मांगे सो तिस ते पावै। नदिनी काम धेनु सुता कहावै ॥
ऋषि ने मुष ते बचनु उचारा। सुण हो नदिनी कहा हमारा।

चेरी अधिक देहो हमि ताई। जो हमि आगे टहिल कराई ॥
तव ही चेरी वहु प्रगटाई। तांकी वाति कहा उचिराई ॥
पाछे पीतवर वहु दीने। ऋषि ने लै विछावने कीने ॥
भाजन कनक दे अधिक निकारे। ताकी गणती कौणु विचारे ॥
रैणका अधिक वस्त्र जु उढाए। तो सग चेरी अधिक सुहाए ॥
भूपति को ऋषि भोजनु दीना। छत्री प्रकार को भोजन कीना ॥
जो कछु वाछै कोई सोई देवै। आदर भाउ सभ सैना लेवै ॥
नृप सग आए रहे अघाए। तव ऋषि मुप ते वचन सुनाए ॥
जिह आगे भोजन सो लेवौ। वहुडो भोजन हमिह न देवौ ॥
भोजन सभ तुम लेहु उठाई। साईदास कह्यो राम दुहाई ॥

भूपति भोजनु ले उठि धायो। केतक मग चलि करि वहि आयो
वीच ही मग के ठांढा के भया। अति विस्माय मन अंतर लया ॥
एक कुटीआ ऋषि की दिषलाई। एह अडबर उनि कहा कोई भाई
वहुडो नृपु मगते चलि आया। तिसी ठौर फिरि आइ ठहिराया
दो नर सैन सो आपि सुनायो। वेग विलम तुम मूल न लायो ॥
जावो ऋषी की कुटीआ माहें। तहा जाइ द्रिग सो निर्षाहि ॥
कवन ठौर ते भोजनु दीना। कहा ऋषीश्वर ने इहि कीना ॥
ताको देषि ईहा तुम आवौ। साईदास तुम आष सुणावौ ॥

दो नर सैन के चलि करि आए। जहा यमदिग्न ने कुटीआ छाए ॥
ना कछु अग्नि जले तिहि माही। अति भै चक्रित होइ मन माही ॥
कामधेन सुता नदिनी षडी। जो मागो सो आगे धरी ॥
इहि विधि निर्ष के फिरि आए। नृप पाहे आइ करि ठहिराए ॥
जो विधि देप आइ वीचारी। एक एक कर रस्न उचारी ॥
कामधैन सुत नदिनी तिह माही। जो मागे तिस ते सो पाही ॥
नृप सहस्रार्जुन ने विधि जानी। तिस प्रत सुण करि मन इहि आनी
नदिनी कौ कित विधि हमि लेवहु। साईदास तिस सेव करेवहु ॥

फिरि नृप तासो वचन उचारे। वात सुणो श्रवण तुम धारे ॥
ऋषि सो जाइ करि भाष सुनावो। मेरो कह यो मन महि ठहिरावो

प्रिथमे ऐसे आपि सुनावो। जो नही माने य्युं उचिरावो।
नाह त मै र्षास करि भी लेवौ। मार चुकावौ वहु दुःखु देवौ।
चले चले फिरि करि तहा आए। जहा ऋषीश्वर भक्ति कराए।
आइ ऋषीश्वर स्युं इउ कह्यो। नृप धैन कारण ठाढा भयो।
धेनु देहु राजा ले जावै। जो मागो आगे ठहिरावै।
तव ऋषि कह्यो धेन कैसे देवौ। ब्रह्म उलहिना क्यु करि लेवै।
फिरि दोनों नर वचन उचारे। जो ना देवो नृपु युद्ध मारे।
तव ऋषि नंदिनी सो इउ बोले। क्रोधवान होइ श्रवणहि पोल्हे।
कहे नदिनी अबि क्या कीजै। किहि प्रयोग तुम उसि कों दीजै।
इहि भूपति मोह बलु दिपलावै। होवे भस्मि वहु घात करावै।
नदिनी ने प्रतु तांको दीना। कहा विश्वासु तै मन महि लीन
आग्या करों सभ को प्रहारो। एक एक को पकिर पछारो।
तव ऋप कह्यो सुण लेवहु भाई। एही नृप को तुम कहो सुणाई।
मै तौ नदिनी कौ ना देवौ। ब्रह्म उलहिना नाही लेवौ।
हमिरी होइ तौ तुमि कौ देवौ। आन अमान कैसे हिर लेवौ।
हमि तुम को इह कह्यौ सुणाई। साईदास कहो तुम ताई।

त्याग कुटीआ दोऊ नर आए। जो कछु सुन्यों सो आपि सुणाए।
सुनहो भूपति हमिरी वाता। नंदिनी तुमि आवै नही हाथा।
प्रिथमै हमि तिस सुणाया। नंदिनी देह नृप चितु लुभाया।
नदिनी कौ नृप ताई देवौ। जो तुम भावै सोई लेवौ।
जव विधि उसि कौ इहि विधि ठानी। तव उसि ने इहि वात वषानी।
मम नाही नंदिनी जोई मै देवौ। जो बांछो तुम पाहे लेवौ।
जव उसि ने इहि वात वपानी। तव हमि उसि को इहि विधि ठानी
जो तुम हिर्षमान हो देवो। जो मनु माने सोई लेवो।
जो तुम हमि को देवो नाही। नृप आइ मारहि घातु कराही।
जव इहि वचनु हमि ताह सुणाया। ऋषु अति क्रोध लोचन ललाया।
मुख ते एही वचन उचारा। नृप कहा करेगो कहो हमारा।
कामधेनु नंदनं कैसे देवौ। कैसे ब्रह्म उलहिना लेवो।
जो कछु तुमरे मन महि होई। सांईदास करो तुम सोई

जब भूपति इहि विधि सुनी काना। अति क्रोधु उठियो मन माना।
अति क्रोधु करि युद्ध को आयो। यमदग्नि कुटी को उठि धायो।
घेरा जाइ कुटी को कीना। अपनो शस्त्र करि महि लीना।
यमदग्नि ऋषीश्वर तब ही कह्यो। कामधैन सुता उठि क्या बह्यो।
एहि पातकु हम युद्ध को आया। अति आतर होइ कुटी को धाया।
कामधैन सुता कुटीआ तजि आई। सन्मुख सहस्रार्जन धाई।
सहस्रार्जन सौ युद्ध कीना। ताह सैन दहु मार के लीना।
मार सैन ब्रह्मपुरी धाई। एकु घाउ तिनि लागो भाई।
सहस्रार्जन जोरा कीना। यमदग्नि ऋषीश्वर को घाउ कीन
यमदग्नि ऋषीश्वर तजे प्राना। साईदास नृप अति बलवाना।

सहस्रार्जन उठि करि धाया। अपने गृह के मग चितु लाया।
रेणका ने अवाहन कीना। पर्शुराम सुतु जान प्रबीना।
कहा करो तुम पाछे आई। जो तुम अबि ना होहु सहाई।
जबि रैणका इहि मन महि धारी। परसुराम आए तत कारी।
हे मोह मात कवन दु:ख दीनो। कहो मोह जोरा किन कीनो।
उसि को मोको देहु बताई। मैं सग्रामु करो तिस जाई।
कहा बली प्रगट्यो इहि ठौरा। हमि को तुम बतावो भोरा।
ताको एक छिन माह प्रहारो। सांईदास उसि धर्न पछारो।

तब रैणका ने वचन सुनाए। पर्शुराम सो कह्यो समिझाए।
सहस्रार्जन बन महि आया। अखेडि कीयो बन महि ठहिराया।
मैं जलु नितापर्त ले आवा। जलु लेने बन माही जावा।
मै जलु लेने को उठि धाई। बन महि मोह सैना दिष्टाई।
मै सैना सो वचन सुनायो। कौनु है नामु तुम एहि बतायो।
तब सैना मोह दीयो बताई। नृप सहस्रार्जन इह माई।
तब मै मन महि लीयो बीचारा। इहि पतु कहीयैं बहिन हमारा।
मै जाइ निर्ष बहिन को आवो। सांईदास बहु हेतु बढावो।

मै गई बहिण के मिलने ताई। तिस सरूप सुंदर अधिकाई।
उनि उठि मोको अंग लगाया महा अधिक उनि हेतु बढाया

मै उसि ते विदश्रा ले श्राई। इसि कुटीश्र महि श्राइ ठहिराई।
विस्म रही विस्म ठहिराई। तबी ऋषीश्वर ने निर्षाई॥
मोह् कह्यो किन को विस्मार्इ। कौन दुख तुम लागो श्राई।
ओह बात तुम मोहे बतावो। हमि ते कर्न दुरावो।
तबि ऋष हनि मे वचनु उचारा। हे ऋषि पूर्न प्रान श्राधारा।
मोह् बहिन पतु वन महि श्राया। श्रखेर कीयो वन महिठहिराया।
हमिरे गृह माहे कछु नाही। ताह षलावा पडि वन माही।
ताको श्रादर भाउ कैसे लेवो। ताह सैन भोजनु कैसे देवो।
जब तोह पिताइहि बिधि श्रुण पाई। साईदास सो कह्यो सुणाई।

तब ऋष सुप ते वचन उचारे। इहि प्रजोग विस्मक चित धारे।
हमिरे गृह मै सभ कछु भामा। जो हमिरे गृह गोविद नामा।
तुम जाइ करिभोजनु कहि श्रावो। वेग विलम तुम मूल न लावो।
मे गई ताह भोजनु कहि श्राई। वेग विलम मै मूल न लाई।
ऋष गयो ब्रह्म पुरी के माही। मैं सकल वीचार करो तुम पाही।
ब्रह्म पुरी ते नदिनी ल्याया। ऋपि ने धैन को वचनु सुणाया।
हे नदिनी चेरी हमि देवो। वेग विलम तुम नाह करेवो।
तब नदिनी चेरो बहु दीनी। वेग विलम उनि मूल नि कीनी।
पाछे से पीतबर दीने। सो ऋषि लै विछावनि कीने।
भोजन कनक के श्रधिक निकारे। जो बाछहि वे तत्कारे।
श्रनक प्रकार के भोजन दीना। हर्षिमान होइ करि नृप लीना।
जो सैना संग सभिहू श्रघाई। उदर भरे सभ भूप गवाई।
नृप भोजनु ले करि उठि धाया। केनक मगु चलि करि बहु श्राय
बीच ही मग के ठाढा भया। कछु सचरु मन माहे लया।
मग ते फिरि करि भी बहु श्राया। दो नर सैन के तिनहि पठाया।
नदिनी को हमि ताई देवौ। जो चाहो हमि पाहे लेवौ।
तव ऋषि कह्यौ हमारी नाही। मैं मगिश्रानी ब्रह्म पाही।
श्रानि श्रमागण कैसे तुम देवौ। श्रानि श्रमान कैसे हिर लेवौ।
जब ऋषि ने यहि बचन सुनाया। दो नर तब सुणि करि उठि धाय
नृप सो जाइ करि वचनु उचारा। हे नृप सुनों श्रवन हम धारा।

ऋपु नंदिनी को नाही देवै। हमि सो ऐसे वचन उचरेवै॥
कहे नदिनी हमिरी नाही। मै मंगि आनी ब्रह्म पाही॥
वस्तु पराई कैसे देवो। ब्रह्म उलहिना क्यु करि लेवौ॥
जब नृप ने एहि बिधि सुणु पाई। क्रोधु कीयो कुटीआ परि आई॥
एक घाउ नदिनी को दीना। नदिनी ब्रह्मपुरी मगु लीना॥
पाछे तुमरे पित परि आयो। शस्त्र लीए तिस घाउ लगायो॥
तोह पित के हिर लीए प्राना। कहा मै तोह पहि आप बषाना॥
इहि प्रयोग तुम को किन दीना। तोह पिता नृप ने हनि लीना॥
अवि मैं तुम कौ कह्यो सुणाई। साईदास सुणु हो विध लाई ९६

पर्शुराम जब येहि सुणु पायो। अति क्रोध लोचन ललचायो॥
अति वलवनु वल कहा अपाना। ताके वल का अतु न जाना॥
सुन्दर रूप सत्य तिह काया। समी अरु भानु तिस की है छाया॥
कपमान सुर नर सभ होए। आमो नीर सौ तिह मुख धोए॥
कहा जानै इह क्या कछु करसी। कवन सग सग्राम चितु धरसी॥
सकल सुरौ ने भौ मन कीआ। साईदास तिन कौ सुख दीआ १

पर्शुराम आतर होइ आए। करि कुठार ले करि उठि धायो॥
सहस्रार्जन कौ जाइ मारा। सकल सैन को तिहि प्रहारा॥
नृप की रक्त सो तर्पन कीना। इहि सकल्प तहा उनि दीना॥
इकीस बार निक्षत्राइण करहो। तो कछु औरु बात चित धरहो॥
सभ छत्री इकि बार बिडारे। विर्ला भाग छुटा तिहि बारे॥
वहुरा तिस ते उत्पत होई। वहुडो पशुराम आइ षाई॥
इकीस वार ऐसे ही कीनो। जिन ने जोरु कीयो दंड दी डोनो॥
महाबली तांको वल भारा। तिति वल का क्या कहोवीचारा॥
त्रैलोक को दुख मिटावै। जो निसवासर हरि गुण गावै॥
सत जना को वहु सुख देवै। पातक को वहु घातु करेवै॥
जो जो तिह सर्नी चितु लावै। ताके पूर्न होवै कामा॥
जो जो क्षेम कुशल को चाहे। उौर भारु सभ सिर ते लाहै॥
जो जो गोविंद को जसु गावै। महा सुखी दु:ख मूल नि पावै॥
हे साधो सकला भ्रमु षोवौ राम नाम स्मिरो सुख सोवौ॥

ताते तुम कौ दु:ख न लागै। जो दु:ख होवै सभ ही भागै॥
तिस की उस्तिति कौनु बषाने। प्रान पुर्ष कौ कौनु पछाने॥
पर्शुराम पूर्ण अवतारा। साईदास कहियो बिचारा १

राम अवतार

रामायनम:

राम नाम नाम हरि रामु। सकल जगति के कर्ते काम॥
पूर्ण ब्रह्म ब्रह्म पूरायण। कौलापति पूर्न नारायन॥
गोबिद सत सहाई रामा। सकल जगत के पूर्न कामा॥
रघुबंसी पूर्ण भगवाना। भयो मुक्ति जिन अंतर आना॥
अतर आन ध्यानु तिहि कीना। मुक्त भयो पर्म पदु लीना॥
सकट काटन सुष को दाता। पूर्न पुर्ष हरि आप बिधाता॥
जो जो उस्तित तांकी करही। बिना नाउ वहु भौजलु तरही॥
क्रिपा निधान क्रिपा जन करही। अपना जान जन पार उतरही॥
दीना नाथ अनाथ को दाता। सदा सदा संतन संग राता॥
जो बांछे हि तिन को देवै। सुप्रसन्न जन को करि लेवे॥
को कहि सकै उस्तिति हरि केरी। हरि चढ रहे निर्भौ की बेरी॥
हो गोबिद दु:ख संतन नासा। सर्बि निरन्तर जाको बासा॥
प्रान अधर्न सत सहाई। कौलापति सतन सुषदाई॥
महा गंभीर कछु अंतु न तांको। कहा करे कोई उस्तित वांको॥
ताकी सर्नी मै चितु देवौ। सुप्रसन्न आतम करि लेवौ॥
राम नाम माधो गुण गावो। साईदास छिनु ना अलिसावो॥

महाराज भक्तिनि सुखदाई। गुण निधान मै ता सर्नाई॥
ज्यु जानो तैसे प्रभ राषो। त्याग न देवो अपना भाषो॥
तुम हरि औगुन और न देषौ। प्रभ जी अपनी ओर तुमि पेषो॥
पतित उधारन नामु तिहारा। सदा सदा जिन बिर्दु सम्हारा॥
जो हमि अघ कीए सभ निवारो। अपनी किर्पा हमि परि धारो॥
जो जाचकु जाचे हर दाना। दीनै दानु हर बिर्द समाना॥
अपनो बिर्द हरि तुमहि समारो। सांईदास परि किर्पा धारो ·

एक विनती प्रभ तुम पै करही । अपनो सीसु तुम पगि परि धरही ॥
एक बात हमिरे मन आई । सो तुमि हमि को देहु बताई ॥
द्याल पुरुख कहो क्यु करि पाई । द्याल पुर्ष कैसे ध्यानु लगाई ।
द्याल पुर्ष कैसे जपीए नामा । द्याल पुर्ष पूर्न सभ कामा ॥
इहि विधि हमि को देहु बताई । तुमि बिनु हमिरो कोऊ न सहाई ॥
हे माधो मुकद मुरारी । हे माधो सतन हित कारी ॥
हे माधो क्षिण महि तार्ण हारे । हे माधो सतनि रखवारे ॥
हे माधो पूर्न भगवाना । हे माधो सभ माह समाना ॥
हे माधो धर्नी धर गोबिद । हे माधो पूर्ण पर्मानन्द ॥
हे माधो त्रिभुवन के नायक । हे माधो सुख सहिज समाया ॥
हे माधो विर्था सभ जानौ । हे माधो जोगनि न बषानो ॥
हे माधो धार्न सभ धर्ना । सांईदास सस कार्ण कर्ना ॥

निरकार सभ माह समाया । निरंकार सभ रचन रचाया ॥
निरंकार सभ हूते न्यारा । निरंकार सभ माह निहारा ॥
निरकार पूर्ण रघुराई । निरकार संतन सुषादाई ॥
निरकार की गति को जाने । निरकार को कौणु पछाने ॥
निरकार पूर्न अविनासी । निरकार दु:ख को है नासी ॥
निरकार जनु हृदे पछाने । निरकार सभ महि करि जाने ॥
निरकार सो मुक्ता कीना । निरकार निर्भो पद दीना ॥
निरकार ब्रह्मंड को दायक । निरंकार त्रिभुवन को दायक ॥
निरकार घटि घटि समाया । निरकार सभ जगतु उपाया ॥
निरंकार निर्लेपु गुसांई । निरकार सिमरो मन माही ॥
निरकार त्रिभुवन को साई । निरकार सिमरो दु:ख जाई ॥
निरकार सूक्ष्म अस्थूल । साईदास जीवन वहि मूल ॥

निरभो है निरवैर गुसांई । निर्भो है त्रिभुवन को सांई ॥
निर्भो है मुकंद मुरारी । निर्भो है जिन रचिना धारी ॥
निर्भो है अकाल अकल हर । निर्भो है माधो धर्नीधर ॥
निर्भो है त्रिभुवन को राया । निर्भो है दु:ख सुख को राया ॥
निर्भो है महाराज के राजा । निर्भो है महाराज बेमुहताजा ॥

निर्भौ है जुग जुग अवतारा। निर्भौ है प्रभ राषनहारा ॥
निर्भौं है वावन वपु धारा। निर्भौं है सतनि रपिवारा ।
निर्भौं है अनाथ को नाथा। निर्भौं है निसि सभ कछु हाथा ।
निर्भौं है रघुपति रघुराई। निर्भौं है लक्ष्मण सग भाई ॥
निर्भौं है त्रैलोक को दाता। निर्भौं है घटि घटि महि राता ॥
निर्भौं है भौ ताहि न व्यापै। निर्भौं है सभ को निम जापै ॥
निर्भौं है साईदास के दासा। निर्भौं है जिन हर की आसा ।

रघिपति को अवतारु सुनावों। सभ ब्रतांतु मै ताहि वतावो ।
साधो श्रवण धार सुण लीजै। और बात कछु हृदे न दीजै ।
जो श्रवण धार एहि सुण लेवै। तापरि प्रभ जी क्रिपा करेवे ।
सदा सदा मुक्ता जग माही। तो को दु:ख कोऊ लागै नाही ।
जन्म जन्म के अघ कटि डारे। डूबति बेडी पार उतारे ।
जैसे पषाण जलहि तरायो। वेग विलम कछु मूल न लायो ।
जैसे तुम को भौ जल तारे। एक छिन मै षडि पार उतारे ।
जो वाछेहि सोई कछु पावै। जो रघिपति जसु हृदे वसावै ।
साधो तुम कौ कहौ पुकारी। तुम मनि माहे लेहो वीचारी ।
सदा सदा रघुपति जसु गावो। अपने घट महि सदा वसावो ।
जिहि विधि रघुपति लियो अवतारा। सकला तांका कहो वीचारा ।
साधो सुण हो हितु चितुलाई। सांईदास मुक्ति जनु पाई ।

रावण देतु महा बलकारी। दस सिर वीस भुजा बलु भारी ।
एकु लक्षु पूतु सवा लषु नाती। कुंभकर्णु भाई तिहि साती ।
ब्रह्मे के आश्रम चलि आया। ब्रह्म भक्ति सो हेतु वढाया ।
महा कठिन तपु रावण कीना। तव ब्रह्मे मन महि इह लीना ।
जो मागे सोई इसि देवौ। सुप्रसन्न मनु इसु कर लेवौ ।
मोह भजनु इनि अधिक कमायो। मोह भजन सो वहु हितु लायो ।
वहु अधीन भजनु उनि कीना। रावण अधिक भजनु करि लीना ।
महा कठन तव भजनु कमायो। सांईदास ब्रह्म लिव लायो ।

ब्रह्मा प्रगटि भयो तिह पाही। सोच्च वीचार करी मन माही॥
हे रावण तुमि कछु मग लेवौ। सका कछु न मन महि लेवौ॥
जो तुम मांगो सोई देवौ। वेग विलम तुम नाह करेवौ॥
तव रावन ने वचनु उचारा। हे प्रभ पूर्न प्रान अधारा॥
हे प्रभ मोको येही देवौ। जो मांगो सो कृपा करेवौ॥
सुरो असुरो ते ना मै मरहो। इह जाचनु प्रभ तुम पै करहो॥
मानस कपि कहा निकट आवहि। त्रैलोक मोह वल कपावहि॥
ब्रह्मे कह्या ऐसे ही होई। जो तं माज्ञा देआ सोई॥
अवि जाइ सुख वसो गृह माही। और हृदे आनी कछु नाही॥
ब्रह्मे जव एहि बात वपानी। साईदास रावण मन मानी।८।

करि डडौत रावण उठि धाया। तेह वल ते त्रैलोक कपाया॥
कनक पुरी त्रिकूट ग्रह तांका। सागरु षाई है फुन वांका॥
वस्तु कुमेरु तस के माही। तांके मन महि भौ कछु नाही॥
रावण ने वहु जोरा कीना। लंका गढु ताते हिरि लीना॥
आप तहा जाइ लीयो निवासा। नित नित कलु तांको प्रकासा॥
कुमेरि कौ तासो दीयो निकारे। अति अभिमान हृदे महि धारे॥
कनकपुरी को लीनो राजा। महा बली वह बेमुहताजा॥
जरु जमु पकिड के वदी पाया। त्रैलोक अपुने वस ल्याया॥
महावली तिह सरि नही कोई। साईदास सन्मुख कोऊ होई।६।

असुर बुलाई लीए सभ तव ही। ताको आग्या दीनी जवही॥
जो कोई यज्ञु करे भाई। तहा परो जब ही तुम धाई॥
तिह यज्ञु पूर्ण कर्ण न देवों। मार कूटि वस्त्र षसि लेवौ॥
येही आग्या तुम को दीनी। एहि बात मन महि मे लीनी॥
मेरे कह्यो मन महि ठहिरावो। और बात कछु हृदे न ल्यावै॥
बार बार तुम कहो पुकारी। मानि माहे तुम लेहु वीचारी॥
एह काम कर्नी चितु लावो। आग्या मम मनि महि ठहिरावो॥
असुरो येहि आग्या मनि लीनी। तांकी आग्या दृढि मन कीनी॥
महावली तिस बलु अधिकारी। सांईदास सभ कह्यो वीचारी।१

सकल सुरौ को हुकुमु मनाया। गुरु किर्पा ते आष सुणाया ॥
सुरपत कौ तिन लीयो बुलाई। ताह कह्यो सुण ले मेरे भाई ॥
पुहप नितप्रति तुम ले आवौ। हमिरे आगे आण टिकावौ ॥
सुरपति ने इहि मन महि लीग्रा। पुहप चुणनि चितु अपनो दीग्रा ॥
वहुर बसंतर लीयो बुलाई। तांसो रावण आष सुणाई ॥
सूपकारु हमरो तुम होवो। निश्चल अपने ग्रह मै सोवो ॥
विसंतर[1] मन महि धरि लई। जो कछु रावण आग्या कीई ॥
ससोग्ररु लीयो बुलाइ तत्कारा। रावण दैत महाबलु भारा ॥
ससीग्रर को तिन आप सुणाया। मन करि प्रीति उनि तिसे वनाया
मोह सिर छत्र तुम कर महि राषो। उौर बाति कछु ना तुम भाषो ॥
ससीग्रर ने मन महि ठहिरानी। जो कछु रावण मुखो वषानी ॥
पौण बुलाइ लीयो बलकारी। ताह कह्यो सुण बात हमारी ॥
तुम सुहना हमरे ग्रह देवौ। सदा सदा इहि काम करैवौ ॥
जो तुम हमिरा कामु न करहों। कोई उौर बात चित धरहों ॥
टूक टूक तोह तुझ करि डारो। एकपल माहे तुझहि विडारो ॥
पौन कह्यो हे नृप बलिकारी। तुम सुण लेहो बात हमारी ॥
जो तै कह्यो सो मन महि लीग्रा। अपुने घटि अंतरि मै कीग्रा ॥
सदा सदा सोहना मै देवौ। उौरु कामु कछु नाह करेवौ ॥
मार्ति मान[2] लीयो जो कह्या। जोउनि कह्या सो मन महि सह्या
पाछे रावण वर्नु सदाया। तांसो ग्रैसे भाष सुणाया ॥
तुम हमिरे गृह नीर ल्यावो। हमिरे द्वार परि छिनकावो ॥
वर्न हृदे महि धरि करि लीना। जो कछु हुकुमु रावण ने कीना ॥
वर्न मान गयो ग्रहि माही। तांको वलु कछु लागो नाही ॥
रवि को लीनो तबै बुलाई। तांको रावण यही वताई ॥
मै पतिहारी तुम कौ कीना। एहि बात मैं मन महि लीना ॥
रवि ने मन महि लीयो ठहिराई। तांसो वलु न वसावै भाई ॥
वहुता दुःख देव को दीग्रा। साईदास उनि सभ वस कीग्रा ॥

---

१ बिसतर=अग्नि।
२. मार्ति<मारुति=वायु।

सभ सुर ब्रह्मे पाह पुकारे। तुम हो महावली अधिकारे ॥
हमि को वहु दुःख रावण दीना। अपुने गृह महि बंदी कीना।
हमि तुम त्याग अवर किसु आषहि। अपनो दु.ख हमि किस पै भाषेहि।
जो तुम हमहि न करो उपराला। कौनु होइ कहु हमिरो हाला।
हमि वलु ता संग कछु न वसाए। क्षीर समुद्र को पग धाए।
चला चला दधि के तटि आयो। मुप ते वेद चतुर उचिरायो।
इति विधि मुख सें बेद वषाने। तीन लोक महि सभ ही जाने।
पाछे से विनती येहि कीनी। सांईदास मुष ते उचिरीनी।

हे प्रभ सुर वहुता दु.ख पावहि। तुझे त्याग औरु कहा जावहि।
रावण दैत्य अधिक दु ख देवें। महा कष्ट देवनि कौ देवै।
तुम भक्तिन के सदा सहाई। सभ क्रकति है तुम पहि आई।
ज्यु जानो त्यु दु.ख मिटावौ। वेग विलम तुम मूल न लावो।
जव ब्रह्मे येहि वचनु उचारा। त्रिहू लोक महि सुन्यों बीचारा।
शब्द आकास ते उत्पति होया। मे सां सुन्न मदिर महि सोया।
जव ते तैने इहि करी पुकारा। तव ही मै मन लीयो बीचारा।
जाहो चितु अपना ठहि राषो। राम नाम मुप अपुने भाषो।
मै दशरथ गृह ल्यों अवतारा। तुम मरिकटि होवो सुर सारा।
ब्रह्मे जव वाणी सुण पाई। सकल सुरो सो कह्यो सुनाई।
चितु धरि ठौर तुम ना उकिलावो। राम नाम हृदे माह ध्यावो।
दशरथ के ग्रहि माह प्रभ आवै। दु.ख दर्दु तुम सभू मिटावै।
तुम सभ ही मर्कटि वपु धारो। राम नाम घटि माह वसांवो।
जव सभि ही सुर यह सुण पाई। वेग विलम उनि मूल न लाई।
तातकार सुर कपि वपु लीना। सांईदास ,यहि कार्ण कीना।

दशरथ नृप ग्रहि सुतु ना कोई। ताहि उपचारु न दीसे कोई।
त्रैवनिता तिस के गृहि माही। तिस गृह सुतु होवे कोऊ नाही।
एकि कौशल्या है तिसु नामा। द्वितीआ कौकेही तिसु भामा।
त्रितीया सौमित्रा ही कहीयै। तीनो नाम इस माहे लहीयै।
दशरथ ने इकु तालु कढाया। धनष वाण ले तहा ठहिराया।
ताहि ताल रषिवालक रहिहो निसवासर ऊहा वह्नु वहही

जब लगि ब्राह्मण ना ज्यु लावा। तब लगि इसि ऊपरि ठहिरावा ।।
जो पपी मृग पाणी ना पीवै। इसि का जलु जूठा ना थीवै ।।
इसि प्रयोग ताल परि रहई। निसवासरि तिसि ऊपरि वहिई ।
अधी अधा काँधे लीए। सुरिवण सुत तिह मग पग दीए।
पूर्ण चक्षु पिता को नामा। माइ सुनेती सभ घटि रामा।
चल्यो आवति तिह मग माही। अति अनंदु तिहि दुःख को नाही।
अधी अंधा त्रिषा संतायो। तव उनिने मुप वचन सुनायो।
हे सरवण सुत त्रिपा सताए। तौ विनु हमि को त्रिपा बुझाए।
त्रिषा गह्यौ हमि को अधिकाई। जलु आण देवो तुम हमि ताई।
नाहि ति निकिसित प्रान हमारे। पाछे कछु न होवत पछुतारे।
तव सरिवण ने मनि ठहिराई। बहिंगी ले व्रिक्ष सों अटिकाई।
गडिवा ले जल कों पग दीए। जाइ ताल भर्ण चितु कीए।
तिहि चकचकारु दसरथ कानि पर्‍यो। कह्यो किसी म्रग जल पगु धर्‍यो
सरु साध्यो सरवण को मारा। तब सरवण ने एही पुकारा।
हे दशरथ पापी क्या कीआ। तैं मुझिको घातु करि लीआ।
तव दशरथ वहुता पछुताना। कहा होइ जबि बपतु विहाना।
सरवण कह्यो गडिवा ले जावौ। षडि जलु तुमि जाइ तिनहि पीलाव
मुखो न बोलौ गडिवा छिणकावो। एहु काम तुम जाइ कमावो।
जो मुष वोले ओहु न पीवहि। सांईदास बहु म्रितक थीवे।

गडिवा ले दशरथु जबि धाया। चल्या चल्या दोनो पहि आया।
जलु गडिवे माही छिणिकाया। अंधी अंधे कौ सुणवाया।
अधी अंधे वचन उचारे। हे सरवण सुत प्रान हमारे।
काहे ना आवति हमि नेरे। कहु तूं क्या आयो चित तेरे।
मुषि ते वचनु काहे नही आषो। मात पिता कौ क्यु ना भापो।
सरवण कहा जो मुषि ते बोलै। सांईदास मन महि वहु डोलै।

हे पापी तूं कौणु कहावै। भूत प्रेत हमि क्यु न बतावै।
तब दसरथ ने वचन उचारा। मै अपराधी सरवण मारा।
मै ज्यान्यौ मृगु कोई आयो। तिह प्रयोग मैं वाणु लगायो।
जलु ले आया हो ले पीवे हमि ऊपरि गुस्से ना थीवो

तब अधि कह्यो चिषा बणावो। अपुने करि तीनो जलावो।
तव दसरथ कह्यो एहु न करहो। ऐसी बात परि चितु न धरहो।
होवन होइ सोई कछु होई। साईदास औरु करे न कोई॥

अधे अधे कह्यो कैसे जीवहि। विनु सुत सरवण किउ सुख थीवहि
सरवण सुत को वेग ल्यावो। हे दसरथ हमि आण दिषायो।
दसरथु सरवण को ले आया। अंधे अधी को आण दिषाया।
तिनहि द्रिष्ट आवै कछु नाही। हाथ लाइ वहु रुदन कराही।
रुदन कीयो करि वचन उचारे। हे दसरथ पातक वहु भारे।
चिषा बनाई करि हमहि जलावौ। वेग विलम्ब तुम मूल नि लावौ।
तव दसरथ ने चिषा बनाई। ले लकिडी वन की अधिकाई।
तीनों चिषा ऊपरि ले पाए। सांईदास चाहति अग्नि लाए।

ताहि चिषा को अगिन लगाए। तव अंधी अधे वचन सुणाए।
जिहि वियोग हमि तजै प्राना। इहि वियोग निकसिहि तुम जान
जव उनि ने इहि बचनु उचारा। तब दसरथ मनि लीयो वीचारा।
भलो सरापु दीयो हमि ताई। इहि सरापु सुतु हमि गृहि आई।
प्रिथमे तो सुतु मोह ग्रहि आवै। पाछे मोह वियोग लगावै।
अनद मान होइ ताहि जलायो। तिनहि जलाइ करै गृहि आयो।
आइ सिहासन ऊपरि चढयो। मन अतर इहि कार्ण करयो।।
तब वशिष्ठ को लीयो बुलाई। तासो विनती आष सुनाई।
हे गुरदेव कछु करु उपिचारा। नाहति कुल होइ नासु हमारा।
जो मोह ग्रहि सतत ना होवै। तव कुल नास हमारा होवै॥
ऐसे करो मोह सतत होई। तुम विनु अवर न कर्सी कोई॥
तव वशिष्ट ने आप सुणाया। साईदास येहि वचनु वताया॥

सिडी ऋषु वनि माहे रहई। महा ऋषीश्वर पूर्न इहई॥
किसी बात करि तिसे ल्यावो। उसि कौ आण ईहा ठहिरावो।।
ओहु ईहा आण करि यज्ञ करावे। तुमको ओहु कछु भलो बतावै॥
तब तुमरे गृह संतत होई। इह बीचार और नही कोई॥
जब दसरथ इहि विधि सुणपाई फिरि वशिष्ट सो बात चलाई

कहु सिङी ऋषु कैसे आवै। नगर माह आइ करि ठहिरावै ।।
तव वशिष्ट ने दीयो वताई। हे दशरथ नृप सुण मेरे भाई ।।
सुदर वनता अधिक पठावो। मेरो कह्यो मन ठहिरावो ।।
अति मिष्टान जा ताहि षलावनि। लोभ मान करि ताह ल्याइनि ।।
दसरथ बनता अधिक बुलाई। तिह मिष्टानु देवनहि पठाई ।।
दसरथ तांको कह्यो सुनाई। तुमि सुण लेवो मेरे भाई ।।
इहि मिष्टानु खडि ऋषहि षवाग्रो। सिङी ऋष कों ईहा ल्यावो ।।
इहि मिष्ठानु सिङी ऋषि देवों। एहि बात तुम मोह करेवौ ।।
ज्यु जानो त्यु तिसे चषावो। ज्युंउ जानो उसि को ईहा ल्यावो
वनता सभि तव ही उठि धाई। चली चली ऋषि पाहे आई ।।
सिङी ऋषि प्रभ सो लिउ जोरी। वनता सभ आगे असु होरी ।।
वनिपत से मिष्टानु लगाया। जहा सिङी ऋषि आसणु छाया ।।
ध्यान छूटो तिह षुध्या व्यापी। तोड लीए वनिपति तिह आपी ।।
पात तोड मुख माहे दीने। रस्ना स्वाद अधिक चषि लीने ।।
भूल पर्‌यो रस्ना स्वाद लीए। नेत्र पोल्ह इति उति उनि कीए ।।
वनिता तिहि निर्षी उठि आयो। उनि वनिता मिष्टानु षलायो ।।
एक वनिता आगे उठि धाई। दसरथ को आइ षबर सुणाई ।।
हे भूपति ऋषि को ले आई। साईदास जो तुम्है पठाई ।।

सुण दसरथ आगे को धायो। सिङी ऋषि पै जाइ ठहिरायो ।।
अति डंडौत ताहि को कीनी। हे प्रभ हम पै किर्पा कीनी ।।
चलि सो गृह सेवक के माही। क्रिपा करी प्रभ तुम अधिकाही ।।
सिङी ऋषि को गृह ले आया। प्रजंग ऊपरि आण वैठाया ।।
आदर भाउ अधिक तिहि कीनो। करि जौरे विनती उचिरीनो ।।
हे प्रभ मोको यग्य करावौ। मोह गृह सतत तुम उपजावौ ।।
तुमि विनु ओटि हमि को नाही। तोह क्रिपा ते सतति पाही ।।
सिङी ऋषि कहो वहु नीका। भलो कह्यो मुख चाहो जी का ।।
आन भूपति ने सुण करि पाया। दसरथ ने वहु यज्ञु मचाआ ।।
आन आन नग्र के भूपति आए। आइ अयोध्या महि ठहिराए ।।

ऋषु तिहि यज्ञ करावन लागा। दसरथ और बात सभ त्यागा॥
चितु धरो तुम यज्ञ करावहि। सांईदास संतत उपिजावहि॥२

कुंडि कीयो तहा अग्नि जलाई। घ्रित तिल अक्षत लीयो बुलाई॥
ताह अग्नि महि होमु जु कीना। घ्रित तिल अक्षत डार तिह दीना॥
अग्नि से प्रगटयो इकु रूपा। अति भुज गात तिह अधिक सरूपा॥
कनक थार क्षीर कर लीआ। कौशल्या कौकेही को दीआ॥
नव ही सुमित्रा मुखों पुकारा। हे प्रभ बाटा कछू हमारा॥
मो को भी प्रभ जी कछू देवो। हमि परि भी तुम क्रिपा करेवौ॥
कछु उस ते कछु उसते लीआ। ले सुमित्रा को उनि दीआ॥
दसरथ की तिहूं बनिता पाया। यज्ञ करि सिद्धी ऋषु बन धाया॥
केतक दिन जब भए बितीता। जां दिन ते दसरथ यज्ञ कीता॥
कौलापति पूर्न गोसांई। धर्नीधर सुंदर अधिकाई॥
तजि बैकुंठ गर्भि महि आयो। कौशल्या गर्भं आइ ठहिरायो॥
कौशल्या रूप भयो उजीआरा। रवि चढियो मिटि ग्यो अंध्यारा॥
मानो पुतली कनठ बनाई। तिह उस्तित कछु कही नि जाई॥
ब्रह्मा शिव दर्सन को आए। दर्सन कर उस्तित उचिराए॥
हे प्रभ हमि दधि के तटि गए। तहा जाइ करि ठाढे भए॥
तब हमि करी बिनती त्रिभवनराया। तब तुम गगनि सौ वचनु सुणाया
मैं आवौ दसरथ ग्रहि माही। दूष मिटावौ तुमरो ताही॥
तब हमि लीने हृदे सम्हारा। हे कौलापति अपर अपारा॥
क्या जानौ क्या नाही होई। तब हमि बिस्म भए अधिकोई॥
तू भक्तन को सदा सहाई। तुमरी उस्तिति तुम बनि आई॥
तुमरी उस्तित कहु को जाने। साईदास सभ सन्त वषाने॥

जहा जहा संतनि भीर होई। तहां तहां प्रभ जी तुम पोई॥
तुझि बिनु सतन को सुष देवे। तुझि बिनु को जनु क्रिपा करेवै॥
तुमरी उस्तित कहा बषाने। तुमिरी उस्तित हमि नही जाने॥
तू अविनासी नासु न तेरा। अकाल मूल सूक्ष्म अधिकेरा।
तीन लोक महि ताह प्रकासा। जीय जंत सभ तेरी आसा।
तेरो अंतु न पावै कोई जो तुझि भावै सोई होई।

जन को तूं सुख देवन हारा। सकल लोक महि तुही उजारा॥
घटि घटि जोत हर तोह समाई। तुमरी उस्तित कही नि जाई॥
कहा कहो उस्तित मैं तेरी। रसना थोरी है प्रभ मोरी॥
सदा सदा तू रापणि हारा। आपे एकु आपे विस्तारा॥
जीइ जत्र सभ तुझहि बनाए। तुमरि गत को को हर पाए॥
सदा सदा हम सर्न तिहारी। तूं दाता हमि दीन भिषारी॥
निर्भो निरंकार पूर्न भगवाना। घटि घटि की बिर्था तुम जाना॥
रूप रेष कछु बनि न साको। मै फिरि उस्तित कैसे भापो॥
मोहि पै उस्तित कही नि जाइ। सांईदास प्रभ सकल समाई॥२

ब्रह्म शिव दर्सनु करि आए। अपनो अपने ग्रहि जाइ ठहिराए॥
कौकेही सुमित्रा को गर्भु होया। दसरथ ससा मन ते षोया॥
जब ते भए सपूर्ण भासा। कौलापति हरि जग्त को आसा॥
चैत्र स्वेत नौमी तिथि आई। तिह दिन जन्मु लीयो रघुराई॥
जन्म लीयौ दसरथ के नंदनि। तीन लोक ठाकुर मकरदनि॥
भयो उजीआरा तिमरविनासा। दसरथ की पूर्न भई आसा॥
निर्प्यो सुखु अनद बहु होया। दसरथ ससा मनि तै षोया॥
ज्यो दस दिन भए वितीता। नामु कर्न दसरथ तिहि कीता॥
वशिष्ट प्रोहतु लीयो बुलाई। भूपति तिह सभे लियो सदाई॥
हिर्पमान भोजनु तिहि दीना। चर्न पषार चर्णाम्रतु लीना॥
रामचद्रि जी नामु रषायो। दसरथ अग अग हिर्षायो॥
गऊ अधिक विपो की दीनी। विपो ले स्वस्ति मुष कीनी॥
बहुरो कौकेही गर्भु जायो। तिहि गर्भ ते सुत वाहिर आयो॥
ताको नामु भरत तिहि राषा। वशिष्ट प्रोहति ने जो आषा॥
बहुरो सुमित्रा ने जाए। दो सुत तिहि गर्भ बाहरि आए॥
दसरथ तिन्ह को नामु रपाया। लक्ष्मणु और शत्रघनु ठहिराया॥
बडे भए मुष दसन निकारे। दसरथ कौ अति भए प्यारे॥
रुढति फिर्त षेलति ग्रहि माही। अत अनदु सोक कछु नाही॥
बहुरो पग सो मग महि चालहि। अधिकसोभति जो गडिमुडि हालहि
धनष लीए कर षेलन जाही। धर नीशाना बाण चलाही॥

धन्षि विद्या उनि ने सिष लीनी। धन्ष विद्या वहु मन महि कीनी ।।
श्री रघुपति सुदर अधिकाई। सांईदास दर्सन वल जाई ।।२

महावली तिहि वलु अधिकारा। जिह वल कछु न पारावारा ।।
धरि नीशाना वाण चलावहि। नितापर्त इहि वात कमावहि ।।
दसरथु देष तिन को हिर्षाए। अंग अग महि नाह समाए ।।
चतुर सुत दसरथ गृहि होए। दसरथ सकले ससे षोए ।।
तिन को देष अधिक सुख पाए। ले तिन गोदी माह वहाए ।।
रोम रोम सीतलु तिह होवै। शीत तप्त हृदे ते षोवै ।।
जैसे भौर पुहप निषहि। अति अनंद होवत मन माहे ।।
जैसे मृगु वनु हरिआ देषै। अति अनदु व्यापति त्रिण पेषै ।।
जैसे पक्षी फलु द्रिग धारे। हिर्षमान होवत तत्कारे ।।
जैसे वृक्ष देन जलधारा। हर्यो होत सग ले परिवारा ।।
तैसे नृपु दसरथ हिर्षाए। सांईदास प्रभ दर्स दिषाए ।।८

रावण दैत्य महा अधिकारा। ताहि भुजा वलु है वहु भारा ।।
जो विच जज्ञ तिन्ह को दुःख दीना। अति अभिमान हृदे महि कीना ।।
विपो कौ कह्यो हमै कछु देवौ। मोह आन मान तुम लेवौ ।।
तव विपो कह्यो कहु क्या देवहु। तोह आन मान करि लेवहु ।।
रावण कह्यो जो कछु तुम पाई। सोई देवौ तुम हमि ताई ।।
विपो तन ते रक्ति निकारी। कुभ लीयो तिन्हो तिसि महि डारी ।।
कह्यो लेहु नृप इहु हम माही। अवर कछु हमिरे पहि नाही ।।
रावण कुभ लीयो ग्रह आयो। जोतकी पडित तव ही वुलायो ।।
तामो कुंभ नृप आण दिषारा। हमि को इसि का देहु वीचारा ।।
जोतकी निर्ष करि कह्यो वीचारी। हे नृप इनि का लेह वीचारी ।।
इसी रक्त ते कंन्या होवै। सांईदास रावण जीउ षोवै ।।

जव रावण इहि विधि सुण लीई। चिता अधिक हृदे महि कीई ।।
कुभ रक्त सौ दधि महि डारा। तहा निरंकार रचिना इह धारा ।।
एक मीन कुभु उदर महि कीआ। रक्त समेत उदर महि लीआ ।।
केतक दिन उदरि महि रह्या। ताहि भारु मीन मन सह्या ।।

वाही मीन फधकि फहाई। जलु ततिङो वाहिरि वहु आई।
मीन अधिक वपु ताह खहेरा। वधकु निर्ष भयो विस्मेरा।
जन्क विदेही तिह कछु दीना। वाहै मीन जनक ने लीना।
ताह मीन को उदिर विडारा। तिस महि इकु कुंभ निहारा।
जव नृप द्रिष्ट कुभ महि कीई। कंन्या सुदर द्रिग देपि लीई।
जनकि तवहि पडित बुलाए। कुभु लीयो ले तिसहि दिपाए।
हे प्रभ मोको उत्तर देवहु। येह अचर्ज देषि द्रिग लेवहु।
तव शुभ पडित उत्तर दीना। जन्क विदेही सुण करि लीना।
एहि कन्या जो पर्गटि होई। रावण को लीउ एहि पोई।
रावण मारन को इह आई। सभ पडित इह वात सुनाई।
जव पंडित इहि वात उचारी। सांईदास तव जन्क वीचारी।

तव कह्यो जन्क सुरण हो प्रभ स्वामी। तुम सभ विर्था[1] अ तरजामी।
इसि की उत्पति कहा ते होई। सभ विर्था सुणावो मोही।
तव पडित ने बचन उचारा। सुरण हो नृप तुमि वात हमारा।
रावरण दैत्यु महा बलिकारी। तांको वलु भुज है अति भारी।
तिसि ब्राह्मरण को वहु दु.ख दीनो। सभ ब्राह्मण अपने वस कीनो।
तिन को कह्यो हमि कौ कछु देवौ। मोहि आन-मान करि लेवौ।
तव उनि कह्यो कहा हमि देवहि। तोह आन मान करि लेवहि।
तव रावरण कह्या कछु तुम देवहु। मेरो कह्यो मान तुमि लेवहु।
तव उन्हो तन के रक्त निकारी। कुंभ लीयो ले तिसि महि डारी।
रावरण कुभ लीयो ग्रह आया। जोतकी पडित तिसे बुलाया।
ताह कह्यो सुरण हो मेरे भाई। इसि की विधि मोह देहु बताई।
पंडित निर्ष रावरण सो आषा। तोह कालु है इहि विधि भाषा।
तव रावरण भै चक्रित हों रह्या। ताकी गति कछु जाइ नि कह्या।
कुभ रक्त सों दधि महि डारा। दधि महि गोविद रचना धारा।।
सो सभ वात मैं तोह वीचारो। साईदास सभ संसा टारो।।

एक मीन निकल करि लीआ। कुंभ रक्ति सों उदर महिकीआ।
केतकि दिन तिहि उदर महि रह्या। कुंभ को भारु मीन मन सह्या।

१. यहां विर्था शब्द व्यथा के लिए आया है,

वाही मीन फंधकि ने फाही। सोई मीन इहि हम पै आई॥
तिसि रक्त से कन्या होई। हे नृप और नाह इहु कोई॥
जन्कि पडित सभ विदआ कीने। कनक गऊ कछु तिन कछु दीने॥
कन्या पडि राषी गृह माही। दुहिता जान करि ताह पलाही॥
तव ओझै[1] सीता नामु तिह राषा। और जान्की मुख ते भाषा॥
दस्न कढे होइ अधिकायन। अपुने कर कर भोजन षायनी॥
अधिक भई पग चलिरा लागी। वाल अवस्ता उनि ने त्यागी॥
सुदर रूपु क्या रूप वषाना। ताह रूप उस्तित क्या जाना॥
समी अरु भानु देषत छपि जाई। देषि निसा कहि मन सुकचाई॥
फिर्त फिर्त सषी सग लीए। भरि जोवरण चाहति रस कीए॥
अ वर अधिक जो अंग उठावै। ताकी महिमा कही नि जावै॥
अति सरूप सुदर अधिकाहनि। साईदास तिहि वल वल जायनि॥

शिव को धनुष दरि आगे परिआ। जन्कु ताह पूजा नित करिआ॥
महा अधिक जोधे जो आवहि। तौ उसि धन्षि कौ ठौर उठावहि॥
चोका देह ठवर तहा राषहि। जन्कु ताह पूजा चितु रापहि॥
निता पर्त एही उसि कामा। जन्क विदेही नृपु तिह नामा॥
जान्की द्वादश वर्ष की होई। तिहि समसर औरु रूप न कोई॥
सखिआ ले सग वाहिर आई। आई धन्ष पाहे ठहिराई॥
सखीअन सों उनि एहि भाषा। गोवरु तुम ल्यावो एहि भाषा॥
धन्ष ठौर चौका मैं देवौ। इसि की सेवा मैं कर लेवौ॥
मेरो कह्या मन महि ठहिरावौ। सांईदास छिनु विलम न लावौ॥

तव सखीआ सीता स्यु भाषा। हे जान्की तैंने क्या आषा॥
जो केतक जोधे ईहा आवहि। तौ इसि धन्ष को मसा उठावहि॥
कहु तूं कैसे इसे उठावहि। क्यु करि तूं ईहा चौका पावहि॥
तव सीत कह्यो तुम भई ह्यानी। मोरी विधि तुमि अजहू न जानी॥
मै यकि कर सो इसे उठावो। छिनपल वेग विलम नही लावौ॥
सखीआ कह्यो प्रतीत नि आवै। किति विधि तू इसि धन्षि उठावै

---

१. ओझा < उपाध्याय = पुरोहित।

प्रिथमे तूं इसि लेहु उठाई। तव हमि गोवरु ल्यावहु जाई।
तव श्री जानकी ने इह कीआ। करि सो धन्षि उठाइ करि लीआ।
तब सभ सखीआ भै चक्रिति भई। अति भै चक्रति मन महि हो गई।
दौगी जाइ गोवरु ले आई। जानकी जी पै आइ ठहिराई।
जानकी गोवरु तिहि मैं लीआ। एक करि धन्षि ले चौंका कीआ।
वहुरो धन्पु तहा ही राष्या। जान्की कछु मुष ते ना भाष्या।
धन्पि राष ग्रहि को उठि धाई। चली चली ग्रहि माहे आई।
पाछे जनकु विदेही आयो। चौका पाया तिन निर्षायो।
रह्यो भै चक्रित मनि के माहे। साईदास पूछति सीताहे।

कहो किने इहि चौंका दीआ। एहि कामु कवन ने कीआ।
तिहि सषीआ तव भाप सुणाआ। जान्की ने एहि लेपु कराया।
तव ही नृप ने वचनु उचारा। इहि तौ धन्पु महा वलु भारा।
क्यु करि जानकी धनपु उठाया। ईहा लेपनु कैसे कराया।
तव सषीआ नृप सो इउ भाषा। एक कर धनपु उठाया राषा।
एक कर ईहा लेपनु कीआ। जानकी ने विधि करि के लीआ।
जन्कि विदेही मन महि लीनी। अचर्ज की विधि सीता कीनी।
बहु भार इहु धन्पु उठायो। एक करि सौ ईहा लेपु करायो।
जो इसि धन्प को तोड चुकाई। कन्या एह ताहूं देवहु भाई।
जन्क विदेही ईही हृदेधारा। मन अतरि इह बाति वीचारा।
स्ववर सीता का हो कीना। एहि प्रतज्ञा दृढि करि लीना।
जो इसि धन्पि को दों करि डारे। ताह भुजा बलु हो अधिकारे।
जान्की को ताहूं कौ देवौ। सेवक होइ करि सेव्र करेवौ।
देस देस कों पती पठाई। ताह वीचारु मै सकल सुणाई।
आनि भूपति को लिष्यौ पठायो। जनकविदेही काजु रचायो।
तुम आवो झबि मेरे भाई। साईदास हरि सदा सहाई।

विश्वामित्र ऋषु अधिकाई। भजनु कीयो तिन त्रिभुवन साई।
यज्ञु करै दैत्य जाहि विडारी। ताको कठनि बनी अति भारी।
यज्ञु पवित्र होन ना देही। पापी असुर विरोधु करेही॥
तव विश्वामित्र मन महि इह कीना। कौलापति औतारु है लीना॥

किर्पा करि दशरथ ग्रहि आए। रामचंदि जी नामु रषाए ॥
ताको जाइ ईहा मैं ल्यावौ। पाछे से मैं यग्य रचावौ ॥
असुर आइ जो मोह संतावहि। श्री रामचंदि तिहि मार चुकावहि
विश्वमित्र मन महि इहु धारा। मन माहे उनि सोच वीचारा ॥
चल्यो नग्र अयोध्या आया। दसरथ के ग्रहि आइ ठहिराया ॥
दशिरथ कह्यो क्रिपा प्रभ कीने। किह प्रयोग ईहा पगि दीने ॥
जो आग्या होइ वहुडि ले आवो। वेग विलम मै मूल नि लावौ ॥
तव विश्वामित्र नुप ते इउ भाषा। इसि विधि तुमपहिआया आषा ॥
असुर यज्ञ मोह कर्नि न देही। हमिरो यज्ञ विटार[1] करेही ॥
दोनों सुत अपुणे मोह देवहु। मोह आज्ञा मान करि लेवहु ॥
इहि जाइ यज्ञ सपूर्ण करही। तिहि असुरो सेती इहि लरही ॥
तव दसरथु दोऊ सुत ल्याया। भरत शत्रुघ्नु आएा दिषाया ॥
हे प्रभ इनि कौ तुम ले जावौ। जो भावे सो टहिल करावौ ॥
भला कीआ प्रभ तुम जो आए। साईदास वहुते सुप पाए ॥ ‑

विश्वामित्र ले तिहि उठि धाया। नगर त्याग वाहर वहु आया ॥
अपुने नग्रि कौ उनि पग दीने। त्याग अयोध्या गृह मगु लीने ॥
चलित चलित दो मग परि आयो। तहू ठौर आइ करि ठहिरायो ॥
तव भरत शत्रुघन वचन उचारे। हे पूर्न ऋष कहा वीचारे ॥
आगे को पगु क्यु न धरहो। आगे को काहे ना करहो ॥
हमहि वीचारु इसि का तुम देवहु। हमिरो संचरु हिरि करि लेवहु ॥
विश्वामित्र तिहि प्रतु दीना। इहि कार्ण मैं गवनु न कीना ॥
मोह नग्र दोइ मार्ग जावै। एकि अनद इकु त्रासु दिषावै ॥
जो अनंदि मार्ग हमि जावहि। सप्त दिनसि मग माहे लावहि ॥
तव जाइ नग्रि परापति होवहि। मग की चिंता सभही षोवहि ॥
जो इसि त्रास के मार्ग जावहि। तीन दिवस को जाइ टहिरावहि ॥
अधिक त्रासु है इसि मग माही। जो तुम वलु होइ इसु मार्ग जाही
जो तारिका सो युद्ध करावो। युद्ध करी जो तिहि हिरि आवो ॥
तव हमि इसि मार्ग पगु धरही। अपुने नग्र गवनु हमि करही ॥

---

१ विटार अपवित्र।

भरत शत्रुघन इहि विधि पाई। बिस्म भए कछु कह्यो न जाई।।
बिस्म होइ येह वचनु उचारा। आनद मार्ग चलु प्रान अधारा।।
हमि असुरो सों युद्ध न करही। युद्ध कर्न कौ चितु न धरही।।
बिस्वामित्र हृदे इह आनी। साईदास सो सकल दपानी।।

इनि से कार्ज पूर्न ना होइ। इनि महि सूर्मा नाही कोई।।
तिन कौ सग ले करि फिरि आया। आइ अयोध्या महि ठहिराया।।
कहियो दसरथ को सुत लेवो। रामचद्र लक्ष्मण हमि देवो।।
इनि से हमिरो कामु न होइ। इनि मनि त्रासु उठित अधिकोई
इनि को तुम अपुने गृहि रापो। जो जानो सो इनि संग भापो।।
रामचंद्रि लक्ष्मण को देवो। मोह कार्य पूर्ण करि लेवो।।
तव दशरथ कह्यो इनहि न देवो। एहि वाति मै नाह करेवो।।
तव ऋषि कह्यो जु लेहु सराधा। अपुने सुप मांगो तुम आपा।।
तव दशरथु भै चकित हो रह्या। हे ऋषि जी तैंने क्या कह्या।।
कोन पापु तेरा मै कीआ। जो तैंने चित्त धारि लीआ।।
कित कारण श्रापु देवो मोही। कवन बात मन लीनो तोही।।
सुण हो दशरथ मैं तुंह आषा। एहि वाति मै तुझ सों भाषा।।
देहो राम लक्ष्मण ले जावा। नाहि त तुम कों श्रापु लगावा।।
रामचंद्र लक्ष्मण कौ देवौ। साईदास यहि काम करेवौ।।

दसरथ मन महि लीडो बीचारी। अवि मोह आइ बनी अति भारी।।
देवो राम लक्ष्मण दुःख पावो। जो न देवो तौ श्रापु उरिझावो।।

एह महा ऋषु भजनु कमाई हे प्रभु श्रापु न देवो।
सुत को लेवौ जो चाहो सो जाइ करेवौ।।

बिस्वामित्र तव क्या कीया। रामचद्र लक्ष्मण को लीआ।।
अपुने नग्र कौ तिस पग दीने। त्याग अयोध्या ऋष गवनु कीने।।
चल्यो चल्यो दो मग परि आयो। आइ दुहू मग परि ठहिरायो।।
श्री रामचंद्रि जी वचनु उचारा। सुण हो प्रभ जी वात हमारा।।
ऐह दो मार्ग कैसे आए। इसि की विर्थां[1] देहु वताए।।

---

१ विर्था शब्द का अर्थ सम्भवत कथा है

इहि मार्गु कहा इहु कहा जाई। इहि कैसो इहि कैसो भाई॥
तव ऋषि सुण ताको प्रतु दीना। श्री रघुपति मनि महि धरि लीना॥
त्रासु मार्गु इह है रघुराई। दूसरो अनद को मेरे भाई॥
रघुपति कह्यो त्रासु क्या कहीयै। हे प्रभ विर्था मोह वतय्यै॥
वहुरो ऋषि ने आप सुणाया। हे प्रभ पूर्न रघुपति राया॥
दोनो मग मम देस को जाही। तिन की विर्था सभहू वताई॥
जो हमि त्रास मार्ग पग धारहि। तीनदिनसि हमि पथु निहारहि॥
जो अनद के मग महि जाही। सप्त दिवसि लागै हमि ताही॥
तव रघुपति फिरि वचनु सुनाया। हे ऋप त्रासु नामु वताया॥
कवन त्रासु इसि मार्ग माही। इहि सचरु उपज्यो मन माही॥
क्रिपा करो करि मोह वतावो। वेग विलम तुम मूल नि लावो॥
तोह क्रिपा करि सचरु भागे। सचरु त्याग मन महि सुख लागे॥
क्रिपा करि करि मोह वतावो। साईदास तुम विलम न लावो॥

विश्वामित्र ताह सुनायो। वेग विलम तिन मूल न लायो॥
तारका रापसी युद्ध को आवै। हमि तुम वहुता दुःख दिपावै॥
सूक्ष्म वाति तीन दिन करी। इसि महि त्रासु प्रभ है अधिकारी॥
जो तुम आज्ञा होइ सु करहों। तिस मगि माहे मै पगु धरिहो॥
सुण रघुपति इहि वचनु उचारा। त्रास मार्ग चलि हो ततकारा॥
जो हमि त्रासु करहि मन माही। इसि कार्ज कैसे सिद्ध कराही॥
हे प्रभ हमि इहि त्रासु दिषावै। इहि सचरु क्या मन महि ल्यावै॥
चलहो निकटि मार्ग हमि जावहि। तारका सों वहु युद्ध मचावहि॥
इहि कार्ण मन कीयो विस्वासा। कहा भयो मन माहे त्रासा॥
चल हो प्रभ इस ही मग माही। भजों राम त्रासु कछु नाही॥
तारिका राक्षसी कहा बलु होई। हरि स्मसर कहा होवै कोई॥
हे प्रभ चलिहो इसि मग माही। साईदास दुःख लागे नाही॥

तव ऋषि ने इहि मन महि धारा। मनि माहे अति सोच वीचारा॥
इहि वाल्कु मोह कार्जु करिही। असुर अधिक को एही हिरही॥
त्रास के मग माहे पगु दीना। तिहि कछु त्रासु मन महि कीना॥
ऋषु आगे रघु पाछे जाही तिहि को भौ उपिजै कछु नाही।

जब केतकि मग ताई गए। कछु उनि त्रासु मन महि लए ।।
जब इनि पग आगे कौ धारे। महा अधिक उठिडो गटिकारे ।।
तारिका प्रगटि भई मग माही। तब गटिकारु भयो अधिकाही ।।
रघिपति वाण गह्यो कर माहे। ताह बाणु पाली पवे नाहे ।।
बाण गह्यो राकसी कौ मारा। श्री रघुपति ताकों प्रहारा ।।
निसे मार आगे पगु दीना। श्री रघुपति मनिहि चित कीना।
बनिता गोत्तम की मग माहे। सिला परी बहु मग संभाहे ।।
ताकौ क्रितार्थ कर लेवौ। साँईदास तिह सब्द पुरेवौ।

सकल ब्रितांतु मै ताहि सुणावौ। सकल बात मै तुभे बतावो।
किहि प्रयोग श्रापु तिह पायो। गुर किर्पा ते सकल सुणायो।
गोत्तम भार्जा नामु अहल्या। तिहि मत अग अधक परिफुलिअ
एक नृप के कंन्या वहि होई। महा सुदर तिह रूप अधिकाई।
तिसि नृप ने पर्तज्ञा कीनी। इहि पर्तज्ञा मन महि लीनी।
तीन घडी महि इह करि लेई। बसुधा सकल प्रदक्षणा देई ।।
इहि कन्या मै तांकौ देवौ। चर्न लाग तिह सेव करेवौ।
कन्या रूप महा अधिकाई। तिह उस्तित कछु वर्नि न जाई।
सुरपतु माइलु तिह ऊपरि आही। तिसि देपनि को मनु लोचाही।
इहि विधि जब सुरपति सुण पाई। पौन रूपु तब लीयो बुलाई।
चला चला नृप पाहे आया। नृप सौ सुरपति भाष सुणाया।
सकल प्रिथवी प्रदक्षिणा देवौ। साईदास एहि कामु करेवौ ।।

पौन रूप परि सुरपति चढ़िआ। प्रदक्षिणा प्रिथवी की चितु धरिअ
गौत्तम तबै बेदु करि लीना। ताह माह सोधनु उनि कीना।
वेद सें इहि विधि निकसाई। सो भी नर की भाष सुणाई।
जो शाल ग्राम प्रदक्षिणा देवै। प्रिथवी परिदक्षिणा कर लेवै।
काढि पत्रु नृप के करि दीना। तब नृप पत्रु पढि के लीना।
इहि निकस्यो पत्रि के माही। दूसरी बात अवरु कोऊ नाही।
जिन शाल ग्राम प्रदक्षिणा कीनी। तिन सकल प्रथ्वी प्रदक्षिणा कीर्न
गोत्तम शाल ग्राम निकारा। करी प्रदक्षिणा तिस ततकारा।
नृप कया काजु करि दीनी गोत्तम ऋषि काजु करि लीनी

कीऊो काजु गृहि महि ले आया। सुरपति नृप आइ आपि सुणाया।।
मै पृथ्वी प्रदक्षिणा दीई। सांईदास सुरपति इह कीई।

तव नृप इद्रि सौ वचन सुनाए। सुण सुरपति तुस वलि अधिकाए।
कन्या गौत्तम ऋषि ने लीनी। तान काल परिदक्षिणा दीनी।
तव सुरपति भै चक्रित हो रह्या। मुप ते वचनु उचारा कह्या।
किउ करि उनि पर्दक्षिणा दीनी। किउ करि कन्या उनि ने लोनी।
तव नृप ने मुख वचनु उचारा। सुण हो सुरपति बात हमारा।
वेदु कढ्यो तांसों निकसायो। जिनि शाल ग्राम प्रदक्षिणा पाय
तिन प्रथिवी सकल प्रदक्षिणा दीई। जिन शालग्राम प्रदक्षिणा कीई।
तव सुरपति गृह अपने आया। अति विस्माद महि ध्यानु लगाय
केतकि दिन ऐसे ही रह्या। तांहि व्योग वाका चितु दह्या।
करि वीचार ग्रहि वाहिर आया। गोत्तम के गृह सो हितु लाया।
तिस कन्या भी हेतु वढायो। सुरपति सेती तनु मनु लायो।
सुरपति कह्यो कहो कवि आई। जो हमि तुम दोऊ कामु कमावौ।
तव कंन्या तिहि दीयो वताई। जिहि समे गोत्तमु वाहिर जाई।
अवि तुम अपने गृहि महि जावो। सांईदास मन नाह डुलावो।

सुरपति कह्यो मै क्या जानो। कित विधि मै वहु समा पछानो।
तू मौ को येहु देहु वताई। किह समे गौत्तमु वाहिर जाई।
तिह ना चितु जो ताह वतावै। प्रीत वढ़ी फुन रह्यो न जावै।
तव ही अहल्या वचन उचारा। सुरपति को तव दीयो वीचारा।
जव पिछलो पहिर रात को रहे। तव गोत्तम ऋषु उठि करि वहे।
जव चतुर घटी निस औरु विहावै। तव सध्या कर्ने को जावै।
सुरपति वाति हृदे ठहिराई। ग्रहि अपने माहि बैठो आई।
दिनु वीत्या होई जब रैना। उडिगण प्रगटि भए प्रगटेना।
सुरपतु कहे कवि रैनि विहावै। गोत्तमु संध्या को उठि धावै।।
मै तहा जाइ करि कामु कमावो। सांईदास मन इछि पुजावो।।

रजनी घटी समा वहु आया। गोत्तमु ग्रहि तजि के उठि धाया।।
जैसे चोरु हिति परि धन को साधू हेति जैसे मन कौ।

जैसे माली पुहिप हिराए। जैसे फधकु मिर्गु फहाए।
जैसे तपसी वन कौ धावै। जैसे मिर्गा नाद उर्भाए।
जैसे पावक अग्नि प्यासा। तैसे सुरपतु काम सुवासा।
विधि को सग लेकरि उठि धायो। तति क्षिए ऋषि के द्वारे आयो।
विधि ने भूम दिस को बपु लीना। अपुने मुप ते भाप कीना।
रैन गई जागो रे प्रानी। भजु ले हो तुम सारग पानी।
गोत्तमु ऋषि जब ते सुण पायो। सुरतवानि भी चित महि आयो।
समा भयो संध्या कौ जावौ। हरि को जाइ करि भजनु कमावै
गोत्तमि पग बाहिर ग्रहि दीने। सुरपति पग अतरि तिहि कीनै।
जाइ प्रजक ताहि परि परिआ। चाहति है तासों संगु करिआ।
गोत्तम के हृदे महि कछु आया। संध्या त्याग करे उठि धाया।
रैन अधिक है मेरे भाई। मोह दगा दीनो किसे आई।
धौल्ह आई विधि के सरि मारी। ताहि लील लागो तत कारी।
इनि दोनो ने लाक चढाए। गोतम आइ कपाट हिलाए॥
मुप ते ऋषि ने वचन उचारा। सुरपति सुण लीने ततकारा।
अहल्या सौ कह्यो मोह छपावो। जहा जानौ तहां मोह बैठावो।
ऋषि आयो उपज्यो मन त्रासा। साईदास बुरी काम प्यासा।

तब अहल्या कह्यो ठौर नि कोई। जहा दुराइ रषौ मै तोही।
इसी प्रजग तले छपि रहहो। मुखो न बोलो स्वासु घटि वहुहो।
प्रजक तले सुरपति को डारा। पाछे आइ कपाटु उघारा।
गोत्तम ऋषु गृहि महि आयो। आइ प्रजक ऊपरि ठहिरावो।
वनिता को ऋषि पूछन कीना। कौन स्यु वचनु उचारे लीना।
एह वाति मोह देहु बताई। जो अवि मै तुझै आपि सुणाई।
ता पै मिथ्या कह्यो न जाई। गोत्तम ऋषु पूर्न ब्रह्म ताई।
तवी अहल्या वचनु उचारा। हे प्रभ पूर्न प्राण अधारा।
हमि मजार सों वात चलाई। हे ऋषि पूर्न मोह सहाई।
गोत्तम ऋषु विधि जानणि हारा। मुख ते सुणि करि वचनु उचारा।
हे पातक पातक अधिकाई। प्रगटि होहु क्या देहि छपाई।
हे पातक मोह आगै आवौ। साईदास किउ देह छपावौ॥

तब सुरपति आगे चलि आया। गोत्तम ऋषि पै आइ ठहिराया।।
गोत्तम ऋषि सुरपति सों भाषा। कौनु कर्मु कीयो पातक आषा।।
भग भोग कार्ण ईहा आया। सहस्र भग मै तुझै लगाया।।
एही श्रापु मै तुझ को दीआ। जो तै औगुण मेरा कीआ।।
तब सुरपति कह्यो कबि मोह होवे। इहि सहस्र भग कबि मोह षोवे।।
ऋषु अगस्तु तोह स्रापु निवारे। हरि किर्पा बहु तुमहि उबारे।।
तत्काल सहस्र भग फिरि होई। सुरपति मन माहे बहु रोए।।
जैसा कीयो तैसा मोह पायो। औगुण कीयो ओगुण हरि लायो।।
सुरपति ग्रहि तजि बाहिर गया। जाइ स्वेत सिद्ध बास लिया।।
जैसा करै तैसा कोई पावै। बिनु कीए कछु निकटि न आवै।।
बेद पुरान सभ भाष सुणाही। रे जन लेहु समझि मन माही।।
कामु त्याग होवो निहकामा। सांईदास पूर्न प्रभ रामा।।४

अमर सकल प्रभ पाहि पुकारे। हे प्रभ तीन भवन को धारे।।
सुगुरु कहू भोरि उठि धायो। दो दिन बीते पुर न आयो।।
पुर का काजु प्रभ कौनु कराए। इहि प्रयोग पर्जा दुःख पाए।।
तोहि बिनु बिर्था कौनु मिटावै। हमिरि द्रिष्ट औरु नही पावै।।
प्रभ द्वादस ऋषि लीए बुलाए। ताहि कह्यो सुणि हो मेरे भाई।।
मघिवा गुप्त भयो क्या कीजै। तिह पुर को राजु कवन को दीजै।।
ऐसो द्रिष्ट औरु नही आवै। मघिवापुर को राजु करावै।।
तिह बिनु सुर सकले उकिलाने। पर्जा धीर्जु नाही आने।।
गर्ग पराशुर और जदकना। अगस्त धूमि ऋषि गोबिद गणा।।
गोत्तमु नार्द और बस्वासुर। पीलादिपरु जागे बाछहि निसबास
कीलादि तुष्ट द्वादस माहे। नाम संपूर्ण भये इताहे।।
आज्ञा ले हरि की उठि धाए। मघिवा जोहनि को चितु लाए।।
प्रिथमि बना महि बहु आए। पात पात तरिबरि निर्षाए।।
ताते मघिवा प्रगटि नि होया। तिह बिस्वास हृदे महि होया।।
मतु त्रिण मध्य मघिवा होइ भाई। हमिह न देष्या सुर्ति भुलाई।।
त्रिण त्रिण करि कहा सोधहि भाई। हमि पहि इहि बिधि करिनि जाई
फूकि नारि बनि सकल जलाए। भस्मि भए बन बहु अधिकाए।।

मघिवा प्रगटि भयो ना वा ते। अति संचरु उपज्यो मन तांते ॥
द्वादस मुनि मन महि बिस्माए। सांईदास हृदे सचरु आए ॥

गोमती कहूं कोई कहूं धायो। मघिवा जोहनि चितु लुभायो ॥
अगस्त ऋषीवर ने क्या कीआ। ततिक्षण सेत के निकटि पगु दीआ।
सेत को ततिक्षण लीयो अचाई। मघिवा प्रगटि भयो तब आई ॥
निपि अगस्ति को मनु सुकचायो। सीस तले कीओ द्रिग ना लायो ॥
अमरो प्रश्न कीयो रिषि पाही। वाल्मीक तुम त्रिभुवन साई ॥
अगस्त सेतु काहे अचि लीना। इहि कारण काहे तिह कीना ॥
हरि किर्पा मह एहु बतावो। हमिरे मन का भर्मु हिरावो ॥
ऋषि कह्यो भलो प्रश्न कियो भाई। भली बात तुमरे मन आई ॥
अगस्त पुरातम देह चितारा। तिहि प्रयोग अचियो दधु सारा ॥
अमरो फिरि कह्यो रिपि ताही। कौनु वैरु पूर्व चित आई ॥
सकल बिनतु प्रभ हमिरे सुनावो। किर्पा धार हृदे इहि ल्यावो ॥
वाल्मीक तिन कौ प्रतु दीना। मुख ते बचनु तिने इहि कीना ॥
श्रवण धारि सुण हो मेरे भाई। पूर्व जन्म की कथा हीयो बताई ॥
टेट्हरी षग नाम कहावै। सोई अगस्त ऋपु वेदु बतावै ॥
ताके सुत दधि खडे कढाई। षग के मन माहे बुरी आई ॥
हृदे क्रोधु कीनो अधिकाई। चाहित मन करि सिंध सुकाई ॥
चुंच भरे जलु बाहिर डारे। सिंध सुकावन को चितु धारे ॥
ऐसे बचन नार्द ऋपि आए। नार्द षग सौ बखिन उचिराए ॥
हे टेट्हरी कहा करावै। जलु भरि चुंच बाहिर क्यु पावे ॥
कहा आई तुमरे मन माही। मोह कहो तू कहा कराही ॥
तब षग ने ऋषि को प्रतु दीना। हे नार्द मै इहि मनि लीना ॥
चाहित हौ मैं सिंध्य सुकावौ। पलु छिन रचकि मूल नि लावो ॥
नार्द फिर कह्यो षग नाई। किहि प्रयोग तुम मनि इहि आई ॥
टेट्हरी तिह आप सुणाई। सुण हो नार्द ऋपि अधिकाई ॥
मम सुत सिंध खडे दुराई। तिह प्रयोग मम मनि इहि आई ॥
नार्द फिरि तांको सुनिवायो। हे षग कौन जाति चितु लायो ॥
तुमि से कहा सुकाओ जाई। सिंध प्रवाह चले अधिकाई ॥

जब षग ने इहि विधि सुण पाई। नार्द सो फिरि कह्यो सुणाई ।।
कैसे वैरु लेवौ सुत केरा। करि किर्पा तू सुणु प्रभ मेरा ।।
जित विधि वैरु सुत कौ मै पाई। सांई कहो मै तिसे कराई ।।
सुत वियोग मै वहु दुःख पायो। मो सो दधि इहि वैर कमायो ।।
नार्द षग ताई प्रतु दीना। तासे ऐसो वचनु मुख कीना ।।
षग वपु तजि मानस वपु पायो। राम भजनि तव अधिक करावौ ।।
जो चाहो तुम से तव होई। येहि वानि उौरु नाही कोई ।।
नार्द ऋषि षग सो समिझायो। साईदास विधि प्रगटि सुनायो ।।

खग ऋषि वचि मन मांह ठहिरायो। राम भक्ति सो वहु हितु लायो
खग की देह तजी ततकारा। मानस वपु पायो संसारा ।।
उलिट गर्भ से जन्म आइ पायो। अगस्त मुनि तिहि नामु सुलायो ।।
अगस्तु नाम कर्न तिह कीआ। वहु विपो को भोजनु दीआ ।।
अगस्त नामु तांको रपिवायो। पूत हेत करि वडो करायो ।।
भयो अधिक हरि ध्यानु लगायो। पूर्व जन्म ब्रिथा चित आयो ।।
इहि विधि सिंध को अचिवायो। मघिवा कार्य सो चितु लायो ।।
जव देवो ने इहि प्रतु पाया। मन को सचरु सकल हिराया ।।
सत्य सत्य करि के हृदे आना। निश्चय एही विधि कर जाना ।।
कह्यो अगस्ति मघिवा के ताई। रे मति मूढि कहा मुकचाई ।।
तै निहार देप मोह उोरा। हृदे माहि धरि वचु मोरा ।।
मघिवा ने तव कह्यो पुकारे। हे ऋषि पूर्न प्रान अधारे ।।
सहस्र दुःख मोको आइ लागे। कैसे देपौ जाइ न त्यागे ।।
तव अगस्त कह्यो सुणि हों भाई। मोह दर्सनु करहो चितु लाई ।।
उौर दुःख सभ तुमि मिटि जाई। पाच दुःख पाछे रहे आई ।।
पाच दुःख तुमि रामु निवारै। इहि करुणा प्रभ तुमि परि धारै ।।
अमिरो प्रश्नु वहुड फिरि कीना। हे ऋषि हमि मन सचरु लीना ।।
पाच दुःख तिह काह नि टारे अगस्त काह विधि मन धारे

इहि प्रयोग ऋषु दु:ख ना टारे। इहि विर्था इसु मन महि धारे।।
जब देवौ ने इह प्रतु पायो। मन को सचरु सकल हिरयो।।
निश्चय एहि विधि मन महि धारी। साईदास मुष सिंधु मुरारी।।४

ऋपि अगस्ति कह्यो सुरपति ताई। रे सुरपति किउ मन सुकचाई।।
त निहारु देपि मोह डोरा। मन महि सचरु आण नि भोरा।।
सुरपति ऋप की ओरि तकायो। पांच दु:ख विनु सकल हिरायो।।
ऋपु मघिवा को लेकर धायो। तब मघवे तिह वचु उचिरायो।।
पाच दु:ख रहे हमिरे ताई। कैसे पुर जाइ राजु कराई।।
दु:ख सहित पुर जाए न पावौ। ताते भला ईहा ठहिरावौ।।
मै देपौ आनि राजु करावै। वहु भी मो पहि सह्यो न जावे।।
ऋषि अगस्ति ताकौ प्रतु दीना। है मघिवा तै क्या मनि लीना।।
तोहि पुर राज शक्त को करई। जो तुमरे पुर महि पगु धरई।।
जब लगि प्रान हमिरे घटि मांही। तोहि पुर मै पग औरु न जाही।।
ऋपु वच करि सुरपति ले आयो। पहिले अहि महि आए ठहिरायो।।
जब लगि दु:ख निवर्त्तु न होई। कैसे जावै मघिवापुर कोई।।
अमरो फिरि कह्यो प्रभताई। हे कौलापति त्रिभवन सांई।।
अधकि भयो सुरपतु ना आयो। सकल सुरो ने वहु दु:ख पायो।।
पुर को राजु प्रभ कौनु कराए। इहि प्रयोग अमरो दु:ख पाए।।
वार वार प्रभ कहे सुनाई। साईदास तुम सदा सहाई।।

प्रभ जब अमरो सों सुण पायो। तब ही ऐसे वचनु चरायो।।
नघि राजे कौ जाइ सुणावौ। हमिरो वचु मन महि ठहिरावो।।
मघिवा पुर को राज करावै। सकल सुरो को सुख उपजावै।।
अमरि सुनति प्रभु वचु उठि धाए। तत्क्षिण नघि राजे पहि आए।।
प्रभ वो वचु तिह भाप सुणायो। नघि राजे सुण करि उचिरायो।।
एक सहस्र घटि यज्ञ कीना। एहि प्रतज्ञा मै मनि लीना।।
लखु यज्ञु जब पूर्ण करो भाई। पाछे मघिवा पुरि चलो धाई।।
एक सहस्र यज्ञ अवरु करावौ। तब पाछे मघिवा पुर जावौ।।
अवि तो हमिरो वलु न वसांई। मघिवापुर जावों मेरे भाई।।
एहि बेनती मोहि जाइ सुणावो दीन वचन कहि करि समिझावो

बहुरी सुरि आए प्रभ पाहे। नृप नघि कह्यो सो कहत सुनाहे॥
लखु यज्ञ मै प्रतज्ञा धारी। मन अपुने मैं लीओ वीचारी॥
रह्यो सहस्र लख यज्ञ के माही। तुम किर्पा पूर्ण होइ आही॥
जब पूर्ण होइ मघिवापुर आवो। तोहि आज्ञा प्रभ राजु करावो॥
जोआज्ञा तुमिरी होइ मो करिहौ। ले मस्तिक ऊपरि प्रभ धरहो॥
तब प्रभ अमिरो कौ प्रतु दीना। नगि राजे ने इहु बचु कीना॥
नृप नघि को तुमि जाइ सुनावौ। मोह वचनु तासौ समिझावौ॥
द्वादश मनु को भोजनु देवौ। मानो सहस्र यज्ञ पूर्ण करि लेवौ॥
रथि अजीत परि चढि पुर आवौ। मघिवा पुर को राजु करेवौ॥
अमर फेरि फिर नृप पै आए। सभ विथात तिहि आप सुनाए॥
द्वादश मुन को लेहु बुलाई। भोजनु तिहि देवौ चितु लाई॥
सहस्र यज्ञ तुम पूर्ण होई। तुम बाछा फिरि रहे नि कोई॥
चढि अजीत रथि पुर को धावो। मघिवा पुर चलि राजु करावो॥
जब रथि अजीत को सुणआ नामा। भयो भै चक्रिन तजि बिस्रामा॥
रथु अजीत कहा सें ल्यावो। तां परि चढि मघिवापुर जावो॥
अमरो कौ नघि ने प्रतु दीना। हे अमरो तुम क्या बचु कीना॥
रथ अजीत कहो कहा ल्यावो। कौन टौर ऐसो रथु पावो॥
तुमि बहुरो जावहो प्रभ पाही। मम बेनती कर होवे गजाई॥
रथ अजीत प्रभ देहु बताई। ताहि चढो पुर को चलो धाई॥
अमर सुनत इहि प्रतु उठि धाए। सांईदास प्रभ पहि बेग आए॥

नघि नृप यग्य अरभ कीयो भाई। द्वादश सुनि को लीओ बुलाई॥
कह्यो क्रिपा करि भोजनु पावो। मम यज्ञ पूर्ण तुमहि करावो॥
तुम प्रसाद मघिवापुर पावो। तुमि प्रसाद जस हर को गावो॥
हरि आज्ञा मै इहि उचिरायो। तुमि सो ऐसो सब्द सुनायो॥
एकादस मुनि मन महि आनी। जो नघि नृप ने मुख बखानी॥
अगस्त हृदे कीनो वीचारा। मैं मघिवा ग्रहि आए बहारा॥
जो तिह पुर को इहु नृपु होई। मघिवा की फिरि गति ना कोई॥
मै तासौ वचनु कर्के आना। अपुने ग्रहि माहे ठहिराना॥
मै कैसो बचु अपना हारो। क्या मुख ले जगि मांहि निकारो॥

मोको स्रापु इसि देव न होई। जिति विधि श्रापु होवै करो सोई।
जो इमि के ग्रहि भोजनु पावौ। वहुरो स्रापु कैसे इसि लावौ।
हृदे वीचार इहि नृप प्रतु दीना। मन हृदे इही मान करि लीना।
म भोजनु तुमि ग्रहि ना पावौ। इहि विधि मन माहे ठहिरावौ।
ऐसे हमिरे मन महि आई। नृप वहुरो फिरि प्रश्न चलायो।
कवन अवज्ञा हमहि करायो।
मम ग्रहि भोजनु किउ ना पावो। कवन दोसु प्रभ हमहि लगावो।
जब नृप ऐसे बेनती ठानी। अगस्त दीयो प्रतु ब्रह्म ग्यानी।
तुमि को दोसु नाह है काई। हमिरे मन ऐसी ही आई।
जिहि किए आतम सुप पाए। मांईदास जन सोई कराए।

नृप नघि ने नीको यज्ञ कीनो। एकादस मुनि को भोजनु दीना।
अगस्त ताहि ग्रहि कछु न पायो। कैसे निटै विधि वनति वनायो।
अमरौ जाइ प्रभ पाइ सुणाया। जो नघि नृप ने ताहि बताया।
रथु अजीत प्रभ देहु वताई। जासि परि चढि आवौ वेग धाई।
प्रभ इहि अमरो को प्रतु दीना। हे अमरो इहि वचु नृप कीना।
द्वादस मुनि रथि के सग जोरे। ता परि चढि आवो हौरे हौरे।
वही अजीत रथु अवर न काई। सकल व्रितातु प्रभ दीयो वताई।
अमर मुनति इहि नृप पहि आए। प्रभ वच सकले आइ सुणाए
नघि नृप ने तव ही क्या कीआ। द्वादस मुनि ताई सदि लीआ।
करि जोरे तिहि कह्यो सुणाई। इहि आज्ञा प्रभ को मोह आई।
द्वादस मुनि रथ साथ जुडावो। तापरि चढि मघवापुर आवो।
जो आज्ञा तुम होइ सो करहो। तुमरो वचु मस्तक परि धरहो।
एकादश मुनि सुण करि ठहिरावो। भलो भयो प्रभ आज्ञा आयो।
हमि को रथि के सहित जुडावो। अति अनद मघवापुर जावो।
अगस्त मन महि लीओ वीचारी। भली भई अति बात हमारी।
अवि मै स्रापु देवौ इसि ताई। मघवा काजु मन करि पूजाई।
विनु औगण श्रापु दीयो न जाई। सोच लीयो मन विधि ठहराई।
एक प्रतज्ञा इसे करावौं। जो न करे तव श्रापु लगावो।
जब लगि तुम मघिवापुर जावो। तव लगि मुष कछु न उच्चिरावो।

जो उचिरे कछु स्रापु लगावौ। एही प्रतज्ञा ताहि करावो ।।
मनि ठटु बांधि कह्यो नृप ताई। सुणि हो नृप नघि तुम मन माही ।।
प्रभ आज्ञा हमि मन ठहिराई। रथि को जोड लेहु हमि भाई ।।
एक प्रतज्ञा तुमहि करावो। वाही निश्चे मन ठहिरावो ।।
जव लगि पहुचसि तू पुर माही। तव लगि मुखि वचु ना उचिराही ।।
जो वोले मुखों स्रापु लगावौ। एहि प्रतज्ञा तुमहि करावौ ।।
नृप इहि सुण प्रतज्ञा कीनी। साईदास निश्चय मनि लीनी ।।

रथि सौ द्वादश मुनी जुडाए। अति अनंदु मन महि उपजाए ।।
मघिवापुर को चल्यो धाई सुपु। उपज्यो भउ गियो हताई ।।
जव मघवापुर के निकटि आए। वजति वजंत्र अति अधिकाए ।।
नीको पुरु अमरो वणवायो। निपिति द्रिग सुख भयो अधिकायो
नृप नघि सब्द वजत्र सुण पाए। आतुर हौ पुर को चल्यो धाए ।।
तिहि मन महि वहु भयो हुलासा। अधिक भई पुर देषनि प्यासा ।।
पर्तज्ञा तिनि दीई विसारे। मुख ते वचन कह्यो तत्कारे ।।
सर्पि सर्पि चले हो मेरे भाई। वेग माहि देषों पुर जाई ।।
जव नृप ने इहि वचनु उचारा। अगस्त ताहि ले धर्न परि मारा ।।
तव ही स्रापु दीयो नृप ताई। रे पातक सर्पि की योन पाई ।।
हमिरो वचु तैने भग कीआ। तौ मैं स्रापु इही तुम्है दीआ ।।
नृप नघि तव ही कह्यो पुकारा। हे अगस्त ऋषि प्रान अधारा ।।
तुमरो स्रापु अन्यथा न जाई। जो तुम वचनु करो होइ साई ।।
कवि गति होइ हमारी भाई। एह किर्पा कर देहु वताई ।।
तव अगस्त मुष वचन उचारे। नृप नघि कौ न देउो वीचारे ।।
जव पाडो सुत वन महि आवै। कैरव तिह वनवासु दिवावै ।।
युधिष्ठुरु तुम दर्सनु देवै। तुमरो स्रापु वही हरि लेवै ।।
तव तुमरी होवै कल्याना। ऐसे वचन अगस्त वषाना ।।
नृप वसुधरि को देहु वनाया। एक देहि महि आइ करि ठहिराये
वन भीतर वाही दिहि भाई। वसुधर को वपु कीयो अधिकाई ।।
ऋषि को वचु अन्यथा ना जावै। भजनु करै हरि नामु ध्यावै ।।
साधो जन आग्या जो होई। साईदास तुम करहो सोई ।।

अमर गए मिल सभ हरि पाही। मुख ते वचनु उचार सुणाही ॥
नधि को स्रापु अगस्त ने दीना। ताहि स्रापु बसुधर वहु कीना ॥
सुगुरु गुप्ति भयो ना आयो। अमरो ने वहुता दु ख पायो ॥
मघवा पुर को राजु करावै। पर्जा को सो सुष दिवावै ॥
अमर कौ प्रभ ने प्रलु दीनां। नघ नृप वसु धरि को वपु लीना ॥
अगस्त ऋषीश्वर लेहो बुलाई। मोह कह्यो सुणहो मेरे भाई ॥
अमर सुनति इहि ऋषि पैं आए। छिन मात्र तिन मूल नि लाए ॥
ऋषि कौ कह्यो चलो हरि पाही। तुमको हरि जी आप बुलाही ॥
ऋषु तत छिन ताके संग धाया। श्री कौलापति पाहे आया ॥
प्रभ ऋषि सों तब कह्यो सुणाई। सुण हो ऋषि पूर्ण रिषि नाई ॥
नधि को स्रापु देइ वसुधरु कीनो। भली वाति तै मन महि लीना ॥
मघिवा गुप्त भयो कहू ठौरा। ताहि बियोग अमर भए वौरा ॥
मघिवा पुर को राजु कराए। तास प्रयोग सुर उकिलाए ॥
कह्यो अगस्ति सुनो प्रभ मेरे। विनती भाषो आगे तेरो ॥
मघिवा को मै हुण ले आयो। तासि आण ग्रहि महि ठहिरायो ॥
प्रभ कह्या ताको ले आयो। अपुने ग्रहि महि काह वहावो ॥
तब अगस्त फिरि वचन उचारे। हे पूर्न प्रभ प्रान अधारे ॥
पांच दुःख मघवा के ताई। लागे है दूर न जाई ॥
सुकचित मघिवा आवै नाही। दुःख सहित पुर जाण न पाही ॥
ताहि दुःख हिरहां वहु आवै। मघिवा सुर को राजु करावै ॥
प्रभ कह्यो तिह दुःख निवारे। मुख अपने ते कह्यो पुकारे ॥
पाच दुःख पांच को दीए। मघिवा के तनि से दूरि कीए ॥
कह्यो अगस्त पांच को कोई। मोह वताइ देवो प्रभ सोई ॥
एक एक को नामु वतावो। हमिरे मन ते भ्राति चुकावो ॥
प्रभ ऋषि को कह्यो सुण लीजै। और ठौरि कहू चितु न दीजै ॥
एक दुःख दारा को लायो। एक बनासती को उर्भायो ॥
एक अभ ताई मैं दीना। एकु वसतर प्राप्त कीना ॥
एकु वसुधा को दीना भाई। पाचो नाम सुनो मन लाई ॥
ऋषि फिर प्रभु कीयो हरि पाहे। संचरु उपज्यो मोह मनि माहे ॥
दाराको को दुःख लगायो। वनासपती को कौनु उर्भायो ॥

अभि को कौनु दु ख प्रभ लागै। वसत दु·ख जारे सभु भागै।
वसुधा को कौनु उभ्मायो। इहि प्रयोग संचरु मन आयो।
इहु कर्णाकर देहु वताई। मोह मन भ्रांत हिरि लेह हरि र
प्रभ फिरि प्रतु दीनो ऋषताई। सुणहु अगस्त हितु चितु वहु लाई
रितवती दारा कौ कीना। छडदि वनासपति कौ मै दीना।
अभ उपर सिवाल वनायो। धूम वसतर को उपिजायो।
वसुधाको कीना। इहि दु.ख वसुधा कौ दीना।
मघिवा के हरि दु:ख हिराए। इनि पाचो ताई हरि लाए।।
मघिवा कौ आगस्तु ल्यायो। प्रभ के आगे आण षलायो।
मघवा ने डडौत कराई। करि डंडौत पुर कौ चल्यौ धाई।
महा अधिक सुख मघवा पायौ। दु:ख दर्द सभि ही विसारायो।
इहि पाचो जवि दु:ख गिरिसाए। ततक्षिण प्रभ पाहे इहि आए।
हे प्रभ कौण दुख हमि कीना। जो तै हमि ताई इहि दीना।
कवन वेद इहि बात बनाई। विन औगण कीए लागे आई।
प्रभ इहि सुण रह्यो विस्माई। विस्म होइ मुख वचन सुनाई।
तुमरे दु:ख दूर मै करहौ। मनकर ठौर सकल के हिरहौ।
प्रिथमे दारा कौ प्रतु दीना। तोह दु:खि मै तांकौ दीना।
रितवती होवे जवि नारी। नरु आवै परि सेज तुमारी।
तास समै तुमरो संगु करही। तोह दु.ख हरि वाको चढिही।
वहुरो वनासपती प्रतु दीआ। तोहि दु·ख दूर मै कीआ।
यजधर ले लकड़ी जु कटावै। दांतनु लेकरि मुख हि करावै।
तुमरो दु:ख तास को लायो। तुमरो दु ख हमि दूरि करायो।
करि कगोरी तुमरे महि डारे। तोहि दु खु मिट जाइ तत्कारे।
ताको जाइ ग्रसे मेरे भाई। अभ को इहि विधि दीई वताई।
पावक कौ प्रभ कह्यो सुणाई। तुमरो दु:ख भी विनसे भाई।
विनु अहूती दे भोजनु पावै। तोह दु:ख ताको ग्रसावै।
इहि आज्ञा पावक को दीना। पावक ले मस्तिक पर कीनी।

मूल ग्रथ मे इसी प्रकार [रिक्त स्थान छूटा है। प्रसग से भी जाना नही सकता क्या शब्द हो सकता है।

वहुरो वसुधा निकटि बुलाई । ताहि कह्यो प्रभ जी समिझाई ।।
विंदु मथन करि तुम परि डारे । तांकौ दु:ख लागै ततकारै ।।
तोह दु:ख छिन महि मिटि जाई । तासि पुर्ख को ग्रासे आई ।।
ऐसे प्रभ सभ थिर थिर आयो । सभ के मन को भ्राति हिरायो ।।
सुगर निश्चल आसुन कीआ । महा अधिक सुप मन महि लीआ ।।
ताल मृदग वजै अधिकाई । मोहिनीआ मिलि निर्त कराई ।।
सभ अमरो कीनो जैकार । जै जै राम पूर्ण निरकारा ।।
ग्रहि ग्रहि अमरौ भई वधाई । सुरपतु आयो वहु सुषु पाई ।।
धन्य साध जो हर गुण गावहि । धन्य साध जो नाम ध्यावहि ।।
धन्य साध निर्भो पद पाया । धन्य साध जिन्हा हरि गुण गाया ।।
धन्य साध निर्भो पद वासा । धन्य साध जिन्हा हरि की प्यासा ।।
धन्य साध जिन्हा अलष धियाया । धन्य साध पूर्न पद पाया ।।
मघिवा कौ हरि श्रापु मिटायो । सांईदास कौ नामु जपायो ।।

पाछे ऋषि वनता सो भापा । इहि कर्नु काह कीयो श्राषा ।।
तब अहल्या कह्यो क्या मै आर्पौ । कवन दु:ख अवगुण मै भापो ।।
मोने अवगुण कछू न होयो । कामु वीजु तिह सग न वोयो ।।
तब गौतम ऋपि वचनु उचारा । हे वनिता क्या कहे पुकारा ।।
एही श्रापु दीयो तुभि ताई । सिला होइ परु मग मंभाई ।।
तब ऋषि वनिता वचन उचारा । हे प्रभ कवि गति होइ हमारा ।।
तब ऋषि कह्यो राम अवतारा । होवै तुमरो तब निस्तारा ।।
सिला भई ऋपि दीनों स्रापा । इनि ने औगुण कीनो आपा ।।
सोई शिला है रघुराई । अबि इसि औध निकटि प्रभ आई ।।
तब रघुपति मन महि ठहिराई । गुप्त वालि मै प्रगटि सुनाई ।।
इसि कौ मै क्रितार्थ करहों । भक्ति को वचनु हृदे महि धरहों ।।
पग रजि प्रभ जी ताहि लगाई । सुर रूप होइ गगन सिधाई ।।
तिहि समे प्रभ की उस्तित आषी । अनेक रग रस्ना ने भाषी ।।
जो तिहि उस्तित करो वीचारा । एती रस्ना कहा हमारा ।।
तिसे क्रितार्थं करि हरि धाए । चले चले सलिला तटि आए ।।
झीवर को रघुराइ पुकारा । रे झीवर सुण कहा हमारा ।।

नौका ल्यावौ हमिह चढावौ। इहि सलिता तें हमहि लघावौ ।।
जब बनिता ऋषि कौ धूडि छुहाई। धूरि छुहित बैकुठ सिधाई ।।
झीवरि एहि विधि नैन निहारी। उही वाति हृदे महि धारी ।।
मतु मोहि नौका भी उडि जावै। मोकौ अपुने सहित उडावै।
मम कुटब सभ पाछे रहिई। महा अधिक दुःपु मन महि सहई।
झीवर प्रभ सों वचन उचारा। सुणु वल जावां प्रान अधारा।
तुम पग रज वज्र उडायः। उड्यो वज्र गग को धायो।
मतु मोह नौका भी उडि जाई। मोहि कुटबु बिलापु कराई।
नौका की मैं निकटि न ल्यावौ। मन माहे इहि विधि मुकिचावौ।
रघिपति झीवर सो तव आपा। हे झीवर क्या मन महि राषा।
उह वज्रि जो तुम द्रिष्ट आया। मोह पग रजि छुहि गगनि सिधाय
गोत्तम ऋपि की भार्जा वाही। स्रापु पाइ वज्र तन पाही।
ताको स्रापु निवार्ण कीना। वज्र ते सुर को वपु लीना।
इहि प्रयोग वहु गगनि सिधाया। तुझि चिता क्या मन महि ल्याय
चिता त्याग नौका ले आवौ। साईदास को पार लघावो।

तव झीवर कह्यो हे प्रभ स्वामी। सकल वाति तुम अतरजामी।
पूर्व जन्म मोह वेडी काहू। भार्या होइ स्रापु पायो ताहू।
जो इहि उडि जावे क्या करिहो। कौन ठौर प्रभ मै चितु धरहो।
वहुरो रघिपति ताहि सुनायो। हे झीवर क्या भर्म भुलायो।
तोह नौका कहू उडि न जावै। तू काहे मन महि विस्मावै।
तव झीवर कह्यो सुणु रघुनाथ। सकल कुटंब ल्यावो साथ।
ताकौं इसि महि आण बहावौ। पाछे नौका तुम पै ल्यावो।
तुम अपुने पग धोइ कराही। चर्णाम्रतु देवौ हमि ताई।
जो उडि जावै सभ सग होई। तव हमि दुःख व्यापे नही कोई।
रघिपति कह्या जावो ले आवो। नौका परि तुमि आण चढावो।
झीवर जाइ कुटंबु ल्यायो। नौका महि तिन आइ बहायो।
तिहि संग ले रघुपति ओर धायो। नौका आण करि तीर लगायो।
श्री रघुपति के चर्न पषारे। चर्णाम्रतु मस्तिक ले धारे।
पाछे नौका परि आण चढायो। तव झीवर ने पार लंघायो।

तीर उतार दोऊ करि जोरे। इहि विधि सुणु पूर्न प्रभ मोरे ।।
सदा सहाई प्रभ तुम हमि होई। तुमि बिनु अवरु न हमिरो कोई।।
तब रघुपति भीवर सो भापा। साईदास चितु ठवर हि रापा ।।४

तब रघुपति जी आगे धाए। चले चले नगरी महि आए ।।
बिश्वमित्र ग्रहे माहे गए। अति अनद मंगल बहु भए ।।
ऋषि गृहि जा करि यग्य रचाया। असुर अधिक यज्ञ कर्न्या आया ।।
चाहित हैं यज्ञ कर्न न देवहि। अति बिरोधु तब असुर करेवहि ।।
राम धनष स्यों वाण सभारे। युद्ध कीयो सभ दानव मारे ।।
लक्ष्मण वीरु सहित प्रभ लीए। सकले असुर सघार्ण कीए ।।
वहुते असुर हने रघुराई। मरीच आदि सर संग उडाई ।।
ऋषिको यज्ञ प्रभ पूर्ण कीना। सकल असुर प्रभ ने हनि लीना ।।
तब कह्यो ऋषि आज्ञा देवौ। अबि तुमि किर्पा हमिहि करेवौ ।।
जावौ नगर अजोध्या माही। दशरथ पिता हमारो चाही ।।
तब ही ऋषि ने बाति चलाई। सुण हो राम लक्ष्मण दोऊ भाई ।।
एकि बात मैं तुमहि सुनावौ। अति अनद मगल बहु गावौ ।।
तुम श्रवण धरि सुण करि लेवहु। उौर उोर कहूं चितु न देवहु ।।
मेरो कह्यो मन धरि लीजै। साईदास कछु अवर न कीजै ।।

रघुपति कह्यो कहो पुकारे। हे ऋषि पूर्न प्रान हमारे ।।
हमि श्रवण धर कर सुण लेवहि। उौर उोर कहू चित्तु न देवहि ।।
तब ऋषि नें मुख बचन सुनायो। राम लक्ष्मण सुनने चितु लायो ।।
जन्क स्वुअवर अधिक रचायो। नगर नगर के नृप सदायो ।।
मम सग चलो तुमि ले जावौ। चलो तमासा तुमे दिखावौ ।।
तब ही ऋषु उठियो उठि धाया। राम लषन को संग चलाया ।।
मिथुला नगरी निकट तब आए। जहा जन्क आस्रम सुख छाए ।।
तह अधिक फूली फुलवारी। श्री रघुपति वहु नैन निहारी ।।
हे ऋषि जी आजु ईहा रहे। इसि फुलवारी महि सुख वहे ।।
मेरो कह्यो मन धरि लेवौ। साईदास फुनि सोई करेवौ ।।५

बिश्वामित्र मन धरि इहि लीआ। जो रघुपति मुख ते वचु कीआ ।।
भूपति अधिक आगे से आए तहू ठौर वहि भी ठहिराए

जानकी सहित सपीअनि लेधाई। तिस फलवारी महि चलि आई।।
पट्ठ करि सभ भूपति निपाए। ताहि चित्तु किसे नाहि लुभाए।।
वहुरो राम लक्षन तिह देषै। नैन निहार रूप तिह पेषै।।
लुब्ध परी हरि रूप पराहे। कीओ विचारु अपने मन माहे।।
ऐसे होइ इहु वरु मै पावो। अपनो मनु चित्तु इसि संग लावो।।
तिनहि निर्ष वहुरो उठि धाई। चली चन्नी पिता ग्रह महि आई।।
जन्क विदेही गृहि तजि आया। तिन भूपति महि आइ ठहिराया।।
जन्क विदेही नेत्र निहारे। निर्षे रवि सस वीर प्यारे।।
तिहि अति भूपति ऐसे दिष्टाए। जैसे रवि प्रकास तिमरु मिट जाए।।
जव रवि गगन करे प्रकासा। दीपक जोत होइ जात विनासा।।
जैसे दीपक जोत तिमरु मिट जाई। जैसे दिन समाहि ससि देइ दिषाई
तैसे दोऊ वीर आगे दिषलावहि। आनि भूपति ऐसे द्रिष्ट आवैहि।।
जन्क कीयो हरि को नमस्कारा। करि नमिस्कार हृदे इह धारा।।
कहा प्रतज्ञा मै मनि कीनी। कौनु वाति मन महि धरि लीनी।।
जो मै पर्तज्ञा न कर्ता। जानकी ले इसि आगे धर्ता।।
अवि प्रतज्ञा तजी न जाई। महा कठनि मोह वनी है आई।।
इहि वाल्क कहा विडारे। तोरि धन्पु धर्नी परि डारे।।
सांईदास सचरु क्या देवे। जिसे प्राप्ति होइ सो लेवे।।

भूपति सभ सो जन्क पुकारा। सुनहो भूपति वात हमारा।।
मोह प्रतज्ञा इह है कीनी। इहि प्रतज्ञा मन धरि लीनी।।
जो भूपति इसि धन्षि को तोरे। वलु करि अपुना इसि को फोरे।।
अपुनी दुहिता तांको देवो। आद्र भाव तिहि अधिक करेवो।।
भूपति वात सुनी उठि धाए। चलति चलति धन्ष निकट आए।।
एकु आइ कर धन्षु हलाए। वलु न लगे जो धन्पु उठाए।।
एकु त्याग जाइ दूजा आवै। वलु करि अपुना धन्पु उठावै।।
ताको भी वलु कछु न वसाए। लज्जा मान होइ त्यागे जाए।।
एकु पगु पीछे दे इकु आगे। इक सन्मुख होवै इकि भागे।।
ऐसी भांत भूपति सभ आए। वलु ना लागो सभी लजाए।।

इहि बलु किस जो धनपु उठावै। ता मग वलु कहु कौन वसावै ।।
सभ नृप धन्पु त्याग करि दीश्रा। माईदास रघुपति सुख लीग्रा ।।'

रामचंद्र लक्ष्मरण उठि धाए। दोऊ वीर धनप पैं आए ।।
तव ही जानकी नैन निहारे। मन अतर उनि एह वीचारे ।।'
हे किपाल क्रिपा निधि स्वामी। सकल बिर्भ के अतरि जामी ।।
क्रिपा करो इह धन्पु उठावै। वेग विलन कछु मूल न लावै ।।
मोहि परापति इहि पतु होई। औरु न चाहिनी हौ मै कोई ।।
सभ सषीआ ने इहि पुकारा। हे कौलापति प्रान अधारा ।।
जानकी को पतु एही देवौ। हमिरो कह्यो चित्त धरि लेवौ ।।
जनकि भार्जा भी चितु धारा। हे धर्नी धर सकल भतारा ।।
तुम करुणा अपुनी प्रभ करहो। अपनो वलु इसि भुज महि धरहो ।।
तोह वल कर इसि धन्पु विडारे। तोह क्रिपा करि वलु को अधिकारे।
जानकी को पतु एही होई। जानकी औरु चाहित नही कोई ।।
जव सभनो एहि वचन उचारे। साईदास प्रभ ने हृदे धारे ।।५

रामचंद मनि लीयो वीचारी। चिता मग्न सकल है नारी ।।
अपुनो रूपु कछु औरु दिपायो। जिन निर्ष्या सोई विस्मायो ।।
तिमरु हो उजीआरा होया। श्री रघुपति जव प्रगटि पलोया ।।
जन्कि निर्ष मन चितवन कीनी। एहि वाति हृदे धरि लीनी ।।
इहि कछु रूपु आछा देपावै। अपुने वल करि इहि धन्पु उठावै ।।
कौन रूप मै इसहि वपानो। इसि का अतु कहा मैं जानो ।।
रवि इहि आप के रवि इसि छाया। पर्म पुर्ष कछु रूप दिपाया ।।
कहा वपानो सुंदरिताई। मम पे इहि विधि वर्न न जाई ।।
लोक कहे इह कहा उठावै। वलु इसि वालक कहा वसावै ।।
मिल मिल मसु मनि महि मुस्कावहि। एहि वालक कहा धन्पु उठावहि ।।
सभु देपनि कार्ण उठि धाए। निकटि धन्पि के आइ ठहिराए ।।
लक्ष्मरण सों हरि वचनु उचारा। सुरण हो लक्ष्मरण वीर हमारा ।।
तुमि जा धन्षि कों लेहु उठाई। मै आज्ञा तुझि दीनी भाई ।।
तव लक्ष्मरण प्रभ सौ इहि आषा। करि जोरे मुष से इहि भाषा ।।

तुम किर्पा ने लेयो उठाई। क्या प्रभ एहि जो तुम्हहि सहाई।।
इहि मोह कामु नही तुम कामा। साईदास पूर्न प्रभ रामा।।६

तब रघुपति कह्यो भल भाषा। इहि विधि तै जो मुष तै भाषा।।
अतर ध्यान होइ तुम जावो। त्रैलोक को जाइ सुनावो।।
श्री रघुपति बल कर धन्षु तोरे। बल कर धन्षु ताई बहु फोरे।।
ताते शब्द होवै अधिकारा। डर्पमान होवै ससारा।।
त्रैलोक कप करि जावै। धन्षु टूटै जब शब्द उठावै।।
लक्ष्मण अतर गति होइ धाए। त्रैलोक को जाइ सुनाए।।
श्री रामचद जी धन्षु विडारे। ताते शब्द उठित तत्कारे।।
तुम मन माहे त्रासु न ल्यावो। हिर्षमान हो मगल गावो।।
तब त्रैलोक देषनि को आए। ठौर ठौर परि आई ठहिराए।।
श्री रामचद जी धन्षु उठायो। मानो त्रिण करि महि ठहिरायो।।
करि सों खिच्यो धन्षु विडार्यो। ताते शब्द उठ्यो अधिकार्यो।।
तब सभ लोक भै चक्रि रह्यो। साईदास तब बहु सुषु लह्यो।।

जानकी केसुरु सिरि परि डारा। अति अनदु मन माहि वीचारा।।
दसरथ को लिप पतीआ पठाई। करो काजु रघुपति को आई।।
जब पतीआ दसरथ ने देषी। अपुने द्रिग सौ पतीआ पेषी।।
भर्थ शत्रुघन लीयो बुलाई। बशिष्ट प्रोहतु तांको भाई।।
तिस को सग लेइ उठि धायो। मिथुला नगरी को हितु लायो।।
मिथुला नग्री के निकटि आए। अग अग तिह बहु सुष पाए।।
जन्कु देषि तिहि टांदा भया। दसरथि का अंग माहे लया।।
भले नक्षत्र कार्जु कीनो। रघपति कार्जु कर्के लीनो।।
धूप दीप आर्ती ले आई। मिल नारी बहु मगल गाई।।
जन्क भ्रात कुश ध्रुज लघु नामा। दो कन्या ताके अस्रामा।।
लक्ष्मण भर्थ शत्रघन भाई। तिह कार्जु कीनो अधिकाई।।
दसरथ सभ सुत कार्ज कीना। जन्क विदेही बहु कछु दीना।।

१- मूलग्रथ मे इसके अनतर "जन्क सुता सं ता" लिखकर आगे रिक्त स्थ
२ सभवत लिपिकार से कोई पक्ति छूट गई है

कनक अश्व मोती वहु दीने। चेरे हस्ति वहु सग कीने॥
एक क्षूहिणी सेना दीनी। जन्क विदेही एहि विधि कीनी॥
पाछे से विद्या सभु कीए। सांईदास सर्व सुधि लीए॥

दशरथ नृपु सग ले करि धाया। केतक मगु मिथुला ते आया॥
पर्शुराम आगे प्रगटि आयो। दसरथ निर्षे अति विस्मायो॥
कह्यो पुकार तुम कौन हो भाई। हमि को इहि विधि देहु बताई॥
पर्शुराम जब बचनु उचारा। दशरथि विस्म रह्यो अविकारा॥
बुरी भई अवि क्या मै करहो। कौन ठौर अपना चितु धरहो॥
मै सकल कुटुब घातु करि लीआ। ईही धार्यो अपुने जीआ॥
दशरथ रगु अवर कछु भया। अति भै चक्रिति मन महि हो रह्या
पर्शुराम फिरि वचनु वपाना। काज वीच मै तुभै पछाना॥
जिह समे मै निछत्राइणु कीना। नारी तुभै दुराइ करि लीना॥
अवि कहु कहा भाग करि जावे। अवि कहु कहा तूं आप दुरावै॥
दसरथ को रगु अवरे भया। अति विस्मादु हृदे हो गया॥
सुधि तजि दशरथ भयो हैराना। सांईदास मै कहा वपाना॥६

श्री रघुपति विधि जाननिहारा। पर्शुराम सों वचन उचारा॥
हमि छत्री है प्रभ बलजावा। कहो किरुणा करि किर्पा पावा॥
पर्शुराम तव वचनु उचार्यो। धन्षु शंकर को तुभै विडार्यो॥
जनक के ग्रहि तुभै काजु कीना। शिव को धन्षु विडारे लीना॥
श्री रघुपति तव कह्यो पुकारे। सुन हो प्रभ पूर्न पर धारे॥
धन्षु पुराना पूदा भया। मै उठाइ करि माहे लया॥
जवि मै पिच्यो वहु तुटि गयो। दोनो टूक धन्षु होइ गयो॥
तव अति क्रोध लोचन ललाए। रक्त चुइनि कछु कह्यो न जाए॥
महा वली तिहि वलु अधिकारा। कहा कहो मै ताह वीचारा॥
कप क्रोधु हृदे ठहिरायो। मुष ते वचनु उचार सुनाओ॥
अग्नि रूप क्रोध अति भारी। तांको वलु भुज महि अधिकारी॥
कह्यो लेहि मोह धन्षु विडारो। हमिरे धन्पि को तुम प्रहारो॥
नाहि त अवि सम ही को मारो। सांईदास मै सभै प्रहारो ६४

पर्शुराम क्रोधु वहु कीना। अति अभिमानु हृदे महि लीना ।।
दसरथ निर्ष अधिक विस्मायो। रघिपति निर्ष्या सचर पायो ।।
हे तात काहे को सुकचावौ। सचरु किह कार्ण मन ल्यावौ ।।
हमि संग वलु कहु किसे वसाई। ऐसो कवनु जमयो है भाई ।।
चित्तु रपु ठौर काहे विललावै। कित प्रयोग मन महि दु.ख पावै।
जो किसु पै व्रह्मरण हन्या जाई। सोई हमि है सुणु मेरे भाई ।।
अवर कोई हमि निकटि न आवै। काहे तू मन महि सुकचावै ।।
ताह प्रबोधन वहुता कीना। सांईदास दसरथ सुषु लीना ।।६

रघुपति धन्षु ताह ते लीना। धन्पु वाण ले कर महि कीना ।।
पैच्यो धन्षु वाण करि माही। किस मारो कोऊ आगे नाही ।।
तव वशिष्ट सों वचनु उचारा। सुण हो प्रभ गुरदेउ हमारा ।।
साध्यो वाणु अन्यथा ना जाई। किस को मारो देहु वताई ।।
तव वशिष्ट रघुपति सौ भाषा। स्वर्गपुर काटे इहु आषा ।।
रघिपति वाणु करि तें छडि दीआ। स्वर्ग पुर काट करि लीआ ।।
स्वर्गपुर काट्यो इहि कार्न। कौलापति प्रभ आप अपार्न ।।
मात लोक कोई स्वर्ग न जावहि। स्वर्ग लोक मार्ग ना पावहि ।।
धन्पु फिरि पर्शुराम कौ दीना। पर्शुराम कौ अंग महि लीना ।।
ताको वलु सभु लीयो हिराई। पूर्न प्रभ मेरे रघुराई ।।
पर्शुराम तिहि मति हिर लीनी। महा कठनि विधि तिन ने कीनी।
पर्शुराम फिरि वचनु उचारा। श्रीरामचंद ने लीयो अवतारा ।।
चर्न लाग स्थावर धायो। जाइ तपस्या सों चितु लायो ।।
तव दसरथ सहित हिर्षाए। अंग अंग महि नाह समाए ।।
तव ही आगे को पग दीने। नगर अयोध्या का मग लीने ।।
जव केतक मगु आगे आए। तव आन भूपति षडे पाए ।।
जो जनकि स्ववर माहे आए। तहा वलु ना लागो ठाढे भए ।।
सोई अवि आगे चलि आए। चाहति हरि सों युद्ध कराए ।।
तव रघुपति ने वान सम्हारे। केतक भूपति प्रभ ने मारे ।।
केतक भाग गए वचे सोई। रघुपति सर काहा होवै सोई ।।
नृप मार आगे को धाए। नगर अयोध्या माहे आए ।।

कौशल्या को आष पठाए। रघुपति जी कार्जु कर ल्याए।
जो कछु वेद मिर्जादा होई। हमहि ले चलो करो तुम सोई।
अवि हमि तुमि को कह्यो पठाई। साईदास विधि प्रगटि सुनाई।

कौशल्या वनिता सग लीए। श्री रघुपति उौर तिन पग दीए
ताल मृदंग वजावति आई। श्री रघुपति पै आई ठहिराई।
वजति मृदग उठिति भुनिकारा। तव सभही ग्रहि को पगु धारा।
सीता को ग्रहि महि ले आए। अनंद भान होइ मगल गाए।
जो कछु वेद मृजाद वताई। कौशल्या ने कीनी साई।
भयो अनदु ताके ग्रहि माही। अंग माहि भावति वहु नाही।
केतकि दिन जवि भए वितीता। दसरथि नृप अतिभारु दिष्टेता
कर पल्लव ताके कछु होया। तिस दिन दु.ख सुप ना सोया।
पोक पडी तिहि पल्लव माही। अनकि उपाउ कीस छुटे नाही।
दु ख भयो सुषु निकटि नि आवै। जैसे मीन जल विनु तडिफावै।
कौकेही सुदर अधिकाई। दसरथ निकटि रहे सदाई।
ताहि रूप मै कहां वपानो। साईदास उस्तिति कहा जानो।।

कोकेही कर पल्लब कर लीना। ले अगुष्ट मुष माहे कीना।
पीक सकल तांकी चुस लीनी। मुष से तत्र ही डार न दीनी।
पीक चूसी दसरथ सुप पायो। सुख उपिज्यौ दु.ख मूल गवायो।
जैसे कंदरा होति अधारा। दीपक जाल कीत उजीआरा।।
जैसे विर्छसू कहरिया होइ। जलु तिहि मिले सुष पावै सोई।
जैसे भूषा भोजनु पावै। भोजनु लेइ भूष तजि देवै।।
तैसे दु:ख दशरथ तजि भागा। अति अनदु तांके मन लागा।।
नैन मूद सुष के ग्रहि आया। सक्ल दु:खु तन मनहु हिराया।।
दसरथ सुष कीनो अधिकाई। कौकीही कर पल्लौ मुष माही।
जाग पर्यो निर्ष्या तिह उोरा। हे कौकेही सुण कहा मोरा।।
कछु मांगौ तुम कौं वरु देवौ। जो तूं कहै मान मै लेवौ।
उौरु वाति मै ना कछु करियो। सांईदास सोई मनि धरहो।।

कौकेही मुषि पीक अधिकाही। तव उनि डारी र्धान पराही।।
डारि र्धान परि वचनु उचारा। तुम पै इछु वरु रहो हमारा

मांग लेयो जवि इछया होई। जो इछया होइ लेवहु सोई ।।
दसरथ तव मन महि धरि लीना। ताहि कहा मनि माहे कीना ।।
कर पल्लव छूटी वहु सुणु पायाँ। सुख भयौ सभ दु ख विसरायौ ।।
देव इकत्र होइ करि आए। दसरथ को तिह आप सुणाए ।।
गंधर्व हमि को वहु दु:ख देवै। निसचामर हमि युद्ध करेवै ।।
हमि वलु नाहि जो सन्मुख होवहि। युद्ध करहि करि तांकौ पोवहि ।।
हे नृप हमिरी करो सहाई। अवि हमि तुमलौ कह्यो सुनाई ।।
दसरथु सुनि इहि विधि उठि धाया। कांकेही को संग चलाया ।।
जहां जाइ तहां सग जाई। विनु कौकेई कहू नि जाई ।।
इहि प्रयोग सग वहु लीनी। सांईदास विधि पर्गटि कीनी ।।६

दसरथ वहिरागी पिछे जावै। दसरथ इहि विधि नामु कहावै ।।
जव दसरथु युद्ध को उठि धाया। वेग विल्म तिन मूलि न आया ।।
मिलि गंधर्व आए अधिकाईं। जो दसरथ सों करहि लराई ।।
दसरथ धन्पु वाण करि लीना। गंध्रपसो तिह वहु युद्ध कीना ।।
रथि लटि टूटि गई वीचाही। कौकेई निर्पी वहु ताही ।।
कैकेही तांमहि भुजि दीनी। उनि मन अतरि येहि विपि कीनी
मतु रथु भडे धर्नि उपिराहे। दसरथ को गधर्व जीता जाहे ।।
इहि प्रयोग तिहि महि भुजि दीई। इहि विधि कोकेई मनि कीई ।।
जो ओरि दसरथ रथु ले जावै। कौकेही तहू ओरि धावै ।।
अधिक युद्ध दशरथ करि लीआ। गधर्व को प्रहारणु कीआ ।।
केतक गधर्व भागे जाही। पाछे मुडि तांकै वहु नाही ।।
भागे गधर्व रणु तिहि हारा। साईदास रथ नृपु भारा ।।७

दसरथ ने जवि रथि और देषा। कौकेई की ऐसे पेषा ।।
हा हा कौकेई क्या कीआ। काहे भुजि तै इसि महि दीआ ।।
तव कौकेई वचन उचारा। सुण हो प्रभ जी प्रान अधारा ।।
रथि लठि टूट गई वीचाही। निष्यों रथु गिरे धर्नि पराही ।।
रथु गिरे धर्नि हार हासि आवै। गंधर्व हमि कौ सभै हिरावै ।।
तव मै भुज इसि माहे दीनी। एहि वाति मैं कर्के लीनी ।।
दसरथ कह्यो मागु कछु रानी मैं वरु देवौ इहि वाति वषानी

जो कछु मागे सो कछु देवौ। सुप्रसन्न तुझ कौ करि लेवौ ।।
कौकेई तव ऐसें भाषा। एकु वरु तुम पै आगे आषा ।।
एकु वरु इहि हमिरो तुम पाहे। रहो भूपति मैं लीवो कदाहे ।।
दसरथ जब अयोध्या को आया। वजत वजन्त्र अनंदु सवाया ।।
महा अनदु ताके ग्रीह होया। साईदास सकला दुख खोया ।।७

एक दिन दसरथ के मनि आई। राजु देवौ मैं रघुपति ताई ।।
अवि मैं वृद्धि भयो अधिकाई। मो पै राजु कीयो ना जाई ।।
लोक नगर के सभे वुलाए। तासो इहि विधि आप सुणाए ।।
चाहित हौं रघुपति राजु देवौ। मैं हरि स्मरनु हृदे करेवौ ।।
वृद्धि भयो सुधि बुधि बौरानी। इहि विधि दसरथ सुणो बषानी ।।
सभ लोको मिल एही भाषा। हे नृप दसरथ वहु भलो आषा ।।
केसरु रगर भाजन भरि लीना। माला छत्रु वहु विधि कीना ।।
कह्यो प्रात समे दीयो राजा। दसरथ कह्यो करो इहि काजा ।।
तव रघुपति मनि माह वीचारा। मोह सिर कार्जु है अति भारा ।।
मैं लेवौ राजु कार्जु को करही। कार्ज कर्तन को चितु धरही ।।
तव चेरी प्रभ लई वुलाई। तांसौ इहि विधि राम सिखाई ।।
जा कहु तू कौकेई ताई। दसरथ रघुपति राजु वहाई ।।
जवि ते रघुपति राजा होई। भर्थ को नामु न लेवै कोई ।।
कौसल्या का कहिउो होई। तेरो कह्यो माने नाही कोई ।।
जानकी होइ वहैगी रानी। साईदास मैं वाति वषानी ।।८

चेरी कौकेई पै आई। ताको आइ करि वाति सुणाई ।।
दसरथु राजु रघिपति को देवै। रामचंद राज कौ लेवै ।।
कौकेई सुण विधि हिर्षाई। तांकौ कथा वीचार सुणाई ।।
मंथरा सौ तव वचनु उचारा। हे मंथरा क्या भलो पुकारा ।।
एहि बात तुझै मोह सुनाई। सुनति वात सुखु भयो अधिकाई
ऐसो क्या जो तुझ कौ देवौ। सुप्रसन्न मैं तोहि करेवौ ।।
अंग अंग मै वहु हिर्षाई। ताकी वाति न कहिणी जाई ।।
जैसे जल मिल फूलै फूला। विर्छ हरिआ होइ सण मूला ।।
ऐसे कौकेई हिर्षाई। साईदास सो प्रगटि सुनाई ।।

तब श्री रघुपति अंतरजामी। सकल घटा माहे विस्रामी ।।
कह्यो बुरी भई अवि क्या कीजै। उसि को मनु क्यु करि भर्मीजै ।।
वहु विधि सुण के वहु हिषाई। अग अग महि नाह स्माई ।।
श्री देवा जग की वहु माई। श्री रघुपति ने तव ही बुलाई ।।
तिहि आग्या रघिपति ले दीनी। एही आज्ञा वांको कीनी ।।
कौकेई को लेहु भुलाई। वांकी मति को लेई वौराई ।।
श्री देवा तव ही उठि धाई। कौकेई पाहे वहु आई ।।
आवति मति तिहि ने वौराई। वहु मति भूलि उरे आई ।।
वहुरो चेरी बचनु उचारा। हे राणी क्या मन सुप धारा ।।
जव श्री रघुपति जी राजु पाए। तव पाछे तूं कहा कराए ।।
भर्थ को राजु नाह को देवै। वह दु:ख तव तू मन महि लेवै ।।
अवि मै तुम सो आई वतायो। सांईदास मै प्रगटि सुनायो ।।

तव कौकेई वात चलाई। हे मंथरा भली वात सुणाई ।।
कहा करो कैसे करि भापो। दसरथ को मैं क्या करि आषो ।।
जो तू मो को देह वनाई। सोई मैं नृप पै कहो जाई ।।
तव ही मथरा वचनु उचारा। सुण कौकेई कहा हमारा ।।
तुमरे दो वर नृप पै आवहि। जो तू मागहि सोई पावहि ।।
जो नृप निसि आवै तोह पाही। तू कहु दोनो वर मैं पाही ।।
जो उहु कहे मांग करि लेवौ। तौ तूं कहे हमो को देवहु ।।
प्रथम भर्थ को राज वहावौ। द्वितीया राम उद्यान पठावौ ।।
एही दोवे वर मै पावो। और वात कछु हृदे नि ल्यावौ ।।
कौकेई कह्यो वहु भला कह्या। मन माहे विधि दूढनि लह्या ।।
दिनु वीत्यो निस आवन होयो। कौकेई मन दु:ख स्यो पेयो ।।
मदर महि दीपकु न जलायो। वन्हि उपरि तिन केस छुडायो ।।
दिन वीत्यो दशरथु तव आयो। मदर अधिक तिमर निर्पायो ।।
दसरथ तवी पुकार सुनायो। हे कौकेई कित मनु लायो ।।
कवन दु:ख तुम को है लागा। किह प्रयोग उजीआरा भागा ।।
इहि विधि मोको देहु वताई। तैंने इहि विधि काह कराई ।।
महा सुंदरी सुदरताई ताह ताह रूप वर्न्यो ना जाई

दसरथ सों उनि वचन उचारा। सुण हो नृप जी प्रश्नु हमारा।
दोई वर मेरे अवि देवौ। आप वचन पूर्न करि लेवौ।
तव दसरथ ने वात चलाई। इहि अयोग इहि रूपु दिषाई।
जो तुम बाछा होइ सो लेवौ। मुष अपुने से कछु उचिरेवौ।
तव कौकेई ऐसे भाषा। भर्थ राजु देवौ इहि आषा।
दूजा वरु मो कौ इहि देवौ। रामचंद कों वनवासु पठेवौ।
नाहि त अवि तजो प्राना। साईदास तिहि मन इहि आना॥

तव दसरथ ने वचन उचारा। हे कौकेई क्या मन धारा।
जैसो तुमरो रूपु उचारा। तैसा तुम घटि माह अधारा।
व्राहर रूप सुदर दिषाई। अतर महि विषु कहा छपाई।
ध्रिग ध्रिग बुद्धि तुमारी भामा। मो मो दुजा कीयो तै रामा।
इहि विधि कहि दसरथु मुर्छायो। सकली सुधि बुधि ताहि भुलायो।
निस बीती भालू तव होया। दसरथ संसा मनो न पोया॥
मत्री दसरथ को तव आया। हे नृप कहा तै ढील लगाया।
रघुपति को आवौ देहो राजा। हे दसरथ करि ले इहि काजा।
दसरथ कहा जो विधि सुण लेवै। तां विधि प्रतु तांको देवौ।
रुदन कर्ति द्रिग नीर ढुगाना। तव मत्री मन महि हैराना।
विघ्न भयो कछु रुदनु कराए। मुषि ते वचनु जु ना उचिराए।
मत्री ने तव वचन उचारा। सांईदास सभ कह्यो वीचारा।

हे कौकेई इहि क्या होया। दसरथ नृप कवन दुख रोया।
तव कौकेई वचनु सुनायो। तव मत्री को तिनहि वतायो।
राजु दीयो नृप भर्थ के ताई। रघुपति मो वनवास पठाई।
सुनि मंत्री एहि विधि उठि धाया। चला चला रघिपति पहि आया।
कह्यो पुकार राम जी ताई। तुम वनवास भयो अधिकाई।
कौकेई इहि वचनु उचारा। हे पूर्न प्रभ प्रान अधारा।
दसरथ रुदन कर्ति अधिकाई। ताहि वात मै कहा उचिराई।
कौलापति प्रभ प्रान अधारा। सभ ही विधि हो जानण हारा।
चलति चलति दसरथ पहि आयो दसरथ को तव आष सुणायो।
हे पति किहि विधि राजु कराहे किउ रोवत है तू मन माहे

इहि विधि को प्रतु मो कौ दीजै। इहि करुणा प्रभ मो परि कीजै।।
कवन प्रयोग दुःख तै पायो। साईदास सो मोह वतायो।।

कौकेई तव वचनु सुनायो। रुदन कर्नि इहि विधि चितु लायो
तुम को कहति जाहो वन माहे। चतुर्दश वर्ष रहो तुम ताहे।
हमि ने राजू भर्थ को दीना। इहि कार्णु हमि ने है कीना।
जो मोह सुतु मेरो कहचा माने। और वानि कछु हृदे ना आने।
जव रघुपति इहि विधि सुण पाई। मुषि अपुने ते बाति सुणाई।
हे पति[1] तुमि आज्ञा जो होई। हृदे धार करि हौ मै सोई।
हे पति तुमि प्रणु छाडो नाही। मै जावति हो वन के माही।
रुदनु न करु कछु हृदे न आनो। हमि को निकटि सदा तुम जानो।
सुतु सोई पति कहचा करावै। द्वितीआ भाई कछु हृदे न ल्यावे।
तव दसरथ ने वचनु उचारा। सैना सहित लेहो अधिकारा।
तवे कौकेई कह्यो पुकारा। जव दसरथ इहि वचनु उचारा।
जवि सैना रघुपति ले जावै। भर्थु राजु कहु कहा करावै।
तव श्री रघुपति वात चलाई। काहे तप्ति है मेरी भाई।
मोहि सैना काम नही आवै। इहि सैना मोकौ नहीं भावै।
जो प्रथमे प्रभ वचन उचारा। ओही वचन हृदे मै धारा।
ले आग्या दसरथ ते धाया। साईदास रघपत गृह आया।

जनक सुता सो वात सुनाई। एक एक करि ताह वताई।
कौकेई वनवासु दिवायो। हमि पति आग्या मनि ठहिरायो।
मौ को आज्ञा पति की होई। जो आग्या होइ कर हो सौई।
मौह कह्यौ तुम वन को जावो। मेरो कहचा हृदे नहि लावो।
अवि मै जावति हो वन माही। औरु वाति करहो कछु नाही।
तुम सुष वसो अयोध्या माही। मानु महतु करवो कछु नाही।
भर्थ कहचा सिरि ऊपरि राषौ। औरु वाति कछु नाह नि आषो।
जनक सुता जवि विधि सुण पाई। मूर्छा होइ करि धर्नि गिराई।
श्री रघपति भुजा पकरि उठाई। मूर्छा ते फिरि सुद्धि महि आई।

---

१ पति > पित पिता परिवतन

तव सीता कह्या मोह संग लेवो। पाछे पग तुम वन महि देवो ।।
तव श्री रघपति ताह सुनायो। हे जानकी क्या मनि ठहिरायो ।।
तुमि हमिरे संग काहे आवो। तुम अपुने ग्रहि महि ठहिरावो ।।
महा भै मान है वहु अधिकाई। वन महि कहा करौ तुम जाई ।।
हमि तो पत की आज्ञा पाई। आग्या पाइ चले वन धाई।।
वादर उमड उमड के आवहि। महा अधिक उह वर्षा लावहि ।।
कवहू पवन चले अधिकाई। कवहूं सिघ सन्मुष हनि धाई ।।
व्याघ्र अधिक फिर्त तिहि ठौरा। दु:ख घणो लुपु नहि हे भोरा ।।
वन महि जाहि अधिक दु:ख पावहि। तव वन महि वहुता पछुतावहि
काहे नगर त्याग वन आई। इसि के संग काहै मै धाई ।।
ताते एहि भलो है भामा। रहै अयोध्या इहि भलो कामा ।।
तुम रहो नगर अयोध्या माही। हमिरे संग चलो तुम नाही ।।
तव ही जानकी वचनु उचारा। हे प्रभ पूर्न प्रान अधारा ।।
तुझै त्याग कैसे सुष पावौ। तुझि विनु मनु कहु किस सौ लावौ
पवन मेघ ते हमहि डरावौ। सिंघ त्रासु प्रभ हमहि वतावौ ।।
जो ईहा रहो सिंघ दिष्ट आवै। जो ईहा रहो दु:ख मनु पावै ।।
श्री रघुपति फिरि वचनु उचारा। जानकी कहा हृदे ते धारा ।।
मै कछु त्रासु तोहि न दिषायो। नीकी वाति मै तोहि वतायो ।।
हमि संग काहे वन तुम जाई। तू भामा हम नर अधिकाई ।।
हमि दसि कोस चले क्षिण माही। तू हमिरे संग पहुचे नाही ।।
हमि तो सिघ सौ करहि लराई। तुम को सिंह पकरि छिन षाई ।।
मोह कहा मन नहि ठहिरावौ। और वाति कछु नाह चलाओ ।।
जानकी फिरि ताको प्रतु दीना। हे प्रभ कहा उचारे लीना ।।
जो तुम किर्पा मो परि होई। दु:ख दर्दु व्यापे नही कोई ।।
तुझि विनु दु:ख दर्दु सताही। तुझ विनु प्रान निकसि करि जाही
जो तुम मोह त्यागे जावो। विरह अग्नि तन हमिरे लावो ।।
तुम विनु प्रान निकस करि जाही।
छूटति रघुराई तुझि विनु मोपै रह्यो न जाई ।।
किर्पा करि हमि को संग लेवो। दु:ख दर्द हमि को ना देवो ।।
औरु वाति कछू नाहि चलावौ हमि कौ संग लेह करि प्रभ धावौ

रघुपति फिरि कह्या जानकी ताई। हे जानकी चलहो वन माही ।।
ग्रहु अरु भूषन अंग लुटावो। छिन पलु विलम नाहि तुम लावो।
जानकी तत्काल इहि कीना। ग्रहु अग भूपन सभ तजि दीना ।।
मालु धनु दीयो लुटाइ छिरण माही। पाछे कुछु रापो उनि नाही ।।
रघपति जानकी कौ सग लीना। चाहति गवन उद्याने कीना ।।
जो नृप कह्या सो मनि ठहिरायो। साईदास चित्त उनि लायो ।।

जब रघपति पग आगे दीने। लक्ष्मण वीर तवी सुरण लीने ।।
लक्ष्मरण वीर तवै सुरण आया। श्री रघपति सौ भाव सुणाया ।।
हे प्रभ मै तुमरे सग जावौ। पलु छिनु तुम विनु ना ठहिरावौ।
तुम विनु निकसि जाति मोह प्राना। हे पूर्न प्रभ मै इहि जाना ।।
श्री रघपति कह्यो सुणु वीरा। हमि संग किउ चल चचल धीरा ।।
मोह आग्यापत कीसे जावौ। पनि आग्या मन माहे ल्यावौ ।।
इहि विधि वधू वेद बताई। पिता समान वडो है भाई ।।
मोह कह्यो मन महि ठहिरावो। वन जावन चितु नाहि ल्यावो ।।
तुम कों किसै वनवासु न दीआ। तुम हृदि महि किउ इहि धरि लीआ
तुम वसो नगर अयोध्या माही। हमिरे सग चलो तुम नाही ।।
वन महि चलो कष्टु वहु पावो। साईदास इहि मनि ठहिरावो ।।

तव लछमन तांको प्रतु दीना। हाथ जोर विनती मुष कीना ।।
हे प्रभ तुम जाव वन माही। हमि तुम विनु किउ रहो इथाही ।।
मै तुम त्याग ईहा ना रहो। नग्र माह आनंसु ना लहो ।।
तुझि विनु कहु किन काम हमि आवहि। तुझ विनु कहु कैसे सुष पावहि
तुझि विनु हमि पै रह्यो न जाई। हे प्रभ पूर्न रघपति राई ।।
किर्पा कर हमि सहित चलावो। वेग विलम प्रभ मूल न लावो ।।
विनु जल ब्रिक्ष हरया नही हो। विनु नावक जलु तरे न कोई ।।
हे प्रभ तुमि विनु रह्यो न जाई। साईदास मन वहु दुःख पाई ।।

रघपति लछमन को समझाई। सुरण हो विधि तुम मेरे भाई ।।
महा विकटि वनु रह्यो न जाई। सिघ असुर वहु त्रासु दिपाई ।।
भूष ब्यापे क्या तू षावहि सुनहो वंधू वहु दु ख पावहि

तप्त सीत तहा वहु सताई। तुम पै वहु दु:ख सह्यो न जाई।
मेरो कह्यो मन धरि लेवो। औरु बाति कछु हृदे न देवो।
वहुरो लक्षमन तिह प्रतु दीना। हे रघपति तुम जान प्रवीना।
हमि को भूष का त्रासु दिषावै। औरु घाम प्रभ हमहि वतावै।
सिघ असुर प्रभ कहा कहावै। तुम किर्पा कछू निकटि न आवै।
मै तुमि सग चलो वनि माही। सांईदास ईहा रहो नाही।

वहुरो रघपति ताहि सुनायो। औरु वाति प्रभ प्रश्नु वतायो।
वन महि पाट पीतवर नाही। इहि विधि समझि देषु मन माही।
का परिशैनु करो मेरे भाई। तुम को दु:ख उपजै अधिकाई।
कहा सिहांने धरि करि सोवौ। हे मोह वीर महा दु.ख होवै।
कित प्रयोग तुम वन महि जावो। हमिरे संग काहे को आवो।
तुमि दु:ख लागे हमि दु:ख होई। वन महि सुषु वधू नही कोई।
कांटे अधिक पडे पग माही। सांईदास काहे दु:ख पाही।

लछमन कह्यो सुनो रघुराई। दु.ख कहा लागे तुम ही सहाई।
पाट पीतवर मोह तेरो नामा। औरु वात सों मोह नही कामा।
तुम को त्याग रहों कहा ठौरा। तुझि विनु होवति हों मै वौरा।
तुम विनु सुधि वुधि सकली जाई। तुमि विनु मनु रत्त न पाई।
तुमि विनु मो को भौ अधिकाई। तुमि विनु मो पहि रहयो न जाइ
जहा तुमि चलो तहा मै जावों। तुमि विनु नगर मै किउ ठहिरावो।
तुम विनु दग्ध होत मोह प्राना। हे प्रभ तुम विनु कहा वषाना।
तुम विनु जीउ निकसि मोहि जाई। जैसे जल विनु मीन तडफाई।
तुमि विनु हमि किते काम नि आवहि।
तुमि विनु दु ख अधिक हमि पावहि॥
तुमि विनु द्रगि मोहि कछू न सूझै।
तुमि विनु इहि मनि वाति न बूझै।
तुमि विनु राति दिवस अधारा।
तुमि विनु कहू न होत उजारा॥
तुमि विनु सुफलो काजु न होई।
तुमि विनु महा दुख प्रभ होई

तुमि विनु आसु अहे प्रभ आई।
तुमि विनु हमिरो कौन सहाई॥
तुमि विनु कवन दुःख हमि टारे।
तुमि विनु दुख हमि कौनु उधारे॥
तुमि विनु नगरी नाह सुहावै।
तुमि विनु सभ जगु भर्म भुलावै॥
तुमि विनु ज्ञात कहु कैसे होई।
तुमि विनु विप्त कवन हमि पोई॥
तुमि बिनु बहु दुख लागे आई।
तुम विनु तीन ताप संताई॥
कैसे त्याग रहो तुम ताई।
तुम को त्यागो बहु दुख पाई॥
हे प्रभ तुझि विनु रह्यो न जाई।
इहि बिधि कहि मै तुझे सुणाई॥
अवरु बाति तुमि नांह चलावो।
सांईदास को साथ ले जावौ॥८४

श्री रघुपति मन माह वीचारा। इनि निश्चै कीना मन धारा॥
मैं इसे ऊभ पताल दिषायो। अधिक आसु मै इसे बतायो॥
इनि धर्यो ले सीस पराइण। उरु बात मैं कहा बताइण॥
कह्यो भलो भाई तुम आवो। हमिरे सग तुमि बन कौ धावौ॥
जब इहि तीनों उठि करि धाए। रव सस तिह रूपु देष लजाए॥
महा सरूपु रूप उजीआरा। तां कहु कहु को करे बीचारा॥
रव सस दोनो जाहि लजाई। ताहि रूप देषे मेरे भाई॥
मधुरि मूर्त्ति रघुपति राई। तांकी उस्तित कौणु बताई॥
लछमन तासो बचन उचारा। हे रघपति क्या मन महि धारा॥
चलु इनि भूपति को हनि लेवहि। ताहि नग्र को राजु करेवहि॥
श्री रघुपति तांको प्रतु दीना। हे मोह वीर कहा मनि लीना॥
इहि केनक विधि जो ना होई। जो पति आज्ञा होइ करो सोई॥
पिता हमि कौ दीना बनवासा। हमि किउ नगरी लेवहि वासा।

तब लछमन कहो यहु भलो होई। जो तुम कहो करहि हमि सोई॥
रघुपति कह्यो सुणु मेरे भाई। जो तेरे मन अैसी आई॥
इहि भूपति हनि लेवहि राजा। पूर्न हमिरे होवहि काजा॥
तुमि रहो ईहा किउ बनि जावो। कित कार्नि वधू दु:ख पावो॥
तब लछमन द्रिग नीरु ढुराना। हे रघिपति जी क्या मनि जाना॥
जाहा तुमि जाइ के आश्रमु लेवो। आसनु करि वन को तुम सेवो॥
मैं लकरि ले कुटी बनाऔ। तुम आगे प्रभ टहिल कमावौ॥
मैं इहि तुम सुष कार्ण भाषा। औरु वाति कछु हृदे न राषा॥
जो तुमि मो सों अैसी भाषो। जान बूझि अैसी विधि आषो॥
अवि ही प्रान तजौ मेरे भाई। मो पहि इहि विधि सही न जाई॥
मै सेवकु तुमिरो रघुराई। सांईदास तुमि सदा सहाई॥

तब श्री रघुपति बचनु सुनाया। हे मोह बीर कहा मन ल्याया॥
इहि विधि तुमि पै इहि बतायो। पित को बचनु हृदे में ल्यायो॥
तुमि सुष वसो अपुने ग्रहि माही। किन कार्नि वन कौ तू जाही॥
तूं ही जीउ प्रान है मेरा। मै सुषी जीउ चाहित हो तेरा॥
तब ही लछमणु शांत धरि आया। तब रघुपति इहि बचनु सुनाया॥
तीनो कौशल्या पहि आए। करि जोरे मुख आषि सुणाए॥
रघुपति कौशल्या सो आषा। मै बन जावो इह मुष भाषा॥
पित हमि को दीना बनवासा। हमि ने त्यागी सकली आसा॥
जानकी लछमन मोहि सग जाही। मेरे कहे समझै इहि नाही॥
मै कह्यो वन महि दु:ख पावौ। काहे को हमिरे सग जावौ॥
अनकि अनकि विधि कहि समझायो। मेरो कह्यो इन्हा मनि ना भाय
तुम आज्ञा देवो हमि जावहि। साईं दास छिन विलम न लावहि॥

कौशल्या तिहि आन सुणायो। हे रघपति किहि विधि मनु लायो।
लछमन जानकी सग चलाए। तुमि बिनु मो पहि रह्यो न जाए॥
निकसि जाहि प्रान सुत मेरे। कहा कहो मै आगे तेरे॥
मो को अपुने सग चलावो। मेरो कह्यो मनि महि ठहिरावो॥
श्री रघपति तब वाति चलाई सुणु कौशल्या हमिरी माई
वनिवासा पिता हमि को दीना चतुर्दस वर्ष हृदे धरि लीना

चतुर्दश वर्ष पाछे फिरि आवहि । काहे को तू हमि संग धावहि ॥
हे मय्या चितु ठउरे रापो । औरु वालि कछु मुपो न भाषो ॥
हमि सदा सदा रहै तुमि पाहै । कहूं तुमि से दूरि न जाहै ॥
हे सुत कहा तै वात वताई । मै रहो मन पहि रह्यो न जाई ॥
तव श्री रघुपति ताह वतायो । हे माता काहे चितु लायो ॥
तुमि सुष वसो मात इहि ठौरा । सवरु मन ल्यावो नहीं भोरा ॥
कौशल्या कह्यो जो तुम जावो । जानकी लछमन को छडि जावो ॥
जनक सुता वनु कवहू न देष्या । इनि वनु कवहूं न नेत्री पेष्या ॥
कैसे करि वन को इहि जावै । कैसे वन महि पग ठहिरावै ॥
इन हि छोड जावौ रघुराई । कहा करहि इहि बन महि जाई ॥
तव रघुपति ताको प्रनु दीना । हे मय्या मैने क्या कीना ॥
मै इनि कों वहु कहि कहि रहा । इनि मेरो कह्यो मनि महि ना लह्यो
किर्पा करि मोह लेहु छडाई । इहि विनती सुणहो मेरी नाई ॥
कौशल्या कहो जानकी ताई । हे जानकी वनि वहु दु:ख पाही ॥
किन प्रयोग इनि के सग जावो । कित प्रयोग वन को चितु लावो ॥
तुम सुप वसो अयोध्या माही । काहे को तूं वन महि जाही ॥
तव ही जानकी वचन उचारा । विनु रघुपति क्या कामु हमारा ॥
हमि जु रहो नग्रि के माही । रामचद्रजी वन को जाही ॥
रघिपति विनु वहुता दु:ख पावो । रघुपति विनु चितु कासो लावौ ॥
मो पहि नग्रि महि रह्यो न जाई । विनु प्रभ पूर्न रघुपति राई ॥
तुमि किर्पा कर वहु सुपु पावौ । साईदास जो हरि सग जावौ ॥

कौशल्या फिरि तिहि समभावै । अनेक वाति वहु ताहि वतावै ॥
हे जानकी वन सुपु नही कोई । दूख भूख वन महि वहु होई ॥
पग महि काटे अधिक पुडाही । तव दु ख पावै वहु मनि माही ॥
चदनु त्याग भस्म अंग लावै । अंवर त्याग मृगानु उढावै ॥
छत्री भोजन कहा प्रकारा । ऊहा कदमूल आहारा ॥
महा विकट वनु सिंध को त्रासा । निसवासरि बन माहे वासा ॥
मेरो कह्यो मनि महि धरि लीजै । जानकी औरु न मन महि दीजै ॥

मैं तुमि पाहे कहो पुकारा। तुमि मन लेहि वीचारा।।
हे जानकी जो सुख को चाहे। सांईदास इहि सग न जाहे।।८

जानकी फिरि तांको प्रतु दीना। हे माता कहा मनि लीना।।
वन महि सुख होइ अधिकाई। जवि मोहि रघुपति होइ सहाइ।।
कांटे हमिरे निकटि न आवहि। जवि हमि रघुपति पाछे धावहि।।
चदन हमिरे काम न आवै। मिर्ग मृगानु हमा को भावै।।
छत्री भोजनु कहा करावहि। हमि कद मूल लै ले करि षावहि।।
सिघ कहा वलु मोह निकटि आवै। हमि को अपुना त्रासु दिषावै।।
निसबासरि जो वन महि वासा। सदा सदा तहा भोग विलासा।।
हमि छिनु हरि विनु रहिणु न पाही। हमि जावहि रघपति सग ताही।।
तुमि फिरि वाति न कोइ चलावो। हे मोह मात हमि काह संतावो।।
जव कौशल्या इहि सुरा पायो। तांसो फिरि नाह वचनु सुनावो।।
वहुरो लछमरा कौ अैसे आप्यो। लछमन भी ऐसे ही भाष्यो।।
पग धरि सीस गवनु हरि कीआ। लछमन जानकी को सग लीआ।।
रघुपति चल्यो उद्यान के ताई। साईदास सोच मन माहो।।८

श्री रघुपति वन खडि सिधारे। दशरथु मदर परो निहारे।।
मदर चढयो रामु निहारे। जानकी लछमन सहित संभारे।।
जवि लगि द्रिष्ट परे रघुराई। दशरथ दूषू न लागो काई।।
भई भीरा जवि द्रिष्ट न आई। दशरथ द्रिग महि कछु न सुहाई
मदर ते गिर पर्‌यो धरायरा। पर्मि जोति जाइ मिल्यो नरायरा
छूटे प्राण कालु तिस होया। रघुपतिको मन ससा षोया।।
इहि विधि श्री रघुपति सुरा पाई। दशरथु कालु कीयो मेरे भाई।।
दसरथ नृपु देवलोक सिधारे। तव श्री रघुपति मनि वीचारे।।
कर्मि क्रतूत श्री रघुपति कीना। वेद म्रिजादा मनि धरि लीना।।
कर्मि क्रतूत करि आगे धाए। महा विकटि वनु भौ दिषलाए।।
कांटे पुडहि घामु वहु होई। मनि महि सुख नाहि है कोई।।
चले अगस्त के आश्रम आए। छिन पलु इकु दिनु तहू ठहिराए।।
सारंग धन्षु अगस्त ने दीना। श्री रघुपति ले करि महि कीना।।
फिरि वाल्मीक के आसम आए सालमीक ने दसन पाए

ऐसे आस्रम अधिक फिराए। श्री कौलापति त्रिभुवन राए ।।
मिर्ग निर्पि हर को उठि भागै। रघिपति ऋषि सों भापन लागैं ।।
हमि को देषि काहे डरि जाही। किर्पा करि कहो हमि ताई ।।
हे प्रभ तुमि को नाहि पछाने। इहि प्रजोग भागनि चितु ठाने ।।
जा वन महि रघुपति ठहिराए। साईदास तिहि सद बल जाए ।।६

मात पिता गहि दोनो भाई। भर्थ शत्रुघनु बहु सुख दाईं ।।
जहा भर्थु रहे तहू शत्रुघनु। देह दोई ताके है इकु मनु ।।
मात पिता के ग्रहि ठहिराए। विद्या पढिने को चितु लाए ।।
जब दशरथ नृप तजे प्राना। तब कौकेई मनि इहु आना ।।
दशरथ मुप लिष पती पठाई। सभ व्रततु मै ताहि सुनाई ।।
भर्थु शत्रुघनु वेगही आवो। पतीआ निर्पिति तुमि उठि धावो ।।
एकु कार्जु सुत क्षिनु वनि आयो। तुमि पतीआ देषि विल्मु न लायो ।।
पतीआ क्षिन महि भर्थि पहि आई। शत्रघणि को तिन दिपलाई ।।
भर्थ कह्यो सुणा हो मेरे भाई। पतीआ आई रह्यो नि जाई ।।
चलहो चले अयोध्या जावहि। वेग विल्म कछु मूल नि लावहि ।।
दशरथ पित हमि पती पठाई। ईहा रहि क्या कीजै भाई ।।
भर्थु शत्रुघनु तब उठि धाए। नगर अयोध्या माहे आए ।।
नग्रि को लोकु सभे शोकवाना। तिन के मन आनदु ना भाना ।।
दशरथ नृप देवलोक सिधारे। श्री रघुपति पगि वन को धारे ।।
इहि प्रयोग प्रजा सोकवाना। कहा करे कोई ताहि वषाना ।।
भर्थु निर्ष विस्मादि होइ रह्या। तात समे मुषि ते उनि कह्या ।।
किहि प्रयोग प्रजा शोक लेवो। कौन वियोग माहि चितु देवौ ।।
तब काहू ने कह्यो पुकारी। हे प्रभ तुमि लेहो हृदे धारी ।।
रघिपति को वनवासु दिवायो। कौकेई इहि कामु कमायो ।।
तिहि बियोग तजे दशरथ प्राना। हे नृप भर्थ हमि कहा वषाना ।।
सर्घि सभी विधि ठहिराई। कहा होइ जवि समा सिधाई ।।
दशरथ कों षडि तिनहि जलायो। कर्मि क्रतूति फुनि तिनहि करायो
कर्मि कीए आयो ग्रहि माही। कौकेई को कह्यो ताही ।।
हे मोहि मात कहा ते कीना। रघुपति को वनवासा दीना ।।

बिनु रघुपति कैसे सुख होई। बिनु रघुपति हमि सुष ना कोई ॥
रघुपति बिनु हमि तजहि प्राना। रघुपति बिनु जीवनु ध्रिगु जाना ॥
हमि कैसे रहे नग्रि के माही। कहु सुषु कैसे करि हमि पाही ॥
तब कौकेई बचनु उचारा। हे मोहि सुत तै क्या मनि धारा ॥
जब मै इहि विधि सुरा के पाई। दसरथ रघुपति राजु बहाई ॥
मै अनदु लीयो मन नाहे। अति अनंदु हृदे नाहि स्माहे ॥
मो सो मंथरा एहि सिपायो। अति अनदु काहे मनि लायो ॥
जबि ते रघुपति राजा होई। भर्थु नाम लेवे नही कोई ॥
राजु तुम्हारे ग्रहि ते जाई। तब तूं पाछे कहा कराए ॥
हे सुत मोको इनि ही भुलायो। मै इसि कहे इहि कामु करायो ॥
हे सुत जो तै मन इहि धारा। साईदास मोहि कहा वीचारा ॥६

भर्थि कह्यो सुण हो मेरे माई। मो पहि राजु कीयो ना जाई ॥
श्री रघुपतु मिर्गानु उढावै। भर्थु कहा ले वस्त्र हढावै ॥
श्री रामचंदु फिरे बन माहे। भर्थु कैसे कहु राजु कराहे ॥
श्री रामचंदु कदमूल पावै। भर्थु स्वाद कैसे भोजन पावै ॥
रामचंद बसुधा पे सोवै। भर्थु कैसे सिघासन होवै ॥
श्री रामचंद घाम तन सहे। भर्थु कहु किउ सुष गृहि बहै ॥
इहि विधि कहो भर्थ उठि धाए। भर्थु शत्रघन बाहरि आए ॥
मथरा को तिन हि ले बहु मारा। रोम रोम से रकित निकारा ॥
तेने कहु इहु किउ कर्मु कीआ। एहि सिष्य कौकेई दीआ ॥
मार कूट करि फिरि तजि दीई। उरु बाति कछु हृदे न कोई ॥
कौकेई अति मन पछुताई। तब सुत को इहु आषि सुणाई ॥
कहा होइ जबि समा विहाना। साईदास समा पर्धाना ॥

भर्थु शत्रघनु सैना लीने। त्याग अयोध्या बन पग दीने ॥
जिहि मग रघपति बनहि सिधारे। सोई मगु तिह हृदे वीचारे ॥
जहां जहां रघपति जी ठहिराए। सभ ही ठौर देषत बहु आए ॥
भर्थु शत्रघनु जब निकटि आए। लक्ष्मरा ने नैनो निपाए ॥
कह्यो सुणो श्री रघुपनि राई। भर्थु आयो हमि करहि लराई ॥
जो आग्या होइ तां सन्मुख जावो। भर्थु सो जाइ युद्ध मचावो

तब श्री रघपत ताहि सुनायो। हे लक्ष्मण क्या मन ठहिरायो॥
प्रिथमे तुम तो युद्ध न करहो। ले सतोष हृदे महि धरहो॥
देषो भर्थु काहे को आयो। भर्थु क्या मनि महि ठहिरायो॥
जबि श्री रघपति एहि सुणायो। लछमनि बात सुणी ठहिरायो॥
भर्थ शत्रघनु नेत्र पसारे। श्री रघपत तिन्हा द्रिष्ट निहारे॥
सभ सैना को तहं पलायो। रथु तजि पग अपने चलि आयो॥
रघपति को प्रदक्षिणा कीनी। हाथ जोरि मुष विनती कीनी॥
हे प्रभ पर्जा वहु दुःख पायो। तोहि व्योग सभ ही बौरायो॥
हे प्रभ सभ ही भए हैराना। मै तुमि पाहे कहा वषाना॥
जबि ते भर्थ इहि वचन सुनाए। श्री कौलापति मनि ठहिराए॥
हे मोहि भ्रात कहा कहु कीजै। पिता वचन कैसे तजि दीजै॥
जो पित वचन तजे भलो नाही। निद्या होइ हमिरी जग माही॥
कहा पूतु पित वचन न माने। कहा पूति पति कह्यो न माने॥
ध्रिगु ध्रिगु होइ हमहि जग माही। हे मौहि भ्रात सह्यो न जाही॥
कैसे करि मोहि राजु करावौ। कैसे नग्र मांहि ठहिरावौ॥
तुमि करो राजु कह्या मोह मानो। ऊरु वाति कछु हृदे न आनो॥
रघुपति भर्थ कौ आप सुनायो। सांईदास विधि प्रगटि बतायो॥६

भर्थ फेरि करि वचनु उचारा। हे पूर्न प्रभ प्रान अधारा॥
मैं कैसे करि राजु करावौ। राज कर्नि चितु कैसे लावौ॥
तुमि फिरो डोलत वन के माही। हमि सुष कैसे राजु कराही॥
इहि कबहू हमि से ना होई। तुमि विनु राजु करे ना कोई॥
श्री रघुपति प्रभ अंतरजामी। घटि घटि मैं प्रभु है बिस्रामी॥
पग पडाउ प्रभ भर्थ को दीई। इहि करुणा पूर्ण प्रभ कीई॥
कह्यो भर्थ को तुमि वहु ले जावो। सिघासन परि इसे वहावो॥
इसि से पूछ करो तुम कामा। तुमि जानो एही है रामा॥
सभु आइ इमि पर्नाम सुनायो। इसि के तुमि मंत्री कहावो॥
भर्थि षडाउ लीनी उठि धायो। चलति चलति सैना पहि आयो॥
सैना को ब्रितांत सुनाए। सहति लीई सैना उठि धाए॥
आणि सिघासन परि ठहिराए। पग षडांउ श्री रघुपति राए॥

आप तले वहि राजु कमावे। इहि विधि करि भर्थु काम चलावे
सकल प्रजा को वहु सुषु दीना। अनीत दंड काहू ना कीना।।
जो कछु रघुपति ताहि वतायो। तिसी काम कर्न चितु लायो।।
भर्थु भलीभाति राजु करावै। साईदास प्रभ सुख पावै।।

रावण वहिन सूपनकि तिहि नामा। इहि वीचार गह्यो मन भामा
चली चली वन माहे आई। जानकी पहि आइ करि ठहिराई।।
जानकी सों तिन वचन उचारा। सुण हो जानकी कहा हमारा।।
अः तू अति सुदर सुदरताई। तोहि रूप गति कौन वताई।।
इनहि डिगवर सों किउ रहै। संन्यासी सग काहे वहै।।
मोहि वीरु रावण तिहि नामा। महा वली वलु वहु तिहि भामा।।
लंका गढि को राजु करावै। तहा वसै तू बहु सुप पावै।।
त्रैलोकि तिहि वदी माही। हे जानकी समभु मनि माही।।
मोहि संग चलै तुझै ले जावौ। कनकपुरी मैं तोहि दिषावौ।।
महा अधिक सुप ता के पावो। जो तुमि वेग सहित हमि आवो।।
इहि औसरु काहे तू षोवहि। औसरु वीते पाछे रोवहि।।
कनकपुरी महि वहु सुषु पावहि। हे जानकी किउ बनि चितु डुलावहि
वेग बिलम तुम मूल न करहों। कनक पुरी चलने चित्तु धरिहो।।
अति सुगंध अवर अधिकाए। भूषनि षचति मणी पहिराए।।
भोजनु मन वाछहि सो पावहि। नाना अबर अग हढावहि।।
कहा भस्म सो कीयो प्यारा। कहा तैं मन महि लीयो वीचारा।।
त्रिगानु काहे ऊपर लेवै। इहि वन महि कहु कहा करेवै।।
औरु वाति तुमि सकली त्यागो। हे जानकी हमिरे कहे लागो।।
चलहो मैं तुम को ले जावो। नृप रावण पहि खडि पहुचावो।।
त्याग देह तू इनि को सगा। कहा भस्म लगावे अंगा।।
इने त्यागु मेरे सग आवो। साईदास अधिक सुष पावो।।

जानकी सौ जबि एहि सुणायो। जानकी क्रोध लोचन ललायो।।
लछमन को तब लीओ बुलाई। हे लछमण सुण आगे आई।।
सूपनक मोसों ऐसे भाषहि। ऐसे वचन इहि मो सौ भाषहि
मोह वीरु तिहि वलु अधिकाई कनक पुरी को राजु कराई।

त्रैलोक तासि वदि माही। हे जानकी उहु रहे सदाही ॥
तू चलु मो संग तुझै ले जावौ। कनकपुरी षडि तुझे दिपाववौ ॥
तहा महा अधिक अंवर हंढावै। भूषन अधिक वहु तोहि पहिरावै ॥
जो कछु तू मुप ते उचिराही। मोहि बीरु वहु करे तदाही ॥
इहि सन्यासी सग किउ रहे। वन माहे काहे तू वहे ॥
मो को ऐसे वचन सुनावै। अति क्रोधु मोहि मन उपिजावै ॥
अधिक दुःख मोको इनि दीना। एहि वचनु जो मोसौ कीना ॥
अवि मै तुम सौ कह्यो सुनाई। साईदास लछमन सुरा पाई ॥

लक्ष्मरा जवि सुराी इहि विधि काना। अति क्रोधु उठ्यो मन माना
उनिहि सूपनकि ताई कह्यो। हे सूपनकि कहु क्या तै कह्यो ॥
जानकी को चाहित हिरि लीआ। हे सूपनकि तै क्या मनि कीआ ॥
नाकु कान दोऊ कटि डारे। लछमन चाहति तिहि प्रहारे ॥
जानकी कह्या त्याग इसि देवो। आवो प्रभ की सेव करेवो ॥
लछमन सूपनक को छाडि दीआ। इहि कारगु लछमन ने कीआ ॥
सदा अनदु वसे वन माही। नग्र माहि कवहूं ना जाही ॥
वन फल ले करि उदर भरायरा। निसिवासर तिहि असे भायरा ॥
कुटीआ छाइ रहे वन माहे। कदमूल वन से ले षाहे ॥
जैसे तपसी भजनु कमावहि। सांईदास प्रभ के गुन गावहि ॥

सूपनक परदूषनि पहि गई। तासौ जाइ करि सभ विधि कही
दोनो वीर एकि सग नारी। नाकु कान उनि हमि कटि डारी ॥
तुमि होवति हमि इहि विधि होई। तुमि विनु नाह सहाई कोई ॥
तुमि बल करि उनि को प्रहारो। जिउ जानो त्युं तिन को मारो ॥
फिरि सुवाहु सौ आपि सुणायो। हे मोहि वीर सुणो चितु लायो ॥
श्रवरा नाकु हमिरा कटि लीआ। मो सिरि इहि विधि तिन कीआ।
सन्यासी रहे वनि के माही। एकि त्रीआ सुदर सग ताही ॥
मो सो उनि ने ऐसा कीआ। कानि नाकु हमिरा कटि लीआ ॥
अवि मै तुमि सौ आपि सुरगायौ। वेग विलम मै मूल नि लायो ॥
तुमि जाइ करि तिन को हनि लेवौ मोहि तुमहि करेवौ

तुमहि त्याग कौन पहि जाई। अपुनी विर्था किसे सुणाई॥
जो मोहि विर्था को करो उपराला। नाहि त हमिरो को नही हाला॥
मोहि कह्यो मन महि टहिरावो। साईदास वेग उठि धावो॥६

खर दूषन तिहि वलु अधिकाई। ऊरु सुबाहु सुणो मेरे भाई॥
खर नी अर तीनो वलिवाना। ताहि कह्यो इनि मनि महि माना
रघपत सौं युद्ध कर्न धाए। अधिक सैना वहु सग ल्याए॥
तिन को नामु कहा वीचारा। चिरा परि को नामु सम्हारा॥
ज्यु ज्यु धर्नी परि पगु धरही। युद्ध कनि को गवनु जु करही॥
मानो स्थावर गिरि पर्‌या। धर्नी धरि चितु डोलनि धर्‌या॥
धौल्हु कपमान होइ रह्यो। दो पति द्रिष्ट कछू ना कह्यो॥
मो परि भारु सह्यो ना जाई। हे कौलापति सत सहाई॥
इहि विधि धौल मन महि वीचारे। कौलापानि विधि जाणनहारे॥
चले दैति वन माहे आए। महा वली तिहि वलु अधिकाए॥
चहू ऊोर आइ घेरा पाया। चाहित हर सौं युद्ध कराया॥
रघुपति लछमन कुटीआ माही। जानकी सहित ठाढे है ताही॥
जानकी जवि वनु द्रिष्टी आया। दैति अधिक द्रिग सौ निषयिा॥
तव ही कह्यो सुण रघुराई। असुरो सैना अति उमिडाई॥
कैसे इनि सौ सन्मुष होई। कैस वीजु असुर का षोई॥
हमि थोड़े इहि है अधिकाई। इनि संग वलु हमि कछु न वसाई॥
तव ही रघपति नैन पसारे। असुर अधिक वनि माह निहारे॥
धन्ष वाण ले सन्मुख धाए। मारि वाण सभ असुर हिताए॥
काहू सीसु काहू कर काटा। काहू भुज काहू नकु काटा॥
काहू को प्रभ ने जीउ षोया। कोई दु ख पाइ मन महि रोया॥
काहू के पगि प्रभ कटि डारे। इहि विधि कर्के सभ ही मारे॥
छूटे सो जिनि द्रिष्टि दिषाई। ऊरु न छूटे को मेरे भाई॥
हरि स्मसर कहा कोई होई। हरि स्मसर दूजा नही कोई॥
तिन को हति फिर कुटीआ आये साईदास वहुता सुष पाये

इसि भुज महि बलु है अति भारी। एही विधि तनि मनि वीचारी।
अवि जावौ मै रावण ताई। उसि विनु वेरु लए कोई नाही।
चली चली रावण पहि आई। सभ विर्था तिहि आपि सुनाई।
दो तपसी बैठे वन माहे। तिन संग नारी एक सीता है।
अति सुदर मंदर उजीआरा। जहा बसे मिटि जाइ अंधारा।
रव सस रूप तिहि देष लजावै। ताहि रूपु कछु कह्यो न जावै।
मेरे मनि महि एही आई। जवि मै देषी सुदर ताई।
इसि समसर मोहि वीर धराही। वनिता सुदर तां कोई नाही।
किसी भाति करि इसे ले जावौ। रावण को पडि के दिपलावौ।
ताहि नारी सौ प्रश्नु चलाया। तासौ इहि विधि आपि सुणाया
काहे ईहा रूपु गवावै। भस्म अग काहे को लावै।
इनि तपसी सों कहा प्यारा। मेरो कहा लेहु वीचारा।
काहे इसि वन महि दुख पावै। काहे को मिर्गानु उढावै।
रावण नृपु तिहि बलु अधिकाई। कनक पुरी ताकी सुखदाई।
कनक पुरी महि राजु कराए। उहि तुम सुष देवै अधिकाए।
मोहि सग चले तुभै ले जावौ। कनक पुरी क्षिप्रमहि दिषावो।
तुमहि वस्त्र उहु अधिक उढावै। नाना रग भूपन पहिरावै।
चोआ चंदन अधिक लगावहि। महा सुषी सुष वहुता पावहि।
जवि मै उसि कौ एहि सुनायो। एक तपसी को तव ही वुलायो।
एही विधि उनि उसि सौ भाषी। इहि वनिता मोहि इहि विधि आषी
तव मोकौ उनि भुज ते गह्या। मो कौ इहि विधि उनि ने कह्य
हे वनिता कहां इसे सुनायो। चाहिए इसि का चितु वौरायो।
इहि कहि नाकु कानि कटि डारा। चाहिति था वहु मो कौ मारा।
तव उनि वनिता उसे सुनायो। तपसी से तव मोहि छडायो।
मै खर दूषन पाहे आई। सकल वाति मै ताहि सुनाई।
औरु सुवाहि पाहे भी भाषा। परनीअर कौ भी आषा।।
वहु सैना ले करि उठि धाए। उनि तपसी सो युद्ध कराए।।
उनि तपसी उनि को प्रहारा। काहू कर काहू सीसु विडारा।
उनि को वलु तिहि नाह वसायो। उनि तपसी ने ओहु हिरायो।
तो विनु वैरु मोहि कौण लेवै। तो विनु सुषु मोकौ कौण देवै।

मोहि नाकु कानि कटि दीआ। इहि कर्णु तिहि तपसी कीआ ॥
कहा करो का पहि जाइ आषो। तुमि विनु विर्था कां पहि भाषो।
अधिक दुःख मैं तासौ पायौ। हे वधू अवि ताहि सुनायौ ॥
हे वधू हमिरो वैरु लीजै। साईदास कछु अवर न कीजै ॥१

जव रावण सुनी इहि विधि काना। अति क्रोधु लीनो मन माना ॥
मानो सिंधु क्रोध पलोयो। मानो नैन रक्ति चुवोयो ॥
क्रोधु कीयो लोचन ललाए। कंप कप करि फिरि ठहिराए ॥
औलु अधिक मन महि भौ माना। रावण क्रोधु मनि माहे आना ॥
ताहि तेजु का रहि सह्यो न जाई। महा सूर्मा अति वलि काई ॥
तिहि वल ने त्रैलोक कपाए। थर हर थर हर मनु डोलाए ॥
क्रोधमान हो वचनु उचारा। ताका सकला कहों वीचारा ॥
कह्यो मरीच वुल्याइ ल्यावो। वेग विलम तुम मूल नि लावो।
तव ही मरीच वुलाइ ल्याए। पलु छिनु रचकि ढिल नि लाए ॥
तव ही मरीच सो कह्‌यो सुनाई। सुणहो मरीच हमारे भाई ॥
दो तपसी एक त्रीआ रहे। इसि वन माहे आस्रमु लहे।
उनि तपसी ने इहि कर्मु कीना। कानि नाकु सूपनकि कटि लीना।
तव ही मरीच कह्यो सुणु राया। तपसी किउ इहि कामु कमाया।
इहि वीचारु नृपि मोहि सुनावो। छिनु पल रचक विलमु न लावो।
तव रावण सभ वाति सुणाई। सुणहु मरीच हमहि सुपदाई।
सूपनकि चली गई वनि माही। जानकी रामचदु सो जाही।
औरु लछमणु रघपति को भाई। वन महि तिह नै कुटी बनाई।
जानकी रूपु महा उजीआरा। तिमर को नासु करे तत्कारा।
रवि तांमौ सममर ना होई। दूजा रूपु समसर ना कोई।
ताहि देह कोमल मेरे भाई। तासि देहि वनि भस्म लगाई।
अंवर त्याग मृगानु उढायो। अनरस वांछ कंदमूल पायो।
तांसौ सूपनकि वचनु सुनाया। हे जानकी क्या रूपु कराया।
तव अगु कोमल पुसपुन होई। तोहि स्ससर दूजा नही कोई।
तोहि रूपु देषि भान छपि जावै। ताहि रूप सस वदन दुरावै।
किहि प्रयोग इहि भेषु बनायो किहि प्रयोग अग भस्म लगायो

अवर त्याग काहे तैं दीए। अंग मृगानु उढाइ किउ लीए॥
इनि तपसी संग क्या तेरो कामा। मोहि कहा सुरण ले तूं भामा॥
मोहि वीर लका को राजा। सकल जगत तांकौ मुहिताजा॥
सुर नर ऋषि मुनि ताहि ध्यावहि।
ताहि कह्या मनि महि ठहिरावहि।
मोहि सग चले तुझै ले जावौ।
आप बीर ग्रहि तुझै पडि ठहिरावौ।
महा अधिक सुषु तहा तू पावहि।
हे जानकी जो माहि सग आवहि।
अबर नाना तोहि उढावहि।
भूपन अनक तोहि पहिरावहि।
जो मुख मांगै पावरा कौ देई।
तेरो कह्या मनि महि धरि लेई।
हे जानकी काहे दु:ख पावहि।
मो सग किउ नाही तूं जावहि।
इहि तपसी तुमि को क्या देवहि।
निसि दिन किउ दु:ख मनि महि लेवहि।
जबि सूपनकि इहि बात सुणाई। जानकी लछमन लीओ बुलाई॥
ताहि कह्यो मोसो ऐसे आषे। इहि विधि सूपनकि मो सो भाषे॥
तब लछमनसूपनकि सो कह्यो। हे सूपनकि क्या तैंने कह्यो॥
जा हिति जानकी कौ बौराई। कहा बात तैं इसे सुनाई॥
एहि विधि कहि नाकु कानि कटि डारा। सुन हो मरीच एही वीचारा
कित विधि वैरु ताहि सो लेवहि। किउ जानकी तांसौ हिरेवहि॥
तब मरीच ने वचनु सुनायो। हे नृप तुमि क्या मनि ठहिरायो॥
जो कछु तुमरे होइ वीचारा। सोई हमि करहै तत्कारा॥
तब रावरण ने वचन उचारा। हे मरीच मोहि एहु वीचारा॥
कनक मिर्गु तुमि होइ करि जावहु। अपनो रूपु तुमि ताहि दिषावो॥
तुमिरो रूपु वहु देषि लुभाए। रामचदु तुमि पाछे धाए॥
जबि रघुपति तुमि पाछे आवै। बानु गहै करि तुमहि चलावै॥
तू कहे रामचदु मैं मारा। एहि बाति तुमि कहो गटकारा॥

लछमनु करिन आवै उपिराला । जानकी कोई न होइ रखिवाला ।।
मै जानकी कौ हिर ले आवौ । वेग विलम तुम मूल न लावौ ।।
तव मरीचि ताको अतु दीना । हे नृप कहा तै मनि महि लीना ।।
विस्वामित्र जवि यज्ञ रचायो । हमहि भृष्टि कनि चितु लायो ।।
हमि जाहि यज्ञु भृष्टि करावहि । करि भृष्टि यज्ञ तिहि भर्मावहि ।।
श्री रघपति कौ ऋषु ले आया । यज्ञ समे तिहि आरण वहाया ।।
हमि यज्ञ भृष्टकनि चितु धरचा । रघपति धन्षु बाण हथ भरिआ ।।
हमि कौ ऐसे वाण लगाए । हमि बलवान सभे हिरवाए ।।
अवि लगि वलु हमि ठौर न आवै । हमिरो पगु धनि ना ठहिरावै ।।
रघपति नाम सुणहि जवि काना । कपमान होवति हमि प्राना ।।
कैसे करि तिहि सन्मुख जावहि । तिहि आगे किउ करि ठहिरावहि ।।
हे भूपति इहि कामु न मेरा । सांईदास मैं तुमिरो चेरा १०

रावण नृप फिरि वचनु उचारा । हे मरीच तै क्या मन धारा ।।
जवि तुमि भृष्टि कनि जगु धाए । श्री रघपति तव यग्य परि आए ।।
तिहि समे राज को वलु तिहि पाई । भोजनु कीनो तिहि समे पाई ।।
वस्त्र भले तव अग हढावै । मनु माने सोई ले षावै ।।
दुःख सुष तव कोऊ न लागो । सभ विस्वासु हृदे दे भागो ।।
अवि वनि रहै कद मूल षावै । ले मृगानु वहु अग उढावै ।।
दुःख घणो तिह सुष नही कोई । हे मरीच कहो सुण सोई ।।
मन महि कछू न करो त्रासा । हृदे धरि गोबिंद की आसा ।।
चले चले वनि माहे जावो मिरगु कनक होइ ताहि लुभावो ।।
इहि विधि मैं तुमि दीई वताई । श्रवण धार सुण ले मेरे भाई ।।
मोह कहे अंतरा उन आनो । हमिरो कह्‌यो सत् करि जावो ।।
तात्काल जाओ वनि माहि । साईदास तहा मो कछु नाही १०

फिरि मरीच तिहि वचन सुनायो हे रावण नृप कित चितु लायो ।।
जैसे पडित बाल पडावै । तैसे तूं मोको स्माभावै ।।
मैं नही वाल्लु जो लिख लेवौ । तोहि सिखले जाइ जीउ देवौ ।।
एहि जु तैने कह्‌यो पुकारा । तव इनि राज को वलु अति भारा ।।
छत्री प्रकार को भोजन पायै अंवर नाना अंग हंढावै ।

अवि तो कंद मूल अहारा। अवि को वलु नाहि अधिकारा।।
हे नृप जिहि वलु होइ सो होई। तांको वलु पसि लए न कोई।।
महा गम्भीर पर्म पुर्षायण। जांकी उस्तित कही न जायण।।
घटि घटि माही इसे प्रकासा। घटि घटि अंतर षेलु तमासा।।
मैं इसु सन्मुख किउ करि जावौ। सन्मुख जावौ वलु नही पावौ।।
मोहि पग आगे को नही जावै। डर्पिमान होइ पाछे धावहि।।
जैसे मृगु निर्ष सिह ताई। ग्रह तजि भागनि को चितु लाई।।
वाज को निर्ष जैसे षगु भागे। तेजवानि होइ उडवण लागे।।
जैसे तंत्र मंत्र के आगे। जिन्न परी सभ ही उठि भागे।।
जैसे जपक' स्वान निहारे। वनि महि भागनि को चितु धारे।।
जैसे नर को रव सुन त्रासा। ओषद अध्कि करे मुप प्यासा।।
जैसे रवि प्रकास तिमरु मिट जाई। तिमरु को वलु रवि नाहि वसाई।।
तैसो वलु मोहि तिहि नही लागे। हे नृप ताहि देषि मनु भागे।।
कहु कैसे करि सन्मुख जावौ। कहु कैसे मनि को ठहिरावौ।।
मोहि पे धीजु धर्‌यो न जाई। हे रावण मैं आपि सुनाई।।
जासो वलु कछु नाहि वसाई। कहु कैसे तिहि करहि लराई।।
जो आपसि ते होवे बलवाना। हे नृप तिहि कैसे करहि हाना।।
सिह सन्मुख कपि मिगु न होई। साईदास आषै अवि सोई १

रावण कहचा सुणहो मेरे भाई। कौनु वाति तुमि मनि ठहिराई।।
तुमि सग उनि का कछु न वसावै। कद मूल सौ षुध्या मिटावै।।
ताका वलु एता कहा आयो। जो तुम को वहु सके हितायो।।
अवि तुमि जावो विलम न लावो। मेरो कह्‌यो मन महि ठहिरावो।।
तव ही मरीच ने कहचो पुकारा। तहा रावण नही कामु हमारा।।
मै जावो मनु नाही जावै। विनु आग्या मनि पगि किउ धावै
जवि राजा आज्ञा ना देवै। तन को कौणु उठाइ करि लेवै।।
सैना ताहि वाहिर नही जावै। जवि राजा आज्ञा करि लेवै।।
सैना तिसि घटि उठि सेवै।।
जहा राजा जावै तहा जाही। तिह विनु नगर महि ना ठहिराही

जपक < जबूक गीदड़

तैसो मनु राजा मेरे भाई। इहि विधि मै तुमि आषा सुणाई
बिनु आग्या इस पग किउ जावहि। साईदास विधि वेग बतावहि १०

जबि मरीच इहि बाति सुणाई। रावण तबि इहि मनि ठहिराई ॥
मोहि कह्यो माने इहि नाही। इनि कछु औरु लीयो मन माही ॥
इसि कौ त्रासु देवौ अधिकाई। त्रासु पाइ तब ही उठि धाई।
रावण तांसौ कह्या पुकारा। हे मरीच तै क्या मन धारा ॥
वेग न लावौ उठि करि तुमि धावो। कनक मिर्गु होइ ताहि दिषावो ॥
जो जावहि तौ वहु भलो भाई। इहि विधि तुमि दीई बताई ॥
नाहि त अवि ही मै तुझो मारो। पकरौं पगो तै धर्नि पछारो ॥
अवि ही मार जीउ तेरा लेवौ। वेग विलम कछु नाहि करेवौ ॥
जो अपुनो कछु वहु भलो चाहे। कनक मिर्गु होइ तिहि पहि जाहै।
तहां तोहि दुख सुपु कछू नाही। जो भलो होइ मो ले मनि माही ॥
मतु पाछे कहे मोहि न कह्या। विनु आषे हमिरो तनु दह्या ॥
अवि मै तुमि कौ कहों सुनाई। सांईदास सुण ले मेरे भाई ॥ १८

तब मरीच मनि माहि बीचारा। नृप रावण मनि महि उर धारा ॥
जो नही जावौ मारि चुकावै। जो जावै मनु वहु दु:ख पावै ॥
दोई कठिन वनी क्या कीजै। कौन बाति मन महि धरि लीजै।
जो इहि मारै औगति जावौ। वार-वार जूनी भर्मावौ ॥
जो रघुपति कर्त हनि प्राना। मुक्ति होवौ मिटै आवण जाना ॥
एहि भलो हरि सन्मुख जावौ। इहि वुरो इसि थी मृतु पावौ ॥
तब रावण सो कह्या सुणाई। काहे क्रोधु करों मेरे भाई ॥
जो तुमि कहो सोई मै करिहौ। औरु बाति किते चित्तु न धरिहौ।
जिहि विधि करि तुमि वहु दु:ख पावो। सुख त्याग दु:ख के घरि आवो।
सौ विधि हौ काहे कौ करिही। सो विधि कर्न किउ चितु धरिही ॥
काहे नृप तुमि क्रोध धरि आवो। कित प्रयोग तुमि शांति तजावो ॥
हमि तुमि सैना तुमि वडे भाई। सांईदास तुमि सदा सहाई ॥ १९

जबि रावण इहि विधि सुणी काना। अति अनंद तब ही मनु माना ।
तब ही मरीच सो वचन सुनायो हे मरीच चितु वहु भलो लायो

धन्न धंन्न है मत्त तुम्हारी । मोहि कहचा घटि लीओ वीचारी ।।
जो तुमि कहो सोई कछु देवो । तोहि कहो मन महि धरि लेवौ ।।
तू आगे चलु मै पाछे आवौ । वेग विलम मै ना कछु लावौ ।।
कनक मिगु मरीच हो धायो । चलति चलति वनि माहे आयो ।।
जहां राम जी कुटी वनाई । ताहू निकट गयो मेरे भाई ।।
रावण ताका पाछा कीना । वनि महि आइ दुराइ आप लीना ।।
जानकी जलु लेने को धाई । चली चली जल के तटि आई ।।
जलु ले कुटीआ को पग दीने । कनक मिगु निर्ष द्रिग लीने ।।
जानकी मन अभिलाखा होई । सभ त्रितनु कहो मै सोई ।।
जो मृगु इहि को हनि करि ल्यावै । ताहि तुचा मेरे मनि भावै ।।
तिमी तुचा की कुचकी वनावौ । सोई कुचकी अग उढावौ ।।
जलु ले कुटीआ माहे आई । श्री रघपति को कह्यो सुणाई ।।
हे प्रभ कनक मिगु हनि लेवौ । मृग कौ हनि तुच इसि मोहि देवौ ।।
ताहि कुचली भली सुहावै । हे रघपति इहि मोहि मनि भावै ।।
तव श्री रघिपति ताह सुनायो । हे जानकी क्या चितु लुभायो ।।
अैसो मिगु कवनाहि उपायो । कवहू द्रिग सो ना निर्षायो ।।
इहि कछु छलन वलन ईहा आयो । एसो मृगु मैं नाहि उपायो ।।
इसि की चिता मनो त्यागो । इसि चितामार्ग ना लागो ।।
कनक मिगु एथ ही देपाई । हे जानकी स्मभु स्मभाई ।।
मेरो कह्या मन धरि लीजै । इसि मृग देपन चित्तु न दीजै ।।
इहि मृगु हमिरे काम नि आवै । काहे इसि देष चित्तु लुभावै ।।
इसि मृग मारि क्या हमि लेवहि । सांईदास इहि चित्तु न देवहि ।।१

जवि श्री रघिपति एहि सुनायो । जानकी प्रतु तवि तासु वतायो ।।
जवि तुमि रच्यो नही मृगु ऐसा । एहि मृगु प्रगटि भयो प्रभ कैसा ।।
जवि तुमि इह मृगु कवहू न देष्या । अवि कैसे प्रभ द्रिग सो पेष्या ।।
जो इहि छलनि वलन हमि आवै । केतक वलु हमि को छलि जावै ।।
तुमि इसि मार्ग ताई हनि लेवहु । कृपा करो तुच इसि हमि देवहु ।।
उौर उौर काहे किछु आषो । अैसी विधि तुमि काहे भाषो ।।
अैसे कहो हमि हन्यो न जाई । हमिरो वलु इसि सो न वसाई ।।

और बानि कहि काहे दुरावो। और वाति प्रभ काह चलावो॥
तव श्री रघपत कह्यो पुकारे। इहि वलु क्या जो जाइ न मारे॥
एक वाण सो इसि हनि लेवौ। द्वितीया घाउ इसि अग न देवौ॥
तै जानकी क्या मन महि धारा। कौन वाति मन लई वीचारा॥
इहि विधि मै तव तोहि वताई। घटि अपुने मै सोभी पाई॥
अपूर्व मृग द्रिष्ट मोहि आया। इहि विधि मृगु मै नाहि रचाया॥
तव जानकी कह्यो सुण रघुराई। किउ नही हन्यो जो हन्यो जाई॥
तव जानकी एहि वाति चलाई। रघपति तव मनि महि ठहिराई॥
जाण बूझि रघुपति वौराना। कर महि लीआ धन्षु अरु वाना॥
धन्षु वाण ले तेहि पाछे धायो। लछमन जानकी पाहि वहायो॥
मृगु लीए लीलीए केतक गयो। एक विर्छ के जाइ ओल्हे भयो॥
तहा जानकी लछमन दिष्ट न आवहि। कूक करी तव वहि सुण पावहि
श्री रघुपति तव धन्षु सभारा। चाहति कनक मृग कौ मारा॥
जो रघुपति सरधनि दिपावै। कनक मृगु तव गगनि को धावै॥
जौ प्रभ गगनि ओर सर ल्यावै। कनक मृगु पताल कौ जावै॥
जो प्रभु सरु ले पाताल निहारे। वहुरो मृगु मध्य चितु धारे॥
कनक मृगु तव हन्यो न जाई। साईदास रघिपति चित आई॥१०८

पाताल अरु मध्य गगनि चितु रापा।
वाणु लीयो ले कर महि रापा।
कर ते छाडि वानु मृगु मारा।
तिह समे मृग ने एहि पुकारा।
मै तो रामचद कौ मारा।
करि वलु अपना ताह प्रहारा।
तब ही जानकी ने सुण पाया।
लक्षमन सो तव आष सुणाया॥
हे लछमन कछु विधि सुणी काना।
हनि लीए किने मेरे प्राना।
श्री रघिपति के पाछे जावो।
ताहि षवरि मोहि आण सुणावो।

किन ही रघिपति को हनि लीआ।
इहि विस्वासु मेरे मन कीआ।
छिन पल विलम तुमि मूल नि लावो।
श्री रघिपत के पाछे जावो।
कहा भयो नहा क्या कछु होया।
मोहि मनि अवि विस्वासु है पोया।
अवि ही किनि ही एह पुकारा।
श्री रघिपति कौ मैने मारा।
हे लछमन जावो तत्कारा।
कहा कति है मनि वीचारा।
मेरो कह्यो हृदे महि ठहिरावौ।
साईदास छिनु विलमु न लावौ।१०६

लछमन फिरि तांको प्रतु दीना। हे जानकी तै क्या मनि लीना।।
अैसो कौरण जो रघिपति मारे। अपुने बलि कर राम प्रहारे।।
अैसो हमि सूझति कोऊ नाही। सोच वीचार रह्यो मन माही।।
प्रानपति को कौणु हनाई। वलकरि रघुपति हन्यो न जाई।।
अैसा को मोहि द्रिष्ट न आवै। जो श्री रघपति कौ हति जावै।।
सकल जीइ उतति है ताकी। कौनु वरावरि करे कहु वांकी।।
जो कोई अनल अनीलि कौ मारे। सो भी रघपति नाह प्रहारे।।
आत्मु किसि पहि हन्यो जाई। वह पूर्ण पद रघिपति राई।।
त्रैलोकि मिल करि जो आवहि। सो भी रघपति हन न पावहि।।
ब्रह्म विष्णु महेस जो आवै। दूरो देष नमिस्कारु करावै।।
श्री रघपति तिह सर ना कोई। कहु तिहि हनिनो कैसे होई।।
लछमण ने जवि एहि पुकारा। साईदास मन महि वीचारा।।११०

जनक सुता कह्यो लछमन ताईं।
हे लछमण कछु सुणओ नाही।
मोहि श्रवण इहि विधि सुणि पाई।
सो मै तुमि सौ आपि सुणाई।

किनही रघिपति को प्रहारा।
मोहि श्रवण सुनि मनु इहि धारा।
जो तुमि भला करो तब जावौ।
श्री रघिपति को वेग ल्यावौ।
नाहि त निकिस जाहि मोहि प्राना।
औरु बाति मैं कहा वषाना।
तिमरु भयौ मोहि नैनो आगे।
बिनु रघिपति वहु नाही भागे।
जैसे बादर रवि को छावैं।
सकल जगति अंध्यारा पावैं।
जवि लगि पवन मडलु नही आवैं।
तव लगि बादर दूरि न जावैं।
जवि ते अग्नि मंडल प्रगटावैं।
वलि अपुने करि बादल बिघरावैं।
मोहि द्रिग आइ आइ बैठो है छाई।
मोहि द्रिग मैं कछु नाहि सुझाई।
अ: रघपति अनल आवै मोहि पाहे।
बियोग वादल हमिरे विघराहे।
अवि मैं तुमि को आषि सुणायो। साईदास मैं वैठा वतायो॥१११

लक्ष्मण जानकी फिरि समिझावैं। अनेकि बाति वहु ताहि बतावैं॥
हे जानकी तू भई इयानी। कौन बाति मनि अतरि आनी॥
सिंह को त्रासु कौनु मृगु होई। सिंह समान मृगु नही कोई॥
बाजु कौनु पग ते डरु पावै। तिहि स्मसर को वलु न धरावै॥
श्री गोपाल भक्तिनि सुषदाई। ताह सर कहु जग कौनु कराई॥
फिरि फिरि कहे तुमहि भवि जावो। श्री रघिपत की ओर सिधावो॥
मोहि चितु ना डोलति कैसे जावौ। तुझै त्याग कैसे उठि धावौ॥
जवि लछमनि एहि कहृया पुकारा। ता को जानकी दीयो वीचारा॥
हे लक्ष्मण तैं इहु मनि आना। मनि अपुने सहिज कर जाना॥
रघिपति को हते मैं हसि लेवौ पून वाछा मनहि करेवौ।

इहि प्रयोग तू नाही जावै। मनि माहे तू कपटु कमावै।।
जो तुमि इछा हो करो सोई। मांईदास होवरण हो सो होई।।१९

जवि जानकी इहि वाति सुरणाई। लछमन क्रोधु कीयो अधिकाई।।
करि क्रोधु तिनि वचनु उचारा। हे जानकी तै इहि मन धारा।।
एहि विधि कहि मोहि वाणु लगायो। अंतरु वाहर सकल जलायो।।
लक्ष्मरण कहृचो पुकारे ताही। करी पुकार ताहि रवि पाही।।
हे रवि जी मोहि साषी होई। एहि साप मै तै कहोई।।
कीई कार अतर वहिर हे। वाहर पगु धरै तनु मनु दहे।।
जानकी इहि मोहि वचनु मुनायो। मोहि कनि को तुमि चितु लायो।।
इहि प्रयोग जावो तुमि नाही। श्री रघिपति कौलापति पाही।।
इहि चानकि इनि मोहि लगाई। मो पहि चानकि सही न जाई।।
जो कछु विघ्नु होइ नाही जानो। इहि विधि मै तुमि पाहि वपानो।।
मै जावति हो रघवीर पाही। अवि इसि ठौर रहो मै नाही।।
रवि को लक्ष्मरण साक्षी कीआ। जानकी उौरि कार तिनि दीआ।।
कुटीआ त्याग तव ही उठि धायो। सांईदास रघुपति पदि आयो।।१

रावण जोग भेषि करि लीना। जानकी हिर्ने को पगु दीना।।
चल्यो चल्यो आयो कुटीआ पाहे। निर्ष्यो तपसी को घरि माहे।।
नाथ नाथ कर मुखो पुकारा। जागे नाथु सो वे ससारा।।
हे माई भिक्षा कछु ल्यावो। भिक्षा कछु हमिरे पत्र पावो।।
जानकी कछु भिक्षा ले आई। रावरण ताकौ कह्यो सुनाई।।
वांधी भिक्षा काम न आवे। मै नही लेवौ मनु सुकचावै।।
जो वाहिर आइ देवै माई। हिषि मान होइ लेवौ साई।।
जानकी कह्यो वाहिर ना आवो। विनु आज्ञा कैसे पगु पावौ।।
लछमन मोह गयो कह भाई। वाहरि पगु देवरणा नाही।।
रावण तव कह्यो स्नापु लगावौ। विनु भिक्षा लीनी उठि जावौ।।
जव स्नापु को लीनो नामा। जानकी दुःखत भई अंतराना।।
कार त्याग भिक्षा ले आई। आपु न देहि मोहि सह्यो न जा
चामि षालि महि ले करि डारी। उौरु वाति कछु हृदे न धारी।।
ताहि लीए पग मग महि दीए। कनक पुरी को तिन पग कीए।।

श्री रामचन्द्र जवि वीरु निहारा। लक्ष्मरा सौ तव कह्यो पुकारा॥
हे लछमन तंने क्या कीग्रा। जानकी ओर त्याग किउ दीग्रा॥
असुर फिरति वन महि अधिकाई। जानकी को कोऊ हिरि ले जाई॥
जानि बूझ तू भर्म भुलायो। हे लछमन क्या मन ठहिरायो॥
इसि का मो को देहि वीचारा। साईदास तै क्या मन धारा॥११

लछमन नै ताको प्रतु दीना। हे रघिपलि मै इहि मन लीना॥
जवि तुमि कनक मिर्गु हनि लीग्रा। हतनि समे मृग भाषा कीग्रा॥
मै हति लीनो रघिपति ताई। बलु अपुनो कर्के अधिकाई॥
मिर्ग वचनु सोता सुरा पायो। मौ सौ तिन ने वचनु सुनायो॥
हे लछमन तूं भी उठि जावो। श्री रघपति की ओरि सिधावो॥
श्री रघिपति को किन हनि लीग्रा। इहि कार्णु किन ने हे कीग्रा॥
मोहि मन उपज्यौ विस्वासा। मोहि मुख ते निकसति नही हासा॥
हे प्रभ मै कह्यो जनक सुता है। रघिपति कह पै हन्यो न जाहे॥

अनेकि अनक विधि कहि स्मझायो।
मोहि कह्यो तिन मनि नही भायो॥

चानकि वानु ताहि मोहि लायो। मो सों अैसे वचनु सुनायो॥
तू चाहित को रघपति मारे। मन माहे तू एहि वीचारे॥
पाछे जानकी को मैं लेवौ। ता संग भोग विलास करेवौ॥
हे प्रभ हमि इहि वचनु सुनायो। रवि कौ सापो तवि करायो॥
इसि प्रजोग मै तिहि तजि आया। साईदास मोहि वाणु लगाया १

मृगु मारि कुटीआ को धाए। सस बुढायो तिमर प्रगटाए॥
क्या निर्षहि जो जानकी नाही। इहि निर्पि वहु मन पछताही॥
जाण बूझि हमि कीओ कामा। मुखि ते कह्यो पूर्न प्रभ रामा॥
जैसे फूल जल बिनु कुमलावे। जैसा भूषा भोजनु पावै॥
जैसे डारी रूपु गवाए। मन माहे वहुता पछुताए॥
जैसे पिगुला कर पग ताई। मनि माहे रोवति अधिकाई॥
जैसे सीआह गोसे षराना। मन माहे होवति हैराना॥
तैसे रघिपति रहे विस्माई। कहा वीचारु सुनावौ भाई॥
विस्म भए विस्मक ठहिरानो अति वियोग ताहू मन मानो

कहा होइ पाछे पछुताए। कहा होइ जो समा सिधाए।।
महा अधिक दु:ख रघिपति पायो। जवि जानुकी द्रिग ना ह्रिषयो।।
अति वियोग भयो मनि माही। साईदास कछु कह्यो न जाही ११

रावण जानकी को ले धाया। केदहि ने इहि विधि निर्षाया।।
केदहि रावण के सन्मुख आया। युद्ध कर्नि को तिह चितु लाया।।
रावण केदहि के दहि नृपु मारे। दोई वलवान कोई न हारे।।
केदहि अनक युद्ध नृप सौ कीना। किन हू तिन से हार न दीना।।
केदहि रावण को जान न देवैं। आगे पग धरि युद्ध करेवैं।।
रावण कह्यो अवि क्या कीजै। किउ करि पगु मग आगे दीजै।।
केदहि मो कों जाण न देई। मो सौ युद्ध कर्नि चितु लेई।।
युद्ध कीए इसि नाह हिरावौ। कैसे करि आगे कौ धावौ।।
जो रहो ठाढा रघिपतु आवै। क्षिण माहे मोहि मार चुकावै।।
जानकी कह्यो मैं तोहि लघावौ। इहि विघ्न ठौर सों पारि परावौ।
जो मो सो इकु वचन करावहि। ताहि वचन ऊपरि ठहिरावहि।।
रावण कह्यो कहो जो वाई। जो तुमि कहो करो मैं साई ११

जानकी तव ही वचनु उचारा। सुन हो रावण नृप अति भारा।।
मैं तुमि सौ प्रतज्ञा करहो। तिहि प्रतज्ञा महि चितु धरहो।।
मोहि निकटि तू आवै नाही। अष्ट मास लग सुणु मैने नाही।।
जो अष्ट मास लगि रामु न आवै। करु पाछे जो तोहि मन भावै।।
रावण एहि प्रतज्ञा धारी। जो जानकी मुख आप उचारी।।
मन अतर जानकी लीओ वीचारा। मोहि वीचारु एहि मन धारा।।
रावण को तिन दीयो वताई। सुण नृप रावण मनि चितु लाई।
रक्त काढु तनि अपुनै केरी। इहि मति सुण लेवहु तुमि मेरी।।
ताहि रक्त सों वाटि लिवारहु। गेदहि के उदरि वेगही डारहु।।
जवहि वाटहि गेदहि उदर जावहि। गेदहि उदर वहु भारु करावहि।।
गेदि को वलु तव कछु न वसाई। तव मो को ले चलु तू धाई।।
जवि रावण इहि विधि सुणी काना। हर्षिमान होयो तिहि प्राना।।
अपुने तन सो रक्ति निकारा। वाटि लीयो ले ताहि लिवारा।।
गेदहि ओरि डार करि दीआ गेदहि वाटि ले उदरि महि कीआ

केतकि बाटि रावण अैसे डारे। गेदहि उदरि महि बहु भए भारे॥
गेदहि ठौर उठिणु फुनि त्यागा। रावण तब अपुने मग लागा॥
रावण तब आगे पग दीने। गेदहि त्याग गवनु उनि कीने॥
आगे खसांति प्रगटाए। जानकी ताने द्रिग निषाए॥
आइ चुंच रावण सिरि मारी। रावण घाउ लगो तन भारी॥
अधिक दुःख रावण को होया। सकल सुषु रावण तब षोया॥
अधिक युद्ध वां सग तिनि कीना। पष तासि रावण कटि दीना॥
पंष कटे तिहि बलु न बसाए। कैसे कर वहु युद्ध कराए॥
तांको जीत आगे को धाया। कनकपुरी सेती चितु लाया॥
जानकी मग जावति क्या कीआ। कहूं कुछ कहू कुछ डारि के दीआ
मतु श्री रघिपति इहि मग आवै। मोहि बाता मन महि ठहिरावै॥
इसि मग जानकी खडी दुराई। मतु हमिरे पाछे वहु आई॥
इहि प्रजोग वहु डारति जाई। इहि ब्रितातु सुण हो मेरे भाई॥
रावण चलि लका महि आए। सकल सैन ने इहि सुण पाए॥
रघिपति भर्जा इनि हिरिआनी। कनकपुर सकली इहि जानी॥
सभु सीता को देषिनि आई। निषि रूपु सभि जाहि भुलाई॥
सीता को तिन जाइ बहायो। एक फुलिवारी माहि ठहिरायो॥
निसवासर सीता ऊहा रहे। राम ब्योग हृदे महि सहे॥
सुरपति सैना ताही आई। कछु सहाइ तिस भूषि गवाई॥
जानकी भूषि त्रास ना ग्रासे। छिनु पलु जानकी मुषो न हासे॥
सुर फिरि गयो अपुनी ठौरा। हे साधो सुणो कह्यो मोरा॥
जानकी वचनु सुनाई सिधारे। कछु बिस्वासु हृदे ना धारे॥
है जानकी रघिपतु छिन आवै। इसु पापी को मारि चुकावै॥
दीयो सतोषु सुरपति उठि धाए। चलति चलति अपने ग्रहि आए॥
रावणु भर्जा असर पठेवै। जानकी बुद्धि फेनि चितु देवै॥
जाननी[1] ताको कछु न कहाए। जो फलि तिहि सौ धर्नि गिराए॥
ताहि मत सीता ना लेवै। ताहि कह्यो मनि नाहि धरेवै॥
जो वहु कहे सो चितु न जाने। तांको कह्यो कछु मनु ना माने॥

---

१ यहां शब्द जानकी चाहिए

निसि वासरि उनि को इहि कामा । मिलि करि आवहि असुर की भामा
जल को कोई मैलु न लागै । सो जनु सदा सुखी जो जागै ।।
साधि भाउ चोरु सिषि लेवै । चोरु भाउ साधू नही लेवै ।
अग्नि माहि जो कछु तुमि डारो । अपुने मन महि लेहु वीचारो ।
सभ कौ क्षीण महि अग्नि जलाए । अग्नि दुख लागै नही आए ।
त्रिणु लकडी जो जल महि पावै । पिन महि जलु ताहि रुडावै ।
जैसे त्रिणु लकडी रुढि जावै । कछु जनक सुता मन ना ठहिरावै
जन्क सुता स्मिरे रघुराई । साईदास प्रभ सदा सहाई ।।

कहे मदोदर रावण ताई । सुणु मोहि वानि लंक के साई ।
काहे जानकी को ले आया । किहि प्रयोग इहि कामु कमाया ।
तोहि मत्ति हीण किउ होई । अकल मति तैने सभु पोई ।
श्री रामचद त्रिभवन के राया । सकल जग्रति हि षेलु रचाया ।
क्षिण महि उतपति सभ करि लेवै । क्षिन महि सकल संहारु करेवै ।
ताकी भर्जा तै हिरिआनी । हे मतिहीण क्या मनि ठहिरानी ।
अवि ही आवै तोहि विडारे । कनक पुरी तुमिरी उभु जारै ।
मारि जीउ तुमिरो वहु लेवै । महा अधिक दुःख तुमि को देवै ।
तव पछुतावहिगा मनि माही । किहि प्रजोग विरोधु कमाही ।
सांईदास जानकी ले जावो । रघिपति आगे पडि ठहिरावो

रावण फिरि करि वचनु सुनायो । हे महोदरि क्या उचिरायो ।
मोहि सर दूजा कौणु कहावै । इसि धरि परि को द्रिष्ट नि आवै ।।
ते मनि महि कहा लीउो वीचारी । ते विधि जानी नाह हमारी ।
त्रैलोक मै बदी पायो । मोहि सम दूजा को नहि प्रगटायो
दस सिरि बीस भुजा वलु भारी । कहु को रीस करि सके हमारी ।।
रघुपति त्रासु तूं मोहि दिषावै । वडो वली तूं मोह वतावै ।
छिनि महि तांको मै प्रहारो । केतकि वलु उनि को मै मारो ।।
अवि सीता को कैसे देवौ । कैसे तिस को त्रासु करेवौ ।।
रामचंद मोहि नामु सुनावै । नामु सुनाइ करि मोहि डरावै ।।
मै काहू कों त्रासु न करिहों । त्रासु काहू का नाम नि धरिहो ।

कनक पुरी महि हमिरो डेरा। को आइ सके हमारो नेरा॥
वढो त्रासु ते मोहि दिषायो। सांईदास रावण उचिरायो १२८

फिरि मदोदरी नृप सौ भाषा। हे रावण तं क्या चित राषा॥
दसि सिर वीस भुजा को जाने। इहि अभिमानु हृदे महि आने॥
मोहि दसि सीस कौनु विडारे। बीस भुजा मोहि कौनु उपारे॥
हे नृप काहे भर्म भुलावें। मेरो कह्यो किउ मनि नही ल्यावें
एकु सरीर सग राम जीत आवै। सकल सैना को एकु हिरावै॥
जैसे मिर्गु होवहि इकि ठौरा। सिहु जीति ले तिहि इकि भोरा॥
जेवकि अधिक होवहि बनि माही। स्वान एकि तिहि उदर फराही॥
एकु भारु काष्ट जो होवहि। रचक दावा सभही पोवहि॥
कष्ट अग्नि भस्म करि डारे। ऐसे रघुपति तोहि विडारे॥
दसि सिरि बीस भुजा तुमि पोवहि। तव पाछे रावण तैं रोवहि॥
जो तू अपनो भला चाहे। जानकी सहित लेइ तू जाहे॥
पगि लाइ जाइ राम मनावहि। सांईदास अधिक सुषु पावहि॥१२

मदोदरि ने जवि वचन उचारा। अति क्रोधु रावण मनि धारा॥
हे मदोदरी मति वौराई। तुमरे मनि महि क्या है आई॥
ऐसो को दसि सीस विडारे। ऐसो को मोहि भुजा उपारे॥
मोहि नामा त्रैलोक मझाई। रघिपति त्रासु कहा मैं पाई॥
त्रैलोकि मोहि डर डर्पावहि। हे मदोदरी मोहि डरावहि॥
मै तो त्रासु किसै करो नाही। सदा अनदु हमिरे मन माही॥
मै जानो तोह मत्ति हिराई। जो तै इहि विधि मोहि सुणाई॥
मैं काहे सीता ले जावो। चर्नि लाग मै ताहि मनावौ॥
इहि विधि हमसौ कबहू न होई। इहि विधि कबहू करे न कोई॥
ऐसे आपस महि झगिरावहि। वहु उसि इस्मि इसि आष सुणावहि
झगिरा अधिक कयो अधि माही। किसै कह्यो कोऊ माने नाही॥
गई मदोदरी जानकी पाही। सोच विचार कियो तिन ताही॥
हे जानकी रावण वलकारी। दसि सिर बीस भुजा वलु भारी॥
ताहि संगु काहे ना लेवै। आइ भाउ तिस किउ ना देवै॥
महा वली तुमि को इहि ल्याया मोहि पति को वलु है अधिकाया

मेरो कह्यो मनि महि ठहिरावौ। रावण नृप सौ सेगु करावौ।।
जविही मदोंदरी एहि सुनायो। जानकी क्रोधु कीयो उचिरायो।।
मैं इसि कौ क्षय कर्नें आई। तैं कहु मनि महि क्या ठहिराई।।
इसि को वलु मोहि द्रिष्टि नि आवै। श्री रघपति इसि आइ हतावैं।।
फिरि मदोदरी वचनु सुनायो। हे जानकी क्या मुख उचिरायो।।
जो रघिपति मा बलु अधिकारी। कैसे हिर्नि दीई घरि नारी।।
किति कार्ण मुख कउ अलावैं। झूठि वाति तू मोहि सुनावैं।।
रावण नृप को बलु अधिकारी। मेरो कह्यो मनि लेहु वीचारी।।
जानकी फिरि ताको प्रतु दीना। जोई प्रश्न मदोदर कीना।।
कहा रावण को वलु अधिकारी। श्री रघुपति छिन माह विडारी।।
मदोदरी जाण बूझि इहि भाषैं। मनि महि इहि वीचारु इहि आपै।।
जो जानकी कहै होवैं सोई। उौरु वाति नाहि कछु होई।।
इहि प्रजोग तासो झगिरावै। प्रश्नु करे ताकौ प्रतु पावें।।
जवि जानिकी इहि वचनु सुनाए। मदोदरि मन महि ठहिराए।।
जो इनि कह्यो सोई कछु होई। उौरु न करि साके कछु कोई।।
चलति मदोदरि गृहि महि आई। साईदास सो सकल सुनाई।।१

श्री रामचंद लक्ष्मण दोऊ भाई। फिर्नें हेर्ति वन महि अधिकाई।।
हेर्ति फिर्ति सीता के ताई। मन अंतर वहु ताप छुताई।।
जनक सुता कहू द्रिष्ट न आवै। तिहि प्रयोग मन वहु दु.ख पावै।।
रघिपति पूछति विर्षो ताई। मतु कहू जानकी मोहि दिषाई।।
लछमन कौ प्रभ कह्यो सुनाई। लछमन सुण हो मेरे भाई।।
तीन कुटि कुटीआ के पेषै। चतुर कुंटि मैं नाही देषैं।।
मतु तिह कुटि महि जानकी होई। चलु देषहि मेले मतु सोई।।
अैसे रघिपति विहलु भए। एहि संचरु प्रभ मन महि लए।।
षगि मृग पंक्षी सौ प्रभ पूछहि। ताहि अग्नि किसि ते ना वूझहि।।
शकर ध्यान धरचो लिव जोडी। सुधि नही तांको अपनी षौडी।।
रघिपति चर्नि सौ ध्यानु लगायो। शंकर ध्यानु अधिक ठहिरायो।।
पार्वती तव वचन उचारा। हे शभू जी तैं किस ध्यानु धारा।।

सकल जीइ प्रभि तोहि ध्यावहि । तू प्रभि ध्यानु काहि को लावहि ॥
मम मनि संचरु प्रभ हिरि लेवौ । साईदास को वहु सुषु देवौ ॥१८

तव ही संकर वचन उचारा । हे पार्वती सुण हो चितु धारा ॥
मे घरो ध्यानु चर्नि रघुराई । ताहि वाति कछु कही नि जाई ॥
तिहि रजि चर्नि माहि कोऊ पावै ।
जो पावै फिरि जन्म नि आवै ।
आदि अनादि रह्यो समाई ।
घटि घटि माहि तिहि जोति दिषाई ।
नाहि रूपु कोऊ कहा पछाने । ताहि कला कोऊ विर्ला जाने ॥
हमि उतिपति तिसी ते होए । तै संचरु क्या मनि महि पोए ॥
मैं तिस चर्ना ध्यानु लगायो । सदा सदा ताको जसु गायो ॥
पार्वती सुण करि विस्माई । वहुरो मुष ते वाति सुणाई ॥
इही रामु जिन जानकी षोई । हे प्रभु इसि ते क्या कछु होई ॥
पूर्ण ब्रह्म इहु कहा कहावै । मोहि मनि इहि विधि नाही जावै
जो पूर्न ब्रह्म प्रभ इहि होता । जानकी को कहु काहे षोइता ॥
जवि देवी इहि वाति चलाई । शंभू फिरि प्रतु दे तिहि स्माभाई ॥
इनि से कोई नाह दुराए । इनि से कौणु दुराइ ले जाए ॥
जीइ जत सभ इसे वनायो । घटि घटि माहि इहि आप स्मायो
जैसे रवि करे गगन उजीआरा । ग्रहि ग्रहि महि तांको चमिकारा ॥
तैसे प्रभु सभ माहि स्माया । एहि भी प्रभ इकु षेलु रचाया ॥
सकली विधि प्रभु जानण हारा । तांके घटि का कहा वीचारा ॥
सकल जग्त की विर्था पावै ।
कथनि माहि प्रभु वाति नि आवै ।
ताहि नामु लीए दुःख सभ भागे ।
वहुरो फिरि फिरि करिआ इनि लागे ।
ताहि नामु अघ भस्म करावै । वेग विलम वहु मूल नि लावै ॥
वनि कटि काष्टु कौ ले आवहि । एक ठौरि सभ को ठहिरावहि ॥
पावक छिन इकि तासौ लाई । छिन माहे सभ भस्म कराई ॥
जैसे मलीन वस्त्र वहु होता । लाइ सबूण ताँकी मैलु षोइता

जैसे त्रिषा गहे जवि आई। पीयो जलु त्रिषा गई हिराई॥
जवि लगि मंदर दीपकु नाही। महा तिमरु तहा तहा देइ दिषाई
जवि दीपकु मंदर महि होया। तात काल तिमरु तिन षोया॥
ऐसे नाम प्रभ अघ को टारै। भागहि अघ मुख नाम सम्हारे॥
ऐसे शभू देवी समझावै। पार्वती कछु हृदे न ल्यावै॥
अनकि भाति शिव ताहि वतायो। साईदास विधि सुणायो॥१२

पार्वती फिरि शिव सौ बोली। हे शिव जी मेरो मनु डोली॥
एहि भरोसा मो मनि नही आवै। इहि रघुपतु जो ब्रह्म कहावै॥
ब्रह्म काहू पै चल्यो न जाई। हे शिव मै इहि तोहि वताई॥
मै जावौ इसि को छलि आवो। पाछे से मै तोहि सुनावौ॥
जो मै इसि को ना छलि आई। तव मै जानों रघिपति राई॥
पूर्न ब्रह्म तव ही कर जानो। द्वितीआ भाउ फिरि हृदे न आनो॥
जो शभू मै इसि को छलि आई। तव ब्रह्म शिव जी कहा कहाई॥
पार्वती को शंकर कह्या। कहा संचर तै मन महि लह्या॥
तोहि वलु कहा जो तिसि छलि आवहि।
ताहि छलनि तू नाहि पावहि॥
पार्वती क्या भर्म भुलावै। कहा वाति तूं मनि ठहिरावै॥
पूर्न ब्रह्म सभि ही कौ जाने। जीउ जन्त वहि सभ हूं पछाने॥
पाछे से तू मनि पछुतावैं। काहे एहि विधि मन ठहिरावै॥
पार्वती कह्यो शिव ताई। इहि उपिजी है मोहि मन माही॥
जवि लगि मै उसि देषिनि आवौ। तव लगि शात नाह मै पावौ॥
इहि विधि शंकरि सौ झगिराई। साईदास छलनि कौ धाई १

पार्वती तव ही क्या किआ। जानकी रूपु तवही करि लीआ॥
आइ करि वन माहे ठहिराई। छलिनि गई श्री रघपति ताई॥
पूछति पूछति रघिपति आए। तहू ओरि प्रभ पग दे धाए॥
पार्वती मों वचनु उचारा। तांको सकला कहों वीचारा॥
माता कहि के ताहि सुनायो। पार्वती मुष ते उचिरायो॥
पार्वती कहू जानकी देषी। मोहि वतावो जो तुमने पेषी॥
पार्वती संचरु हिरि लीआ करि डंडौत चर्नि चितु दीआ।

पार्वती तब वचनु उचारा। हे पूर्न ब्रह्म प्रान अधारा।।
तोहि दर्सन ते सभ दु:ख भागे। तोहि दर्सन कोई दु:ख न लागे।।
त्रैलोक तुमिरो विस्थारा। तूं त्रैलोक ते रहे न्यारा।।
सक्ल जग्त महि तुमिरो वासा। तूं प्रभ सत जना की आसा।।
जहां जहा भीर परी जन ताई। तुमि प्रभ आवति हो क्षिरण माही
सत हेति करि तूं वपु धारहि। सत हेति करि असुर सिहारहि।।
अनल अनिल ध्यानु चित धार्न। तु कौलापति अपर अपार्न।।
वेद क्तैब क्या सहिम वपाने। तुमिरी महिमा को प्रभ जाने।।
अनलि अनील अतीत गुसांई। तोह स्मसर दूजा कोई नाई।।
चिह्न चक्र कछु द्रिष्ट न आवै। तांको कहु कोऊ क्हा वतावै।।
जोति प्रकाश सकल घटि माही। सकल माहि रमि रह्यो सदाही।।
मै तोहि उस्तिति कहा वपानो। तोहि उस्तिति प्रभ मै कहा जानो
रस्ना रचि कहा कछु कहे। कित विधि उस्तिति तुमि उचिरहे
मोहि अवज्ञा रास मिटावौ। मोहि अवज्ञा ह्रदे न ल्यावौ।।
जान क्रिपा प्रभ मो परि कीजै। सांईदास छिन विलम न कीजै १

पार्वती लगि चर्नि सिधाई। तात्काल शिव पाहे आई।।
शिव पहि उस्तिति भाष सुनाई। पार्वती मुष ते उचिराई।।
आदि अनाद रह्यो स्माई। तांकी भक्ति कछु लषी न जाई।।
अकाल मूर्ति त्रिभुवन के राया। सकल माहि प्रभ आपि स्माई।।
जौ जो ताको नामु ध्यावै। पर्मि मुक्ति गति को वहु पावै।।
जो जो तिहि चर्नि चितु धारै। तात्काल वहु ताहि उधारै।।
जो जो तिहि परे सर्नाई। ताकी क्षिरण महि तप्ति हिराई।।
ताहि प्रकार मै कहा सुणावौ। कहा वुद्धि जो कहिणा पावौ।।
हे शिव जैसा तोहि वताया। तैसा ही प्रभ मोहि द्रिष्टआया।।
हे शिव जी ताहू ध्यानु कीजै। सांईदास कछु औरु न कीजै १

रघिपति हेति है मनि मांही। मतु कहू षर वरि जानकी पाही।।
रघिपति चकिवी चकिवे सो भाषा। जानकी कहू तुम देषी आषा।।
तिहि ने कह्या क्या हमि जानहि। जानि कौपु हमि कहा पछानहि।।
हमि अपुने ग्रहि आनद माहे हमि तो काहू जानति नाहे।

तव रघुपति तांको स्रापु दीम्रा। रैनि विछोरा तिन महि कीम्रा ।।
दिन इकि ठौरि होवै निस नाही। रैनि विछोरा दीयो तुमि ताई ।।
ताहि स्रापु विछोरा तिहि पाहो। रघिपति वचु अन्यथा ना जायो।।
निस इकत्रि इसि विधि ना होवहि। सांईदास निस वहु सुखु होवहि १०

तिहि स्रापु देह आगे धारे। ताहि कह्यो किउ अन्यथा जाए
अव व्रिक्ष कोकला ठहिरानी। अति रसालि वोलै वहु वानी ।।
अति भलो शब्द सदा मुख वोलै। विहगम को शब्द अमोलै ।।
ताहि कह्यो प्रभ रघिपत राई। कहू जानकी तोहि निर्षाई ।।
एहि शब्दु तुमि मोहि सुणावो। हे विहगम तुमि वेग न लावो ।।
तव ही विहगम शब्द उचारा। हे रघिपति सुण वाति हमारा ।।
मै सुख वस्ति हो अपुनो ठौरा। मोहि व्योग नाही है भोरा ।।
फल देषै मनि महि कुकलावो। महा अधिक मुख मगल गावो ।।
उौर कोई मोहि द्रिष्ट न आवै। हे रघिपति कछु उौरु न भावै ।।
मै जानकी द्रिग नाहि निहारी। कैसे तुमि सो कहो झूठारी ।।
ताहि कह्यो श्री रघिपति राए। मुख कालो तुमिरो हो जाए ।।
स्याम वदनु प्रभ करे तुम्हारे। इहि मम मन महि भयोवीचारो
जो कहे राम सोई फुन होई। ताहि कह्या मेटे नही कोई ।।
पूर्न पुर्ष जो मुखो उचारे। साई होवति है तत्कारे ।।
स्याम वदनु ताहू तव होया। अनि अनदु ताको प्रभ षोया ।।
ताहि स्रापु दियो रघुराए। साईदास विधि आषि सुणाए १

सुग्रीम वाल कपि दो भाई। किकधा नगरी राजु कराई ।।
सुग्रीम वडो वाल कपि छोटा। वडो सूक्ष्म सूक्ष्म है छोटा ।।
सुग्रीम तहा राजु कराई। बाल कपि छोटो तिहि भाई ।।
वालु महा वली तिहि भारा। ताके वल का कहा वीचारा ।।
त्रैकाल संध्या वहु करही। ताहि व्रितांतु लेह चितु धरही ।।
प्रथमै पूर्व जाइ करावै। मध्यान्ह दक्षिणा इनि आवै ।।
साकाल पश्चम आइ करई। दधि तटि जाइ असे चितु धरई ।।
निता प्रति एही उसि कामा। सुनवधू तिहि ग्रहि महि भामा ।।
इकि दिन रावण दधि तटि आया वाल कपि सध्या कर्नि चितु लाय

निर्ष वाल को मनि लोभाना। एहि वाति हृदे उनि आना ॥
इसि कपि को मै पकरि ले जावौ। सुत वधू कौ पडि दिषिलावौ ॥
चलिति चलिति वाल निकटि आआ। पकरिन कौ कर तासि चलाया ॥
वाल कपि महा वली वलवाना। उनि प्रभ सेती धरो ध्याना ॥
जवि रावण ने हाथ चलाए। वाल ध्यान छाडे पकडाए ॥
ले तनूनी सौं अटिकायो। रावण वलु कछु नाहि वसायो ॥
बाल कह्यो सुत षेलनि ताई। इसि को मै ग्रहि मे ले जाई ॥
रावण जतनु करे नही छूटै। जोरु करे तनूनी नही टूटै ॥
वधिन गयो वंदन महि पर्यो। आगे आयो जैसा कर्यो ॥
वालु कपि सध्या करि आयो। विसर गयो तनूंनी अटिकायौ ॥
षष्ट मास तहू रह्यो उर्भाई। रावण छूटनि मूल न पाई ॥
जतन कीए तनूनी ग्रंथ षुल्ही। सीस काढि भागा ताहा हउली ॥
भाग गिआ लका के माही। वाल कपि पाछे नाह न जाही ॥
कछु प्रजोग तासो उनि नाही। कति प्रजोग तिहि पाछे जाही ॥
एकु असुरु संढ वपु लीने कपि गंधा नग्री को पग दीने ॥
चला चला नग्री निकटि आया। अति उपाध तहा असुर उठाया
वालि कपि जव इहि सुण पाई। एक संढे वहु धूम रचाई ॥
वाल तत्काल नग्री तजि आया। तांसो आइ करि युद्ध रचाया ॥
असुर कहा वलु इसि सरि होई। वालि सर जोधा नही कोई ॥
सीमु असुर को कर महि लीना। ताहि मरोर मरोडे दीना ॥
जव ही वालि असुरे को मारा। अधिक वपु तव असुर पसारा ॥
वाल कपि उसि लीयो उठाई। ताहि देहि गिर के तले पाई ॥
ताहि गिरि परि जो रषीस्वर रहे। नामु सधहलि तासि को अहे ॥
जवि ही वालि असुर को मारा। ताहि मृतकु गिरि के तले डारा ॥
मृत की दुर्गंधिता होई। सधहल रहे तहू अवरु न कोई ॥
कह्यो ऋषीश्वर जिन एहि कीना। तांको इहि श्रापु मै दीना ॥
जो वहुरो ईहा वहु आवै। गोविंद ताको नासु करावै ॥
जो ऋषि मुखि ते वचन उचारे। सांईदास होवै तत्कारे १

एक असुर किंकिधा आवै। वालु परे पाछहि नसि जावै।।
करे प्रवेसु जाइ कदरा माहे। तिस कदरा महि वलु ना जाहे।।
तहू ठौर से वलु फिरि आवै। किकधा महि आइ आइ ठहिरावै।।
ओहु असुरु अैसे ही करही। ओरु वाति किति ना चितु धारही
जो उहु असुरु वहुरि फिरि आया। वाल कपि मनि इहि ठहिराया।।
आजु तो मै इसि असुरु को मारो। पकरि असुर को धर्नि पछारो।।
जवि वहि असुर नग्रि निकिटि आया। वालु ताहि पाछे उठि धाया।।
सुग्रीव सैना सग लीए। वाल के पाछे तिनि पग दीए।।
असुर जाइ कदिरा महि वडिआ। वालु पडे होइ सस्तल करिआ।।
सुग्रीस सौ भाषि सुणाया। सो सकला सुण हो चितु लाया।।
हे मोहि वीर सैना सग लीए। तुमि ठांढे रहो ईहा पग दीए।।
मै कदरा प्रवेसु करेवौ। जाइ असुर को मै हनि लेवौ।।
नितापति आवै दु:ख देवै। सदा विरोधु हमि सग करेवै।।
इहि विधि कहि उनि कीया प्रवेसा। सुग्रीम कदरा मुख वैसा।।
वाल जाइ तिहि युद्धु करायो। वल करि अपुने असुर हतायो।।
तहा रक्त प्रवाहु चलायो। उमडि रक्ति कदरा मुष आयो।।
सुग्रीम जवि द्रिष्ट निहारी। तब ही मनि महि लीओ वीचारी।।
वालि वीरु को असुर ने मारा। युद्ध कीयो ताकौ प्रहारा।।
ताहि कंदिरा मुख ढपि लीना। पाछे गौनु नग्र को कीना।।
चलति चलति नग्र महि आया। सुग्रीम वहु रुदनु कराया।।
वीरु व्योग सह्यो ना जाई। सुग्रीम द्रिग नीर वहाई।।
रुदनु त्याग शात धरि आया। जो कछु सिम्रत कह्यो वताया।।
जो हरि भावै होवै सोई। सांईदास होरु करे न कोई।।१

वालु मारि तिहि असुर को आया। कदरा मुख मूदा निर्पाया।।
कदरा मुखु तिनि दीयो गिराई। सैना कछु तिनि द्रिष्ट न आई।।
अति क्रोधु तिनि मन महि कीना। एहि वाति तिन मनि धरि लीना।।
सुग्रीमु एही कछु चाहे। वालु मरे फांसी कटि पाहे।।
मै उनि को ईहा गियो षलिवाई। तुमि ठाढे रहो ईहा भाई।।
मै इसि असुर को हनि करि आवौ। वेग विलम्ब मै मूल न लावौ।।

वहु कदरा मुख ढंपि सिधाए। एही कर्मु सुग्रीमु कमाए।।
वाल क्रोधु कीयो उठि धायो। चलिति चलति किकिधा आयो।।
सुग्रीम कौ मारि निकारा। राजु आप लीयो तत्कारा।।
ताहि भर्जा षसि करि लीनी। इहि विधि वालि कपने कीनी।।
सुग्रीम तांते भजि आया। आइ करि गिरि ऊपरि ठहिराया।।
चतुर मंत्री तिनि सग लीने। गिरि ऊपरि आइ करि पगि दीने।।
तिन महि हनूमानु वलभारी। सुग्रीस सग मत्री चारी।।
जहा ऋषीस्वर सव हलु रहे। राम नामु मुख ते उचिरहे।।
तहू आइ इसि वामा लीना। सुग्रीम इहि कार्णु कीना।।
रहि न सके सुग्रीमु जु जावै। वालु आइ इसि मुष्ट लगावै।।
षष्ठ मास रक्त इहु वहे। इहि प्रयोग मन अतर सहे।।
षष्ट मास जवि पूर्न होही। सुग्रीम मुष्ट दुख खोही।।
बहुरो जाइ द्वारे ठहिरावै। कछु अपने मुख ते उचिरावै।।
वालु निकसि के वाहिरि आवै। एक मुष्ठ वहु इसे लगावै।।
दूसरी मुष्ट जवि मारण लागै। सुग्रीमु तव ही उठि भागै।।
भाग आइ गिरि ऊपरि चरे। सुग्रीमु इहु कार्णु करे।।
स्थावर महि ताको वासा। साईदास प्रभ पूरे आसा।।१

रघिपति ढूढति ढूढति आए। तहू राहि होइ करि प्रभ धाए।।
सुग्रीम ने द्रिष्ट निहारी। हनूमान सो कह्यो पुकारी।।
हनूमान इन्ह पवरि ल्यावो। इनि को पूछ हमहि पहि आवो।।
कौनु है इहि कहा कौ जावहि। अतुर होइ कहा कौ धावहि।।
हनूमान जवि आज्ञा पाई। तात्काल तिन मनि ठहिराई।।
चलति चलति रघपति पहि आया। करि जोरे मुष भाषि सुनाया।।
हे प्रभ अपुनो नामु वतावो। पाछे कहो कहा तुम जावौ।।
तव रघिपति हनूमान सुनायो। रामु नामु मोहि सुण चितु लायो।।
जानकी को किनी षड्यो दुराई। ताहि फिर्ति हो हेर्ति भाई।।
हनूमान विधि सुण उठि धाया। सुग्रीम कौ आण सुणाया।।
रामचंद इहि नामु अषावै। जानकी को इहि ढूढति जावै।।
सुग्रीम कह्यो ताहि ल्यावो। हनूमान तुमि वेग न लावो।।४

हनूमानु तव ही उठि धायो। तत्क्षिण महि रघिपति पहि आयो
कह्यो चलो सुग्रीमु वुलावै। हे प्रभ पूर्न वात सुनावै॥
श्री रघिपति कह्यो वहु भलो भाई। तुमि हमि को भली वाति सुणाई॥
थकिन रहे गिरि चरचो न जाई। हार परे वलु कछु न वसाई॥
जवि श्री रघपति वाति वीचारी। हनूमान मन अतर धारी॥
श्री रामचद लक्ष्मण कौ लीना। एक इति एक उति काधे कीना॥
तात्काल सुग्रीम पहि आया। रघपतु लछमणु आण दिपाया॥
जव हनूमान काधे प्रभ कीए। सांईदास ठौर भक्त लीए॥१३

सुग्रीम जवि दर्सनु पाया। हाथ जोरि मुख वचन सुनाया॥
हे प्रभ कहो कहा तुमि जावो। एहि वाति प्रभ मोहि वतावो॥
तव श्री रघिपति वात सुणाई। सुणु सुग्रीम हमारे भाई॥
मैं जानकी कौ ढूढणि जावौ। मतु काहू ठौर सोझी तिहि पावौ॥
किनही जानकी षडी दुराई। हे सुग्रीम हमारे भाई॥
सुग्रीम इहि सुण विस्मायो। तव रघिपति ने वचनु सुनायो
हे सुग्रीम क्या संचरु लीयो। कवन व्योग मन महि कीयो॥
तव सुग्रीम कह्यो रघुराई। मोहि वनिता पसि लई मोहि भाई
इहि प्रजोग रह्यो विस्माई। मोसौ विधि कछु कीई न जाई॥
रघिपति सुण प्रतु प्रश्न चलायो। सुग्रीम सौ एहि सुणाई॥
तुमि सो कैसे उनि इहु कीआ। वनिता पसि तुमिरो राजु लीआ॥
मैं तिहि सुणु करिहो उपिचारा। सांईदास रघिपति बलु मारा॥१

सुग्रीम तव कह्यो सुनाई। सुण हो कौलापति रघुराई॥
मै वडो वालु छोटो मोहि भाई। मैं करो राजु तिहि वलु अधिकाई
किकधा नगरी के माही। राजु करहि वहुना सुख पाही॥
एक असुर किकधा आवै। ताहि प्रयोग सैना दुःख पावै॥
वालु तवि ताके पीछे जावै। असुरु जाइ किदरा ठहिरावै॥
एकि दिन वालि कह्यो सुणु भाई। प्रजा असुर्नें अधिक दुखाई॥
आजु तो मै इसि असुर कौ मारौ। पकरि असुर कौ धर्नि पछारो॥
तुमि सभ सहित चलो मेरे भाई। मै इहि तुमि सौ कहो सुनाई॥
तव ही असुर प्रगटि आइ भया वालु ताहि सन्मुख होइ गया

सभि सैना ले मै भी धाया। असुर भाग कंदरा चितु लाया।
कदरा के मुखि परि सभु गए। तहा जाइ करि ठाढे भए।
वाल तव ही कह्यो सुनाई। तुमि ईहा ठाढे रहो हे भाई।
मै प्रवेसु करो इसि मांही। जाइ प्रहारौ असुर के ताई।
असुर मारि फेरि मैं आवौ। छिनु पलु विल्मु नाहि मै लावौं।
हमि हिटिकाइ गयो तिहि माही। हमि तहा ठाढै मनि विस्माही।
क्या जाने हमि क्या कछु होई। इसि कदरा महि सुख नही कोई।
छिनु एकु वीते हे रघुराई। रक्त कंदरा से उमिड आई।
हमि जाना किसी वालि कौ मारा। किनी असुर इसि कौ प्रहारो।
हमि कंदरा मुषु मूद केराही। चले आए किकधा माही।
पाछे मारि वालि तिहि आया। मुषु मूदा तिन ने निर्षाया।
कदरा को मुख दीयो गिराई। कंदरा सौ वाहिरि पर्‍यो आई।
देषनि लागा सैना नाही। अति क्रोधु कीनो मनि माही।
ताकी भुज महि वलु अति भारी। तिह वल को क्या करौ वीचारी।
तव ही चला किकंधा आया। मो सौ प्रभ निहि राजु छिनाया।
मोहि वनिता भी षसि करि लीई। एहि वाति मो सौ तिनि कीई।।
तिहि वल से भाग ईहा आया। हे प्रभ आइ ईहा ठहिराया।
तिहि प्रयोग मोहि सुषु न भावै। निसवासर हमि गिणत्या जावै।
हे प्रभ कहा मै कहो पुकारी। साईदास वनी अति भारी।।१

सुण रघिपति फिरि वाति चलाई। सुग्रीम सौ कह्यो समिझाई।
जो वाल भुजा महि वलु अधिकायो। तुमि ईहा वासा कैसे पायो।
सुग्रीम फिरि तिहि प्रतु दीना। सकल वीचारु राम तिहि कीना।
हे रघिपति इकु असुर जु आया। केतिगंधा महि धूम रचाया।
असुर ने सढे को वपु लीना। युद्ध कर्नि को तिन चितु दीना।
वालु निकिस वाहिर को आयो। सढे सो तिनि युद्ध मचाया।
वालि ताहि सीसु वरि लीना। दीई मरोरी मरोर तिनि दीना।
असुर मारि ईहा उनि डारा। दुर्गंधिता भई तिहि अधिकारा।
सदहलि ऋषीश्वरको ईहा वासा। सदा सदा वहु हरि सग रासा।
जवि ऋषि को दुर्गंधिता आई तवी ऋषीश्वर मुषि उचिराई।

जिनने एहि दुर्गधिना उठाई। जोईहा फिरि आवे हन्यो जाई ॥
हे प्रभ तास त्रास नही आवे। इहि वसुधा परि पाव न पावै ॥
इहि प्रजोग हमि वासा पायो। माहि ततासौ वलु न वमायो ॥
रघिपति तव ही अग्नि जलाई। इहि प्रतज्ञा मनि ठहिराई ॥
प्रिथम तोहि काजु मै करिहो। पाछे जानकी हूढनि चढिहो ॥
एहि प्रतज्ञा रघिपति कीनी। ओरुवाति सभु तजि करिदीनी ॥
सुग्रीम तव वचनु उचारा। हे प्रभ पूर्न प्रान अधारा ॥
जो तुमि एहि वाति प्रभ करहो। वालि हतिन को जो चितु धरिहो ॥
मै भी तुमिरो काजु करिहो। जो तुमि कह्यो तति चितु धरिहो
करि प्रतज्ञा रघिपति धाए। सुग्रीम औरि सहिति चलाए ॥
जिहि औरि कुरंगु असुर को पर्या। तेहू ओरि प्रभ को इनि पडिआ
जो प्रिथमे इसि कुरग उडावै। तो जानो मै वालु हतावै ॥
जो इसि को ना सके उठाई। वालि सौ इसि वलु कहा वसाई ॥
चलति चलति आए तिहि पाहे। सुग्रीमु सुकचे मनि माहे ॥
कहों राम सों के ना कहो। इहि प्रतज्ञा लहो कि ना लहो ॥
जो रघिपति विधि जानणहारा। मनि माहे तिनि लीयो बीचारा ॥
जो कछु सुग्रीम मनि आयो। कौलापति सभ विर्था पायो ॥
धन्य सौ कुरगि कौ लीयो उठाई। श्री कौलापति पूर्ण रघुराई ॥
के सहस्र जौजन डारि दीआ। इह कार्ण कौलापति कीआ ॥
सुग्रीम तव भर्मु निवारा। सांईदास निश्चै मनि धारा १

श्री रघुपति आगे तव धाए। किकधा नग्री निकटि आए ॥
कह्यो सुग्रीम कौ आगो जावो। वालि को गृहि से वाहिरि ल्यावो ॥
जवि वाहिरि आवै तिहि मारो। वानु साध तिहि धर्नि पछारो ॥
तव सुग्रीम ने विनती ठांनी। हे पूरन सभ सारंग पानी ॥
मोहि उसि वपु वनिति एकु दिषावै। हे प्रभ उसि कैसे वाणु लगावैं ॥
मतु ओसि त्याग मोह को मारे। हे प्रभ बाण सौ धर्नि पछारे ॥
इहि प्रयोग मनि महि सकुचावौ। डरिता प्रभ आगे नही जावौ।
पत्रो की प्रभ माल वनाई। सुग्रीम को उरि महि पाई ॥
इसि देपि तुझै नाहि भुलावो। वानु सांधि मै ताहि लगावो ॥

एक ही वाण सो प्राण निकारो। एकि ही वाण सो धर्नि पछारो॥
तुमि मनि महि काहे सकुचावौ। तुमि सचरु मनि महि ना ल्यावौ॥
जो मै तुमि सौ कह्यो भाई। साईदास करौ मै साई १३

सुग्रीम आगे को धाया। निकटि द्वारि बालि के आया॥
बालु र्कात यज्ञु विपि पौलाए। करि अपुने तिहि तिल्कु लगाए॥
सुग्रीम तव वचनु उचारा। बाल आउ बाहिरि तत्कारा॥
आइ करि मौ सो युद्ध करावो। अतरि वहिनि नाहि चितु लावो॥
जवि सुग्रीम इहि वचन सुनायो। वालि कपि तव ही सुण पायो॥
चाहति यज्ञ त्याग करि आवै। सुग्रीम सो युद्ध मचावै॥
र्ताहि भार्जा तारा नामा। अति वहु स्यानी हे वहु भामा॥
बालि के ताईं कह्यो पुकारे। हे वाली मन लेहि बीचारे॥
यज्ञ त्याग वाहिरि ना जावो। ईहा वहि करि यज्ञ करावो॥
जो उनि कह्यो कहा कछु होई। तोहि स्मसर उसि वलु ना होई॥
वालि कह्यो उसि कों हति आवौ। पाछे आइ करि यज्ञु करावो॥
फिरि तारा ने वचनु सुनायो। हे पति मोहि कहा चित लायो॥
विनु सहाइ इहु ईहा न आवै। विनु सहाय इस बलु न वसावै॥
इसे सहाइ होई है भारी। तब तुमि सो इनि वाति उचारी॥
वाल कह्या तारा ना माना। अति अभिमानु हृदे महि आना॥
करि अभिमानु वाहि कौ धाया। सुग्रीम तांकौ निषयिा॥
सुकचि गयो सुग्रीम तव ही। निर्ष्यो वालु नैन सों जवही॥
जैसे मृग केहरि निर्षाए। सुकच जाइ द्रिग नीरु ढुराए॥
जैसे जपकि निर्षे स्वाना। मनि माहे होवै हैराना॥
जैसे पग बधकु द्रिष्ट आए। भागनि को अपुना चितु लाए॥
जैसे चोरु परिग्रहि मै जाई। वस्तु र्हिति वहु मनि सकुचाई॥
मतु ग्रहि को धनी जाग पराए। मोहि पकरि करि घातु कराए॥
जैसे काल रूपु दिष्ट आए। जीउ धार सभि ही सुकचाए॥
तैसे सुग्रीम मनि सुकचाना। सांईदास वहु भयो हैराना॥१

बाल कपि तिहि पाछे धाया। सुग्रीमु ताहा क्षिण ठहिराया॥
जवि ते वालु निकटि तिहि आयो सुग्रीमु भागनि चितु लायो

वालि दौरि सुग्रीम कौ गह्या। मुख अपुने ते एही कह्या।
हे सुग्रीम काहे अवि भागो। युद्ध कर्नि काहे नही लागो।
जोति पोति जवि दोनो होए। रघिपति बाणु सांधि वालु षोए।।
सुग्रीमु तव ही भजि आया। श्री कौलापति आइ ठहिराया।
बाल तव ही वचनु उचारा। हे प्रभ तैं मौकौ किउ मारा।
जो तू मोहि कहित रघुराए। लंका कहु मोहि आण दिषाए।
जैसे एकु भाजनि कोई ल्यावै। आएा कहू आगे ठहिरावै।।
तुमि आगे लका आणि धर्ता। हे प्रभ इह कार्ण मै कर्ता।।
सुग्रीम सौ करी भलाई। जांके तुमि आइ भए सहाई।
मैं तेरो नाहि औगुणु कीना। तैं मोकौ काहे हनि लीना।
रघिपति तासौ वचन उचारा। तैं औगुणु कीना वहु भारा।।
भावज वडी मात सरि होई। भार्जा तैंने कीनी सोई।।
इसि तैं औगुणु होरु कहा कहावै। इहि औगुणु हमि नाही भावै।।
वालि कपि फिरि वचनु उचारा।
हे रघुपति जन प्रान अधारा।
हमि पसू हमहि दोषु नाही।
इहि वीचारु लेहु मनि माही।
जवि रघपति इहि विधि सुणी काना।
तव सत्य कर के मनि महि आना।
कह्यौ तवै प्रभ वाल के ताईं।
इहि वीचारु लेहि मनि माही।
अवि मोहि वाणु अन्यथा ना जाही।
तुमिरो वान देउ मोह आयो।
इहि विधि मै मन महि ठहिरायो।
वालि कह्यो प्रभ कवि मै पावौ।
अवि तो मै देव लोक सिधावौ।
तव कह्यो श्री रघिपति राए।
कृष्ण अवतारु लेवौ जवि जाए।

तबि उधारु तुमिरो मै देवौ।
एहि वाति मै तब ही करेवौ।
श्री रघिपति ने वालि कौ मारा।
साईदास सभ कह्यो वीचारा ॥१३

लछमन कौ प्रभ कह्यो ताही। लछमन समझ देपु मनि माही॥
चतुर्दश वर्ष होवन मै ताही। पिता वचन हमि को इह आही॥
मै तो नग्रि माहे नही जावौ। जाइ नग्रि इसि राजु वहावौ॥
सुग्रीम कौ तुमि ले जावौ। षडि किर्कधाराज वहावौ॥
इसे राजु देइ तुमि उठि आवो। वेग विल्म तुमि मूल नि लावो॥
लछमन आज्ञा मनि ठहिराई। वहुरो रघिपति वाति चलाई॥
सुग्रीम सौ कह्यो पुकारे। सुणु सुग्रीव तू वीर हमारे॥
तुमि जाइ नग्री राजु करावो। जवि हमि कहे तब ही तुमि आवो
सुग्रीम पग परि सिरु राषा। मुषि अपने ते इहि कछु भाषा॥
हे रघिपति आज्ञा जो होई। मोहि मस्तक परि करहो सोई॥
लछमनु को प्रभ तिहि सग दीआ। सुग्रीम कौ प्रभ विदआ कीआ॥
लछमनु सुग्रीमु चलि आए। श्री कौलापति तहू ठहिराए॥
दोनों केतगधा महि आए। लछमनु सुग्रीमु राज वहाए॥
ताहि राजु दे करि उठि धायो। चलत चलति रघुपति पहि आयो
रघुपति कह्यो राजु तिहि दीना। लछमन कह्यो कार्जु इहि कीना॥
हे प्रभ जो आज्ञा तुमि होई। साईदास ने मानी सोई॥१

लछमन हनूमान सग लीना। गवनु तवै रघिपत ने कीना॥
चले चले सलिता परि आए। छीपा वस्न धोवति निषाए॥
कह्यो कहू तुमि जानकी देषी। मोहि कहो जो तुमि द्रिग पेषी॥
तबि छीपे ने वचनु उचारा। हे रघिपति हरि प्रानि अधारा॥
रावरा दैत्य ने षडी दुराई। हे माधो जन सदा सहाई॥
तव रघिपति छेपे वरु दीना। तोहि सीतु दूरि मै कीना॥
सीतकाल तुमि जलु न सतावै। करो कामु तुमिरे मनि आवै॥
जल सौ सदा होइ तुमि कामा। तौ मै वरु दीनों विस्रामा॥
छीपा वरु देइ आगे धाए साईदास रघिपति परि वल जाए १

रविपति पग आगे को दीनें। षग चटाई प्रभ ने देषि लीने।
ताहि कह्यो सुग् मेरे भाई। जनक सुता कहू ने निपाई।
कह्यो चटाई श्री रघपति राई। जानकी जावति मै द्रिष्टआई।
रघिपति तांको अंक महि लीना। फेर करि तासौ प्रतु दीना।
हे चटाई ब्रितातु सुनावौ। सकल बाति तुमि मोहि बतावौ।
तव ही चटाई कह्यो रघिराए। मै सभ विधि तुमि देयो वताए।
गणात्री त्याग मो सो चितु देवौ। मेरे कह्यो मनि धरि लेवौ।।
कनक पुरी नृपु रावण नामा। हे प्रभ पूर्ण सुण हो रामा।।
जानकी ताहि दुराइ करि आनी। जानकी सो मै लीजो पछानी।
मै तासौ वहु युद्ध करायो। हे प्रभ उनि मोहि दगा कमायो।
रघिपति कह्यो कहो क्या कीआ। तुमि सौ कौण दगा उनि दीआ।
तव ही चटाई आपि सुनायो। हे प्रभ मोसौ एहि करायो।
अपुनी देहि पछ रक्त निकारी। वाटि लीए ले ताहि लिवारी।।
वाटि लिवारि मोह ओरि डारि दीए।
हे रघिपति मै उदरि महि कीए।

जवि मोहि वाटि उदर महि डारे।
वलु भयो क्षीण मोहि तत्कारे।

पाछे वलु मोहि कछु न वसायो।
हे प्रभ वहु जानकी ले धायो।

हे प्रभ अवि मोहि निकिसति प्राना।
तुमि सत्ति करि लहो मन माना।

मोहि दागु दे करि तुमि जावो।
अदग्ध ठौर तुमि मोहि जरावो।

इहि विधि कहि चटाइं तजे प्राना।
साईदास ब्रह्म जोत समाना।।१

जव ते चटाई प्रान तजि दीए। श्री रघपति संचरु मन लीए।।
ब्रह्मपुरी हमि ध्यानु लगायो। तहू अदग्ध ठौरि नही पाए।।
अदग्ध ठौर कहू द्रिष्ट न आवै। जहा चटा कौ रामु जलावै।।
सोच वीचार देष्यो मन माही। सो गुर क्रिपा ते आषि सुणाई।।

और अदग्ध ठौर कोई नाही। जहा दागु देवौ इसि ताही॥
कर अदग्ध पावौ मेरे भाई। और ठौर कहा द्रिष्ट नि आई॥
रघिपति करि परि तिसहि जलाया। कर्म क्रतूत प्रभ तिसे कराया॥
जो कछु वेद कही मेरे भाई। श्री रघिपति ने कीनी साई॥
जैसे सुत पित को कर्म करही। क्रिया कर्मि सभे चितु धरही॥
तैसे रघिपति ताके कीने। एहि वाति मन महि धरि लीने॥
पिता सषा प्रभ जान कराही। एहि वाति लीनी मनि माही॥
जैसे को पित को कह्या माने। द्वितीया भाउ पिति कहे न आने॥
चटाई कहा ऐसे माना। पिता सषा कर्के प्रभ जाना॥
परमि मुक्ति पदु पग ने पायो। साईदास रघिवर चितु लाया॥१४

श्री रघपति तव आगे धाए। जवि केतक मगु चलि करि आए॥
लछमन सौ तव वचनु उचारा। सुग्रीम क्या मनि महि धारा॥
तुमि जाइ करि सुग्रीमु ल्यावो। मेरे कह्यो चित महि ठहिरावो॥
लछमन क्रोधु कीयो उठि धाया। जो आज्ञा होई वही कराया॥
ताको वलु कैसे मह्यो जाई। लछमन कौ वलु है अधिकाई॥
निकटि किकधा नग्री आया। सकल कपो ने द्रिग निर्षाया॥
लछमन तेजु कपि देषि कराही। ग्रहि ते भडति हे धर्नि पराही॥
सुग्रीम तव ही सुरा पाया। रघिपति वीर लछमनु है आया॥
सुग्रीमु तव सन्मुख आया। लछमन कौ डडौत कराया॥
लछमन तासौ कह्यो सुनाई। हे सुग्रीम सुणो मेरे भाई॥
श्री रघिपति तुमि को चिति कीना। तुमि ईहा सुष मनि महि लीना॥
महा क्रोधु कीयो रघुराई। सुग्रीम विलम वहु लाई॥
इहि प्रजोग मोहि दीयो पठाई। सुग्रीम सो कहो तुमि जाई॥
छिनु विलम न लावो तुमि वुलाया। तुमिरे पाहे मोहि पठाया॥
दो दिन तुम ईहा विल्मु करावो। क्रिपा करि ईहा ठहिरावो॥
नग्रि नग्रि के कपह वुलावो। रघिपति कार्ज उठि सिधावौ॥
दो दिन महि सभ ही कपि आवहि। सहित लीए हमि उठि करि धावहि
लक्ष्मण कह्यो रघपति उकलावहि। मम तुमि परि वहु क्रोधु करावहि

सुग्रीम कह्यो दो दिन कार्नै। क्रोधु न कर्सी अपर अपार्नै।।
मेरो कह्यो सुण करि लेवहु। साईदास सुष जीउ कौ देवहु ।।४

लछमन दो दिन तहू ठहिराए। दो दिन पाछे वतरि आए।।
कै सहस्र वांतरि उमिडाए। तांकी गणिती गिणी न जाए।।
सुग्रीमु सैना ले धायो। चलति चलति रघुपति पहि आयो।।
करी डडौत आइ प्रभि ताई। तांके सग सैना अधिकाई।।
वाल को सुतु अगद वलकारी। जाम वानु तांकौ वलु भारी।।
नल अरु नील दोऊ वलिवाना। दिवद महें इ सुषेण प्रवाना।।
केसरी कपु ऊौर्वहु वलिवाना। सैना नाम मै कहा वषाना।।
जो इकु इकु नामु कहा मेरे भाई। वसुधा ऊपरि लिष्यो न जाई।।
कपि अठारा पद्म उमिडाए। ताकी गणिती कौणु कराए।।
एक एक कपि को वलु सुण लीजै। ऊौर वाति कछु चित्त न दीजै।।
दस सहस्र गज कौ वलु भाई। एहि वाति मोहि वेद वताई।।
सस कपि सुरो ऊौतारा लीना। जो आज्ञा रघिपति ने कीना।।
इहि प्रजोग वलु है अधिकाई। हे साधो सुण हो चित लाई।।
ऊौर वाति तजि इहि चित लावो। राम नामु मनि महि ठहिरावो।।
कोटि जन्म प्रभ मुक्ता कर्सी। साईदास जो नामु उचर्सी।।१

श्री रघिपति सुग्रीम सौ आपा। हे सुग्रीम कहा चितु राषा।।
चतुर्दिसा वतरि पैठावो। तात्काल एहि वाति करावौ।।
जानकी की कहूं षवरि ल्यावहि। एहि षवरि मोसो पहुचावहि।।
सुग्रीम कह्यो वहु भलो आषा। हे रघिपति भलो चित राषा।।
एक एक दिसि वत्र पठाए। दस सहस्र सुण हो चितु लाए।।
हनूमान कौ कह्यो सुनाई। श्री रघपति कौलापति राई।।
हे हनूमान तू भी चल जावो। दस सहस्र कपि संग सिधावो।।
वन वन नग्रि नग्रि सुधि लेवहु। एहि वाति तुमि चित्त करेवहु।।
मुद्रा रघिपति ताकौ दीना। एहि सदेसे कार्ण कीना।।
जानकी देषि आवै पर्तीता। ठौर हो इनाहूको चीता।।

वतरि बन्दर।

इहि प्रजोग मुद्रा तिहि दीना। इहि कारणु श्री रघपति कीना ॥
हनूमान पगि सीसु ठहिरायो। सांईदास आज्ञा पाइ धायो ॥ १६

हनूमान सैना सग लीए। जानकी ढूढनि को पग दीए ॥
नग्रि नग्रि वनि वनि ढूढाही। मनु कहू ठौर षवरि तिहि पाही ॥
ढूढति एकि कदरा आए। हनूमान मनि इहि ठहिराए ॥
कह्यो हृदे कछु आसु न होई। मेरो कहो क्या करसी कोई ॥
दस सहस्र कपि लै वलिवाना। इनि सै कौनु होइ सत्राना ॥
अगद सुत है बाल को भाई। महावली तिहि वलु अधिकाई ॥
जाम वानु ताको वलु भारा। नल अरु नील तिहि वलु अधिकारा
हमि समसर कहा कौनु कहावै। जो हमि सन्मुख युद्ध कौ आवै ॥
ताहि कंदिरा महि पग दीने। अधिक गवनु ताहू महि कीने ॥
नाहि विच गए सुधि वौरानी। कौन ठौर षरे सारंग पानी ॥
विस्मक होइ आगे कौ धाए। कनकि मदर निर्ष विस्माए ॥
अनकि ता जल्जल भरे लिल्हाई। फल नाना तिहि व्रक्ष उर्भाई ॥
तहा त्रिजा ने आस्रमु कीना। दिव्य जोति देवी रूपु लीना ॥
वनरि निर्ष भई हैराना। तव देवी मुष वचनु वषाना ॥
हे वतरो कहु कहा ते आए। इहि विधि मौको देह वताए ॥
हनूमान तव वचन सुनाए। सुरण हो देवी देउ वताए ॥
जानकी किनहू षडी दुराई। ताहि ढूढणि कौ हमि जाई ॥
तव त्रिजना सुन वचनु उचारा। श्री रामचद्र को भयो अवतारा ॥
रावण जानकी षडी दुराई। होणी हो इसौ कौणु मिटाई ॥
हनूमान कह्यो ऐसे होई। रावण षडी होइगी सोई ॥
तव त्रिजना कह्यो हनूमाना। फल षावो अपना मनु माना ॥
वंतर फलि षाइ रहे अघाई। उदरि भरचो सुधि फिरि पाई ॥
द्रिग मूदे तिहि नैन उघारे। सकल वार्ता ताहि चितारे ॥
फल पाइ वतरि ठहिराए। साईदास त्रिजना सुनाए ॥ १

हनूमान त्रिजना सौ आषा। करि जोरे मुष ते इहु भाषा ॥
हे मय्या मोहु राहु वतावो। अपुनी किर्पा हमहि करावो।
जवि हनूमान इहि वचनु सुनायो त्रिजना तव मुष ते उचिरायो

राहु दसों तौ तुमि ना पावो । जत्नु करो वाहरि नही जावो ।।
द्रिग लेहु मूदि कहा मोहि मानो । औरु वाति कछु हृदे न आनो ।।
सभ वतरि ने नैन मूदाए । फेरि उघारे वाहिरि आए ।।
भए भै चक्रित अधिक मनि माही । हे रघिपति कहा ठौर दिषाही ।।
कहा वहु कनक मंदिर रघराए । कहा व्रक्ष जो फल उर्भाए ।।
कहा रूपु तुमि हमहि दिषायो । हे प्रभ क्या द्रिग सौ निर्षायो ।।
तुमिरी गति रघपति को जाने । तुमिरी गति कहा वेद वषाने ।।
तू प्रभ सदा सहाइ जना केरा । किन हू अतु न पायो तेरा ।।
हे प्रभ तुम हमि भए सहाई । साईदास तुमि परि वल जाई ।।१९

कदरा त्याग वाहिरि सभ आए । जानकी को ढूढण उठि धाए ।।
वन वन व्रिक्ष व्रिक्षि ढूढाही । एति ओति ओर द्रिग निर्षाही ।।
आगे औरु कदरा आई । सभ वंतर ने द्रिग निर्षाई ।।
सभ प्रवेसु कीयो तिन माही । महा तिमरु कछु द्रिष्ट न पाही ।।
चलति चलति सभु आगे आए । कनक मंदिर सुदर निर्षाए ।।
वनि सुदर तहा व्रिक्ष अधिकाई । तिहि वन महि फल वहु उर्भाई ।।
मैन सुता बैठी मंदिर माही । ताहि रूप गति कही न जाही ।।
वतरि निर्ष रहे विस्माई । मैन सुता तिहि कह्यो सुनाई ।।
हे वंतरो तुमि कहा से आए । कौनु ओरि तुमि वंतरो धाए ।।
हनुमान तिहि वचनु उचारी । मैन सुता सुनु वाति हमारी ।।
हमि जानकी कौ ढूढनि आए । श्री रघपति अवतारु है लीना ।।
मैन सुता कहृयो लेहि फलु षावो । इहि फल सौ तुमि उदर अघावो ।।
तहा अधिक फल किनहू षाए । षाए फल तिहि उदर भराए ।।
मैन सुता तवि कहृयो सुनाई । रावण जानकी पडी दुराई ।।
प्रगटि भयो राम अवतारा । मैन सुता मुख वचन उचारा ।।
हनूमान ताको प्रतु दीना । श्री रघपति अवतारु है लीना ।।
मैन सुता सौ वचनु उचारा । हनूमान वलु तांको भारा ।।
मार्गु कोई हमहि वतावो । है मैन सुता वेरि नही लावो ।।
तवि उनि कह्यो नैन मुंदावौ । वेग विलम कछु मूल नि लावौ ।।
सभ ही कपि नैन मूंदि लीने मैन सुता सभ वाहरि कीने

पोल्ह दीए द्रिग बाहिरि आए। तजि कदरा आगे को धाए ।।
हेर्ति फिर्ति सभ जानकी ताई। ग्रहि ग्रहि वनि वनि विर्प मझाई
कहू जानकी द्रिष्ट न आवै। वतरि इति उति अधिक डूलावै।
वतरि ढूढति भए हैराना। सांईदास ढूढति मनु माना ।।१

ढूढति ढूढति ढूढति आए। निध्यी दधि मनि महि विस्माए।
पृथ्वी सकल ढूढी ना पाई। जानकी किने पडी दुराई।
चारि जोजन जलु धर्नि ते ऊचा। हमिरी आगे नाह पहूचा।
जहा लगि वलु हमिरो वसाया। थक्त परे वलु सभ ही लाया।
आगे कहा जाहि मेरे भाई। हनूमान कहति समझाई।
षगु मृगु ईहा नाही जावै। कहो कहा वलु हमहि वसावै।
जो फिरि जाही रघपति पाही। सुग्रीम हमि घातु कराही।
भलो होइ ईहा तजो प्राना। जोग मार्ग मनि लेहि पछाना।
जामवंत कह्यो सुग मेरे भाई। जोग साधिना करी न जाई।
कहा जोग साधना हमि ते होई। जो ना होइ कहो तुमि सोई।
हनूमान फिरि करि इहि बोले। सुणो वाति तुमि श्रवणहि षोल्हे।
लकडि मेल करि चिषा वणावहि। साईदास सभ प्राण तजावहि १

सभ हूं इहि विधि मनि ठहिराई। हनूमानि जो दीई वताई।
सभ लकडी चुण करि ले आवहि। अपो अपुनी चिषा वणावहि।
सभ हू चिषा जो लीई वनाए। चाहित अपुने प्रान तजाए।
षग सुनति तब ही प्रगटाया। वंतरि सभु तिनि द्रिग निषयिा।
षग हृदे महि इहि विधि धारी। पूर्न भई अवि इछा हमारी।
वहुति दिवस की भूष जु लागी। वलु अरु मत्ति हृदे ते त्यागी।
अवि मै इनि सभ भछनि करहों। पाछे उौर वाति चितु वरहो।
श्री कौलापति भछन कार्न। आण दीए इहि अपर अपार्न।
सभ वतरि षग को निषीया। दीर्घ रूप-वलु कह्यो न जाया।
सभ ही निर्ष भए हैराना। एहि वाति उनि मुषहु वषाना।
धन्न जटाउ प्रभ कार्ज आया। राम कार्ज करि प्रान तजाया।
जवि उनि ने इहि वाति वषानी। षग सुनति मनि लई पछानी।
कह्यो वचरो क्या उचिरायो चटाई नामु मोहि कहा सुनायो

कहो चटाई कवि आन तजाए। राम कार्ज तिन कैसे कराए॥
हनूमान तव वचनु उचारा। सुन हो सनाति हृदे तुमि धारा॥
रावण जानकी को हिति ल्यायो। तव ही चटाई ने युद्ध कराया॥
रावण ताको वलु हिरि लीना। राम नमित्त प्रान तिन दीना॥
श्री रघपति कर धरि के जलाया। पग चटाई पर्म गत पाया॥
जवि सनाति इहि सुण करि लीए। वहुरि वाति वचरि सौ कीए॥
हे वचर मोहि वलु सा भारा। मो मर अवरु न को ससारा॥
मै उडि रवि मडलि महि जावौ। रवि के आगै जा ठहिरावौ॥
रवि का आगा छाइ करि लेवौ। वल पंपनि करि एहि करेवौ॥
वाति चटाई की तुमि सुणाई। वहि चटाई लहुरो मेरे भाई॥
एकि दिन हमि दोनो जो धाए। हमि रवि मडल को जाइ छाए॥
चटाई तले मैं ऊपरि धाया। रवि को मडल जाइ मै छाया॥
रवि के तेज मोहि पष जलाए। रवि मंडल ने धर्नि गिराए॥
चटाई की रक्षा मैं करि लीई। तांको अंच न लागण दीई॥
मैं निहि वलु होइ ईहा गिरायो। चटाई गिर्‌यो तिहि वन ठहिरायो॥
आजु पवरि मैं ताकी पाई। भला कीआ तुमि मोहि सुणाई॥
मोहि वलु क्षीण भयो मेरे भाई। अवि मो पहि कहूं गियो न जाई॥
जो मोहि वलु प्रिथम सा होता। रावण को मै जाइ करि षोता॥
मोहि द्रिष्ट दिव्य हे भाई। जानकी अशोक वन महि ठहिराई॥
इकु सौ जोजनु ईहा वहु ठौरा। जिहि वल लागे जावौ दौरा॥
लका गढु त्रगुण भाई। इहि विधि मै तुमि दीई वताई॥
राकस जानकी डोरि फिराही। जानकी कौ वहु दु:ख दिषाई॥
मैं तुमि को इहि प्रगटि सुणायो। साईदास कछु विलम न लायो १

जवि सभ वचर इहि सुण पाया। चिषा त्याग सोचन चितु लाया॥
सभ वनिचर इकत्र आइ भए। मुष ते तव ही वचनु उचिराए॥
कह्यो कौणु लंका कौ जावै। तहा जाइ वल कौण वसावै॥
कनकपुरी सौ षवरि ल्यावै। जानकी कौ द्रिग सों निर्पावै॥
अगद कह्यो सुनो मेरे भाई। अवि मै जावो लका धाई॥
जावनि जावो फिरि नही आवौ। इहि विधि करि मै मनि सकुचावो

नील कह्यो मै जावण जावौ। वलु नही लागै फिरि मै आवो ।।
एहि विधि भी अनल वीचारी। हे साधो तुमि केहि वीचारी ।।
जोइ नि इहि विधि कही पुकारे। जामवत तव वचन उचारे।।
जव प्रभ ने वावन वपु धारा। वलि को छलिनि गयो नरंकारा।
अढाई करौ वसुधा जाचाई। वलि कह्यो मै दीनी साई।।
वलि छलने मन सकल्पु जु कीना। कह्या अढाई करौ मै धर्ती दीना।
प्रभ छलिते दीर्घ वपु धारा। वलु वहु विस्म हृदे मकुचारा।
एनी विल्म जु प्रभ ने कीई। मै सप्त वारि प्रदक्षिणा दीई।
सकल पृथवी कौ मेरे भाई। अति वृद्धि भयो वलु नाहि वसाई।
हनूमान कछु नाहि उचारा। विस्म होइ विस्मकि चितु धारा।
जामवान हनूमान सुनायो। हनूमान क्या वलु विसरायो।
जवि तेरी वालि अवस्ता साई। तुमि कौ वलु था अति अधिकाई।
अवि कहा भयो जो वलु विसिराना।
तू ता वोलीए अति वलिवाना।।
हनूमान कछु ना उचिरायो। स्रापु पाइ तिहि वलु विसिरायो।
एक समे ऋषि यज्ञु कराही। अग्नि जलाइ वहु होमुकराही।
तिन्हि समे पौन पुत्र क्या कीआ। अग्नि जलति लकडी कढि लीआ।
ऋषीश्वर ने तव वचनु उचारा। अति वलु इहि वल पौन तुम्हारा।
जवि तुमि राम कार्ज को जावौ। वहुरो वलु अपना तुमि पावौ।
जामवानि तव कह्यो सुनाई। सुण हो पवन पुत्र वाति कहाई।
जवि तुमि वालक मेरे भाई। तव तुम सौ वलु सा अति अधिकाई।
तोहि मात केसरी तिहि नामा। तव केसरी इहि कीनो कामा।
तुमि कौ पालनि माहि पायो। अपुनो चितु उनि वन को लायो।
फल लेने गई वन के माही। तवि तै सोच लियो मनि याही
रवि प्रकासु भयो तत्कारा। तव मनि महि तुमि लीयो वीचार
तव तै फलु करि रवि को जान्यो।
तव ही इहि विधि मनि महि आन्यो।।
त्याग पालिना गगनि सिधाए। अपुने करि जाइ रवि कौ पाए।
धर्नि त्याग गगनि को धाया। जाइ रवि को तै हाथ चलाया।

रवि कीओ तेजु तुमि दियो गिराई।
तोहि पितु ठटकि रह्यो अधिकाई॥
जब लगि पवनु न होइ सहाई। कहु कैसे कोऊ मग महि धाई॥
सभ हू लोक कष्ठु बहु पाया। ब्रह्म पाहि तिन्हा आष सुणाया॥
हे प्रभ पौनु रह्यो ठटिकाई। कहो कवन पहि आष सुनाई॥
बिनु पवन कैसे सुख होई। बिना पवन सुखु नाह कोई॥
ब्रह्म पवन को लीओ बुलाई। ताहि कह्यो सुण हौ मेरे भाई॥
काहे तुमि इहि कामु करायो। किह प्रयोग तुमि इहि चित आयो
पवन ब्रह्म पहि कह्यो सुनाई। सुण हो ब्रह्म पूर्ण ब्रह्म ताई॥
मम सुत को रवि धर्नि गिरायो। हमिरे पुत्र बहुति दुख पायो॥
इहि प्रयोग मैं इहि कर्मु कीआ। सभ हूं ते न्यारा कीयो होआ॥
तब ब्रह्मा कह्यो सुणु मेरे भाई। इहि विधि कीए नाहि भलाई॥
सुत कौ आण रवि पाह बैठावो। विद्या सभ तुमि ताहि सिषावो॥
अपुने आपु न करो न्यारा। मेरो कह्यो मनि लेह बीचारा॥
पवन पुत्र रवि पाहि बहायो। रवि ने विद्या तोहि सिषायो॥
ओह बलु तुमि काहे बिसिरायो। हनूमान बलु चित्त ल्यायो॥
जबि इहि विधि पवनु सुत सुन पायो। स्रापु मिट्यो बरु प्रगटायो॥
जामवंत जैसा कह्यो सुणाई। साईदास बलु अति प्रगटाई॥१

हनूमान कपति करि परिआ। अति दीर्घ अपुनो बपु करिआ॥
कह्यो सुनो भाई मैं जावो। जानकी की जाइ षबरि ल्यावो॥
तुमि सुषसेती ईहा रहो। रामु जपौ कछु अवरु न कहो॥
हनूमान स्थावरि परि चढयो। चतुर जोजन स्थावरि षढयो॥
उन्निमाति देवनि की आई। आगे आइ करिहि ठहिराई॥
कह्यो मैं इसि प्रतज्ञा लेवौ। हीरो परिषिनि चित्तु धरेवौ॥
सोच बीचार लीओ मनि माही। मैं हनूमान ताई पतीआही॥
राम कार्जु इसि ते होइ आवै। को काजु कर्ना ना पावै॥
दीर्घ रूप कीयौ आगो आई। हनूमान ने द्रिग निषाई॥
हनूमान वपु दीर्घ कीआ। जोति उसि ते दुगणा करि लीआ॥
बदन पसार आगे को आई। अति दीर्घ तिहि रूप देषाया॥

१ मूलग्रंथ में १५१ सख्या दो बार आई है

हनूमान सूष्म वपु पाया। कूदि बदिन होइ बाहरि गया ।।
अस्थावरु घसि गयो तलाही। जैसे धर्नी देह दिपाई ।।
बसुधा सौ तबही रलि गया। हनूमान कूदनि चितु दया ।।
तब उनि ने मुष बचनि उचिराए। धन्न माति जिन तुम से जाए ।।
हे हनूमान मै ओति सी आई। तोहि पतीआबिणि कार्नि भाई ।।
तुम रघपति को काजु सवारो। लका को गढु तुमि ही जारो ।।
श्री रघुनाथु होइ तोहि सहाई। ओति बचनि मुष ते उचिराई ।।
हनूमान डडौत कराए। जबि ओत ने यहि बचन सुनाए ।।
हे पूत माता तुमि होइ सहाई। मो कौ होवति बनु अधिकाई ।।
श्री रघिपति के कार्ज जावो। तोहि क्रिपा सिद्ध करि आवौ ।
ओति अशीरी बचनू तिहि कीआ। साईदास सुत पवन के लीआ १'

जबि हनूमान अकास सिधायो। एक गिरि दधि महि प्रगटायो ।।
पवन पुत्र सौ बचनु उचारा। सुन हो पवन सुत कहा हमारा ।।
तुमि हारे होवोगे भाई। मम परि आस्रमु लेवहु आई ।।
तोहि पिता हमि सौ भला कीना। जासि समे मघिवे दुःख दीना ।।
हमिरैं पपि मघवे कटि डारे। चाहित था हमि कौ वहु मारे ।।
तोहि पिता हमि करी सहाई। ताहि प्रजोग छूटे हमि भाई ।।
सुरपति से डरि ते ईहा आए। दधि मो अपुना आपु दुराए ।।
अमरो प्रश्नु किया ऋपि पाही। बाल्मीक ऋषि बिधि पूराही ।।
अस्थावर को पापु करायो। मघवे तिहि पष कटिणि त्रितु लायो ।।
इहि बिधि हमि कौ देहु बताई। पूर्ण ऋषि तुमि सदा सहाई ।।
बाल्मीक हि अमरो प्रतु दीना। जो कछु प्रश्न देवहु ने कीना ।।
अस्थावर उडणौ चितु लावहि।
चडि अकास फिरि धरनि परि आवहि ।।
पर्जा को बहुता दुःख देवहि। नग्र कौ देषि बिडारहि लेवहि ।।
प्रजा मघिवा पाहि पुकारी। हमि को दुःख दीनो अति भारी ।।
इहि अस्थावर हमहि दुःखावहि।
इनि के हाथ हमि बहु दुख पावहि ।।
जबि मघवे इहि बिधि सुणि पाई। क्रोधु कीयो मनि महि अधिकाई ।।।

इहि प्रजोग पष कटि डारे। सुण हो देवहु वीर हमारे॥
सकल देवौ कौ भमुं कटि डारा। वाल्मीक जव दीयो वीचारा॥
इस्थावर जवि वचन उचारे। पवन पुत्र तिहि दीयो वीचारे॥
अवि तो मै कार्ज को जावौ। राम कार्ज कर्न चितु लावौ॥
राम कार्जु जवि कर्के आवौ।
तौ तुमि परि आइ करि ठहिरावौ॥
फेरि कीई इस्थावर वानि। पवन पुत्र सुण हो चित आनी॥
तोहि पिता को हमि सिर भारा। चाहति हमि तिहि भारु उतारा॥
पवन पुत्रु फिरि ताहि मग आयो। साईदास फिरि आगे धायो १५

हनूमान आगे कौ धायो। कनक पुरी सौ तिन चितु लायो॥
छामा राकसी तव प्रगटाई। छामा राकसी वलु अधिकाई॥
जो कोऊ गगन के मार्ग जावै। तिह परिवस्त धर्नि परि आवै॥
ताह परिवस्तु कौ वहि दव लेवै। गगन त्याग वहु धर्नि परेवै॥
ताहि लेकरि भछन वहु करही। इहि वलु छामा राकसी धरिही॥
हनूमानु मग गगनि को धायो। तिहि परि वस्तु छामा निषर्यो॥
जतन करि तवहि दव्यो न जाई। हनूमान तिहि वलु अधिकाई॥
हार परी विस्मकि ठहिरानी। गगनि औरि तिहि द्रिष्ट करानी॥
देष्यो तिहि कपु उडियो जाई। देषि कपि को गगनि को धाई॥
हनूमान जाइ सन्मुख होए। तांसो युद्ध कीयो अधिकाए॥
हनूमान राकसी को मारा। ताहि मारि कूदयो अधिकारा॥
लंका त्याग पलका माही। जाइ पर्यो कपु वलु वहुताही॥
भयो भै चक्रित कहा मै आयो। कनक पुरी पहुचिन ना पायो॥
एक वनिता वुढी आसा देषी। नैन निहारि पवन तनु पेषी॥
वनिता उपले लीए मिलाई। जतन करे वलु नाहि वसाई॥
जो उपल्या वेचा लेहु उठाई। उपले ले ग्रहि को वहि जाई॥
कहयो पूत इहि मोहि उठावो। एति की ओरि मो पहि आवो॥
पवनपूत तव कहयो पुकारे। हे सय्या हमि भी है हारे॥
मै जावनि लंका के माही। थक्ति पर्यो वलु नाहि वसाही॥
तव वनिता ने बचनु सुनायो। हे वनिचरि इहि विधि सकुचायो॥

लंका पाछे रही अधिकाई। तुमि आइ परे पलका माही ॥
अैढे कूदि परो तहा जावो। किहि प्रजोग मन महि सुकचायो ॥
तव हनुमान सुनी इहि विधि काना।
मनि वहु सुख होयो आनदु माना॥
उपले वनिता को उठिवाए। सांईदास तिहि वलु अधिकाए १५४

अैढे ही हनूमान कूदाए। तातकाल लका महि आए ॥
कह्यो कौन ग्रहि ढूढिनि जावो। जानकी पूछ कहां ते पावो ॥
सूष्म रूपु कीयो हनूमाना। ग्रहि ग्रहि फिर्ति सुजाना ॥
ढूढति चल्यो शोक वनि आयो। जानकी कौ तहा आइ निर्षायो ॥
राकसी षडी अधिक इहि पाही।
चतुर्दिसा सीता ठहिगाही।
मुष करि जानकी के पूछहि टोरहि।
तांको छोड तिना ही भोरहि।
जानकी कौ वहु कहै सुनाई। हे जानकी रावणु वलिकाई ॥
रावण नृप को तुम सगु लेवहु। तपसी कौ मनि ते तजि देवहु ॥
जानकी तेह कह्यो हृदे न आनें। तांको कह्यो कछू नि जानें ॥
रचिक वीते रावणु आयो। जानकी सौ तिनि भाष सुणायो ॥
हे जानकी हमिरे ग्रहि आवो। काहे को एता दुःख पावो ॥
सभ ते नायक तुमें करावौ। पटिराणी तुमि नामु रषावौ ॥
सुरों सभ हू हमि कन्या दीनी।
सेषनाग दुहति सहिति कीनी।
त्रैलोकि मोहि वल कपावहि।
डपिमानि होइ सर्नी आवहि।
कहा रामु लक्ष्मणु तू भाषहि।
राम लछमनु क्या चित महि राषहि।
मेरो कह्यो मनि महि धरि लेवहु।
ऊैरु कहू चित नाहि डुलेवहु।
जानकी रावण कह्यो सुणाई।
हे मति हीन कहा चित आई।

श्री रामचंद लक्ष्मण अवि आवहि।
हे मति हीन वहु तुझे हतावहि।
तुमिरी औधि निकटि है आई।
तैं मनि माहे क्या ठहिराई।
रावणु इहि सुण के उठि धाया।
चला चला वनिता पहि आया।
मदोदरि को तिहि कह्यो सुणाई।
मै जानको सौ इहि उचिराई।
तुमि चलिहो हमिरे ग्रहि माही।
किह प्रजोग कछु नू पाही।
जो मै इहि कह्यो प्रतु दीना।
हे रावण क्या मनि मह लीना।
अवि ही राम लछमनु ईहा आवहि।
साईदास ओह तोहि हतावहि ॥१५५

मदोदरी रावण सौ आषा। एकु सुप्ना निसि मै भी भाषा॥
मानो रामचंद जी आया। तुमिरा रघिपति मूडु मूडाया॥
मुषु कीजो स्यामु गर्व परिचारा। लका लूटी तुमि कौ मारा॥
हे नृप मै इहि सुप्ना पायो। सोई तुमि कौ आप सुणायो॥
जो अपुनी चाहे भलिआई। एती त्याग देहि बुरिआई॥
जानकी सहित लेइ उठि जावहि। चर्न लाग जा रामु मनावहि॥
नाहि ति तुमिरो होइ विनासा। तुमिरी पूर्ण होइ नि आसा॥
रावण सुण इहि वचनु उचारा। हे मदोदरी क्या हृदे धारा॥
मै रघुपति लछमन कौ मारो। वल करि अपुने तोह प्रिहारो॥
क्या सुप्ना तू मोहि सुणावै। काहे इतिना भर्मु भुलावै॥
तुमि चितु रापो अपुनी ठौरा। मनि विस्वासु सुन लेहो मोरा॥
तिन को मै पल माहि विडारो। साईदास तिन कौ मै मारो॥१५६

मदोदरी फिरि तासि सुणायो। हे रावण क्या भर्म भुलानो॥
तुमि पहि वह दोई हने न जाही। काहे एते भर्म भुलाही॥
जो कोई आतमे को प्रहारे तो रघपति लछमन कौ मारे

रावण वनिता कह्यो सुणाई। कहा वाति तै मुष उचिराई।।
रघपति लछमन को ब्रह्म कीआ। कौनु वाति तै मनि महि लीआ।।
ब्रह्म कहा योनि महि आवै। ब्रह्म कहा दु:ख सुष को पावै।।
ब्रह्म सीता को कहा कराए। ब्रह्म सदा आनदु वहु पाए।।
मदोदरी ताको प्रतु दीना। हे मतिहीन कहा चित लीना।।
जहा जहा कष्टु सतनि को होई। रूप धारि तहू प्रगटि पलोई।।
भक्ति हेत करि दु:ख सुष पावै। भक्ति हेति योनि भर्मावै[1]।।
मोहि कहा मन महि ठहिरावो। जानकी सहित ले करि उठि धावो।।
वेनती जाइ करि मुषो उचारो। साईदास औगण न विचारो।।१

रावण ताहि कहा नही माना। आपु कहा मनि महि ठहिराना।।
त्रिजटा राकसी सेवक रामा। जानुकी पहि रहे इहि कामा।।
तिन्ह उनि राकसी आष सुनायो। हे राकसीयो कित चितु लायो।।
काहे जानुकी कौ दु:ख देवौ। कह प्रयोग इहि कामु करेवौ।।
मै इकु सुप्नो निसि महि पायो। वहि सुनहो कछु कह्यो न जायो।।
तव सभ राकसी कह्यो पुकारा। सुप्ने को सभु कहो वीचारा।।
त्रिजटा राकसी कहति सुनाई। सुण हो मै कहो हितु चितु लाई।।
मानो एकु वनिचर आयो। तिहि अशोक वनु सभ ही उपाडयो
कनकपुरी लोक तिन दग्धाई[2]।।
एहि स्वप्ना मैने है पायो। सो मै तुम सौ आपि सुणायो।।
राकसी सभु जवि इहि सुण पायो। मांसु कटिण तै चितु उठायो।।
सोइ गई निद्रा वहु आई। सांईदास प्रभ माया छाई।।१

हनूमान वृक्षि परि चरिया। सूक्ष्म रूपु अपुनो तिह करिया।।
जो रावणु कहि करि उठि धाया।
पौण पुत्र वहु भी सुण पाया।

---

१ "ब्रह्म कहा योनि महि आवे" यहा से "भक्ति हेति योनि भर्मावे" तक निराकार क्यों साकार होता है, यह स्पष्ट किया गया है। वैसे बावा साईदास निराकार और साकार ईश्वर के दोनों रूपो को स्वीकृति देते हैं।

१ इस छन्द की पूर्ति नहीं हुई है

जो त्रिजटा सुप्नो वीचारा।
पवन पुत्र एहा चित धारा।
जिहि समे रावण वचन उचारे।
पवन पुत्र क्रोधु मन धारे।
मनि महि कह्यो जो अवि इसि मारो।
अवि ही इसि मति हीन प्रहारो।
फिरि कह्यो आज्ञा नाही पाई।
विनु आज्ञा रघपति हन्यो न जाई।
सुरग सुरग विधि मनि महि ठहिराई।
तिहि समे वचनु न कोई उचिराई।
जवि रावणु गयो उठि ग्रहि माही।
राकसी रही जानकी पाही।
त्रिजटा सौ फुनि तिनहि सुरगाया।
तिहि जानकी तजि सोवनि चितु लाया।
हनूमान रघपति नामु लीग्रा।
उस्तित अधिक राम की कीग्रा।
जानकी सिरु ऊपरि करि पेष्या।
वनचरि कौ द्रिग सौ उनि देष्या।
निष्यी वनचरु सिरु तले कीग्रा। मनि अतर जानकी इहि लीग्रा॥
असुर रूपु वहु धरिकरिआवहि। नाना रूपु वहु करि दिषलावहि॥
हनूमान फिरि उस्तत कीनी। अधिक उस्तित रस्ना उचिरीनी॥
श्री रामचद्र दसरथ सुत भाई। लक्ष्मण वीर तांके सग सहाई॥
वालि कपु तिहि वलु अधिकाई। वीर भार्जा सु लई छिनाई॥
सुग्रीमि सौ मारि निकारा। वाली कपि कौ वलु अति भारा॥
श्री रघुपति जी चलि तहा आए। सुग्रीम सौ वचनु कराए॥
वालि मारि वनिता ले देवौ। इहि मैं कार्जु तोहि करेवौ॥
रघुपति वाल को मार विडारा। सुग्रीम परि किर्पा धारा।
केतगंधा नग्री राजु दीग्रा। एहि कार्णु श्री रघपति कीग्रा॥
जानकी वचनु लीउो सुरग काना। मुख ते वचनु तव ही उचिराना॥
जौ कोई राम को नाम उचारे। प्रगटि होउ आउ आगे हमारे॥

हनूमान ब्रिक्षि तजि तले आया। करि जोरे मुष वचनु सुनाया ॥
श्री रामचंद्र लछमन जी आए। तिहि सग सैना है अधिकाए ॥
मम तोहि षवरि लेन पठायो। इहि प्रजोग ईहा मै आयो ॥
जानकी कह्यो सदेसा कोई। रघपति कह्यो तुमि सोई ॥
हनूमान मुद्रा करि लीआ। जानकी कौ तिन ने वहु दीआ ॥
जानकी देष्या अधिक हिर्पाई। अग अग महि नाहि समाई ॥
पवन पुत्र तव कह्यो सुनाई। मोहि पुष्या लागी है माई ॥
मोहि षावनि को तुमि कछु दवौ। वेग विलम मय्या कछु न करेवौ ॥
जानकी कह्यो मो पहि कछु नाही। जो मै काढि देवौ तुमि ताही ॥
धर्नि गिर्‌या फलु ले करि षावौ। उदर पूर्ना तुमहि करावौ ॥
पवन पुत्र आग्या जवि पाई। ब्रिक्ष्मूल से लेहि उठाई ॥
मूल ऊपरि साषा तले करही। फलु तांको गिरि धर्नि जु परिही ॥
जो फलु लेवे अरु षावै। पवन पुत्र इहि कर्मु करावै ॥
सभ विर्छ तिनि मूल अपारे। फल सभ उदिर की विर्छ डारे ॥
असोका वनि पवन पुत्र उजारा। हे साधो सुण लेहु वीचारा ॥
दस सहस्र असुर तिहि माहि। सोका वन महि रहनि सदाही ॥
जबि हनूमान इहि कर्मि कराए। सभ ही असुर तवै उठि धाए ॥
पवन पुत्र सौ युद्ध मचावो। जो वलु था पलां सभ ही लायो ॥
पवन पुत्र वहु सभी विडारे। दस महस्र असुर तिह मारे ॥
त्रिजटा राकसो तजि दीआ। जास विर्छ तले जानकी थीआ ॥
एक विर्छ को हाथन गह्या। सुख आस्रमु उहा वहु लह्या ॥
रावण ने इहि विधि सुण पाई। इकु वचरु आयो धूमि रचाई ॥
सोका बनि तिहि सकल उपारा। दस सहस्र जोधा उनि मारा ॥
केतकि सुत तिहि दीए पटाई। तासो युद्ध करो तुमि जाई ॥
वहु सेना तिन के सग दीई। रावण नृप ने इहि विधि कीई ॥
सैना ले वहु युद्ध को धाए। पवन पुत्र जहा तहू ही आए ॥
पवन पुत्र तिहि सन्मुष होए। पवन पुत्र वह सभ ही षोए ॥
रावण सैना अवरु पठाई। हनूमान सभ सैन हताई।
अधिक संहारु पवन पुत्र कीना। तव रावण मनि माहे लीना।
इहि वचर वहु सुत मोहि मारे। नर मोहि सैन अधिक प्रहारे।

अग्नि लगी रावण तन माही। लोचन तिहि देहि रक्त दिषाई॥
क्रोधु कीयो सुत वडो वुलायो। इंद्रजीत तिह नामु वतायो॥
इद्रजीत कौ तवि स्मझायो। हे सुत कपि वहु घातु करायो॥
तुमिरे वीर अधिक उनि मारे। असुर सैन के वहु परिहारे॥
तुमि जाइ करि तिहि वधि ल्यावो। मेरो कह्यो मनि ठहिरावो॥
इद्रिजीनि जवि आग्या पाई। सैन अधिक तिहि सग चलाई॥
पवन पुत्र वाधिनि पग दीए। वेग विलम तिन मूल न कीए॥
इद्रजीतु शोक वन को धाया। साईदास तिहि वनि महि आया॥१

इद्रिजीत आइ युद्ध रचायो। पवन पुत्र तिहि सैन हतायो॥
इद्रिजीत ब्रह्म फांसी डारी। इंद्रजीत कौ वलु अधिकारी॥
पवन पुत्र को लीयो फसाई। वाधि लीयो कछु वलु न वसाई॥
वाधि ताहि रावण पहि ल्याहा।
रावण कौ तिहि आण दिषाया।
इनि वंचर ने इहि कर्मु कीआ।
अति क्रोधु फिरि मनि महि लीआ।
नृप कह्यो बनचर को मारो। इनि कर्मु एहि कीआ प्रहारो॥
तवी वभीछन बचनु उचारा। हे नृप मनि माहे क्या धारा॥
अवि लगि दूत किने ना मारे। इहि तीक्षण वचन कहति अति भारे
तीक्ष्ण वचन जु ना उचिराए। हे नृप तू वहु कहा कहाए॥
रावण तव कह्यो सुण भाई। इनि मेरी सैना सकल हताई॥
तिहि प्रजोग मै इसि कौ मारो। इसि वंचर को धर्नि पछारो॥
विभीक्ष्ण फिरि तिहि प्रतु दीना।
दूत सौ वैरु किन हू नही कीना।
जो तुमि अवि इसि दूत कौ मारो।
करि विरोधु इसि कौ प्रहारो
जग महि तुमहि कलूषति होई। वहुरो दूत आवै नही कोई॥
वभीक्षणु कह्यो नृपु ना माने। जो इहि कहे क्रोधु हृदे आने॥
फिरि कह्यो वंचर को मारो। पकरि बचर को धर्नि पछारो॥
जबि रावण एहि आज्ञा दीई। सकल सैन ने एही कीई॥

हनूमान को मारनं लागे। मार थके तिहि बलु सभ त्यागे।।
पवन पुत्र कछु जाने नाही। ताको बरु शिव का अधिकाही।।
ना तूं ब्रह्म शस्त्र ते मरही। ना शिव सस्त्र घाउ तोहि करही।।
वर प्रजोग करि दु:ख न पावै। ताके मनि महि कछू ना आवै।।
एक मारि के बलु हिराई। ताहि भुजा महि बलु रहे नाही।।
मारि मारि करि सभ ही हिराए। साईदास गोविंद जसु गाए।।१६

पवन पुत्र तव वचन सुनायो। तोहि मोहि मारण को चितु लायो।।
जो तू जतन करे मरो नाही। सोच बीचारु देपु मन माही।।
अवि उपिचारु मै तोहि बतावो। तिहि प्रजोग प्रान तजि जावो।।
जवि लगि डोहु होवे मेरे भाई। तव लगि मोको हन्यो न जाई।।
तव रावण मुष वचन उचारा। हे वतर तुमि देहु बीचारा।।
कौन कीए तू प्रान तजाए। किह विधि करि तू मृत्यु को पाए
सो विधि मोको देहु बताई। जौ नि कहै तुझै राम दुहाई।।
तव हनूमान ने कह्यो पुकारा। तोहि प्रतज्ञा मोहि कीनी भारा।।
श्री रामचद्र को नामु सुणायो। एहि प्रतिज्ञा मोहि बतायो।।
अवि मै तुमि सौ कहो सुनाई। सुण हो चितु लगाइ मेरे भाई।।
रुई आण इकत्रि करहो। तेल सग तांकौ तुमि भरहो।।
मोहि पूछ सेती लपटावो। पाछे ताकौ अग्नि लगावौ।।
इहि विधि कीए प्रान तजावौ। और कीए किते दु:खु न पावौ।।
इहि विधि अवि मै कह्यो सुणाई।
जवि तुमि मम कह्यो राम दुहाई।
इहि उपिचारु कहु कौणु वताई।
साईदास जो कह्यो सुणाई।।१

रावण श्रवन धार सुन लीनी। पवन पुत्र जो आज्ञा कीनी।।
रुई अधिक तिहि लीई मगाई। तांते तेलु लीयो अधिकाई।।
ताहि पूछ सौ रू लिपिटाया। तेलु अधिक तांसौ उनि पाया।।
पावक ले करि तासि लगाई। अति भडिकाऊ भयो तवि भाई।
सीता को राकसी इकि भाषा। वतर जलायो नृप इहि आषा।
सीता वन्हि अराध के कह्या। कपि रापो लका गढु दह्या।

पवन पुत्र सूक्ष्म वपु कीआ। फासी त्याग कूदनि चितु लीआ॥
कूद चरयो रावण मद्रायण। मंदरि सकले ताह जलायण॥
पवन को तब ही लीओ बुलाई। हे मोहि पित अवि होउ सहाई॥
जिहि जिहि मदर महि मै जावौ। तासि मदिर्ज अग्नि लगावौ॥
तुमि तहा जाइ प्रवेसु करावौ। वह मंदर तुमि वहुतु जलावौ॥
पवन जाइ तव भयो सहाई। कनक पुरी सकली दग्धाई॥
भई स्याम कंचन ते वाही। द्रिग सौ वहुतो देप न जाई॥
वैठकि नृप की कुभ कनि द्वारे। इद्रजीत गृहु त्रै नही जारे॥
सुरो जोरि करि वचनु उचारा। वाल्मीकि मुणु प्रान अधारा॥
कनक निकटि जवि पावक आवै। कचन रूपु अधिक दिपलावै॥
स्याम वर्नु नही प्रभ होवै। एहि सचरु मनि महि वहु होवै॥
वाल्मीक तव कह्यो सुनाई। भलो प्रश्नु कहो मेरे भाई॥
वृहस्पति सुतु रावण गृह माही। फांसी परा डर्पे अधिकाही॥
पवन पुत्र तिहि लीओ छुडाई। वृहस्पति सुत तव दृष्टि चलाई॥
ताहि दृष्टि करि स्याम ही होई। हे देवो उौरु दु:ख न कोई॥
जवि देवो ने इहि प्रतु पायो। सचरु मन का सकल हिरायो॥
पवन पुत्र तिहि लक जराई। पावक लागी पूछ कौ आई॥
कूद्यो पनि लगा दधि माही। पति पति दधि कह्यो सुनाई॥
पवन पुत्र तुमि तटि ठहिरावो। जीड जत तुमि कीह जलावो॥
मै तुमरी अग्नि लेउो हिराई। तुमि परि पावौ सीतल ताई॥
पवन पुत्र दधि तटि ठहिरायो। दधि ने नीरु अधिक उमिडायो॥
पवन पुत्र अग्नि लीई वुझाई। ताकौ उमिडी सीतलताई॥
रंचिक मीन सौ भयो प्रवेसा। अग्नि दधो तनु ताको अैसा॥
तव ही पूछ मीन ललिताई। अग्नि तापु लागो तिहि जाई॥
रावण तव मनि वहु पछुताना। कहा होइ जवि समा विहाना॥
अति विस्वासु हृदे महि करयो। साईदास सचरु चित धर्यो॥१६२

पवन पुत्र मनि लीयो वीचारी। मतु मै जानकी भी मै जारी॥
कूदि परयो जानकी पहि आयो सभ बितातु तिहि आष सुणायो

रघिपति की आज्ञा नही पाई। विनु आज्ञा तुमि षर्यो न जाई।।
मोहि आज्ञा देवौ मै जावौ। रघिपति जाइ षवरि सुणावौ।।
जानकी तव ही वचनु उचारा। देहु सदेसा राम हमारा।।
हे प्रभ निसवासरि तोहि ध्याना।
औरु माहि कछु मनि महि आना।
तौ विनु हमिरो कोउ न सहाई।
हे प्रभ पूर्न ब्रह्म ताई।
एक समे प्रभ तुमि मोहि ताई। निकटि आपुने लीया बुलाई।।
मोकौ अपुनी ओरि वहायो। हे रघुपति इहि कर्मु कमायो।।
काग महावली एते आयो। मोहि पगि मांझ चुंचि लगायो।।
रक्त अधिक निकसी पग मेरे। तव वहि द्रिष्ट परी प्रभ तेरे।।
तव लै मोसों वचनु सुनायो। हे जानकी इहि मोहि वतायो।।
तुमि पग रक्तु कहां से लाई। इहि विधि मोकौ देहु वताई।।
तव मै तुमि सौ वचनु उचारा। काग चुंच लागी अति भारा।।
ताहि चुंच करि रक्त चलाई। मै तुमि सौ प्रभ कह्यो सुणाई।।
तव तुमि धनषु वाण करि लीआ। चाहि तित वही काग हतु कीआ।।
कागु भाग भयो ब्रह्म पाहै। मतु मोहि रक्षा एहु कराहे।।
ब्रह्म तिहि रक्षा ना कीई। काग कौ प्रभि विदआ दीई।।
वहुरो शिवपुरी महि चलि आयो। शिव भी ताको नाहि रषायो।।
त्रैलोक कागु भाग कराही। फिरि आयो प्रभ तुम सनाई।।
जैसे जानो तैसे राषो। हे प्रभ पूर्न अपुने भाषो।।
तव तुमि कह्यो काग के ताई। मोहि वाणु अन्यथा ना जाई।।
एकु द्रिग प्रभ तुमि ताहि छिनायो। एकु वाण द्रिग ताहि गवायो।।
कागकौ एको द्रिगु प्रभु राषा। जीउ दीयो ऐसो उनि भाषा।।
हे प्रभ ओहु समा चित ल्यावो। पातकी को तुमि ना विसरावौ।।
एकु वर्ष प्रतज्ञा कीई। रावण सौ प्रभ इहि मनि लीई।।
तिहि महि अष्टि मास प्रभ गए। चतुर मास प्रभ पाछे रहे।।
जो चतुर्मास को तुमि नही आवो। जानकी प्राण घातु करावो।।
हे हनूमान सदेसा दीजै। एहि कामु तुमि हमिरो कीजै।।
पवन पुत्र कह्यो जानकी ताई हे जानकी चित नाहि डुलाई ४

श्री रघपति तबिही चलि आवै। रावरा को प्रभु हतनु करावै ॥
सदा जी बोले रघिपति राम। सांईदास पूर्ण होइ काम १६३

पवन पुत्र पग सीसु धरायो। जानकी ते आज्ञा तिन पायो ॥
कूद पर्‌यो दधि के तटि आयो। जहा अंगदु कपो सहिति ठहिरायो ॥
पवन पुत्र जवि इनो निर्षायो। आनदमान होइ वचनु सुनायो ॥
हे हनूमान षबरि ले आए। कनकपुरी द्रिग सौ निर्षाए ॥
सकल वाति तिह ताहि सुरणाई। पवन पुत्र छिनु विलमु न लाई ॥
सभ ही वनचरि तव उठि धाए। सुग्रीम के मधिवन महि आए ॥
ब्रिक्षो सौ फल रहे उभाई। नाना फल लागे मेरे भाई ॥
हनूमान कह्यो ले षावो। सुग्रीम राजा ते नाहि सकावो ॥
सभि वनचरि सुरण फल ले षाए। सुग्रीम सैना ने निर्षाए ॥
सैना जाइ कह्यो नृप ताई। पवन पुत्र पर्‌यो वनि माही ॥
बचरि अध्कि सहति तिहि लीए। वनि फल षारणे कौ चितु दीए ॥
सुग्रीम कह्यो पुन तिन ताई। कछु न कहो समिझो मनि माई ॥
जानकी की वह पवरि ल्याए। तव अनिभय होइ तिन फल षाए ॥
पवन पुत्र बंचरि संग लीए। श्री रघपति आगे पग दीए ॥
आइ डडौत करी नृप ताई। रघपति तव इस्नानु कराई ॥

बचनु कीओ जिहि समे तुमि आवो।
जो महि अंग होइ तुमि पावो ॥

र्कात इस्नानु अंग कछु नाही। वस्त्र लुग प्रभ कीयो मंझाही ॥
लुग लाहि हनूमान को दीनी। इहि कार्णु प्रभ तापरि कीनी ॥
लछमन को तव वचन मुनायो। श्री रघपत ने ताहि वतायो ॥
तीन परा करी जाइ पकावौ। दोने ते इकि वडी करावौ ॥
हनूमान को सहित पलावहि। अपुनो वचु बीर पूर करावहि ॥
लछमन ने ऐसे ही कीना। जो आज्ञा रघपति ने दीना ॥
पवन सो कह्यो सुनाई। तुम सौ वचनु हमरो भाई ॥
आवो भोजनु सग हमि पावो। पवन पुत्र छिन विलमु न लावो ॥
हनूमानु आगे को आया। तीन पिरा करी तिन निर्षाया ॥
न्दोनो पहि इकि है अधिकाई। चपल वुद्धि हनूमानि चित आई ।

बडी पिराकरी लई उठाई। कह्यो सुरगो प्रभ रघिपति राई ।।
मैं विना रहो इसि कौ पावौ। तुमिरे सहित ता भाजनु ना पावौ
रघपति लछमन भोजनु पायो। पायो भोजनु उदर भरायो ।।
त्याग रसोई वाहिरि आए। सांईदास तिहि परि वलि जाए १५

पवन पुत्र को लीयो बुलाई। जानकी पवरि देह मेरे भाई ।।
जो कछु जानकी ताहि सुनायो। रघिपति को हनूमान वतायो ।।
रघिपति जवि सभ विधि सुरग पाई। सुग्रीम को लीयो वुलाई ।।
कह्यो चलो लका को जावहि। रावरग असुर को जाइ हनावहि ।।
सुग्रीम तव वचनु उचारा। हे रघिपति भलो लीयो वीचारा।।
रघिपति हनूमान काधे चरिआ। लछमन दधिमुख ऊपरि चढिआ ।।
सुग्रीम भी ऐसै कीआ। कनक पुरी को तिहि मगु लीआ ।।
सैना अधिक कछ गरगी न जावै। वेद कतेब तिहि अ त न पावै ।।
चलित चलित दधि के तटि आए। निर्षो जलु दधि वहु अधिकाए ।।
दो दिन रघपति तटि ठहिराए। आगे मग पगु र्थनि न पाए ।।
घनिषु वारग करि माहे लीआ। दधि को चाहिति प्रभु हनि लीआ
दधि मूर्ति होइ आगे आए। थानि मानि करि तिन आगे ठहिरा
हे प्रभ मै तुमिरी सर्नाई। तौ विनु हमिरो कौन सहाई ।।
रघपति कह्यो दो दिन हमि होयो। तुमि तटि परि हमि आइ षलोयो।।
तू हमि पहि काहे न आयो। तै मनि महि अभिमानु करायो ।।
तव ही दधि ने विनती ठानी। हे कौलापति सारंग पानी ।।
मैं अभिमानु हृदे ना धर्यो। हे प्रभ कछु औगणु ना कर्यो ।।
नृप सगर तात तोहि मोहि कढायो। मो सो ऐसो वचनु सुनायो ।।
तोहि उदरि वो पार कराही।
इसि ओरि ते उसि ओरि न जाही।
इहि प्रजौग मैं रह्यो विस्माई।
हे रघपति कछु कह्यो न जाई।
सगर वचनु कैसे तजि देवौ। तोहि कहा कैसे न करेवौ ।।
इहि दोइ विधि मोह वनि अति भारी।
कहा कहो तुमि पाहि वीचारी

रघपति फिरि करि बचनु उचारा। अन्यथा न जाई वानु हमारा ॥
फिरि कर दधि रघपति सौ आषा। हे कौलापति तुमि भलो आषा ॥
दसरु दैतु महा वलिकारी। तांकी भुज महि बलु बहु भारी ॥
अपुने सिरि परि नग्र वसाए। इहि कर्मु प्रभ ओहु कराए ॥
जास ओरि वहु जाइ गिरावै। तिस नग्री कौ नासु कराए ॥
हे प्रभ वाणु ताहि कौ मारौ। मो परि प्रभ किर्प इहि धारो ॥
तव प्रभ वाण छाडि करि दीआ। तस सर असुर ताई हनि लीआ ॥
रघपति वानु अन्यथा न जावै। जिसे कहे तिस मारि चुकावै ॥
प्रभ ने कह्यो फिरि दधि के ताई। दस्सौ मार्गु तिहि हमि जाही ॥
मोहि सिरि कार्जु है अति भारी। को मगु दस्सै मन वीचारी ॥
वेग विलम तुमि मूल नि लावौ। तात्काल कोई राहु वतायो ॥
मै अवि कह्यो तुमिरे ताई। सांचि वीचारु देषि मनि माही ॥
ऐसो मार्गु हमहि वतावो। तात्काल हमि पारि लघावो ॥
अवि कह्यो मै तोहि पुकारी। साईदास लेहु मनि धारी १५

दधिरूप कह्यो सुणो रघुराई। कौनु मार्गु मै देउ वताई ॥
एक प्रतज्ञा मै प्रभ करहो। सा प्रतज्ञा मनि महि धरयो ॥
श्री रघपति कहा कहो सुणाई। कौनु प्रतज्ञा करहो भाई ॥
दधि रूप तव ही वचनु उचारा। हे रघिनदन प्राण अधारा ॥
हे प्रभ गिरि अधिक अणिवावो। इसि ही ठौरि तुमि सेतु वधावो ॥
मै इनि के तले प्रान लगावो। तिहि गिरि को नाहि रुढावो ॥
जल माहे तिहि धसिनि न देवौ। इहि प्रतज्ञा मै करि लेवौ ॥
रघपति कह्या वहु भलो आषा। हे दधि रूप नीका तै भाषा ॥
वहुरो दधि रूप कह्‌यो सुनाई। हे रघपति सततित सुषदाई ॥
इहि नील नल भलो सेत उसरावै। विस्वुकर्मा के सुन जु कहावै ॥
हे प्रभ इसि कौ आज्ञा देवौ। इस ही परि प्रभ क्रिपा करेवौ ॥
गिरि कपि ठौरि ल्याव उठाई। नील नल अधिक सेतु जु वनाई ॥
श्री रघपति हनूमानु वुलाया। तांसो सब ब्रितातु सुनाया ॥
पवन पुत्र कह्‌यो क्या कीजै। कैसे पग आगे कौ दीजै ॥
आगे सूत्र जल विव दिषावै किउ करि सैना लाघा पावै

पवन पुत्र कहचा सुण रघुराई। जो आज्ञा होइ तो कह्यो सुणाई।।
तोहि क्रिपा सभ सैन लघावौ। तोहि क्रिपा इहि कर्मु कमावौ।।
जवि हनूमान वचन उचिरावो। रघिपति ताको वहुर्सुणायो।।
कैसे करि तू पार लंघावहि। सभ सैना को तीर चढावहि।।
पवन पुत्र तव कह्यो पुकारी। हे रघपति मै इहि मनि धारी।।
मिरुइसि तटि पग इसि तटि राषो। तोहि क्रिपा सो इसि विधि भाषो।।
जब रघपति इहि विधि मुण पाई। कहा साचु तुमि से होइ भाई।।
मुण हो वाति कह्यो इकु मेरी। पवन पुत्र चचल मति तेरी।।
जवि सैना तुमि ऊपरि जावै। मतु उठि कूदै सकल डुवावै।।
इहि प्रजोग सचर मनि करहो। इहि सचरु मै मनि महि धरहो।।
जो मै कहो सोई तुमि करहो। ओही वाति हृदे महि धरहो।।
पवन पुत्र तव विनती ठानी। हे पूर्न पद सारंग पानी।।
जो आज्ञा तुमिरी प्रभ होई। हमि चित धार करहि प्रभ सोई।।
रघिपति कह्यो गिरि ले ले आवो। आण करि तुमि सेतु वधावो।।
तिहि करि सैना पारि उतारहि। रावण कौ तव जाइ सहारहि।।
पवन पुत्र मन महि धरि लीनी। जो आग्या रघिपति ने कीनी।।

महावली वचरि ले धाया।
गिरि अधिक तिहि आइ उठाया।
गिरि चुकि करि दधि के तटि आने।
सेत वधावनि को चितु माने।
गिरि लीए ले दधि ठहिराए।
जलु जोरा करि सकल रुढाए।
श्री रघुपति दधि रूप सौ भाषा।।
हे दधिरूप कहा तै आज्ञा।
गिरि टिके नाही जलु रुढाए।
कैसे गिरि जल परि ठहिराए।
तव दधिरूप कह्यो रघुराए।
मै तुमि पहि को गिरि टिकाए।
मोहि आज्ञा देवो मै जावौ'
न्करु दे गिरि कौ मै ठहिरावौ

तां पहि राम नामु लिष लेवौ।
पाछे तुमि जल माहे देवौ।
रघपति तांकौ आज्ञा दीई।
जो दघ रूपहि वेनती कीई।
दधि रूपु अपुने आस्रमि आयो।
श्रीराम काज सेती चितु लायो।
वंचरि गिरि अधिक ले आवहि।
राम नाम सत्य ताहि लिपावहि।
पाषाण ले दधि माहे डारहि।
सेतवधि पुल भयो सवारहि।
नितापर्त एही उसि कामा।
आज्ञा दीनी पूर्न रामा।
जिउ जिउ पषाण आण टिकावहि।
मानो षचित कीए जुड जावहि।
चौदा जोजन प्रथम दिन बाधा।
छत्री जोजन द्विती दिन साधा।
पचवन जोजन तीसरे दिन कीआ।
दस जोजन चौकडु हछा कीआ।
दुहू उोर सूत जिउ राषा।
दस जोजन चकुलाया भाषा।
सभ पुलु जोरि बरावरि कीना।
जो आज्ञा श्री रघपति दीनी।
नील नलु साजनि पुलि कौ लागा।
उौरु बाति सकली तिन त्यागा।
श्री रघपति कार्जु चितु वै धारे।
साईदास प्रभ ताहि उधारे॥१६६

श्रीरघपतिजबिइहिकियो कामा। सुण पाई विधि रावन नामा॥
आयो रघपतु सेतु वधावै। सेतु बाधि लंका परि आवै॥
सकल कुटंबु तब लीयो बलाई। तांसौ रावण बाति सुणाई।

है कोई तिन के सन्मुख जावै। युद्ध करै ताको वधि ल्यावै॥
महीरावण तब वचन उचारे। हे वध जावो तत्कारे॥
मै दोनो कौ वंधि ले जावौ। एहि कामु नृप मै करि आवौ॥
रावण कह्यो धन्न मेरे भाई। भली वाति मुष ते उचिराई॥
एहि कामु मेरो करि आवो॥
मही रावण विधि मुण ग्रहि आया।
रावण को कह्यो मनि ठहिराया।
कह्यो कौण समे मै जावो।
जामि समे मै उनि को पावो।
एही तिनि मनि महि ठहिरायो।
मनि महि सोच समा न सिधायो।
निस समे दोनों सैनु कराही।
माईदास तहा जाइ फिराही॥१६७

निस भई मही रावणु उठि धाया। चला चला दधि के तटि आया॥
वंचर अधिक तहा नैन निहारे। सचरु मन लीउो तत्कारे॥
कवन ठौरि मै उनि कौ पावौ। कित विधि मै तिन कौ ले जावौ॥
हनूमान को नैन निर्षायो। देष्यो उसि मनि महि सुकचायो॥
वंचर अधिक फिर्त रषिवारे। सूक्ष्म रूप ग्रही रावण धारे॥
जो कासू की द्रिष्ट न आवै। हेर्ति हेर्ति आगे जावै॥
हेर्ति हेर्ति तहू ही आयो। रव सस सैनु जिहि ठवर करायो॥
सोए परे तिहि पास न कोई। तिह समे वाको राषा को होई॥
ग्रही रावण दीर्घ वपु धारा। रव सस को वध्या तत्कारा॥
जव रव सस दोई लीए दुराई। अधिक तिमरु भयो मेरे भाई॥
दोनों को लेकरि उठि धाया। अपुने नग्र को मार्गु पाया॥
मग महि राकस अधिक वहाए। पाषाण राषे अति अधिकाए॥
मतु कोई इति मार्ग पगु धारे। राकस तांकौ उदरि विडारे॥
पाषाण मग महि इउ ठहिराए। जो आवै सोऊ मगु नही पाए॥
इहि विधि करि अपुने ग्रहि आया। ग्रहीरावण इहि कर्मु कमाया॥
रव ससि वनिता कौ देषाए तिहि वनिता मुष वचन सुनाए

हे निर्दया तोहि दया नि आई। वाल्क तोहि वधि आने जाई॥
अैसे सुदर कौ दुःख देवहि। एहि कर्मु कहु कौनु करेवहि॥
वनिता अधिक कीयो धधिकारा। हे निर्दय कहा चित धारा॥
अही रावण तत्र वचन उचारे। हे वनिता मै इहि मन धारे॥
इनि को रूपु तू देषि लुभाई। तौ मोसो इहि वाति सुनाई॥
फिरि कह्यो वनिता तिहि ताई। इसि कौ रूपु तूं जानहि नाही॥
पूर्ण ब्रह्म लीयो अवतारा। भक्ति हेत करि इहि वपु धारा॥
भला करे कह्यो मोह माने। साईदास मनि अवरु न आने॥१६८

महीरावण फिरि वचनु उचारा। हे वनिता मुष कहा पुकारा॥
पूर्ण ब्रह्म तूं इसि कौ आपहि। अैसी वाति तूं मुप ते भाषेहि॥
पूर्न ब्रह्म फासी नही फासे। पूर्ण ब्रह्म को दुःख न ग्रासे॥
पूर्ण ब्रह्म किसे हत्या न जाई। पूर्न ब्रह्म सभ माहि स्माई॥
देषो मै इनि कौ हनि लेवौ। पूर्न ब्रह्म तुझै करि दिषलेवौ॥
फिरि वनिता तिहि वचन उचारे। हे मतिमूढि कहा चित धारे॥
तोहि कहा बलु इन्हि हति लेवै। काहे अभिमानु तू हृदे करेवै॥
इनि स्मसर तू कहा कहावहि। हे मति हीन क्या चितु डुलावैहि॥
तुमिरी औध निकटि है आई।
तौ तुमि इहि विधि मन ठहिराई।
मोहि कह्या माने तूं नाही।
अवि ही देषु वहुत दुःख पाही।
अहीरावण तिहि कह्या न माने।
ताहि कह्या हृदे महि नही आने।
दोनों वीर को तिन दुःख दीआ।
साईदास तिहि लीयो जीआ॥१६९

पवन पुत्र के मन माहि आई। राम लक्षन कौ देषो जाई॥
कहा भयो वाहरि नही आए। रवि चढयो सस गयो दुराई॥
चलति चलति जवि अंतर आयो। रवि सस दोई ना निर्पायो॥
रवि ससि गयो दुराइ मेरे भाई। तिमरु भयो कछु द्रिष्ट न आई॥
मन महि अधिक भयो विस्वासा। भूलि गयो तिहि भोग विलासा॥

पवन पुत्र वहु रुदनु करायो। थक्ति रह्यो मनि महि विस्मायो।।
जवि इहि सचर मानु षलोयो। राम ब्योग अधिक वहु रोयो।।
वसुधा गौ रूपु धारि करि आई। पवन पुत्र सौ कह्यो सुनाई।।
हे हनूमान किउ रुदनु करावै। किति प्रजोग मनि महि विस्मावै।।
इहि विधि मोसौ कहो सुणाई। पवन पुत्र तुभै राम दुहाई।।
पवन पुत्र तव वचन उचारे। हे मय्या सचरु अति धारे।।
राम लषन किने षडे दुराई। ताकी सुधि मैं मूल नि पाई।।
गौ कह्यो इहि विधि सुकचावो। इहि प्रजोग तुमि रुदनु करावो।।
मै इहि तुमि को देयो वताई। रुदनु न करहो मेरे भाई।।
पवन पुत्र तव विनती ठानी। कहु किन षडे है सारग पानी।।
गो कह्यो अहीरावण आयो। महीरावण इहि कर्मु कमायो।।
लषन राम तिन षडे दुराई। इहि विधि मै तुभै दीई वताई।।
पवन पुत्र जवि इहि सुण पायो। सांईदास रंचिकि सुपु पायो।।१

पवन पुत्र तिहि वलु अधिकाई। जवि ते इहि विधि सुण करि पाई
सुनति वानि तव ही उठि धाया। महीरावण मारण को आया।।
हनूमान जवि मग महि आए। राकम्म अधिक ताहि निपाए।।
राकसो सो वहु युद्ध करायो। सभ ही राकस ताहि हतायो।।
तव ही गवनु आगै को कीने। अति पषाण निर्ष करि लीने।।
पषाण उठाई दीए ततकारा। ले पषाण मग से ओडि डारा।।
एकु पषाणु ताहि पूछ पर्यो। ताहि पूछ रचिक नोक गिर्यो।।
इहि विधि करि आगे को धायो। चला चला नग्री महि आयो।।
सूक्ष्म रूप तव ही करि लीना। कितहू द्रिग सौ निर्ष न लीना।।
नग्री महि सभ वाति चलावहि। राम लक्षन को नामु उचराहि।।
महीरावण दोई वधि आने। तिहि मार्ण सो चितु ठहिराने।।
देवी भवनि तिहि रक्त चढावहि। तहू ठौर तिह जाइ हतावहि।।
हनूमान जबि इहि सुण पायो। देवी भवन महि चलि करि आयो
पगु जाइ तिहि मूर्त्ति परि दीना। देवी मूर्त्त कौ तले कीना।।
ताहि ठौर आप ठहिरायो। पवन पुत्र इहि कर्मु कमायो।।
अहीरावण पर्जा वहु आई। मिष्टान पान ले ताहि चढाई।।

जो कछु कोऊ आगे ठहिरावै। पवन पुत्र मभि हो ले पावै।।
जो आए सभ ही बिस्मावै। अति भै चकित होइ चितु डुलाए
आगे देवी कबहू न पायो। आजु कहा भयो अति बिस्मायो।।
अति बिस्माद रहे मनि माही। साईदास कछु कह्यो न जाही।।१७१

इहि बिधि महीरावण सुण पाई। मन महि एही आण लगाई।।
देवी वलु चाहिति मै देवौ। सुप्रसन्न तिस कौ करि लेवौ।।
श्री रघपति लछमन सग लीए। देवी भवन कौ तिन पग दीए।।
अति मिष्टनु तिहि सग चलाए। चलत चलिति देवी भवन आए।।
मिष्टान आण आगे चढाए। हनूमान वह लेकरि पाए।।
फिरि रघपति लषमण कौ षडा कीना।
अहीरावण मुष वचनु वषीना।

जो तुमिरो कोई चित्त करावौ।
नाहि ति पाछे ते पछुतावौ।

तुमि कौ वल मै ईहा चढावौ।
छिन पल विलमु कछु नाह करावौ।

जो कोऊ प्रीतम तिहि चित आनो।
महीरावण ऐसो वसु ठानो।

श्री रघपति मुष वचनु सुनायो।
हे महीरावण क्या चित ल्यायो।
पवन पुत्र पवरि जो पावै। सकल नग्र को घातु करावै।
अवर कवन को चित्त ल्यावहि। वार वार क्या मुष उचिरावहि।।
जवि श्री रघपति वचनु उचारा। हनूमान कीनी नमिस्कारा।।
नमिस्कार करके उठि धायो। महीरावण को तव ही गहायो।।
सभ जान्यो देवी उठि आई। देवी क्रोधु कीयो अधिकाई।।
सकली सैना तव उठि भागी। आपो अपुने ग्रहि मग लागी।।
पवन पुत्र महीरावण गह्यो। अहीरावण को ऐसे कह्यो।।
हे पालक तै क्या मनि आना। श्री रघिपति को क्या करि जाना।।
तले दीओ दे भुजि उपिडाई। डार दीई परी लका आई।।
रावण वनिता सो जु षलाई। भुजा पडी वहुत हूही जाई।।

रावण भुजा न द्रिग सौ देषी । खल विनासनु तिह मूल न पेषी ।।
वनिता सौ तिन वचनु उचारयो । जो तूं कहति रघपति है आयो ।।
महीरावण सोई वधि आना । हे मंदोदरी तै नही जाना ।।
महीरावण तिन कौ ले मारा । महीरावण तिह भुजा उपारा ।।
फिरि मदोदर ताको प्रतु दीना । हे मतिमूढ कहा चित कीना ।।
एहि भुजा महीरावण देष लेवौ । पाछे कछु मनि औरु करेवौ ।।
जवि रावण ले भुजा निहारी । अति विस्वासु लीओ हृदे धारी ।।
मंदोदरी फिरि ताहि सुनायो । हे रावण अवि क्यु विस्मायो ।।
अवि ही जानकी को ले आओ । मुष महि त्रिण ले सर्नी धावो ।।
नाहि ति तुमि कौ भी एहि होई । महीरावण को कीनी सोई ।।
रावण कह्यो कहा उचिरावै । हे वनिता क्या भर्मि भुलावै ।।
मोह सर तांको बलु कहा होई । मोहि सर अवरु वली नही कोई ।।
मंदोदरी वहुरो कह्यो सुनाई । हे नृप अजहूं प्रतीत न आई ।।
एक वचरि तोहि लक जराई । अहीरावण की भुजा उपिराई ।।
पुनि कहिति मो सर ना कोई । इसि धर्ती परि अवरु न होई ।।
एक वंचर तोह एहि करायो । अैसे वचरि केते आयो ।।
जो तूं अपुनो वहु भलो लोडे । तिमर गुमानु हृदे ते तोडे ।।
रावण कह्यो ताहि नही माने । अति अभिमानु हृदे महि आने ।।
मदोदरी ताहि जेता समझावै । साईदास नृप समझि न पावै १८

पवन पुत्र महिरावणु मार्यो ।
तांकी भुजा उनि पकिर उपार्यो ।।

ताकी सैना सकल हताई । पवन पुत्र धन्न धंन्न ता भाई ।।
रघपत की फांसी कटि डारी । पवन पुत्र को वलु अधिकारी ।।
रव सस को हनूमानु ल्यावो । एहि कामु हनूमान करायो ।।
महीरावण वनिता चलि आई । चर्नि लगी रघुपति के धाई ।।
मुख ते उस्तिति अनक उचारी । तांकी वात न जाइ वीचारी ।।
चरन लाग गृहि मै ठहिराई । श्री रघपति तिह भए सहाई ।।
पवन पुत्र रघपति सग लीए । लक्ष्मन सहित गवनु तिन कीए ।।
चले चले दधि के तटि आए । आइ सिंघासन परि ठहिराए ।।

सकल सैन तव ही मिल आई। रघपति को डडौत कराई।।
महा अधिक सुपु तांकौ होया। अति ब्योग तिन्हा मनि ते पोया।।
तिमरु गयो उजीआरा आयो। रव सस ले जवि मुषु दिपलायो।।
बादर मडल पवनि विचारा। रव निकस्यो होयो उजीआरा।।
जोति प्रकास भई रव केरी।
तिमरु तव ही हटि गयो अधिकेरी।।
हे साधो रघपति जसु गावो। जसु गावति छिनु ना अलिसावो।।
जो सेवा रघपति की करसी। तिहि भुज वलु प्रभ वहुता धरसी।।
जैसे हनूमान वलु दीआ। वलु अधिक प्रभ किर्पा कीआ।।
धन्न धंन्न जो हरि जसु गावहि। नाम जप्त जो ना अलिसावहि।।
श्री रघपति लछमन दोऊ भाई। साईदास सेवा चितु लाई १७३

अगद कह्यो रघपति के ताई। हे प्रभ पूर्न त्रिभवन साई।।
जो आज्ञा होइ लंका जावौ। कनक पुरी देपे प्रभ आवौ।।
श्री रघपति तिहि आज्ञा दीनी। अंगदु गवनु लंक पुरी कीनी।
तात्काल लंका महि आयो। कनक पुरी महि धूम रचायो।।
ईहा कूद करे ऊहा जावै। कनक पुरी को त्रासु दिषावै।।
अधिक असुर अंगद ने मारे। युद्ध कीनो करि योधि प्रहारे।।
रावण ने इहि विधि सुण पाई। कह्यो वन्नरि को लेहु वुलाई।।
र्डपिमान होइ करि वहु आए।
अगद सौ कह्यो नृप तुमहि वुलाए।।
अगद तिहि संग उठि करि धायो।
चलति चलति रावन पहि आवो।।
रावण कह्यो क्या धूम रचाई। हे वंनरि क्या मन ठहिराई।।
तव अंगद तिस कह्यो सुणाई। हे मतिहीन क्या वाति उचिराई।।
मम ताई तू जानति नाही। मैं अंगद सुत वाल पुछाही।।
वाल महावली कौ नही जाने। ताहि त्रासु मन महि नही आने।।
जिन तुभि कौ तनूनी अटिकायो। षष्ट मास तुभि छुटण नि पायो।।
ताहि बली कौ मै सुनु आयो। तैं मन महि कहु क्या ठहिरायो।।
जवि अंगद इहि वात उचारी रावणतव मनि लीओ वीचारी

अगद सौ तिन आप सुणाया । तू सुतु बाल भयो प्रगटाया ।।
तोहि तात कौ राम सिहारा । तुमि सौ वैरु कीओ अति भारा ।।
ताहि ओरि होइ युद्ध कौ आयो । भलो वैरु ते पिन का पायो ।।
ऐसो पूतु न होयो भलो है । गर्भि माह वह गल्यो भलो है ।।
जो पित केरा वैरु न लेई । पित वैरु लेन चितु न देई ।।
हे अ गद सुन हो मेरी वाता । विधवा करी इनि तुमिरी माता ।।
तुमि आवो हमिरी सर्नाई । तोहि पितु वैरु लेवौ मेरे भाई ।।
मेरो कह्यो सुण मनि लीजै । साईदास कछु अवरु न कीजै १७

जवि रावण इहि वचन सुनाए । अ गद ताह कह्यो समझाए ।।
हे मतिमूढ़ कहा चित आना । तै कित रघुपति नाही जाना ।।
मोहि पित ने ऐसे की कामा । अहि रापी वधू की भामा ।।
वधू को तिन मार निकारा । तव श्री रघुपति तां को मारा ।।
मो को तुमि इहि वात सुणावो । हमिरी सर्नाई तुमि आवो ।।
अवि ही मै तुम ताई मारो । पकरि सीस तोहि भुजा उपारो ।।
श्री रामचंद्र आज्ञा नही पाई । इहि प्रजोग मोह कछु न वसाई ।।
जो अपुनी भलि आई लोडै । गर्वु गुमानु हृदे ते छोडै ।।
जानकी संग ले करि उठि धावो । श्री रघुपत की सर्नी आवो ।।
नाहि त रघुपति सेतु वधावो । हे रावण रघुपतु है आयो ।।
किह प्रयोग अपुनो जीउ देवै । किह प्रजोग दु.ख मन महि लेवै ।।
मैं तुम कौ इहि आख सुणायो । सांईदास रघुपति है आयो १

रावण क्रोधु कीयो उचिरायो । हे वचरि मनि क्या ठहिरायो ।।
अवि ही तुमि कौ पकरि सहारो । रामचद कोसहिति ही मारो ।।
मो सरि ताको वलु कहा होई । मो सरि दूजा अवर न कोई ।।
मै कैसे जानकी ले जावों । रामचंद की सर्नि धावो ।।
सिहु मृगु स्नीं कहा जावै । स्वानु जंपक ते कहा डरावै ।।
वाजु षग ते किउ करे त्रासा । मोह रावण को नाहि विनासा ।
ब्रिछु छाया ते कैसे भागे । सूरा रण कहु कैसे त्यागे ।।
हे अंगद क्या वचन सुनावै । महा क्रोधु काहे उपिजावै ।।
अगद फिरि रावण सौं भाषा हे मतिहीन क्या अतर राषा

तू रघपति सर कहा कहावै। तुमरो वलु तिह कहा वसावै ॥
एक प्रतज्ञा तुमि सौ करहो। सो प्रतज्ञा निश्चल धरहो ॥
मोह पग को जो तुमहि चलावो। वलु करि अपुना तिसे हलावो ॥
मै जानो जानकी तुमि नाही देवौ। एहि प्रतज्ञा मनि धरि लेवौ ॥
तोहि ओर युद्ध जाइ करहो। श्री रघपति सेती जाइ लरहो ॥
जो तुमि से इहि होइ न आवै। तौ काहे को भर्म भुलावै ॥
रावण कह्यो भला ते आपा। इहि प्रतज्ञा मैं मनि रापा ॥
अगद पदु धर्नी ठहिरायो। रावण पगु को टार्न आयो ॥
रघपति मनि महि लीयो वीचारी। महा कठनि बनी अति भारी ॥
मोह सेवक प्रतज्ञा कीई, कठनि प्रतज्ञा मन महि लीई ॥
जो रावण तिस को पगु टारै। तौ मोह सेवकु प्राण को हारै ॥
मोसे इहि विधि सही न जाई। वसुधा तव प्रभ लई वुलाई ॥
धोल्हू वुलाइ लीयो तत्कारे। गुननिधान प्रभु अपर अपारे ॥
वाकु भीत वही उठि आया। जवि श्री रघपति ताहि वुलाया ॥
हे वाकस पगु धौल्हू को गहु तू। वलु अपुनो को तहा वहु तू ॥
धौल्ह गयो वसुधा के ताई। वसुधा पग अगद उर्भाई ॥
वल करि पग को षिसरण न देवौ। जो मै कह्या मनि धरि लेवौ ॥
इनि सभ ही ऐसा ही कीना। जो रघपति ने आज्ञा दीना ॥
रावणु आइ पग कौ करु लायौ। अंगद तव तिहि आष सुणायो ॥
हे रावण इहि मति तुमारी। मोहि पगि आइ लगो तत्कारी ॥
मै सेवकु रघपति को आयो। मोको पकर्‌यो चर्नि लगायो ॥
मोह सेवक सौ सर्ना आयो। रघपति रीस तू कहा करायो ॥
रावण वलु अपुनो वहु लायो। हारि पर्‌यो पगु नाहि हलायो ॥
रघपति तिहि पग परि क्या कीआ। त्रैलोक भारु आण दीआ ॥
रावण वल कहा ताह हलावै। पगु न हलायो मन विसमावै ॥
कह्‌यो कहा भयो मोह वल ताई। इसि पग को टार्नि न पाई ॥
अति भै चक्रित मन महि बिस्मावो। साईदास वल नाहि वसायो १७६

अगद मुकुट सिरि ते षसि लीआ। तजि तांको गवनु उनि कीआ ॥
तात्काल रघपति पहि आयो। मुकटु कनक को आण दिषायो ॥

हे प्रभ रावण को ले आया। तोहि किर्पा करि ताहि हराया॥
तहा प्रतज्ञा मैं कीई भारी। तोहि क्रिपा करि मूल न हारी॥
तू प्रभ सदा सहाई मेरा। त्रैलोक चेरा है तेरा॥
रावण अति अभिमानु करायो। हे प्रभ मो प्रतज्ञा पायो॥
तुमि किर्पा करि पूर्ण होई। जो प्रतज्ञा मैं कीई सोई॥
तू सेवक को सदा सहाई। भीर परे तहा तुमि ही मीटाई॥
तू जन को प्रभ दु:ख निवार्न। भक्ति हेत तू रूप पसार्न॥
तोहि कला को प्रभ को जाने। तोहि कला प्रभ कौनु पछाने॥
सकटि काटनि सुख को दाता।
घटि घटि माही आप है राता।
जहा जहा भीर परी रघुराई।
सांईदास तहा तुमहि मिटाई॥१७७

कह्यो मदोदरी रावण ताई।
हे मतिमूढि समझु मनि माही।
एक वचरु जो प्रथमे आयो।
कनकपुरी कौ तिन हि जलायो।
अधिक सैन ताहू ने मारी।
तोहि सुत तिन ने लीए बिडारी।
अवि दूजे वंचरि इहि कीआ।
छत्र मुकट सिरि तुमि षसि लीआ।
इनि भी सैना पर्लो कीनी।
इहि प्रतज्ञा तुमि कौ दीनी।
तो का पाउं न सक्यो उठाई।
कहा मूढ मति मनि ठहिराई।
तूं तिहि सेवक सरिना होयो।
अति अभिमानु किउ मनि महि पायो।
औरु बाति सकली तजि देवौ।
मोहि कहा मनि महि धरि लेवौ।

जानकी संग लेइ तुमि जावौ।
रघुपति ताई जाइ मनावौ।
तोहि औगरण बहु सकल मिटावै।
हे नृप जो इहि कामु कमावै।
रावण जवि इहि विधि सुणी काना।
अति क्रोधु मनि माहे आना।
हे मदोदरी तूं कहा जाने।
मोहि गत को तू कहा पछाने।
भागै पाछे काहे जाय्यै।
जो भागे तिहि क्या डरि पाय्यै।
जो तिहि वनचर बलु सा भारी।
काहे भाग गिया तत्कारी।
तूं इसि विधि को पावै नाही।
काहे फिरि फिरि वाति चलाही।
रावणु अस कहि वाहिर आया।
आइ सभा माहे ठहिराया।
अति अनंदु तिहि भौ नही कोई।
साईदास होणी होइ सु होई॥१७८
जवि रावरण सभा आइ ठहिरायो।
वभीक्षरण तिहि वचनु सुणायो।
हे नृप सुणहो वात हमारी।
कौणु वाति तुमि मन महि धारी।
जानकी ले करि ग्रहि ठहिराई।
अति उपाधि नृप तोहि उठाई।
श्री रघुपति ने सेतु वधायो।
कनकपुरी तोडनि को आयो।
जानकी खडि के सुष जीउ पाहो।
जानकी ले जाहि जे सुष चाहो।
नाहि न नासु कुल तुमिरा होई।
हे बंधू छूटै नहीं कोई

सभि कौ रघपति मार संघारे।
बीस भुजा दस सीस विडारे।
काहे कुल का नासु करावै।
कहे को इहि कर्मु कमावै।
तव रावरण वीभीक्षरण प्रति कह्या।
हे वधू क्या मनि उरि पर्‌या।
कहा रामु मोहि मरि जो होई।
मो सरि दूजा नाही कोई।
मो सौ इहि विधि काह सुनावै।
मो पहि इहि विधि किउ उचिरावै।
तू भी जाइ तिहि होउ सहाई। मैं नहीं डर्यो मेरे भाई।।
सकल सैन राम की मारौ। तव पाछे करि तोहि पछारौ।।
भली वाति तू मोहि सुरणावै। मृग वाति करि सिंहु डरावै।
मिहु कहा मृग कौ भउ करही। वाजु कहा वगुले ते डरही।
हमि तिह ते डर्पे नही भाई। हमि पहि इहि विधि कीई न जाई।
जवि वभीछनि इहि प्रतु लीना। क्रोधुमान होइ मुख उचिरीना।
अवि मैं जावति हो मेरे भाई। जो तुमि मो सौ इहि उचिराई।
देपो कैसे सैना मारे। तोको कैसे पकरि पछारे।
रावरण कह्यो वेग न लावो। छिनु पलु ईहा ना ठहिरावो,
जो कछु तुम से होइ सो करहो। सांईदास कित चित्त न धरहो।।१

वभीछनु तव ही उठि धाया। गगन मार्ग तिनि चितु लायो।
आइ रघपति सौ कीउो प्रनामा। घटि घटि पूर्न जान्यो रामा।
श्री रघुपति तिहि वचन सुनायो। हे लकेस भला कीउो आयो।
जवि लंकेस रघुपति आषा। पवन पुत्र तव ऐसे भाषा।
रावरण ने सिरु शिव परिचारा। लंका राजु भयो अधिकारा।
वभीछन अवि ही जो आया। प्रभ लंकेसुरु नामु धराया,
ऐसे रघपति परि वलि जावा। निसवासर ताके गुन गावा।
हे प्रभ कौरण सेवा इनि कीनी। कनकपुरी जो इसि कौ दीनी।
जवि हनूमान प्रश्नु इहि कीना। रघिपति ताकौ उत्तरु दीना।

हे हनूमान इनि भजनु कमायो। मोहि चर्ण सिउं वहु चितु लायो ॥
तव मै इसे लकेसुरु कीना। कनक पुरी मै इसि कौ दीना ॥
पवन पुत्र फिरि ऐसे आषा। कवि प्रभ भजनु इनि ने चितु राषा
तव रघपति फिरि आष सुणायो।
पवन पुत्र ते विधि न पायो।
रावण कुभकर्ण जवि कीआ।
तव इनि भजनु मोहि मनि लीना।
रावण राजु वांध्यो सो पायो।
कुभकर्ण निद्रा चितु लायो।
वभीछन ने भक्ति जचाई।
जो इनि वाध्या सोई पाई।
पवन पुत्र इहु भक्त हमारा।
छिनु पलु हमि ते नाह न्यारा।
मोहि ध्यानु इसि के घटि माही।
औरु वाति इहि जानति नाही।
हनूमान तव सत्य करि जाना।
जवि श्री रघपति एहि वपाना।
वभीछनि को वहु भलो भायो।
श्री रघपति तिह मानु वढायो।
श्री रघपति तिह सो जो भाषा।
कनकपुरी विधि सभु तिन आषा।
श्री रामचंद सुण विधि हिर्षाए।
सांईदास तव वहु सुष पाए ॥१८०

सेतुवंधि पुलु मुहकमि कीना। सैना वहु रघपति संग लीना ॥
इहि तट त्याग उसि तटि तीर आए। पद्म अठारा कपि सर्वाए ॥
वज्र वाली तिहि वलु भारा। युद्ध कर्नि प्रभ सौ चित धारा ॥
सैना अधिक लीए वहु आयो युद्ध कर्नि कौ सनमुष धायो

औरु अधिक दानव चलि आए। श्री कौलापति सभ ही हताए।।
जिह प्रभ करि सौ प्रान तजाए। तात्काल बैकुंठि सिधाए।।
एकि मरे औरे चलि आवहि। श्री रघपति सौ युद्ध करावहि।।
प्रभ ने मारे क्षिण के माहे। छिन मात्र महि औरु उपिजाहे।।
जो जो दैत आण प्रभ मारे। असुर बुद्ध प्रभ लीए उधारे।
हे साधो हरि नामु ध्यावो। सांईदास प्रभ के गुण गावो।।१

रावण ने तब ही सुण पायो। वज्र वाली को राम हतायो।
ताहि सैन सकली तिन मारी। तब रावण मन लीई बीचारी।।
इद्रिजीत कौ लीयो बुलाई। हे सुत मेरे बहु सुषदाई।।
तुमि रघुपति के सण्मुख जावौ। तासौ जाइ करि युद्ध करावौ।
वज्र वाली को तनि ने मारा। हे सुत तिन ने बहु प्रहारा।
इद्रिजीत तब ही उठि धायो। चलित चलित बहु रण महि आयो
द्रिष्ट न आवै युद्ध कराए। इंद्रिजीत को बलु अधिकाए।
अग्नि बसे मध कर परहारे। अद्रिष्ट होइ सैना कौ मारे।
इद्रिजीत अधिक युद्ध कीआ। राम सैन को बहु दुख दीआ।
सकल सैन तिन ने मूर्छाई। को मूर्छे को प्रान तजाई।
हनूमानु नल नील मूर्छायो। ओरु सैन सभ प्रान तजायो।
इद्रिजीत जान्या सभु मारे। सांईदास तब लंक सिधारे।।१

सुत असुनीकुमार को भाई। नील नाम तिहि आष सुनाई।
तिहि हनूमान सौ आष सुणाया। पवन पुत्र अवि क्या विस्माया।
लछमन सहति सैना मूर्छाई। कहा कीजै कहू मेरे भाई।
जो उपिचारु कहो सो करहो। तोहि कह्या मनि अतरि धरहो।
नील तब ही वचनु उचारयो। पवन पुत्र सौ आष सुणायो।
सुरजीवणी बूटी पर्वत माही। गधिमावनु तिहि नामु अषाही।
वहु बूटी जो तुमि ले आवो। सकल सैना को तुम जीवावौ।
हनूमान कह्यो उसि कैसे पावौ। गंधिमानि पर्वत परि जावौ।
ताहि चिहनि कछु देह बताई। मै बूटी को ल्यावो जाई।
नील कह्यो सुण हो मेरे भाई। अग्नि चिणकारु वांको चमिकाई।

वाही बूटी को तुमि ल्यावो।
पवन पुत्र छिनु विल्मु न लावो।
सभ विधि मै तुझै दीई वताई।
साईदास सुरण हो चितु लाई॥१८३

पवन पुत्र तव ही उठि धाया।
गगन मार्ग तिन मनु ठहिराया।
त्याग अयोध्या आगे आया।
भर्थ तव ही इसि कौ निषयिा।
कह्यो गया वहुरु जु आवै।
मोहि वाणु नीको इहि षावै।
असुर अधिक है तिह मग माही।
ताहि त्रास को जाण न पाही।
पवन पुत्र सभ असुर संघारे। तव पाछे आगे पगु धारे॥
गधिमावनि पर्वत परि आयो। बूटी तिन ने वहु निषयिो॥
सकली बूटी वहु चमिकावै। पवन पुत्र मनि महि विस्मावै॥
एहि बूटी सभ एकि दिपावै। मोह मनि बूटी पपि न आवै॥
जो इकि तोरि षरों मेरे भाई। वहि ना होई अवरु होइ जाई॥
वहुरो कौणु कहो ईहा आवै। वार वार किसे वलु धावै॥
सभ पर्वतु ले जाउ उठाई। तौ कार्जु पूर्ण होइ भाई॥
गंधिमा वन तिनि मूल उपारा। लेकरि अपुने सीस मझारा॥
कनक पुरी कौ तव उठि धायो। नग्र अयोध्या के निकटि आयो॥
भर्थ जोहति मगु इहि ठहिरायो। इहि आये बिच वारण लगायो॥
पवन पुत्र गिरि सहिति गिरायो। राम राम कहि वसुधा पर्‍या॥
भर्थ राम को नामु सुरण पायो। तात्काल वचर निकटि आयो॥
कौशल्या कौकेही आई। हनूमान पहि आइ ठहिराई॥
कह्यो कवनु तूं राम जु आषा। श्री राम नामु तै मुष ते भाषा॥
इसि का मोको देह वीचारा। हे वचर तुम करो नवारा॥
तुमि अरु राम कहा वनि आई। तूं वंचर वह त्रिभवन राई॥
तांका संगु कैसे तै लीना। ताहि नामु कैसे उचिरीना॥

छिन पल विलमु कछु नाहि करावो।
इहि बितांतु तुमि मोहि सुणावो।
मै तुमि सौ इहि भाष सुणायो।
साईदास तुमि मोहि वतायो ॥१८४

पवन पुत्र तव कह्यो सुणाई। सुण हो भथि रघपति के भाई ॥
रावणु दैतु महा वलकाई। जानकी तिन ने षडी दुराई ॥
रघपति जानकी हेरति आयो। नृप सुग्रीमु जहा ठहिरायो ॥
मै मत्री ताको सा भाई। सुग्रीम मोह कह्यो सुणाई ॥
इहि दो वीर को लेहु वुलाई। इनि पाहे जाहो तुमि धाई ॥
मै चलि रघपनि पाहे आया। लक्ष्मण वीर सहित रघुराया ॥
मै इनि दोनों को ले धाया। सुग्रीम पाहे ले धाया ॥
वाल कपु सुग्रीम को भाई। महावली तिह वलु अधिकाई ॥
सुग्रीम को मारि निकारा। राजु आप लीयो तत्कारा ॥
ताकी वनता भी पसि लीई। इहि विधि वालि कपु ने कीई ॥
सुग्रीमु आइ वनि महि ठहिरायो।
जहा सदहल ऋषि आश्रमु छायो।
श्री रघपति ताको कह्यो भाई।
सुग्रीम मोह देहु वताई।
कहु कैसे वन महि ठहिराए।
वनि माहे आसणु किउ छाए।
सुग्रीम तव सकल वीचारी।
हे प्रभ मोह वनी अति भारी।
मोहि राजु वल षसि लीआ।
मो परि अधिक जोरा उनि कीआ।
मोह वनिता उनि लीई छिनाई।
मोहि वलु तासौ नाहि वसाई।
इहि प्रजोग ईहा ठहिरायो। हे प्रभ ईहा आसुणु छायो ॥
रघपति अग्नि जलाई कराए। तांसौ प्रतज्ञा कीई अधिकाए ॥
कह्यो वालि कपि कौ मै मारहो पाछे औरु वाति चित घरिहो

श्री रघपति जाइ वालु सहार्यो। सांधि वाणु प्रभ तांकौ मार्यो ।।
सुग्रीम कौ राजु दिवायो। श्री रघपति इहि काजु करायो ।।
सुग्रीम कौ सग प्रभ लीए। कनक पुरी कौ गवनु प्रभ कीए ।।
तव ते मैं रघपति सर्न आया। रघपति कार्ज सो चितु लाया ।।
इद्रिजीत सभ को मूर्छायो। सुरजीवन बुटी लेन मै आयो ।।
अवि तुमि मोको ध्नि गिरायो। हमिरो वलु तैं सकल हिरायो ।।
कैसे करि पर्वतु ले जावौ। सुरजीवन वूटी तहा पहुचावौ ।।
विनु वूटी सभि तजहि प्राना। हे नृप भर्थ सुणों मनि माना ।।
नवि ही भर्थ ने वचनु उचारा। पवन पुत्र वलु घटयो तुम्हारा ।।
पर्वतु वाण ऊपरि ठहिरावो। तुमि भी इसि के सहिति ही आवौ
मै तुम्हि रघपति पहु पहुचावौ। छिन पलु विलम नाहि कछु लावौ
पवन पुत्र तव ही मन धारा। भर्थ की भुज माहे वलु भारा ।।
फिरि भर्थ सो विनती ठानी। तुमिरी गति मै नाही जानी ।।
तुमि कौ वलु ऐसो है भाई। मैं सेवकु तुमिरी सर्नाई ।।
तुमि किर्पा से मम वलु होया। जाग पर्यो सचरु सा पोया ।।
तुमि किर्पा करि मैं ले जावो। पल माहे घडि के पहुचावौ ।।
भर्थ से आज्ञा लेकरि धाया। साईदास रघपति पहि आया ।।१८

पर्वतु नील को आण दिपायो। नील सुरजीवनी वूटी पायो ।।
सकल सैना कौ ताहि सिघाई। सैना जाग परी अधिकाई ।।
श्री राम नाम सभि मुषो उचारा। राम नामु है प्रान अधारा ।।
जाग परे सैना सुष पायो। श्री राम नाम जी को जसु गायो ।।
जवि सभ सैना प्रगटि षलोई। मूर्छा होयो रह्यो न कोई ।।
रघपति पवन पुत्र सौ कह्या। हे हनूमान कहा वहि रह्या ।।
गधमावनि पर्वतु ले जावौ। तहू ठौर षडि करि ठहिरावो ।।
नाहि त सुर वहुता दु:ख पाही। मूर्छा होई नाहि जीवाही ।।
पवन पुत्र पर्वतु ले धायो। वहुर आण करि तहू टिकायो ।।
ताहि टिकाइ आयो प्रभ पाही। हरि सिमरति दु:ख लागै नाही ।।
जो जो हरि सेवा चितु धारे। तात्काल प्रभ तासि उवारे ।।
वेद पुरान सिमति जसु गावे साईदास सर्नी जो आवै १८

श्री रघपति सभ लीए वुलाई। जिह कौ वलु सा वहु अधिकाई ।।
वभीखन सुग्रीमु व्रुलायो। हनूमान अंगद चलि आयो ।।
जामवानु नल नील भी आए। वडे वडे वली सकल सदाए ।।
तिहि कह्यो श्री रघपति राए। ऐसी विधि को देहु वताए ।।
जासु कीए लका गढु टूटै। रावण कुभकर्ण सिरु फूटै ।।
तवी विभीक्षण वचनु उचारा। सुण हो विनती प्रान अधारा ।।
इद्रजीतु जवि नाहि हतावौ। लका नामु लेने कहा पावो ।।
हे प्रभ इद्रिजीतु वलिकारी। ताकी भुज महि वलु अधिकारी ।।
वलि करि वहु हमि हत्यो न जाई। मै इकि विधि तुमि देवौ वताई ।।
जवि इहि करि तासि कौ मारो। पाछे रावण भुजा उपारो ।।
जवि लगि इद्रिजीतु ना मारों। ल का नाम प्रभ हृदे न सारो ।।
मै बिनती प्रभ आष सुणाई। सांईदास सुण ले मेरे भाई १०

श्री रघपति तव कह्यो पुकारा। हे वभीक्षण वीरु हमारा ।।
वहि विधि हमि को देहि वताई।
जिह कीए इद्रिजीतु हन्यो जाई ।।
वभीछन तव आष सुणाया। सुण हो रघिपति त्रिभवन राया ।।
मै सभ विधि तुमि देउ वताई। तुमि सुण लेहो हितु चितु लाई ।।
ब्रह्म महूर्त उठि वनि जावै। इंद्रिजीतु जाइ यज्ञु करावै ।।
अग्नि कौ अधिक अहूति देवै। सुप्रसन्न तांकौ करि लेवै ।।
अग्नि रूप दाहन अग आवै। तिहि करि प्रभ वहु हार न पावै ।।
जवि वहु यज्ञ कर्नि कौ जावै। शस्त्र अपुने इसि दे जावै ।।
इहि शस्त्र ताके ले आवै। तुमि सेना संग ले अधिकावै ।।
वाको यज्ञु न कर्न देवौ। एहि करो तवि तिसि हति लेवो ।।
रघिपति कह्यो वहु भला आषा। हे लंकेसरि वहु भलो भाषा ।।
जो तुमि कहो करहि हमि सोई। सांईदास विधि लिष्यो सु होई १

ब्रह्म महूर्त्ति जवि ते भया। इंद्रिजीतु यज्ञ कर्ने गया ।।
श्री लछमन सैना संग लीए। इंद्रिजीतु डोरि चित दीए ।।
वभीछन तहूं ठौर ल्याया। इद्रिजीत जहा यज्ञु रचाया ।।
रघपति सैना वाण चलाए इद्रिजीत के अग लगाए

इद्रिजीत यज्ञ कर्नि न पायो। विनु यज्ञ कीए युद्ध को आयो ।।
विनु यज्ञ कीए वल न वसावै। कहु कैसे वहु युद्ध करावै ।।
विनु वल युद्ध कहा को करई। विनु भुज कहु कैसे कोऊ लरई ।।
इद्रिजीत को इनहि हतायो। वलि करि अपुने मारि चुकायो ।।
ताहि मार रघपत पहि आए। श्री रघुपति सुण वहु हिर्षाए।।
भला कीओ पातकि को मारा। भला कीया पातकु प्रहारा ।।
जीत भई रणु तिहि कर आयो। अति अनद हो मगल गायो ।।
श्री रघुपति समसर को होई। साईदास हरि सरि नही कोई १८६

रावण ने इहि विधि सुण पायो। इद्रिजीत को तिन्हहि हतायो ।।
क्रोधु कीओ मनि महि अधिकारा। ताहि भुजा माहे वल भारा ।।
सैन सग ले युद्ध कौ आया। श्री रघुपति इहि ओरि ते धाया ।।

अध्कि युद्ध रावण सौ कीना।
वीस भुजा दसि सीस कटि लीना ।।

जवि सिरु कटै औरु प्रगटावै। एकु कटे एकु औरि उपिजावै ।।
दसि ही वार ऐसे प्रभ कीना। रावण के सिर कटि कटि लीना ।।
रावण फेरि गयो गृहि माहे। कुभकर्ण सुख सोया जाहे ।।
कुभ अधिक मदि संग भराए। भैसिके सुत वहु घातु कराए ।।
जौ जागै तव इसि कौ षाए। त्रिषा गहे इसि पान कराए ।।
कुभर्कनि औरि आण टिकाए। रावण ने इहि कर्म कमाए ।।
वाजत्र वहु भांति वजावै। कुंभकर्णु केहूं नीद उधिरावै ।।
कुभिकर्ण सोया अधिकाई। ताको देहि सुर्ति नही काई ।।
हस्ती सौ वहु ताल वजायो। कुंभकर्न कछु सुर्त न पायो ।।
मदि करि वध्कि ताहि कौ मारे। कुभकर्न तव नैन उघारे ।।

रावण बहु विलापु करायो।
हे मोहि वीर चितु सौण की लायो ।।

लछमन इंद्रिजीत को मारा। मोहि सीसु वहु तिन कटि डारा ।।
तुमि क्या सोए हो मेरे भाई। उठो युद्ध करो रघराई ।।
कुभकर्ण तव उठि षलोया। हे मोहि वीर कहा कछु होया ।।
सढे अधिक तव ही उनि षाए। मद कौ तिन ने पान कराए ।।

ताहि षाइ शांत घरि आया। रावण सौ तव वचनु सुणाया ।।
हे मोहि वीर कवन दुःख पायो। कहो कवन तुमि आण सतायो ।।
एहि विधि मोको देहु वताई। किउ विस्मावै मेरे भाई ।।
जो कोई तुमि को दुःख देवै। साईदास तिहि हतनु करेवै १९०

रावण तिहि मौ कह्यो सुनाई। सुन हो वंधू मोहि सुपदाई ।।
रामचंदि लक्ष्मण दोऊ आए। इंद्रिजीतु तिहि घातु कराए ।।
सैना मोहि अधिक तिहि मारी। सीस भुजा हमिरी कटि डारी ।।
कुंभकर्ण जवि इहि सुण पाई। सैना वहु मारी रघुराई ।।
रावण सौ तव वचनु सुणायो। हे वधू तै क्या चित लायो ।।
श्री रामचंद सौ युद्ध करावहि। रघपति सरि कैसे तू आवहि ।।
रघपति सौ मै युद्ध न करहो। युद्ध कर्नि को चितु न धरिहो ।।
रावण फिरि करि ताहि सुनायो। हे मोहि वीर कहा उचिरायो ।।
मै तोहि वल करि कर्म कमायो। तोहि वल परि विरोधु उठायो ।।
किहि प्रकार तू युद्ध न करही। रघपति सेती किउ ना लरही ।।
इहि विधि मोकौ देहु वताई। है वधू मोहि वहु सुखदाई ।।
मोह मनि महि संचरु वहु आयो।
हे वधू तै क्या उचिरायो।
इसि का मोकौ देह विचारा।
सांईदास सचरु मनि धारा ।।१९१

कुंभकर्ण तव वचनु उचारा।
सुण हो रावण वीरु हमारा।
एक दिन गयो मै वनि के माही।
अषेरि कर्नि मृग के हरिताई।
नार्दु वैन वजावति आयो।
नार्दि मोसौ आष सुणायो।
मै गयो ब्रह्मपुरी के माही।
असुरों से सुर वहु दुःख पाही।
असुरों ने वहु धूमि रचाई।
तासो किसको वलु न वसाई

तहं वार्ता इहि सुण पाई।
प्रगट भए श्री रघपति राई।
असुरों को रघपति आइ मारे।
सकल सुर को वह सघारे।
काहे को विरोधु चलावो।
अवनो कौ तुमि काह दु:खावो।
इहि विधि नार्द मोहि सुनाई।
सोई रामु अबि आयो भाई।
कहु कैसे तिहु युद्ध करावै।
तिसि सन्मुख कैसे हमि धावै।
रावण कहचा सुण हो मेरे भाई।
जो तुमि मन महि एहि टिकाई।
कहु मै अबि और कौन पहि जावो।
ताहि ताहि सहाई संग ले आवो।
जो तुम डपित सग न आवो।
युद्ध कर्नि को नाही धावो।
मै तो युद्ध करो जाइ भाई।
तुमि हमिरे ना होइ सहाई।
रावण जबि इहि वचनु सुणाया।
मुषों वचनु करि क्रोधु उपिजाया।
कुंभकर्ण तब ऐसे आषा।
हमि डरु कहूं चित्त न राषा।
जो तुमि ने इहि वचनु सुनायो।
अधिक क्रोधु मोकौ उपिजायो।
अबि मै जाइ करि युद्ध करावो।
श्री रघपति के सन्मुख जावो।
क्रोधु कीउो कुंभकर्नि अधिकाई।
ताह भुजा महि बलु बहु भाई।
उठि षडा भयो युद्ध कौ धायो।
रघपति की सेना निर्षायो

कपमान वचर सभ होए। कुंभकर्णु जवि उठि षलोए॥
लका त्याग युद्ध कौ धायो। रघुपति की सैना महि आयो॥
वचरि पकरि पकरि मुख डारे। भछनु करे ताहि कौ मारे॥
वचरि अधिक ताहि ने पाए। मार्ति कूटिति आगे धाए॥
सुग्रीम को पकरि तिन लीआ। ताहि दाब्र कांख तले दीआ॥
नृपु जान्यो तिहि को ले धाया। कनकपुरी सौ तिन चितु लाया॥
ल आयो दरवारे माही। सुग्रीमु मनि महि विस्माही॥
हे रघुपति मोहि वाधि चलायो। कुभकर्ण इहि कर्मु कमायो॥
जवि सुग्रीम हृदे इहि धारी। श्री रघुपति तव लीयो वीचारी॥
श्री रघुपति तव रचना धारी। सुग्रीम देह तव वहु भई भारी॥
कुभकर्ण पहि चुकी न जाई। तिन ने यत्नु कीउो अधिकाई॥
सुग्रीम सूक्ष्म वपु कीआ। कूदि नाकु तांको कटि लीआ॥
नाकु काटि ताको उठि धाया। कुभकर्न मनि महि विस्माया॥
कहा मुष ते अतरि जावौ। कहा मुख मै जाइ दिषावो॥
लज्जावानु होइ करि फिरि धाया। मनि महि क्रोधु कीयो अधिकाया
वचरि अधिक पुन आइ मारे। श्री रघपति ओरे पग धारे॥
रघुपति धन्षु वाण करि लीआ।
कुभकर्न के पग कटि दीआ।
जवि रघुपति तिहि पग कटि दीए।
कुभ कर्नि गोडी गवनु कीए।
फिरि वानि सों कटु कटि डारा।
तव धडि सौ चल्यो तत्कारा।
मुखु पसारे आगे आवे।
रघपति सो वहु युद्ध करावै।
रघुपति औरु वाणु तिहि मारा।
धटि रहउो धडु ताहि विडारा।
वानु मारि मुषु तिहि फिरि लीआ।
रघुपति तिस को हतना कीआ।
कुंभ कर्नि कौ रघुपति मारा। श्री रघुपति कौ वलु अधिकारा॥
ताहि मार वैंकुठि पठायो साईदास विधि प्रगटि सुनायो १

कुभकर्ण को जवि प्रभ मारा। रावण तव ही नैन निहारा ॥
लका त्याग युद्ध कौ आयो। रघुपति सन्मुख आइ ठहिरायो ॥
अधिक युद्ध रावण ने कीआ। बचरि अधिक ताहि हनि लीआ ॥
श्री लक्ष्मण तिहि सीसु कटि डारे। औरु सीसु आवै तत्कारे ॥
सौ सीसु रावण कटि डारा। श्री रघुपति रावण को मारा ॥
गण गधर्व कीयो जै कारा। भला कीयो प्रभ प्रान अधारा ॥
ऐसे पातक ताई तै मारा। हमिरी तुमि कौ है नमिस्कारा ॥
अनेक उस्तति मुषो उचिराई। हे प्रभ तुमिरी तुमि वनि आई ॥
कर उस्तित अपुने गृहि आए। अति अनद मगल वहु गाए ॥
भक्ति हेति तांकौ हति लीआ। साईदास इहि कार्णु कीआ १६

श्री रघुपति लक्ष्मण सौ कीह्या। हे मोहि वीर कहा तू वह्या ॥
भभीछन को सग ले जावो। लंका महि षडि राज वहावो ॥
जानकी कौ अवर वहु दीए। मो पहि आनो तुमि संग लीए ॥
लछमन विभीछन को ले धाया। ल का महि खडि राजु वहारा ॥
जानकी को अवर वहु दीए। लंका त्याग गवनु तिन कीए ॥
वभीछन संग ही फिरि आया। जानकी कौ प्रभ आण दिषाया ॥
जानकी जवि निर्षी रघुराई। अंग अंग महि नाहि समाई ॥
अति अनदु भयो मन तांके। रोम रोम हर्षति भए वाके ॥
सकल कष्टु तिन मनहु विसारा। जव श्री रघपति नैन निहारा ॥
जैसे षग पिंजर मुक्तावै। पिंजर त्याग अध्कि सुष पावै ॥
जैसे मृग फाही तजि भागे। बन महि तांको वहु हितु लागै ॥
अति अनदु वन माहे पावै। जिहि ठौरि चितु होइ तहू धावै ॥
जैसे रोगी रोग तजाए। अति सुष मन माहे वहु पाए ॥
जैसे कमलु रवि को निर्षाए। मुष षोल्हे अनँदु वहु पाए ॥
तैसे जानकी प्रभ निर्षाई। अग अ ग तिहि वहु सुष पाई ॥
जानकी हरि देष्यो सुषु पायो। सांईदास मनि मंगलु गायो १९

रघुपति जानकी को सग लीआ। दधि तटि त्याग गवनु उसि कीआ
सैना अध्कि ताहूं संग आई। वभीछन भक्ति महा सुषदाई ॥
बचरि अध्कि रास सग्र आवहि जैसे बादर घटि उमिडावहि ।

चलति चलति वन माहे आए। ताही कुटी महि आइ ठहिराए।।
जासि वाहि वासा प्रभ कीना।
अवि भी ताहू महि आस्रमु लीना।।
सुष वसे आइ प्रभ रघुपतिराई। साईदास सदा गुण गाई १'

श्री रघुपति मन लीजो वीचारी। मतु कोई हमिरो करे विचारी।।
रावण जानकी षडी दुराई। षडि लंका माहे ठहिराई।।
तांसो फिरि रघुपति ले आए। अपुने ग्रहि महि आइ ठहिराए।।
मतु कोई जानकी कौ कछु कहई। नामु बुरो कहि तांको लहिई।।
मतु काहू के मनि भ्रमु परई। मतु काहू का चितु डोलनु करई।।
सभि ही का मैं भर्मु चुकावो। जानकी दूषनु दूरि करावो।।
रघपति जानकी सों तव आषा। सुन हो जानकी मैं इहि चित राषा।।
अग्नि जलाइ इसि महि तुमि डारौ।
तुमरी दूषना सकल निवारौ।
जबि जानकी इहि विधि सुण पाई।
भला कह्यो तुमि रघुपति राई।
अग्नि जलाई मोहि तिह डारो।
तासि अग्नि सौ हमि कौ जारो।
जो मोहि अवगुन भस्म होइ जावै।
नाहि त अग्नि से वाहिरि आवौ।
रघुपति इहि विधि मन ठहिराई।
सकली सैना लीई बुलाई।
रघुपति तिहि सो कह्यो पुकारे।
सुन हो इहि विधि वीर हमारे।
ईंधन को तुमि मेल ल्यावो। ईहा आण के अग्नि जलावो।।
मोहि मनि संचरु है पर्‌यो। मम मन संचरु वहु ही कर्‌यो।।
तव सैना वचनु उचारा। हे प्रभ क्या संचरु मन धारा।।
किहि प्रजोग ईंधनु बुलावो। किहि प्रजोग ईहा अग्नि जलावो।।
एहि वीचार हमि को प्रभ दीजै।
इहि करुणा हमि परि प्रभ कीजै।

एहि विधि सुणु सचरु मन पर्यो।
इहि तुमि कौनु वाति प्रभ कर्यो।
इहि संचरु प्रभ हमहि चुकावो। सांईदास को भर्मु मिटावो १६६

श्री रघपति तिन को प्रतु दीना। तुमि काहे सचरु मनि लीना॥
मोहि मन सचरु इहि विधि पर्यो। जानकी कौ रावण ले षड्यो॥
अधिक दिवस लंका ठहिराई मतु को इहि दूषनु लागे काई॥
इसि कौ अग्नि माहे मै डारो। मनि को संचरु सभ ही निवारो॥
तव सैना ने मनि महि आनी। हे रघपति क्या वाति वषानी॥
जानकी कौ दूषनु नही लागे। जानकी दूषन सकल त्यागे॥
तांका सीलु किनहू ना टार्यो। ताहि धर्मु किने नाहि बिडार्यो॥
अग्नि माहे तुमि काहे डारो। जानकी को तुमि काहे जारो॥
जवि सैना सभ एहि उचारी।
रघपति तांकौ कह्यो वीचारी।
मोहि मनि माहे य्युं ही आई।
मोहि मन ते एही ठहिराई।
मै मनि को सभ संचरि निवार्यो।
इहि प्रजोग इसि अग्नि सौ जारौ।
तुमि जाइ ईधनि कौ ले आवौ।
सांईदास इहि मनि ठहिराई॥१६६

जवि सभ सैना आग्या पाई।
ईधनि लेनै चले वनि धाई।
जाइ ईधनि कौ सभ ही ल्याए।
कुटीआ निकटि आए ठहिराए।
तिहि ईधनि सौ अग्नि जलाई।
भाषति अंगार को पगु ठहिराई।
पगु क्या कहीए निकटि को आवे।
निकटि कहा जो द्रिग निर्षावे।
द्रिग निर्षनि क्या कहीयै भाई।
ताको तेजु है अति अधिकाई

द्रिष्ट करे तो प्रान तजावै।
भस्म होइ फिरि द्रिष्ट न आवै।
द्रिष्ट परिति उपजित मन त्रासा।
भूलि जात बहु भोग विलासा।
जानकी सौ प्रभ कह्यो पुकारे।
हे जानकी आवो तत्कारे।
अग्नि माहि प्रवेसु करावो।
इसु पावकि महि पगु ठहिरावो।
जो तुमि महि कोऊ दूषणु होई।
तुम को आणु लागे गी सोई।
जो तुमि को दुषणु नही कोई।
तुम कौ अग्नि न लगेगी ऐ होई।
जो दूपनु हौइ भस्म करावे।
सांईदास एहि वात बतावे ॥१९७

जानकी जवि इहि विधि सुरा पायो। जलु ले करि इस्नानु करायो ॥
वहु भूषरा अग कौ पहिराए। अवर वहु तिन अग लगाए ॥
चाहति तिह प्रवेसु कराए। तव ही सुर सकले चलि आए ॥
दसरथु रघुपति पहि आए। विबाण चढयो मुप सब्द सुनायो ॥
जानकी मध्य अग्नि ना देवो ॥
सकल सुरो ने एहि पुकारा। जो कछु दसरथ कह्यो विचारा ॥
जानकी ने तव वचन उचारे। सकल सुरो कौ दीयो बीचारे ॥
तुमि काहे इहि वचन सुनावो। किह प्रजोग तुमि इहि उचिरावो ॥
इहि महि मोह भलो है भाई। मोहि दूषणा सभ मिटि जाई ॥
अैसे ही दसरथ सौ आपा। हे पित काहे इहि तुमि भाषा ॥
तोहि क्रिपा करि को दु:ख न लागे। तोहि क्रिपा सकला भ्रमु भागे ॥
मै प्रवेसु करो इसि माही। सांईदास दु:ख नाहि सताही ॥१९८

जानकी तिहि प्रवेसु करायो। अग्नि माहि जा पगु ठहिरायो ॥
अग्नि तव ही सीतलता होई। जानकी दु:ख ना लागो कोई ॥
जानकी तिहि महि पमि ठहिराए मानो समु ही पुहप विछाए

मानो सलिता माहि ठहिराई। ताके निकटि अग्नि नही आई ॥
सभ सैना की द्रिष्ट न आही। लोक कहित इसि अग्न जलाई ॥
जानकी भस्म भई इसु माही। अति सचरु सेना मनि माही ॥
जानकी का सतु किनहू न टार्यो। इसि पावक तांको क्यु जार्यो ॥
अति भै चक्रित सभु मनि विस्मावै। ताकी विधि कछु कही नि जावै ॥
सभ ही मन महि कर्ति वीचारा। हे प्रभ इहि क्या रचना धारा ॥
जानकी कौ दूषना नही काई। जानकी तै प्रभु काह जलाई ॥
हे प्रभु कौनु तपासु तै कीना। कौनु वाति प्रभ मन धरि लीना ॥
तीन दिवसि निस भई वितीता। जानकी रही अग्नि के भीता ॥
हे प्रभ हमि तो सभ वौराए। सांईदास कहा कहो सुनाए ॥१६

सभ सैना जवि मनि विस्माई। तात्काल सीता निकसि आई ॥
अति सरूपु क्या रूपु वषानो। ताह रूप अस्तुति क्या जानो ॥
त्रैलोक तिहि सरना कोई। ताहि रूप समसरि ना कोई ॥
तव सभ ही रघपति सौ आषा। कहा हमारा तुमि चित राषा ॥
जानकी कौ तैने पतीआयो। अपुने मन का भर्मु चुकायो ॥
जानकी कौ सील ते टारे। जानकी को वात उचारे ॥
जो को बुरा मन महि ल्यावे। ताको प्रभ मोह नर्कि पठावे ॥
हे प्रभ अवि तो सचरु भागा। अवि तो तैने सचरु त्यागा ॥
जानकी कौ प्रभु गृह ले आयो। अति अनदु सभु भर्मु चुकायो ॥
रघपति भर्मु हृदे तै त्यागा। सचरु सोया तव ही जागा ॥
सचरु त्याग अधिक सुषु पाया। श्री रंघपति ने भर्मु गवाया ॥
जो कछु हरि भावे सो होई। साईदास औरु करे ना कोई ॥२०

ऋषि सौ देवौ कह्यो सुनाई। वाल्मीक पूर्ण ऋषि नाई ॥
हमिरे मन महि सचरु आयो। ताहि चितु वहु भर्मि भुलावो ॥
तुमि किर्पा करि सचरु जावै। तुमि किर्पा मनु हमि सुष पावै ॥
वालमीकहि विपो सौ आषा। कवन सचरु मन माहे राषा ॥
मोहि कह्यो तुमि संचरु निवारो। तुमिरे मनि को ससा टारो ॥
तव देवौ ने विनती ठानी। सुणा हो ऋषि जी ब्रह्म ज्ञानी ॥
विनती तुमि पहि आष सुणावहु सो हमि सचरु सोई वतावहु

जानकी जवि पावक महि डारी। पावक ने तव ही वहु जारी ॥
भस्म भई तिन प्रान तजाई। भस्म ते रूप कहा प्रगटाई ॥
सूकी लकडी हरी न होई। भस्म ते रूपु भयो ना कोई ॥
कहा भस्म ते मानसु होई। भस्म ते मानसु भयो न कोई ॥
क्रिपा करि हमि सचरु निवारो। सांईदास परि किर्पा धारो ॥२

वाल्मीक तांको प्रतु दीना। एही संचरु तुमि मनि महि लीनी।
सुग हो सचरु तुमि निवारो। तुमिरे मनि को भर्मु टारो।
श्री रघपति जवि वनि को धाए। त्याग अयोध्या वाहिरि आए।
जानकी पावक महि ठहिराई। इसे रापु तू मेरे भाई।
माया की जानकी संग लीए। रघपति गवनु आगे को कीए।
वन कुटीआ छाइ करि ठहिराए। रावण दैत तहा चलि आए।
रावण ताकौ षस्यो दुराई। पडि लका माहे ठहिराई।
रघुपति ताको मारि ले आयो। रावण की तिहि हतनु करायो।
विधि ने इहि विधि धुरो बनाई। रावणु जानकी कै षडे दुराई।
श्री रघपतु तिह जाइ विडारे। रावण दैत को रघुपति मारे।
श्री रघपति ने अग्नि जलाई। जानकी माया दी तहा पाई।
जानकी माया दी तहा डारी। तात्काल वहु पावक डारी।
जानकी जन्क सुता निकसाई। जो रघपति तिहि पाहि टिकाई।
जवि देवौ इहि विधि सुनी काना। संचरु त्याग भए अनद माना।
श्री रघुपति कुटीआ ठहिराए। सांईदास मनि वहु सुष पाए ॥२

चतुर्दश वर्ष जवि भए वितीता। भर्थ कौ आइ परी इहि चीता।
प्रतज्ञा कह्यो पूर्ण अवि होयो। चतुर्दस वर्ष रघुपति वन पोयो।
अवि जाइ रघुपति को ले आवहि। आए अयोध्या राज वहावहि।
सकल प्रजा को लीयो वुलाई। ताहि कह्यो सुण हो मेरे भाई।
मैं जावति हो रघपति पाहे। ताहि ल्यावहि नग्रि के माहे।
आए नग्रि महि राज वहावहि। ताके आगे टहिल कमावहि।
जवि पर्जा इहि विधि सुणपायो। सभ ही भर्थ के सग उमिडायो।
कह्यो धंन्न धन्न मत्ति तुम्हारी। हे प्रभ इहि विधि भली वीचारी।
हे प्रम हमि भी तुमि सग जावहि रघपति को जाइ दर्सनु पावैहि

हे नृप जी कछु विलमु न लावहु । श्री रघपति जी की ओरि धावहु ॥
जाइ राम कौ नग्र ल्यावहि । सांईदास वहुता सुष पावहि ॥२०

भर्थ शत्रघन लीयो वुलाई । ताहि कह्यो सुण हो मेरे भाई ॥
चलहो रघपति कों ले आवहि । आए करि रघुपति राज वहावहि
शत्रघनु कह्यो वहु भलो भाई । भली वाति तुमिरे मनि आई ॥
भर्थु सकल प्रजा संग लीए । श्री रघपति ओरि तिन्हे पग दीए ॥
चलति चलति रघुपति पाहे आए । सभहू आइ डडौत कराए ॥
रघुपति भर्थ कौ अग महि लीना । शत्रुघन को वहु हितु कीना ॥
वहुरो लछमनि ने उर लाए । अधिक भयो सुष मंगल गाए ॥
भर्थ को पूछति श्री रघुराई । अधिक अनद है कुशल है भाई ॥
भर्थ ने तव ही विनती ठानी । तोहि कृपा सुख सारंग पानी ॥
प्रजा सभ प्रनामु सुनायो । साईदास तिहि राजु सवायो ॥२०

भर्थ जोरि करि मुर्षो पुकारा । हे श्री रघपति प्रान अधारा ॥
किर्पा करि चलहो ग्रहि माही । नग्रि अयोध्या त्रिभवन सांही ॥
चलहो चलि करि राजु करावो । हे कौलापति दूष मिटावो ॥
तौ विनु मौं कोऊ सुखु न पायो । तौ विनु हमि दिनु गणति विहायो
सकल प्रजा तव कह्यो पुकारे । हे प्रभ चलिहो किर्पा धारे ॥
चलहो नग्रि अयोध्या माही । तौ विनु हमि प्रभ वहु दु.ख पाही ॥
भर्थ अधिक दुःख हमि कौ दीना ।
जोर जुल्मु प्रभ वहुता कीना ।
रघुपति भर्थ की ओरि. तकायो ।
भर्थ तव ही मुष ते उचिरायो ।
हे प्रभ तुमि सभि विधि कौ जानौ ।
मै तुमि पाहे कहा बपानौ ।
प्रजा कौ प्रभ आपु दिवायो ।
क्रुर क्रुर तुमि कुक सुनायो ।
भर्थु ब्रह्म भक्त अधिकाई ।
काहू को ना आसु दिषाई ।

तुम्ह कवहु सुष नाही पावौ।
तुमि कौ कूकृति सदा विहावौ।
प्रजा श्रापु तव ही ते पायो।
अवि कछु कूकणि चित्तु न लायो।
श्री रघुपति तिहि दीयो श्रापा।
सांईदास तिहि लीनो श्रापा ।।२०५

भर्थ ने जबि इहि विधि सुण पाई।
हिर्षमान होउो अधिकाई।
श्री रघुपति मोह श्रापु न दीग्रा।
इहि करुणा हमिरे परि कीग्रा।
वहुरौ प्रभ सौ विनती ठानी।
मै वल जावौ सारंग पानी।
किर्पा करि के प्रभ उठि धावो।
नग्रि अयोध्या सौ चितु लावो।
मात कौशल्या वहु दुःख पायो।
तोहि व्योग प्रभ त्रिभवन रायो।
विलमु न लावो हो रघुराई।
मै तुमि पहि विधि श्राष सुणाई।
सकल लोक तोह पंथ निहारहि।
पलु छिनु मन महि वाति वीचारहि।
कवि श्रावेंगे रघपति राए।
जौ सकली विर्था कौ पाए।
वार वार प्रभ विनती करहों।
तोहि चर्न ऊपरि सिरु धरहों।
मोहि विनती होइ प्रवाना।
सांईदास तुमि चर्न ध्याना ।।२०६

भर्थ ने जवि इहि वचनु सुनायो।
श्री रघपति मन महि ठहिरायो।

कह्यो भलो चलि हो मेरे भाई। जो तुमि कह्यो सो मन ठहिराई ॥
श्री रघपति सैना संग लीए। नग्रि अयोध्या को पग दीए ॥
सकल तपसी सौ विदआ कीए। नग्रि अयोध्या कौ मगु लीए ॥
नग्रि अयोध्या के निकट आए। कौसल्या तव ही सुरा पाए ॥
अति अनंदु तिन ने सुषु पायो। ग्रहि ग्रहि मंगल सभ हू गायो ॥
नग्र अयोध्या भयो सवायो। सूषे विर्छो ने फलु पायो ॥
पुहप अधिक तिह ते प्रगटायो। कौशल्या जी ले अग लायो ॥
भर्थ ने तव ही डडौत करायो ॥
जानकी कौ कौशल्या लीआ। अग माहि आनंदु वहु कीआ ॥
लक्ष्मण मुखो प्रनामु सुनायो। माता ने ले करि अग लायो ॥
भयो नासु दु.ख को मेरे भाई। आए प्रभ जी रघुपति राई ॥
रोम रोम नग्रि सुष पायो। साईदास ने हरि जसु गायो ॥२०७

श्री रघुपति सिंघासन चर्यो। तिल्कु राम मस्तकि परि धर्यो ॥
ताहि राज सैना सुषु पायो।
निकटि काहू के दुःख न आयो।
जानकी कौ गर्भु होयो भाई।
सोई प्रिथम गर्भु है याही।
चतुर्मास को वह गर्भु भया।
जानकी वहु सुषु मनि महि लीआ।
श्री रघुपति निसि सुप्ना पायो।
सकल व्रितातु तिह आष सुणायो।
जानकी तटि गंगा वनि माही।
फिर्त फिर्त कलोल कराही।
निसि वीती जवि झालू होया।
रघुपति जाग पर्यो तवि सोया।
करि स्नानु वशिष्ट पहि आया।
सुप्ना रैन को आपि सुनायो।
तव वशिष्ट तिहि आपि सुनाई।
सुन हो प्रभ तुमि रघपति राई।

जो सभ वनिता लेहु बुलाई।
विपो केरी हे रघराई।
तिहि ताई तुमि भोजनु देवौ।
एहि बाति तुमि मनि धरि लेवौ।
एकु मत्रु मै जापु करावौ। पाछे होम कर्नि चितु लावौ॥
श्री रघुपति लछमन वुलायो। तांसो प्रभ ने श्राष सुनायो॥
तुमि मितुला तर्थी महि जावो। जन्कि कौ ईहा वेग ल्यावो॥
जनकु आइ यज्ञ जानकी देषै। अपुने द्रिग आइ विधि पेषै॥
सुर सकले भी आण वुलाई। तुमि जावो हो मेरे भाई॥
लछमनु इहि विधि सुण उठि धाया।
केतकि दिन मै सभु ले आया।
यज्ञ अरंभु कर्नि चितु लायो।
पडति जोतकी अधिक वुलायो।
पंडति वेद अधिक उचिरावहि।
अति आनंद सदा सुष पावहि।
चतुर कुभ जल के भरि रापहि।
पडति वेद पढनि चितु भाषहि।
जलु उमिड्यो दो कुंभ ते भाई।
निकस परा वाहिरि वहु आई।
तब ही वशिष्ट ने मुषो उचारा।
हे रघपति सुणु प्राण अधारा।
तोहि ग्रहि वाल्क दो वलिवाना।
महा पराक्रमी होहि सुजाना।
इहि विधि कह यज्ञु पूर्ण कीना।
साईदास सुषु मनि महि लीना॥२०८

पाच मास गर्भु जानकी होयो। जानकी सभु ससा मनि षोयो॥
एकि दिन रामचंद ग्रहि माही। आस्रमु लीनो मन सुख पाही॥
जानकी पोखा है करि माही। अति अनद वहि पोण झुलाही॥
श्री रामचद्रि जी तासौं कह्या हे जानकी तोहि मन क्या लह्या

जो भूषनि कहे ताहि करावो। नाना वस्त्र तुम्है उढावौ॥
जानकी तव ही वचनु उचारा। मैं वलि जावौ प्रान अधारा॥
जो तोसौ प्रभ मो सिरि होई। मोहि वाछा अवरु नाही कोई॥
जो आज्ञा होइ वचन सुनावौ। जो मनु मागे सो उचिरेवौ॥
गगा तटि ऋषि वनिता रहे। तहा तपस्या सौ चितु गहे॥
ताके अवर भए पुराने। फाटि गई प्रभ ढौंधि सराने॥
जो आज्ञा होइ तहा मैं जावौ। तिहि कौ अवरि दे फिरि आवौ॥
मेरो मनु प्रभ एही चाहे। साईदास कछु और न चाहे॥२०

श्री रघपति तव वचनु उचारा। जानकी तो सौ कहो पुकारा॥
चतुर्दस वर्ष रह्यो वनिवासा। अवि लगि वन की करे प्यासा॥
तुमिरो मनि वांछति वनि ताई। कौनु वाति तै मनि ठहिराई॥
एहि वाति प्रभ दीई वहाई। केतकि दिन भए मेरे भाई॥
एकु असुरु ताको वलु भारी। शिव त्रिसूलु करि तिहि अधिकारी
जवि लगि तिहि कर होइ त्रिशूला। ताहि कोऊ न उतारे मूला॥
सकल प्रजा को वहु दुःख देवै। अति विरोधु वहि असुरु करेवै॥
रघपति कह्यो कोइसि को मारे। अपुने वलि करि इसहि प्रहारे॥
भर्थ कह्यो प्रभु जी मै जावौ। वही असुर सौ युद्ध मचावौ॥
श्री रघपति तव वचनु सुनायो। हे मोहि वीर तै वहु दुःख पायो॥
वहुरो लछमन वचन उचारे। मै जावो प्रभ प्रान अधारे॥
रघपति कहचो तुमि भी न जावो। इहि विधि कर्नै चित्तु न लावो॥
तै ने वन महि वहु दुःख पाया। महा कष्टु है तहा कमाया॥
शत्रघनु जाइ तिस कौ मारे। ताहि दैत्य को पकरि पछारे॥
शत्रघनु कहचो प्रभ मै जावौ। तोहि कृपा वांको हति आवो॥
रघपति कह्यो सुनो मेरे भाई। मज्जन को जवि असुरु सिधाई॥
तुमि वाहू के अतरि जावो। शिव त्रिशूलु ले करि ठहिरावो॥
जवि मज्जन कर्के वहि आवै। तुमि सेती वहु युद्ध मचावै॥
मारि त्रिशूलु तिसे प्रहारो। हे मोहि वीर जाइ उसि मारो॥
शत्रुघनु सुण इहि उठि धाया। ताहि असुर के आश्रम आया॥
असुरु मज्जनि कर्नि को धायो। शत्रघनु अस्तल तिहि आयो॥

करि मज्जनु असुरु फिरि आया। शत्रघनु को तिन निर्षाया॥
तासौ युद्ध कीनो अधिकाई। विनु शस्त्र किछु बलु न वसाई॥
शत्रघनु ताहू को मारा। मार त्रिशूल तिहि सीसु विडारा॥
ताहि मार रघपति पहि आयो। सांईदास प्रनामु सुनायो॥२१०

इकि दिन एकि ब्राह्मण क्या कीआ।
भिक्षा मांगन को चितु दीआ।
माग भिक्षा कछु हाथ नि आयो।
ब्राह्मण अधिक क्रोधु करायो।
दाहनि अग स्वानु तिहि आयो।
ताहि निर्ष बहु क्रोधु उपिजायो।
ले लषोटी तांके सिरि मारी।
स्वान को पीड भई अति भारी।
कूकति कूकति प्रभ पहि आयो।
प्रभ सौ सभ विधि भाष सुनायो।
मोको इनि ब्राह्मण ने मारा।
इसि पूछो तुमि प्रान अधारा।
श्री रघपति विप कौ लीओ बुलाई।
हे विप इसि किउ चोटि लगाई।
कौणु औगुण तेरो इनि कीना।
जो इसि को इहि दुःख तै दीना।
विप कह्यो सुण हो रघुराई। इनि अवज्ञा मोह कीई न काई॥
य्युं ही प्रभ इसि कौ मारा। इहि सचु तुमि पहि आइ पुकारा॥
तव ही स्वान ने वचनु उचारा। हे प्रभ इसि देहि दडु हमारा॥
ठाकुरि को पूजारा होई। औरु दड देवौ नही कोई॥
वसिष्ट कह्यो इसि कौ वरु दीना। ठाकुर का पूजारा कीना॥
ब्राह्मण कौ कह्यो रघुराई। जाहि पूजा ठाकुर करु भाई॥
तुम को स्वान ने इहि वरु दीना। जो तै ताहि अवज्ञा कीना॥
ब्राह्मण सेवा को उहि धाया। वशिष्ट स्वान सो फिरि पूछाया॥
हे स्वान तै इसि वरु दीना कहा दड इसि कौ तै कीना

स्वान कह्यो सुण हो गुर मेरे। मैं विधि आपो आगे तेरे॥
मैं सेवा हरि जी की कर्ता। हरि चरना सेती चितु धर्ता॥
जो कछु प्रभ कौ आए चढावै। ठाकुरि आगे आए टिकावै॥
सो मैं ब्राह्मण ऋषहि पलावौ। तांसो रचिक मैं भी षावौ॥
तिहि रंचिकि ते इहि योन पाई। स्वान भयो हौ जग परि आई॥
इहि लोभी सभ ही आपि लेवै। ब्राह्मण ऋषि को कछू न देवै॥
ठाकुरु इसि कौ योन भ्रमावहि।
चौरासी लष महि उभ्र्मावहि।
इहि प्रजोग मैं इसि वरु दीना।
हे सतगुर जी मैं इहि विधि कीना।
हृदे प्रतीत भई अति भारी।
ठाकुरु इसि वहु योनि दिषारी।
जैसा इनि मोसौ प्रभि कीना।
साईदास ऐसा करि लीना॥२११

इकि दिन श्री रामचंद जी सोए।
पहिरि रही निसि उठि षलोए।
पुरि के तव रषिवारे आए।
श्री रघपति सौ डंडोंत कराए।
श्री रघपति तिहि वचन उचारे।
सुण हो अयोध्या के रषिवारे।
तुमि सदा फिर्ते हो पुर के माही।
मम नामु कैसे लोक उचिराही।
तव विनती करी अपुने करि जोरे।
हे श्री रघपति जीवन मोरे।
तुमि को नामु जो मुषि उचिराए।
मुक्ता होइ फिरि योन न पाए।
लोक कहा प्रभ तुमि कौ आषहि।
तुमिरो उस्तति सभु ही भाषहि।

एकनि ता महि आष सुणायो।
हमि इहि ओरि आवन चितु लायो।
एकि ओरि कछु भयो ककरा।
हमि ताहू धाइ परे तत्कारा।
एकि पीछे वनिता क्या कीआ।
आज्ञा पतिकी ना उसि लीआ।
विनु आज्ञा गई पित ग्रहि माही।
तिहि पति रोसु कीयो अधिकाही।
ताहि लेन को वहु ना धाया।
तिहि ससुरा दुहिता ले आयो।
लोक वडे वडे तिहि संग लीए।
दुहिता पति के ग्रहि पग दीए।
वहु ना आयो मै ले जावौ।
ओहु वडो मै छोटो कहावौ।
इहि प्रजोग दुहिता ले आयो।
अधिक दीनता तिने करायो।
तिहि दुहिता पति माने नाही। मुष ते वहु इहि ताहि सुनाही।
मै रघपति नाही इहि करहो। जानकी जिउ इसि कौ ग्रहि वडहो
जानकी असुरो षडी दुराई। षष्ट मास ग्रहि महि ठहिराई॥
रामचंदु तिन को ले आयो। फिरि करि ग्रहि महि आण वहायो
वहु राजा इहि तिहि वनि आवै। राजद्वार इहि वात समावै॥
मै गरीवु मो सौ नही होई। ऐसी वाति करे नही कोई॥
तांको हे प्रभ कछू न आपा। आज्ञा विनु कछु मन ना रापा॥
नाहि त हमि तांकौ प्रहार्त। सांईदास इहि वात उचार्त॥२१२

जवि रघुपति इहि विधि सुण पायो। अति भै चक्रित मनि मनि विस्मायो
अपुने मनि महि लीयो वीचारी। मोकौ कठनि वनी अति भारी॥
जानकी कछु औगुणु ना कीयो। कछु औगुणु ना मनि महि लीयो॥
कैसे करि इसि कौ तजि देवो। इसि कौ दूष कैसे मै लेवौ॥
ऐसे मनि महि कर्त वीचारा। श्री कौलापति प्रान अधारा॥

प्राति भई बंधू चलि आए। रघपति कौ डडौत कराए।।
रघपति कौ विस्मिकि निर्षाया। इनि सचरु मनि माहि लगाया।।
हमि भरि जोवनि है मेरे भाई। प्राति समे हमि उठयो न जाई।।
संध्या जापु हमि पहि ना होई। इहि उौगुण हमि उौरु ना कोई[1]।।
करि जोरे इनि विनती ठानी। हे प्रभ रघुपति सारंग पानी।।
जो उौगुण हमि ते कोऊ होई। हे प्रभ जी तुमि मेटो सोई।।
हमि वालक कछु बूझहि नाही। कहा कहे हमि तुमिरे ताही।।
हे प्रभ हमि परि क्रिपा करावो। सांईदास मनि सुष उपिजावो।।२१३

श्री राम चद्रि बंधू कौ आषा।
हे मोहि वीरो कहा चितु राषा।
हमिरी जान प्रान तुमि माही।
तुमि उौगुण कीनो कछु नाही।
मै तुमि कौ इकि आज्ञा करहो।
मोहि आज्ञा मनि अंतरि धरहों।
जानकी ते निंद्या हमि होई।
एहि संचरु मनि उौरु न कोऊ।
इहि निंद्या हमि सुणी न जाई।
तुम सौ कह्यो इहि मेरे भाई।
तुमि जानकी कौ वनि ले जावौ।
षडि करि वनि माही छडि आवौ।
भर्थ शत्रघन इहि सुण पाई।
करि जोरे मुष आषि सुणाई।
तुमि प्रभ हो आपो जो भावै।
जो काऊ उौरु इहि विधि उचिरावै।
ताको खंड खंड करि डारहि।
पल माहे हमि ताहि विडारहि।
सीता सील कोऊ रीस करावै।
जानकी सर उौरु कौनु कहावै।

---

१ यहाँ भक्ति की इच्छा करने वाले नवयुवक हृदयों का चित्रण है।

जबि इनि ने इहि बाति उचारी।
श्री रामचंदि तिहि दीओ बीचारी।
दो कार्ज तुमि देवौ बताई।
जो नीका सो करहो भाई।
कै सीता को बनि ले जावो।
नही तो हमिरो सीसु कटावो।
इनि से औरु बाति कछु नाही।
इहि मै आषी है तुमि ताही।
जबि रघुपति इहि बचनु सुनायो।
सब बहु सभ मन महि बिस्मायो।
लक्ष्मण रुदन कति चितु लीओ।
जानकी ओरि गवनु तिन कीओ।
चलति चलति जानकी पहि आयो।
जानकी ने लछमणु निर्षायो।
मनि माहे इहि लीओ बीचारी।
एही हृदे अतरि उनि धारी।
एक दिन मै रघपति सौ आषा।
सोंई रघपति मन महि राषा।
गगा के तटि प्रभ मै जावौ।
ऋषि बनिता अवरि देइ आवौ।
इहि प्रजोग रथु आयो है भाई।
अंतरि जामी रघुपति राई।
एहि सीता मनि महि धारी।
औरु ताह मनि नाह बीचारी।
लछमन सौ तिन बचनु सुनायो।
हे लछमनि बहु भला कीओ आयो।
तुमि षडा होउ मै अंबर ल्यावो।
साईदास तुमिरे सग धावो॥२१४

जानकी कहि गई ग्रहि के माही अति अनदु ताहू मनि माही॥

अवर आए रथ ऊपरि डारे। वहुरो मनि महि लीयो वीचारे ॥
लछमनि सौ फिरि वचन उचारे। सुए हो लछमनि वीर हमारे ॥
कौशल्या पग पर्स कै आवौ। पाछे हमि तुमिरे संग धावौ ॥
जानकी कौशल्या पहि आई। विनती मुप ते आप सुणाई ॥
गगा तटि आषा हो जावौ। छिन मात्रि माहे फिरि आवौ ॥
कौशल्या जानकी सौ आषा। हे जानकी तै क्या चिति राषा ॥
नागे पग कैसे वनि जावहि। वन माहे कैसे पग चलावहि ॥
जानकी तांको इहि प्रतु दीना। मै वन गवनु अधिक है कीना ॥
कौशल्या से आज्ञा पाई। तात्काल रथ परि तव आई ॥
लछमन धौल्ह पूत को मारे। धौल्हु पूत पग आगै न डारे ॥
वसुधा ते उठि षडे न होही। मनि माहे वहुता वहि रोही ॥
जबि लछमन वहु जत्न कराए। धौल्ह पुत्र आगे तव धाए ॥
चलति गगा तटि परि आए। लछमन रथ को दीओ तजाए ॥
त' रथु तटि त्याग उौरु ओर धाए। तव जानकी ने वचन सुनाए ॥
वनिता ऋषि की उति ठौर रहे। कर्ति तपस्या ऊहां अहे ॥
तू मोकौ कहु कहा ले जावै। मोकौ इहि विधि किउ न वतावे ॥
असगुन वुरे सीता मग होही। जानकी मन्न माहे वहु जोही ॥
दाहणा द्रिगु सीता कपावै। जानकी मन महि सोचु करावै ॥
एहि असगुन मोको दुःख देवै। कछु चिता मोको उपजेवै ॥
महा विकटि वनि माहे आए। तव लछमन ने वचन सुनाए ॥
सीसु तले करि मुष ते आषा। श्रीराम वनिवासु दीयौ तुम्है भाषा
जानकी सुनति गई मूर्छाई। व्याकल होइ धर्नि गिराई ॥
तांके प्राण गए निकसाई। लछमन निर्षो वहु दुःख पाई ॥
छाया करि सिरि परि ठहिरानो। ताके द्रिग सों नीरु ढुरानो ॥
रुदनु करे अरु पवनु झुलावै। मन माहे वहुता विस्मावै ॥
जानकी फिरि आई सुधि नाही। रुदनु कर्ति द्रिग नीर ढुराही ॥
लछमन सौ चित वचनु सुनायो। कौनु अवज्ञा मो तन लायो ॥
रघपति मोह वनवासु किउ दीयो। मो सौ रघपति इहि क्या कीयो ॥
हे लछमन मोहि देहु वताई। सांईदास तुम्है राम दुहाई ॥२१

लछमन तांसौ दीउो वीचारा। जानकी रघपति इहि मन धारा॥
कहयो हमारी निंद्या होई। जानकी ते विधि ऊरु न कोई॥
इहि प्रजोग वनवासा पठायो। हमिरो कहयो मनि ना ठहिरायो॥
पग धरि सीसु लछमन उठिआयो। जानकी कौ वन महि छडि धायो॥
वन महि जानकी रुदनु करावै। इति उति ओरि उठि करि धावै॥
मृग वनिता सभ ही मिल आई। जानकी पहि आइ करि ठहिराई॥
मोरि अधिक ताहू पहि आए। निम्मि इकि व्रिक्ष तले ठहिराए॥
तीन दिवसि निसि ऐसैं भए। जानकी वन माहे ही रहे॥
चतुर्दिवसि पाछे ऋषु आयो। वाल्मीक तिहि नामु सुनायो॥
कद मूल वन ते चुण लेवै। उदरि पूर्ना जाइ करेवै॥
वाल्मीक जवि नेत्र निहारे। स्त्री निर्षी तिन तत्कारे॥
डोलति फिर्ति हे वन के माही। कौनु रूप फिरे वनि मझाही॥
वाल्मीक चल्यो निकटि आयो। जानकी सौ तिन वचनु सुनायो॥
हे पुत्री तू कौनु कहावहि। इसि वन माहे काहे धावहि॥
जानकी ने तव वचनु उचारा। हे पिता सुण हो वाति हमारा॥
रघपति वनिता सीता नामा। मै फिरह्वो वन महि इहि कामा॥
रघपति मोहि वनिवासु दिवायो। एहि कामु तिनि मोहि करायो॥
वाल्मीक जवि इहि सुण पाई। मुष अपुने इहि उचिराई॥
तोहि कार्ज महि मै भी आयो। तोहि कार्जु जवि जन्क रचायो॥
चिता कछु मन महि ना धरहो। मनु डोलावन मूल न करहो॥
गोबिदु सभु कछु भलो कराए। साईंदास सभ दु:ख मिटाए॥२१

ऋषु सीता कौ सग ल्याया। ऋषि के सुत तिन अधिक बुलाया
तिन को आज्ञा दीनी। एहि आग्या ताहू सौ कीनी॥
कखु कंडा जाइ वन ते ल्यावो। ईहा तुमि इकि कुटी बनावौ॥
जहां आस्रम सौ सीता रहे। जानकी श्रीराम भर्जा अहे॥
वालक कंखु कडा ले आए। ताह आइ तिह कुटीआ छाए॥
वाल्मीक कहयो सीता ताई। हे पुत्री तूं रहु इसि माही॥
जो कछु कंदमूल ले आवहि। प्रिथमहि सीता पहि ठहिरावहि॥
पूर्णं दिवस भए गर्भ ताई। जानकी गर्भु पूर्न भयाही॥

रोहणी नक्षत्रु निस समे माही। जानकी कौ गर्भु वाहिरि आही॥
जन्म लीयो वाल्कु प्रगटायो। वनिता ऋष की मगलु गायो॥
बालक ऋषो केरे दौरे आए। वाल्मीक सौं आइ सुनाए॥
ऋपि तोहि दुहिता वाल्कु जायो। वाल्मीक तव ही चलि आयो॥
लऊ नामु वाल्क का राषा। वाल्मीक ऐसे ही भाषा॥
जानकी ने वहुता सुष पायो। साईदास तवि मंगलु गायो॥२१

वाल्मीकु स्नान को धायो। प्राति समे इहि वचनु उचिरायो॥
हे पुत्र कुभु जल भरि आने। मेरो कह्यो हृदे मांझि पछाने॥
इहिविधि कहि स्नान को धायो। जानकी इहि विधि मन ठहिरायो॥
जानकी कुभ कौ लीयो उठाई। जलु लेने ताई वहु धाई॥
मनि माहे तिनि लोओ वीचारी। अवि ही आवनि इसि ने धारी॥
जो वाल्कु पालनि पाइ जावों। मैं जलु लेने ताई धावौ॥
फिर्त व्याघ्र अधिक इहि ठौरा। मतु उठाइ पडहि सुतु मोरा॥
गोद कीए ले करि मै जावौ। इहि कुभु जल सौ भरि ले आवौं॥
सीता गोद लीए उठि धाई। चली चली जल के नटि आई॥
वाल्मीकु स्नानु करि आयो। करि स्नानु अपुने ग्रहि आयो॥
पालनि महि वाल्कु ना देषा। वाल्कि कौ ऋपि ने ना पेषा॥
वाल्मीकि मनि महि वीचारा। महा कठनि वनी अति भारा॥
जानकी कौ पति दीयो निकारा। सुतु इसि को अवि ही किन मारा॥
जो गोविद इसि क्रिपा करि दीआ। तासौ जानकी वहु हितु कीआ॥
अवि उसि कौ किने पडयो दुराई। जानकी सुण विधि वहु दुःख पाही
ताहि व्योग उहु प्रान तजावे। इहि मोको ना वणि आवै॥
वाल्मीक मन महि इहि धारी। साईदास प्रगटि बीचारी॥२१

वाल्मीक ने कुशा मगाई। ले कुशा करि माहे ठहिराई॥
ऋषि ने पुतला ताहि बनायो। वहु पुतला पालनि महि पायो॥
अंबर ले तिहि ऊपरि डारा। तांकौ पालन माहि सवारा॥
दौ घरी पीछे सीता आई। जलु भरि कुंभ कौ संग ल्याई॥
वाल्मीक जानकी सो आषा।
पुत्री वाल्कु तोहि कहा भाषा

जानकी ने तब बचनु उचारा।
हे पिता इहि है बाल्कु हमारा।
मै इसि कौ संग ले करि धाई।
तब वाल्मीक बिगस्यो अधिकाई।
हिर्षमान हो बचनु उचारा।
हरि किर्पा ते मै इकु धारा।
इहि कुशा ही ते प्रगटायो।
इसि को नामु मै कुसू धरायो।
जानकी सुण विधि बहु हिर्षाई।
भलो भयो पिता बात सुणाई।
इसि बाल्क ताई भी पारो।
इभि सो हेतु अधिक मै धारौ।
जानकी महा अधिक सुखु पायो।
सांईदास कुसू द्रिष्ट आयो।।२१६

बाल्क चतुर्बर्षि के होए। सीता संसे मन ते खोए।।
बाल्मीक ने आपि पठायो। सुरपति ताई एहि सुणायो।।
कामधैनि कौ देहि पठाई। एहि आज्ञा हमिरी तुमि आई।।
सुरपति जबि इहि विधि सुण पाई। कामधैन तिन दीई पठाई।।
बाल्मीक ऋषि लीओ बुलाए। औरु अधिक विपि ताहि सदाए।।
यज्ञ कीयो ऋष ने अधिकाई। जो कोऊ मागे सोऊ खलाई।।
कामधैन ते बांछा करै। कामधैनि ले आगे धरै।।
अति मिष्टन भोजन खलायो। जो जो किन्हूं बांछ्यो सोऊ पायो।।
रवि सौ ऋष ने बचनु सुनायो। जानकी के गर्भ ते उपिजायो।।
श्री रामचंद के सुत है भाई। इहि विधि मै तुझै आख सुणाई।।
दो तुमि धनुष देवौ हमि ताई। एहि बिधि समझिलेहु मनि माई।।
रव अपुने बाल्क सौ भाषा। द्रितीआ धनुखु ल्यावो आषा।।
जो सभ धनुष से आछा होई। तुमि आनो मेरे पहि सोई।।
जबि रव की आज्ञा उनि पाई। धनुष जाइ आने उनि धाई।।
आण दीए उनि बाल्क ताई। धनुष भले नीके अधिकाई।।

बाण ऋषीश्वर औरहि दीने। आसबादु तब ही उनि कीने।।
तर्गसि ते जेते बाण चलावै। अधिक होहि फिरि घटि ना जावै
इहि अशीर्वादु तिहि कीना। साईदास तिहि विद्या दीना।।२२०

लक्ष्मण जानकी को ले आया।
वन महि छाडि ताहि उठि धाया।
श्री रामचंद मन महि इहि आनी।
मो गुर किर्पा ते सकल बपानी।
जानकी प्राण तजे होवहिगे भाई।
इकि दिन तिह पाप मोह् ग्रासे आई।
गुरि बशिष्ट सौ आप सुणायो।
अस्वमेध मोह् यज्ञ करावो।
दुःख सीता को हमि तेजाई।
नाहि ति इकि दिन आइ ग्रसाई।
बशिष्ट कह्यो रघपति भलो आपा।
मन माहे विधि आछो रापा।
विनु वनिता यज्ञ होवै नाही।
हमि तुमि को कैसे यज्ञ कराही।
रामचद तब बचनु उचारा।
सुण हो गुरु जी बात हमारा।
जानकी पुतली कनक बणावो।
वांवे अग हमिरे ठहिरावो।
जब रघपति इहि वचनु सुनायो।
गुर बशिष्ट तब ही सुण पायो।
कनक पुतली तब हि वणाई।
श्री रामचद वावे अग ठहिराई।
जो कछु वेद म्रिजाद वताई।
श्री रघपति ने कीना साई।
जो कोई गति अपुनी कीआ लोरहि।
साईदास सभि हौमें छोरहि २२१

भले महूर्त्ति अस्वु निकारा। श्री रघुपति प्रान अधारा।।
छोडि दीयो वसुधा जिण आवै। तिहि पाछे प्रभु यज्ञ करावै।।
दक्षिण पश्चिम सभु फिरि आया। कहूं ठोरि तिनि ठाकि नि पायो।।
शत्रघनु तिहि भयो सहाई। जहा अश्व जावै पाछे जाई।।
ताहि संग सेना वहु भारी। तां की उस्तति कहा वीचारी।।
महा बली ताके संग आए। नामु कहा कहो चित न आए।।
मो पहि नामु कहा गिणे जाही। हे साधो समझो मनि माही।।
पडिति किनी न मोहि सुणायो। गुर किर्पा थटु आणु बनायो।।
सिंध अपार कवनु गति पावै। रामग्रंथ कहा उपिजावै।।
विनु किर्पा कछु होवै नाही। विनु सतगुरु के भए सहाही।।
जो कहू भूल परी होइ भाई। साईदास तुमि लेहु बनाई।।२२२

अश्वु वालमीक आश्रम आयो।
छिनु इकि अश्वु ताहू ठहिरायो।
कुसू वालि ब्रह्मण संग लीए।
एकि पुलवारी महि पग दीए।
अश्वु ताहू के आगे आयो।
तिहि मस्तक परि पतीआ लिषायो।
जग महि गर्भु कौशल्या भाई।
तिन जाए श्री रघिपति राई।
औरि गर्भ केते काम नि आवहि।
कौशल्या सरिनाहि कहावहि।
जबि कुसू इहि लिष्यो पढि लीआ।
महा क्रोधु हृदे महि कीआ।
सीता गर्भु कहो क्या भया।
कौशल्या गर्भु जो लिख लया।
अश्व पकिरि पट केसौ बांधा।
जैसे मीन वधक ने फांधा।
ब्राह्मण सुत कहे इहि क्या करही।
काहू इहि विधि मनि महि घरही

काहे ते अश्वु कौ पकडायो।
कहा बाति तैं मनि ठहिरायो।
अवि ही अश्वु पाछे लोक आवैं।
काहे प्रान तू घातु करावैं।
तूं गरीब किउ इहि कर्मु करही।
पर अश्व बाधनि किउ चितु धरही।
कुसू प्रति ब्राह्मण सत्ति दीना।
तुमि मन त्रासु काहे कौ लीना।
हे ब्राह्मण मागनि विधि जानो।
सग्राम गति तुमि कहा पछानो।
हमि छत्री वहु दानु करावहि।
संग्रामु करहि फुनि ना उकिलावहि।
तुम काहे को त्रासु किरावो।
तुमि अपुने ग्रहि माहे जावो।
जो कोऊ युद्ध करे तिस मारो।
भुजा ताहि क्षिण माहि उपारो।
एक घरी महि सैना आई।
सैना ने तिहि महि वला काई।
दस सहस्र सैना सग ताके।
महा वली वलुभुज वहु वाके।
ताहि कह्यो अश्वु कहु कवन वधायो।
हमिरो अश्वु कहु कवन वधायो।
ब्राह्मण सुत ने दीओ वताई।
तोहि अश्वु इनि बाध्यो भाई।
सैना ने मनि महि इहि धारा।
बालकु षेलन कौ इहि प्यारा।
सैना ने तव वचनु उचारा।
अश्व को षोल्ह देहि तत्कारा।
कुसू कह्यो अश्वु षोल्ह न देवौ।
जो इसि नामु ले तिसि हति लेवौ

सेना ने इकु लोक पठायो।
अश्व षोल्हरिण कौ तिन चितु लायो।
कुसू बाणु ले तासो मारा।
मारि बाणु तिसि सीसु उतारा।
वहुरो उौर जु आगे आयो।
कुसू बाणु सधि हाथु कटायो।
दस सहस्र सैना जो आई। सकली कुसू ने मारि चुकाई।।
वहुरो तिस को भाई आयो। तांकी सैना है अधिकायो।।
तिन आइ युद्ध कीवो अति भारी। अंत समे कुसू वहि भी मारी।।
केतक भाग फिरि पीछे आए। शत्रघन पहि आइ ठहिराए।।
शत्रघन को तिनहि सुनायो। एक वालक सभ सैन हतायो।।
हे प्रभ सभ सैना उनि मारी। सांईदास कहा कहो वीचारी।।२॰

शत्रघन जबि ईहि सुण पायो। सैना सग लई उठि धायो।।
आइ कुसू को वाणु लगायो। कुसू बाणु पायो मूर्छायो।।
ताहि मानि रथ ऊपरि डारा। अश्व ले आगे कौ पगु धारा।।
वालक आए सीता पाहे। हे जानकी सुण ले मनि माहे।।
कुसू अश्वु काहू वधि लीआ। हमि वहुता प्रवोधनु कीआ।।
काहे परि अश्व कौ करु लावै। काहे कौ इहि कामु कमावै।।
हमिरो कहा तिन मनि ना कीना। परि अश्व को तिन ने वधि लीना
पाछे से सैना वहु आई। सकल सैन तिहि मारि चुकाई।।
पाछे से इकु राजा आयो। तिन ने कुसू कौ वांधि चलायो।।
जानकी इहि सुण करि मूर्छाई। मूर्छा होइ करि धनि गिराई।।
छिन एकि महि फिरि सुधि महि आई। मन अंतरि वहु वहु विस्माई।।
कहा करौ ऋषि जी ग्रहि नाही। लऊ गियो है वनि के माही।।
ऐसे ही संचरु मनि धारा। लऊ आइ निकस्यो तत्कारा।।
लकडी आण करे ठहिराए। जानकी सौ तिन बचनु सुनाए।।
हे माता काहे विस्मावै। किहि प्रजोग तू हृदे डुलावै।।
तब जानकी ने वचनु उचारा। हे सुत सचरु इहि विधि धारा।।
तोहि वंधू अश्व किसे वंधायो। पाछे अश्व को सांई आयो।।

तांकी सैना उनि ने मारी। अधिक सैन ताकी प्रहारी ॥
तोहि वघ्र को उनि मूर्छायो। बांधि करि रथ परि ले धायो ॥
हे सुत इहि विधि मैं मूर्छाई। साईदास क्या कहो सुनाई ॥२२४

जवि लऊ इहि विधि सुणी काना।
मात सौ तव वचनु वषाना।
हे माता चितु नाह डुलावो।
अपुना चितु तुमि ठौर रषावो।
जवि लगि मैं जीवति हौ माई।
कुसू कौ को ले जाण नि पाई।
त्रैलोक महि पडि न पावै।
मोहि वल ते त्रैलोक कंपावै।
हे मय्या मोहि धनु आण देवौ।
छिनु पलु विलमु तुमि नाह करेवौ।
जानकी सुत सौ वचनु उचारा।
तुमि कौ भूष लगी अधिकारी।
जानकी तीन गरास षलाए।
अपुने करि सुत के मुष पाए।
लऊ आज्ञा ले करि उठ धाया।
तात्काल सैना निकटि आया।
सैना कौ तिन कह्यो सुणाई।
हे जोधा ठांढे रहो भाई।
मोहि वीरु तुमि किउ ले जावौ।
मोहि आयो हों तुमि ठहिरावौ।
मो सौ युद्ध करो मेरे भाई। ऐसे लऊ ने कह्या सुणाई ॥
फेक सष वाकौ इनि मारे। सकल सैन मनि लीओ विचारे ॥
शत्रघण कौ आष सुणायो। इहि वालक ते छूटि नि पायो ॥
अबि दूजा इहि वीरु जु आवै। सषि फैकि छडि हमहि डरावै ॥
इसि ते हमि छूटणि ना पावहि। इसि की फेंकि सौ मन विस्मावहि
सुणि फेरि षलोयो लऊ करे वह सन्मुख होयो ।

धजा गिरी रथ ताहि पराई। ध्वनि परे आपे ही आई॥
तूटि गई जो गिरि करि परी। सैना सभ विस्मक मन धरी॥
शत्रघणु आगे को धायो। सांईदास लऊ निकटि आयो॥२२५

लऊ आण करि वाण चलाए। सग्राम ठौरि आइ ठहिराए॥
इहि सैना तिहि वाण चलाए। लऊ वाण तिहि टूकि कराए॥
लऊ वाण खिच करि मार्‍यो। सेनापति को रथु कटि डार्‍यो॥
औरु वाण तिहि श्रवणहि मार्‍यो।
वहुरि मारि तीहि सीसु उतार्‍यो।
सभ सैना ताकी लऊ मारी।
लऊ कौ वलु भुज मै अति भारी।
ताहि वीरु गज परि चढि आयो।
प्रिथमे तांको गजिंद्र गिरायो।
पाछे से तिहि सीसु उतारा।
वाण सधि ताहूं कौ मारा।
जवि वह गिर्‍यो शत्रघणु आयो।
चतुर वाण तिन आण चलायो।
लऊ के मस्तिकि परि तिन मारे।
तव लऊ तांसौ वचन उचारे।
एही वलु तुमि को सा भाई।
पैच्यो वाणु अधिक वलु लाई।
पुहपु लगो मानो मोहि ताई।
तोहि वाणु जो जोरु करि आई।
जोरु कीओ तै वाणु चलायो।
मानो पुहपि वर्षा तै लायो।
वहुरो लऊ ने वाणु चलायो। शत्रघन को ध्वनि गिरायो॥
लऊ चल्या रथ पाहे आया। जिसि रथ महि कुसू वधि पाया॥
जाइ कुसू को करु पकिडायो। हे मोहि बीरु उठो मै आयो॥
लऊ कुसू को लीओ छुडाई। चले चले आए दोऊ भाई॥
लूट सैन कौ उठि करि धाए मोती माणक अधिक ल्याए।

आण जानकी आगे डारे। जानकी ने लीने तत्कारे॥
जानकी मुल देषि हिर्पाई। सांईदास कछु कह्यो न जाई॥२२

जो जीवति रहे सैना माही। आए अयोध्या रघपति पाही॥
तिनहि पुकारि कह्यो रघुराई। हमि तुमि कौ कहे सुणाई॥
तोहि अश्व पूर्व दक्षिण धायो। पश्चिम मौ उत्तर फिरि आयो॥
चतुर्दिसा प्रभ जी फिरि आए। कहू ठौर हमि ठाकि न पाए॥
जिन देष्यो तोहि नामु पढायो। नमिस्कारु कीनो हितु लायो॥
जहा जाइ कोऊ निकटि न आवै। दूरि से देषे सीसु निवावै॥
हे प्रभ प्राग निकटि जबि आए। ईहा प्रभ हमि वहु विस्माए॥
एकु वाल्कु वन महि ठहिरायो। द्वादश वर्ष अवस्ता पायो॥
तिन ने अश्व पकरि बधि राषा। तासौ हमि ने वहुता आषा॥
अश्व न दीना युद्ध करायो। सकल सैन तिनि मारि चुकायो॥
पाछे शत्रघन तहा आए। युद्ध कर्नि को तिन चितु दए॥
शत्रघन जबि वाण चलायो। उसि बाल्क ताई मुर्छायो॥
ताहि बांधि के रथ परि डारा। हे प्रभ इति आवन चितु धारा॥
पाछे एक बंधू तिहि आयो। एक वर्षु छोटो के अधिकायो॥
वाण सांधि सैना वहु भारी। तां की भुज महि था वलु भारी॥
शत्रघन कौ उनि मूर्छा कीना। अपुनो वीरु छडाइ करि लीना॥
वीरु लेइ प्रभ गृह को धायो। सांईदास विधि आष सुणायो॥२

श्री रघपति जबि इहि सुण पायो। कह्यो भूठ काहे उचिरायो॥
भूत प्रेत तुम देष्यो होई। असा उौरु ऊहा नही कोई॥
शत्रघन के को निकटि आवै। एहि कर्मु कहु कौनु करावै॥
फेरि तिन्हूं ने वात चलाई। हे कोलापति संत सहाई॥
भूत प्रेत प्रभ कहा ठहिरावै। तोह दर्सन रहिणा ना पावै॥
हमि सच्चु कहिते हो रघुराई। भूठ न कहिति हो तुमहि दुराई॥
श्री रामचद संचरु मन धारा। शत्रघन को वलु वहु भारा॥
महावली तिनि असुर विडार्यो।
तांको मूर्छा किनि करि डारयो।

लछमण को प्रभ आज्ञा दीनी।
लछमण ने सो मन महि कीनी।
पंजाह सहस्र हस्त ले धायो।
सठ हजार असवारु चलायो।
इकु लखु पैकु लीओ तत्कारे।
लक्ष्मण सहिति सेना अधिकारे।
केतक दिन तिम्हि माहे आए।
सग्राम ठौर आइ करि ठहिराए।
लऊ पुकार कह्यो कुसू ताई।
हे मोहि वीर अवि कहा कराही।
सैना अधिक आई मेरे भाई।
इहि मैं मै तुमि कौ आप सुणाई।
कुसू लऊ ताई प्रतु दीना।
हे मोह वीरु कहा सैना लीना।
कांग अधिक वाजु इकु होई।
तुमि सचरु मनि लह्यो न कोई।
स्याल अधिक सिंहु इकु होई।
सिह की रीस वहि कहा करोई।
सूरा एकु काइरि अधिकाई।
सूरे सरि कहा होवहि भाई।
कांग अधिक जो मिलि करि आवहि।
वाजु परे सभ ही भजि जावहि।
स्यालु सिह पहि कहा ठहिरावैं।
काइरु सूरे निकटि न आवै।
मैं छोटौ तू मैं अधिकाई।
ऐसी वाति तैं किउ उचिराई।
जो मैं अपुना जीउ डुलावों।
तोहि क्रिपा करि धीर्जु पावो।
जो तुमि ऐसी वाति सुणावो।
माहि ताई काहे उकिलावो

हे वघू चित को ठौर रायो।
औरु वाति कछु तुमि ना आयो।
हमिरी द्रिष्ट काग सभ आवहि।
साईदाम काहि हदा डुलावहि।।२२८

कुसू लऊ सौ कह्यो पुकारी।
हे वघू सुण वाति हमारी।
मोहि धन्पु नाही कहा करहो।
कैसे मै इनि सेती लडहो।
लऊ उस्तित रवि केरी कीनी।
मुप ते उस्तति वहु उचिरीनी।
तोहि रथ अस्व सप्त मेरे भाई।
तुमि को हमि डडौत कराई।
रवि इकु रथु इकु धन्पु पठायो।
अशीर्वादु कुसू करि तिन पायो।
लऊ कुसू शस्त्र सग लीए।
सग्राम ठौर आइ ठहिराए।
अधिक युद्ध ताहूं ने कीना।
सैना लछमरण की हति लीना।
रक्ति सिध प्रवाहु चलायो।
नर गज अश्व तिहि अधिक हतायो।
इकि ओरि लऊ संग्रामु करावै।
इकि ओरि कुसू वहु सैन हतावै।
लऊ ताई तिन्हा घेरा कीना।
घेरा करि तांकौ विच लीना।
इकु घेरा हस्ती को कीना।
वहुरो एकु रथ को करि लीना।
एकु असवार को कीनो भाई।
एकु पैक ऐसो बनि आई।
सप्त घडी तिसि ताई पाया।
लऊ ताहि वचि बाहिरि आया।

अधिक सैन लछमनि की मारी।
को घायल तांके भेद प्रहारी।
लऊ कह्यो कुसू द्रिष्टि न आवै।
इहि प्रजोग मनि महि विस्मावै।
एकु असुरु अकास सौ आयो।
लऊ करि ते तिन धन्षु छिनायो।
लऊ तर्गसु समसेर निकारी।
तांकौ पहुंचि जाइ करि मारी।
कंठ पकरि ले धर्नि गिरायो।
ताहि असुर कौ मारि चुकायो।
वहुरो ताहि असुरि सुतु आयो।
तिसि ताई भी लऊ हतायो।
वहुरो लछमणु आप ही आयो।
लऊ सौ तिनि युद्ध करायो।
केतक वाण लछमण ने मारे। लऊ ताहि वाण कटि डारे।।
वहुरो लऊ जो वाणु चलायो। लछमण कौ तिन ने मूर्छायो।।
सैना वहु ताकी उनि मार्गी। जो भाग्यो छूटयो तत्कारी।।
लऊ कुसू एहि कर्मु कमाया। सांईदास लछमन मूर्छाया।।२२६

जो नर सैना जीवण पाई। आए नग्रि अयोध्या धाई।
श्री रघपति पाहे चलि आए। सकल ब्रितांतु तिन आष सुणाए
हे प्रभ लछमण कौ मूर्छायो। दुहूं बालक वहु जोरा पायो।।
श्री रामचंद कह्यो झूठि अलावो। एहि वाति जो मोहि सुणावो।।
लछमन रावण ताईं मार्यो।
तिसि को कहु किनि मूर्छा डार्यो।
असुरि अधिक कौ ताहि सिहार्यो।
महावली असुरौ जो मार्यो।
को बालकु जो तिनि मूर्छावै।
लछमन वध्र के निकटि न आवै।

सैना के नर वहुते आए।
हाथ कटे वहु रक्त वहाए।
रघपति जवि इनि को निर्पायो।
अति क्रोधु मन महि उपिजायो।
भर्थि को कह्यो श्री रघुराई।
सैना ले सग मेरे भाई।
जाइ करि उनि बालक सौ झूझौ।
मोहि कहा मन अंतर बूझो।
हनूमान सुग्रीम ले जावौ।
सांईदास जाइ युद्ध मचावौ॥२३०

भर्थि हनूमान सुग्रीम कौ लीआ।
त्याग अयोध्या तिन गवनु कीआ।
चले चले आए छिन माही।
लऊ कुसू ठाढे से जाही।
लऊ कुसू सो वचनु उचारा।
कहा नामु है तात तुम्हारा।
लऊ भर्थं ताई प्रतु दीना।
सग्राम ठौरि तुमि क्या चित कीना।
संग्राम माहि सुरा हो मेरे भाई।
मात पिता कहा जाति अषाई।
वाल्मीक हमिरे पित नामा।
जानकी माता को है नामा।
भर्थि पवन सुत सौ इहि आषा।
हे सुत पवन तैं कछु भी लाषा।
वालक रघपति सुत द्रिष्ट आवहि।
श्री रामचद्रि को रूप दिषावहि।
हनूमान तव कह्यो सुरगाई।
सुण हो भर्थि राम के भाई।

जानकी कछु औगुण नही कीआ।
रघपति तिहि वनिवासा दीआ।
सांई वाति तै आगे आयो।
ताहि पाप तुमि एहि करायो।
जैसा करै तैसा कोऊ पावै।
साईदास कीओ आगे आवै।।२३

पवन पुत्र इहि कह्यो सुणाई। भथि वभीछनि मनि ठहिराई।।
युद्ध कर्नि की तिन चितु लायो। अधिक युद्ध तब भथि करायो।।
लऊ कुसू ने जोरा कीना। भर्थु सहिति सैना हति लीना।।
श्री रघपति जवि इहि सुण पायो। महा अधिक मन महि विस्मायो।।
ऐसे कौण प्रगटि भए भाई। मोहि सैन जिन सकल हताई।।
भर्थु शत्रघनु लछमनु मार्यो। सैना ताकी तिहि प्रहार्यो।।
क्रोधु कीओ रघपति उठि धायो। अधिक सैन प्रभु सग ल्यायो।।
आइ सग्राम ठौर ठहिरायो। अधिक युद्ध तिनि अग्नि रचाहो।।
लऊ कुसू को बलु वहु भारी। सकल सैन रघपति की मारी।।
जवि सभु सैना तिनहि हताई। श्री रामचंद मन महि विस्माई।।
विस्मकि होइ करि युद्ध को आयो। लऊ कुसू सौ युद्ध करायो।।
रघुपति को तिन मूर्छा कीना। सांईदास सभ उत्तर दीना।।२३

लऊ पुकार कह्यो कुसू ताई। इहि आई हमिरे मनि भाई।।
वचरि घेलनि कौ ले जावहि। इनि से घेलनि कौ चितु लावहि।।
कुसू कह्यो भलो शब्द सुनायो।
भली वाति तुमि मोहि बतायो।
जबि सभ सैना इन्हि प्रहारी।
सुग्रीम पवनसुत इहि मनि धारी।
जो हमि फिरहि हम को मारहि।
साधि वाणु हमि धर्नि पछारहि।
ताते धर्नि ऊपरि परि रहीए।
कहि वाए हमि इनि के सहीए।

सास छूटि वसुधा लपिटाए।
को जाने इन्हा प्राण तजाए।
माणक मोती रत्नि घनेरे।
लाल जवाहरि मणी वहुतेरे।
गज अरु अश्व अधिक तिहि लीए।
लऊ कुसू एहि कारणि कीए।
हनूमान सुग्रीम कौ लीआ। तव गवनु अपुने ग्रहि कीआ।।
चलति चलति जानकी पहि आए। जानकी सौ तिन्हा वचन सुनाए।।
दो वचरि षेलनि कौ आने। लऊ कुसू इहि वचन वषाने।।
जानकी वचर ओरि तकाओ। वचरि देषि मुष ते उचिराओ।।
हनूमान सुग्रीम पछाने। तव जानकी ने वचन वषाने।।
हे सुत मोहि हनूमानु प्यारा। तुमि से प्यारा वहु अधिकारा।।
मोहि द्रिष्ट आगे ना आनो। मेरो कह्यो सत्त करि जानो।।
अवि मोहि द्रिष्ट परे मरि जाई। हे सुत पाछे कछु न वसाई।।
अवि महा तेज क्रोध द्रिष्ट मेरी। जो करो इसि होइ भसम की ढेरी।।
छाडि देहु मेरा कह्यो मानो। मोहु कहे अंतुर ना आनो।।
जवि जानकी इहि वचन उचारे।
लऊ कुसू मन माहे धारे।
तिन को त्याग दीयो तत्कारा।
हे साधो कह्यो सकल वीचारा।
जानकी माणक मोती लीने।
मणी रतन ले गोदि महि कीने।
जीत भई सुत वहु सुष पायो।
साईदास विधि प्रगटि सुनायो।।२३३

वाल्मीक आगे ही धाए। प्याल गए वलि लोए वुलाए।।
वाँनि यज्ञ करावण धाए। वाँनि को जा यज्ञ कराए।।
यज्ञ संपूर्ण ताका कीआ। पाछे ग्रहि आवनि चितु दीआ।।
आवति अंम्रति कौ ले आया। रघपति को मूर्छा निषाया।।
सकल सैन सौ द्रिष्ट पसारी। सभहि मूर्छा नैन निहारी।।

अमृति ले रघपति मुष पायो। वहुरि लछमन मुख चुआयो॥
भर्थ शत्रघन के मुष डारे। तव इनि सभ ही नैन उघारे॥
अअतु सभ सैना मुष पायो। वालमीक ऋषि सकल जीवायो॥
मानो साए से सभ जागे। उसतति प्रभ की कर्नि लागे॥
हे माधो भगतिनि सुषदाईकि। गुणनिधान सतनि सुषदाइकि॥
सदा सदा प्रभ संति सहाई। सदा सदा संतनि सुषदाई॥
भक्तिनि को प्रभ ऐसे रापहि। जैसे रस्ना मुष महि भाषहि॥
दसरथ को नदन रघुराई। साईंदास जागे सुषदाई॥२३४

रघिपति ऋषि सौ वचनु उचारा।
ऋप जी सुण हो प्रश्न हमारा।
इहि दो वाल्क कौनु कहावहि।
जो तुमिरे अस्तल ठहिरावहि।
वाल्मीक इहि सुण मुसिकाना।
मुष अपुने ते प्रतु उचिराना।
रघपति सुत है एहि तुमारे।
जानकी के गर्भ उतिपति धारे।
श्री रघपति एहि विधि सुण पायो।
वाल्मीक से फिरि उचिरायो।
जानकी जीवति है अबि ताई।
भली वाति तुमि मोहि वताई।
वाल्मीक सुण करि प्रतु दीना।
जीवति जानकी आस्त्रमु लीना।
जवि लछमनि वनि महि छडि धायो।
पाछे से मैं वन महि आयो।
कद मूल लेने के ताई। जानकी वन महि निर्षाई॥
तांको ले करि संग आयो। तिहि कारण आइ मठ वनायो॥
ऋषि वनिता ईहा अधिकाई। जानकी रहति तिहि महि रघुराई
ऋषि वाल्क कंदिमूल ल्यावहि। जानकी ताई भी पहुचावहि॥
जो कछु हमि षावहि रघुराई जानकी भी सोई ले षाई।

जानकी पितु नृप जानक विदेही। वहु सेवकु मेरो भलो स्नेही।।
जबि जानकी कौ कार्जु भया। तिन्ह समे मै भी मिथला गया।।
उसि दिन ते जानकी ईहा रहे। सांईदास आस्रमु ईहा अहे।।२३

श्री रघपति फिरि वात चलाई। जानकी जीवति है मेरे भाई।।
मै अरंभ यज्ञ तौ कीना। एहि वाति मन महि धरि लीना।।
एहि वात जो मो को होई। अपि दहि जानकी अगट पलोई।।
हे ऋषि चलु जानकी पहि जावहि। जानकी कौ जाइ दर्सनु पावहि।।
ऋष कह्यो आछा रघुराई। चलहो आस्रम महि सुप पाई।।
चले चले आस्रम महि आए। वालमीक ऋषि अति अधिकाए।।
जानकी लऊ कुसू को ल्यायो। श्री रघपति पहि आण पलायो।।
रघपति जानकी सुत दोऊ लीए। तांते गवनु अयोध्या कीए।।
आए चले अयोध्या माही। ग्रहि ग्रहि महि सभ मंगलि गाही।।
नग्र अयोध्या वहु सुपु पायो। अंग अग महि वहु हिर्पायो।।
जैसा भूषा भोजनु पावै। दु:ख मनि ते सभ ही विसरावै।।
जैसे वृक्षि मूल जलु जाए। फलु उपिजै नापा उमिडाए।।
जैसे दीपक मै तेलु पायो। अधिक जोत दीपक प्रगटायो।।
जैसे अविला द्रिग कौ पावै। अंग अग महि नाह समावै।।
जैसे निर्धनु धनि कौ पावै। दु:ख विलार महा सुप पावै।।
जैसे बाल्क दूधि पीवाए। महा अधिक सुष मन महि पावैं।।
जैसे संतु राम गुण गाए। मग्नि होइ सभ किछु विसराए।।
जैसे कमल रवि के प्रकासा। मुख षोल्ह पावति सुपु वासा।।
अैसे लोक अयोध्या होए। सकल बियोग मनो तिनू षोए।।
रघपति ग्रहि मांहि चले आए। साईदास मनि वहु सुप पाए।।२

श्री रघपति ने यज्ञ करायो। जो कछु वेद म्रिजाद बतायो।।
जानकी बावे अग वहाई। कनक पुतली धर्नि समाई।।
दसरथ सुत यज्ञ पूर्ण कीना। दक्षिणा वहु विपो कौ दीना।।
वशिष्ट प्रोहति यज्ञ करायो। वेद चतुरि मुष ते उचिरायो।।
जो कोई अश्व मेध यज्ञ करही। तिहि कुलहत्या सकली टरही।।
महा कठनि यज्ञ है मेरे भाई विनु सहाइ हरि कीओ न जाई

जो श्री रघपतु किर्पा धारे। तौ वह यज्ञ होइ तत्कारे॥
जज्ञ न होवै तो हरि जमु गावौ। साधि सनि सदा लपिटावौ॥
जो इकि साध को भोजनु देई। मानो पूर्ण यज्ञ करेई॥
साधि माहि हरि सदा वसेरा। साध जना का है प्रभु चेरा॥
एकु साध त्रैलोक समाना। श्री रघपति मुष एहि वपाना॥
यज्ञ पूर्ण कीनो रघुराई। सांईदास प्रभ सदा सहाई॥२३७

ब्रह्मा रघपति पाहे आयो। एकि दिना इहि वचनु सुनायो॥
हे प्रभ औधि संपूर्ण होई। अंतरि गति होउ विल्म न कोई॥
श्री रघपति ब्रह्मे प्रतु दीना। ब्रह्मा ने मनि महि धरि लीना॥
सहस्र वर्ष जबि औधि विहावहि।
तव हमि अंतरि ध्यानु लगावहि।
ब्रह्मा ने फिरि वाति चलाई।
रघपति कौ ने वाति सुनाई।
किहि प्रजोग इहि वाति वषानी।
कौनु वाति तुम मनि महि आनी।
औधि तुम्हारी पूर्ण होई।
किहि प्रजोग रहो विधि,कहो कोई।
श्री रघुपति फिरि आष सुणायो।
सुण हो ब्रह्मा हितु चितु लायो।
मोहि पिता दशरथ तांको नामा।
एहि विधि आषी पूर्ण रामा।
दश सहस्र औधि थी तांकी। सकली विधि मै आषो वांकी॥
नौ सहस्र वर्ष भोगाई। मोह व्योग तिहि प्रान तजाई॥
एकि सहस्र औधि तांकी रही। सोई ही मै मनि धरि लही॥
वाही भोग करि मै आवौ। अंतरि गति होइ वैकुंठि सिधावौ॥
ब्रह्मा इहि प्रतु सुण करि धायो। साईदास आस्रम महि आयो॥२३८

सहस्र वर्ष पूर्ण जवि होए। श्री रघपति इहि मन महि पोए॥
अंतरि ध्यान होइ वैकुंठि जावौ। सकल सुरौ को दर्सु दिषावौ॥
राजु दीयो प्रभ जी लऊ ताई। तुमि सुत राजु करो अधिकाई।

प्रजा कौ वहुता सुष देवौ। जोह जुल्मु किसे परि न करेवौ॥
इस ही भांत राजु करावो। पर्जा को वहु सुषु दिषलावौ॥
मै तुभि को सभ दीयो वताई। सुण हो सुत हमिरे सुषदाई॥
वार वारि मै तोहि समझावौ। राजनीत मै तोहि वतावौ॥
श्री कौलापति ने राजु दीआ। तिल्कु राज लऊ मस्तक लीआ॥
लऊ राजु कर्नि चितु लायो। सांईदास पर्जा सुप पायो॥२३९

श्री रघपति अत्र गति होण लागे।
राजुमालु सभहू तिन त्यागे।
वैकुठि वेग विवाण जुआए।
तिहि चढि भर्थु शत्रघन धाए।
जानकी धसि गई धर्नि के माही।
तव वंचरि मिलि आए अधिकाही।
श्री रघपति सौ तव विनती ठानी।
हमि वलि जावहि सारग पानी।
हमिरी गति प्रभ कौनु करावौ।
हमि कौ हमिरे सग चलावौ।
तव श्री रघुपति ताहि सुनायो।
मै तुमि कौ इहि वाति वतायो।
करि स्नानु वैकुठि सिधावौ।
चढो विवाणीं विलमु न लावौ।
एक वंचरि स्नानु करावै।
चढि विवाण वैकुठि सिधाए।
पवन पुत्र तव कह्यो सुणाए।
प्रभ जी मै बैकुंठि न जावौ।
वसुधा परि कूदनि सुष पावौ।
रघपति कह्यो भला ऐसे होई।
जो तै कहा होवै फुनि सोई।
लछमन सेस नाग होइ धायो।
अपुने आस्रम जा ठहिरायो।

श्री रघपति किवाड चढाए।
अंतरि गति होइ वैकुंठि सिधाए।
गण गंधर्व कीयो जै कारा।
कौलापति वैकुंठि सिधारा।
भक्ति हेति करि वपु हरि पायो। भक्ति हेति इहि कर्मु कमायो।।
गुर सांईदास क्रुपा जबि धारी। संत दया मनि लीउी वीचारी ।।२४

मन प्रवोधि ग्रथु वनायो। भाषा कीयो मनु ठहिरायो।।
महा समुद्र कोऊ पार न पाई। दधि को पारु लिष्यो न जाई।।
दधि को पारु अजहू कोऊ पावै। श्री राम ग्रंथ को हाथ न आवै।।
अति अथाहु हाथ को पावै। कहा बुद्धि जो हाथ ल्यावै।।
जो कहू चूक परी सुधि करहो। मो परि कोऊ दोसु न धरहो।।
श्री रामग्रथ भयो पूरायण। साधो सदा भजो नारायण।।
श्री राम नामु अघतार्न हारा। एहि वाति सुण वेद वीचारा।।
पूर्ण पुर्ष पुर्ष अविनासी। कौलापति पूर्ण अभ्रासी।
निरंकारु निर्वैरु गुसांई। सदा सदा षेलति वहु ताई।।
त्रैलोकि सभु ताहि पसारा। घटि घटि रचिना राचनिहारा।।
पूर्ण ब्रह्म ब्रह्म पुरात्तम। निर्मल जोति सदा जीवन आत्म।।
ताहि प्रकास तिमरु मिटि जाई।
दु:ख भाग सुष लागे आई।
सुषदायक प्रभ दु:ख निवार्ण।
महा विकटि सकटि को तार्ण।
निर्मल ज्योति सदा उजीआरा।
सत जना को वहुता प्यारा।
भूत प्रेत सकल डरि जाए।
श्री रामनाम को मुष उचिराए।
श्री रघपति को पूर्ण अवतारा।
साधो सुण लेहो चित धारा।
सदा सदा रघिपति जसु गावो
सांईदास पलु ना अलसावो

मैं मति हीन संत निस नाई।
त्याग सकल विधि पर्‍यो पाई।
संत चर्नि रजि जो मै पावौ।
उमिडि उमिडि के टहिल कमावौ।
सत कृपा जो मोहि करावहि।
अपुने दासौ सग रलावहि।
प्रभ जी इहि विधि दासु जचाए।
करुणा होइ तब ही इहि पाए।
सदा सदा हरि को जसु गावौ।
छिन मात्र मनि ना अलिसावौ।
प्राप्ति भक्ति टहिल की होवै।
औरु टहिल जाचों नहि कोवै।
सदा नाम मतिवारा होवा।
औरु वाति सकली प्रभ षोवा।
अनहदि शब्द सौ एहि मनु लागै।
तोहि क्रिपा सकला भमु भागै।
करौ निर्त वहु प्रीति लगाई।
सुण हो विनती जन रघुराई।
पायो सुषु जो किर्पा धारी।
श्री कौलापति प्रान अधारी।
जाचे सांईदास गुर ते दया।
अपुनी करुणा दास परि करया।
श्री रघुपति की जबि सर्नि आयो।
सांईदास को भर्मु चुकायो ॥२४२

इति श्री रामायण दश अवतार श्री मत्स कूर्म वैराह नृसिंह वावन पर्शुराम रामचंद्रि अवतारि चर्ति भाषा सांईदास कृति संपूर्ण समप्तम् शुभमस्तू ॥

श्री रामाय नमः

कृष्ण अवतार

।। ॐ ।। ओं स्वस्ति श्री सतिगुरि गणेश सरस्वत्यै श्री बाबा साईंदास जी सहाय नमः अथ दस्म स्कंद श्री भागवति श्री सुकदेव परिक्षति संवाद भाषा साईदास क्रित लिक्षते ।। छं ।।

द्याल पुर्ष पूर्ण अविनासी । सर्व निरतरि जोति प्रकासी ।।
सदा सदा मुक्ता मुक्तायनि । कौलापति पूर्न मुरायनी ।।
आत्म रूप सदा उजीआरा । आवध पुर्षा निर्लेपु धारा ।।
प्रान पिता दु:ख सुप ते न्यारा । सभि ते न्यारा सभहू पसारा ।।
चिन्हि चक्रित आवर्न गुसांई । रूप रेप तिन्ह तिहि नाही ।।
घटि घटि माहि तांको प्रकासा । सदा सदा संतन की आसा ।।
सकल भूति ते रहति न्यारा । जैसे रवि अति किर्नि उजारा ।।
जो देषै रवि ताहूं पाही । करि पलोलि महि आवै नाही ।।
ऐसो प्रभु सभि माहि समाया । घटि घटि माही ज्योति दिषाया ।।
भीरि परी जन को तहूं आया । इहि प्रजोग आइ वपु पाया ।।
क्रिष्न क्रिष्न साधो उचिरावौ । सांईदास ताहूं जसु गावौ ।।'

राजा परीक्षतु सुतु इहि वर्नी । नाती अर्ज्जन पांडव वर्नी ।।
एक समे वनि कहु वहु धाया । अक्षेरि वृत्ति कर्ने चितु लाया ।।
महा विकटि वनु अति अंध्यारा । छिनि रचिक ना पति उजारा ।।
ता महि जीइ जंत वहु रहे । केहरि मृग चीते वहु अहे ।।
परीक्षिति कौ तप्त आइ ग्रासा । उत्पत होई ताको प्यासा ।।
जलु जोहति जलु हाथ नि आवै । नृपु मीना जिउ मनु तडिफावै ।।
सिडी ऋषि तिहि वनि के माही । सहित सदा हरि ध्यानु लगाही ।।
ऋषि के आश्रम नृपु चलि आयो । एहि वाति तिन मनि ठहिरावो ।।
मै ओलीपतु अति वलिवाना । औरु न कोई मोहि समाना ।।
मो को ऋषु प्रनामु तो करई । मोहि आज्ञा मनि माही घरई ।।
सिङी ऋषि प्रभ ध्यानु लगाया । अपुने वपु की सुधि न पाया ।।
ताहि ध्यानु हरि सेती लागा । द्वितीयो भाउ वाहू को भागा ।।

राजे को प्रनामु न कीआ। नृप बहु क्रोधु मन महि लीआ ॥
मै पृथ्वी प्रतु नृपु हौ आयो। ऋषि ने मोहि प्रनामु न सुनायो ॥
अति क्रोधु कीनो मनि माही। ताहि क्रोधु किसे सह्यो न जाही ॥
तब हि मुख ते वचन सुनायो। अति क्रोध होइ करि उचिरायो ॥
मूआ उर्गु[1] ऋषि के गरि डार्‌यो। मोहि कहा मनि महि बीचार्‌यो ॥
जवि नृप ने मुख वचनु उचारा। सैना सर्पु ऋषि के उरि डारा ॥
नृप करि एहि नग्रि महि आए। सांईदास कहति समझाए ॥२

सिङी ऋषि सुतु अपगि हे नामा। सदा जपे हरि गोविंद रामा ॥
कदिमूल कार्ण वनि माही। गयो अपगु वनि बकि मंझाही ॥
कदि मूल वनि ते ले आया। ऋषि पाहे आइ करि ठहिराया ॥
नैन निहार देष्यो ऋषि ताई। मूआ उर्गु निर्ष्यो उरि माही ॥
तिहि देषति भै चक्रित होइ रह्या। मुष ते वचनु उचारे कह्या ॥
कौलापति पूर्ण अघनासी। मैं बिनती करहो तुमि पासी ॥
जिन मोहि पित उरि उर्गु है डारा।
बिन औगुण जिन इहि कर्मु धारा।
तोहि आज्ञा प्रभ जी मै पाई।
ताको स्रापु देवौ अधिकाई।
एहि तखकि तांकौ मारे। सप्त दिवसि पाछे प्रहारे।
अषग श्रापु नृप ताई दीना। मनि अ नरि इहि निश्चा कीना ॥
सिङी ऋषि तब नैन उघारे। अषग सकल ब्रितांतु वीचारे ॥
सिङी ऋषि कह्यो सुत बुरा कीनो।
ऐसे नृप को ते श्रापु दीनो।
महा वैष्नव धर्म को पालकु।
दयावानु बहु सदा द्यालकु।
अषग कह्यो सुण हो पिति मोरे। मै बिनती करो आगे तेरे ॥
जो यहु धर्नि[2] पख करे सहाई। इहि कर्मु कहु काहे कराई ॥

---

१ उर्गु <उरग=सांप। २ धर्नि—सभवतः यह शब्द "धर्मि" है। लिपिकार दोष है।

एहि वाति मोहि मनि ना आवै। धर्मि परव वहु नृपु ठहिरावै ।।
तोहि उरि उर्गु मूया किउ डारा। जो उनि धर्मि पक्ष मनि धारा ।।
सिङी ऋषि सुत कौ प्रतु दीना।
तै विधि अजहूं न मनि महि लीना।
सभ व्रितातु मै तोहि सुनावौ।
तुमिरे मन को भर्मु चुकावौ।
अखग कह्यो पिता देह वताई।
नृप इहि विधि किउ मनि ठहिराई।
सुण हो सुत तुमि श्रवण धारी
तुमि पहि आषो सकल वीचारी
कल्युग आइ प्रवेसु करायो।
इहि महाधर्मि धर्म दर आयो।
परीक्षति नृपु मंदरि परि आयो
धर्म्मि पुत्र त्रई पगि निर्षायो
तात्काल तहू पहि आयो। धर्म्मि पुत्र सौ वचनु सुनायो
कह्यो चतुरि पग कौ क्या भया। तीन पग परि जो ठांढा भया।
धर्म्मं पुत्र ताको प्रतु दीना। नृप सुण करि मन माहे लीना।
कलि युग ने प्रवेसु करायो। एकु पगु मेरा तिने उठायो।
नृप सुण करि मन महि अकुलाना। अति क्रोधु मनि माहे आना।
मोहि राज महि उनि इहि कीआ। अति क्रोधु मनि अंतरि लीआ।
धर्म्मि को वलु तिस कौ अधिकाई। कलि प्रवेसु कहा सके कराई।
चाहति कल्युग कौ वह मारा। तव कलियुग तिहि कहयो पुकारा।
नृप तुमि मोको काहे मारो। विनु औगुण कीए किउ प्रहारो
कोई ठवरि मोहि देहु वताई। ताहू ठौरि रहो मैं जाई।
जवि कलियुग इहि कह्यो पुकारे। तव नृप संचरु मन महि धारे
कौनि ठौरि मै इसि कौ देवौ। जहा रहे इहि वहु दुःख देवौ।
सोच विचार लीयो मनि माहे। कंचनि महि इसि को ठहिराहे।
कह्यो रहो तुमि कंचन मांही। औरि ठौरि तुमि देवौ नाही।
जवि कलयुग इहि विधि सुण पाई। मनि माहे एहि ठहिराई।
औरि ठौरि कहू मैं भरमावौ काहे को औरे मैं जावौ

कनक छत्र नृप के सरि केरा। तह प्रवेसु वहु मेरो डेरा॥
कीयो प्रवेसु तासि के माही। कल ताहूं महि रहित सदाही॥
जवि नृप छत्र कौ सिर धरही। मदलमत औरु कछु करही॥
कल्युग ने इहि कर्मु कमायो। इहि कर्मि कर्नें चितु लायो॥
नाह्न ति वहु कहा इहु करावै। इहि विधि कर्नें किउ चितु लावै॥
अखग सुनति ही भर्मु निवारा। सत्त सत्त मनि महि करि धारा॥
कह्यो सुणो पित सदा सहाई।
जो विधि लिषी सौ कौणु मिटाई।
जो कछु होवति होइ सो होई।
औरु न करि साकहि कछु कोई।
सिङ्गी ऋषु सुण करि विसमायो।
सांईदास सभु भाष सुणायो।

नृप परीक्षतु जबि ग्रहि महि आयो।
छत्रु कनक तिनि दूरि करायो।
प्रिथम मत्ति भई प्रकासा। मनि माहे कीनो विस्वासा।
मै कहा कर्मु कीयो वन माही। मत्ति हीन भई ताहि स्माही॥
ऋषि उर महि जो उर्गु डारयो। एहि कर्मु मैं जाणि करायो॥
लोक पठाइ दीए ऋषि पाही।
नृपति हि वहु विधि कह्यो सुनाई।
मोहि विनती ऋषि पहि जा कहौ।
मोहि औगुणु चित परि ना धरहौं।
तिहि समे हमिरी मति बौराई। तुम पूर्ण ऋष सदा सहाई॥
लोक चले आए ऋषि पाही। करि जोरे मुष आष सुनाही॥
सिङ्गी ऋषि मुष वचनु उचारा। सुण हो नृप मोह अति प्यारा॥
तुमि नृप कौ जाइ आष सुनावो। होवण होइ सो कब न मिटावौ॥
मै तुमि ताई स्रापु न दीना। इहि कार्णु हमिरे सुत कीना॥
लोक सुनति गत नृप पहि आए। सकल ब्रितांतु तिहि आष सुणाए॥
नृप प्रीछति जबि इहि सुण प्राया। महा अधिक मन महि विस्माया॥
तपसी कह्यो होवै फुनि सोई। ताहि स्रापु न मेटै कोई॥

ताहि श्रापु किउ अन्यथा जाई। मोहि ताई आई तखकु डसाई ।।
सोच विचार एही मन धारी। गच¹ मदर कीजे तत्कारी।।
नृप सैना कौ आज्ञा दीनी। ताहि सैन मनअंतर लीनी।।
गच मदिरि जल माहि बनाया। महा सरूपु वन्यो अधिकारा।।
मोरु कीट असगरु जो आवै। नाहि छपे सभु द्रिष्ट दिपावै।।
इहि प्रजोग गचि मदरु कीना। नृप प्रक्षति तहा वासा लीना।।
तिम मदरि निसवासर रहै। साईदास भै तिहि मन अहे।

सकला ऋषों इहि विधि सुरण पाई। प्रीछति श्रापु पायो बनि साई।
चलहो ताहि देप कै आवहि। ग्यान गोष्ट करि तिह पर्चावहि।
व्यास चले शुक सहित चलाए। नृप परीक्षति पाहे वहु आए।
सन्क सनदन अति अपारा। उौर सनातनि सन्त कुमारा।
इहि प्रजोग परीछति पहि आए। निग्म वाति मोह एह वताए।
अथु सुनो तुमि नृप वलवाना। नृप पहि तखक विधि सकल सुनाना।
तखकु डसे वहि नकि सिधावै। वहुरु वहुरु योनी महि आवै।
एहि विधि जारा सकल रिप आए। तिहि दर्सन दुःख सकल भगाए।
नृप परीक्षति ने सीसु निवायो। नमिस्कार कीनो उचिरायो।
कीयो अनुग्रहि मो परि आए। भलो कीयो प्रभु दर्सु दिपाए।
मो कौ श्रापु अखग ने दीआ। मोहि पतिष्टयो जो मै कीआ।
अपेरि व्रित कीयो मै वनि माही। सिङी ऋषु रहे सदा तहाही।
मोकौ तप्ति गहचो अति आई। त्रिषावत भयो सुधि बौराई।
तिहि समे मूढि मति होई। मना वीचार न आयो कोई।
ऋषि मो कौ प्रनामु न कीना। मै तिहि समै क्रोधु चित लीना।
मूया उर्गु तिहि उरि महि डारा। मूढ मति होइ गयो अधारा।
मै ऋष त्याग आयो ग्रहि माही। जो कछु विधि लिष्यो सो पाही।
सिङी ऋष सुत अखग है नामा। महा तपीसुरु गोविंद रामा।
कद मूल वनि से ले आया। इहि विधि तिन ने देपि सुझि पाया।
मूया उर्गु किसि इसि उरि डारा। मोहि पित ऋषु पूर्ण निरकारा।
ना औगुरण कछु इनि ने कीआ। विनु औगुरण कीए किन दुःख दीआ।

---

१. गच<कच काच

बिनती करि तिहि आपि सुनाओ। सुन हो प्रभ त्रिभवन के रायो ।।
जिन जन ने इहि कर्मु कमायो। तोहि आग्या तिहि स्रापु लगायो।।
एही तखकु डस मरि जाई। सप्त दिवसि पाछे मेरे भाई।।
ऐसी विधि कछु मोहि बतावो। साईदास सागर सुख सोई।।५।

श्री सुक तुमि को कथा सुनावै। जो सेस नागु सहस्र मुप उचिरावे ।।
पताल मध्य शेष नागु जो रहे। तहा वस्त उस्तति हरि कहै।।
ब्रह्मे के सुत सुणाने जावहि। सुण करि ब्रह्म पुरी ठहिरावहि ।।
पताल मांह ब्रह्मपुर भाई। तांको मार्गु सकल वताई।।
एकु करोडि जोजन मेरे भाई। तांको मार्गु देवहु वताई।।
नृप परीक्षति संसा ना करहो। सुण हो कथा फुनि श्रवन धरहो।।
सोई कथा सुकदेउ वषाने। सकल वार्ता शुकजी जाने।।
कथा सुनति वहुता सुषु पावहु। चढि विवाण बैकुंठि सिधावहु।।
ब्रह्मपुरी जो पताल के माही। नेमिपार सन्कादक ताही।।
सात पुरान कथा तहा होवै। सन्कादक सुण वहु दुःख खोवै।।
तव नृप परीछति ऐसौ भापा। करि जोरे विनती मुष आषा।।
सुण हो मोहि पूर्ण प्रभु वाता। मुख से कहो सुणो मुष वाना।।
एहि कथा तुमि मो पहि आपो। कृष्न चंद की उस्तित भाषो।।
वसुदेव ग्रहि काहे कौ आया। यादव वस किउ नामु रषाया।।
नंद के ग्रहि जाइ आस्रम लीना। मथुरा त्याग गोकल पगु दीना।।
तव शुकदेव जी ऐसे वोले। तूं भाषा तुझे आत्म डोले।।
केतक दिन निस भए वितीता। नृप तुमि कछु भोजनु नही कीता।।
भूष सकल सुर्ति वौराए। भूषे कछु सुन्यौ ना जाए।।
जवि इहि विधि सुकदेव वषानी। नृप परीक्षव तव विनती ठानी।।
हे सुकदेव कहा तुमि कह्यो। कौनु वाति मुप ते उचिरह्यो।।
एहि कथा अंमृति अति मीठा। ताहि प्रसाद अम्रतु द्रिग डीठा।।
जो कोई षाइ सो रहे अघाई। ताको भूष गहे नही आई।।
अति अनंदु मै वहु सुषु पायो। एहि कथा सुण आश्रमु आयो।।
भूष कहा हमिरे निकटि आवै। सांईदास नृप इहि उचिरावे।।६

तब सुकदेव कह्या नृप ताई। सुरग हो नृप समझो मन माही ।।
मथपुरी नग्र तहा नृपु रहे। उग्रसैनु यादव सुख ग्रहै ।।
ताहि ग्रहि कन्या देवकी नामा। ग्रतिभुति सुदर सुदर रामा ।।
ताहि सयुक्त वसुदेव सौ कीनी। कार्जु करि बहु ताको दीनी ।।
गज ग्रश्व रथ कचन बहु दीना। चीरी¹ ग्रधिक तांके सग कीना ।।
मानक मोती बहुते दीने। इहि विधि कर्के विदग्रा कीने ।।
एक ग्रस्वुरु भुज महि बलु भारी। ऋषि मुनि कौ बहुताहि दु:खारी ।।
सुर नर नाग बहुत दु:ख देवैं। जो कछु निर्षे सो षसि लेवैं ।।
वसुधा रूप गौ का कीना। ग्रति सूक्ष्म ताहू वपु लीना ।।
कपमानु ब्रह्मे पहि ग्राई। मुख ते वसुधा बाति चलाई ।।
एकु ग्रसरु हमि को दु.ख देवै। हमि परि बहुता जोरु करेवै ।।
मैं इसि भारु उठाइ न साकौ। तुमि पाहे प्रभ इहि विधि ग्राषो ।।
जवि ब्रह्मे इहि विधि सुरग पाई। मघवाकौ तिन लीओ बुलाई ।।
भूपति वर्नि तब ही बहु ग्राए। भए इकत्रि वहि मति ठहिराए ।।
चलहो क्षीर समुद्रि जावहि। तहा जाइ करि भजनु कमावहि ।।
ग्रश्वरु दु ख पृथ्वी बहु दीना। ऋषि मुनि जन को ग्राजजु कीना ।।
क्षीर समुद्रि के तटि सभ ग्राए। वेद पढिन कौ तिनि चितु लाए ।।
एही वेनती मुखो वषानी। श्री कौलापति सारंग पानी ।।
ग्रसुरौ ग्रति विरोधु प्रभ कीना। सकल प्रजा कौ इनि दु:ख दीना ।।
सध्या जापु कर्नि ना देवहि। जो कछु देषहि सो षसि लेवहि ।।
तुझै त्याग उौर किसि ग्राषहि। ग्रपुनी विर्था किस पहि भाषहि ।।
हमिरा बलु तुमि ही परि लागै। तुमि किर्पा करि सभ दु:ख भागै ।।
जवि विपिन इहि वचनु उचारा। गरग गंधर्व कीयो जै कारा ।।
होई तब ही ग्रकास ते बानी। धीर्जु धरो मोहि ग्राया जानी ।।
वसुदेव यादव के ग्रहि ग्रावौ। ताहि ग्रसुर कौ ग्राइ मिटावौ ।।
वसुधा का तब भारु उतारो। एकही एक ग्रसुरु गहि मारो ।।
ग्रपुने भक्ति क्रितार्थु करहौ। वैंकुठ माहे तिन कौ खरहौ ।।
ग्रवि तुमि ग्रपने ग्रहि महि जावौ। हिर्षमान होइ भजनु कमावौ ।।

---

१ चीरी चेरी दासी

बहूरौ चला ब्रह्मपुरि महि आया। मघवा इंद्रिपुरी सिधाया।।
भूपतु बर्न पताल को राजा। गयो पताल वजेआन बाजा।।
आपो अपुने पुरि महि आए। हिर्षमान हरि मगल गाए।।
आजु काल प्रगटे वनवारी। असुरौ मारे भारु उतारी।।
कौलापति पूर्न प्रभ सांई। सांईदास घटि घटि विर्था अतर जामी।
सभ ही आनदु मगल गावहि। श्री जदुनाथ वसुदेव ग्रहि आवहि।
असुरो मार करि घातु करेवै। पर्मि सुखी देवौ करि लेवै।।
सभना के मनि एहि वीचारा। प्रगटेगी हमि रापनि हारा।।
क्रिष्न भजो चिता न करहो। श्री राम नाम मति अतरि धरहो।।
विपों कीनी गोबिद आसा। सांईदास पूर्ण अभ्यासा।।७।।

एकु दुष्टु खलु तिहि बलु भारा। महा असुरु सुर दडन हारा।।
वहु षलु देवनि कौ दुःख देवै। जो देपै तिहि पहि हिरि लेवै।।
देवौ मन महि कीओ वीचारा। तासु कहा इसि होइ तत्कारा।।
सोई करहि जिउ इसि हति होई।
होइ नासु जिउ इसि करहि सोई।
सकल देव वहु भए इकि आई।
कीयो बिचारु इहि मति ठहिराई।
नैमिसार धिग ऋषु रहे।
अति मज्जन पूर्ण ऋषु अहे।
तां पहि जाइ अस्त्र तिस ल्यावहि।
ताहि अस्त्र ले बाण लगावहि।
तिस ही बाण करि षल कौ मारहि।
एहि बाति करि तिस हि प्रहारहि।
सभ देवहु इहि मति ठहिराइ।
क्षिण माहे ऋषि ढिग पहि आए।
ऋषि आगे तिन्है आष सुणायो।
एक खल ते हमि वहु दुःख पायो।
ताहि नासु होइ सुष पावहि।
नाहि ति महा कष्टु उपर्जावहि।

ऋषि कह्यो कहु कैसे होई। जो तुमि कहो करहि हमि सोई।।
सकलहि देवौ कह्यो पुकारा। सुण हो ऋषि तुमि प्रान अधारा।।
जो तुमि अस्थ देवौ हमि ताई। एहि क्रिपा करहो हमि पराई।।
तुमिरे अस्थ बाण मुख लावहि। वहो दुष्ट को नासु करावहि।।
धिग ऋषि तब वचन उचारे। मोहि जीउ आवे अर्थि तुमारे।।
इम्नि ते अवरु भला क्या कहीए।
इम्नि ते अवरु कहो क्या चहीए।
एकि वेननी तुमि परि करहो।
जीउ पिड तुमि आगे धरहो।
अजहू मैं तीर्थ ना कीए।
अति मलीन हो आत्म हीए।
केतकि दिन मोहि आज्ञा देवौ।
मम बिननी तुमि सुण करि लेवौ।
जावौ मैं तीर्थ करि आवौ।
अग्रि भाग तुमिरे ठहिरावौ।
तित मसे तुमि जानो सौ करहो।
साईदास इहि विधि मन धरहो।।८

तब ही देवो तिहि प्रतु दीना।
तुमिरो कहा हमि मनि धरि लीना।
ऋषि धिगि तुमि तीर्थ जावौ।
ढीलि परे जो तुमि फिरि आवौ।
तुम जो कहो करहि इकु कामा।
पूर्ण मुक्ति सदा हरि नामा।
सुर सकले जाइ जल कौ ल्यावहि।
भिन्न भिन्न तीर्थ जलु आवहि।
दिन थोरे महि कार्जु सरही।
वहु पलु दुष्टु कालु भवि करही।
तब फिरि धिग कह्यो तुमि जानौ।
जिन जानो तीर्थ जलु आनौ।

ले करिमंडलु सभ सुर धाए। तीर्थ जलु भिन्न भिन्न करि ल्याए।।
मसरवताल माही जलु डारा। भर्यो तालु जवि वहु उजीआरा।
धिगि ऋषि कीनो इस्नाना। सध्या जापु कीओ भगवाना।।
सकल देवौ सो तिन ने कहा। लेहो तुमि जो कछु तुम चाहा।।
जिउ जानौ सुरो करहो तैसे। आग्र तुमारे ठांढा ऐसे।।
सकल सुरो मन भयो विस्वासा। एकु ब्रह्म महां भग्तु प्रकासा।।
कैसे धिग ऋषि कौ हमि मारहि। कैसे हमि ब्रह्मण प्रहारहि।।
सकल देवौ इहि मनि आना। तव धिङ ऋषि वचनु वषाना।।
काम धैनि सुरि को सदि लेवो। जवि आवै तव आज्ञा देवो।।
तुचा मांसु वहु हिरे हमारा। अस्ति रहे होइ काजु तुम्हारा।।
अस्ति लेइ जाइ कार्जु करहो। वाए मुखि करि दानो मरहो।।
कामधैनि सुर आए वुलाई। कामधेनि क्षिए माहे आई।।
तुचा मांसु ऋषि को हिरि लीना। काम धैनि सुरि ने इहि कीना।।
अस्ति आणि लाए मुख वाना। तव वहु दुष्टु हन्यो वलिवाना।।
जवि कार्जु देवकी का कीना। वसुदेव नव मार्गु ग्रहि लीना।।
रथि की डोरि कसु करि लीने। चले जाति मग वाते कीने।।
तव ही वाणी भई अकासा। मूढि मनि कंस क्या हासा।।
कहा डोरि लीने रथ केरी। इहि देवकी वैरनि है तेरी।।
अष्टमु गर्भु जो इसि को होई। तुमिरो नासु करे फुनि सोई।।
काहे डोरि लीए रथि जावै। इहि विधि कौना हृदे वसावै।।
जवि ते कंस सुनी इहि वानी। डोरि त्याग दीई अभिमानी।।
देवकी केस कंस करि लीने। किरिमानी सूती करि कीने।।
चाहति दुष्टु देवकी मारे। केस गहे करि र्धनि पसारे।।
वसुदेव तासौ कह्यो सुणाई। सुणु नृप कंस महावलकाई।।
तू नृपु तुमिपे सरि नही कोई। जो तू करहि होवै फुनि सोई।।
तोहि पित दुहिता है मेरे भाई। छाडो इसि तुमि राम दुहाई।।
गोविंद अर्थि करि इसे न मारो। मोहि कह्यो मनि अतरि धारो।
महा क्रोधी कह्या न माने। वसुदेव को कह्यो हृदे न आने।।
वहुरि वार वसिदेउ पुकारे। सुण हो कंस भूपति अति भारे।।
इसि ताई मारौ तुमि नाही। मोहि कह्या लेवौ मन माही।।

मैं प्रतज्ञा तुमि सौ करहो। जो इसि ते होइ आगे धरहो ॥
जो तुमि भावै तिसे करावौ। मोहि कहा घटि महि ठहिरावौ ॥
जवि वसुदेव इहि वात वपानी। सांईदास नृप सुण करि मानी ॥९॥

वसुदेव देवकी को ग्रहि ले आया। ग्रहि आए मंगल वहु गाया ॥
जवि केतक दिन भए वितीता। जन्मु ताहि ग्रहि बालक लीता ॥
वसुदेव वाल्कु गोदि नहि लीआ। कंस दुष्ट ताई इनि दीआ ॥
कंस वाल्कु ले मारि चुकाया। रचक त्रासु न मनि महि आया ॥
भयो वितीत समा वहु ताही। वाल्कु मार्‍यो रोमु कराही ॥
इकि दिन नार्द ऋषि चलि आए। वैन हाथ ले शव्द सुनाए ॥
दुष्ट कंस कौ कह्यो सुनाई।
सुण हो नृप तुमि वलु अधिकाई।
सभ यादव शत्र है तेरे।
श्रवण धारि सुण हो वचि मेरे।
एहि विधि तुमि निश्चै करि जानौ।
इहि महि द्वितीया भाउ न आनौ।
देवकी अष्टम गर्भु जो आवै।
वाही तुमिरे प्राण हतावै।
जवि ऋपि ते नृप इहि सुण पाई।
मन अंतर एही ठहिराई।
सकल असुर तिन निकटि बुलाए।
मुपि ते वचनु उचार सुनाए।
जहा जहा जादवि कौ पावौ।
ताहि हनो निहि वंसु गवावौ।
एहि आग्या असुरौ कौ दीना।
साईदास नृप इहि मनि लीना ॥१०

इति श्री भगवते महापुराणे दस्म स्कंदहि श्री शुकदेव परीक्षति संवादे प्रिथमो ध्यायः ॥ १ ॥

कंस दुष्ट इहि मनि ठहिरायो। उग्रि सैन तै राजु हिरायो ॥
देवकी सहिति वसुदेव बुलायो। तिहि कौ वदी माहि डलायो ॥

तिहि पग महि वेरी ले डारी। अति क्रोधु चितवनि उनि धारी ॥
षष्ट गर्भ देवकी के मारे। करि विरोधु मनि महि प्रहारे ॥
सप्तम गर्भु देवकी जो आयो। शेषनाग तिहि नामु अपायो ॥
आपि अश्रमु देवकी गर्भ लीना। वलिभद्र इसि को नामु कीना ॥
प्रिथमे देवी को उपिजायो। तिहि आज्ञा करी त्रिभवन रायो ॥
रान कौ तुमि गोकल ले जावौ। रोहणी गर्भ मांहि ठहिरावो ॥
रोहणी भर्जा वसुदेव केरी। सुण हो देवी इहि विधि मेरी ॥
तू गर्भि जसमति लेहि निवासा। देवकी के गर्भि से लेहो वासा ॥
दुष्ट कंस विरोधु चलाया। सुरि ऋषि मुनि जन वहु दुःख पाया
इमि को दूरि करो तत्कारे। एही उपिजी हृदे हमारे ॥
देवी कौ प्रभ इहि वरु दीना। तोहि आसुन स्थिर मैं कीना ॥
प्रथम तोहि दुर्गा सभ भापहि। इहि प्रयोग मन अंतरि रापहि ॥
जो जो तेरी सेवा कर्सी। तोहि क्रिपा करि भौजलु तर्सी ॥
दुःख दर्दु ताहू ग्रहि नासा। जो कोई तेरी करे आसा ॥
द्वितीया चंडिका नामु तुम्हारा। त्रितीया अंबिका जगत उजारा ॥
चतुर बिजीआ तोहि नामु वपानहि। पंचम अवला वली पछानहि ॥
भवानी त्रिपुरसुंदरी माया। अष्टभुजी वहु रूपु दिषाया ॥
इहि वरु प्रभ ताहू कौ दीना। इहि करुणा प्रभ ता परि कीना ॥
देवी ने मन महि ठहिरायो। स्याम सुदरि जो कछु उचिरायो
वलिदेउ खडि रोहिणी गर्भि डारा। एहि कर्मु की तत्कारा ॥
आपि जसौदा गर्भि निवासा। लीओ जाइ वहु ज्योत प्रवासा ॥
श्री देवी ने इहि कर्मु कीआ। सांईदास सुप आश्रमु लीआ ॥ ११

कंस भर्जा सभ मिल आवहि। नितापर्ति देवकी देपि जावहि ॥
इकि दिन देवकी कौ निर्षिआई। दुष्ट कंस सो आपि सुणाई ॥
देवकी गर्भु छेद है कीआ। द्रिष्ट नि आवै तिहि कछु थीआ ॥
दुष्ट सुनति विधि हिर्षु जु कीना। अति अनंदु मंगल मन लीना ॥
केतक दिन जवि भए वितीता। इहि विधि होई निर्मल रीता ॥
कौलापति पूर्ण भगवाना। त्रिभवन नायक पदु निर्वाना ॥
मुर्लीधरि प्रभु यादव राइ। अकाल मूर्त्ति हरि संत सहाइ ॥

अजूनी स्वभू श्री त्रिजनाथ। सदा सदा सतन के साथ ॥
त्याग वैकुठि गर्भ दैवकी आए।
लीयो निवासु तहू ठहिराए।
तिहि समे अति प्रगटयो उजीआरा।
मानो रवि की किर्न पसारा।
देवकी रूपु सुदर अधिकाई।
कनक पुतरी देत दिषाई।
जो दुहिता तीय देषि जो जावे।
कंस दुष्ट सौ जाइ सुनावे।
इहि गर्भु देवकी वहु उजीआरा।
हुट्यो तिमरु रवि ज्योति पसारा।
कहा उस्तति तिह रूप वषाने।
हमि उस्तति कौ कहा न जाने।
कस वाति श्रवण सुरण पाई।
मन महि भौ उपज्यो अधिकाई।
नृप मन महि भौ भयो वसेरा।
सांईदास त्रिभवन कीयो डेरा ॥१२

दुष्टु देवकी देषरिण धाया। तात्काल देवकी पहि आया ॥
देषि रूपु महा विस्मायो। काल सरूपु तासि द्रिष्टायो ॥
रखिवारनि सौ कह्यो सुरणाई। सुरणहो रे तुमि मेरे भाई ॥
मोहहतनि कनिहारु गर्भ आयो। मोहि तन आगे जत्न करायो ॥
तुमि मोहि वीर सखा हो मेरे। मै वसो दूरि तुमि वसहो नेरे ॥
जाग्रति रहो नाहि तुमि सोवो। छिनु पलु तुमि गाफल ना होवो ॥
जो प्रथमे मोहि आरण सुनावै। वाल्कु जन्म्यो एहि वतावै ॥
मै ताहू कौ वहु कछु देवौ। सुप्रसन्न आतम करि लेवौ ॥
इहि विधि रषिवारनि कहि चाले। कपटु हृदे उपज्यो भौ नाले ॥
जवि ग्रहि माहे जाइ ठहिराया। मनि महि त्रासु अधिक उपिजाया
जो भोजनु करे तिहि महि देषै। मतु इसि महि आया होइ पेषै ॥
जौ करि सोवै शैनु न आवै। मतु इहि वस्तु शैन महि आवै ॥

ऐसा भर्मु भयो चित ताके। निसि दिन भर्म न चूके वांके ॥
विधि[1] मघावा[2] सौवर्नि जो आए। देवकी पहि आइ ठहिराए ॥
कर्नि लगे उस्तति हरि केरी। कहा कहे हमि गति मिति तेरी ॥
महाराज पूर्ण भगवाना। गहरि गभीर अरु चतुर सुजाना ॥
गर्भि जून तुमिरा क्या कामा। जन्म लीओ पूर्न प्रभ रामा ॥
भक्ति हेति करि कार्नु कीना। कंसु दुष्ट वहु दुःख सुर दीना ॥
इहि प्रजोग औतारु तै लीआ। भक्ति हेति करि इहि विधि कीआ ॥
उस्तति प्रभ की एहि विधि भाषी। वहुरो सुगर[3] शकरि इहि आषी ॥
उस्तति अनकि करी हरि केरी। साईदास सर्नी प्रभ तेरी ॥ १३

विधि अरु सुगर शभू देवा। प्रबोधनु कीनो है वसु देवा ॥
पारब्रह्म तुमिरे ग्रहि आया। सदा तुमारी होइ सहाया ॥
भक्ति वछल प्रभ असुर सिहार्नि। सुर सुख देवनि दुष्टनिवार्नि ॥
दुःख दर्दु सभ तुमिरे टारे। सकल बधना तुमि कटि डारे ॥
मन महि कछु न करो विस्वासा। तुमरी भक्ति पूर्न करे आसा ॥
वहुरो वहुरहो प्रभ आषि सुणायो। दीनानाथ त्रिभवन के राया ॥
क्षीर समुद्रि तुमि प्रतु कह्या। तहा वेद पढिने मै नि वह्या ॥
वसुदेव यादव के ग्रहि आवा। असुर सिहार्ण पलु ना लावा ॥
हमि अपुने हृदे एहि विधि आनी। कहा लपहि कैसे भई बानी ॥
तू प्रभु दीनानाथ गुसांई। तेरे चरति लखे ना जाई ॥
भक्ति उधार्नि तेरो नामा। हरि प्रान पके इकि कामा ॥
पारब्रह्म है रूपु तिहारा। घटि घटि माहे तोह पसारा ॥
ले तोय परि धर्नि टिकाई। तोहि गति कछु प्रभु लषी न जाई
माटी कैसे जल ठहिरावै।
तुमि किर्पा करि इहि वनि आवै।
तुमि विनु प्रभ इहि करे नही कोई।
जो तू करहि सोई प्रभ होई।

---

१. बिधि=ब्रह्मा।
२. मघवा=इन्द्र।
३. सुगुरु=बृहस्पति। कहीं कहीं "सुगुरु" इन्द्र के लिए आया है।

इहि विधि प्रभ की उस्तति कीनी।
उस्तिति प्रभ की मन धरि लीनी।
वहुरो सुगर शकर नृप वर्नी
ननिस्कार हरि पग सिरु धर्नी।
करि उस्तति वैंकुठ सिधाए।
ताहि उस्तति को पारु न पाए।
जो कोऊ गर्भि उस्तति सुरण लेवैं।
सांईदास तिहि वहु सुष देवैं।।

इति श्री भगवते महापुराणे दस्म स्कंदे श्री सुकदेव परीक्षत संवादे द्वितीयोध्याय: ।। २ ।।

मास भाद्रो प्रगटे वनवारी। थित अष्टमी कुंज विहारी।।
मध्य रैग प्रभ जोत दिपाई। श्री गुपाल सुंदर सुषदाई।।
रोहणी नक्षत्र जन्म हरि लीना। वसुदेव हर्षि हर्षि मन कीना।।
चतुर भुजा करि पीत पीनांवरु। कमल नैन अति वहुतु है सुंदरु।।
कौस्तक[1] मणि मस्तक परि लीने। मोर पष सिरि ऊपरि कीने।।
शक चक्र करि तांके माही। लक्ष्मी वांवे अंग है वाही।।
वसुदेव कह्यो क्या उस्तति भाषा। किहि रस्ना उस्तति हरि आषा।।
अकाल मूर्ति लोक सभ आषहि। पारब्रह्म तुमरा नामु भाषहि।।
मो पहि कही न गति मति जाई। इहि प्रभ पूर्न सर्व समाई।।
वहुरो प्रभ देवकी ढिग देषें। अति सरूप कछु अति भुज पेषै।।
वचन उचारु कह्यो वलि जावां। मै शंका प्रभ मनि महि ल्यावा।।
त्रिष्ट सकल मुषि एहि पुकारे। पारिब्रह्म त्रिभवन निरकारे।।
गर्भ योन देवकी आए। तहा आइ जन्मु जग पाए।।
मैं शंका एही मन आनो। किहि विधि सुत मैं तोहि वषानो।।
षष्ट वाल्क हमिरे नृप मारे। त्रासु होवत अति चित हमारे।।
पारब्रह्म निर्भो निरंकारा। दीनानाथ हरि अपर अपारा।।
देवकी सौ तव वचनु उचारी। सुण हो माता वात हमारी।।

---

1. शब्द कौस्तुभ होना चाहिए।
2. वावे > वामे।

सुण हो मात तुमि कछु चित आवै। पूर्व जन्म तुमि भक्ति कमावै ॥
वहुरो तुम वसुदेव को कह्या। स्रिष्ट करौ उतपत क्या वह्या ॥
तव तुमि भए भै चक्रि दोई। हमि से उतपति कैसे होई ॥
तव तीर्थ तटि तुमि दोई आए। सृष्ट तपस्या सौ चित लाए ॥
सीत काल सीतलु जलु लीना। तीन काल स्नानु जु कीना ॥
तप्ति काल ऐसे तुमि कीआ। चतुर्दिशा दावा तुमि दीआ ॥
तुमि सिरि परि रवि कर्ता घामा[१]। तुमि तपस्या करी पूर्ण रामा ॥
तव मै तुमि पहि प्रगटि षलोया। तुमिरे मनि अंतरि मै पोया ॥
तुमि इहि वचन उचारे ताही। तोहि सार्षा इकु बालक पाही ॥
वाही समा तुमि वात सम्हारो। अपुने घटि अतरि वीचारो ॥
वाही वचनु मै चित करि आया। तुमि मेरा बहु भजनु कमाया ॥
तुमि मनि महि कछु ना मुकचावौ। सांईदास निरभौ सुप पावौ ॥

कौलापति पूर्न अघनासी। गज अनंद कीओ काटी जिन फांसी
सो वसुदेव सो वचनु सुनावै। सुण हो पित किउ हृदा डुलावै ॥
मोकौ तुमि अवि लोह उठाई। गोकल वेग चलो तुमि धाई ॥
मोको तुमि गोकल पहुंचावो। नंदि महिरि ग्रहि जा ठहिरावो ॥
नदिर महिर ग्रहि दुहिता होई। पित तुमि बेग ल्यावो सोई ॥
वसुदेव सुकच रह्यो मन माही। मन महि अति विस्वासु कराही ॥
पचास द्वार कैसे ले जावा। गोकल महि किउ करि पहुचावा ॥
ताहि कपाट लगे अधिकाई। दो मरण के जंद्राला भाई ॥
कै सहस्र रषिवारे तां परि। रहित सदा जाग्रति हमि घरि परि
किति बिधि मै वाहिरि ले जावौ। षडि गोकल माहे पहुचावौ ॥
तव माधव दो भुज तन धारी। सत जना की प्राण अधारी ॥
इहि विधि मुकचि गोदि महि लीना। वसुदेव गवनु गोकल कौ की[illegible] ॥
जवि निर्प पूल्हे सभ द्वारा। सभ रषिवानि सुद्धि विसारा ॥
माया मोह वीच सभ सोए। मानो मृति भए प्राण षोए ॥
वसुदेव प्रभ ले बाहिर आए। कालिद्री तटि आई ठहिराए ॥
रवि दुहिता जलु है अधिकाई। तिहि उस्तति कछु कहा वताई।

---

१. घाम=धूप या पसीना।

वसुदेव तिहि निर्षित विस्माना। ताहि प्रवाहु देषि सुकचाना॥
सुकचि सुकचि मन वहु विस्मायो। कहा होइ जवि प्रभ इहि भायो॥
जो फिरि जावौ वाल्कु मारे। मो कौ सहित वाल्कु प्रहारे॥
जो जमुना पवौ तौ डुवि जावौ। कठनि वनी प्रभ कहा करावौ॥
वहुरो मनि माहे इहि धारा। डूवो इसि महि होइ निस्तारा[1]॥
इहि विधि कहि यमुना पगु दीआ। हृदे भरोसा हरि का कीआ॥
रवि दुहिता[2] चर्नी प्रभ लागी। सूक्ष्म भई अहंमत्ति त्यागी॥
वसुदेव तीर चढ्यो भौ त्यागा। गोविंद उस्तित कर्ने लागा॥
तुमि ही यमुना तीर चढायो। महा अधिक जलु तुमि लघायो॥
करि उस्तति गोकल महि आयो। नंदि महिर ग्रहि जाइ निर्षायो॥
सुन्न गयो सभ ही सुष माही। गोकल महि जाग्रति को नाही॥
जसुमति सुन्न गयो अधिकाई। कन्या जाई सुर्ति न पाई॥
वसुदेव कन्या कौ हिरि लीआ। ताहि ले उनि गोदि महि कीआ॥
कृष्नचंदु तिहि आगे डारा। जो सकल सृष्टि को राषनहारा॥
कन्या ले देवकी पहि आया। सकल द्वार कपाट चढाया॥
सकल कपाट दीए जद्राले। अजहू जाग्रति ना रषिवाले॥
वेडी ले अपुने पग डारी। कंन्या रुदनु कीयो ततकारी॥
कन्या अधिक रुदन जवि कीआ। सांईदास सभ ही सुण लीआ॥'

इति श्री भगवते महापुराणे दशम स्कंदे
श्री शुक परीक्षति संवादे तृतीयोध्यायः॥ ३॥

जवि कंन्या वहु रुदनु करोयो। सभ रषिवार्नि ले सुण पायो॥
तात्काल दुष्ट पहि आए। हाथ जोरि करि आष सुणाए॥
जन्मु लीयो गर्भु वाहिरि आयो। दुष्ट्ु सुनति विधि वहु हर्षायो॥
किर्मानी ले करि करि धाया। तातकाल देवकी पहि आया॥
देवकी निर्षति उठि षलोई। तांके वल न वसावै कोई॥

[1] यहां वसुदेव के हृदय का द्वंद्व दर्शनीय है। "डूबो इसि महि होइ निस्तारा" इन शब्दों में दुःखी हृदय के भावों का चरमोत्कर्ष है।

[2] रविदुहिता=यमुना।

वचनु कह्यो सुरा हो मेरे भाई। तूं नृपु तुमि कौ वलु अधिकाई ॥
षष्ट वाल्क तै मेरे मारे। मन विरोध करि तै हारे ॥
अवि इसि कंन्या को त्यागो। मोहि कहे नृप जी तुम लागो ॥
इसि के हाथ कहा कछु आवै। इसि कन्या वलु कहा वसावै ॥
मोकौ जगत न लाई कलंका। दूरि करो मनि ते इहि शका ॥
इहि दुहिता बालकु कोऊ नाही। जग्त तोहि वहु निंद कराही ॥
देवकी विनती वहु विधि कीनी। दुष्ट कस कन्या पसि लीनी ॥
तांकौ तजि वाहिरि ले आया। पाहन पर्यो जहा अधिकाया ॥
हृदे कीयो पाहन सौ मारौ। कन्या कौ इसि सग पछारौ ॥
कंन्या तिहि करि ते छुटिकायो। गगनि चढनि कौ तिन चितु लायो
रूप चडिका तव ही दिषारा। अष्ट भुजी तिन मूल सवारा ॥
उौरु सहस्र चक्र करि लीने। गगनि मंडल कौ तिन्न पगु दीने ॥
देवौ सकल कीयो जैकारा। जै जै देवा रूप तिहारा ॥
चढी गगनि तव ऐसे भाष्यो। दुष्ट कंस तै क्या चित राष्यो ॥
प्रगटि भयो जो तोहि प्रहारे। कंस दुष्ट मोकौ तू मारे ॥
सुर सभ त्याग स्वर्गि को आए। कुस्म माल देवी गल पाए ॥
ताहि सहित ले स्वर्ग सिधाए।
कंस भै चक्रित मनि विस्माए।

विस्म भयो मन इहि विधि ठानी।
सांईदास घटि महि एहि आनी ॥१७

दुष्टि वीचारु कीऊो मनि माही।
मै तो घातु कीयो अधिकाही।

वसुदेव देवकी को बंदी कीना।
मै पापी इन वहु दुःख दीना।

षष्ट बालक इनि के मैं मारे।
घाति कीए मै आपि विडारे।

अवि देवी मोहि एहि सुणायो।
ध्रिगु मोहि एहि विधि कर्मु कमायो।

वसुदेव देवकी को तजि दीश्रा।
तिसे समे मुक्ते वहि कीश्रा।
मम सरि श्रौरु पातकु नही होई।
इहि वसुधा परि दूजा कोई।
श्रपने जीय कार्ण इहि कीना।
षष्ट सुत वहिण के हनि लीना।
वहुरो देवकी सो य्युं कहयो।
मुखो पुकार्यो तिह कर गहयो।
एही श्रायु गन्तक ले श्राए।
किउ ठहिरावन जत्न कराए।
श्रवि तुमि जाश्रो हो ग्रहि माही।
होवण होइ सो कवन मिटाही।
वसुदेव देवकी कौ ले श्राए।
श्री गोपाल हृदे महि ठहिराए।
दुष्ट असुर सभ लीए बुलाई।
तांको कहित सुनो मेरे भाई।
श्रवि क्या कीजे इसि उपिचारा।
प्रगटि भयो मोहि मारन हारा।
सकल षलो नृप सौ इउं कह्यो।
कित कार्न भै चक्रित होइ रह्यो।
दसि दिन का जहा वालकु पावै।
वेग जाइ तिस को हनि श्रावै।
जो सभि बालक कों हमि मारहि।
तांकौ कौनु इनि माहि प्रहारहि।
एहि वाति हमि ते सुण लीजै।
कछु विसवासु न मनि महि कीजै।
नारायण इहि वही कहावै। मछ रूप जो श्राप बनावै॥
कछ रूप ताहूं वपु धारा। वैराह रूप होयो ततकारा॥
नृसिंह रूप ताहूं वपु पायो। वावनि को तिन भेषु बनायो॥
परशुराम वो ही जौ भयो। सहस्रार्जन कौ कौ जु हतयो॥

श्री रामचद्र सोई होइ आयो। नेम धर्म्म सौ वहु चितु लायो ।।
प्रथम तोह आज्ञा इहि करही। नेम धर्मु षंडनि चितु धरही ।।
होम यज्ञ किसे कर्नि न देवहु। जे कोई करे तिसे हति लेवहु ।।
कहु वर हो वलु कहा कहिज्जै। कहु भिक्षकु तिस भिक्षा दिज्जै ।।
वहु जाचन ग्रहि ग्रहि महि जाई। ता कहु वलु कहु कहा समाई ।।
जो मघवा हमि हाथु अडावै। जो वहु करे सोई छिन पावै ।।
प्रथमे सुरग कों प्रहारहि। पाछे से वालक कौ मारहि ।।
महादेउ कछु वाति न कहे। वहु अतीत निरभौ पद गहे ।।
जो कहू भांति वाति चलावहि। वेग मारि वहि जीउ गवावहि ।।
उौरु कोई हमि को ना सूझै। रण महि पडा होइ हमि झूझै ।।
इहि मति दुष्टौ सकल ठहिराया। सुण नृप कसु अधिक हर्षाया ।।
साधो श्रवण धार सुण लीजै। साईदास आलसु ना कीजै ।।

इति श्री भागवते दस्म स्कंदे महा पुराणे
श्री शुकदेव परीक्षित संवादे चतुर्थोध्याय ॥ ४ ॥

नदि महिर ग्रहि मगल गाए। निर्ष्यो प्रभु वहु ग्रानद पाए ।।
नदि महिर वालकु करि जाना। अपुना सुतु साचि करि माना ।।
पडति जोतकी अधिक तिन ग्राने। एकि भाति मुख वेद वषाने ।।
लग्न महूर्त ग्राछे देषे। कमल नैन सुंदर प्रभु पेषे ।।
सहस्र वीस सुरभि नदि वुलाई। निर्मल ब्राह्मण कौ दीनी साई ।।
जैसे वेद मित होइ मेरे भाई। नंदि महिर कीनी विधि साई ।।
सुरभीग्रनि श्रिग कचनु सभु धारे। पग रूपे के ताहि सवारे ।।
पृष्टि ताहि तांव्रन सौ जरी। नदि महिर ने इहि विधि करी ।।
तिल ताके संग वहु कछु दीने। नदि दान ऐसे तव कीने ।।
नदि महिरु चौकी परि वह्या। अति जडाउ कीनो मुप लह्या ।।
कचन चौंकी मणी जडाई। ताहि उस्तति कहु कहा वताई ।।
सभ जोषता गोपनि मिल ग्राई। अति सिगारु सुदर अधिकाई ।।
कनक मोती ऊपरि वहु पहराए। अति ग्रनंद होइ मगल गाए ।।
भाजन केसर सौ भरि ल्याई। नदि महिर ऊपरि छिटकाई ।।
जो कछु उनि ताई हे सरिग्रा। नंदि ग्रागे तिन ने षडि धरिग्रा ।।

ताल मृदग बजावनि हारे। भए इकत्रि नदि के द्वारे॥
अति अनद मंगल वहु गावहि। सुप्रसन्न मृदग बजावहि॥
नदि महिर तांकेहु वहु दीना। सुप्रसन्न तांकहु करि लीना॥
बंदी जन ने मगल गाए। नंदि बिदश्रा पाइ करि ग्रहि आए
ऐसे नदि सभु बिदिश्रा कीने। बदी जन कौ वहु कछु दीने॥
नदि महिर ने वहु सुपु पायो। सांईदास मन महि हिर्पायो॥१

नदि गोप सभ लीए बुलाई। तिन सों कह्यो सुनों मेरे भाई॥
हमि परि प्रभु ने किर्पा कीश्रा। बालकु हमिरे ताई दीश्रा॥
नृप को भी कछु हमि पहि आवै। आजु काल वहि हमहि बुलावै॥
चलहो हमि उसि पाहे जावहि। जो देवनि हो इसो देकरि आवहि
एही मत्तु सभि हूं ठहिराया। नदि महिर जो ताहि सुनाया॥
गोप सकल नदि ने सग लीए। मधुपुरी कों तिन ने पग दीए॥
गोप सहित पुर माहे आए। नृप पाहे सभ जा ठहिराए॥
नृप ताई प्रनामु सुनायो। जो आन्यो आगे ठहिरायो॥
करि प्रनामु नृप कौं तजि आए। एकु ग्रहि ले पुरि महि ठहिराए॥
वसुदेव नंदि महिर पहि आया। अग अग मिल आनंदु पाया॥
ताकी उस्तति कहा वपानो। मे तो उस्तिति कहा पछानो॥
वहुरो वसुदेव नदि महिर सुनाया। हिर्षमान होइ करि उचिराया॥
है कल्याण गोकलि के माही। त्रिण तौ अधिक भयौ गौवनि ताही
वलिभद्र कौ है कल्याना। इहि विधि वसुदेव वचनु वषाना
हमि तो वदि रहे अधिकाई। पूछ नि साकहि मेरे भाई॥
कंसु दुप्टु पातकि वहू भारी। तांकहु नासु करे गिरधारी॥
मतु उसि के मनि औरहि आवै। इहि प्रयोग मन महि सकुचावहि॥
वसुदेव प्रति नदि सौ रापहि। ऐसे वसुदेव नंदि सौ भाषहि॥
राम को पितु तू है मेरे भाई। भोजनु देइ कीओ अधिकाई॥
अवरि पहिरनि को तू देवहि। तू प्रतिपालकि ताहि करेवहि॥
राम कौ मैं द्रिग ना निर्षायो। ना उनि मोकों देष नि पायो॥
धन्न धन्न नदि मति तिहारी। कहा कहो मै वाति तिहारी॥
इहि विधि वसुदेव नंदि सुनायो। सांईदास मिलि तिहि सुखु पायो॥२०

नदि महिरु वसुदेव सुणावै । करि करि वचन तिसे परचावै ।।
हे वसुदेव सुनो मेरी वाता । मतु इहि मनि आनो मेरे भ्राता ।।
षष्ट वालक मेरे नृप मारे । करि विरोधु नृपु कस प्रहारे ।।
जो विधि लिष्यो कहो क्यु टरे । ताहि लेपु सीस को ना धरे ।।
वहि वालक एही आयु ल्याए । तुम को अपने सहिम दिपाए ।।
मतु तू कछु हृदे अतरि आने । गुर प्रसाद मेरो कह्यो माने ।।
वहुरो वसुदेव वचनु सुनायो । सुण हो नदि प्रीतम सुखदायो ।।
तैने कछु सुणउो मेरे भाई । मैं मैं तुम कौ कहौ सुणाई ।।
नदि महिर वसुदेव सौ भाषा ।
मैं कछु श्रवण सुनो नही आषा ।
जो कछु होइ सो मोहि सुणावौ ।
वेग विलम तुम मूल नि लावौ ।
कंसु दुष्टि इहि मतु ठहिरायो ।
वालकु मारण कौ चितु लायो ।
दुष्टि खलो कौ आज्ञा दीनी ।
पातक कसि इहि विधि है कीनी ।
दसि दिन को जहां वालकु पावो ।
तिसि ताई तुमि मारि चुकावौ ।
तातकालि तुमि गोकलि जावो ।
वालक की जाइ सोझी पावो ।
इहि अवस्था प्रभ किर्पा कीनी ।
हमिहि आनंदु पायो सुण लीनी ।
तातकालि अपुने ग्रहि जावो ।
सांईदास जाइ करि सुष पावो ।।२१

इति श्री भगवते महा पुराणे दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पंचमोध्यायः ।। ५ ।।

पूतना राकसी कस पठाई । ताहि व्रितांतु कहौ मेरे भाई ।।
गोकलि जाइ वालकु तुम देषौ । ताहि सिघारो द्रिष्टी पेषौ ।।
वकी उलिट करि इहि वपु कीनो । द्वादश वर्षि कन्या को लीनो ।।

अति पीतावरि अग उढाए। भूषन सभ अग कौ पहिराए ।।
ले करि कुसम केस महि डारे। करि सिगारु गोकल पग धारे ।।
जो देषे भै चकित होइ रहे। वहुरो सुति देहि ना लहे ।।
इहि विधि होई है मेरे भाई। सुण हो नंदि महिर सुषदाई ।।
वसुदेव नद सौ वहु समिझायो। नाना भाति करि ताहि वतायो ।।
वकी गई नदि महिर द्वारे। अति सुंदरि सुदरि वपु धारे ।।
कहियो जाइ मै कस पठाई। नदि के ग्रहि वहु भयो सवाई ।।
नदि महिर प्रभ वालकु दीना। नृप वहु हर्षि मानु मनि लीना ।।
इहि प्रयोग ग्रहि मोहि पठायो। देषौ मै वालकु जसमति मायो ।।
तुमि वालकु हमि कहु दिषलावो। कहा मवायो ठौर वतायो ।।
जसुमति निहि को ना दिषलावै। वकी ढीठ आपे चली जावै ।।
तातकाल प्रभ पाहे आई। जहा सोए प्रभु यादव राई ।।
लीयो उठाइ वकी गोदि माही। कुचु विषु लाइ दीयो मुप माही ।।
पारब्रह्म निर्भो निरकारा। सकल विस्व ताकौ विस्तारा ।।
छिन उपिजाए छिनि हि विडारे। तांकहु कहो कवनु कोई मारे ।।
सत हेत करि प्रभु वपु धारे। सांईदास सदा रपिवारे ।।

जवि वकी कुचु दीयो मुप माही। प्रभ अपुनी लील्हा कीनी ताही ।।
ऐसी रचना तहा रचाई। रगि कुचि षिची मुक्ति पठाई ।।
देहु ताहि दीघ होइ पर्यो।
कृपानिधान इहि रचना कर्यो।
सभ जोषता ग्रहि मिलि करि आई।
कहति जसौदा सौ समिझाई।
वालकु लेहि तहा तूं देषहि।
भई भै चकित क्या कछु पेषहि।
वडो कोई ग्रहु इहि परि आयो।
करुणानिधि प्रभ आप मिटायो।
एहि विधि कहि विप सकल वुलाए।
महा पडिति जो बेदि सुनाए।

सुरहौ वहु दानु कीई ततकारे।
पडिति कर्नि बेद वीचारे।
रोहणी इहि विधि सुण करि आई।
रजिसुर पग प्रभ मस्तक लाई।
पूतना राकसी देहु पसारा।
अति दीर्घ वपु जोजन धारा।
नदि महिरु ऋषिभानु जु आए।
गोप ताहि संग हैं अधिकाए।
वकी राकसी कौ निरपावो।
मग माहे इहि बाति चलायो।
इहि कोई असुरु कहा ईहा आयो।
गोकलि महि किति सौ प्रगटायो।
एहि विधि कहि अपुने ग्रहि आए।
गोप सकिल ग्रहि ग्रहि आप धाए।
जसुमति नदि पहि बाति वीचारी।
नदि महिर सभ ही मनि धारी।
दस सहस्र सुरि दान कराई। नंदि महिर जवि विधि सुण पाई॥
बहुरो मुप से बचनु उचार्यो। तवि रों काटि वकी कौ जार्यो॥
पूतना तविरो काटि जराई। अति सुगधि ताहु सो आई॥
जवि सुगंध गोपो ने पाई। नर नारी सभि सुधि विसिराई॥
मुषो उचारि बचनु वहु कहे। अति भै चक्कित मनि महि होइ रहे
कवहूं सुगंधि ऐसी ना आई। जो अवि इसि दावा प्रगटाई॥
वदी जन वहु देई असीसा। बालकु जीवे लाख वरीसा॥
कोई कहे मेरे पूर्ण गोविद। इसि कल्याण करे पर्मानिद॥
सकल अशीर्वादु प्रभ देवै। साईदास पूर्ण गुर सेवै॥२३

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे षष्टमोध्याय॥ ६॥

पातकि कंसि तव ही सुण पाई। वकी मार वैकुंठि सिधाई॥
त्रिणावर्तु तवि लीयो बुलाई। ताहि कह्यो पातकि समिझाई॥

तुम गोकलि माही पगि धारो। नदि के तात ताई जाइ मारो।
तुमि मोहि वीर काम मोहि करहो।
पलु छिनु रचिक विल्मु न करहो।
त्रिणावर्तु इहि सुण करि धाया
वेग माहि गोकलि महि आया
जसुमति काजु कर्ति ग्रहि माही।
कान्हिरि छाड्यो धर्नि पराई।
त्रिणावर्ति विधि एहि निहारी
मनि महि ताहि कीउो वीचारी
प्रथिमे गोकलि पौणु भुलायो।
महा अधिक कछु कह्यो न जायो।
प्रवल वहुतु भई अंधारा। कोई न सकै नैन पसारा।
महादुष्टु जीउ देवनि आया। पवन सहिति श्री कृष्ण उठावा।
कान्हरि कौ ले चड्यो अकासा। दुष्टमति ताहू ताहू प्रकासा।
जसुमति जोहति कान्हरि ताई। द्रिष्ट नि आवै रुदनु कराई।
जोहति फिर्ति कहूं ना पावै। मुष ते वचनु उचार सुनावै।
मैं वालकु को ईहा वहाया। जोहि थकी कहूं ठौर न पाया।
रुदनु कर्ति सिरु धर्नि पछारे। करि सौ अपुने करि पटिकारे।
गोप जोषता सभि सुण पाई। रुदनु कर्ति है जसुमति माई।
मूदे नैन कछु द्रिष्ट न आवै। सकल जोषता मन महि विस्मावै।
करि सौ करि सभि फिर्ति पछारहि। हाहा कर्के वचनु उचारहि।
पारब्रह्म सभि विर्था जाने। हमि तुमि पाहे कहा वषाने।
नदि महिर परि किर्पा धारी। विधि अवस्त हे वनिवारी।
बालकु दीआ किर्पा कीनी। इहि विधि किर्पा कर के लीनी।
अपुनी पेज राषो प्रभ पूर्न। दूरि कर्नि सतनि के विसूर्न।
गोप जोपता सभि इही पुकारा। कांन्हरि तवि इहि लील्हा धारा।
सकल व्रितांतु कहो मेरे भाई। सांईदास प्रभु सदा सहाई।

त्रिणावर्ति को उरि से लीना। कठ पकरि अति निहवलु कीना।
आए दुष्टि षलु धर्नि गिरायो। पाहिनि पर देहु ताहि हतायो।

थटिक रह्यो मार्त ततकारे। जबि ही कान्हरि खल धरि मारे।।
गोप भार्जा नैंन पसार। श्री कौलापति तिन हि निहारे।।
पिजरि खल के परि ठहिरायो। पेलति है वहु आनदु पायो।।
वेग आइ तिहि लीओ उठाई। अग आपुने लीओ लाई।।
सभि जोपता मिलि वचनु उचारे। दुष्टि असुर गौकल पगि धारे।।
कांन्हरि को ले गगिन चर्हाया। ऐसै प्रभु वहु चरति दिपायो।।
जो तेजि सेती ना रहो वलि वाना। रहे भै चक्रित अति हैरांना।।
गाडे सौ तिहि वलु न वसावै। जो वलु कर्के ताहि हलावे।।
भए भै चक्रित सभि नरि नारी। देपि चरित्र श्री गिरधारी।।
जसुमति एक दिनस सुप पायो। चढि प्रजकि परि गैनु करायो।।
स्याम सुदरि कौ आगे लीआ। अस्थनु प्रभु के मुप नहि दीआ।।
श्री कृष्ण चद ले पीवण लागा। चहुनि गिडा पीतरि अति वागा।।
कवहूं ले मुपि बाहरि डारे। कवहूं हिर्पति वदनु उघारे।।
जसुमति प्रभु का वदनु निहारा। जासु समे प्रभु आपि उघारा।।
सकल विश्व ताकौ द्रिष्ट आई। देप रूपु जसुमति विस्माई।।

द्रिग लीए मूद भै चक्रित हो रही।
तांकी विधि कछु जाइ नि कही।
इहि वालकु अति रूपु दिपावै।
नारायरण प्रतक्षि द्रिष्ट आवै।
हमिरे परि किर्पा इनि धारी।
प्रांन पुर्पि श्री कुज विहारी।
जसुमति देपि विस्मक चितु धारा।
साईदास प्रभ रूपु अपारा।।२५

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे सप्तमोध्यायः।। ७ ।।

नंदि महिर तब बचनु उचारा।
जिहि दिन मै मथुरा पगु धारा।
वसुदेव तब ही मोहि सुणायो।
प्रीति भाउ करि मोहि वतायो।

गोकलि महि अवतिन्नि ग्रहु होवहि।
तू अपुने ग्रहि जाग्रति सोवहि।
वसुदेव बचनु क्यु अन्यथा होई। जो सब्द कह्यो होइ सोई॥
चतुर मास को भयो मुरारी। अति सुदरि वहु रूप उजारी॥
तांकौ कोइ न सके उठाई। अति सरूप प्रगटि जदुराई॥
अवरि नौतनि ताहि उढाए। प्रभु कौ चक्रित अधिक सुहाए॥
वसुदेव गर्गि कौ कह्यो सुणाई। सुणु स्वामी जन सदा सहाई॥
गोकलि महि अपुने पगि धारो। मोहि कहा मनि माहि वीचारो॥
ऐसे प्रभ जौ कोई न जाने। दुष्टि लोक तुझे नाहि पछाने॥
ऊहा दोइ बालक है प्रभ मोरे। हे गुर जी वहु तुमरे चेरे॥
गर्गि सुनति गोकलि को धाया। नदि महिर के ग्रहि महि आया॥
नदि महिर दोऊ करि जोरे। क्रिपा करी आवो प्रभु मोरे॥
चरन पपार चर्नाम्रितु लीना। आदर भाउ नदि वहु कीना॥
हरे मउ बहुनाहि करायो। पूर्न प्रभु करि ताहि वहायो॥
गोविद हमि परि किर्पा कीने। गर्गि चर्नि हमिरे ग्रहि दीने॥
नदि महिर ग्रैसे प्रति बोले। बोजन ले सांति कौ भोले॥
बेनती कीनी गर्गि सुणाई। सुण हो प्रभ मै तो सनाँई॥
.हि दुइ बालक को धरु नामा।
ताहि प्रसाद पूर्ण पूर्ण होहि कामा।

गर्गि दीयो प्रति नदि के ताई।
सुन हो नंदि महिर मनु लाई।

जो मै इनि बालक धरो नामा। सुणे कंसु होवे बुरे कामा॥
देवकी के बालक करि जाने। अति क्रोधु तव मनि महि आने॥
देवकी हमि ते लए दुराए। नदि महिर ग्रहि जाइ छपाए॥
देवकी वसुदेव को दुख देवै। अति उपाधि नृपु कसु करेवै॥
नदि महिर वहुरो विधि ठानी। नाम धरो तुम ब्रह्म ज्ञानी॥
हमि इनि बालक कौ ले जावहि। वनि माहे इनि पडि जु छपावहि
गर्गि फेरि वहु बिप बुलाए। तांकौ भोजन अधिक षलाए॥
नारायण प्रभु नामु रषायो। उग्रसैन मुष ते उचिरायो॥
स्वेत वर्नि प्रभु वदनु दिषावे। कृष्ण नामु इहि विधि उचिरावे॥

उोरु नामु गोबिंद कहिज्जै। इहि अशीर वचनु चिरु जिज्जै ॥
वहुरो वलिभद्र को कह्या। इहि वाल्कु देवकी गर्भि अह्या ॥
ताहि त्याग रोहणी गर्भि आया। आइ जन्मु रोहणी गर्भि पाया ॥
सेस नाग को इहि अवतारा। सुरण हो नदि लेहु मनिधारा ॥
इसि को नामु मै भलो धरावौ। बलभद्र मनि करि उचिरावौ ॥
उौरु नामु इसि राम वपानो। वलिदेव नामु वहु पर्वानो ॥
गर्गि नामु वाल्का को रापा। सांईदास विधि सक्ली आपा ॥२६

गर्गि नामु प्रभि राप सिधायो। नदि महिर वहु सेव करायो ॥
सुरि वहु दीनी गर्गि के ताई। उौरु विपो को दीनी अधिकाई ॥
गर्गि नामु रखि करि धाया। मथिपुरी मार्गि चितु लाया ॥
एक वर्षि को कान्हरि होए। नदि महिर सभि ससे पोए ॥
राम मास दोइ है अधिकाई। कान्हरि ते सुरण हो मेरे भाई ॥
दोऊ वीर षेलति नदि द्वारे।
सोभति रवि ससि जोत पसारे।
चवक माहि करि पगि सो चालहि।
अति अनदि सोभति सीस वालहि।
वहुरो पगि सो फिर्ते फिरही।
अति कलोल मनि अतरि करही।
दस्न कढे तिन ने मुपि माही।
पांछ वर्पि पूर्न भए वाही।
वछरे सभि गोकलि के ले जावहि।
वनि माहे षडि ताहि चरावहि।
गोप तात वहुतिहि सग जाही।
फिर्ति फिर्ति सदा वनि माही।
गोपनि के ग्रहि सौ दोरा राही।
माषनि कौ षडिक पहि षलाही।
सभि जोषता गोपनि मिलि आई।
जसुमति को वहु कहिति सुनाई।

इहि दुइ बालकि हमहि दुष ताने।
तुमि पहि जसुमति कहा वपाने।
माषनु हमिरा षडति दुराई।
षड मर्कटि कौ वेग पलाई।
जसुमति ताहि कहा नही मानहि।
बात सकल मिथ्या करि जाने।
गोपि जोषता फिरि घरि आई।
साईदास प्रभ ताहि पिझाई।।२७

एक दिन गोप तात मिलि आए।
जसुमति कौ तिहि भाष सुनाए।
तोह पूत ने माटी पाई।
हमि वरजेहि हमि करे लराई।
जसुमति कान्हरि पूछनु कीना।
कर से पकरि अग महि लीना।
साचु कहो तुमि माटी पाई।
हमि पहि तोहि सषा कह्यो आई।
प्रभु गोप तात कौ नैन निहारे।
सभि भागे जवि निर्प मुरारे।
मुकरि पर्‍यो माटी नही षाई।
इहि वालकि मिथ्या कह्यो आई।
जो तुम हृदे भरोसा ना आवै।
मुषु देषो मोहि क्यु विस्मावै।
मुषारविंद जसु मति जबि देषहि।
धर्नि गगनि सभु मुष महि पेषहि।
सप्त समुद्रि है मुष ही माही।
सप्त दीप फुनि ताहि मझाही।
नौखंड प्रथवी ताहि समाई। निर्षि वदनु जसुमति विस्माई।।
तव मुष से इहि वचनु उचारा। मैं इसि कौ सुत जानि कै मारा।।
मनि निश्चै करि मैं सुतु जाना। भूल परी मनु कूडि लुभाना।।

इहि तो पारब्रह्म निरंकारा। सकल स्रिष्ट को साजन हारा ॥
इहि सुत कहो कवन को होई। नरकार निरवैरु है सोई ॥
इसि की गति कौ मैं कहा जानो। इसि की महिमा कहा पछाने ॥
त्रैलोक सभ इसु विस्थारा। त्रिभवन राया जगित उजारा ॥
जवि जसुमति इह ज्ञान वीचारा। कांन्हरि तव ही माया धारी ॥
ध्यान सुरति तांकी भुलि डारी। विक्षा सुति भई ततकारी ॥
पूत पूत वहि कर्ने लागी।
इहि कार्णु कान्हरि ने कीआ। सति हेति करि जगि वपु लीआ ॥
साधो जपहो नामु निधाना। सांईदास पूर्न भगवाना ॥२८

इति श्री भागवते महापुराणे दस्मस्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अष्टमोध्यायः ॥ ८ ॥

स्याम सुदर रामु संग लीए। वनि माहे जावनि पगि दीए ॥
वछे ले बनि को वहु धाए। मापनु गोपनि ग्रहि पडहि दुराए ॥
माषनु षडि मरिकटि कौ देवहि। मर्कटि माषन सहित अघेवहि ॥
गोप जोषता अति उकिलाई। वेग माहि जसु मति पहि आई ॥
नदि जोपतासों तित ने आपा। हमि माषनि चोरे कान्हर राषा ॥
मापनु क्षीर सहिति ले जावै। षडि करि मर्कटि हाथ षलावै ॥
त्रैलोक नाथ तवि आए। मय्या षुध्या अति संताए ॥
हमि को अस्थनु देहि ले पीवहि। तांते आनद मनि महि थीवहि ॥
नदि जोपता गोद महि लीना। अस्थनु ले तांके मुषि दीना ॥
दधि को वेग विलोवनि लागी। उौरु वाति सकली तवि त्यागी ॥
मापनु ले भाजन महि डारे। श्री कृष्णचंदु तिहि उोरि निहारे ॥
क्षीर कढ़िहति चूल्हनि परि भाई।
अग्नि अधिक भई उभर्‌यो जाई।
श्री कृष्णचदि को धनि वहाई।
नंदि जोषता उठि करि धाई।
निकटि क्षीर के जाइ षलोई।
क्षीर कौ सीति कर्ति है सोई।

श्री कौलापति ने क्या कीआ।
दधि मटु गेरि धर्नि परि दीआ।
मापनु भाजन सौ ले भागा।
अहि कौ त्याग वाहिरि चितु लागा।
जसुमति जवि ग्रहि अंतर आई।
निष ताहि अति मनि विस्माई।
किन फोर्‍यो है मटु दधि केरा।
किन मापनु षड्यो है मेरा।
जसुमति लकिरी कर महि लीनी।
अति भारी लकरी करि कीनी।
पाछे स्याम सुदरि के दौरी। दौर दौरि के होई हौरी॥
श्री कृष्णचदि को पकिर न साका। ठाढी भई मुप ते कछु आषा॥
दीनानाथ अपार गुसाई। कौलापति सुदरि अधिकाई॥
तांकौ कौणु पकरि कोई लेवै। जांकौ सकल जगतु मुनि सेवै॥
नंदि जोषता तहू ठांढी भई। थकित रही कछु जाइ न कही॥
श्री कौलापति मनि ठहिरायो। माईदास जनिनी दु:ख पायो॥२६

ठांढा भया जसुमति गहि लीआ। मुप अपुने ते इहि प्रतु दीआ॥
काहे मटु दधि को फोरि डारा। दधि मापनु तै कहा विडारा॥
गोप जोषता सकल वुलाई।
तांसौ कह्यो सुणो मेरी वाई।
नितापर्ति तुमि मोहि सच्चु आषो।
जो तुमि कहो सोई सच्चु भाषो।
दामिनि आनो इसि वधि डारो।
पृथिमे वाधि करि तवि फिरि मारो।
दधि माषनु मोहि धर्नि गिरायो।
एहि कर्मु पुत्रि कान्ह कमायो।
जवि जसुमति इहि वात वषानी।
सकल जोषता मनि महि ठहिरानी।
तां कहु कान्हरि वहु दुख दीआ।
तिहि ग्रहि माषनु दधि हरि लीआ।

इकि इकि दौरि गई ग्रहि माही।
अति अनंदु उपज्यो मनि माही।
दामिनि हाथ कीई सभ आई।
नदि जोपता मनि महि मुसकाई।
जसुमति प्रभु वधिन चितु दीआ।
गांठि न परे जतनु वहु कीआ।
अजहू दामिनि उह घटि जावहि।
जतन करे तौ गाठि न पावहि।
कमल नैन तवि इहि हृदै धार्यो।
जसुमति थक्ति भई वलु हार्यो।
मोको कहा वाधि हो माई।
इहि विधि गोविंदि मनि ठहिराई।
मुष अपुने स्युं कह्यो सुणाई।
मोको वाधो मेरी माई।
जवि प्रभि एहि विधि मुषो वषानी।
जसुमति तवि ते हृदे पछानी।
प्रभ को ऊषलि सहिति वंधायो।
पाछे सो इहि वचनु सुनायो।
मोह भाजनु तै काहि विडार्यो।
दधि माषनु वसुधा परि डार्यो।
श्री कृष्णचद तव कह्यो सुणाई।
मैं नि विडार्यो मेरी माई।
जसुमति वाधि गई ग्रहि माहे।
साईदास प्रभु चरित्र कहाहे॥३०

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे नवमोध्यायः॥ ९॥

श्री कौलापति के मनि आयो। करो उधारु प्रगटि दिषलायो॥
जुमला अर्ज्जन के तनि केरा। ताहि श्राप को करो नवेरा॥
पाछे नदि महिर ग्रहि वाही दीयो स्रापु नार्दि ऋषि ताही

नृप परीक्षति शुकदेव सुनायो। मोहि ब्रतांतु इहि सकल बतायो ।।
कौन स्राप करि जंगम होए। जडिताई महि क्यु वहि सोए।।
नार्दि स्रापु नाहि क्यु दीना। जडि देहा काहे कौ कीना ।।
राजे प्रत सुपदेव सुणायो। भलो प्रश्नु नृप आए चलायो ।।
एक दिनि ऋषि सुत मद को पीआ।
जोपता अपुनी तिहि सग लीआ।
गगा माहि स्नानु कराही।
नगिन होइ इहि कर्मु कराही।
नार्दि ऋषि तव ही चलि आए।
अति किन्नरि हरि जसु गाए।
सकल जोपता तजि जलु आई।
गंगा तटि परि बहु ठहिराई।
सुकचि रही कछु कह्यो न जाई।
तिहि निर्लज्ज मनि काइ न आई।
इहि प्रजोग नारद स्रापु दीआ।
अति क्रोधु मनि अतरि कीआ।
तुमि दोनो गोकल के माही।
जगमि देहि धरो तुमि जाही।
जिहि समे कृष्ण जी लए अवितारा।
तिस समे तुमरा करे उधारा।
इहि प्रजोग जंगम बपु धर्‌यो।
नार्दि वचनु तिहि मनि महि कर्‌यो।
निपि परीक्षति को भ्रमु हिरायो।
सांईदास जसु हरि का गायो ।।३१

पारब्रह्म चिति महि ठहिरायो। जुमला अर्जन जड देह पायो ।।
वाको अवि कृतार्थु करहो। अपुने भक्ति वचन मनि धरहो ।।
तातकाल विरछो परि आया। तिन दोई बीच आइ ठहिराया ।।
ऊखलु वांके वीच अडायो। मूल से दोनो ब्रिक्ष गिरायो ।।
नारद ऋषि एही वचु कीआ जिह समे स्रापु इनि ताई दीआ

ऊपलु जिहि समे तुमि को लागै। इहि स्रापु तुमिरा तवि भागै।।
जवि प्रभि दोऊ व्रिक्ष गिराए। दो वालकि सुदरि निकसि आए।।
उस्तति गोविद जी की भाषहि। देइ प्रदक्षिरणा जय जय आषहि।।
नृप परीक्षति ऋप वचनु सुनायो। सुक जी एक सन्सरु मनि आयो।।
नंदि महिर कौनु तपु करायो।
जिहि ग्रहि श्री क्रष्णचद जी आयो।
करि क्रीडा नदि कौ सुषु दीना। महा सुषी नदि कौ करि लीना।
एहि वीचारु प्रभ मोहि वतावो। करि करुरणा इहि सन्सरु गवावो।।
सुकदेव कह्यो भले उचिरायो। बहु नीको तै प्रष्णु चलायो।।
सुरण हो नृप धरहो तुमि काना। तुमि पहि सकली वाति वषाना।।
नदि विपदहि अष्ट ऋषि पाही। महाअनदु ताकौ दुःख नाही।।
वरहौ तातु नदि कौ भाई। ब्रह्मा ताहि कह्यो समिझाई।।
जावो वरहो तुमि वहु माही। वहु लोक जाइ अधिक सुषु पाही।।
वरहो कह्यो विधि कौ समिझाई। सुरण हो ब्रह्म पूर्ण मेरे भाई।।
मै वहु लोक माहे ना जावौ। कैसे वहु माहे ठहिरावौ।।
बहुरि कह्यो विधि तुमि वहु जावो। मेरो कह्यो मनि महि ठहिरावो।।
वरहो कह्यो वहुते विधि ताई। मोहि विनती सुरण हो मेरे भाई।।
जौ तुमि एहि करो तवि जावौ। वहु लोक महि जाइ ठहिरावौ।।
ब्रह्म कह्यो जो तुमि कोई भाई। मुख हो वरहो करो मैं साई।।
तवि ही वरहो कह्यो पुकारे। मैं वलि जावो प्राण अधारे।।
क्रिष्ण सदा मोहि द्रिष्ट दिषाई। मै तवि वहु विच जावौ भाई।।
विधि कह्यो ऐसे ही होई। जो तै वरहो कह्यो हो सोई।।
तव वरहो जन्मु गोकलि विच पायो। नंदि महिरु ईहा नामु रषायो।।
ब्रह्म वच पूर्ण कीनि ताई। जन्म लीयो आइ त्रिभुवन सांई।।
विधि वचु करि नदि कौ सुषु दीना। इहि कारण कौलापति कीना।।
सुत करो उस्तति गिरिधाई। ताहि उधारु कीयो जदुराई।।
जो इहि जनमु हिति करि सुरण लेवै। मांईदास प्रभ वहु सुषु देवै।।३

इतिश्री भगवते महापुराणे दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षत संवादे दशमोध्यायः॥ १०॥

प्रभ जदि दोऊ ब्रिक्ष गिराए। तवि प्रटिकारु उठ्यो अधिकाए ॥
भयो अचर्जु गोकलि के माही। नरि जोपिता मिलि आई ताही ॥
गोपनि सुन प्रभ पाहि जु खरे। सकल वीर तिय हू ने करे ॥
नंदि महिर सुत इहि कर्मु कीना। दोई ब्रिक्ष गिराइ करि दीना ॥
सकले लोक रहे बिसमाई। भए भै चक्रित विधि निर्पाई ॥
तवि मुप ते उन्हा बचनु उचारे। सो गुर क्रिपा ते सकल बीचारे ॥
गर्गि प्रोहिति ने य्यु भाषा। नारायण इसि कौ नाउ राषा ॥
ताहि कह्यो कहु कौणु मिटावै। ताहि कह्यो मेट्या नही जावै ॥
तव ही नंदि महिर जी आए। बाधा हरि देष्यो मुसकाए ॥
नंदि महिर तब ही बचु कीआ। किस बालकि बाधा दुख दीआ ।
सकल गोप नंदि कह्यो सुनाई। तोहि जोपिता बांधा मेरे भाई ॥
नंदि महिर प्रभि कौ उरि लीना। लेकरि गोदि गवनु ग्रहि कीना ॥
नंदि महि लेकरि ग्रहि आया। जसु मति तांकी ओरि तकाया ॥
तू इसि कौ क्यु पोल्ह ल्याया। इनि कांन्हरि इहि कर्मु कमाया ॥
दधि भाजन इनि ने फोरि डारा। कान्हर ने इहि कर्मु सवारा ॥
माषनु पडि मर्कटि पवाया। इनि बालकि इहि कर्मु कमाया ॥
स्यामसुदरिजसुमतिओरिदेषहि। मूंदे नैन कर सौ अरु पेषहि ॥
नंदि महिर सौ जसुमति लीआ। धूरि झारि अस्थनु मुष दीआ ॥
नंदि गोप सभि लीए बुलाई। ताहि कह्यो सुण हो मेरे भाई ॥
गोकलि महि अपतिओ होई। हमि बालक दुःख देवै सोई ॥
अबि तकि गोबिंद कीई कल्याना। भए बितीत दिनसि मै जाना ॥
आवो अवि हमि गोकलि त्यागहि। औरु नग्रि के मार्गि लागहि ॥
जब हि नंदि इहि बाति वपानी। सकल गोप मनि महि ठहिरानी ॥
ईहा त्याग बिंद्रावनि जावहि। ऊहां जाइ अधिक सुप पावहि ॥
सकल गोप मनि इहि ठहिरायो। साईंदास विधि भली बतायो ॥३

गोप सकल मनि मति ठहिरायो। बिंद्रावनि जावनि चितु लायो ॥
गोकलि तजि बिंद्रावनि धाए। सुरिह बछे तिन संग चलाए ॥
सुत दारा बंधू पित माता। नंदि महिरु ब्रिषभानु सुहाता ॥
सभि बिंद्रावनि माहे आए। आइ तहां ग्रहि सभहू बनाए ॥

श्री कौलापति त्रिभवनि राया। नंदि महिर सौ वचनु सुणाया॥
जो आज्ञा होइ वछे चरावहि। आज्ञा विनु वनि मांभि न जावहि
नंदि महिरि तवि तिन प्रतु दीआ। स्याम सुंदर को गोदी लीआ॥
पडिति वहु किन्नरिजु वुलावौ। तांते भला महूर्त्त पावौ॥
तवि आज्ञा तुमि ताई देवौ। जो तू कहे सोई करि लेवौ॥
नंदि महिर वेदपाठ बुलाए। भले महूर्ति तिनहि वनाए॥
गोपनि के सुत मकल वुलाए। तिन सौ प्रभ ने कह्यो सुणाए॥
वछिरे ले चलिहो वनि माही। वनि महि षडि करि वछे चराहो॥
गो तात सभि वछे ल्याए। एकि ठौर कर्के वनि धाए॥
करि सों करि सभि ही नें जोरे। कति क्रीडा वनि को सभि दौरे॥
तवि कह्यो कांन्हरि मुर्ली वाजै। अनकि तरगि अवि मुर्ली गाजै॥
मुर्ली अनकि तरग वजाए। जो श्रवणु सुने सभ सुधि विसराए
श्री कृष्णचंदि तवि द्रिष्ट निहारी। वछासुरु वपु वछा आयो धारी॥
आइ गउ सुति महि उर्भायो। श्री कौलापति तिन निर्पायो॥
वलिदेव सौ तव कह्यो पुकारी। सुण हो राम वीर हितकारी॥
आवौ तुमि इकु चरित्र दिपारौ। तुमि आगे इकि वाति विचारौ॥
इहि जो वछा तुमि द्रिष्ट आवै। इसि को रूपु तू भी कछु पावै॥
इसि कौ पातक कस पठायो। वछासुर वछे रूप वनायो॥
जवि मैं तुमि कौ कहौ पुकारे। सुण वलिदेव हो वीर हमारे॥
काहि वारि वछिडो ले आवै। लिहि समे तूं मोहि एह सुनावै॥
अवि तुमिरी प्रभि वारी आई। उौर कौन मै देउ वताई॥
वलिदेव एही वचनु सुनावो। सांईदास उौर ना उचिरावौ॥ ३४

कमलि नैन त्रिभवन के राया।
वलिदेव सौ तिन आष सुणाया।
वछे गए दूर कौनु हेरि ल्यावै।
वछुरे हेरनि कौ कहु को जावै।
जासि वारी होइ सोई जावै।
वछिर्‌यो कौ जाइ करि फिरि ल्यावै।

बलिदेव तव ही वचन उचारे।
तुमि सभि विधि को जानण हारे।
तुमि वारि तुमि ही हेरि ल्यावो।
वछुरे हेर्नि को तुमि जावौ।
श्री कृष्णचदि सुरग करि उठि धाए।
वछरे चर्ति त्रिण तहूं ही आए।
श्री गोपाल वछुरे हेर ल्याया।
लीलहा कति तवि चर्तु दिपाया।
वछासुर असुर ताई प्रभ मारा।
दो पगि ले करि धर्नि पछारा।
पकरि ताहि व्रिक्ष सौ पटि कायो।
श्री गोपाल ने दुष्टु हतायो।
जवि प्रभि व्रिक्ष सौ तिहि पटिकायो।
व्रिक्ष गिर्यो उनि व्रिक्ष परि आयो।
ऐसे वनु सभ धर्नि गिरायो। श्री गोपाल इहि रचनु रचायो॥
इहि लीलहा गोविंद जवि धारी। अमिरो सकल कीयो जयकारी॥
भला कीयो प्रभि दुष्टु हनायो। करुणा करके मार चुकायो॥
असुरो आइ के कंस सुनायो। वछासुरु नदि ताति हतायो॥
वकासुर कौ दुष्टि सदाया। दुष्ट सकिल विधि कहि समिझाया
वकि रूप वकासुरि कीना। जमना के तटि तिन पगि दीना॥
श्री गुपाल इसि लीओ पछानी।
इसि के मनि की विधि सभि जानी।
श्री कृष्णचंदि तवि कह्यो पुकारे।
गोप तात सुणो सषा हमारे।
इसि वगि के तुमि निकटि नि जावो।
जो मैं कहौ मो मनि ठहिरावो।
इहि उपाधि है मेरे भाई।
मै तुमि कौ विधि दीई वताई।
इहि विधि हरि सभि वाल सुनावै।
वनि महि ठाढ वछे चरावै

गोप तात कछु हृदे न आना।
जो कौलापति मुपो वपाना।
चलति चलति वक के निकटि आए।
वग सकल ले उदरि कराए।
श्री ब्रिजराज तवि कीओ वीचारा।
किहि विधि इनि को होइ छुटिकारा।
इन्हि पित मात कहा जाइ आपो।
कहा वचन मै तिन सौ भाषो।
कमलिनैन भक्तिनि मुषदायक।
गुणनिधान त्रिभवनि को नायक।
वगि के मुप माहे चलि गयो।
मुषि के माझि जाइ ठाढा भयो।
ना आगै ना पाछे जाई।
लीओ स्वास मूंद वगि जदराई।
वगि को स्वासु न निकिसनि देवै।
ताकौ जीउ आपि हरि लेवै।
स्वास न निकसै वहु दुख पाए।
म्रिति लोक वकु वेग सिधाए।
चुंचि पकिरि तिहि दो करि डारे।
तवि वालक सौ कह्यो सुनाई।
इहि न कहो तुमि नंदि पहि जाई।
औरि दिन वालक वेग घरि आवहि।
वहुरो जावहि गौ चरावहि।
आजु जौ एहि भयो वनि माही।
भयो अवेरि तिनहूं के ताई।
नदि महिरु व्रषिभान जी आए।
मग जोहे अति मनि विसमाए।
श्री कृष्णचंद बालक संग लीए।
ग्रहि आवनि ताई पग दीए।

गोप ताल विधि आषि सुनाई
नंदि महिर पहि वेग नि लाई

हमि वनि महि पडि वछे चराए।
तटि रवि दुहिता जा ठहिराए।

वकासुर असुर तव ही चलि आयो
वगि रूपु तिनि आइ दिषायो

हनि कह्यो इसि निकिटि न जावो।
जो जावो तौ वहु दुःखु पावो।
हमि सभि चले निकटि गए तांके। सभि ही उदरि परे हमि वाके।
हमिरे पाछे क्रिष्ण भी आया। वांके हति हरि हमहि छडाया।
तव ही अवेर भई हमि ताई। इहि वालकौ ने आप सुणाई।
नंदि महिर अरु सभ विस्माए। गोकल त्याग ईहा हमि आए।
इसे त्याग औरु कहा जावहि। औरु कहा जाइ वासा पावहि।
फिरि सकल्यों मनि लीओ वीचारी। मनि माहे सभि ही इहि धारी।
गर्गि प्रोहति हमि सो भाषा। नारायण इसि कौ नामु राषा।
वडे उपाधों कौ इहि टारे। पृथ्वी कौ वहु सुषु मनि धारे।
जो कछु गर्गि कहा सो होई। ता महि भेदु नाहि है कोई।
नंदि महिर सभु ग्रहि महि आए। श्री कृष्णचंदि के मंगल गाए।
जो इहि जसु सुने वहु सुषु पावै। सांईदास तिहि परि वलि जावै।

इति श्री भगवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे एकादशो ध्यायः ।। ११ ।।

श्री कृष्णचंद ने क्या कछु कीआ। प्राति समे वछे ग्रहि ते लीआ।
वछिरे ले करि वनि कौ धाए। तात समे गोपो सुत आए।
सकल ग्वारि मिलि एहि पुकारे। आजु आई इहि हृदे हमारे।
हमि तो क्रिष्ण सहित न जावहि। हमि न्यारे करि वछे चरावहि।
इनि ग्रहि वछे भए अधिकाई। हमिरे वछे थोरे है भाई।
कान्हरि हमि पहि कामु करावै। आप ते सममर कामु न आवै।
श्री कृष्णचंदि तव कह्यो पुकारे। सुण हो वालक सषा हमारे।
जो तुमि कहो सोई मैं करहो। तुम्हरा कहा मस्तकि परि धरहो।

हमिरे वछे न्यारे ना चरही । तुमिरे वछिउं सौ वहु हितु करही
कमलिनैन माधौ सुखदाई । मुख अपुनै सै वाति सुनाई ।।
करि इकत्रि वछे वनि कौ धाए । स्याम सुदरि सहित सिधाए ।।
श्री कृष्णचदि त्रिभवनि के राया । गोप पूत सों आप सुणाया ।।
बेन अधिर धर हो मेरे भाई । भौर पध सीस लेहु वनाई ।।
अवर पीतवरि करि लेवहु । कुसम माल ले उरि महि देवहु ।।
सकल ग्वारो ने ऐसा कीआ । वनि को मार्गु तिन ने लीआ ।।
दीना नाथ अनाथ मुरारे । तवि वालकि सौ वचन उचारे ।।
तुम्हि महि कौनु निर्ति करि जाने । मोहि कहो सो मनि करि माने ।।
वाल्कि तवि लागे निर्ति करने । गिर्न मुर्ति वनि माहे फिरने ।।
क्रीडा कर्ति गए उद्याना । कौलापति माधौ परिधाना ।।
अस्थावर मग महि निर्षायो । महा अधिक कछु पार न पायो ।।
नाके मुप की वात वपानो । स्थावर हृदे महि करि जानो ।।
रस्ना ताहि सुनो मेरे भाई । मानो मगु वहि देति दिषाई ।।
ऐसे दुष्ट खलु नामु अघासुर । हेर्ति फिर्ति एही निमि वासर ।।
इमि कौ पातकि कंस पठायौ । सकल व्रितातु सुनो हितु लायौ ।।
जाइ करि सुतु नदि कौ देपि आवौ । वेग जाहो कछु विलमु न लावौ ।।
जिन वाल्क ने वकी सहारी । रग अस्तन गहि के प्रहारी ।।
केतकि वलु तांकी भुज माही । वकी प्राण जिन लीए हिराही ।।
अघासर खल इहि हृदे आना । निश्चै करि के तिन मनु माना ।।
विनु कहे कंस मारि इसि जावौ । तासि जाइ अधिक कछु पावौ ।।
ताकौ कामु जो मै करि जावो । साईदास वहुता सुषु पावो ।।३६।।

विनु कहे कंस कर्नि इहि आया । उर्गि देह इनि दुष्टि वनाया ।।
गोप तात ने जवि इहि देष्यो । अति सरूप अचरजु जो पेष्यो ।।
ताके उदिर बालकि सभि जाही । श्री कृष्णचंदि तांकौ वरिजाही ।।
येहि भी एक उपाधि है आई । इसि के उदिर न जावो भाई ।।
कह्यौ कृष्ण को किन्हे न कीनो । ताहि उदिर जाइ वासा लीनौ ।।
श्री कृष्णचंदि तवि हृदे वीचारी । घटि अतरि प्रभ एहि विधि धारी ।।
इन्हि पित माति क्या उत्तरि देवौ । वालकि मागहि कहा करेवौ ।।

श्री कृष्णचदि प्रवेसु करायो। ताहि उदिर महि विलम न लायो ।।
कठु असुरु कौ करि सौ लीना। महा दुखी प्रभ खलि को कीना ।।
सिरु फेर्यौ तौ निकिस्यौ तिहि स्वासा।
जाइ वैकुंठि महि लीओ निवासा।
नाराइण निर्भौ सुपदाता।
घटि घटि माहे आप ही राता।
सकले बालकि तवही निकारे।
तांकी लील्हा अपर अपारे।
आघासुर कौ मुक्ति पठायौ।
तांकौ हतु कीयौ जदरायौ।
हस्त पेलति तवि ग्रहि आए।
बालकि सभि विर्तत सुनाए।
असुर अघासुर वनि महि आया।
हमि सभि ताके उदिर समाया।
श्री कृष्णचंदि तिहि दुष्ट कौ मार्यो।
तांकौ मार्यौ हमहि निकार्यौ।
नंदि महिर जवि इहि विधि पाई।
सकल गोप तिन लीए वुलाई।
गोकलि त्याग ईहा हमि आए।
ईहा सुप कार्ण ठहिराए।
इसे त्याग उौर कहा जावहि।
ईहा अति अपति ग्रहि आवहि।
महा कठनि हमि कौ वनि आई।
सकल गोप सुण हो मनि लाई।
जो जो दुष्ट मत्ति खलु आवै।
सांईदास प्रभु मुक्ति पठावे।।३७।।

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे द्वादशोऽध्यायः ।। १२ ।।

एक दिनस कमल नैन क्या कीआ । वछिरे गोकलि लै बनिपगि दीआ
गोप तात को कह्यो सुनाई । सुण हो इहि विधि हमिरे भाई ॥
जो ग्रहि से लेवो सहित चलावो । उौर दिनसि ज्युं ईहा न पावो ॥
बनि माहे मनि वहु सुख पावहि । सभु इकि ठौर बैठ के पावहि ॥
किन ही कछु किन ही कछु लीआ । सभि तेतहू इकत्रि कीआ ॥
चलिति चलिति जमुना तटि आए । तहूं ठौर आइ करि ठहिराए ॥
पाति अवि केले के लीए । रवि दुहिता तांपरि डारे दीए ॥
तहूं पाति परि तिन पग दीए । तहूं बैठ करि भोजनु कीए ॥
एकि ग्रासु लै उसि मुष देवै । एक उौर इसि मुष पसि लेवै ॥
इहि बिधि करी अधिक चिरु लागा ।
आत मुरंग तिह के इकि नागा ।
वछिरे चर्ति त्रिण कौ गए दूरि ।
द्रिष्टि न आवै तिन मग दूरि ।
सकल ग्वारि मिलि एहि पुकारे ।
सुणो क्रुष्णचंदि मीति हमारे ।
वछिरे दूरि गए तुमि जावौ ।
नुमिरि वारी तुमि हेरि ल्यावौ ।
कमल नैन बछुरे हेनि धाया ।
बैन सब्द प्रभ तव ही सुणाया ।
भोजन करि लीए षाता जाई ।
ताकी सोभा कौनु वताई ।
लेन प्रतज्ञा बिधि तहा आयो ।
बछरे वाल तिनि सकल दुरायो ।
तहा जाइ प्रभ ने निषायो ।
द्रिष्ट न आए मनि विस्मायो ।
अतरिध्यानु कीयो सुधि पाई । पद्मजि हमि ताई पतीआई ॥
श्री क्रुष्ण अवतार भयो के नाही । सोच विचार देष्यो मनि माही ॥
कमल नैन फिरि तटि परि आए । फुनि ईहा वालिक द्दष्टि नि आए ॥
स्याम सुंदरि भै चक्रित हो रह्या । अपुने मुष सेती इहि कह्या ॥
असुर कवहू इहि कामु न करही वछुरे वालकि सौ वरु न षरही

उनि को है हमिरे संग कामा। इहि विधि बोले पूर्ण रामा।।
पद्मजि ने इहि कामु करायो। चाहति पद्मजि हमि पतीआयो।।
श्री गोपाल इहि सोच वीचारा। सांईदास विधि जाणनहारा।।३८

श्री गोपाल मन महि ठहिराई।
सो गुर किर्पा ते कहो सुनाई।
जो अबि चतुराननि पहि जावहि।
बछुरे ग्वार को मांग ल्यावहि।
पद्मज मन महि करे गुमाना।
पद्मज मन महि परे भुलाना।
क्रिष्ण अवतार प्रतीति न मानहि।
मन महि द्वितीआ गति बहु आनहि।
तांते इहि भला मोह भाई।
लील्हा करि इन्हा लेह वनाई।
वहि वछरे ग्वारि रहिनि तिहि पाही।
पद्मज पहि मांगनि ना जाही।
अबि लील्हा करि उौर वनावहि।
चतुरानन अभिमान चुकावहि।
श्री कृष्णचंद लील्हा तबि धारी।
वछुरे ग्वार इनि लीए सवारी।
वैंन वजाती चले ग्रहि ताईं। वालकि गए अपुने ग्रहि माही।
तिन को देष जननी हिर्षाई।।
वछुरे गए सुरहीअनि के पासे। सुरहीअनि अधिक कीनी इसे प्यासे।।
ऐसे ही एकु वर्षु विहाया। चतुराननि मनि महि इहि आया।।
ग्वार वछरे मतु ले ग्यो होईं। मैं जावौ जाइ देषो सोईं।।
जिहि स्थावर महि दुराए। पद्म देषण ताहि सिधाए।।
तिहि कंदिरा माही निर्पाए।
वहुरो ग्वारि सकले द्रिष्टआए।
मनि अंतरि विधि एहि वीचारा।।
कौनु हमहि क्या वलु है हमारा।।

पारावार ताके मैं पावो।
इहि विधि कहा जो तिहि गुण गावो।
लज्जामानु होइ पद्मज आया।
श्री कृष्णचंदि चर्नी लपटाया।
करि डंडौत मुष वचन उचारे।
प्रान पुर्प हमि प्रान अधारे।
मै कहा तुमिरी गति पावो।
मै मतिहीन कहा उचिरावो।
तू अपार गति तोहि अपारा।
तुमि गति कहा मै कौनु वीचारा।
जो कोई इहि जमु नुणे सुषु पावै।
सांईदास गर्भि योन नि आवै ॥२६

इतिश्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षिति सवादे त्रयोदशोऽध्यायः ॥१३॥

श्री गुपालि ने लील्हा धारी। दस सहस्र विधि कीयो तत्कारी ॥
चतुराननि कौ प्रभ निर्षाए। पद्मज निर्प रह्यो विस्माए ॥
भै चक्रित तवि ब्रह्मा हो रह्या। चतुर्भुजा ब्रह्मे मुष कह्या ॥
एक एक च्वारि पहि वेद वषानहि। पद्मज सुकदेव ब्रह्म ज्ञानहि ॥
उस्तति कमलापति की भाषहि। स्यामसुदरि की लील्हा आपहि ॥
तवि इहि पद्मज इहि प्रतु कीना। त्याग अभिमानु नीच ग्रहि लीना ॥
सुण हो कृष्णचंदि विधि मेरी।
कहा करों मैं उस्तिति तेरी।
मै तो किसे गिणति महि नाही।
इहि विधि आषौ हो तुमि पाही।
त्रिण व्रिक्ष विद्रावनि के नीके।
हमि मतिमूढ अंतरि ते फीके।
मै तो पद्मज नाहि कहावौ।
इहि विनती प्रभ तोहि सुणावो।

मोहि व्रिक्षु करो बिंद्रावनि माहि।
नाहि त त्रिभवनि ताहि मझाही।
तुमि तो सदा फिरति तिहि माही।
तुमिरो गवनु है सदा तहाही।
तुमिरो पगु मस्तक परि आवै।
हमिरो आवागोंनु मिटावै।
मैं चतुराननि नाहि कहावौ।
इहि विधि निश्चै मनि ठहिरावौ।
तुमिरे दर्सन ते दूर जावा।
ध्रिगु इहि जन्मु जो वरह्यो कहावा।
मैं इहि विधि प्रभ सर्न महि आनी।
औरु न चतुराइण इहि जानी।
मै काहू गिणत्री महि नाही।
तुमिरी गति कछु लषी न जाही।
जो कोऊ रहति ब्रिद्रावनि माही।
सदा सदा वैकुंठी मझाही।
सदा सदा दर्सनु तुमि करही।
चर्नि कमल हृदे अंतरि धरही।
मोको माटी करु इहि ठौरा।
इहि विनती सुण हो मोहि भोरा।
इहि विधि पद्मज विनती ठानी।
लज्जा मानु होइ मनि इहि आनी।
बछुरे ग्वारि सकल ले आया। जमुना के तटि आण टिकाया॥
श्री करुणा निधि ऐसे कीआ। भोजन सहिति ग्वारी लीआ॥
जैसे प्रिथमे कीओ मुरारी। तैसे अवि कीनी गिरधारी॥
पद्मज ग्वारि पडे दुराई। तास मर्मे लील्हा जो धारी॥
तैसी लील्हा अवि प्रभ कीनी। प्रिथम बाति चिति धरि लीनी॥
लील्हा करि जो ग्वारि वनाए। औरु बछे तवि ही उपिजाए॥
सभ लील्हा करि ताहि वषानें। श्री कृष्णचंदि पूर्न परधानें॥
जो बछे ग्वारि प्रिथमे से भाई साईं संग लीए जदुराई

ब्रह्मे ब्रह्मत्तु त्यागा। चर्नी कौलापति को लागा॥
प्रभ पद्मज परि किर्पा धारी। ताहि परि करुणा करी मुरारी॥
जो इसि जस को मनि ठहिरावै। सांईदास पर्म गति गति पावै॥४०

इतिश्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चतुर्दशोध्याय:॥१४॥

एक दिन श्री कृष्ण कह्यो नदि ताई।
सुण हो पित मैं तोहि सुणाई।
एकादश वर्ष भई आयु मेरी।
श्री कौलापति मुषि इहि टेरी।
जौ आज्ञा करो सुरहों ले जावो।
जाइ वनि माहे ताहि चरावहु।
नंदि महिर कह्यो अति नीका।
पुछ पडितु अमु त्यागो जीका।
भलो महूर्त देहि वताई।
तुमि सुत सुरहो कौ षडो चराई।
नदि महिर पडतिजु वुलाए।
लग्न महूर्ति भले पुछाए।
पंडति भलो महूर्ति कीआ।
वीरवार की आज्ञा कीआ।
कान्हरि जाइ करि धेन चरावै।
धेन अधिक होहि वहु सुप पावै।
जवि ही वीरवारु दिन आया।
वलिदेव गौआ ले वनि धाया।
तवि ग्वारो मुष वचन उचारे।
सुण हो वलिदेव सषा हमारे।
तालि वनि त्रिण मेवा अति नीका।
तहूं चलो सुप होवै जी का।
सकल ग्वार इहि मति ठहराया।
उमडि सकल तव वनि को धाया।

राम सहित ग्वारो उठि धाए।
षेलति सभ वनि माहे आए।
त्रिपावति सकली सुरहो हौंई।
इति उति ते वहु जलि को जाई।
एक तालु जलु है तिहि माही।
कालि नागु रहे ताहि नभाही।
सभ पानी विषु काली केरी।
सुण हो साधो एहि विधि मेरी।
नील कुडि नामु तिहि भाषही।
सकल स्त्रिष्ट ऐसे ही आषहि।
धेन ग्वारि तहा पानी पीआ।
पानी पीय अपुना जीउ दीआ।
वलिदेव तवि ही मनि वीचारा।
निता पति ईहा गवनु हमारा।
लीलहा करि वहु वहुरि जीवाए।
करि महि ले षेलति ग्रहि धाए।
उत्तम ग्राम त्रिक्ष हलाए।
तिन के फल सभ धर्नि गिराए।
सकल ग्वारो ने ले करि षाए। ताहि षाइ करि विश्रामु पाए।
धिङ दैतु तहां चलि आया। गर्धिप रूपु तिहि दुष्ट बनाया॥
गर्धिप रूप कोओ तत्कारे। दो पग दुष्ट राम को मारे॥
तवि ही राम दो पगि सो लीना। फेरि फेरि त्रिक्ष सेती दीना॥
धेन्कि दुष्ट को राम विडारा। सांईदास खल कौ प्रहारा॥४१

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कदे
श्री सुकदेव परीक्षति सवादे पंचमोध्यायः॥१५॥

राम सहित ग्वार्नि फल पाए। सुरिह सकले ले ग्रहि को धाए॥
चले चले आए ग्रहि माहि। राम सहित ग्वारो सुष पाही॥
जसुमति प्रभ अंग तेलु मलाए। ताकी सोभा अधिक वनाए॥
जलु लेंकरि इस्नानु परिजगमि परि सैनु कराया

सुष आश्रमु लीनो जदुराई।
शैनु कीयो प्रभ कौर कन्हाई।
उौर दिनसि वलि भद्र आषा।
इहि विधि राम कीई मुष भाषा।
आजु न जावौ मैं वनि माही।
मोहि पगि आजु न वनि कौ धाही।
श्री कौलापति राम सुनाया।
वलिदेव तै ने वहु दुःख पाया।
तुमि रहो ग्रहि मै सुरिह ले जावा।
षडि वनि माहे ताह चरावा।
श्री कृष्णचंद सुरिह्व ले करि धाया।
तालि वनि के मार्ग चितु लाया।
तात काल गयो वनि के माही।
नीलि कुंडि परि पगि ठहिराई।
एही मनि महि कीउो विचारा।
श्री गोपाल जन प्रान अधारा।
इहि जलु समु विषु मोह दिषावै।
जो पीवे सो प्रान तजावै।
मीठा करो मैं इसि जलि ताई।
एही आई मोहि मनि भाई।
काली नाग को ईहा निवासा।
सदा सदा तांको ईहा वासा।
उसि विष के प्रजोग कराही।
एक जोजन परि त्रिण न जमाही।
जोजन प्रजति पंछी न उडाए।
जो उडे सो भस्म होइ जाए।
कदमि व्रिक्षु कुंडि के तटि माही।
हरियो साथ पत्रि संग नाही।
इहि प्रजोग वहु हर्‍यो भाई।
सुण हो इहि विधि देउ वताई।

इकि दिन गई बैकुंठि सिधाए।
अम्रति फल वैकुठि से ल्याए।
आइ कर्दमि को ऊपरि वह्या।
अंम्रति फलु उनि मुप महि गह्या।
अम्रति फल से रस जु चुआई।
कदमि मूल महि जाइ समाई।
इहि प्रजोग करि हरउो वाही।
सांईदास विधि कहिति सुनाई॥ ४१॥
श्री गुपाल कदम परि चढिआ।
तासौ कूदि कुंडि मधि परिआ।
पर्तु लागा तिहि के माही।
अति कलोल करे ताहि मझाई।
ऐसा पर्तु तिहि महि कीआ।
अधु कोसु जलु वाहिर दीआ।
काली नागु मनि महि विस्माया।
होइ विस्माह मुषो उचिराया।
मोहि विपु वलि त्रिणु रह्यो न जाई।
इहि प्रांनी आइ पर्‍यो कोई।
कालीनागु तवि ही निकसि आयो।
कमलनैन के पग उर्झायो।
नदि महिरु जसमति व्रिषभानु।
मनि काहे वहि कति वषानु।
सभ के द्रिग तवि तपने लागे।
सभि प्राति महि सोए जागे।
राम सों सकले कहित सुनाई। एक एक मुख ते उचिराई॥
कृष्ण सहित तू आजु न गया। कछु अपित ग्रहु वनि महि भया॥
हमि को कृष्ण पाहे ले जावो। श्री गुपाल हमि दिष्ट दिपावो॥
तवि वलिदेव ऐसो भाप्यो। कांन्हरि ओरहि चितु ठोर राष्यो
कछु मनि महि विस्वासु न करहो। अपुना हृदा ठौर तुमि धरहो॥
कौनु असुरु तांके निकटि आवै। प्रभ सौ तांकौ आणु वसावै॥

रामु ताहि कौ वहु समिझावै। नंदि गोप धीर्जु नही पावै ॥
नदि गोप सभ वचन सुनाए। राम सुनति मनि महि ठहिराए ॥
श्री कृष्ण हमिरे प्रान अधारा।
ता विनु इहि तनु होई छारा।
हमि तिहि विनु कछु कामु न आवहि।
बिनु उसि हमि वहुता दुःख पावहि।
हमि को कान्हरि पहि ले जावो।
चलिहो हमि सग हमहि दिषावो।
वलिदेव पैरु सुर्हो का लीआ।
गवनु कमलनैन ओर कीआ।
तातकाल कालीकुंडि आए।
श्री कृष्णचदि तिन ने निर्पाए।
ठाढे कृष्णचद देपे जल माही।
काल नागु उर्भों पगि ताही।
इहि विधि देषि रुदनु वहु कीआ।
महा दुपति भयो तिह को जीआ।
तिन को वलु कछु नाह वसाए। साईदास वहु रुदनु कराए ॥ ४२

श्री कृष्णचंदि जवि नदि निहारे। गोपो सहित रुदन चित धारे ॥
काली को सीसु तवि करि लीना। जल से ले वाहिर डारि दीना ॥
जल को तजि करि वाहिर आए। अमिरो तवि जै कार कराए ॥
निर्त करी तवि प्रभ गिर्धारी। काली के सिर परि अधिकारी ॥
चतिरा इकि मुष काली कहीए। इहि विधि तांका रूप वतहीए ॥
चतुर सीस तिहि कृष्ण विडारे। अपुने पगि करि प्रभि प्रहारे ॥
एक सीस पाछे जवि रह्या। वाही सीसु चाहिति प्रभु गह्या ॥
दो वनिता काली की आई। सुत दुहिता सभ संग ल्याई ॥
कुटवि सहिति विनती तिहि ठानी।
हमि वलि जावों सारग पानी।
महा अपति ग्रहु हमि जवि कीनो।
तवहि भुजंगमि के वप लीनो।

इसे त्याग देह त्रिभवनि राया।
इहि विधि हमि तुमि आषि सुणाया।
तवि श्री कृष्ण ताहि प्रतु दीआ।
तुमि वेनती करि मुक्ता कीआ।
एहि ठौरि तजि करि तुमि जावो।
पलु छिनु भी ईहा ना ठहिरावो।
जाइ रहो तुमि दधि के माही।
ईहा ठौर तुम्हारी नाही।
गंडि के त्रास ईहा जो आया।
जनना के तटि आइ ठहिराया।
अवि कछु गई कहे इसि नाही।
जाइ करि सुख वसो दधि माही।
काली सकल कुटवु सग कीआ।
सागर सिध को मार्गु लीआ।
जो जो हरि सर्नाई आए।
साईदास तिहि वहु सुष पाए॥४२

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे षोडशोध्यायः॥ १६॥

नंद महिरु जसु मति नंद नदनु। सकल गोप चिर तनि चितु वदनु॥
सकल रैन रहे कुंडि प्राही। तांकी लीलहा वर्नि न जाही॥
तिहि कुंडि को जलु मीठा कीआ। जिन त्रिपा गही तिन ही ले पीआ
जसुमति कान्हि को सग लीआ। अंग अंग तांके मुष कीआ॥
हर्पिमानु जसुमति वहु होई। हिर्षमान होइ करि वहु रोई॥
रुदनु कर्नि मुप ते इहु आपा। हमि ग्रहि आजु भयो मुतु भाषा॥
नृप परीक्षति सुप देइ सुनाई। स्वामी हमि मनि संचरु आयो॥
जमुना तटि कैसे वासा पायो। जो काली नागु ईहा ठहिराया॥
जवि नृप ने इहि बाति चलाई। तांको प्रतु शुकदेव सुनाई॥
दधि महि रहे उर्गि अधिकाई। गई जाति सागर माही॥
सागर महि जाइ वहु सप मारे कछु षाए कछु ऐसे डारे

एकि दिन उरगि इकत्रि भए। चले चले मघिवा पहि गए॥
मघि पहि जाइ करी पुकारा। हमि भी उतपति है कर्तारा॥
गर्ड हमे बहुता दुःख देवै।
मुनबंधू हमि बहु हति लेवै।
जो तुमि हमि सिर करि ठहिरावो।
हमि देवहि तवि जोरु न लावो।
पद्मज सौ मघवा इहि कीआ।
गर्डि कौ तिनहि बुलाई करि लीआ।
तिन ने एही मत्तु ठहिरायो।
साईदास तिहि विरोधु चुकायो॥

तुमि दस सर्पि गर्ड को देवौ। निता प्रति एही कामु करेवौ॥
गर्डि ने पद्मज कौ कहा माना। सत्ति जान सिरि ऊपरि आना॥
दस सर्पि निता प्रति वहि लेवै। ताकौ ले करि उदिर भरेवै॥
इकि दिन वारी काली आई। दस सर्प्पि देहो तुमि मेरे भाई॥
कारी नाग मनि कीओ वीचारा। मोहि पिति नामु महा अधिकारा॥
मैं नाउं कालीनागु कहावौ। इहि तजि ठौर कहा मैं जावौ॥
ध्रिगु जीवनु गर्डि कछु देवौ। क्या मुष ते जग महि निकिसेवो॥
गर्डि लोक सर्पि लेने आए। काली नागु को तिन हि सुनाए॥
काली कह्यौ कछु देवौ नाही। गर्डि के लोक अधिक विसमाही॥
गर्डि लोक रीते होइ गए। गर्डि आगे जा ठाढे भए॥
गर्डि के ताई ताहि सुणायो। काली तुम वचु मनि न ठहिरायो॥
जवि षग ने इहि विध सुण पाई। क्रोधु कीओ कछु कह्यो न जाई॥
करि क्रोधु युद्धि कौ उठि धाया। कालीनागु सन्मुख होइ आया॥
जवि काली सन्मुष उठि धाया। गर्डि निर्ष मनि महि विसमाया॥
इसि कौ विप है ए अधिकारे। मतु एहि मोह डसे ततकारे॥
जत्नु कीओ करि सेती गह्यो। करि सो ले करि गगिन पर चढ्यो॥
काली तिह करि ते छुटि गया। जमिना तटि इहि कुंडि महि पया॥
काली कुंडि प्रजोग इहि कहीए। काली नागु इस माहे रहीए॥
रहि तिस पूर्व ऋषु इहि ठौरा। सुण हो परीक्षति नृप कह्यो मोरा॥

काली अजहू न लीआ निवासा। ऋषि सपूर्वि को जवि ते वासा।
एक दिन गई इहि कुडि पर्‍या। जीव जत सकल उनि मर्‍या।
तवि ऋषि गर्डि कौ आप सुणाया। इसि तटि परि मै वासा पाया।
हमि ते लज्जा ना तू करिही। इहि कुडि माहे तू पगु धरही।
अधिक अवज्ञा तुम हि कराई। अवि लगि तुमि कौ लीयो वचाई।
जो वहुरो ईहा पग धारे। भस्म होइ जावे ततकारे।
मोह कह्यो तुमि जानो भाई। साई करो जित होइ भलाई।
तवि ते गर्डि कुडि इहि त्याग्यौ। तिसि ऋप डर ते गई जु भाग्यो।
पगु डर्ता ईहा ना आवै। ऋषि के साप ते वहु सुकिचावै।
इहि प्रजोग काली ईहा रह्या। आश्रम सेती ईहा वह्या।
नृप परीक्षिति जवि इहि प्रतु पायो। साँईदास मन भर्मु चुकायो ।।४

गोप ग्वारि नदि सहि नाइरिण। रहे अंभ तटि सहित नराइरिण।।
रजनी भई शैनु तहू कीना। निश्चय होइ हरि हर भज लीना।।
जवि ते मद्धि भई आइ रैना। ससि उोर उडगनि ही प्रगटैना।।
सस ने अधिक उजारा पायो। उडगनि तिन संग अधिक सुहायो।।
दावा अग्नि दुष्टि अति भारी। तांको कंस ने कह्यो पुकारी।।
तटि काली कुंडि गोप ग्वाल। शैनु कीउो नदि के नदि लाल।।
तू तहू जाइ हमारे भाई। चतुर उोर दावा देह लाई।।
तवि वहि सकल अग्नि महि जरही।
इहि प्रजोग करि उहु सभि भरही।
दावा अग्नि सौ दुष्टि समिभायो।
तव वहि खलु वनि महि चलि आयो।
चतुरि उौरि दावा उनि दीई।
दुष्ट असुर इहि विधि इनि कीई।
नदि महिरु जसुमति सभ लोक।
विस्म भए दावा कौ विलोक।
शैनु त्याग हा हा सभु करही।
हा हा प्रभु मुष ते उचरही।
श्री कृष्णचंदि सौ कहे पुकारे। कौलापति हमि दावा जारे।

तवि कमला पति वचु मुप कीना।
मूदो द्रिग तुमि कौ कहि दीना।
मुनति सकल ने द्रिग मूंदाए।
प्रभु वचु तिन ने मनि ठहिराए।
चतुरति दिस की दावा अग्नि लीई।
इहि विधि नाराइरण तवि कीई।
मानो जल को अग्नि लेवै।
जलि कौ अचति अजहू मुकचेवै।
गोविंद दावा को अग्नि लीना।
पलु छिनु विलमु न गोविद कीना।
सदा सदा प्रभु सुपु उपिजावै। सांईदास दुःख मूल गवावै ॥४६॥

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति सवादे सप्तदशोध्यायः ॥१७॥

तवि ही विस्मे गोप ग्वार। लील्हा प्रभ की नेत्र निहार ॥
रजनी घटी रवि कीयो प्रकासा। सुखु उपिज्यो दुष मूल विनासा ॥
सुर्हो सकल ले गोकलि आए। हिर्पिमान होइ मगल गाए ॥
श्री कृष्णचदि सुर्यो को ले भाई। विंद्रावनि महि आइ ठहिराए ॥
तप्ति अधिक वनि महि सो भाई। विंद्रावनि महि वहु सितलाई ॥
कुस्म अनेक भांति के फूले। तिन सग भ्रिग अधिक है भूले ॥
वादरि उमडि करि आए। तिन वादर वहु वर्षा लाए ॥
पवन मंडल आयो ततकारे। वादरि दौर गए अति भारे ॥
वादरि गए रवि दई दिषाई।
ऋषि मुनि सभ वनि को उठ धाई।
श्री गोपाल सुंदरि अधिकारि।
करुणा निधि प्रभु गिरवर धारी ॥
गोप तात सभ लीए वुलाई।
ताहि कह्यो सुरण हो मेरे भाई।
हमि तुमि षेलहि युद्ध करावहि।
मिलि करि सभ उरि-उरि उर्भावहि

कह्यो ग्वारिनी को जदुराई। जो इहि विधि तुमरे मनि आई।।
दौरि आइ एकहि उरि लागे। मुष्टि मारि पाछे भागे।।
धात्री फल ले युद्ध करायो। अधिक षेलु प्रभु स्याम वनायो।।
जो देषहि सौ वैकुंठ जावै। जन्म-मर्णु प्रभु सकल चुकावै।।
अदि भुति षेलु वन्यो मेरे भाई। तांकि लील्हा कही न जाई।।
इहि विधि षेलु कीओ वनिवारी। तांकि लील्हा अपर अपारी।।
गोप तात सो षेलनु कीना। सखा जाण तासौ हितु लीना।।
धात्री फल ले करि वहु मारी। ऐसी विधि प्रभ लील्हा धारी।।
एहि विधि षेलु कीनो नंद नंदन। श्री गोपाल ठाकुर मकरदन।
मुक्ता होइ वधन् ना पावै। साईदास जो इहि सुषु गावै।।४७

प्रलंब को नृप दुष्टि पठाया। सकल वाति षलु ताहि वताया।।
विद्रावनि महि सहित गुआला। धेन चरावत है नदलाला।।
तुमि जाइ करि तिस को हति आवो।
वेग विलमु कछु मूल न लावो।
प्रलंबि खल वपु ग्वार को कीना।
मार्गु श्री विद्रावनि को लीना।
आइ ग्वारौ महि ठहिरायो।
सभ ग्वार ले अग मिलायो।
तांकौ गोविंद लीओ पछानी।
सभि विधि जाने सारगपानी।
तव ही राम सौ आषि सुणायो।
वार एकि फिरि षेलु रचायो।
जो हारे कांधे परि चारहे।
उसि व्रिक्ष ताई जाइ उतारे।
जुगल सषा मिलि-मिलि कर आवहि।
इहि विधि करि हमि षेलू रचावहि।
राम कृष्ण दोऊ ठहिराए। ओर जुग्ल सषा होइ हो आए।।
एकु लेइ रामु इकु ले गिरधारी। ऐसी लील्हा करी मुरारी।।
प्रलाबु असुरु प्रभ की ओर आयो और सषा वलिदेव उरि धायो

प्रथम राम मषा ने हार्यो। कांधे चारिह् त्रिक्ष पाहि उनार्यो॥
वहुरो प्रभ की उोर हरायो।
बलवि राम को काध चरायो।
इहि विधि असुर ने मनि ठहिराई।
सकली विधि मैं देउ वताई।
एहि ममा मौको प्रभ दीना।
वलिदेव मोहि काधे पग कीना।
एकि उोर इसि कौ धडि मारो।
कदरा महि पडि करि प्रहारो।
तव प्रकांच तिन ने हे कीआ। इनि पल ले आगे पगु दीआ।
वलिदेव ने तवि मनि ठहिराई। सकिल त्रितांत सुन हो मेरे भाई॥
तवि जान्यो एही मनि माही। दुष्ट षेल उपाध उठाई॥
एक मुष्टि खल के सिर मारी। ताहि कपालु लीयो प्रहारो॥
टूक-टूक तांकौ सिरु कीनो। तांका सीसू फुडा करि लीनो॥
मुख ने रिक्त चली अधिकारी। जीउ दीओ तिन ने ततकारी॥
प्रलंबु मुक्ति भयो क्षिण माही। सांईदास गोविद सनांही॥४८

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति सम्वादे अष्टदशोध्यायः॥१८॥

एक दिन श्री कृष्ण विंद्राजनि माही।
धेन चरावति ताहि मझाही।
सकल ग्वार सौ षेल मचाई।
श्री गुपाल भग्तनि सुषदाई।
सुरिह गई दूरि द्रिष्ट न आवहि।
प्रभु तब मन महि सोझी पावहि।
गोप तात सौ कृष्ण सुनाया। हमि सभि षेलनि सौ चितुलाया॥
सुरिह गई दूरि कह्यो क्या कीजै। सुर्हो ताई कैसे फिरि लीजै॥
केतकि तुमि तिन के पुरि जावो। सुर्हो ताई तुमि फिर ले आवो॥
गोप तात तवि कह्यो पुकारे।
हमि विनती करहि सुणहो मुरारे

दुष्ट अधिक विद्रावनि माही।
फिर्ति सदा हमि कैसे जाही।
तुम को त्याग कैसे हमि जावहि।
इहि विधि वहु मन महि सुकचावहि।
तवि श्री नंदि नंदनि ग्वार लीए।
केतक पगि वसुधा परि दीए।
महा विकट वनु आगे आयो। ग्वार सहित प्रमार्ग भुलायो॥
तप्ति अधिक प्रगटी तिहि ठौरा। त्रिपावंत भए नंदि किसौरा॥
सकिल ग्वारि को त्रिपा संतायो। अधिर सूके रस्ना ठहिरायो।
श्री कृष्णचद सौ कहचो पुकारे। त्रिषा गहे छुटहि प्रान हमारे॥
चल हो जमना के तटि जावहि।
जलु जा अचहि नाही मारि जावहि।
जब ग्वारो मुषि एहि उचारी।
जमुना तटि को चले मुरारी।
दावा अग्नि असुरु तहा आयो।
दुष्ट असुरु मनि एहि वसायो।
सुत नद महिर ग्वार संग ताके।
त्रिषा गहे निकसहि प्रान वाके।
प्रिथमे तिन ने पौणु भुलायो। पाछे दावा वनि को लायो॥
अग्नि चहू दिस ते निकट आई। ग्वारो पुकार कहचो जदु राई॥
भक्ति वछल त्रिभवनि के राया। इनि अग्नी हमि अगु जलाया॥
तुमि विनु ओटि नाहि हमि कोई। ज्यु जानो प्रभ राषो मोई॥
चरनि कमल सौ जो दूरि होवै। ताकौ विकट वने तू षोवै॥
तुमि किर्पा करि दुःख निवारो। अपुनी करुणा हमि परि धारो॥
हमि सभ निकटि चर्नि तुमि रहे। तुमरे चर्णिकमले निज गहे॥
महाराज तुमि अंतरि जामी। सकल घटा माहे विश्रामी॥
पतति उधार्नि तव ही पुकारे। सुण हो वचि मोह सषा हमारे॥
मूदो द्रिग अपुने तुमि भाई। श्री गोपाल मुषि एहि वताई॥
सकल ग्वारि द्रिग मूद लीए। अपुने द्रिग ऊपरि करि दीए॥
श्री गिर्वरधारी चहू दिस अग्नि अची ततकारी

सकल अग्नि पानी ज्युं पीई। ग्वार सबहू की रक्षा कीई।।
गोप तात फिर नैन उघारे। बिस्म भए प्रभ र्म्रति निहारे।।
करुणानिधान कौनु गति जाने। तुमिरी लील्हा कौनु वषाने।।
बहुरो जमना के तटि आए। अच्चि पानी आतम सुख पाए।।
जो इहि लील्हा को मनि धारे। सांईदास प्रभ ताहि उधारे।।४९

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कदे
श्री सुकदेव परोक्षति सवादेनवदशोध्यायः ।।१९।।

श्री मुरार माधो धर्नी धरि। पर्मानदि सभी कारुण करि।।
गोप तात सौ वचन सुनाए। सुरिहु गई दूरि कह्यौ जदुराए।।
चार पाछ दछन ओर धावो। चतुर पाँच पश्चिम कौ जावौ।।
सकल गोप सुत एहि पुकारे। हमि नही जावे प्रांन अधारे।।
तुमिरे चर्नि कहा तजि जावहि। कहू ठौर हमि जाण न पावहि।।
हमि विनती करहो तुमि पाही। तुमि सुण लेवहु प्रभ मनि माही।।
इसि वटि ब्रिक्ष ऊपरि तुमि चढिहो। मुर्ली मधुर अधिर महि धरहो।।
बैन वजावौ प्रभ गिरधारी। एहि विधि नीकी हमहि वीचारी।।
बैन सव्द सुरि सभ सुण पावहि। त्रिणु न चरहि प्रभ वेगही आवहि।।
जवि ग्वारो ने इहि विधि ठानी। श्री कृष्णचदि मनि अतर मानी।।
तवि ब्रिक्ष के ऊपरि जाइ चढिआ। बैन सव्दि कान्हरि ने करिआ।।
दहुरी दहुरी मेरी मुषौ पुकारी।
श्री गोपाल जिन रचिना धारी।
बैन सव्दि सुर्हो ने सुण पाया।
त्रिणु तजि करि तिह और निर्धाया।
बैन सव्दि धुनि लै सुर्यो धाई।
कदम ब्रिक्ष के मूल पहि आई।
अपनु अगु वढि मूल छुहावहि।
चतुरि डोरि तिहि ब्रिष उर्भावहि।
चाटति वटि के मूल वहुताई।
ऐसी उपिजी सुर्ह मनि माई।
श्री जदुनाथ कदमु तजि आए सोभति सषा सग अधिकाए।

जैसे ससि उडगनि के माही।
सोभति है भलो देति दिषाई।
ऐसे प्रभ सोभति अधिकाई।
मानो मूर्ति देति दिषाई।
गोप तात सकले सग लीए।
श्री गोपाल व्रिज को पग दीए।
बेन सब्द मग महि उचिरावहि।
अमरि सकल सुण करि सुप पावहि।
कति कलोल आए व्रिज माही।
तिन्ह लील्हा कछु वर्नि न जाही।
जो हित सौ इहि जसु सुण लेवै।
सांईदास तिहि प्रभु सुपु देवै ॥५

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कदे
श्री सुकदेव परीक्षति संबादे बीसमोध्याय: ॥२०॥

गोपि दुहिता वैन सुण पाया। ताहि मात इहि वचनु सुणाया।
पारब्रह्म निर्भौ नरंकारा। सकल जगति को रापण हारा।
श्री गोपाल भक्तिन सुखदाई। सदा सदा सुख कहु उपजाई।
श्री कृष्णचद सर्नी जो आवै। तांको प्रभु सभु दुखु मिटावै।
करुणा निधि दुःख कर्नि विनासा। सत जना की पूर्ण आसा।
सोई नंदि महिर ग्रहि आया। सभ कंन्या मनि धरि सुण पाया।
सभ दुहिता होइ करि इकि ठौरा। मन महि सिमरहि नंदि किसोर
माघ मास व्रतु ही करही। श्री कृष्णचदि को नामु उचरही।
ब्रह्म महूर्त्ति तटि जावहि। जाइ जमुना स्नानु करावहि।
करि स्नानु तटि परि ठहिरावहि। श्री जदुनाथ को नामु ध्यावहि।
कातिकी मूर्ति जमुना वही बनावहि। पार्वती कर्के तिस ध्यावहि।
धूप दीप तिस अधिक चरावहि। तिहि सेवा सो वहु हितु लावहि।
करि दंडौत सभ विनती ठानहि। हे देवी तू मन विधि जानहि।
जो हमि प्रीति कृष्ण संग देवहि। तोहि पूजा नितापति करेवहि।
माघ मास सभ सेवा करे। प्रीति अधिक मन माहे धरे

श्री मुरार विधि जाणनहारा । मनि माहे इहि लीजो वीचारा ।।
शिव भार्या सौ ,आप सुणाही । श्री कृष्णचंद संग प्रीति बढाही ।।
वाहि वाछा मैं पूर्न करही । तिहि कन्या चितु सभ ठौर धरही ।।
तिहि सेवा अफलु ना जाई । जो उनि हिति करि सेव कमाई ।।
श्री गुपाल मनि महि इहि धारा । सकल लोक तांको विस्तारा ।।
एही विधि मन महि ठहिराई । जान प्रवीन विर्या सभ पाई ।।
साधो भजनु करो चितु लाई । सांईदास अफलु ना जाई ।।५१।

इकि दिन कन्या सभु मिलि आई । भई इकत्रि फिरि जमुना धाई ।।
जमुना तटि जाइ वस्त्र उतारे । नग्न होइ पग जलि महि धारे ।।
राम सहित ग्वारो उठि धाए । सुरिहू सभ ले बनि महि पग पाए ।।
श्री गोपाल वलिदेव सुनायो । नीक वानि कहि तिहि समझायौ ।।
तुमि चलि हौ मैं पाछे आवो । वेग बिलम कछु मूल न लावौ ।।
मौहि इकु कार्जु है मेरे भाई । कार्जु करि आवो तुमि पाही ।।
राम धेनि ले वनि पग धारे । ग्वार सहित लीने ततकारे ।।
श्री कृष्णचदि जमुना तटि आए । ग्वारिनि वचु प्रभु मनि ठहिराए ।।
ग्वार्नि सभ निर्षिनि अभ माही । अंवरि तजि इस्नानु कराही ।।
श्री गोपाल अंवरि तिहि लीए । अवरि ले करि माहे कीए ।।
एक व्रिक्ष ऊपरि जाइ चरि्हआ ।
इहि कारुणु गिरधारी करिआ ।
ग्वार्नि सभ स्नानु करायो ।
तजि जलु तटि अवनि चितु लायो ।
जमना तटि तिनि नैन पसारे ।
अंवरि ना तिहि नैंन निहारे ।
अति भै चकित मन महि विस्माई ।
अवरि हमि किसे षडे दुराई ।
अंभि ठांढे इति उति निषायो ।
इहि विधि तिहि मनु वहु सुकचायो ।
श्री कृष्णचदु देख्यो मुसकाई ।
लज्जामान अंभ महि ठहिराई ।

श्री नदिलाल सों वचन उचारे।
हमि बलि जावो प्रान अधारे।
अंवरि हमिरे प्रभ तुम देवो।
हमिरी विनती मन धरि लेवो।
श्री गोपाल ग्वारिन समझाए।
वस्त्रि लेहु अंभि वाहिरि आए।
लज्जामान होइ वहु सुकचावहि।
अभि कौ तजि वाहिरि ना आवहि।
कपनि है ठांढी अंभि माही।
श्री कृष्णचंदु मनि महि मुसकाही।
तवि इकि ग्वार्नि क्रोधु कराई।
श्री गोपाल सौ वचन सुनाई।
तुमिरो पित भूपति तो नाही।
किउं हमि परि तूं जोरु कराही।
सभ ग्वारिनि ऐसे ही भाषा।
साईदास प्रभ अवरि राषा॥१

ग्वार्नि मागेहि प्रभु देवै नाही। ऐसे आपसि महि झगिराही॥
श्री कृष्ण कह्यो अंवरि लेउो आई। काहे अभि महि तुमि ठहिराई॥
जवि कान्हरि ने इहि विधि वांनी। केतकि ग्वार्नि महि जो स्यानी॥
तिनि सभहूं मिलि मतु ठहिरावो। हमि देवी सो एहि जचायो॥
हमिरी प्रीति कृष्ण संग देवहु। हमि आत्म सुप्रसन्न करि लेवहु॥
पार्वती हमि किर्पा धारी। दर्सनु आइ दीउो गिर्धारी॥
इहि कहि जलु तजि वाहरि आई। आइ गोपाल आगे ठहिराई॥
श्री कृष्णचंदि अंवरि तिहि दीए। सुप्रसन्न आत्म तिहि कीए॥
ताको कह्यो ठौर चितु राष्यौ। श्री नाराइण मुष ते भाष्यो॥
जवि वहुरो कार्तिक फिरि आवै। दु:ख दर्दु सभि ही मिटि जावै॥
इसि जमुना के रे तटि माही। रास लील्हा कर है अधिकाही॥
हमि तुमि रास लील्हा तवि करही। प्रीति भाउ हृदे अंतरि धरही।
ग्वार्नि की वांछा सी एही। श्री कृष्णचंद हमि होइ सनेही॥

इहि प्रयोग सेवा करी देवी। एही वाछा करि इनि सेवी।।
जो सेवै सोई फलु पावै। सांईदास दुखु निकटि न आवै।।५२

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे एकवीशमोध्यायः॥ २१ ॥

ग्वानि गीति मंगल वहु गाए।
श्री कृष्णचंद मिलि आनद आए।
पेलति हासति ग्रहि महि आई।
भिन्न भिन्न ग्रहि जाइ ठहिराई।
तहा ग्वानि कुस्म विछाई।
अति सुरंग तिहि मालि बनाई।
सकिल ग्वानि मिलि मगल गाही।
अति सोभति है कुस्म तिन्हाही।
तिन्हो कुस्म ऊपरि पग दीने।
ग्वानि ने इहि कानि कीने।
चहूं ओरि तिहि कुस्म की माला।
राषी निपिति श्री ब्रिज वाला।
श्री गोपाल तिहि वचन सुनाए।
करि जोरे मुष ते उचिराए।
हमहि जंगमि सती द्रिष्ट आवहि।
घामु सहे हमि छांइ करावहि।
इनि से अधिक लोकि वरनावहि।
धन्न व्रिक्ष इहि कामु करावहि।
वहुरि कह्यो ग्वानि प्रभताई।
सुण हो विनती त्रिभवनि सांई।
हमि को भूष अधिक प्रभ लागी।
जतन करहि हम नाहि त्यागी।
आजु न ग्रहि ते हमि कछु आयो।
कहा करेंहि हमि भूषि सतायो।

श्री नंद नदन वचन उचारे।
सुण हो सषा तुमि वचन हमारे।
मौको भी इनि भूषि सतायो।
भूप हाथ से वहु दुःख पायो।
जमुना तटि ब्राह्मण वहु रहिही।
होम यज्ञ कर्ते वहु अहई।
तुमि तिन विपां पाहे जावो।
मोहि नामु तिनि जाइ सुनावो।
एहि कहो तुमि जाइ करि भाई।
जो मै तुमि कह्यो मुनाई।
हमिरे ग्रहि ते ना कछु आयो।
हमि को षुध्या अति संतायो॥
रचिक भातु देहि हमि ताई।
साईदास मनि वहु सुषु पाई॥ ५४॥
ग्वारि चले विपो पहि आए।
जहा विपों ने यज्ञ रचाए।
जो कह्यो प्रभ सो आषि सुनायो।
विपों सुणि मुष वचनु वतायो।
अवि हमहि होमु यज्ञ न कीआ।
आहूती हमहि नाही दीआ।
ग्वारि तवि हीते फिरि आए। श्री जगदीस सौ आइ सुनाए॥
विपों भोजनु हमहि न दीना।
अति अभिमानु तिनहों मन कीना।
तवि श्री नंद नदन इउ बोले।
इहि प्रजोग तुमि मनु ना डोले।
दिज पत्नी पाहे तुमि जावो।
तिन पहि जाइ करि भातु ल्यावो।
ग्वारि गए दिज पत्नी पाहे।
वहि बैठी अपुने ग्रहि माहे।

पत्नी को तिनि आषि सुनाया।
श्री गोपाल तुमि पाहि पठाया।
श्री कृष्णचंदि बिद्रावनि माही।
गो चरावहि ताहि मझाही।
आजु न पाने को कछु आयो।
अधिक भुषि ने ताहि सतायो।
जो कछु तुमि देवौ ले जावहि।
बहुतु भला हरि भोजनु पावहि।
जवि सभ जग पत्नी विधि पाई।
तवि ही इहि विधि आषि सुण हियाई।
हमि सुणति श्री कृष्ण को नामा।
कमल नैन आत्म विस्रामा।
बिंद्रावनि महि धेन चरावति।
महिति ग्वारा बेन बजावति।
हमि अपुने हृदे माहि इहि ठानी।
दर्सनु पावहि सारंग पानी।
ग्वारो को कह्यो वहु भला आए।
श्री मुरारी ने तुमहि पठाए।
हमि भी सभ तुमिरे संग धावहि।
जाइ कृष्ण को दर्सनु पावहि।
अनकि अनकि तिहि भोजन लीने।
चाहिनि गवनु बिंद्रावनि कीने।
तवि ही दिज पत्नी पति आए।
देषि ताहि मनि महि विस्माए।
कहति कहा धावति हो नारी।
मूढि मति कछु भई तिहारी।
जग पत्नी पति इउं उचिराए।
सांईदास प्रभ ऐसे भाए॥५५

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंधे

दिज पत्नी पति को समिभ्कावहि। हरि दर्सनु देपनि को जावहि।
हरि दर्सनु हमि देषि कराही। फिरि आवति हो तुमिरे पाही।
इहि मति ढीठि जावनि दे देवहि। जाणे ते तिनि को हटिकेवहि।
एही कहे सभ जोषिता ताई। ग्वारि ढीठि बिंद्रावनि माही।
तुमि तिहि ढीठो पहि किउ जावो। कित कौ अपुनी लाज गवावो।
केतकि जोपता जुरि के धाई। चली चली विंद्रावनि आई।
केतकि पति भवन महि डार्यो। ताहि वाहरि जंद्राला मार्यो।
तिहि ताई पति जाण न देउो। एहि कार्णु बिपों ने कीउो।
जो गई विंद्रा बनि के माही। जो कछु सा उनि जोपिता पाही।
षडि कौलापति पहि ठहिरायो। मुषि अपुने ते वचनु सुनायो।
क्रिपा करो करि भोजनु पावों। मुषि अपुने ते वचनु सुनावों।
सुप्रसन्न होइ भोजनु पायो। श्री नंद नंदिन तव ही सुनायो।
चतुरि भुजा होइ वैकुठि जावो।
वैकुंठि महि तुमि वहु सुषु पावो।
तवि विप वनिता विनतीं ठानी
पति विनु कहा जाहि शारंगपानी
श्री गोपाल कह्या पति ले जावो।
अपुने पति तुमि सहिति चलावो।
अवि जावो अपुने ग्रहि माही
जवि तुमि वाछो पाहो ताही
विप जोषिता सभ कह्यो पुकारी।
तुमि दर्सनु पायो वनिवारी।
इहि दर्सन की वहुत प्यासी
घटि घटि के तुमि अंतरि वासी
पद्मज मघवा जत्न कमाए।
तुमि दर्सनु तिन भूल न पाए।
जो हमि प्राप्ति भयो मुरारी।
हमि इसि छवि ऊपरि वलिहारी।
कहा कामु जो ग्रहि कौ जावहि। चर्नि कमल से दूरि परावहि।
सकल जोषिता हरि ध्यानु लगाया हरि के ध्यान सो प्रानि

इहि जो दर्सन को चलि आई। महा पर्मि गति इनि ने पाई ॥
दर्सन करि प्रभि को फिरि आई। अति अनंदि मगल वहु गाई ॥
तिन के पति ने तिन को कह्या। धन्न भाग तुमि हरि पहि गया ॥
हमि को भी क्रितार्थि कीना।
तुमि श्री क्रिष्ण को भोजनु दीना।
हमि सभि विप विद्रावनि माही।
होम यज्ञ करि ताहि मझाही।
ताहि हमि पहि आए ग्वारि।
कह्यो पठाया हमहि मुरारी।
तुमि हमि ताईं भोजनु देवौ।
सुप्रसन्नि चितु हमहि करेवौ।
तिहि समे मूढि मत्ति हमिरी होई।
हमि वीच से सुर्ति ना कोई।
वेदि सिम्रिंति एह ही भापहि।
हौम यज्ञ करिहो इहि आवहि।
होम यज्ञ इहि कार्ण करही।
राम नाम को सदा उचरही।
श्री क्रिष्ण को दर्सनु पावहि।
होम यज्ञ इसि वाति करावहि।
सो प्रभ फिर्ते हैं वनि माहि
बिंद्रावनि महि धेनि चराही।
हमि मति तिहि समे अहिराई।
हमि पहि तिहि कछु दीआ न जाई।
हमि सभ महि किसे एहि न भाष्यौ।
इहि विधि किने न मनि महि राष्यौ।
भोजनु प्रभु ले मांगनि आए।
इहि विधि तवि किसे नां उचिराए।
तुमि ने हमि कहु वहु सुषु दीआ।
श्री क्रिष्णचंदि को दर्सनु कीआ।
धन्न धन्न मति तुमिरी भामा। तुमि ने ऐसो कीनो कामा ॥

हमि को तुमि ने मुक्ति कराओ।
तुमि प्रजोग हमि ने सुषु पायो।
ऐसे विपो वचनि उचारे। साईदास सदा वलिहारे।५६।

इति श्री भागवतें महापुराणें दस्म स्कंदे
श्री शुकदेव परीक्षति स वादे त्रिविंशतिमोध्यायः ॥२३॥

गोपीनाथ गोविंद मुरारे। कौलापति त्रिभवनि दातारे॥
वैन वजावंति ग्रहि को धाए। कंति क्रीडा गोकलि महि आए॥
नंदि महिर वृक्षिभानु तहा ही। गोप सकल गोकलि के माही॥
मघवा की वहु पूजा करही। वर्षि वितीति होए चित धरही॥
सुरपति की पूजा चितु लायो। वालि वृद्धि ईहि कामु कमायो॥
ग्रहि ग्रहि महि मिष्टानु करावहि। करि इकि ठौर सभ विप पलावहि
नंदि महिरि सौ कृष्ण सुनायो। हे पिति किउं मिष्टानु करायो॥
ग्रहि ग्रहि महि जो आनंदु कीआ। मिष्टानु पकिवानि को चितु दीआ
कहा करो इसु मोहि सुणावौ। तौ मैं जानो कहा करावौ॥
नंदि महिर ताकहु प्रतु दीना। इहि प्रजोग हमि ने इहि कीना॥
राजा इंद्र अति वलिकाई। ताहि सेव करि हमरे भाई॥
इकि वर्षि पाछे पूजा करही। तिहि सिमरनु मनि अंतरि धरही॥
मघवा हमि परि सुप्रसन्न होवै। मेघु वसावै वहु दुःख खोवै॥
मेघ पडे त्रिणु वहुता होई। भूमि सकल परिफुल्लति होई॥
अधिक अनाजु उपिजावै। सभ ही लोकु महा सुषु पावै॥
तवि नंदिनंदनि एहि वषाना। ताकहु वलु कहा कछु उपिजावै॥
मघिवा कौ जौनु जो वर्षा लावै। ताकहु वलु कहा कछु उपिजावै
सुगुरु[1] विनु आजा क्या करही। साईदास वां से क्या सरही।।५

अवि ते सुरपति कछू न देवो। मोहि कहा मन महि धरि लेवो॥
हे मोहि पिता गोवर्धन जावो। तहा जाइ मिष्टानु करावो॥
विपो को वहु भोजनु देवौ। सुप्रसन्न तिहि चितु करेवो॥
विप पलावो तुमि धर्मु होई। ब्रह्म भोजु तुमिरो दुःख षोई॥

---

१ यहां अब यह शब्द इन्द्र के अर्थ में आया है।

मेघ अधिक तबि वर्षा लावहि। होइ अनाजु मेवे उपिजावेहि॥
नंदि महिरि गोप कह्यो पुकारे। सुण हो गोपो वीर हमारे॥
श्री कृष्णचंदि मोहि एहि सुणायो।
मघवा भोज तुमि काहि करायो।
वर्षि न जाइ ब्रह्म भोजु करावो।
ब्राह्मण के संदि के ताहि पलावो।
मेघ अधिक होवहि सुप पावो।
त्रिण होइ अधिक सो धेन चरावो।
जो इहि कहे होइ फुनि सोई।
इसि वचि मेटि न सकै कोई।
जो इहि कहे सोई हमि करही।
श्री कृष्ण कहा मनि अंतरि धरही।
नंदि महिर विषभान सुनाई।
त्रिषभान इहि विधि मनि ठहिराई।
गोप सहित सभि संग चलाए। श्री गोपाल जवि ताहि बताए॥
अग्रितु ले गोवर्धिन धाए। तहा जाइ मिष्टानु कराए॥
अधिक विपो को भोजनु दीना। सुप्रसन्न आत्म तिहि कीना॥
श्री मुरारि तहा लील्हा धरी। एक रूपु कीनो वनिवारी॥
गर्वधिनि ऊपरि रूपु बैठिलाया। लील्हा कर्के ताहि टिकाया॥
गोप जोपिता सविल पूछाई। प्रीति भई तुमि रूप गुसांई॥
तवि वहि रूपु प्रतु इहि देवै। प्रीति भई आत्म सुपु होवै॥
इहि प्रजोग रूपु प्रभ कीना। सकल गोप को भ्राति हिरि लीना
गोप प्रतीति करहि मनि माही। इहि न कहे ईहा कछु नाही॥
विपो को भोजनु भलो दीना। ग्वर्धनि को प्रदक्षिणा कीना॥
हाथ जोरि मुषि ते उचिरायो। ताहि रूप कौ आषि सुणायो॥
हे हरि रूप मेघ वहु होवहि। तांते गोप भ्रात मनि षोवहि॥
हे साधो मनि दया वसावो। साईदास अहि निस गुण गावो॥५८

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चतुर्विंशमोध्यायः॥ २४॥

गोप सकल ब्रह्म भोजु करी आए।
ब्रह्म भोज करि गोकल धाए।
वैनि शब्द कर्के सुणु दीना।
श्री कृष्णचंदि इहि कार्णु कीना।
एक दिन नार्द ने क्या कीआ।
मघिवा पुरि जावनि चितु दीआ।
मघिवा सौ तिन कह्यो सुणाई।
सुण हो मघिवा मेरे भाई।
नद महिरु गोकलि विषे रहे। सकल गोप ताहूं सग अहे।।
तुमिरी पूजा वही करावहि। तुमि यज्ञ कर्न को चितु लावहि।।
कृष्ण नामु सुन नंदि को भाई। तिन ही गोप को कह्यो सुनाई।।
मघिवा को यज्ञ तुमि ना करहो। यज्ञ कर्नि गोविद चित धरहो।।
सुगरि नार्दि सौ सुण पायो। अति क्रोधु मनि महि ठहिरायौ।।
उठ सादित मेघ लीओ बुलाई।
तिहि को कह्यो सुरिपति समिझाई।
गोकल परि जाइ वर्षा लावो।
गोकलि को तुमि मूल गवावो।
सुरपति ने तिहि एहि सुणाया।
अदि सादित मेघु तवि ही चलि आया।
वार शनिश्चरि पौणु चलायो।
पाछे अहिरिण की वर्षा लायो।
कंकरि की वर्षा फिर लाई। क्रोधु कीयो मघवे अधिकाई।।
गोप जोषता सभ संग ल्याए। श्री कृष्णचंदि पहि आइ ठहिराए।।
करि जोरे मुख विनती ठांनी। हम वलि जावहि सारग पानी।।
तुमि विन ओटि न होइ हमारी। मघिवा क्रोधु कीओ अति भारी।।
हमि सभ को इहि मारि चुकावै। नीर माहि हमि प्रांन हतावै।।
त्रैलोक को नाइकु स्वामी। सकल घटा के अंतरि जामी।।
मनि महि प्रभ लीओ बीचारी। सुरपति क्रोधु कीयो अधिकारी।।
श्री कौलापति ने क्या कीआ। गोप सहाय प्रभ ने करि लीआ।।

गवर्धनि को काटि प्रभ लीना।
करि नान्ही अगुरी परि ठांर्या कीना।
ले करि गोकलि परि ठहिरायो।
गोप सकल सुरिह तले छपाया।
सभि ही ने आश्रमु आइ लीनो।
गवर्धनि तले आइ वासा कीनो।
जलु कंकरि मार्त अरु दावा।
सप्त दिनस मघवा वसावा।
मानो कुसम की वर्षा होई।
गोप सुर्हो दुःख भयो न कोई।
सप्त दिनसि वर्षा उनि लाई।
पाछे से रवि दई दिषाई।
नंदि जसोदा ने क्या कीआ।
श्री कृष्णचंदि को उर महि लीआ।
ले अग महि मुष परि करि फेरहि।
श्री ब्रिजनाथ केरा मुष हेरहि।
नंदि महिर ब्रिष भान जवि कह्या।
प्रतक्षि कृष्ण हमिरे ग्रहि अह्या।
केतकि उपाधहि हमि परि आई।
इनि कान्हरि ने दूरा कराई।
जो इहि ना होता तो क्या कर्ते।
कैसे सुख मनि अतरि धर्ते।
गोविद इसि की करे कल्याना।
सकल गोप मनि महि इहिआना।
हमि को इनि ने लीओ छडाई। सांईदास प्रभ सदा सहाई ॥५९

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पचविंशतमोध्याय: ॥२५॥

मघवा लज्जामान होइ धायो। श्री कांन्हरि के आगे आयो ॥
पीतंब्ररि उरि माहे डारा। चर्नि गहे मुष वचन उचारा ॥

मै अपिराधी मति का हीनु। कहा उस्तति करहो मै दीनु॥
तुमिरा अंतु कौणु कोई पावै। तुमिरा अंतु पावना ना आवै॥
हमिरा औगुणु जाणि मिटावौ।
अपुनी करुणा वेग करावौ।
एक दिन गोप नंदि पहि आए।
नदि महिर सौ आष सुणाए।
हमिरे ग्रहि कछु रूप नराइण।
प्रगटि भयो त्रिभवनि को साइण।
हमि मति हीन गवारि अहीर।
इहि कौलापति गहिर गभीर।
अनकि अनिकि लील्हा इनि कीने।
अति अपिति ग्रहु मार्के दीने।
प्रथम अष्ट दिनसि क्या होना।
वकी मारि करि हमि दुःख पोया।
वहुरो एक मास का भया।
गाडा करि ल्लो सो डारि दया।
करि पल्लो सो दीओ रुढाई।
तवि हमि को इहि चतुं दिपाई।
एक वर्षि को पाछे भया।
त्रिणावर्ति को ताहि हति लया।
पांच वर्ष जो अवस्ता पाई।
तव कांन्हरि इहि रचिन रचाई।
मापनु जमुमत का ले धाया।
मर्कटि को पडि आण षवाया।
जसुमति तव इसि पाछे धाई।
जाह तिन गह्यो कौर कन्हाई।
जसुमति ऊपलि सहिति बधावो।
श्री गोपाल के मनि महि आयो।
जुमला अर्ज्जुन को निस्तारो। नार्दि ऋषि को श्रापु निवारो॥
तुम करहि वांछहि वह्न त्रिष भये श्री कृष्ण ऊषल सहित तहा गए

भूल से व्रिक्षि काटि निकारे। इहि लील्हा कीनी तत्कारे॥
वहुरो वछिओ को ले धाए। करि कलौल व्रिद्रावनि आए॥
दुष्ट अघासुरु वनि महि आयो। ताको प्रभ ने वेग हतायो॥
सुण हो जसु गोप नंदि सुणावहि। सांईदास विधि सकल वतावहि॥६०

पर्वासुरु आयो वनि माही।
नाहि हत्यो धेनिकि सहिताही।
कालीनाग को मारि निकार्‍यो।
तिहि कुडि अंभु मीठा करि डार्‍यो।
ग्वर्धिनि को हरि लीयो उठाई।
गोप लील्हा प्रभ नंदि सुनाई।
जो इहि लील्हा को चित धारे।
श्री गोपाल तिहि अधमि निवारे।
गोप लील्हा सभ आखि सुनाई।
सांईदास सुण करि सुखु पाई॥६१

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे षडविंशमोध्यायः॥२६॥

नंदि महिरु गोपो समझावै।
नीक नीक विधि नाहि वतावै।
तुमि अजहूं इसि विधि ना जानी।
कांन्हरि लील्हा नांहि पछानी।
र्गगि स्वामि मोसो आषा।
कृष्ण चिहनि कांन्हरि के भाषा।
वसुदेव के ग्रहि भी इहु आवा।
जहा आइ देवकी गर्भि पाया।
एकु नामु इसि को नही माई।
मोको र्गगि ने एहि वताई।
प्रतक्षि कृष्ण आयो हमि माही।
हमि इसि लील्हा जानी नाही।

अजहू लील्हा करे अनेका।
पूर्ण ब्रह्म है बुधि ववेका।
हमि मति हीन ग्वार अधीना।
इहि कौलापति ज्ञान प्रवीना।
हमिरे परि करुणा इनि धारी।
पग दीने हमि अहि बनिवारी।
सुरपति ने मनि एहि वीचारा।
मैं औगुणु कीनो अति भारा।
सप्त दिनस मैं मेघु वसायो।
गोकल पूर्न को चितु लायो।
श्री जदुनाथ सप्ति दिन ताईं।
ग्वधंनु लीओ करि पल्लो पाईं।
मोहि सरि किनहूं न औगुणु कीना।
मघवा ने इहि मनि महि लीना।
कामधेन सुगरु संग लीए। श्री बिद्रावनि को पगि दीए।।
श्री कृष्णचद की सर्नी आवो। अपुने सिरु तिन तले करायो।।
द्रिग हरि सेती जोड नि साके। सुकिचमान होइ प्रभ सों ताके।।
सुकिचमान होइ ठांडा भया। अति अधीन सुकिच मनु रह्या।।
कामधेनि मघवा सौ भाषा। सांईदास आगे होइ आषा।।६२

तव मघवा आगे को आया। काम धेनि जवि ताहि सुनाया।।
सुगरि ने करि जोड कराही। प्रभ सो विनती कीनी ताही।।
मोहि सरि औगुणु औरु न कोई।
दूजा इसि जग ऊपरि होई।
मोहि औगुण हरि चित न दीजै।
इहि करुणा प्रभ जनि परि कीजै।
दीनानाथ कौलापति केसर।
मुषि से कह्यो प्रभ सक्लि विसेस्वर।
सुरपति मतु कछु मनि महि आनो।
मतु तुमि इहि विधि हृदे पछानो।

मोहि यग्य प्रभ दूरि करायो।
मो सो इही वेरु कमायो।
मैं तोह यग्य दूरि ना कीना।
तुमि को क्रितार्थु करि लीना।
इहि प्रजोग आइ दर्सनु कर्यो।
हमि चरना सेती चितु धर्यो।
जैसे पद्मज सभ रिषि आए।
दर्सनु करि फिरि वैकुंठि सिधाए।
तुमि अपुना चितु ठौरहि राषो।
श्री गोपाल की उस्तति भाषो।
कामधेनि सुगरि प्रतु कीना।
मघवा को तिहि इहि कहि दीना।
तुमि परि गोविंद किर्पा धारी।
दर्सनु दीने तोहि मुरारी।
कामधेन प्रभ आष सुणाया।
श्री गोपाल संतनि सुषदाया।
तुमिरी उस्तति कहा वषानो।
मैं तोहि उस्तति को कहा जानो।
ऐरापति गंगा जलु ल्याया।
कामधेनि इस्नानु कराया।
कामधेनि फिरि हरि सौ भाषा।
करि जोरे ऐसो ही आपा।
श्री नंदनंदनकौरि कन्हाई।
मोहि उस्तति कछु कही न जाई।
जहा कहा तुमरे संतनि ताई।
नग्नि भूमि होवै अधिकाई।
तवि तुमि हरि को आज्ञा करहो।
अपुने वचु ऊपरि हमि धरहो।
ता मैं सभ कछु आगे ल्यायो।
भोजनु दे अंवरि पहिरावो

तुमि आज्ञा करि सभ किछु होई।
जो तुमि कहो करहि हमि सोई।
कामधेनि इहि बिनती ठानी।
श्री कौलापति मनि महि आनी।
फिरि सुगरु आयो हरि पाई। करी प्रकर्मा सीसु निवाई।।
नमस्कारि करि बिदआ पाई। अपुने पुरि को चलियो धाई।।
चला चला अपुने पुरि आयो। सांईदास मघवे सुष पायो।।६३

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे सप्तविंशमोध्याय: ।। २७ ।।

एकि दिन व्रतु एकादशी आयो।
बिंद्रावनि महि मगलि गायो।
पडिति वेदि पढिति अधिकाई।
तिहि पडिति ने एहि बताई।
दो घटी द्वादशी तिहि दिन भाई।
सकल पंडिति एहि वाति सुनाई।
जबि सभि पंडति इहि विधि भाषी।
तव नदि गोप सकली विधि लाषी।
मध्य रैनि माहे उठि धाए।
तटि रवि दुहिता जा ठहिराए।
तहा जाइ करि जागनु कीना।
जमुना तटि परि वासा लीना।
भई बितीति मध्य जबि रैन।
उडगनि बहु चमिकति प्रगटैन।
यमुना अभ माहे पगि धारे।
चर्नि पपार पान पषारे।
सकल गोप अभि पगि दीए।
भली भांति इस्नानु तिहि कीए।
तहा दूति नृप वर्नि के आए।
नंदि मंदिर को ले उठि धाए।

नंदि महिर कौ वाधि कराही।
ले गए तव नृप वनि के पाही।
गोप अभि तजि वाहिर आए।
तिहि आपसि महि प्रश्न चलाए।
सभ ही गोप नंदि जी नाही।
तव ही पुकारि उठे अधिकाही।
श्री कृष्ण कृष्ण करि वचन उचारे।
सुण हो राम तुमि प्रांन अधारे।
नंदि महिर को को ले धाया।
अभि से फिरि वाहिरि ना आया।
जवि कौलापति इहि सुण पाया।
तवि मनि महि विस्वासु कराया।
असुरु कहा वलु जो ईहा आवहि।
ईहा आइ करि वलु दिपलावहि।
वनि के दूतो षड्यो दुराई।
सभि विधि जाणे कौर कन्हाई।
तात्काल अंभि महि पगि दीना।
वेग विलम कछु मूल न कीन्हा।
गयो पताल प्रभु विलम न कीनी।
औरु वाति कछु हृदे न लीनी।
निकटि सिहासन वनि के आयो।
नृप वनि प्रभ को निर्षायो।
त्याग सिंहासन उठि करि धाया।
सांईदास हरि पग चितु लाया॥६४

वनि करी विनती प्रभि पाई।
मैं तोहि सर्ना नाथ गोसाई।
मोहि दूति नदि को नाहि पछाना।
इहि प्रजोग ईहां तकि आना।

तुमि करुणा अपुनी प्रभ धारो।
हमिरे औगुण नाहि विचारो।
राजु मालु प्रभ तुमि ने दीआ।
हमिरे परि आजु करुणा कीआ।
आजु तो हमिरी भई कल्याना।
तुमि पगि हमि मस्तिकि ठहिराना।
विनती करि नृपु चर्नि सिधाया।
ततक्षिण भवन माहे वहु आया।
मोतनि की माला ले आयो।
श्री कृष्ण चर्नि आगे ठहिरायो।
प्रभि की उस्तति अनकि वीचारी।
तू करुणा निधि कुंज विहारी।
तोहि पग रजि जिहि मुकटि परि आवै।
आवागौना ताहि मिटावै।
इहि विधि कहि नंदि को ले आयो।
श्री मुरारि पहि प्राण टिकायो।
श्री कृष्णचंदि पित को संग लीआ।
गोकलि के मग तवि पगु दीआ।
ततक्षिण वीच गोकलि महि आया।
नंदि वार्ता गोप सुनाया।
इहि वाल्कु हमिरे भगवाना। पूर्ण ब्रह्म मैं हृदे पछाना।।
वर्नि के दूति मोहि पकिडायो। वर्नि पाहे षडि के ठहिरायो।।
जैसे को काहू वदि भाई। वंदी ज्युं राष्यो हमि ताई।।
हमि वाल्क ऊहा पगि धारे। वर्नी तवी इनि लीओ निहारे।।
तजि सिंहासनु चर्नी लागा। गर्वु गुमानु सकल उनि त्यागा।।
अपुने पग सेती चलि आया। आइ कृष्ण आगे ठहिराया।।
चर्नि वदिना इसि सों कीनी। अति प्रदक्षिणा प्रभ को दीनी।।
इहि प्रजोग मैं प्रभु करि जाना। पूर्ण ब्रह्म करि हृदे पछाना।।
नंदि महिरि विधि गोप सुनाई। सांईदास प्रभ सदा सहाई।।६५

एकि दिन कृष्ण हृदे ठहिराई।
इनि लोको मोहि गति ना पाई।
इनि को दर्सनु वैकुंठि करावो।
नंदि महिर सहिति भर्मु हिरावो।
एहि गोग[1] मति इहि है थोरी।
जानति नाही है गति मोरी।
मै गोवर्धनि सप्त दिन ताई।
राख्यो है पल्लो करि पाई।
मघवा क्रोध ते लीए छडाए।
अपुने रूप मै इनहि दिषाए।
इन्ह अजहू मोहि नाहि पछाना।
मानसु अपुने मनि करि जाना।
कमल नैन तहा लील्हा धारी।
विंद्रावनि महि लाल विहारी।
प्रतक्ष वैकुंठि विंद्रावनि आना।
ताकी लील्हा सकल वषाना।
जो कोऊ विंद्रावनि माही।
चतुरि भुजा सभ देत दिषाई।
एक एक महि वेद वषाने। पद्मज शुक देउ जो विधि जाने।।
सन्क सनंदन सन्त कुमार। निर्ति कर्ति इकि इकि के द्वार।।
नंदि महिर गोप सभि ताई। ग्वानि सकले ताहि समझाई।।
सभ को दर्सनु वैकुंठि कराया। सकल गोप को भर्मु हिराया।।
वहुरो आए गोकल माही। ताहि अनदु भयो अधिकाही।।
शुकदेव नृप परीक्षति समझावै। हे नृप मतु तूं इहि मनि ल्यावै।।
वैकुंठि से गयो फिरि ना आवै।
इहि मेरो मतु सचर पावै।
जैसे सुपलकि सुत दिषलायो।
तैसे सकल गोप निर्षायो।

---

[1] यहा शब्द 'गोप' चाहिए

यमुना अंभि महि ताहि दिषारा।
तैसे प्रभ अवि लील्हा धारा।
श्री कृष्ण चदि को जसु जो गावै
सांईदास फिरि योनि न आवै ।।

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अष्टाविंशमोध्याय: ॥२८॥

एक दिन श्री कृष्णचदि क्या कीआ। वछे छाडि तांको पै दीआ।
वछडो को मारो पीरु पीवाया। मध्य रजनी वनि को ले धाया।
पूर्णमाशी की सी रैना। ससी अर पूर्न चढिउो कीना।
जा विंद्रावनि वैंन वजाई। जिन वचु सुणयो सुर्ति भुलाई।
ग्वार्नि ने सुणया व्रिज माही। मगन भई सभ सुर्ति विसराही।
ऐसी मग्नि भई व्रिज नारी। तनि की सभ सुर्ति विसारी।
जो कोई पीर सीत सी कर्ती। त्याग चली मुर्ली धुनि सुनती।
जो कजिरा द्रिग माहे डारे। एक द्रिग डार्यो दूजा विसारे।
जो कोई सुरहो को दोहनि लागे। सुरण वसी धुनि दोहनि त्यागे।
जो कोई अंवरि अंग उढाए। अंवरि त्याग नग्नि ही धाए।
जो कोई ग्रहि महि पाकु लगाए। पाकु त्याग आतरि होइ धाए।
जो सग पुर्प सेज समाही। सेज वाछहि गई बिंद्रावनि माही।
जो जो कामु कर्ति सी कोई। सकल त्याग दौरी फुनि सोई।
जोषिता ग्वारि कंन्या सभ आई। जहा कृष्ण जी वैन वजाई।
जलु यमुना जो चलया जाई। ठटकि रह्यो हरि वैन वजाई।
यमुना जलु सागरि उौर जावै। मगन भयो चलिना नही पावै।
ससीअर निर्ष रह्यो विसमाई। हरि लील्हा को पारु न पाई।
ग्वार्नि प्रभ ाोरि घेरा पाया। प्रभ सभन के बीच समाया।
सकल ग्वार्नि को प्रभ ने कह्या। तुमि ने त्रासु कवन को लह्या।
व्रिज महि तो कोई असुर्न आया। ताहि असुर ने तुमहि संताया।।
श्री गोपाल तिहि कह्यो सुनाई। सांईदास प्रभ वच वलि जाई ।।६

ग्वार्नि ने तवि प्रभ प्रतु कह्या। हे कौलापति क्या उचिरह्या।
असुरो का वलु कहा वसावै जो विंद्रावनि माही आवै

श्री कृष्ण कहा कहे तुमि आई। मध्य रैनि विषे वनि के माही ॥
तवि सभि ग्वार्नि एहि वषानी। मग्न भई हमि सारगपानी ॥
तुमि सभ विधि जाननिहारे। काहे पूछति हमि हि पुकारे ॥
हमिरे अंतरि की तुमि जानो। काहे को तुमि वहुरि वषानो ॥
श्री कृष्ण कह्यो ग्वार्नि के ताई। जावो तुमि अपुने ग्रहि माही ॥
ग्वार्नि फिरि कह्यो जदुराई। कहा जाहि हमि कौर कन्हाई ॥
कमल नैन वहुरो इउ भाषहि। ग्वार्नि को विधि एही आषहि ॥
तुमि जावो अपुने ग्रहि माही। भजनु करो हमिरो ग्रहि ताही ॥
अपुने ग्रहि वहि स्मिरनु करीए। हमिरे चर्नि से ती चितु धरीए ॥
मै सभ ते उसि को भला जानो। ताहि कहा मै अंतरि मानो ॥
तुमि पति अरु सुत वहु विविलाही। रुदनु कर्ति है वहु मनि माही ॥
जो कोई सीलु अपना द्रिढ राषहि। सो परि पुर्प की वात न आषहि ॥
ग्रहि से पगु वाहिरि ना डारे। पति अपुने ठौर स्याम निहारे ॥
जो अपुने पति की करे सेवा। ताकी वांछा पूरै देवा ॥
ता परि मै होवौ सुप्रसन्न। देवो मो जो वांछे मन्न ॥
मै उसि को वेकुठि पठावौ। मनि वांछे सो कछु पहुचावो ॥
जोपिता पति को हरि करि जाने। हरि पति महि अतरु नही आने ॥

जिस जोपिता पतु जीवतु होई।
तिस तीर्थ व्रतु वर्न्यो न कोई।
तांको व्रितु नेमु ना आपा।
जो वहुरापे प्रभ इहि आषा।
अपने पति की सेवा करै।
ताहू चर्नि सेती चितु धरै।
श्री कृष्णचंद जवि इहि विधि ठानी
सांईदास ग्वार्नि विस्मानी ॥६८।

ग्वार्नि सीसु तले को कीआ।
रुदनु कर्नि को उनि चितु दीआ।
राधिका रुदनु त्याग करि दीआ।
श्री कृष्णचद को तिन प्रतु दीआ।

तुमि जु कहा प्रभ हमिरे ताई।
पति सुत तुमिरो रुदनु कराही।
कमलापति पूर्ण भगवान।
पति सुत केहा होइ तोहि स्मान।
बहि तो एक दिन छाडहि प्राना।
तुमि पूर्ण हो पुर्ख निधाना।
तुमि पारब्रह्म निर्भौ नरंकारा।
कर्ता पुर्खु तू अपर अपारा।
तुमिरी गति मिति कौण बषाने।
तुमिरी लील्हा कौनु को जाने।
ऐसी विधि काहे को भाषो।
हमि सौ अैसी बाति किउं आषो।
हमि जावे जो पग हमि जावहि।
पति सुत के जाइ दर्सनु पावहि।
केतकि के पति ने क्या कीआ।
जा करि बनि ने जुषता लीआ।
आनि डारी भवनि के माही।
तिह को जावनि देवहि नाही।
तिहि हरि चर्ना ध्यानु लगाया।
मगन भई सभ सुर्ति भुलाया।
तिसी ध्यान महि तजि दीए प्राना।
मुक्ति भई मिट्यो आवनि जाना।
चढि बिवाण वैकुंठि सिधाई।
महा पर्मि गति तिन ने पाई।
नृप बोल्या सुखदेव सुनाया।
जोषता भवन महि तजे प्राना। तिहि कैसे पाई पर्मि कल्याना॥
शुकदेव प्रतु नृप ताई दीना। एहि प्रश्न भलो तै कीना॥
सस पाल असुर संग बिरोधु कमाया। तांको प्रभ वैकुंठि सिधाया॥
सतिर गुण को कीओ पार गिरामी। पूर्ण ब्रह्म हर अंतर जामी॥
जोही तीय जीउ प्रीति महि दीआ। हरि सेती बहुता हितु कीआ॥

तिहि कल्याण होवै किउ नाही। इनि ने प्रीति करी मन माही।।
वहुरो श्री कृष्ण कहा तुमि जावो। ग्रहि अतरि जाइ भजनु कमावौ।।
राधिका फिरि कह्यो हरि ताई। तू हमि को कहा वाति सुनाई।।
जमुना जलु तीर ठहिराना। मग्न भई तुमिरी गति जाना।।
मग्न भए मृग विंद्रावनि माही।
त्रिण न चरहि सुरिह सुधि विसराही।

हमि तो मानस है प्रभ तेरे।
कहा कहे हमि आगे तेरे।

जबि राधा जी एहि वषानी। तवि करते गही सारग पानी।।
लेइ कि कंदरा माहे वडिग्रा। ग्वानि चतुर्दिस घेरा करग्रा।।
ताहि भवन महि फिर्त जदुराई। सग राधा जी अधिक सुहाई।।
तहा षेलति ग्रति ग्रानदि माही। ग्रति ग्रनंद मगल वहु गाही।।
ग्वानि मनि महि गर्वु वसाया। हमि सर दूजा जग ना ग्राया।।
हमि सग षेलति है वनिवारी। तटि यमुना श्री कुंज विहारी।।
निवर्ति कर्नि गर्वु इनि केरा। राधा सग चल्यो प्रभ मेरा।।
राधा सहित लई उठि धाया। ग्वानि त्यागी सभ यदुराया।।
मन महि गर्वु करो नही कोई। साईदास पूर्न सुषु होई।।६९

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे नवविशमोध्याय: ।।२९

ग्वानि सकली रुदनु कराही। कृष्ण विछोरे वहु दु:ख पाही।।
तव ग्रापसि महि मतु ठहिरायो। चलिहो जो है यादम राया।।
ग्वानि इहि मतु करि उठि धाई। जोहित प्रभ को वनि के माही।।
प्रथम ग्वानि गगन सुनाया। श्री कृष्णचदि विनु वहु दुखु पाया।।
तुमि तो धर्म स्त्रिष्ट कहावो। इंद्रभान की रप करि ग्रावो।।
उडगन तुमिरी छाया रहै। मोहि कृपा करि ग्राश्रमु लहै।।
श्री कृष्णचंद जो तुमि कहूं देषा। हमिहि वतावो वुद्धि सरीपा।।
एते जीइ की होइ कल्याना। तुमि तो गग्निपूर्ण निर्वाना।।
ता कहु प्रतु ग्राकाश न दीग्रा। तिह का वच्चु तिन हृदे न कीग्रा।।
वहुरौ गवनु तहा सौ कीना सम ग्वानि ग्रागे पगु दीना।

सभ वनु ढूडि थकी बौराई। सभ वन त्याग विंद्रावनि आई ॥
कदम त्रिक्ष सौ तिन्हहि सुनायो। तुमि सौ हरि वहु हेतु वढायो ॥
तुमि संग हेतु अधिक गिर्धारी। हमि मनि अंतरि एहि वीचारी ॥
जो तुमि ने कहूं हरि निर्पाए। करुणा करि हमि देहु वताए ॥
तुमिरा धर्मु होई अधिकारा। हमि को मिलही प्रान अधारा ॥
नाहति हमिरे निकसति प्राना।
इहि विधि तुमि मनि लेहु पछाना।
कदम त्रिक्ष कछु वचनु न कीना।
ग्वानि शोकु अधिक मनि लीना।
पग नवि ग्वानि आगे दीने। वटि को त्याग गवनु तिहि कीनै ॥
चली-चली पीपल पहि आई। रुदनु कर्ति सभ सुधि वौराई ॥
पीपल को जाइ पूछनि लागी। डौर वाति सकली उनि त्यागी ॥
हे पीपलि तुमि पतनि उधार्न। महा पवित्र प्रान अधार्न ॥
कमल नैन कहूं देष्या होई। हमि को देहि वताई तू सोई ॥
चाहति अवि सकली जीउ देवहि। प्रान घात अपुने करि लेवहि ॥
पीपल भी कछु नाहि सुनायो। सांईदास ग्वानि दुःख पायो ॥७०

ग्वानि फिरि आगे कौ धाई। जहा जगम आहे अधिकाही ॥
ताकौ ग्वानि आप सुनायो।
श्री कृष्ण फिर्ति तुम महि अधिकायो।
हमि को कृष्ण जी तुमि वतिलावो।
वेग विलम कछु मूल न लावो।
नाहिति प्रान निकस हमि जाही।
हमि ताई कछु सूभति नाही।
जगम भी कछु प्रतु ना दीना।
ग्वानि का वचु हृदे न कीना।
वहुरो धर्नि से ऐसे आषहि।
अपुने मन की विर्था भाषहि।
तोहि ऊपरि नित प्रति हरि फिरही।
अध्कि चर्ति प्रभु तुमि परि करही।

तुमि तो धर्म विषे वहु नीकी।
इहि विधि हमि आषी है जी की।
त्रिणु मेवा अन्नु तुमि ते होई।
तुमि बिनु औरु करे ना कोई।
सकिल त्रिष्ट को तुमि सिरि भारा।
तुमिरो नामु है परि उपिकारा।
तोहि ऊपरि सभु जग्तु दसावै।
जीव जत जो कछु द्रिष्ट आवै।
श्री कृष्णचदि को देहु वताई। हमि वचि सुण ले वसुधा माई।।
वसुधा भी ना दीओ विचारा। हार परी सकला वलु हारा।।
तुलिसी सो फिरि कीओ पुकारा। तुमि कहू देपे प्रान अधारा।।
तुमि सौ तांको वहु हितु होई। हमि को देह वता करि सोई।।
तू तो सदा रहे संग ताके। कैसे वछोहो तुमि पायो वाते।।
षग मृग कोकल सकल पुछाए। तिन ने किम ते प्रतु ना पाए।।
वहुरो तिन इहि मतु ठहिरायो। सुण हो साधो हितु चितु लायो।।
रास लील्हा प्रभ जहा कराई। तहं ठौर वैसे हमि जाई।।
बिद्रा वनि को तव तजि आई। रवि दुहिता तटि आइ ठहिराई।।
जैसे प्रभ जी वैन वजावति। तैसे ग्वार्नि वचन सुनावति।।
वहुरो ग्वानि[1] वचन उचारे। कहा गए हमि प्रान अधारे।।
ताको दर्सनु कहा ते पावहि। तिस विनु मनु हमि कासो लावहि।।
निहवलि होइ ग्वानि वौराई। सांईदास ग्वार्नि विसमाई।।७१।।

ग्वार्नि मतु फिरि एहि वनायो। एक पिता नदु करि ठहिरायो।।
ग्वार्नि महि इकु कृष्ण वनाया। वालि लील्हा कर्नि चितु लाया।।
एकसि को जसुधा करि लीआ। एहि लील्हा कर्नि चितु दीआ।।
एक वकी को रूप वनायो। कुस्म अधिक ले केसि उभ्रायो।।
पूतना कृष्ण को अंग महि लीआ। विषु अस्थन लाइ मुप महि दीआ
श्री कृष्ण चदि ने लील्हा धारी। रग कुचिकी ससु षैंच निकारी।।
वकी के प्रान आप हिरि लीए। एहि कार्णु ग्वार्नि तवि कीए।।

---

[1] यहा 'ग्वार्नि' चाहिए छूट गया है

बहुरो कृष्ण मास इकि होए। जसुमति दु:ख सविल मनि पोए ।।
गाडे तले जाइ शैनु करायौ। तति प्रभ गाडा वेग रुढ्हायो ।।
पगि पल्लो सेती जदुराई। गाडी को दीओ वेग चलाई ।।
बहुरो वर्षि अवस्ता पाई। श्री गोपाल भक्तिन सुपदाई ।।
जसुधा भौन आगे वैठिलाया। अपनो हितु ग्रहि काम सो लाया ।।
त्रिणावर्ति असुर क्या कीआ। पवन काठि को रूपु करि लीआ ।।
कृष्ण को पकरि गगनि ते चर्या। महाराज तहा लील्हा कर्या ।।
त्रिणावर्ति को उरि से लीना। पडि मापनु मर्कटि को दीना ।।
जसुमति लकुटी ले करि धाई। आगे भागे जाति कन्हाई ।।
थक्ति भई प्रभु करि ना आयो। जसुमति ने बलु सकला हिरायो ।।
नव श्री कृष्ण कहा हमि मय्या। हमि पाछे धाई थकि रहीय्या ।।
आगे आइ जसु मति ठहिराया। जसुमति ने इहि मतु ठहिराया ।।
ऊषलि सहिति बाध्यो तवि आनि। तवि चित आयो इहि भगवान ।।
जुमला अर्जुन कौ निस्तारो। नार्दि ऋपि को स्रापु निवार्यो ।।
नंदि महिरि ग्रहि पाछे गया। तहा जाइ करि ठाढा भया ।।
मूलि से दोनो व्रिक्ष उपारे। सांईदास ऋषि तात उधारे ।।७

पांच वर्षि का कांन्हर भया। बछे चरावनि वन महि गया ।।
असुरु वमासुरु वन महि आया। वछे को रूपु माया करि पाया ।।
वछे सकल महि जा ठहिराना। श्री नद नदन नाहि पछाना ।।
श्री कृष्ण राम सों कह्यो सुनाई। सुण हो इहि विधि मेरे भाई ।।
दुष्ट बसासुरु वछे को वपु कीनो। हमि वछडों केरा सगु लीनो ।।
हमिरे मारनि कारनि आया। दुष्टि कस ने एहि पठाया ।।
मैं तुमि कहो सुनो मेरे भाई। चीति धरो मतु तुमि चुकि जाई ।।
मैं कहो बछे हेर्नि को जावौ। जिहि वारी होइ हेर ल्यावो ।।
नवि तूं कहे प्रभ वारि तुम्हारी। औह कौनु जावैं गिरधारी ।।
वछे चर्ति त्रिण दूरि सिधाए। तवि कौलापति वचि उचिराए ।।
राम वछे बहु दूरि सिधारे। सुण हो इहि विधि वीर हमारे ।।
कौन वारि वछिउ को फेरि आने। श्री गोपाल इहि बाति वपाने
राम कह्यो प्रभ वारि तुम्हारी। हमि सो पूछति है वनिवारी ।।

श्री क्रृष्णचंदि सुरा करि उठि धाए । तात्काल वछिउो निकिटि आए
दोई पगि प्रभ खलि के लीने । फेरि फेरि करि वसुधा दीने ॥
वहुरो प्रभ ने व्रिक्ष सौ मारा । मार मारि तिस जीउ निकारा ॥
असुरु वकासुरु फिर नाह आयो । वग को वपु तिन दुष्ट वनायो ॥
ग्वारि वछे सभि उदिरि महि डारे । कान्ह चुच पकरि सकल निकारे
एकि दिन सुरिह ले ताल वनि को धाए । धेनकु असुरु तहा प्रगटाए
उसि को भी प्रभि मार चुकाया । ग्वार्नि ने एहु कामु कमाया ॥
कुंडि से काली नाग निकारा । तिहि सिर परि प्रभ ने पगु धारा ॥
ता परि निर्त करी वहु भांति । अति वहु सुदर प्रभ की काति ॥
काली को दधि माहि पठाया । कुडि को जलु प्रभु मीठ कराया ॥
साधो हरि सिमरो तत्कारा । साईदास गोविद रखिवारा ॥७३

ग्वार्नि लील्हा सकली कह दीनी ।
वहुरो इहि विधि मनि महि लीनी ।
सकले वनि वहि ढूढनि को जावहि ।
मतु कहू ठौर क्रृष्ण को पावहि ।
उठि चली जोहिति हरि के ताई ।
पग हरि चिहनि पाए मग माही ।
उौर चिन्ह पगि राधा देषै ।
हिर्षमान होइ वनु द्रिग पेषै ।
तिहि पगि रजि ले मस्तक लाए ।
इहि विधि उनि मनि महि ठहिराए ।
राधा दौर भागे संग लीए । हमि परि हरि किर्पा ना कीए ॥
इहि विधि कहि आगे को धाई । राधा रुदनु र्कति निर्षाई ॥
रुदनु र्कति आगे सो आवे । अपुने द्रिग सौ नीरु ढुरावे ॥
राधा को पूछनि सभ लागी । कहु तूं प्रभ ने किउ करि त्यागी ॥
जौ इनि ग्वार्नि ने पूछायो । राधा सों इनि ने प्रतु पायो ॥
मै कहूं प्रभ सों वात सुनाई । हे कौलापति जादवराई ॥
हारि परी प्रभ पग ना धावहि । कैसे चलो पगि जाए नि पावहि ॥
जवि मै इहि विधि मुषो उचारी । [illegible] प्रतु दीनो गिर्धारी ॥

कह्यो कोव हमिरे परि चरहो।
तवि तुमि गवनु आगे को करहो।
मै पगु कांधे प्रभ के दीआ।
मन अ तरि धरि कर इहि लीआ।
मो सरि जग मै कौनु कहावहि।
उौरु कोई जग महि नही आवहि।
मोको प्रभ ने कांधि चर्हाया।
इहि विधि मैंने मनि ठहिराया।
गुप्त भए तवि ही जदुराया।
रुदनु कीयो मै दृष्टि न आया।
ऐसे प्रभ से भई न्यारी। राधा इहि विधि करी पुकारी।
साधो गर्वु हृदे ना आनो। सांईदास जसु सदा वपानो ।।७४

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे त्रिशमोध्यायः ।।३०।।

जवि राधा को दर्सनु पायो।
ग्वार्नि मतु फिरि एहि ठहिरायो।
जहा रास लील्हा कीनी वनिवारी।
तहा चलो वसै सभ नारी।
राधा सहिति लीनी उठि धाई।
तहू ठौर आइ करि ठहिराई।
तहा आइ इहि प्रश्नु चलायो।
गोपीनाथु काहे नामु धरायो।
काहे हमहि कलंकु लगावहु।
जवि हमि को बनि महि तजि जावहु।
दूर करो जो विर्दु रखाया।
उौरु विर्दु राषो जदुराया।
इहि विधि कहि फिरि एहि पुकारी।
तुमि विधि जानो सकल मुरारी।

जो कोऊ ब्रिक्ष अपुने करि लावै।
ताकहु अग्नि सो ताहि जरावै।
हमि सकल कुटंबि की लज्जा त्यागी।
आइ करि तुमरी चरनी लागी।
तुमि हमि को बनि महि तजि दीआ।
हमि सो अैसा कार्णु कीआ।
अबि हमि ग्रहि क्या मुख ले जावहि।
इहि विधि हमि मनि महि सकुचावहि।
कमल नैन माधो मकरंदन।
तुमि सनीं हमि नदि के नंदन।
अपुने करु हमि सिरि परि राषो।
गोपी नाथु नामु तवि भाषो।
पद्म कमल तुमिरे पगि माही।
सो पग आइ धरो हृदे माही।
तांको हमि कर सहिति विलोवहि।
लेइ अंभु तांको हमि धोवहि।
मन महि प्रीति करो सभ कोई।
साईदास सुपु मन को होई ॥७५

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे एकत्रिशमोध्याय: ॥३१॥

ग्वार्नि सकली आतर होई।
सुधि बुधि अपुनी तिन ने षोई।
तवि ही तिन ने कह्यो पुकारे।
जिन मछ रूपु लीओ तत्कारे।
तांको दया कहा हृदे आवै। तिसे संगु करि को फलु पावै।
जो कोई कछु रूप करि लेवै। सो मन महि कहा दया करेवै॥
जो कोई सूकर को वपु पावै। तांके मनि कहा दया वसावै॥
जो कोऊ नारि सिह वपु करहि। कहा दया हृदे माहे धरिहि॥
जो कोऊ वावन देह वनावै ताके मनि कछु दया न आवै

पर्शुराम जिन ने वपु धारा। सहस्राज्जिन को तिन मारा।।
तांके मन भी दया न आई।।
रामचद्र होइ रावण मारा।
तिन भी मनि महि दया न धारा।
सकल ग्वार्नि इहि विधि कही।
वहुरो इहि मनि माहे लही।
विरहो अग्नि तनि माहि निकारही। इहि देहा अपुनी को जारहि।।
जो कछु जोति है हमि पति माही।
जाइ मिलेगी त्रिभवनि सांई।
जो हमि को वलु उौरु न रह्या।
प्रभ विछुरनु हमि जाइ न सह्या।
विनु गिरिधरि जीवनु किति कामा।
इहि विधि बोली सकली भामा।
ऊभनि भई इति उति ते देपहि।
श्री कृष्णचंद को द्रिग सौ पेषहि।
वाजति वैनि अधिक तिहि षोरि।
प्रगटि भए आए नदि कौरि।
ग्वार्नि महि आइ ठांढे भए।
इकि ग्वार्नि जाकटि सो गहे।
मतु वहुरो हमि को तजि जावहि।
इहि प्रजोग कटि हरि करि ल्यावहि।
राधा पान परी कर देवै।
श्री कृष्णचदि मुष अंतरि लेवै।
ग्वार्नि प्रभ सों इहि विधि ठानी।
अपुनी विर्था सकल वषानी।
कुटिल कुटंव सकल तजि आई।
तौ सर्नी गति त्रिभवनि सांई।
तुमि त्याग गए वनि माही।
हमि वौरी भई कछु द्रिग न सुझाही।

कहा कृष्णा इहि धर्मु कहावे।
जो तू हमि वनि महि तजि जावे।
मदन मोहन फिरि वचन उचारे।
किउ तू तजि आई ग्रहि वारे।
बुरा कीआ तुमि ग्रहि तजि आई।
जो ग्रहि भजनु करे मै भाई।
तुमि अचावरि कंतु तुमारे।
सभ अंतरि प्रकाश हमारे।
लज्जा बहुतु भली जग माही।
बिनु लज्जा किते काज न आही।
जावो तुमि अपुने ग्रहि माही। सांईदास प्रभ ताहि सुनाई ॥७६॥

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे द्वात्रिंशमोध्यायः ॥ ३२ ॥

राधा तवि ही कह्यो सुणाही। दीन द्याल सदा सुषदाई ॥
तुमि पदि पद्म कवल जो कहई। ऐसे त्याग कहु कैसे रहिई ॥
जवि राधा इहि वाति चलाई। मदन मोहनि के मनि महि भाई ॥
आज्ञा अमरो को प्रभ दीने। तिन्हो वजंत्र करि महि कीने ॥
अमरि अनेक वजंत्र वजावहि। प्रभु संग ग्वालनि षेलु रचावहि ॥
ग्वालनि सो प्रभ लीला कीने। तिन को प्रभ ने वहु सुष दीने ॥
कोई पान श्री कृष्ण मुष देवे। श्री कृष्णचद मुष अतोर लेवै ॥
रास लील्हा कीनी जदुराई। सकल जग्त को आप सहाई ॥
षोडस सहस्र ग्वालनि तिहि ठौर।
अठिसनि रूपु कीनो जदु कौर।
इति उति ओरि ग्वालनि को रूप।
तिहि महि प्रभु कयो अधिक अनूप।
स्याम वर्नि श्री कृष्ण मुरारी।
दुहू ओरि सेत वर्नि है नारी।
अैसी सोभा ताहि बनाई।
कहा कहो कछु कही न जाई।

जैसे कनकि महि मणी जडावहि।
अधिक लाल तिहि षचति करावहि।
जैसे रजनी होति अधारे। चदि चडिही भवन होति उजारे।।
अति सुदर हरि बन्यो रूप। अति भुज सुंदर षरा अनूप।।
तिहि देषनि को सुर सभि आए। स्वर्गि त्याग त्रिद्रावनि धाए।।
अद्भुति रूपु बन्यो जदुराई। सांईदास निर्ष सुप पाई।।७७

ग्वार्नि रूप सुन्यो चितु लाई। एक एक सभ देवो बताई।।
काहू केस बदन छिर परे। काहू सिर ते अंबरि करे।।
काहू मुष परि मुढिह को आयो। काहू द्रिग से नीरु वहायो।।
कहू तिन की सुधि न सम्हारी। कहू निर्षति ओर बनिवारी।।
कोई धर्नि गिरे बौरानी। तन मनि की सभ सुधि विसरानी
मग्नि भई मनि प्रेमु बसाया। निर्ष्यो हरि दुःख मूल गवाया।।
कमल नैन औरि सकल निहारहि।
अपुनी करुणा सभ परि धारहि।
　　　　तिह की सुधि बुधि सविल बौरानी।
　　　　कौलापति फिरि सभ सुधि आनी।
जो कोई धर्नि गिरे उठि लाए।
मदन मोहनि इहि लील्हा कराए।
　　　　ग्वार्नि सकल रही उर्भाई।
　　　　थकित भई कह्यो जदुराई।
त्रिपा गह्यो प्रभ हमि कौ आई।
अंभु चहति जमुना तटि जाई।
　　　　श्री कृष्ण चर्नि यमुना तटि धारे।
　　　　अंभ दीने तिहि त्रिषा निवारे।
कीडो मज्जनु यमुना अंभ माही।
ग्वार्नि तव अभु बाहरि आई।
　　　　नंद नंदनि तब कह्यो सुनाई।
　　　　सुण हो ग्वार्नि हितु चितु लाई।

सकली तुमि अपुने ग्रहि जावो।
तहा जाइ हरि भजनु कमावो।
ग्वार्नि सुण इहि मनि मुस्काई।
आप माझि तब बाति चलाई।
चिह्न चक्रित हरि के देषि लेवो।
मोई चिहनि चक्रत मनि सेवो।
मनु त्याग भवन रूप विसराए।
निर्ष लेहु हरि जादम राए।
निर्ष रूप हरि आग्रा लीने। हरि सरूप घटि अंतरि कीने।।
चली-चली आई व्रिज माही। ध्यानु सदा हरि चर्ना माही।।
कुस्म मालि प्रभ तिही उडारी। इहि विधि कीनी कुज विहारी।।
प्रभ आप रहे विद्रा वनि माही। धेनि सहिति आनंद कराही।।
जो इहि रास लील्हा चित्त धारे। साँईदास प्रभु करुणा धारे।।७८

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे तेतीसमोध्याय: ।।३३

एक दिन श्री कृष्ण नदि सुत हां इनि।
गोप ग्वारि संग चले नराइन।
दुर्गा के अस्त लियाहि आए।
पूजा करि तहा तिलकु चराए।
कंचनु अधिकि विपो को दीना। धेनिदानु अधिकि तहा कीना।।
रजनी समे आश्रमु तहा पायो। देवी भवन आगे ठहिरायो।।
नंदि महिर लघ,कर्न ताई। उठयो मध्यि रैन के माही।।
नंद महिरु लघ कर्ने भया। एक विषुधरि ने तांको गह्या।।
नंदि महिर मुप कृष्ण उचारे। औरु राम जी मुपो पुकारे।।
हमि को विषुधरि गह्यो आई। वेग आवो सुत वहु सुपदाई।।
नदि महिर जवि एहि सुनाया। लकुटी लेइ सकले गोप धाया।।
अधिक मार्यो तिन्हा विषुधरि ताई।
नदि मिहिर को त्यागै नाही।

श्री गोपाल देष मुसकावै।
गोप सकल विर्लापु करावै।
भन मुस्कावति प्रभ जी आयो। गोप सकल सौ तब ही सुनायो।।
इसे त्याग देवौ ना मारौ। मोहि कह्या घटि माहि वीचारौ।।
गोप सकल ताको तजि दीआ।
श्री कृष्ण निकिटि जावणि चितु कीआ।
लकुटी ले करि तिहि सिरि मारी।
उर्ग त्याग्यो नदि तत कारी।
विपुधरि ने मानस वपु लीआ।
विषु धरि तबि इहि कार्णु कीआ।
महा सुदरि प्रगट्यो उजीआरा।
जबि विषु धरि मानस वपु धारा।
तिहि समसर कोऊ नाहि दिषावै।
दूजा जग परि द्रिष्ट न आवै।
कमलनैन के आगे आया।
साईदास डडौत कराया।।७९

श्री नद नंदन कौर कन्हाई। रूप अधिक छवि जनु वलि जाई।।
तांसो प्रभ ने पूछनु कीना। विपुधरि देहि कहा तै लीना।।
तिन ने प्रभ सों उत्तर दीना। हाथ जोर मुख विनती कीनी।।
मैं मति हीनु सुदर्स नाम। तुमि सभ विधि पूर्न सभ काम।।
सभि सुरो महि मोहि सर ना कोई।
जो मम रूप के समसर होई।
अक्रा सुतु वृहस्पति केरा।
सुणु हो प्रभ जो बिनती मेरा।
दीका नाग इकि आष ते काना।
एक दिन निर्ष मै तिस हृदे आना।
कहा रूप प्रभ इसि को दीना।
दीका नाग नाम किउं कीना।

उनि मोहि कह्यो जु हमहि पिम्भावै ।
दीऊौ श्रापु विषुधरि वपु पावै ।
जो उनि श्रापु दियो मोहि ताई ।
अधिक भली कीओ त्रिभवनि साईं ।
इहि प्रजोग तव दर्सनु पायो । चर्नि कमल मस्तक परि आयो ।।
वहुरो सुगरि ने ना इहि पायो । जो हमिरे मस्तक परि आयो ।।
सेवा करि प्रभ भवन महि आए । अति आनंद नदि जी पाए ।।
एक दिन कमलापति केसर । पूर्ण माधो सकल विशेस्वर ।।
राम सहित विद्रावनि आयो । तहा जाइ प्रभ वेन वजायो ।।
असुरु कुरंदी गग्नि से आयो । निपि ग्वार्नि चित्तु लुभायो ।।
अपुने मन महि कीओ वीचारा । इनि रक्षकि दोऊ राम मुरारा ।।
तिन को वलु हमि कहा वसावै । हमि स्मसरि वलु कहा जनावै ।।
चतुरि ग्वार्नि लेकरि भागा । त्याग महो आकाशे लागा ।।
ग्वार्नि रुदनु कीओ अधिकाई । राम कृष्ण सौ कह्यो सुनाई ।।
हमि को एहु असुरु ले जाई । हमिरो वलु कछु नाहि वसाइ ।।
श्री कृष्ण शब्द ग्वा न सुण पायो । वलिदेव वीर सहित उठि धायो ।।
विंद्रावनि से त्रिक्ष उपारे । एकु वलिदेव एकु प्रान अधारे ।।
पाछे असुर के दोइ धाए । ग्वार्नि सो जाइ वचन सुनाए ।।
ठौर राषौ चितु नाहि डुलावौ । हमि आए तुमि ना उतिरावौ ।।
श्री कृष्ण ग्वार्नि लइ छडाई । वलिदेव को कह्यो सुणु मेरे भाई ।।
इनि ग्वार्नि को होउ सहाई । मै चूरामण को मारो जाई ।।
चूरामरा के सिरि मण रहे । श्री कृष्णचदि जाइ वोही गहे ।।
श्री गोपाल वहु असुरु हतायो । ताहि मारि मणको गहि ल्यायो ।।
मरा आनी वलिदेव को दीनी । राम ऊपरि किर्पा प्रभ कीनी ।।
कह्यो रपो मणि वलिदेव भाई । तुमि सीस ऊपरि अधिक सुहाई ।।
धेनि सकल ले करि प्रभ आए । विद्रावनि माहे ठहिराए ।।
तप्ति अधिक सी मेरे भाई । त्रिक्ष छाया वैठे जदुराई ।।
साधो हरि हरि नामु ध्यावो । सांईदास गति को तबि पावो ।। ८०

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंधे
श्री सुकदेव परीक्षति सवादे ।।३४।।

एक दिनसि माधो धर्नीधर। श्री जदुनाथ सभे करुनाकर ॥
ब्रह्म महूर्ति सुरिह ले धाए। ले सुरिह को बिंद्राबनि आए ॥
सकल जोषना ब्रिज इहि आपहि। अधिक भए दिन एही भापहि ॥
कवि रवि उत्तरे तब्बे को आवै। कमल नैन बनु तजि ग्रहि धावै ॥
श्री कृष्णचंदि को दर्सनु कन्ही। चरनकमल ले मस्तक धरही ॥
उनि को सकलो कहिति सुनाई। आतरु ब्रह्म भए अधिकाई ॥
श्री कृष्णचंदु आवै ब्रिज माही। हमि आतरु तिहि दर्सनु पाही ॥
ऐसे कहि सकली बौराई। गोप जोषता सभ सुधि बिसराई ॥
बहुरो इहि मतु तिहि ठहिरायो। गोविंद भजनु कर्नि चितु लायो ॥
होइ इकत्रि सिमरनु कीना। ध्यानु कृष्ण को अंतरि लीना ॥
श्री नंद नंदन बिर्था जानी। ता पहि क्यु कोई कहा बषानी ॥
बैन बजावनि ग्रहि को आए। धेनि सकल ले करि संग धाए ॥
तात काल आए ब्रिज माही। गोप जोषता सभ मंगल गाही ॥
ग्वालिनि सभ मिल दर्सनु कीना। तत्त सरूप अंतरि महि लीना ॥
तिहि को प्रभ ने संसा टारा। सांईदास प्रभि परि बलिहारा ॥८

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पैंतीसमोध्यायः ॥३५॥

कंस प्रषासुरु असुरु बुलाया। ताकौ एही बचनु सुनाया ॥
तुमि ब्रिज माही चलि करि जावो। नंदि महिर सुति हति करि आवो
प्रषासुरु चलि ब्रिज महि आया।
अधिक रूपु तिन आप बनाया।
सेसनागु तांका द्रिष्ट आवै।
रूपु देषि ताहि भौ पावै।
मुष बोले सभ जग्तु डरावै।
जो कोऊ शब्द सुणे भजि जावै।
गौ बनि ब्रिज सुण करि बनि धाई।
मन महि त्रासु भयो अधिकाई।
गोप ग्वारि सकले चलि आए।
प्रभि के चहू दिस आइ ठहिराए।

एही वचनु सभ मुपि ते भापहि।
अभि तुमि विनु कोऊ नाही रापहि।
एहि दुष्टि ईहा जो आया।
इनि षलि ने क्या मनि ठहिराया।
इसि ते छूटहि कि हमि छूटहि नाही।
एही आसु भयो मनि माही।
श्री कृष्णचद कटि सो पट्ट लीना।
आध्यो कट अति डाढा कीना।
अघासुर के सन्मुख धाया। दोई सिंग तै पकरि कराया॥
डार धर्नि परि प्रभ हन लीना। श्री नारायण तवि इहि कीना॥
कंस सुन्यो अघासुर मार्‌यो। नदि महिर के सुत प्रहार्‌यो॥
केते असुर महावलि कारी। लीए वौलाइ दुष्टि हंकारी॥
केते को व्रिज माह पठाओ। केतो अश्व रूप करि आयो॥
तांको सीस गगनि जाइ लागो। जो निर्षे सोई उठि भागो॥
साधो हरि चर्नी चितु लावो। सांईदास चितु नाहि डुलावो॥८२

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे षट्त्रिंशमोध्यायः॥३६॥

नार्दु एक दिन कस पहि आयो।
दुष्टि कंस सों आष सुणायो।
श्री कृष्ण जो नंदि महिर ग्रहि मांही।
इहि सुतु नंदि महिर को नाही।
देवकी कौ सुतु है मेरे भाई।
वसुदेव तुम सो षड्यो दुराई।
कंन्या जो वसुदेव ने आनी।
तै वहि कंन्या नाहि पछानि।
उडि रही वहु गगनि के ताई।
वहि कन्या देवकी की नाही।
वहि कन्या जसुमति ने जाई।
एहि विधि सुण हो मेरे भाई।

एकु औरु बालकु रोहणी पाही।
बलिदेव नामु वसुदेव सुत वाही।
जबि ते कसि सुनी विधि कीना।
जरने लागे तांके प्राना।
वसुदेव को महि रैनी बुलायो।
किर्मानी लेकरि चंमिकायो।
चाहिति है वसुदेव को मारे। तव नारिद ऋषि एहि पुकारे।।
वसुदेव को काहे तुमि मारो। वाही वाल को प्रहारो।
कस दुष्टि वसुदेव को त्यागा।
मनि माहे फिरि चितवनि लागा।
गजि स्वार्थी को लीउ बुलाई।।
ताहि कह्यो सुण हो मेरे भाई।
जिहि मग वहि दोई चलि आवहि।
तिहि मग तूं गजि पडा करावहि।
ऐसा होइ जो भाग न जाही।
इहि विधि समझि लेहि मनि माही।।
मै इहि तुमि कों कह्यो सुनाई।
मतु तुमिरे चित ते हिरि जाई।
तुझि कौ अधिक देउंगा माया।
जौ तै दोई वीर हताया।
चंडूरि मुष्ट को लीओ बुलाई।
तांको भी सभ विधि समझाई।
मल्ल दौर तुमि जाइ वनावौ।।
तहा बजत्रि अधिक बजावौ।।
कृष्ण रामु दोऊ चलि आवहि।
तिसी ठौरि परि आइ ठहिरावहि।
ज्युं जानो तैसे तिन्हा मारो।
मै आज्ञा करी ताहि प्रहारो।।
दुष्टि कंसि इन्हि आज्ञा दीनी।
इन्हि मल्ल ठौर बनाइ करि लीनी

केती जाइ अश्व को वपु लीआ।
महा अधिक वपु पलि ने कीआ।
प्रगटि भयो जाइ करि ब्रिज माही।
जो निर्पे मनि त्रासु उपिजाही।
विनती करि करि कृष्ण सुनावहि।
हमि डरपित मनि महि विस्माहि।
जो निर्पे पलि को भौ आवै। साईदास विधि आप सुनावै ॥८३॥

जो केती मुप ते कछु बोलै। ब्रिजवासी मनि माहे डोलै॥
श्री कृष्णचद कछु डाढा कीना। केती के सन्मुप पगु दीना॥
दुष्ट को कह्यो आगे आवो। जो कछु वलु लागे सो लावो॥
जवि जदुनाथ ने कह्यो पुकारे। कैसे आगे को पगु धारे॥
दो पग कमल नैन के डारे। पिजर प्रभ जी के महि मारे॥
श्री कृष्णचद ने लीए वचाए। एक उंरि होइ गए जदुराए॥
वहुरो कृष्ण कह्यो फिरि आवो। हे पलि मनि होइ सोई करावो॥
श्री कृष्ण वस्त्र ले करि पलिटाए। सन्मुख वाही दुष्ट के आए॥
करि सों कठु असुर को लीनो। दपटि करो पलि को दु:ख दीना॥
तवि ही मार्त्ति कीनो जोरा। वैठि गयो कठु तत्यो जीउ ठौरा॥
कसि दुष्टि इहि विधि सुण पाइ। केतो को हत्यो जदुराई॥
नार्दु चल्यो श्री कृष्ण पहि आए।
उस्तति करि-करि आष सुणाया।
चडूरि मुष्टिकि को तुमि ही मारो।
गजि के दस्त प्रभ तुमि ही उपारो।
गजि स्वार्थी को तुम हति लेवो। करछहि के तुमि प्रान कढेवो॥
पाछे कसि को जाइ विडारो। सकल असुर को तुमि संहारौ॥
उग्रिसेन को राज वहावौ। असुरों का तुमि वीजु गवावौ॥
तुमिरी उस्तति कहा वषानो मैं मतिहीन उस्तति क्या जाना।

तुम अपुने पग गोकलि धारो।
मोह कहा घटि माहि बीचारो।
नंदि महिरि व्रिषभान सुनावो।
हमिरो कछु तुमि पाहि ले आवो।
औरु दोऊ वालकि के ताईं।
वेग ल्यावो मेरे पाहीं।
वसुदेव हमि से पडे दुराई।
हमि ते रापे ताहि छपाईं।
तुमि विनु औरु न कोई करे कामा।।
साईदास भजु पूर्ण रामा।।८३

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे सप्तत्रिशमोध्याय:।। ३७

एक दिन श्री कृष्ण राम क्या कीआ।
विंद्रावनि माहे पग दीआ।
असुर भयासुर ने क्या धारा।।
पचासि ग्वारि ले वही सिधारा।।
पडि इकि कंदिरा माहि छपाए। तिहि दरि पपाण अधिक लगाए।।
वहुरो फिरि आयो हरि पाही। चाहति औरु दुराइ पराही।।
मदन मोहनि खलि को निर्पायो। तांके पाछे उडि करि धायो।।
वहु खलु ताहू औरि सिधाया। जहा ग्वारि कदिरा महि छपाया।।
गोप तात जवि हरि को देपहि। कौलापति पूर्ण प्रभ पेपहि।।
तव हो सभू पुकार सुनाया। हमि वलि जावहि जादमराया।।
हमि सभि को एहि खलु ले आयो। तुमि से ईहा आए छपायो।।
श्री कृष्ण भयासुर खलि को मारा। मुष्टि मारि तिहि सीसु विडारा।।
मुषि ते रक्ति चली अधिकाई। हत्यो असुर को कौर कन्हाई।।
तव अमरो वहु कुस्म वर्षाए। उस्तति हरि की वहु उचिराए।।
भला कीआ प्रभ खल को मारा। हमि अमरो परि किर्पा धारा।।
जहा जहां कठनि वने जनि ताईं। तुमि प्रभ प्रगटि होति तहांही।।
श्री कृष्ण ग्वारि तव सकल निकारे ईहा प्रभ इहि लील्हा धार

जहा जहां ऋपि भजनु कराही । हरि की भक्ति सेती चितु लाही ।।
भयासुरु गिर ते गिरु ले धावै । इहि प्रजोग सभ सुर मिल आयो ।।
ताकौ हत प्रभ गोकल आयो । गोप जोषता इहि वचन सुनायो ।।
पूर्ण ब्रह्म लीयो अवितारा । महा वसुरु बलिवानु सिहारा ।।
आद अनादी रह्यो समाई । इसि की अस्तति कौनु कराई ।।
सुखदाता दुःख टारनिहारा । आद नरजनु प्रान अधारा ।।
गोप जोषता सभ इहि उचिरायो । सांईदास अधिक सुष पायो ।।८४।।

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अष्टत्रिंश मोध्याय: ।।३८।।

सुपलति सुत गोकल पग धारे । मनि अपुने महि कर्ति वीचारे ।।
मोको कस कह्यो इहि कामा । मोहि परि करुणा कीन प्रभ रामा ।।
इहि प्रजोग दर्सनु हरि पावौ । रेनि चर्नि हरि मस्तक लावो ।।
जिहि कार्णु पद्मज दुषु पायो । औैर देवौ हूं जतन कमायो ।।
ताको इहि प्राप्ति ना होई । जो हमि मस्तकि लावो ओई ।।
मग महि जाति एही मन धारी । सुपलकि सुत घटि एहि बीचारी ।।
बहुरो हृदा डुलावनि लागा । सुपलकि मन संचरु जागा ।।
हमि को दर्सनु देवे न देवी । जाको सुर नर ऋषि मुन सेवी ।।
जो हृदे करे कस को कोई । तौ दर्सनु हमि देवे न सोई ।।
ऐसी बिधि हरि मनि नही आने । अतरि की विर्था प्रभु जाने ।।
हमि उसि के उहु सदा सहाई । सकल विर्था को वाही पाई ।।
करुणा कर्सी हमि गिर्धारी । अतरि जामी आप मुरारी ।।
जिहि समे डंडौत प्रभताई । सीसु आपि तिहि चर्नी लाई ।।
प्रभु अपुने करि सहित उठाए । मोहि सीस को जादम राए ।।
जिहि सरीर परि प्रभ को कर फिरआ । जन्म मर्न ते मुक्ता करिआ ।।
रवि सुत त्रासु ताहि नही व्यापै । जो हरि चर्ना सो चितु रापै ।।
इहि बीचारु कर्के उठि धाया । भक्त हेतु अक्रूरि वढाया ।।
कतिक महि जवि नैन पसारे । तिहि महि हरि पग पूर्न निहारे ।।
रथ को त्याग धर्नि परि आया । माटी धूरि ले मस्तक लाया ।।
तिहि रजि सेती अगु पषारे मुष अपुने इहि बाति उचारे ।

सुरपति जोहिति इहि रजताई। हमिरे मुकटि परि रहे सदाई ।।
उसि को प्राप्ति होनि न पाई। जो हमि को प्राप्ति भई आई ।।
अति अनदु सुपलकि सुत पायो। साईदास अग नाहि समायो ।।

सुपलकि सुत रथि परि चरिआ। गोकल के मग वनि चितु धरिआ ।।
आगे राम कृष्ण दोऊ आही। भाजन पीर भर्यो करि माही ।।
अक्रूर निर्प हरि रथ को त्यागा। डडौत करी आइ चर्नी लागा ।।
दीनानाथ भक्तिनि सुपदाई। जान प्रवीनि बिर्था सभु पाई ।।
प्रभ अक्रूर लीयो उरि माही। जासु मिले सभ दु ख मिटि जाई ।।
पाछे वलिदेव ने अंग लीना। आदर भाउ अध्कि तिहि कीना ।।
रामु ताहि ग्रहि महि ले आया। पाकु पकाइ अधिक जेवाया ।।
प्रजंकि ऊपरि ले शैनु कराया। वीजनु ले करि पवनु भुलायो ।।
एकु पगु वलिदेव ने करि लीना। एकु पगु श्री कृष्णचद ने करि लीना
दोनो पग को मलने लागे। ग्रहि का काम काजु सभ त्यागे ।।
गोप सहित नदि महिरु तव आयो। श्री कृष्णचंद तव वचु उचिरायो
सुपुलकि सुत तुमि लेहु बीचारे। तांको पूछति श्री गिरधारे ।।
सकल कुटवु तोह है कल्याना। मधुपुरी सुष सो रहित सुजाना ।।
सुपलकि सुन प्रभ को प्रतु दीना। हाथ जोरि मुष वचनु तिह कीना
जवि लगि कंसु जीवति पुरि माही। काहि सुख होइ ताहि मभाई ।।
सकल सृष्टि तिहि पर्ले कीने। उलटि पलटि माटी करि दीनी ।।
षष्ट वालक देवकी के मारे। करि बिरोध मनि महि पछारे ।।
देवकी रुदनु कर्ति वहितेरा। दुष्ट हृदे दया आवे न नेरा ।।
षसि करि ते लेवे जाइ करि मारे। षडि करि ब्रज सहिति पछारे ।।
अक्रूर इहि विधि प्रभ समझाई। साईदास सुण हो चितु लाई ।।८

इति श्री भागवते महापुराण दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे उणितालीसमोध्यायः ।।३९।।

श्री कृष्ण राम दोऊ षीर ल्याए। आण क्षीर अक्रूर पीवाए ।।
मदन मोहन तव वचन उचिराए। सुपलकि सुत कहु किउ आए ।।
अक्रूर कहयो प्रभ कछु जानो मै तुमि पाहे कहा वषानो

जो मो परि करुणा तुमि धारी। जो जानो सो कहो पुकारी।।
कसि कह्यो तुमि गोकलि जावो। नदि महिरु सभ गोप ल्यावो।।
दोनो सुत वसुदेव के आनो। कहा कहो सभ तुमि जानो।।
उौरु भ्रितु दमिरे ले जावो। मै तुमि कह्यो गोकलि जावो।।
कौलापति तुमि मार्न ताई। मधिपुरी महि वहु कीए उपाई।।
मल्ल अपाडा ताहि वनायो। महा अध्कि इकु धिङ रपायो।।
दस सहस्र जोधा वलिवाना। ठाढे कीने है भगवाना।।
उौरु चडूर मुष्ट षडे करे। तोहि मार्ण सेती चितु धरे।।
गजमदमाता ठाढा कीना। गज सहस्र को तिहि वलु लीना।।
इहि प्रजोग मो सो चलाया। तोहि चर्ना सेती चितु लाया।।
जो मै ना आवत जदुराई। कसु दुष्टु मोहि कर्ति हताई।।
जवि अक्रूरि इहि वात वषानी। हृदे धरी प्रभ सारग पानी।।
ध्रिगु हमि जन्मु लीआ जग माही।
जो हमि कार्ण पित माता दुःख पाही।
श्री गोपाल इहि विधि मनि धरी।
साईदास सर्नी वनि वारी।।८७

श्री मुरार माधो सुषदाई।
बलिदेव को तिन लीउो बुलाई।
नंद महिरु गोप सहिति बुलायो।
तिह को प्रभ ने आष सुनायो।
सुपलकि सुत को कंसि पठायो।
हमे इ बुलेने को इहि आयो।
गोकलि ग्रहि ग्रहि आषि सुनावो।
भूपत कंसि को करुजु ले आवो।
जो जो किसी को देवनि आवै। ले करि जाइ मथुरा पहुचावै।।
रजनी घटि रवि कीउो प्रकासा। जाग परे सभ को परि जासा।।
नंदि महिरु व्रिखभान ग्वार। गोप सहित चले दीनधार।।
श्री मथुरा केरे मग धाए। सभ जोपता व्रिज रुदनु कराए।।
रुदनु कर्ति हरि के संग धाई। केतकि मगु आगे वहु आई।।

गोपीनाथ वचनु तवि कीआ। सकल ग्वार्नि ने सुरण लीया।
जाहो तुमि अपुने ग्रहि माही। सुष सो वसो फुनि दु.खु कछु नाही।
मैं भी एक दिन वहुरो आवो। अबि तो कार्ज कर्ने जावो।
तुमि जाइ ग्रहि महि भजनु कमावो। मोहि चर्ना सेती चितु लावो।
ग्वार्नि फिरि आई ग्रहि माही। चर्न कमल सो मनु उर्भाही।
एक पहिरु रजनी ले जागहि। तव ही दधि को मथने लागहि।
स्मिरनु कमल नैन को करहि। हरि चर्ना सेती चितु धरहि।
ग्वार्नि सभ घटि प्रेमु वसाया। सांईदास अधिक सुष पाया।

श्री कृष्ण सकल सो तवि उठि धाया।
तटि रवि दुहिता को प्रभ आया।

सुपलकि सुत तवि वचन उचारे
मैं वलि जावो प्रान अधारे

तुमि सकलि विधि जानणिहारे। कहा कहो मैं तुमहि पुकारे।
तुमि जलु अचो मै मज्जनु करहो। जमुना अभु माहे पगु धरहो।
श्री कृष्णचद रथु ठाढा कीआ। सुपलकि सुती मज्जनु चितु दीआ।
जमुना के अभि माहे वर्या। डुविकी ले हरि दर्सनु कर्या।
राम सहिति प्रभ जो निर्षाए। मन अंतरि वह सोच कराए।
मैं रथ ऊपरि छाडि के आया।
रथ को तजि जल महि कहा आया।

जवि फिरि सिरु ऊपरि करि लीना
श्री कृष्ण रामु रथ परि देष लीना

रथ परि वैठे है दोऊ भाई। अचर्जु निर्ष रह्यो विस्माई।
वहुरो अंभ महि डुविकी मारी। फिरि निर्षे श्री कृष्ण विहारी।
वलिदेव को अंभ माहि निहारा। अति सुंदरि वहु रूप उजीआरा।
पद्मज मघवा औरु सुकदेव। सकल ऋषीश्वर सुर मुन सेव।।
श्री गोपाल आगे ठहिराए। उस्तति हरि की कहिति सुनाए।
सुपलकि सुत तव करी डंडौति।
कौलापति सभ जग की जौति।

तजि अभिको रथ पाहे आया।
उस्तति हरि की मुप उचिराया।
मदन मोहनि गिर्वरि हरि धारी।
मोहि मुक्त कीजो तुमि वनिवारी।
वैकुठि महि मोहि दसु दिपायो।
जग की फासि से उविरायो।
तोहि उस्तति मै कहा वषानो।
मै तुमि उस्तति को कहा जानो।
जो हिति करि इहि जसु सुण लेवै।
सांईदास प्रभु सभ सुप देवै ॥८९

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चालीसमोध्याय: ॥४०॥

सुपलकि सुत मन माहि वीचारा। उस्तति कर्नै को चितु धारा॥
चंड मुड तिन को वलु भारी। तोहि वलि काम भए वनिवारी॥
वहुरो तुम सो युद्ध मचायो। पांच सहस्र वर्ष युद्ध करायो॥
तूं वही पारि व्रंह्मु मेरे स्वामी। घटि घटि विर्था के अंतरि जामी॥
कौन रसिना सो उस्तति करो। तोहि उस्तति कर्नै चितु धरो॥
तुही मछ रूप होइ आयो। संखासुर जवि वेद चुरायो॥
तांको तैने जाइ विडारा। तासो वेद आने तत कारा॥
वेद आरण पद्मज को दीने। इहि कार्ण तैने प्रभ कीने॥
कछ रूप तू हे प्रभु हुआ। तुमि विनु अवरु न कोई दूआ॥
कछि रूप इहि विधि तुमि कीना।
दधि मथने को तुम चितु दीना।
दधि मथके प्रभ रत्न निकारे।
अंभ तहा उछिले अधिकारे।
सकल पहारि सिरि ऊपरि लीना।
वास्कि नागु तवि नेत्रा कीना।
मेरु पर्वतु मधानी कीने।
इहि विधि तै कौलापति कीने।

बैराह रूप तै ही प्रभु धारा।
हरिनाकसु जबि तै इहि मारा।
वसु ले बड्यो दधि माही।
पद्मज कूक करी तुमि पाही।
हरिनाकसु वसुधा ले धायो।
दधि माहे जाइ करि ठहिरायो।
बिनु वसुधा कैसे स्रिष्ट बनावों।
प्रभ जी स्रिष्ट करिनि ना पावों।
बैराह रूप करके तुमि धाए।
ततक्षिण महि दधि माहे आए।
हरिनाकस सों वसुधा लीए।
दंती धरि बाहिर पग दीए।
आण मही अंभि परि ठहिराई। हरिनिकशवु तबि आयो धाई॥
तांसो युद्ध करि ताहि हतायो। हे माधो तै एहि करायो॥
तुमि को नमस्कार है मेरी। सांईदास मै सर्नी तेरी॥९०

हरिनाकसु असुरु महा बलिकारी।
तिहि ग्रहि सुत प्रहिलादु बीचारी।
प्रहिलादु जपे प्रभ तेरो नामा।
श्री कृष्ण कृष्ण कहे इहि उसि कामा।
सदा ध्यानु तोहि चर्नि लगावे।
तुमिरो जसु निसबासरि गावै।
हरिनाकसु तांको डंडु देवै।
कहे कृष्ण काहे मुष लेवै।
मेरो नामु तुमि लेहु बीचारी। काहे उचिरहि कृष्ण मुरारी॥

भक्ति हेत—

प्रहिलाद भक्ति हरिनामु न त्यागा।
हरिनाकसि के कहे न लागा।
हरिनाकसि मनि कथा बीचारा।
इहि माने नही कहा हमारा।

कृष्ण कृष्ण को नाही त्यागे। हमिरे कहे नाहीं इहि लागे।।
इसि को मारो कहा न माने।
मोहि कहा कछु करि ना जाने।
ऐसा पूतु मूआ ही चंगा।
जो मन अतरि डारे भगा।
एकि दिन भक्ति को वहु दुख दीआ।
मनि अतरि तिन ने दु:ख कीआ।
तांको थंभि के साथ बंधाया।
प्रहिलादि भक्ति को सहिमु दिपाआ।
तवि प्रहिलादि सो वचनु उचारा।
कहा कृष्ण जिन नामु चितारा।
तब प्रहिलाद कह्यो सभ माही।
सभि पच रह्यो दूरि प्रभु नाही।
सविल स्रष्टि माहे प्रभु मेरा।
जवि कवि मोहि अस्ति है नेगा।
हरिनाकसि कह्यो इसि थम्ह माहे।
है तेरा प्रभु थम्ह मझाहे।
तव प्रहिलादि कह्यो रमि रह्या।
इसि ही थम्ह माहे है वह्या।
हरिनाकसि कह्यो लेह बुलाई।
कहा तुम्हारा प्रभु सुषदाई।
तव प्रहिलाद अ अ कीओ ध्याना।
श्री कौलापति तवि ही जाना।
थंभ से नृसिह रूप दिपाया। हरिनाकसि देषा विस्माया।।
हरिनाकसि निर्ष हरि भागा। सांईदास जीवन तिन त्यागा।।६१

पारब्रह्म गिरवरि हरि धारी। सत पैज राषै वनिवारी।।
हरिनाकसि को थंम करि लीना। नपिसो उद्रि विडारे दीना।।
वहुरो प्रभ तैने इहि कीआ। वावनि रूपु कर्के तवि लीआ।।
मघवा चलि तुमरे पहि आया। हाथ जोरि तिन आष सुनाया।।

राजा वलु यज्ञ अधिक करावे। हमिरा पुरु प्रभ वही छिनावै ॥
वावनि रूप तुमि तवि ही धारा। चतुरि वेद मुषि पाठ वीचारा ॥
वलि पाहे जाइ जाचन करी। अढाई करो धर्नी प्रभ हरी ॥
सकल धर्नि दोइ करो होई। तवि भै चक्रित वलु होयो सोई ॥
आधि करो तिहि वपु मिनि लीना। तांको प्याल षडि वासा दीना ॥
उसि को पार ग्रामी कीआ। ताहि कल्याण करी सुष दीआ ॥
नरंकार कर्तारि गुसाई। अजूनीशंभव है सभ माही ॥
पर्शुराम तू ही होइ आया। सहस्राज्र्जन तुझहि हताया ॥
रघुवंशी तुही वपु धारा। रावण को प्रभ तुझहि विडारा ॥
तुझको नमस्कार मैं करहो। वार वार प्रभ वानि फिरहो ॥
तुमरी उस्तति कहा वषानो। मै उस्तति तोहि कहा पछानो ॥
वार वार तुझि को नमस्कारा।
तूं पूर्ण प्रभ प्राण प्रान अधारा।
अक्रूरि उस्तति कीनी जदुराई।
मांईदास सुणे सो मुक्ताई ॥

इति श्री भावगते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे इकिलालीशमोध्याय: ॥४१॥

श्री कृष्णचद सुपलकि सुत ताई। कह्यो तवि ही त्रिभवनि के सांई ॥
आजु रहे वनि कंस के माही। तुमि आगे जावो नृप पाही ॥
दुष्ट कंस को जाइ सुनावो। वेग विलम तुमि मूल न लावो ॥
नंदि महिरु गोप सहित ल्याया। दोऊ वालक वसुदेव के जाया ॥
औरु तुमरो करु तिहि पाही। सभु आन्यो मथुरा पुर माही ॥
सुपलकि सुत प्रभ को प्रतु दीना। कौलापत सो तिन वचु कीना ॥
चरन कमल तुमि त्याग कराही। श्री गोपाल कहु कहा हमि जाही ॥
आजु हमिहि क्रितार्थु करहो।
मोहि ग्रहि अंतरि पगि धरिहो।
हमि ग्रहि चलि भोजनु प्रभ पावो।
हमि को प्रभ सुष वहु उपिजावो।

प्रान घटा मोहि नामु विचारहि।
पडिति जोतकी सकल उचारहि।
एकि दिन प्रभु अक्रूरि ग्रहि आई।
भोजनु पायो त्रिभवनि साई।
जवि अक्रूरि इहि वचन उचारे।
कौलापति प्रभ जानरा हारे।
अक्रूरि को करु लीनो करि माही।
श्री नंद नदंनि विधि इहि माही।
सकल लोक ते न्यारा कीना। तव अक्रूर सो इहि प्रतु दीना ॥
अवि तुमि जाइ निर्भो होइ सोवो। सकला भ्रमु हृदे ते पोवो ॥
कंसि को हति तुमिरे ग्रहि आवो। सकल गोप सग भोजनु पावो ॥
सुण अक्रूरि अधिक हिपायो। सांईदास प्रभ वचनु करायो ॥१

सुपलकि सुत वहु आनद पायो। हरि वचु सुण पुरि को तवि धायो ॥
जाइ करि कंसि सो वचनु उचारा। जो कह्यो हरि सो कह्यो पुकारा ॥
दोऊ सुन वसुदेव के आने। नंदि महिरु गोप अवर वपाने ॥
जो करु तुमिरे तिहि परि आई। सकल आन्यो है नृप वलिकाई ॥
मदन मोहन नंदि कह्यो सुनाई। पिन मोहि आज्ञा देहु वताई ॥
मधिपुरी अव न देप करि आवो। पुरि के भवन को देषन जावो ॥
नदि महिर तवि वचनु उचारा। तू है मेरो प्रान अधारा ॥
हमिरे प्रान वसेहि तुमि माही। कहा करो कोऊ तुमि ले जाही ॥
तवि जदुनाथ कह्यो नदि ताई। हे पित हमि को कौनु ले जाही ॥
मधुपुरी महि केते आवेहि। मधुपुरी त्याग वहुरि उठि जावहि
एहि वचनु कहि आज्ञा लीए। कौलापति पग पुरि को दीए ॥
वलिदेव ग्वारि सहिति संग लीआ।
नदि महिरु तजि मग पगु दीआ।
षेलति षेलति पुर महि आए।
अति सुंदर कछु कह्यो न जाए।
पुरि के लोको ने क्या कीआ।
भवन द्वार आछा करि लीआ

चोत्रा चदन कुसम घनेरे। डारे मनु आवे हि प्रभु मेरे ।।
अनि सुगंधिता तह। पिडारा। औरु अधिक कुसम के हारा ।।
श्री कृष्ण रामु अवि ही ईहा आवहि। हमि तिहि को पुनि दर्सनु पावहि
कुम्न वर्षा हमि तानरि करहि। तिहि चर्नो ऊपरि सिरु धरहि ।।
जामि द्वार होइ करि प्रभु धावहि। जोपता अधिक कुसम वर्षावहि ।।
निर्प रूप हरि को उचिराही।
मनि अपुने महि सोचु कराही।
दुष्ट कंस क्या मनि ठहिरायो।
इहि बालक मार्न चितु लायो।
श्री कृष्ण राम ग्वारि सग लीए।
मधिपुरी माहे हटि पगि दीए।
आति आई हरि कौर कन्हाई।
सांईदास दर्सन वलि जाई ।।९४

नृप को छीपा वस्न ले आया।
अवरि ले नृप द्वार सिधाया।
वलिदेव हरि तिहि कह्यो सुनाई।
हमि को देवहु हमिरे भाई।
तवि छीपा ने ऐसा कहिया।
रे मतिहीन तूं आधा भया।
इहि प्रतापु तुमि कहा वढाया।
नृप अंबरि लेने चितु लाया।
तुमि तो ग्वारि सुरिह चारनिहारे।
कौनु वाति तुमि मन महि धारे।
अत्रि तुमि नृप के अंबरि लेवो।
तिहि ताईं तुमि गाली देवो।
है कोई जो इसि को मारे।
इसि मतिहीन को पकरि पछारे।
ऐसे कहि मुष बुरा कहायो।
तब केस धरि मन ठहिरायो

क्रोधु कीओ छीपा को मार्यो।
करिनष से तिह सीसु विडारे।
उौर अवरि धरि डार के भागे।
आपौ अपुने मग को लागे।
एकु पाइकु तब ही प्रगटायो।
प्रभ को आइ डंडौत कराया।
मुप ते तब ही कह्यो सुनाई।
मैं वलि जावा जादमराई।
जो मोहि कह्यो अचरि पहुचावो।
इसि सेवा सो मैं चितु लावों।
उपसि तिहि आज्ञा दीनी।
तिस पाइक परि करुणा कीनी।
कह्यो तोहि वैकुंठि पठावौ।
चतुर्भुजा करि दु.ख मिटावौ।
तुमिरी मैं करहौ कल्याना।
एहि वाति मैं मन महि आना।
तव पाइक अंचरि करि लीने।
श्री कृष्णचद के अंग को दीने।
रामु ग्वारि सकले उठाए।
श्री कमलापति छवि अधिकाए।
पाइकि की कीनी कल्याना।
श्री गोपाल गभीर सुजाना।
वेग ताहि वैकुठ पठायो।
चतुर्भुज करि दु:ख मिटायो।
जो सेवा के जादम राई। साईदास सो वैकुंठि जाई।।६५

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे बेतालीसमोध्याय: ॥४२॥

श्री गोपाल फिरि वचन उचारे। सुण हो वलदेव वीर हमारे।।
अवि दामां माली ग्रहि जावहि कुस्म माल ताहूं सौ ल्यावहि।।

ले माला उरि माहे डारहि। चलहो दामा ग्रहि पगि धारहि ॥
श्री गोपाल दामा ग्रहि आए। राम सहित ग्वारि सवाए ॥
जवि दामा ने नैन निहारे। श्री कृष्ण राम निर्प ततकारे ॥
आगे आइ डडौति कराई। मुपि ते तविही इहि उचिराई ॥
क्रिपा करी हमिरे ग्रहि आए। दामा ने वहु आनद पाए ॥
कुस्म माल ग्रहि ते ले आया।
श्री कृष्ण माल ले उरि महि पाया।
सकल ग्वारि को प्रभ पहिराई।
कुसम माल श्री जादम राई।
वहुरो दामा भोजनु दीना।
इहि विधि माली सेवा कीना।
श्री कृष्ण केह्या कछु मांगो दामा।
दामा कह्यो पावो तोहि नामा।
सुमिरि कीर्ति मन माहि रहे।
एही जाचना मेरे अहे।
मदन मोहन कह्यो इहि दीआ।
एक करुणा तुमि परि अंतरि कीआ।
तुमि सतनि महि होवे कोई। जन्म-जन्म निर्धन ना होई ॥
श्री मुरार इहि वचु तवि कीआ। श्री दामा को ग्रहु तजि दीआ ॥
कह्यो कुब्ज भवन आगे होई। चलहु चलहि हमि डरु नही कोई ॥
कुब्जि के भवन आगे प्रभ आए। इकु पलु छिन तहू ही ठहिराए ॥
एक वनिता भाजनि हथि लीने। वावनि चदनु फिरि करि कीने ॥
आवनि ही हरि हसने लागी। अद्भुत सुदर प्रेन के ताकी ॥
ताको कह्यो कौन तू होवै। इहि विधि हरसो रतन परोवै ॥
तवि कुब्जा कह्यो मैं वलिहारी। मैं तोहि सर्नी प्रभ वनिवारी ॥
श्री कृष्ण कह्यो करहो मोहि कामा।
अंवरि पहिरे नौतनि रामा।
जो इहि चंदनु हमि को देवहि।
अवि हमि ते इसि का कछु लेवहि।
श्री गोपाल तिहि भाष सुणायो साईदास अधिक सुष पायो ९६

कुब्जा ने तव वचनु उचारा। हे भगवत तू प्रांन अधारा॥
एते दिन चदनु घसि ल्याई। दुष्ट कंसि कार्ण जदुराई॥
सकल अफल सेवा तिह करी। एही सुफल जो तुमि परि चरी॥
कुब्जा करि ले हरि अंग लाया। वहुरो गवार उौर राम चढाया॥
तव श्री कृष्ण हृदे महि धारा। इहि पुठि सुद्ध करो ततकारा॥
पगि ऊपरि प्रभ चर्नु टिकाया। ठौढी कर षिची जदु राया॥
ताहि पृष्टि सुद्धि कर लीनी। सुदरताई प्रभ को दीनी॥
द्वादस वर्षि अवस्था पाई। मानो मघिवा पुरि से आई॥
जवि वहि द्वादश वर्षि को होई। श्री कृष्ण चर्न सौ लपटी सोई॥

इहि विधि करि मुष वचनु उचारा।
मैं सर्नागति प्रान अधारा।

मेरे ग्रहि परि किर्पा कीजै। अपुने पग हमिरे ग्रहि दीजै॥
तवि मै तुमिरि सेवा करो। सेवा करि पग सिरि परि धरो॥
कवलनैन तव ऐसे भापहि। कुब्जा को ऐमे करि आपहि॥
हे कुब्जा चितु ठौर ठहिरावो। उौरु वात कुछ मन ना ल्यावो॥
जा करि वसो अपुने ग्रहि माही। कृष्ण कृष्ण मुष ते उचिराही॥
कंसु दुष्ट इति तुमि ग्रहि आवो। तव तुमि को वहु सुख दिवावो॥
फिरि आडी हस्त नारी पाई। लोक निर्ष आए अधिकाई॥
अधिकाई मिष्टान पान प्रभ पाहि ल्यावहि।
श्री कृष्णचंद आगे ठहिरावहि।

श्री कृष्ण कह्यो तिहि लोकनि ताई।
तुमि हमि को विधि एहि बताई।

दुष्टि धन्षि को कहा रषयो। ताहि देषने चितु लुभायो॥
देषनि को सकले उमिडाए। प्रभ को धन्षि उोरि ले धाए॥
भक्त वतसल प्रभ सदा सहाई। असुर संहारनि जादम राई॥
धन्पि पाहि जाइ ठाढे भए। धर्न से धन्पु करि माहे गहे॥
चांवे करि हरि धन्ष को कीना। वलि करि ताको चाढहि लीना॥
पिच धन्षु प्रभ ने मोड डारा। शब्द भयो तिस ते अति भारा॥
धन्षि के दोई टूकि कराए। करि महि ले कौलापति धाए॥
धन्षि तोरयो श्री जदुराए। सांईदास तांको जसु गाए॥९

दस सहस्र जौधा रषवारा।
रहिति वन्धि परि राषनि हारा।
सुनति वात पाछे हरि धाए।
महावली जोधे चलि आए।
कहिति कहा भागे तुमि जावो।
एकु पलु हमि आगे ठहिरावो।
नृप को धन्षु तुमि ने ले तोरा।
मन महि त्रासु न कीना भोरा।
ठांढे रहो आगे कहा जावो।
जैसा कीआ तैसा अवि पावौ।
श्री कृष्ण राम तवि फिरि षलोए।
जो आए असुर सकल हरि षोए।
तिन को मारि नदि पहि आए।
वनि माहे आहे करि ठहिराए।
नदि महिरु आनि सभ विस्माए।
वस्त्र किस ते इतिने पाए।
हमि ते कमरी पहिर सिधाए।
इहि अवरि किस ते अंग लाए।
एही वार्ता दुष्ट पहि आई।
धन्षु तोर्‌यो है यादम राई।
मनि तिहि अधिक भयो विस्वासा।
दुष्ट मुषो निकिसे नही हासा।
मनि माहे इहि कीनि विचारा।
निकटि आयो है कालु हमारा।
मोको मारे छोडे नाही।
इहि विस्वासु भयो मनि माही।
स्वप्न भीतरि ताहू द्रिष्ट आया।
काल सरूप प्रभ ताहि दिषाया।
सीस मूडि गर्धप परि चर्‌या।
ताता तेलु सीस परि डारा

ऐसे दुष्ट हृदा भमायो।
रब सुत रूप द्रिष्ट तिह् आयो।
रजनी गई रवि कीओ प्रकासा।
कस हृदे महि भौ लीओ वासा।
कह्यो वर्जत्र जाइ बजावो।
मल्लि अषाडे स्रिष्ट बुलावौ।
मल्ल अषाडे महि सभा बनाई।
आप कानि सभ ते अधिकाई।
और सकल को तले बहाया।
आप ठौर ऊची ठहिराया।
आनि भूपति भी चलि करि आए।
मल्ल अषाडे महि ठहिराए।
जपौ नामु सकला तमु भागे। सांईदास दुष मूल नि लागे॥९८

दुष्ट कह्यो वसुदेव को ल्यावो। देवकी सहिति ईहा बैठिलावो॥
जो हमि ते वालक षडे दुराई। गोकलि महि जाइ धरे छाई॥
वहुदेषहि मै वालक मारो। इहि दुइ वालक को प्रहारो॥
और अक्रूर को लेह बुलाई। वसुदेव सौ तिन प्रीति अधिकाई॥
वसुदेव के पाहे बैठ लावो। नंदि गोप सभ ही ले आवो॥
तिन ने जो कीना अधिकाई। दधि घ्रितु भोजनु अधिक पलाई॥
आज्ञा करी सभ को ले आए। मल्ल अखाडे आण वहाए॥
सकल लोक आइ करि ठहिराए। दुष्टि कस सभि ही निर्पाए॥
दुष्ट तवि ही इहि वचनु उचारा। सुण हो सभ तुमि कहा हमारा॥
दोऊ सुत वसुदेव के ल्यावो। वेग विलम तुमि मूल न लावो॥
नंदि महिर नृप को प्रतु दीना। हे नृप तै क्या मनि महि लीना॥
द्वादश वर्षि के वालक भाई। मल्ल विद्या जाने नाही वाई॥
कैसे मैं तिन को ईहा ल्यावो। मल्ल अखाडे माहि वहावो॥
जो सुण ले जसु मुक्ता होई। साईदास दुःख ग्रसे न कोई॥९९

इति श्री भागवते पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे त्रितालीसमोध्याय: ॥४३॥

श्री कृष्णचद ने कह्यो सुणाई।
नंदि महिरि पित बहु सुप पाई।
कछु विस्वासु न मनि महि देवो।
मोहि कहा मन महि धरि लेवो।
इहि प्रजोग हमि लेति वुलाई।
देपहि अभरि नहि इहि आई।
वाल्क है इनि दिसे कछु नाही।
वाहरि ठाढे अति उकलाही।
कौलापति विधि जानणहारा।
राम सहिति लीओ ततकारा।
अवरि ले कटि ठाढा कीना।
मल्ल अखाडे को पगु दीना।
निहि मगि गजु ठांढा वलिकारी।
गजि स्वार्थी को कह्यो मुरारी।
हमि को मगु तुमि तजि करि देवौ।
मोहि कहा तुमि मनि धरि लेवौ।
नाहि ति अवि ही तुम को मारो।
तुमि को इमि गजि सहिनि प्रहारो।
मृतक लोक महि देउ पठाई।
भला करहि ना करहि वुराई।
श्री कृष्ण चदि जवि वचनु उचारा।
गजि स्वारथी अंकसु गजि मारा।
श्री कृष्णचंदि की ओरि चलायो।
मदमाता गज सन्मुष आयो।
श्री कृष्ण को गजि ने सुन्न महि लीआ।
धर्नि से पकरि ऊभनि उनि कीआ।
नासो निकसि गयो जदुराई। फिरि आगे ठांढा भयो आई॥
वहुरो गज ओसे ही कीआ। जैसे प्रथम मे मुष महि लीआ॥
श्री कृष्ण भागा फिरे आगे आगे। अति भुज सु दरि अंग महि पागे॥
गज प्रभ जी के पाछे दौरे। थकित रह्यो हारयो सभ जोरे

श्री कृष्णचदि पूछ से लीना। फेरि फेरि धर्नि सौ दीना ।।
एक मुष्टि मस्तक परि मारी। दोई दस्न प्रभ लीए उपारी ।।
गजि के सहिति स्वार्थी मारा। दस्न लीए करि ताहि अपारा ।।
श्री गोपाल गजि मुक्ति पठाया। साईदास महा सुप पाया १००

गजि को दस्न एक हरि लीआ। एक दस्न वलिदेव को दीआ ।।
श्री कृष्ण राम अपाडे महि आए। नदि पाहि आइ करि ठहिराए ।।
चंडूरमुष्टि तवि वचन उचारे। मनि माहे तिहि सोच विचारे ।।
श्री कृष्णचदि सो कह्यो सुनाई। कसनराधपि इहि सुण पाई ।।
तुमि षेलति विद्रावनि माही। मल्ल विद्या कीनी अधिकाही ।।
वडे वडे वलिवान सिहारी। तुमिरी भुज महि वलु अति भारी ।।
अपनी मल्ल विद्या तुमि करहो। मल्ल विद्या मेती चितु धरहो ।।
कंस नराधपि देप तै लेवै। हर्षिमान होइ वहु कछु देवै ।।
तव श्री कृष्ण ने वचन उचारे। सुण चडूरि ते मीत हमारे ।।
हमि सरि होइ तिहि युद्ध करावहि।
तांसो मुप हमि नाहि फिरावहि।
धर्म्म युद्ध मल्ल विद्या माही।
दुही औरि स्मसरि निर्षाई।
रंगभूम भीतर भगवान।
आए सहिति भय्या वलिराम।
कौतुक करहि भया भगवंत।
अपल अगोचर अमित अनंनि।
दस प्रकार वा रूप दिपाया।
इउ कहि श्री सुकदेव सुनाया।
सभ सरूप कहि प्रगटि सुनावै।
पढे सुणे हरि भक्ति वढावै।
मल्लहु द्रिष्ट वज्र से आए।
देषि तिनहु के हृदे डराए।
चूर करहिगे हमिरे अग। मल्लहु के मन हूए भंग ।।
जो ये सृष्टि नीर प्रधान। तेज विदेषहि धरे ध्यान ।।

तिन जान्यो सभ नर सर्वोत्तम।
कृष्ण बलि जाने पुर्षोत्तम।
तिरीम्रा देषै श्री घनस्याम।
नप छब मोहनि कोटक काम।
मूर्छा होइ होइ गिर परि।
सुधि वुधि हरि सुदरता हरी।
गोपो जान्या मितु हमारा।
इहि गुपाल नंदिलालु प्यारा।
जोवे राजा अति हकारी।
तिन्हो करी थी प्रजा दुषारी।
वेद वेद आज्ञा मानंति न थे।
तिन के मान महा प्रभ न थे।
तिन जवि देषै श्री भगवान। मै सिउ तिन के कपे प्रान॥
ते मन महि मन को समझावहि। सूवे चलहि न प्रजा दुषावहि॥
नाहि ति मारेगैं दामोदर। विश्वनाथ वलिराम सहोदर॥
श्री कृष्णचदि के पित अरु मात। वसुदेव देवकी पर्म सुजात॥
तिन्हो द्रिष्ट बालक के आए। देषि तिनहूं के हृदे डराए॥
मार्नि को हमिरे सुत आने। मात पिता अतही बिल्पाने॥
कंस म्रित द्रिष्टी महि पर्यो। देष दुष्टि का तनु मनु डर्यो॥
जो पंडिति थे विमल विचारी। जिन की मति पढि वेद उजारी॥
तिन देषै प्रभु पुर्ष विराटु। इस ही जग परि जग को ठाटु॥
योगीश्वरि जब धरहि ध्यान। पर्म ततु है इहि भगवान॥
पर्म तत्तु सभ हू का कार्ण। उतपत्ति प्रतिपालनि संहार्ण॥
पूर्ण पुर्ष पुनीत अकाम। पर्म तत्त इहि कार्णु नाम॥
जदकुल जान्यो रक्षा कर्ता। ए भगवान हमारे भर्ता॥
दस प्रकार कीए भगवत। रूप दिषाए कमलाकंत॥
जैसे जांको हरि सोभाई। तैसे देषे केशव राई॥
सभ हूं ते निर्लेप अनंत। कृष्ण कृपा निधि कमलाकंत॥
लोकहु हरि का दर्सनु कर्यो। कोट जन्म का पातक हर्यो॥
हरि मूर्त काउो नापरयो। पर्म प्रेम करि हृदे धरयो॥

लागे कहनि लोक मिल वाति। इहि दोनो वसुदेवहि ताति॥
सकर्षण अरु श्री गौपाल। गोकल वचे कस को काल॥
तव चडूरि प्रभ को प्रतु दीना। कौन वाति ते मनि महि लीना॥
मै तुमि को वहु विधि करि जानो।
वोह भलो वाल्कु हृदे पछानो।
वहि गजि आयुत को वलि रावहि।
ताहि हत्यो अवि वाल्कु आपहि।
लरकिपन महि क्या कछु कीआ।
वडे वडे जो धनि हमि लीआ।
तुमि हमिरे सग युद्ध मचावो। रामु सहिति मुष्ट उर्भावो॥
धर्मयुद्ध हमि तुमि संग करहि। वैर भाउ कछु मनि ना धरहि॥
काल निकटि भयो बुधि वौरानी। साईदास पूर्न विधि जानी १०१

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चौतालीसमोध्याय.॥४४॥

कमल नैन ने तब ही वषानी। पूर्न ब्रह्म प्रभ सारग पानी॥
राम सो तवही कह्यो सुनाई। युद्ध करो अवि हमिरे भाई॥
श्री कृष्ण चंडूरि सो करु अरि कायो।
राम सहित मुष्टि उर्भायो।
लोक सकल निर्ष्यो विसमाए॥
नर नारी मुधि एहि सुनाए॥
दुष्टि कंस क्या रनि ठहिरायो।
इनि वालक मार्नि चितु लायो।
कहा वाल्क इहि असुर कहा है। जो वाल्क इनि संग लरा है॥
एहि नग्रु नजीए मेरे भाई। इहा हमि पहि वस्यो न जाई॥
फेरि कहे अपुने मनि माही। पारब्रह्म तू त्रिभवनि सांई॥
तू सकली विधि जाणन हारा। हमि तुमि सो क्या कहहि पुकारा॥
दुष्ट कस वहु जोरु चलाया। हमिरा इसि सगि कछु न वसाया॥
वाल्कि असुरो सग लराए मानि का इहि कम कमाए

इहि बालकि कहु देवो जीत। तुमिरी संग है संतनि प्रीत ॥
तीन पहिरि प्रभ ने युद्ध कीना।
चड्डूरि मुष्टि को बलु हिरि लीना।
तिहि महि बलु रचिक ना रह्या।
तब नृप कंस इही मुष कह्या।
छाडि देहु बजंत्रि न बजावो।
थकित भए अवि युद्ध न करावो।
दुष्टि कंसि तिन को मनहि कीना।
साईदास हमिरों सुणु लीना १०२

अमरों अधिक बजंत्रि बजाए। श्री कृष्णचंदि सुण बहु हर्षाए ॥
जैं जै अमरि मुप ते उचरावहि। श्री कृष्णचंदि केरा जसु गावहि ॥
तब कौलापति ऐसे कीआ। चड्डूरि को करु करि सेती लीआ ॥
करि मे ले करि दीई फिराई। धनि पछार्यो यादमराई ॥
बलिभद्र मुष्ठि को लीना। ऐसे ही बलिदेव ने कीना ॥
एक मुष्टि मस्तक परि मारी।
मुष्टि मारि सिरु दीओ प्रहारी।
टूक टूकि तिहि सिरु करि डारा।
बलिदेव जी मुष्टि को मारा।
श्री कृष्ण राम जी दोऊ भाई।
कूदनि लागे तबि अधिकाई।
दुष्टि कंसि कह्यो इन्हि दूरि करो।
मोहि द्रिष्ट ते ओल्हे धरो।
बसुदेव उग्रसैण ले आवो।
तिन को वेग पडि थम्भ दिवावो।
श्री कृष्णचंदि बचु सुण लीआ।
तब बचु राम सहिति प्रभि कीआ।
कंसि दुष्टि की सुर्ति भुलानी।
कालु निकटि आयो मैं जानी।

तवि हीं वलिदेव को मनु दीआ।
जो कछु प्रभ जीने वचु कीआ।
जो इसि कालु निकटि है आयो।
तुमि काहे हरि विल्मु करायो।
इसि को प्रहारो श्री जदुराई।
विलम न कर हो मेरे भाई।
श्री कृष्ण कूदि कसि ओरि धाया।
जहा दुष्टि वैठा तहा आया।
कसि वली तव करी सम्हार। दो करि लीने दो हथीआर।।
पडासि पर लीने हाथ। निकटि कसि के त्रिभवनि नाथ।।
कसि कृष्ण को चोट चलाइ। हरि मधुसूदनु जात वचाई।।
कसु कृष्ण को पकरा चाहे। सकल सत स्युं ओरि निवाहे।।
कस नि केशव गह्या जाई। इति उति फिरे न चांन टिकाई।।
तेजु प्रगटि कीना भगवान। प्रभ पर्मानंदि पुर्वपुरान।।
हरि तिहि आगे छाती धरी। एहि लील्हा पुर्षोत्तम करी।।
सूर्य कोटकि तेज समान। छांती ते काढ्यो भगवान।।
जोत भई छाती दिपराई। कांप्यो कसु न देष जाई।।
नैन मूदि वहि गिया डराइ। वेग लीआ गहि केशव राइ।।
गई साप को लेत अमान। कस गह्यो निउं श्री भगवान।।
झटकि सीस ते प्रान निकारे। छिन महि केशव कसु सहारे।।
दुष्टि के केस गहे करि लीने। आण र्धनि ऊपरि प्रभ दीने।।
अस्थ कसि टूक टूक करि डारे। तवि अमरो कीना जै कारे।।
गह्यो र्चनि ते त्रिभवनि नाथ। अति पवित्र करि पंकज साथ।।
पैंचि र्चनि ते भूमि उतार्यो। इहि चरित्र भगवान दिपार्यो।।
षैंच्यो कसु जहा घनिस्याम। कस षाल तिहि ठा हरि नाम।।
मृतकि देह छाड प्रभ दीनी। इहि करुणा प्रभ ने तव कीनी।।
देवहु सकल कीआ जै कारा। भला कीआ प्रभ दुष्ट को मारा।।
वैठे जाइ प्रभू विस्रांत। मृग विडार मृगराजहि भांत।।
वहुरो औरु असुरु चलि आए। नल नील प्रभ सकल हताए।।
वलिदेव ने सकल असुर हताए किरिमानी सूवो करि ल्याए।।

बहुरो दुष्टि के भाई आए। तिहि समसर औरु कौनु कराए।।
बल्लिदेव तिहि सेती युद्ध कीना। मार मूसिल तिह को जीउ लीना।।
अष्टि वद्घ प्रभि दुष्ट के मारे। बलदेव ने सभि ही प्रहारे।।
और अधिक जो योधे आए। भाग गए इहि विधि निपाए।।
वसुदेव देवकी पहि दोऊ आए। बेरी काटी सुख दिवाए।।
करि डडौत प्रभ चर्नी लागे। ठांढे मात पिता के आगे।।
देवकी हरि को आइ अग लीग्रा। सीस चूंम मुष परि करु कीग्रा।।
महा अधिक सुष तिन ने पायो। सांईदास मिल मगलु गायो।।१०३

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पैतासीलमोध्यायः।।४५।।

कंसि की जोषता सभि मिलि आई।
दुष्टि मृतकि पहि आइ ठहिराई।
मुप सेती वहु वचनु उचारहि।
हाहा कर्के मुषो पुकारहि।
जो काहू ना कर्ति बुराई।
अवि काहे तुमि रो देहु रुलाई।
अवि को पुर को राजु करेगो।
पर्जा कौ सुष कौनु धरेगो।
श्री कृष्णचंदि तिहि कह्यो सुनाई।
इति मृतकि जोरो तुमि जाई।
पुरि को राजु उग्रसेनु करही।
पर्जा को सुष सेती धरही।
वसुदेव देवकी को हरि कह्या।
मुष सेती तवि वचु उचिरह्या।
गोप सहिति अवस्ता टारी।
केतकि दिनि इहि कह्यो मुरारी।
जैसे मात पिता कछु करही। सुत को नामु आप वहु धरही।।
हमिरो काहे नाही कीग्रा। तव वसुदेव हृदे धरि लीग्रा।।
गर्गि प्रोहतु लीओ बुलाई वसुदेव तिहि सो कह्यो सुणाई।।

श्री कृष्ण राम को कौन विचारा।
गर्गि महूर्ति भलो वीचारा।
वसुदेव मनि अतरि इहि धारा।
दस सहस्र सुर्हो विपो को देवो।
गोविन्द अर्थ सकल्पु करेवो।
दस सहस्र सुरिह अवि ही दीने। अपुने वचि पूर्न करि लीने॥
श्री गुपाल क्रिपा निधि स्वामी। सकल घटा के अतरि जामी॥
माता पिता को वहु सुष देवो। सांईदास मुष धरि करि लेवो।१०४

नार्दि को हरि लीआ वुलाई।
ताहि कह्यो मुष ऋषि अधिकाई।
कंसि को त्रासु यादव मनि लीआ।
मथुरा पुरु तिन ने तजि दीआ।
अवि तुमि जावो उनि के पाहे।
इहि विधि जाइ कहो तुमि ताहे।
दुष्टि कसि को प्रभ ने मारा। केस से गह्यो धर्नि पछारा॥
उग्र सेन को राज वहायो। तुमि अपनाचितु ठौर करायो॥
तुमि अवि अपने ग्रहि महि आवो। अपने पुरि आई आनद पावो॥
नार्दु सुण वचि हरि उठि धाया। सात कोस यादव पहि आया॥
तिन को नार्द कह्या सुनाई। प्रभ जो तिस को दीयो वताई॥
दुष्ट कसि को श्री कृष्ण विडारा।
उग्र सैन को राज वहारा।
तुमि चलहो अपुने पुर माहे।
कति को आनि पुरि माहि वसाहे।
यादमि ने इहि विधि सुणी काना।
हिर्षमान होए सभु प्राना।
तातकाल अपुने पुरि आए।
चीरि मलीनि तिहि अंग उढाए।
फाटे अंवरि तिहि अंग माही।
तहा मलीन सभ रूप दिषाही।

श्री कृष्ण द्रव्यु कंसि को लीना।
सभ यादव को प्रभ ने दीना।
जाहो अंवरि अग कछु करो।
अहि महि वसो निश्चल चितु धरो।
यादव सभ भिन्न भिन्न अहि आए।
सुत वनिता सग मिल हर्षाए।
श्री कृष्ण अंवरि वहु लीने।
मोती कर महि नीके कीने।
राम को सहिति लीयो जदुराई।
नंदि महिरि पहि आइ ठहिराई।
नंदि महिर सो वचनु उचारा।
सुरण हो पित तुमि वाति हमारा।
जो वसुदेव देवकी हम जाए।
तुमि ही ने हमि वडे कराए।
पँ दधि मापनु अधिक पवाया।
महा अधिक तुमि लाड लडाया।
एही मोती अवरि ले जावो।
जसुमति मात को भेटि चरावो।
माता जसुमति सो इहि कहीए।
हे माता आनंदि सो रहीए।
हमि भी तुम पहि इकि दिन आवहि।
सवि ही तुमिरा दर्सनु पावहि।
नंदि सो प्रभ इहि वचनु सुनायो।
सांईदास मनि कठनि करायो।। १०५।।

नदि प्रश्नु सुरगयो हरि पाहे। भयो मूर्छा सुधि विसराहे।।
सुर्त विसार धर्नि परि पर्‌या। उनि न कछु सुधि देहि को कर्‌यो।।
और गोप सभ मूर्छा होए। महा अधिक मनि अंतरि रोए।।
जवि कौलापति नैन निहारे। तवि ही प्रभ ने लीव्हा धारे।।
वहुरो दानवि को लीओ उठाई। सकल उठाए यादवराई।।

नंदि महिरि तबि हरि सो भाषा।
मै बलि जावो एही आषा।
हमि न रहे हृदे को ठहिरावहि।
जसुमति उौर कहु करावहि।
प्रभाते तुमि सुरिह ले जावो।
सुरिह ले तुमि बन कौ उठि धावो।
तब भी तुमिरो दर्सनु करही।
बनि जावो मन महि ध्यानु धरही।
जबि तुमि बनु तजि करि ग्रहि आवो।
तबि भी हरि तुमि दर्सु करावो।
अबि कहु कहा करे बनिवारी।
तुमि हमि से इउ कह्यो पुकारी।
तब श्री कृष्ण कह्यो पित मेरे।
हमि सेवकि है पित जी तेरे।
जसुमति सो तुमि कहो समझाई।
एक दिनमि आवति जदुराई।
अंबरि मोती नदि को दीआ।
ताहि देइ करि विदआ कीआ।
रुदनु करति नद जी उठि धाए।
रुदनु करति गोकलि महि आए।
जसौदा नंदसो भाष सुनायो।
कान्हरि मोहि कहा तजि आयो।।
नंदि महिरि जो कछु देषि आयो। जसौदा को तिन आप सुनायो।।
मारिन दुष्ट उौर धन्प विडारे। चडूरि अरु मुष्ट को प्रहारे।।
तूं वांको सुतु अपुना जाने। सुत हेत करके मुषहु वषाने।।
वहु महाराज राजनि को राजा। दीनानाथ हरि वेमुहताजा।।
वहि बाल्क काहू को नाही। वहि राम रम्यो है सभ माही।।
दीनानाथ अपार गुसांई। तीन भवन केरा वहु सांई।।
छिन महि स्रिष्ट उपावनि हारा। छिन महि पर्लो करति पसारा।।
नंदि जसौदा रुदन कराही। सांईदास धीर्जु ना पाही।।१०६

वसुदेव कृष्ण सौ आपहि। ऐसी विधि मुप ते वहि भाषहि ।।
विद्या पढनि वनार्सी जावो। विद्या पढि के फिरि घरि आवो ।।
पित सौ श्री कृष्णचंदि आज्ञा पाई।
सग लीओ तव वलिदेव भाई।
पग वनार्सी पुर को धारे।
श्री गोपाल सग वीर प्यारे।
विपु सुदामा मग चल्यो जाई।
ताहि कह्यो प्रभ यादमराई।
स्वामी कहो कहा को जावो।
इहि ब्रितातु तुमि हमिहि सुनावो।
तव ही सुदामे वचन उचारायौ। हे राजेश्वर सुणु चित लायो ।।
वनार्सीपुर माहे जावो। विद्या अर्थ तहा मै धावौ ।।
तहा जाइ विद्या कछु पावौ।
इहि प्रजोग तिहि पुरि हितु लावौ।
भक्ति उधार्न श्री भगवान।
असुर सघार्ण पुर्ष निधान।
तबि ही विप सौ वचनु उचारा।
तुमि विद्या पढिने चितु धारा।
हमि भी विद्या लीए जावहि। वनार्सी महि जा करि ठहिरावहि ।।
तुम ही चलहो संग हमारे। विद्या ले आवहि तत्कारे ।।
कह्यो विप नीको जदुराई। मै तुमि सहित चलो जदुराई ।।
तीनो चले आए पुरि माही। सदीपन पडति रहिति जहा ही ।।
तहा जाइ वेद भाषनि लागे। औरु वाति सकली उनि त्यागे ।।
चारे वेद पढे दिनचारी। श्री नंद नदन कुज विहारी ।।
वहुरो राजनीत सिषवाई। चितु लायो त्रभवनि के साई ।।
राजनीत सिषी गिरधारी। विद्या गुर सौ कह्यो पुकारी ।।
चौसठि दिन में राम गोपाल। चौसठि विद्या सिपे गोपाल ।।
हाथ जोर प्रभ ठाढे भए। सदीपने को इहि विधि कहे ।।
कछु मागो गुरु देव हमारे। हमि देवहि तुमि क्षण तत्कारे ।।
हमि विद्या देवो घरि जावहि साईदास जा करि सुष पावहि १०७

सदीपनु वनिता पहि आया। जो प्रभ कहा सौ आप सुणाया॥
तवि वनिता तिहि दीओ विचारी।
सुण हो इहि तुमि बाति हमारो॥
जो बालक तुनि एहि सुणावहि। जो मागे सोई कछु पावहि॥
हमि बालक किसे पडे दुराई। सोई मांगो तिहि पहि जाई॥
कहो हमहि वालक आरण देवहु। सुप्रसन्न होइ हनि तिहि सेवहु॥
अवि भई वृद्धि प्रसूत न होई। हमहि वाल्क आरण देहहु सोई॥
सदीपनि पंडित फिरि आया। आइ क्रप्ण को वचनु सुनाया॥
हमि स्नान करनि को धाए। नग्रि द्वारका के निकटि आए॥
सप्त वर्षि को वालकु मेरा। गुरभाई होवनि है तेरा॥
किनही सुन मोहि पड्यो दुराई। हमि जोहनि लागे तिहि जाई॥
ढूंढि थके हमि पावहि नाही। रुदनु कीओ हमि अद्भपुर माही॥
रुदन करति ईहा हमि आए। थक्ति भए कछु मन न वसाए॥
जो हमि उोहु वाल्क आरण देवो। हमि परि क्रिपा अधिक करेवो॥
मानो कोरु द्रव्य हमि दीना। जो कछु उौरु कहो सौ करेवो॥
भक्त वछलि कहयो आरण देवो। जो कछु उौरु कहो सो करेवो॥
तवि सदीपनि ऐसे आपहि। उौरु न चाहिनि कछु ऐसे भाखहि॥
श्री कृष्ण राम दोऊ ही भाई। गडे चढे प्रभ यादविराई॥

चलिति चलिति गए दधि के माही।
दधि रूप आगे सो आही।
आइ डडौनि करी प्रभ ताईं।
कछु आज्ञा करो त्रिभवनि माई।
तुमि ने किउ करि क्रिपा कीने।
इहि मग गहि कर्‌ु करि पगि दीने।
तवि कौलापति वचन उचारे।
सुण हो दधि मूर्ति ततकारे।
हमि विद्या गुर को सुत भाई।
किनही आन्या वही दुराई।
जो किसी ही तुमि महि आरण डारा। आन देहि गुरु भाई हमारा॥
हमि तुमि सो इहि कहयो सुणाइ . सुण ले मेरे भाई। १

दधि मूर्ति तबि कह्यो सुनाई। मैं बलि जावो कौर कन्हाई ॥
एकु असुरु रहे नेरे माही। कबहु कबहू बालक ले आई ॥
श्री क्रिष्ण कह्यो चलो मोहि दिषावो।
वाही असुर को मोह बतावो।
आगे दधि मूर्ति होउो जाई।
तिहि पाछे कौलापनि धाई।
तहा जाइ करि ठाढे भए। जहा असुर आश्रम सुप लए ॥
खलु जह सुप सोया पर्या। श्री कृष्ण उदर तिहि कार्नु कर्या ॥
फार्यो उदरि उदर निहि देषा। वहु बालक तिहि उदरि न पेषा ॥
उौर बालक है उदर के माही। सदीपनि को बालकु नाही ॥
तब उसि असुर ने बचनु उचारा। हे भगवति तू प्रान हमारा ॥
मै बडभागी मा प्रभ पूर्ण। तौहि कर कालु भयौ मोहि मूढनि ॥
श्री कृष्णचंदि ने तब क्या कीआ। दो ईटिको को शषु करि लीया ॥
दछनि को दछनि प्रभ कीना। पश्चम को पछम करि लीना ॥
अपने भक्ति को आज्ञा कोनी। इहि आज्ञा प्रभ तिन को दीनी ॥
प्रथम चंदनु शष परि चडावहि। पाछे मोहि ऊपरि चर्चावहि ॥
अठसठ तीर्थ को जलु ल्यावहि। तबि मोको स्नानु करावहि ॥
जो जलु पडे शंख के माही। अठसठ तीर्थ को जलु ताही ॥
एहि बचनु कर्के दधि को त्यागा। रवि मुन पुरि केरे मग लागा ॥
आइ गिरिवरि धरि शषु बजाए। पाइकि शष शब्द सुणि आए ॥
चतुर भुजा होइ बैकुठि धाए। तहा जाइ करि आश्रमु पाए ॥
धर्म राइ आगे लौ आया। प्रभ की उसतति मुष उचिराया ॥
हे प्रभ कछु आज्ञा मोहि करहो। किहि प्रजोग इहि मगि पगि धरहो ॥
श्री कृष्णचद तिहि आप सुणायो। सभ ब्रितातु प्रभ ताहि बतायो ॥
एकु बाल्कु गुरि को सुतु भाई। किनहू आन्यो वही दुराई ॥
सदीपुन पडिति पित नामा। विद्या गुरु हमरो तिह कामा ॥
वाको तुमि कहूं ते ले आवो। ताहि को आण करि मोह दिषावो ॥
धर्मराज बाल्कु ले आया। आण श्री कृष्ण आगे ठहिराया ॥
श्री कृष्ण गर्डि परि लीउो चढाई। बनारसी पुर को चल्यो धाई ॥
बाल्कु आण पडित को दीना हाथ जोर करि विनती कीना

जो कछु औरु मांगो सो देवो। जो कछु कहो मै सोई करेवो॥
सदीपनि तवि कह्यो सुनाई। औरु वांछा मोह रही नि काई॥
सुप्रसन्न मोह आत्म होया। मनि ते दुःख नै सुत को पोया॥
तुमिरी सदा होइ कल्याना। मै मनि अंनरि एही आना॥
मै आज्ञा दीनी तुमि जावो। जा करि अपुने ग्रहि सुष पावो॥
आज्ञा ले मथुरा पुर आए। साईदास सहिज सुप पाए॥१०

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे छितालीसमोध्याय: ॥४६॥

सुदामा यादव हरि सग रहै। भक्ति भाउ तांके हृदे अहे॥
निमवासरि हरि के सगि डोलै। भले वचनु मुप ते वहु बोले॥
उच्छिष्ट रहे हरि की सोऊ खाई। अवरि हरि के अग उढाई॥
एक दिन प्रभ ऊधो लीओ बुलाई। तांको प्रभ कह्यो समभाई॥
तुमि गोकलि जावो मेरे भाई। जहा नदि महिर अरु जसुमति भाई॥
गोप ग्वारि तहा अधिकाई। हमि से तिन को पूछो जाई॥
तिन को वहु विधि जा समभावो। सुप्रसन्न तिहि चितु करावो॥
जीउ प्रान उनि हमिरे माही। जवि हमि मुरहीअनि को ले जाही॥
जो कवहूं हमि आवे अवेरा। धीर्जु तजि हेरहि मगु मेरा॥
अवि न जानो कैसे वहि रहई। मोहि विछोहो कैसे वहि सहई॥
तिन को तुमि अवि जाइ सुनावो। एकि दिन कृष्ण आवहि न डुलावो
ऊधो रथि परि चढि के धाया। तात्काल गोकलि महि आया॥
नदि महिरि ग्रहि आश्रमु लीना। अपुनो पगु ताहू ग्रहि दीना॥
नदि महिरि पग ऊधो धोए। ऊधो सहिज मंडलि महि सोए॥
भोजनु नाना ताहि षवायो। ऊधो महा अधिक सुपु पायो॥
जवी सुदामा सोंकरि जागे। नदि महिरि तिहि पूछनि लागे॥
हे ऊधो जो मोहि सुनावो। हमिरे मनि को भर्मु हिरावो॥
कवहूं श्री कृष्ण कर्ति मोह चीत। तुमिरी है वांके सग प्रीति॥
कवहूं जसुमति को चित करही। कवहूं हमिरो नामु उचरिही॥
जसुमति मापन दूधि षवाए। दधि वहुता दे अधिक कराए॥
फिरि कह्यो नदि ऊधो ताई हमि सुतु कहि भूले मघिकाई॥

हमि ने इहि विधि ज्यान्यों नाही । पारब्रह्म त्रिभवनि को साई ।
सकल स्रिष्ट को है पित माता । इनि सेती किनी जाननि जाता ।
जवि सुरहो को लेवनि महि जावै । सकल ग्वारिनि दर्सनु पावै ।
वनु तजि जवि ग्रहि को पग धारे । ग्वानि सकली तिनहि निहारे ।
इनि के प्रानि है उसि के माही । साईदास औरु जाने नाही ।

रजनी गई रवि कीयो प्रकासा । ऊधो को नदि ग्रहि महि वासा ।
ग्वानि सकली ने सुण पायो । ऊधो श्री कृष्ण पाहे ईहा आयो ।
चली चली ऊधो पहि आई । मनि वच अपुने ताहि सुणाई ।
श्री कृष्ण वस्त्रि ऊधो ओढि आया । इउही किनही भर्म भुलाया ।
जैसे कपटु हमि सहिति कमाया । ऊधो सो कर्सी अधिकाया ।
एही प्रष्णु ग्वानि जवि कीना । भ्रिग प्रगटि आगे पगु दीना ।
ग्वानि पगि परि आइ उभ्रायो । वोलति शब्द महा सुप पायो ।
ग्वानि षट पदि सो इउ भाषहि । दूरि होउ कपटी इहि आषहि ।
तू हमि पग को पर्सन भौवो । तुमि कारे कपटी मनि पोवो ।
जैसे तुमि वाहिरि द्रिष्ट आवो । ऐसे अतरि रुप दिपावो ।
तुमिरा हमि सग नाही कामा । ऐसे वोलति सकली भामा ।
जवि लगि त्रिणु हरि आवनि माही । भृग त्रिणु चर्ने को नित जाही ।
जवि लगि कुस्म षिस्यो निर्पाडी । षटि पदि कुस्म ऊपरि उभ्राई ।
धनिवते पहि सभि कोऊ आवै । तांकी उस्तति अनकि करावै ।
डौ लागे वन मृिग तजि भागे ।
फिरि तिहि वनि हितु नाही लागे ।

कुस्म कुमलाना भ्रिग तजि जावै
ताके फिरि को निकटि न आवै

रे षटि पदि पगि पर्सो नाही । तुमि कारे हो अतरि माही ।
षटि पदि सो सभि प्रश्न चलावहि । ऊधो सो वहु भांति सुनावहि ।
ऊधो सुण सिरु तले करायो । जवि ग्वानि इहि प्रश्न सुणायो ।
वहुरि ऊधो सो कहिणे लागी । ऊधो किउ हरि हमिहि त्यागी ।
प्रथमे प्रेमु हमि सो क्युं कीनां । जो हमि सो विछोहा दीना ।।

हरिआदेषि चरति है वाही।
हमि को डार्‌यो विरहि की फाही।
ऊधो जी फिरि हरि कवि आवहि।
हरि अपुनो हमि दर्स दिपावहि।
ग्वानि सकली रुदनु करावहि।
हे ऊधो कवि हरि ईहा आवहि।
ऊधो प्रतु दीओ ग्वार्नि नाई।
एक दिन आवहि त्रिभवनि माई।
ताहि ध्यानु त्यागो तुमि नाही।
ध्यानु धरो तिहि चर्न मझाही।
रुदनु न करहो हरि को गावो।
हरि चर्ना सो ध्यानु लगावो।
ऐसे ऊधो ताहि वतायो।
ग्वार्नि को शांत घरि ल्यायो।
ऊधो नंदि सो कह्यो सुनाई।
आज्ञा देहू पुरि को चलो धाई।
नंदि जोषता नवि मुग पायो।
ऊवो प्रतु मनि महि ठहिरायो।
मापनु नीको ले करि आई।
जिहि सुरिह पै पीवति जदुराई।
ऊधो को कह्यो इसे ले जावो।
षडि कौलापति पहि पहुचावो।
ऊवो आज्ञा ले उठि धायो।
मधुपुरी मार्ग सो हितु लायो।
चलिति चलिति पुरी माहे आयो।
श्री गोपाल इहि आइ ठहिरायो।
जो कछु जसुमती पाहे आना।
श्री कृष्णचंदि आगे ठहिराना।
श्री कष्णचदि सो वचनु उचारा।
गोपी जन को प्रम वीचारा

तुमिरो ध्यानु धरे मनि माही। विनु तुमि ध्यान अविर कछु नाही।।
निस वासरि तुमिरो जसु गावहि। तोहि चर्ना सो मनु उर्भावहि।।
तुभि बिनु ध्यानु किसे ना धारहि। तोहि नामु हृदे माहि बीचारहि।।
गोपी जन को प्रेमु सुनायो। लाईदास हरि ने सुण पायो।।

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संबादे संतालीसमोध्याय: ।।४७।।

सुदामा यादव लीयो बुलाई। ताहि कह्यो प्रभ यादमराई।।
कुब्जा सो मैने बचु कीआ। तांको वचनु हाथि करि दीआ।।
तोहि ग्रहि माहे भोजनु पावो। एक दिनसि तुमिरे ग्रहि आवो।।
चलहो अवि कुब्जा के जावहि। तहा जाइ भोजनु हमि पावहि।।
महिति सुदामा प्रभ उठि धाए। कुब्जा के मदिर महि आए।।
कुब्जा मदिर भलो बनायो। अति मिष्टान तहा पाक पकायो।।
आजु का हरि हमि ग्रहि आवहि। अपुनो पगु सेवक ग्रहि पावहि।।
कुब्जा हरि निर्ष सुप पायो। भ्रमु त्याग मनु हरि सो लायो।।
तत क्षिण महि जल को ले आई। स्नानु करो है यादम राई।।
वहुरो भोजन भिन्न भिन्न ल्याई। महा अधिक कछु कह्यो न जाई।।
अधिक भाउ करि सेवा कीनी। हरि की सेवा मस्तिकि लीनी।।
तव श्री कृष्ण सुपु वचन उचारे। हितिकारी अक्रूर हमारे।।
तांसो भी मैने बचु कीआ। तांसो वचनु अधिक करि लीआ।।
चलहो सुदामा तिहि ग्रहि माही। ताहि प्रीति हमिसो अधिकाही।।
कुब्जा को ग्रहि तजि ग्रहि आए। श्री कृष्ण रान सो लीओ बुलाए।।
तीनो सुपलकि सुन के आए। आनंदि सो भोजनु तिहि पाए।।
श्री कृष्ण कह्यो सुपलकि सुन ताई। मनि महि समभि देषु अधिकाई
कमि तोहि गोकलि जो पठाया। ताहि काजु तू कर्के आया।।
अवि इकु काजु करा तुमि मेरा। उठि धावो तजि देहा डेरा।।
पाडोपुरि केरे मगि जावो। पांडो सुत की षवरि ल्यावो।।
तवि सुपलिकि सुत ने वचु कीना। हे प्रभ पूर्न ज्ञान प्रवीना।।
माया रूप हमि ते दूरि करहो। हमिरा चितु अपुने पगि धरहो।।
सत वनिता माया और कूरे हमि ते दूरि करो प्रभ मोरे

जबि अक्रूरि प्रश्न इहि कीना। श्री कौलापति उत्तर दीना॥
हे सुपलकि सुत बौरा भया। कौन बाति तै मुपि तै कीआ॥
तू बडो सभ यादम के माही। कहा बाति तू मुप उचराही॥
तबि सुपलकि सुत कह्यो जु भावे। हमि मस्तक परि भलौ सुहावे॥
जावति हौ पांडो सुत पाहे। बस्ति हस्तना पुर के माही॥
सुपलकि सुत मनि महि ठहिराई। सांईदास जो हरि उचिराई॥१११

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संबादे अठतालीसमोध्याय:॥४८॥

सुपलकि सुत आज्ञा ले धाया।
पांडो सुत के पुरि हितु लाया।
प्रथमे ध्रितराष्टर ग्रहि आयो।
ध्रितराष्टर सो वचनु सुनायो।
जो तुमि द्रव्य इकत्रि कीना।
डंडु डाडु ले करि तुमि लीना।
सकल अकार्थ है मेरे भाई। अंत समे पाछे रहि जाई॥
अप्ने करि देवो विप ताई। धर्म्मु करो हृदे दया बसाई॥
जैसे मार्ग गर्भि माता से आया। बहुरो ऐसे ही उठि जाया॥
थिरु न रहे तू मेरे भाई। औसर संग न तोहि कछु जाई॥
सुन बाधव सभ एक निहारो। बधू सुन बहु भले बीचारो॥
जो इनि मांहि अंतरु आने। नर्गिगामी होवे तूं जाने॥
तबि ध्रितराष्टरि वचन उचारे। सुपलकि सुत सुण मीत हमारे॥
कहा करो माया सब लाझी। इहि माया हमिरे वसि नाही॥
सुपलकि सुतु तिहि को तजि आया। पाडो सुत पहि आइ ठहिराया॥
कुंती तबि ही वचन उचारे। सुपलकिसुत को कहिति पुकारे॥
मोह्रि सुत सो कैसी इहि कीआ। डारि मंदिरलापि आग दीआ॥
हरि किर्पा उबर सुत मर कहा कहा मै आगे तर

भला कीआ हमि प्रति तुमि आए।
आनंदु भया तुमि दर्सनु पाए।
अवि हमि इहि विधि सुरा पाई।
सो मै तुमि सो कहा सुनाई।
दो सुत वसु देव के ग्रहि होए।
वसुदेव सभ ससय मनि षोए।
महावली तिन कौ वलु भारा।
पातकि कंसि ताई उनि मारा।
निसवासरि हमि करहि असीसा।
जादव जीवे लाप बरीसा।
महाराज जादव वहु करही।
यादव परि किर्पा हरि धरही।
जवि ते कैरो इहि सुरा पाई। प्रगटे है प्रभ यादवराई।।
तवि ते कछु मनि महि भौ आना। हमि सग कर्ना सकहि धिङाना।।
वदरावरि लोको कछु कह्या। भला कीया इनि की सुधि लह्या।।
अवि इनि को षसि माना कीना। जो तैं इनि के ग्रहि पगु दीना।।
सुपलकि सुत तव कह्यो पुकारे। कुंती सिमरहु प्रान अधारे।।
तोहि सुत इहि वहुनु भलो होवहि। तेरो ससा सभि ही पोवहि।।
अपुनो चितु राषो तुमि ठौरा। संचरु मनि लेहु न भोरा।।
पांडो सुत सों आज्ञा पाई। सुपलकि सुतु चल्यो तव धाई।।
ततक्षण आयो मधुपुरी माही। स्याम सुदरि तव ही प्रभ चाही।।
जो कछु कुती बिनती ठानि। सुपलकि सुत सो सकल वषानी।।
साधो निसवासरि गुनि गावो। साईदास छिनु ना अलिसावो ११२.

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे उणिवंझवोध्याय: ।।४६।।

जो हरि कंस को पकरि संहारा।
केस सो गह्यो धर्नि पछारा।
पाछे कंसि जोषता आई।
करि धरि पटिकि वहु रुदनु कराई।

रुदनु करंति पित औरि सिधाई।
जरासिंध पाहे वहि आई।
जरासिन्धु सो वचनु उचारा।
सुण हो वाति तुमि तात हमारा।
सुत वसुदेव नृप कंसि को मारा।
तिस की भुज महि वलु वहु भारा।
जवि जरासिंधु सुण इहि वाति।
धंनि पटिकनि लागे वहु माथ।
तवि ही इहि प्रतज्ञा कीई। मनि अंतरि द्रिढ करके लीई॥
दाहणो करि भोजनु ना पावो। जवि जादव ना मार चुकाओ॥
जरासिंध नृप और बुलाए। तिन सो सभ विधि आप सुणाए॥
मैं वसुदेव के सुत परि जावो। तांसो जाइ करि युद्ध मचावो॥
तुमि अपुनी सेना ले आवो। तुमि सभ हमिरे संग सिधावो॥
मैं प्रतज्ञा मनि महि कीनी। सभ यादव मारो इहि लीनी॥
सभ नृप सुनति सैन ले आए। मथपुरी माहे सकल समाए॥
सभि सैना ताकी इहि होई। नउदस क्षुहिणी होवै सोई॥
मथिपुरी को घेरा जाइ कीना।
श्री कृष्ण चदि तवि मनि महि लीना।
अपुनो रथु मो पहि नही कोई।
तापरि मग धरहो सुख होई।
पातकि कंसि के रथ ना चरहो।
उसि के रथि परि पगु ना धरहो।
तवि रवि को प्रभ आखि सुणाया।
दोवैं रथि वहु अधिकि सवाया।
रवि दोनो रथि दीए पठाई।
अति नीके लीने जदुराई।
बलिदेव सो प्रभ वचनु उचारा।
इहि रथि परि चरहो तत्कारा।
नोदसक्षोहिणी सैना आई।
दढि लेहि हमि तुमि वहु भाई

तुमि कहा लेवो हमि क्या देवौ। वहि जलि महि नागभवि घोवो ॥
एहि वचनु कर्के उठि धाए।
जरासिध के सन्मुख आए।
श्री गोपाल भक्तिनि सुषदाई।
सांईदास प्रभ रचिन रचाई ११३

पुरि के लोक सकल मन त्रासा।
कंपति मुष निकसति नही वाता।
असुर अधिक निर्ष विस्माए।
इनि से हमि सो कौणु छडाए।
क्या जाने अवि छूटे के नाही।
फासे है रवि सुत की फांही।
तवि त्रिजनाथ मुष वचनु उचारा।
लोक न स्मझिति षेलु हमारा।
मानमि रूप मोहि करि जानहि।
इहि विधि वहु मनि महि नही आनहि।
मै इहि विधि लीनो अवतारा।
अधिकि भयो धर्नी सिरि भारा।
षलि असुर प्रगटे अधिकाई।
वसुधा भारु न सकिति उठाई।
वसुधा भारु दूरि करि डारो।
पातकि असुरो को प्रहारो।
अपुने मति जना सुख देवो।
पारि ग्रामी कर्के लेवो।
सभ असुरो को मारि चुकावो।
इनि पतितनि को वीजु गवावो।
फिरि धर्नि परि प्रगटि न होही।
वेग मुग्रचित सुन्न महि सोही।
जरासिध प्रभ सो कही बात।
मैं युद्ध करो न तुमिरे साथ।

तुमि को दूषनि है अधिकाई।
मात को भ्रात तै लीओ हताई।
जो वलिदेव हमहि युद्ध करावै।
हमि सो युद्ध कर्नि मनु लावै।
तांसो युद्ध करो वहु भांति।
धर्नि गिरावो तांकी क्रांति।
जवि जरासिध इहि वचनु उचारा।
तवि ही युद्ध भयो तत्कारा।
श्री कृष्ण राम तिहि सैना मारी।
अधिक रवित की सिध मुरारी।
असुर असलता नामु रपायो।
तिहि उस्तति वहु वेद वतायो।
असुरो की जो भुजा कटाई।
ताहि रक्ति महि सरिह आ जाई।
मानो उर्गि फिर्ति जल माही।
काटि दीए प्रभ कछु न वमाही।
जो पल्हो करि के कटि डारे। मानो मीन फिर्ति जल धारे।।
सिर के केस जो देहि दिपाई। मानो सनी नाल है मेरे भाई।।
कुडलि औरु छापतिहि माही। मानो सूक्ष्म नपन दिपाई।।
औरु पागि सिर ते जो झरे। मानो वगि डान है परे।।
इहि सरूप की नदी वहाई। सांईदास सोभा वनि आई।।११८

सभ सैना नृप की हरि मारी।
अपुनी लील्हा प्रभ ने धारी।
वलिदेव ने जरासिध सों गह्या।
रथि सो वाधि फिरि रथि परि वह्या।
लीए लीए आए हरि पाहे।
निर्षति वलदेव कृष्ण जो राहे।
जो मुप कहो मारि के डारों।
इसि पातकि को धर्नि पछारो।

दीनानाथ अंतरि विधि जानी।
तवि मुष ते इहि बाति वषानी।
तजि देहि अवरि असुर ले आवै।
करि इकत्रि सभ आए मरावै।
वलिदेव ने नृप को तजि दीना।
जरासिधि तव इहि मनि कीना।
जरासिधि है नामु हमारा।
मोहि सैना इनि वालक मारा।
अवि क्या मुष ले करि मै जावों।
अपुने नग्रि को मै उठि धायो।
मनि आवत लेउो वनिवासा।
उौरु त्यागो सकली आसा।
तवि सैना नृप को प्रतु दीना।
क्या सचरु तैं मनि महि लीना।
तुमिरे पिंड महि होइ कल्याना।
हे नृप महा वली तू सुजाना।
सैना फेरि अधिक कर ल्यावहि।
इहि दोई वाल्क मार चुकावहि।
इनि को जीवति रहनि न देवहि।
चलहो उौर सैन करि लेवहि।
दसि सतवार सैन ले आए।
श्री कृष्णचंदि सभ मार चुकाए।
जरासिध के नार्द आया।
महान महान स्याम मनि भया।
जरासिध उठि सन्मुख आया।
नार्द जी के पगि लपिटाया।
पग पषार आसन वैसाया।
अति अधीन होइ वैन सुणाया।
वोले राजा नमो महान। तांनि हमि सें पमि अजान।।
पुनि वोले नार्द सुर ज्ञान सदा रिदे जाके

राजा जी समिझावो मुझे। चिंता सी देयहि कछु तुझे।
निर्भौ है क्यु तुमिरा राजु। चिंता स्यू किउ बैठे आजु॥
जरासिंध पुनि बोले बैन। महावली है पंकज नैन॥
हौ भागा हरि ते वहु वार। मुझि ते भगाहि रण मुरार॥
इहि चिंता है हिर्दे माहि। किउ ही हमिरा शोक मिटाहि॥
जो जो परे तुमारी सर्न। सभि दुःख मोचन तुमरे चर्न॥
एकि वार भागे भगवांन। पूर्न होहि हमारे काम॥
बोले नार्द महा महान। सुगम बाति है सुनहु सुजान॥
काल यम्न पहि दूत पठाइ। सभि ब्रितांतु जा तिसे सुनाइ॥
मथुरा प्रगटे राम मुरार। तिन ही जीत्यो सत्रहि वार॥
जो तू हमिरा करहि सहाइ। वस कीजै तव यादवराइ॥
काब्ल ते तुमि आवो धाइ। हौ आवो सभ सैन मिलाइ॥
जीवति पकरे केशव राम। पूर्न होहि तुमारे काम॥
काल यम्न कावल ते आवहि। इहि दिस तुमरी सैन सिधावे॥
घेरि लेहि मथुरा कौ जाइ। कहा जाइ बल्न अरु हरिराइ॥
गहि लीजहि दोनहु नंदि नंदन। दीनदयानिधि दुष्ट निकंदन॥
जरासिंध एहि मानी वात। नीकी कहो हमारे तात॥
नार्द कौ पुनि राजा कही। सर्न तुम्हारी हमि हुदिगही॥
तापहि तुमि ही जावो देव। कीजै सुफल हमारी सेव॥
तुमि कौ जात न लागे वार। तुमि तौ मनिमापरि असिवार॥
करो क्रिपा इहु कष्टु मिटावहु। कालयम्न पहि आप सिधावहु॥
वहुतु भला नार्द जी कही। तुमिरी पीडा जात न सही॥
उडे गुसाई महा महंत। हरि नारायण जपते मंत॥
कालयम्न षलु वहु वलिकारी। जरासिंध प्रीतम हितकारी।
पुरा सान माहे तिहि वासा।
रहिति अनिदिन वहु प्रीत प्यासा।

एक दिनसि नार्द क्या कीया।
कालयम्न के ग्रहि पगु दीया।

कालयम्न सो वचनु उचारा।
सुणु वचनु हमारा

जरासिंध तोहि सखा कहावै।
ताहि अवस्ता दुःख दिषावै।
वसुदेव सुत तां संग इहि कीना।
सकल सैन तांकी हति लीना।
महा अधिक दु.ख तांको दीआ।
तो मै वचु तुम सो है कीआ।
सषा प्रीतम वही भला कहावै।
जो अपुने प्रीतम काम आवै।
अवि तुमि तांकी करो सहाई।
सांईंदास तुमि कह्यो सुहाई ११५

कालयम्न इहि विधि सुण पाई।
नार्द ऋषि तिहि आप सुणाई।
तीन क्षुहिणी सैन ले धाया।
तत्क्षण महि मथुरा निकटि आया।
जरासिध तिहि सुनति आवति।
इहि विधि कृष्ण हृदे सकुचावति।
जो षल कालयम्न उौर जावो।
तांसो जा करि युद्ध मचावो।
पाछे नृप जरासिंध जु आवै।
पुरि के लोक सभ बांधि ले जावै।
जरासिंध जो सन्मुख ज्ञाही। कालयम्न पै से पुरि माही।।
बांधि लेइ हमिरो परिवारु। कछु सकर्षण मंत्र उचार।।
एकु कामु उौरु मै करहो। पुरि के लोक दर्वाजा करहो।।
जा दधि माहे नग्रु बसावो। चित्तु ठौर कर्के फिरि आवो।।
कौलापति त्रिभवनि नरकारा। नाथ अनाथनि अपर अपार।।
विश्वकर्म्मा को आज्ञा कीनी। इहि आज्ञा प्रभ ताको दीनी।।
दधि माहे ग्रहि भला वनावो। अधिक सुदरि तांको उपजावो।।
विश्वकर्मे जो आज्ञा पाई। ग्रहि साजन को चल्यो धाई।।
महासुदरि ग्रहि ताहि वनाया वज्र सुंदरि तांको लाया

ताहि किगुरे फटिकि बनाए। मानों बैंकुंठ सोभति भाए ।।
बाग अधिक द्वारे ग्रहि लाए। ग्रहि द्वार बैंकुठि दिषाए ।।
पुनि माया भगवान बुलाई। तात्काल वहु प्रभ पहि आई।
हरि दासी आई हरि सर्न। पर्से सुप निधि पंकज चर्न ।।
करि डंडौत हरि सन्मुष षरी। हरि मूर्ति नैनहु मैं धरी।।
जोग माया को श्री भगवान। आज्ञा कीनी पुर्ष पुरान ।।
मथुरा के जन षडहु उटाइ। सोए रहे न किसी जगाइ ।।
पुरी द्वारका महि पडि पाइ। तात्काल कछु वार न लाइ ।।
सभ उठाइ माया जन परे। पुरी द्वारका महि ले धरे ।।
अति अचित महिमा कर्तार। जो लील्हा सो अपरि अपार ।।
प्रीति भई जागे सभ संत।
देषे सागरि तीर अनंत।
श्री कृष्ण लोक पुरि ताहि बसाए।
बलिदेव को तिहि पहि तजि आए।
आप आए मथुरा पुर माही।
आस्त्रमु आइ लीनो हरि ताही।
हरि संतनि को सदा सहाई।
सांईदास जपो मन लाई।

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संबादे पंचासमोध्याय. ।।५०।।

वज्र जादम मधिपुरी माही।
सेवकु हरि को डहिले नाही।
पुरि को हुकम ताहि को दीना।
इहि करुणा प्रभ ता परि कीना।
पुरि के द्वार तिहि दीए चढाई।
अतरि पुरि बैठे जदराई।
कालयम्न युद्ध को उमिडाया।
ग्रहि त्याग नागो उठि धाया।

श्री कृष्णचदि आगे होयो जाई।
कालयम्न हरि पाछे धाई।
नृप परीक्षति सुकदेव सुनायो।
प्रभु तिहि सन्मुष क्यु नही आयो।
किर्पा करि प्रभ देउं वताई।
मोहि मनि ते संचरु हिरि जाई।
शुक प्रतु नृप प्रीक्षति कौ दीना।
भलो प्रश्नु नृप तैने कीना।
तिहि म्लेछ जाने तजि दीश्रा।
इहि विधि तिहि पर्सनु ना कीश्रा।
वहुरो तिसि की आद सुनावौ।
तुमिरा संचरु सकल मिटावौ।
गर्ग प्रोहति था जदुकुल का।
थी जद दई विर्त कौचुल का।
चुलका कहिति कोऊ सुर ज्ञान।
कोऊ कहिति संकल्प महांन।
था विरक्ता इहु व्याहु न करे।
सदा हृदे पग प्रभ के धरे।
यादव लागे कर्नि विचार।
गर्ग प्रोहतु कर्ति न नार।
या बिनु हमिरा प्रोहतु कौनु।
सूना संतत दिज विनु भौनु।
आवहु कोऊ उपाउ वनावहि।
किवे गर्गि को व्याहु कराबहि।
कोईक दिजको चानक लाय्यै।
कछु हांसी करि गर्गु खिझाय्यै।
हासी सुन मतु व्याहे नार।
वांते उपजहि सुत सुकुमार।
तवै गर्गि जदकुल महि आया। तब जद कौरों वचनु सुनाया।
गर्गि प्रोहतु पुषुं न हो२ पुषु सोऊ जो व्याहे जोइ

हे नरि पुसक संसा नाही। कासु न याके तनि के माहि ।।
कछुक क्रोधु सुन प्रोहति कह्यो। इहि निश्चा चटि भीतरि धर्यो ।।
को ऐसा हमि सुत उपजावहि। याते यादव सभ भज जवहि ।।
काबल पर्यो रुद्र को धान। तहा गयो दिज गर्ग महान ।।
लागा शंकर का तपु कर्न। सदा ध्यावे शिव के चर्न ।।
केतकि दिन को दिज बलिवन्ति। लोन्हि चून की नन्ही म्हंति ।।
ऐसा दारुण लेत अहारा। उदरि निलावै घनिश्रा मारु ।।
अति प्रसन्न तापरि शिव भया। रुद्र गर्गि को दर्सनु दया ।।
नखि सिष लौ अति अद्‌भुत रूप। सकर्ना अकार है सदा अनूप ।।
नमिस्कार गर्गि तिहि कीनी। अनेक उस्तति मुष ते उचिरीनी ।।
सुन जसु शकर भए प्रसन्न। सदा रहै जिहि हरि ब्रह्मन्न ।
विप्र गर्गि को शकर बोले। सभ सुषदायक वचन अमोले ।।
कछु वरु मांगो संत सुजान। रापौ सभै तुमारा मान ।।
गर्ग कह्या ऐसा वरु दीजै। करुणा सागर करुणा कीजै ।।
को ऐसा बेटा हमि पावहि। याके भै यादव भज जावहि ।।
तथा अस्त शकर जी कह्यो। इहि वर गर्ग प्रोहति लह्यो ।।
वरु दे शकर महा महान। भए गर्गि ते अतरि ध्यान ।।
गर्गि प्रोहति इहि वरु पाया। तवै गुसाईं कावल आया ।।
कावल का इकु था अधिकारी। यवन म्लेछ वडा वलिकारी ।।
तिनि प्रोहिति को वेटी दई। गर्गि विप की तिरीआ भई ।।
कोई कि दिन तहा रसे गुसांई। ज्युं ससुरार जवाई न्याई ।।
तवै गर्गि के वालकु आया। कालयम्न तिहि नामु रपाया ।।
सुत उपिजाइ गर्गु उठि धाया। कालयम्न इउं उतिपति भया ।।
कालयम्न नाने के धाम। वडा भया सुष सो विस्रम ।।
जवि तांका नाना मरि गया। कालयम्न तव राजा भया ।।
सत जना वचु पूर्न कर्न। इसि नमित्त भागै दु:ख हर्न ।।
तांसो कैसे अंगु छुहावै। इहि प्रजोग प्रभु निहि तजि जावै ।।
प्रभ कंदरा प्रवेसु करायो। पल द्रिग से जाइ आप वरायो ।

पाछे से आया मुचकदि पहि आइ ठहिराया

प्रभुजाइ अस्थावरिपरि चरिग्रा। हरि पाछे पगु षल नही धरग्रा।।
तहा कंदरा अति अधारी। कीओ प्रवेसु तहा कुज बिहारी।।
मुचकंदि ऋषि सुत महाधाता। तहा रहित भजन हरि राता।।
तहि समे मुचकंद सुप कर्यौ। शैनु कोओ हरि सो चितु धर्यो।।
श्री कृष्ण पीतांवरि डार्यो। आप कदिरा महि पगु धार्यो।।
प्रभु कदिरा प्रवेसु करायो। खल द्रिग से जाइ आप वरायो।।
कालयम्न पाछे से आया। मुचकदि पहि आइ ठहिराया।।
पीतवरु तिहि नैन निहारा। ज्यान्यो कृष्ण परे मनि धारा।।
सिपचलाति षल ने तिहि मारी। जाग परा ऋषु कह्यो पुकारी।।
ऋपि अति क्रोधु हृदे उपिजायो। कालयम्न को भस्म करायो।।
नृप परीक्षति इहि सुरण विस्माया। ऋषि कैसे षलु भस्म कराया।।
इहि सचरु हमिरे मन पर्यो। भस्म कैसे ऋषि ताको कर्यो।।
हे शुक जी करुणा मोह धारो। इहि विधि को मोह देहि बीचारो।।
नृप परीक्षति इहि सुरण विस्माया। ऋषि कैसे षलु भस्म कराया।।
इहि संचरु हमिरे मन पर्यो। भस्म कैसे ऋषि तांको कर्यो।।
हे शुक जी करुणा मोह धारो। इहि विधि को मोह देहि बीचारो।।
शुकदेव कह्यो नृप मनि मुनि लेवो। उौर ठौर कहू चितु न देवो।।
असुर अमर को वहु दुःख देवहि। अमरो वहु को घातु करेवहि।।
गधर्व सकले मिल कर आए। मुचकद भक्ति सो वचनु सुनाए।।
हे नृप हमि वहुता दुःख पावहि। असुर अधिक हमि आइ संतावहि।।
तुम सहाइ करो हमि धाई। असुरो सो चलि करो लराई।।
अमरो जवि इहि भूपति सुनायो। इहि प्रतु सुरण भूप तत्क्षरण धायो।।
असुरो सो वहुता युद्ध कीना। सकल असुर भूपति हनि लीना।।
अमिरो होई कल्याना। भूपति सो तिहि वचनु वषाना।।
वरु मांगो देवहि तुमि ताई। हमि वरु अपनु होहे अतिअधिकाई
मुचकंद तिहि कह्यो सुनाई। सुन वधू तुमि हमिरे भाई।।
मै जा शैनु करो अधिकाई। सुष उपजे भौ सकल तजाई।।
जो कोऊ मोको आइ जगाई। ततक्षरण महि भस्मति होजाई।।
अमरो कह्यो अैसे ही होई। जो तुम कह्यो होइ फुनि सोई।।
मुचकंदु वरु ले कर आया ईहा आइ कर सैनु कराया

अमरो वरु अन्यथा ना जाई। जो वचु कहें सो होई भाई ॥
तिह वचु पलु भस्मतु करायो। मुचकदु तिन आइ जगायो ॥
प्रीक्षति जब ते इहि प्रतु पायो। सकल भर्मु तिन ह्रदे चुकायो ॥
श्री कृष्ण कदिरा जकर आया। मुचकद दर्सनु हरि पाया ॥
मुचकंद सो वचनु उचारा। तू निकटी हे भगतु हमारा ॥
कछु मागो मुप तुमि को देवों। मुप्रसन्न आतम कर लेवो ॥
मुचकद तव वान उचारी। प्रांन पुर्प श्री कुज विहारी ॥
तुमरी भक्त रहे ह्रदे माही। जासि रहे सभ दु.ख मिटि जाही ॥
भगत वछल प्रभ सदा सहाई। धन्य धन्य मुप ते उचराही ॥
छत्री होइ भक्त मोहि जाचहि। तजि विष्या हमिरे रग राचहि ॥
भक्त सदा तुम मस्तक होई। औरु मांगु देवं फुनि सोई ॥
तव कह्यो नृप सुन हो जदुराई। औरु वांछा मन नाही काई ॥
प्रभ कह्यो जाइ राज करावो। मोहि भगत ग्रहि माहि कमावों ॥
मुचकद आग्या जब पाई। नग्रि चल्यो वेग उठि धाई ॥
नग्रि माहि जाइ राजु करायो। हरि को भजनु तिहि सहित कमायो
ताको प्रभ कितार्थु कीना। साईदास अधिक सुप लीना ॥ १

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे इकवंजमोध्याय ॥५१॥

श्री गोपाल मध्य पुरी महि आए। पुर माहे आइ कर ठहिराए ॥
राम द्वारका सों तव आया। जां कृष्ण चद जू वहु चिरु लाया ॥
श्री कृष्ण सहित वल भद्र सहाई। महा अधिक सोभति जदुराई ॥
जरासिंध तव ही फिर आया। पुर को आइ तिन घेरा पाया ॥
श्री कृष्ण रामु तिहि सन्मुख धाए। सैना देषि वहुरि फिर आए ॥
महा अधिक सैंना तिहि आनी। पारावारु न जाइ वषानी ॥
तव जरासिंध के आगे भागे। महा विकटि वन के मग लागे ॥
जाइ विकट वनि आप दुरायो। जरासिंध तिहि पाछे धायो ॥
जरासिंध वन आग लगाई। श्री कृष्ण कह्यो सुण वलदेव भाई
अग्नि निकटि आई क्या करीए। मार्ग को क्युं करि पगु धरीए ॥
राम कह्यो सुण हो मेरे भाई। मार्गि गगन चल्यो तुम धाई ॥

दोनों वीर गगन पग धारे । कचन पुर मगु लीयो विचारे ॥
जरा सिध उलटे पग दीया । मघवापुर को मगु हत लीया ॥
अपुने पुर माहे चलि आए । अति अनद मन माहि वसाए ॥
श्री गोपाल अैसे ही भाया । संत हेत प्रभ कर्मु कमाया ॥
भक्ति वचनु की पैज रषाया । सांईदास सन्मुष झूझाया ॥१

इकि राजा कारेवत नामा । तिह आइ पर्स श्री वलिरामा ॥
तांकी कंन्या पर्म उदार । नामु रेवनी अति मुकुमार ॥
तन त्रेता का पर्म रिसाल । जीवत भया तिसे चिरकाल ॥
पिता राम के आये घरी । हाथ जोरि अति विनती करी ॥
दीन होइ पर्स हरि चर्न । प्यारी सुता तुम्हारी सर्न ॥
हलधर मन महि कर्यो विचार । हम छोटे इहि वड़ी अपार ॥
हलु ताके गलि मेल्यो राम । प्रभ अवनाशी पूर्न काम ॥
धिची तले को पुर्ष पुरान । कर लीनी प्रभ आप समान ॥
भयो विवाह अनदि साथ । दूलो वने हलाइधि नाथ ॥
हलधरि जी को कह्यो विवाह । जपी अहि अच्युत अल्प अथाह ॥
कुदन पुरु इकु नग्रु कहावै । भीष्म नृप तहा राजु करावै ॥
एक सुता पाच सुत अहि माही ॥
रुक्मन नामु ताहि सुरा पायो । निगम वात इहि मोहि सुगायो ॥
लोको सो रुकमरा सुन पाई । महावली प्रभ जादवराई ॥
वासुदेव को सुत कृष्ण है नाम । सभ विधि पूर्न मन विश्राम ॥
कस दुष्ट को तिन ही मारा । सकल असुर कों पकरि संघारा ॥
जो वहु वरु पावो भला होई । अवरु वात करो नहि कोई ॥
शिव वनिता पूजा मन धारों । ताहि ध्यान घटि माहि वीचारो ॥
ताहि दया कर इहि वरु पावों । मन इछा अपुनी सकल पुजावो ॥
शिव वनिता से वा चितु लाया । भीष्म दुहिता जत्नु कमाया ॥
मात पिता तांके सुण पायो । इहि दुहिता वहु जतन कमायो ॥
गौरी की सेवा चितु धारा । घटि अपुने इहि लीयो वीचारा ॥
श्री कृष्णचंद हमरो पतु होई । जो वांछो देवो तुम सोई ॥
इहि प्रजोग तिहि भजनु कमायो । गौरांकी भक्ती चितु लायो ॥

श्री कृष्णचंदि मो इहि संजुक्त करावहि ।
इस विधि कामना सकल पुजावहि ।।
रुक्मनीआ रुक्मन को भाई । तिन मन नहि इहि विधि ठहिराई
ससपाल सहित सजुक्त करावो । काईकाम सुर नन उपजावों ।।
रुक्मने लिप पती पठाई । नृप ससिपाल आवो तुम धाई ।
रुक्मन को कार्जु कर देवो । तुमरी सेवा अधिक करावो ।।
जब रुक्मन इहि विधि सुण पाई । रुक्मने पतीआ दुस्ट पठाई ।।
ससिपाल दुष्ट कौ तिसै वुलाया । मोहि वीर नोहि वैर कमाया ।।
रुक्मन इकु दिज लीयो वुलाई । तांको मोनी दीए अधिकाई ।।
लिप पतीआ ताको उनि दीनी । हाथ जोरि कर विनती कीनी ।।
हे दिज कचन पुर पग धारो । हमरो वचनु मन महि वीचारो ।।
इहि पतीआ नारायण दीजै । चर्न वदना हिनु लाइ कीजै ।।
निसवासर हमि तुमरो ध्याना । तुमरे ध्यान उर्के हम प्रांना ।।
जो कछु तनु मनु धनु मेरो होई । तोह अर्थ कीनो मै सोई ।।
अव तुम वस्तु देत लै जावों । तिहि पाछे हरि विर्दु लजावे ।।
मेरी सर्नि परी हरि तेरी । ज्यु जानो रापो लाज मेरी ।।
ससपालु असुर वहु संग ल्याया । जरासिध दंत वकत्र सवाया ।।
महावली तिनहै दुष्ट आने । कुंदनपुर महि आइ ठहिराने ।।
दिज सदेसे लेकर धाया । द्वारका पुर मार्ग चितु लाया ।।
श्री कृष्ण कह्यो द्वारपालक ताई । सुण ही वात मैं तोहि सुणाई ।।
इकु दिज आजु दूर सो आवै । हमरे द्वार पहि आइ ठहिरावै ।।
मो पहि तुमै वेग ले आवे । मनु तू मन महि कछु सकुचावहि ।।
क्षिण इक पिछो तव दिज आयो । द्वारपाल ले अतर धायो ।।
दिज को पडि प्रभ पहि पडा किआ ।
प्रभ ने दिज को उर महि लीआ ।
पूछति प्रभु दिज कह्यो सुणाई ।
कृपा करी क्या मन तुम आई ।
दिज कह्यो प्रभ वाति सुणावो । एक एक मै तोह वतावो ।।
रुक्मन मोह तोहि पाहि पठायो । इहि प्रजोग मै तुम्हि पहि आयो ।।

पतीआ रुक्मन की कढि दीनी। मुष अपने से विनती कीनी॥
जो रुक्मन मुष वचन सुनाए। दिज प्रभ ताई आइ वताए॥
प्रभ पतीआ रुक्मन पढि लीनी। साँईदास विधि मन महि कीनी १२०

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे बवंजमोध्यायः॥५२॥

दिज को प्रभ ने कह्यो सुणाई। कार्जु कव हौवे मेरे भाई॥
इहि विधि सुण दिज विनती ठांनी। मै वलि जावौं सारंग पानी॥
कार्जु तीन दिवस पाछे होई। जो विधि सी आषी मैं सोई॥
पार ब्रह्म हरि भक्त उधार्न। श्री गोपाल जी असुर संघार्न॥
तव ही गर्ड को लीओ वुलाई। गर्ड आयो छिन विलम न लाई॥
श्री कृष्ण गर्ड के ऊपरि चढिआ। दिज के सहित लै गवनु करआ॥
दो दिन भी दिज ने ढिल कीनी।
रुक्मन इहि विधि मन महि लीनी।
हम सार्ष तिह घर वहु नारी।
उनि परवाहि न करी हमारी।
रुक्मन रगु भयो वदिलाई।
षान पत्र पीरी देत दिषाई।
सूष्म भई चिंता मन लीए।
रुक्मन दुषत है अपुने जीए।
लोक कह्यो वसुदेव के नंदन। श्री कृष्णचद माधो मकरंदन॥
आइ वाग माहे ठहिरायो। रुक्मन इहि सुण कर सुष पायो॥
दिजु तत्र ही रुक्मन पहि आयो। सभ व्रितातु तिहि आष सुणायो॥
रुक्मन निर्प अनदु वहु पायो। चिंता जीओ सभ तजायो॥
नग्र माहि सभ लोकों सुण पायो। वसुदेव को सुतु श्रीकृष्ण है आयौ॥
वनिता रुक्मन को ले धाई। गोरा के अस्तल ले आई॥
शिव वनता की पूजा कार्नि। धाई चली रामा तत्कार्नि॥
तहा जाइ कर पूजा कीनी। सीसु निवाइ डंडौत वहु कीनी॥
रुक्मन सों तिन्हा वचनु उचारा। वहु ससपाल सो सषा हमारा॥
रुक्मन रंचक मुष ते भाषा। कृष्ण सषा हमरा होइ आषा॥

तब रामा सभ कह्यो पुकारे। हे रुक्मन क्या बात उचारे॥
रुक्मन रामा को अतु दीना।
जो तुम कह्यो सो मन धरि लीना।
रुक्मनीआ सुतु भीष्म केरा।
कुंदन पुर महि ताको डेरा।
रषिक वहुतु रुक्मन संग दीए।
श्री कृष्णचंद वास मन अनर लीए।
श्री कृष्ण आयो सतु लेकर जावै।
जग महि हमहि कलकु लगावै।
पूजा कर रांमा उठि धाई।
गोरां भवनु तजि मग महि आई।
रुक्मन घटि हौरे हौरे जावो।
मतु आवे हम दर्सनु पावो।
जो ले चले अधिक भलो होई।
नाहित दर्सनु देवै सोई।
रुक्मन इहि मन धावै जावै।
हौरे हौरे पग मग ठहिरावै।
श्री गोपाल दुष्ट टानि हारा।
सत सहाई निर्भौ नरंकारा।
वैन वजावति तब ही आयो।
गर्ड चढ्यां हरि दर्सु दिषायो।
जो रक्षक रुक्मन संग आए।
दर्सनु देषि सकल वौराए।
ठांडे रहे सुधि वुधि वौरानी।
मांईदास हरि इहि मन मानी १२१

श्री कृष्ण आइ रुक्मन करु लीना।
रथ पर आए आसनु तिह दीना।
द्वारका पुर ताई उठि धाई।
तब वलभद्र वचन सुनाए।

हे प्रभ तुम सुप सों ग्रहि जावों।
तहा जाइ कर आश्रमु पावों।
मैं पाछे युद्ध करके आवो।
जो युद्ध करे तिहि मार चुकावो।
रुक्मन सहित लई हरि धाए।
राम तहूं मग महि ठहिराए।
जरासिध औरु असुर घनेरे।
संग लीए आए वहुतेरे।
रुक्मन जव इहि असुर निहारे।
भई भै चकृति मन संचरु धारे।
एहि संचरु लीनो मन माहि।
प्रभ सो पस्यि मोको ले जाही।
प्रभ जी रुक्मन औरि निहारा।
संचरु मत ताहू मन धारा।
रुक्मन को तव वचन उचारे।
सभ निधि प्रभ जी जानरण हारे।
हे रुक्मन मतु नाहि डुलावो।
क्यु संचरु मन माहि ल्यावो।
जरासिध मुप कह्यो सुणाई।
सुनो लौक तुम हितु चितु लाई।
सभ सभि नृप क्या मुप दिपलावहि।
जो इहि जादव वस ले जावहि।
हम बडे नृप पति सनि से लीए। ठांढे है वलु कछु ना कीए।।
जादव जात कहा कहु कहीए। ताहि नामु क्युं मुप उचिरहीए।।
घ्रिग हमि जन्मु जो इहि ले जावै। हमरो वसु कुल सकल लजावै।।
जग महि जीवणु क्या मेरे भाई। जव कुल हमरो जाई लजाई।।
थौरे दिन जीआ वहु नीका। जो सोभति को लीजे टीका।।
जरासिध इहि मन महि धारी। सांईदास जो कहित पुकारी १२२

इति श्री भागवते महा पुराणे दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे त्रिवंभिवोध्याय ।। ५३ ।।

जरासिंध सैना ले धायो।
तनक्षिण महि हरि के निकट आयो।
जादव तब सन्मुप होइ आए।
जरासिंध सों युद्ध कराए।
थकित भए पाछे हरि डारे।
इहि प्रयोग जादव भी हारे।
श्री कृष्ण राम आगे को आए।
जरासिंध को सन्मुप धाए।
वहु सैना जरासिंध की मारी।
राम कृष्ण को बल भुज भारी।
केते भाग गए तत्कारा।
ससपाल निकट आइ ताहि पुकारा।
श्री कृष्णचंद को वलु अति भारी।
को समसर नाही बनवारी।
हे नृप तुम सिर होइ कल्याना।
तोहि कल्यान करे पुर्प निधाना।
रुकमा तवही वचन उचारे। सुण ससपाल तूं वीर हमारे।।
मै ताहूं के पाछे जाओ। रुकमन को मैं फेरि ल्यावो।।
लज्जा मानु होयो जग नाही। कहा मुप जग महि निकसाही।।
मोहि बहिन को वहि ले धाया। हमरे घर जोरा उनि लाया।।
मै जाइ तासो युद्ध मचावो। ताको हति रुकमनि ले आवो।।
मै जो रुकमनि को नही आनो।
इहि निश्चा मन माहे मानो।
वहुरि जीवति ईहा न आवों।
कुंदनपुर महि पगु ना पावों।
एहि प्रतज्ञा करके धाया।
दोक्षूहणी सैना संग ल्याया।
वचन उचार कह्यो हरि ताई।
ठांढा रहु कहां भागा जाई।

हम सो युद्ध करके तुम जावों।
आन अमान क्यु तुमे हिरावों।
राम कृष्ण सुण इहि ठहिराए।
रुक्मा के वहि सन्मुप धाए।
जो कुछ सैना इहि संग आनी।
श्री कृष्ण राम भारी मन मानी।
चाहित कृष्ण दुष्ट को मारे।
तव रुक्मनि इहि बचन उचारे।
हे प्रभ इहि तुम गति ना जानें।
तुमरी गति को नाह पछानें।
जव रुक्मनि इहि वात बपानी।
श्री ब्रिज राज हृदे महि मानी।
मानि तजि तिहि मूड मुडाया।
रथ अपने सों बांधि चलाया।
रुक्मा जव रामहि निहारा।
रथ सों बाधा है तत्कारा।
मुप अपुने ते वचनु सुनाया।
हे प्रभ तै भला नाह कराया।
रुक्मा को काहे वंधि लीया।
इहि कार्णु काहे तुम कीया।
लोक हमारी निद्या करई।
श्री कृष्ण काम अैसे चित धरई।
जव वलिदेव ने इहि वचु कीआ।
श्री कृष्णचंद मुक्ता तिस कीआ।
रुक्मा प्रतज्ञा कर आया।
कुंदनपुर से जव ही धाया।
जो रुक्मनि को फेरि न ल्यावों।
जीवत्ति कुंदन पुर ना आवों।
सिरु मुंडा सैंना सभ मारी। अवि कुंदनपुर के पगु धारी।
एक नग्रु तिह अवरु वसायो साईदास तिह महि ठहिरायो १२३

द्वारका प्रभु रुक्मनि ले आया। भले महूर्त्त काजु रचाया॥
अमरो की वनिता सभ आई। हिर्पमान होइ मंगल गाई॥
सुरपति की दारा भी आई। मोतन माल संग ल्याई॥
ताका मोल मै कहा वपानों। ताहि मोल की गति ना जानो॥
रुक्मनि के उरि माहे डारी। अशीर्वादु मुप वचन उचारी॥
तोहि पति सदा सदा ही जीवो। ताते तोहि मनि बहु सुषु थीवे॥
वदी जन तव वहु मिल आए।
ताल मृदग अनेक वजाए।
भवन भवन पर मगल गाही।
मगल गावहि वहु हिर्पाही।
कामरूप इकि दिन क्या कीआ।
चोआ चदन अग को दीआ।
भामनी रूप आपना कीया।
केस महि कुसम अध्कि तिन दीया।
अंवर नाना अंग उढाए।
भूपत अबर वहु फहिराए।
सुदर रूपु तिहि वर्नि न जाई।
अर्नि ताहि देप वर जाई।
इंदि कहा स्मसर तिहि होई।
तिहि स्मसर आन रूपु न कोई।
गौरापति के आगे आई।
शिउ जी को तिन दई दिपाई।
चाहित शिव ताई पति आया।
मन महि तिहि इहि बात वसाया।
शिव तिहि देषि हृदे लुभाना।
निस्चे इहि मन महि आना।
इसे गहो गहि कामु कमावों।
मन की वांछा सकल पुंजावों।
शिव वाही की ओर सिघाया।
चाहित ताको उरि ले लाया।

भामनी तजि के आगे धाई।
शिव ताहूं के पाछे जाई।
शिव वलु कर ताहूं निकटि आयो।
वीर्ज शिव को धर्नि गिरायो।
शिव तव निर्ष रह्यो विसमाई।
मन महि इहि विधि आरण टिकाई।
कामरूप मोहि छलने आयो।
मो सो इन ने दगा कमायो।
मस्तकि ते शिव अग्नि निकारी।
भामनी कामरूप की जारी।
ताहि भस्म ले अग को लाई।
शिव तवि क्रोधु कीयो अधिकाई।
कामरूप तवि बिनती ठानी।
मोह गति कवि होइ सारग पानी।
गौरापति तव तिन वरु दीना।
इहि वचु अपने मुप ते कीना।
श्री कृष्णचदि जव लए अवतारा।
तिह समे तुमरे होइ निस्तारा।
श्री कृष्णचंद तुम को उपजावै।
मोहि वचु पूर्न वही करावै।
शिव को वचनु धर्यो मन माहि।
श्री गुपाल विधि सकल जु ताही।
कामरूप हरि उतपति कीना।
जन्मु गर्भि रुक्मनि के दीना।
हरि प्रदुम्न धर्यो इसि नामा।
महासरूप वनिता विश्रामा।
उसि स्मसर जग अवर न कोई।
कामरूप सुदर है सोई।
जो इसि मुष निर्ष कोई भामा।
वीर्ज ढरे तजै विस्रामा

कामरूप जधि देए दिपाई। साईदास धीर्ज न वासाई ॥१२८

इति श्री भागवते महापुराणे दस्मस्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चौरंभ्रमोध्यायः ॥ ५४ ॥

सावर असुर तांको वलु भारी। नार्दि तांको कह्यो पुकारी ॥
वालकु भयो कृष्ण ग्रहि माही। तोह नासु करसी वहु आई ॥
प्रदुम्न को तिह पर्यो दुराई। सांवर असुर महा वल काई ॥
प्रदुम्न दिन दस को भया। तौ वहि दुष्ट उठाइ ले गया ॥
नार्दि वचु तिन मनि वीचार्यो।
इहि प्रजोग दधि महि पडि डार्यो।
श्री कृष्णचदि तहा भए सहाई।
मीन उदर महि तिहि लोयो पाई।
तीन वर्पि तक तहूं समाया।
मीन उदर महि वासा पाया।
वधकि वाही मीन फहाई।
वाधी मीन वाहिर जलि आई।
वधिक आएा सावर को दीनी।
दुष्ट असुर वहु कर महि लीनी।
छिन महि ताको उदर विडारा।
वालकि निकस्यो रूप उजियारा।
अनिद भानु तिह रूपु दुरावहि।
सुकचमान होइ मुप न दिपावहि।
प्रिथम एक कन्या निकस आई।
तिह उस्तत कछु कही न जाई।
मायावती है तांको नामा। महा सुंदरी सुदर रामा
सूपकार असुर के वाही। असुर भरोसो लिहि अधिकाई ॥
वालक को तांको पडि दीना। इही वचनु सांवर ने कीना ॥
इसि वाल्क कों करो अधिकाई। दधि अरु मापनु अधिक षवाई ॥
एक दिनसि नार्द चलि आया। मायावती सो सवदु सुनाया ॥
पूर्व जन्म को इहि पतु तेरो। मै तुम्हे कहो सुनो कह्यो मेरो ॥

श्री कृष्ण पूत प्रदुम्न है नामा। पूर्व जन्म को पतु तुम रामा।।
रुक्मन गर्भ सो प्रगट्यो एही। एहि वालकु तुमरो सनेही।।
नादि ऋषि इहि वचु कहि गया।
प्रदुम्न द्वादस वर्षि को भया।
मायावती प्रेमु अधिक वधायो।
प्रदुम्न के सग अति उरिझायो।
जव नान्हा तव औरु विधि मारी।
अवि भयो अधिक कछु औरु निहारी।
प्रदुम्न मायावती सो भाषा।
ताहि प्रीत देषि कर आषा।
जव मैं नान्हां मां तू पारहि।
अव अधिक भयो कछु औरु निहारहि।
इहि विधि का मोहि देहु विचारा।
तव चितु होवै ठौर हमारा।
मायावती ताको प्रतु दीना।
राज कवर विधि इहि मन लीना।
नार्द इकि दिन मो पहि आया।
मोको नार्द भाष सुनाया।
इहि वालक को जानत नाही।
पूर्व जन्म पतु तुमरो आही।
इहि प्रजोग मैं प्रीत वढाई।
जो जन्म जन्म तुम मोह सुषदाई।
पूर्व जन्म विधि मन महि धारी।
तौ मन प्रीत करी अति भारी।
मायावती इहि वचन सुनायो।
सांईदास मिल आनद पायो।।१२५

एक दिनसि कंन्या क्या कीआ।
अपुने मन महि इहि विधि लीआ।
प्रदुम्न सों तव वचन उचारे।
हे प्रभ पूर्न प्रान हमारे।

जो तुम इनि पलि ताई मारो।
मेरो कह्यो मन माहि विचारो।
हमि तुम चलहि द्वारका मांही।
रुक्मन कृश्न वस्ति है जाही।
जब मायावती एह सुनायो।
तब प्रदुम्न मन महि ठहिरायो।
ताहि नग्रि महि धूम मचाई।
लोक नग्र के सभ दुप ताई।
सांवर को कछु बुरा कहावै।
मन महि त्रासु तासि नां ल्यावै।
सावर पहि जाइ लोक पुकारे।
इहि बालकु तौहि नग उजारे।
सांवर जवि इहि विधि सुण पाई।
तब प्रदुम्न सों कह्यों सुणाई।
लोको कों काहे दुप देवं। काहूं दुपनि काहि कर लेवं।।
तब प्रदुम्न तांको प्रतु दीना। मैं काहू को दड न दीना।।
तू मोको कहु कहा कहावै। हमि सेती काहे झगिरावै।।
तूं क्या चाहति है हमि पाहे। अब ही कहे तोहे चर्नि दिपाहे।।
जब साबर इहि विधि सुण काना। क्रोधु कीयो मन महि अधिकाना।।
दोनों ने सग्राम मचायो। महा अधिक युद्ध तिनहू करायो।।
असुर मायावत विद्या जाने। सकल बात मन महि पछाने।।
माया रूप कर गज प्रगटायो। गज प्रदुम्न की औैर पठायो।।
तब प्रदुम्न विद्या सिपि लीनी। मायावती से मन महि कीनी।।
कुंजर सनमुष अग्नि जराई। गज गयो भाग अग्नि दिष्टाई।।
युद्ध कीओरि निसवासर चारे। दोऊ सूर कोउ नही हारे।।
पंचमदन बल ताई मार्यो।
गग्नि चर्यो द्वारका चितु धार्यो।
मायावती ताई संग लीए।
द्वारका पुर के मग पग दीए।

द्वारका निकट गए जव दोऊ।
धर्नि महि प्रगट भए आइ सोऊ।
रुक्मन अरु सभ नायक रानी।
बैठी दर घर सभ ठकुरानी।
जब प्रदुम्न धर्नि पर आयो।
एही रूपु तिन आप बनायो।
शख चक्र पितवर ओढाए।
कृष्ण रूपु सभ लीए बनाए।
रुक्मन निर्ष्यो क्रिष्ण जी आयो।
इक दारा सो सग ल्यायो।
सुकच भई ग्रह महि ठहिराई।
श्री कृष्ण देप के वहु सुकचाई।
जव प्रदुम्न वमुधा ठहिरायो।
रुक्मनि ने तव द्रिग निर्पायो।
श्री कृष्ण नाहि उौर है कोई।
ग्रहि तजि वाहिरि आई सोई।
तव रुक्मनि ने वचनु उचारा।
ऐसो ही सुतु अहा हमारा।
धन वहु गर्भु जाससे निकस्या।
जास देषि आतम हमि विगस्या।
रुक्मनि ने ऐसे ही भाषा।
एही वचनु उनि मुष ते आषा।
छिनु इकु वीत्यो कृष्ण जी आयो।
रुक्मनि सो प्रभ आप सुणायो।
जानति है इसि वालक ताई।
जो नही जानत तोहि वताई।
रुक्मनि नें तव कह्यो पुकारे।
मैं नही जानों प्रान अधारे।
तव प्रभ रुक्मन सों प्रितु दीना।
प्रदुम्न सुतु तोहि वचु कीना

जब रुक्मनि इहि विधि सुख पाया।
दौरि प्रदुम्न अंग लगाया।
तब ही वसुदेव भी आयो।
देवकी सुख बहु आनदु पायो।
कंचनु बहु बिपो को दीना।
माईदास मंगलु बहु कीनां १२६

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पजिवंझमोध्याय: ॥५५॥

शत्राजितु जादव पुर माही।
रहित सदा दुर महि सुप माही।
नितप्रति दधि के निकट जावै।
रवि को नहा जाइ जापु जपावें।
एक दिनसि पढो जापु जपाए।
रवि किर्पा तब ताहि कराए।
रवि जिह समे आप चलि आयो।
सैना पति मणको ले आयो।
मणको ले निह सीस बनायो।
रवि करुणा कर फिर उठि धायो।
रवि जाइ गगन ऊपर ठहिरायो।
मग को अधिक उजिआरा पायो।
सिर पर धरी चला पुर आवे।
मण की किर्ण सिर बहु चमिकावैं।
नर नारी जान्यो रवि आयो।
श्री कृष्णचंद सो जाइ सुनायो।
रवि तुमरे मिलने को आवै।
इहि प्रजोग जो दर्सनु पावै।
नर नारी दौरी निकट आई।
देप मग तब मन बिसमाई।

हमहि भूल कर कृष्ण सुनायो।
रवि तुमरे दसन को आयो

रवि मरण शत्राजित को दीनी।
अपुती करुणा इसि पर कीनी।
सैन्नादति मरण इही विचारा।
जहा रहे सुप होइ अति भारा।
मेघ वसहि अन्न उतपति होवै।
दुप दर्दु सभ ही कौ षोवै।
नग्रि के लोक अधिक सुप वसही।
दु:ख दर्द निहि तुर्न हि नसही।
दस मरण कचनु नितप्रित देवै।
अपतिश्रो सकली हिर लेवै।
श्री कृष्ण कह्यो शत्राजित ताई।
मण हमि देहि तो भला कराई।
राज हार इहि भली सुहावै।
हमि देवहि तुम दुख सभ जावै।
उग्रिसेन रापै ग्रहि माही। तोहि द्वारि सोभा न दिषाही॥
शत्राजित ने प्रितु दीना। श्री कृष्णचंद ने क्या चित लीना॥
जो काहू ग्रहि बहु द्रव्य होई। आन को देवति नाही कोई॥
तव श्री कृष्ण कह्यो भलो भाई। काहि कर्ति हो मोह लराई॥
मैं कछु तोहि बुरा नां कह्यो। साईदास क्यु इउ उचिरह्यो १२७

प्रसैन शत्राजित को भाई। तांके मन महि इहि विधि आई॥
सनापनि मरण सिर ठहिराई। अपेरन्नित कर्न चल्यो धाई॥
महा विकट वनि जहि जव गया। तहा जाइ कर ठाढा भया॥
मरण की किर्ण उजीआरा पायो। मृग हेरन को इनि चितु लायो॥
किर्णो मरण का कीयो उजीआरा। सिंघु निर्ष आयो तत्कारा॥
शत्राजित के वीर को मारा। मरण लई पसि वन को पगु धारा॥
तांको जांबवान ऋपि पेषा। अधिक उजीआरा मरण का पदेषा॥
जाबवान केहर को मारा। मरण ले आप ग्रहि को पगु धारा॥
रैन भई वधू ना आयो। शत्राजित मनु भर्मि भुलायो॥
पुरलोको पहि जाइ पुकारा। श्री कृष्ण मार्‌यो है वीर हमारा॥
कौन धर्मु जग महि कहावै। पर दूषन को जौ उठि धावै॥

इक दिन कृष्ण कह्यो मोह् ताई।
नग देवौ पुर सुख बसाई।
राघो उग्रिसेन ग्रहि माही।
तुमरे ग्रहि भली सोभन नाही।
मै मणि ताहि न दीनो भाई।
मन धरि रोसु मार्यो मोह भाई।
तांको हति कर मण ले आया।
मोह बंधु को मार चुकाया।
ग्रैसे कहित फिर्ति पुर माही।
श्री कृष्ण सुन्यों श्रवण धरि ताही।
सुण हरि इहि मन महि सकुचायो।
शत्राजित दूपनु हमि लायो।
कहा करों इसि का उपिचारा।
जो हमरो होइ दुप निवारा।
एक दिन श्री कृष्ण लोक संग लीए।
ताहि भ्रात ढूडन पगि दीए।
चलति चलित वन माहे आए। इति उति ते नैनन निर्षाए।।
मृत्यक देह तास की पाई। अश्व सहित मार्यो मृग राई।।
तब ही गोविंद वचन उचारे। भला भयो है बीर हमारे।।
ऊहां ते आगे पग धारे। मग महि म्रित्यक सिंह निहारे।।
केहर तजि आगे को धाए। पग पुर जाववान निर्षाए।।
पुर निकस्यो जाइ कंदर माही। सभ रहे विस्म भीतर ना जाही।।
श्री कृष्ण कह्यो मैं भीतर जावौ। तुम को इसि ही ठौर वहावौ।।
द्वादश दिन तकि तुम ठहिरावौ। हमरो मगु द्रिग सौ निर्षावौं।।
जो द्वादस दिन को मैं आया। बहुत भलो मोको अधिकाया।।
जो द्वादस तकि नाही आवौ। इसि ही कंदरा माहि ठहिरावौं।।
तब तुम अपुनें ग्रहि को जाय्यो। अपुने पुर के उठि कर धाय्यो।।
श्री कृष्ण प्रवेसु कीयो तिह माही। मन महि त्रासु कीयो कछु नाही।।
मण बालक कर माहि निहारी। निर्षी मण सुंदर गिरिधारी।।
जब श्री कृष्ण गयो तिहि ठौरा एक वनिता निर्ष्यो हरि ओरा।

मुष ते तिन ने कह्यौ पुकारे। मानस ईहा कहा पग धारे।
इहि मानुषु कहा ते आयो। साँईदास जांववान सुणायो ।।१

जांबवान सुनति उठि धाया। दीनानाथ सौ युद्ध मचाया।
दिनसि सप्त तिन है युद्ध कीनो।
हरि जांबवान को निहवलु कर लीनो।
द्वादश दिन प्रभु वचु कर आयो
सप्त दस दिन तहा युद्ध करायो
जब द्वादस दिन पूर्ण भए। तब उनि लोकों मन महि लए।
चल हो अब पुर को उठि जावहि। काहे को ईहा ठहिरावहि।
द्वादस दिन भए प्रभु ना आयो। सकल लोक एहि मतु ठहिरायो।
रुदनु कतिन पुर को धाए। चलित चलित पुर माहे आए।
पावन पीवन सकल उनि त्यागे। हा हा कृष्ण कर्नि सभ लागे।
शत्राजित को गारी देवहि। तांसो एही बचन उचिरेवहि।
हम सौ दूर गयो जदुराई। नारायण तोहि नासु कराई।
हमिरो जीव प्रानपति पायो। तू अपुने ग्रहि महि सुप सोयो।
तुमरे ग्रहि को राम जराई। जैसी अग्नि तैं हमि तन लाई।
जाववान बलु कृष्ण हिरांयौ। जाबवान निश्चै मन आयो।
इहि नारायण रूपु दिषावै। मानुप हमि कौ दिष्ट न आवै।
मानस कौ बलु कहा बसावै। जो हमि सेती युद्ध करावै।
चादर लेकर उर महि डारी। तव वहु सर्नि आयो गिरधारी।
चर्न गहे कह्यो मै वलि जावा। इही दानु मै तुम से पावा।
मेरो औगुणु लहो मिटाई। मै युद्ध कीनो सन्मुख धाई।
मण कन्या के सहित ल्यायो। हाथ जोरि प्रभ आष सुनायो।
हे प्रभु इहि सेवा तोहि करई। तोहि सेवा कर्न चितु धरही।
मरण अरु जांमवनी प्रभु लीने। अपुने पुर के मग पग दीनै।
तजि कदरा वन आइ ठहिरायो। देवकी कौ तब आष पठायो।
मैं इकु काजु कीयो ले आयो। वन महि ताह सहित ठहिरायो।
तुम आवौ हमि को ले जावौ। वेद कहा मन महि ठहिरावो।
जब देवकी इहि विधि सुण पाई। सकल लोक पुर ले सग धाई।

अधिक बजत्र संग तब लीए। श्री कृष्ण चंदि ओर पग दीए।।
ततक्षिण महि हरि पाहे आई। जानवती देव की उरलाई।।
संग लीए तांको ग्रहि आनी। काजु कीयो हरि सारग पानी।।
श्री कृष्णचंद तब ही क्या कीआ। मरा कढि अपुने कर नहि लीआ।।
सकल लोकपुर लीए बुलाई। शत्राजित को मरा दई गुसाई।।
शत्राजित मन बहु मुकचायो। मैं दूषन हरि सेती लायो।।
लोक कह्यो मूर्ष अज्ञानी। तैं कह्यो मरा लई सारग पानी।।
मरा तो अवर ठौर निकस्याई। साईदास बहु मन सकुचाई।।१२६

शत्राजित मन कीयो विचारा। मैं औगुणु कीनो अति भारा।।
इहि औगुणु कैसे मिट जाई। मन महि सोच विचार बनाई।।
अपुनी दुहिता मोहिन देवों। औगुण आप मिटाइ कर लेवो।।
सभ को बचु कीयो ग्रहि माही। भांजनु केसर कर लीयो ताही।।
बहुरो फिरि आयो सभ माही। जादव सकल बैठे मे जाही।।
आइ कृष्ण को तिलुक लगाया। मुष अपने से बचु उचिराया।।
सत भामा नामु कन्या है मोरी। मैं श्री कृष्ण को दीनी चेरी।।
सैनापति मरा भी मैं दीई। श्री कृष्णचंद को भेटा कीई।।
इहि कर्के अपुनें ग्रहि आया। ग्रहि मैं आइ के काजु रचाया।।
माघ मास काजु निहि दीना। जादव कृष्ण बराति बहु लीना।।
श्री कृष्ण आइ कर कार्जु कीयो। शत्राजित ने बहु कछु दीयो।।
कनक मोती चेरी अधिकाई। कुचरि अधिक कछु कह्यो न जाई।।
सेनापति मण कौ ले आयो। कह्यो भेटि हमि जदुरायो।।
राषो मरा अपुने ग्रहि माही। जो कछु कनक उपजे इस्मि पाही।।
उग्रि सैन नृप के ग्रहि डारो। कछु चिंता मन महि ना धारो।।
प्रभ शत्राजित कौ इउ कह्या। साईदास सुष मन महि लह्या।।१२

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे षटपंचासमोध्यायः ।।५६।।

लोको कृष्ण को आप सुनाया। हे पूर्न प्रभ त्रिभुवन राया।।
ध्रितराष्ट्र सुतु अति हंकारी। दरजोधनु छत्र सिर धारी।।
तिन नें लाषा मंदर कीना पांडो सुत डारि अग्नि विहि दीना

तुम किर्पा छूटै पाडवाइनि। उनि की रक्षा कीई नराइनि ।।
श्री कृष्ण सुनी जब इहि विधि कीना। रथ पर चर्यो पुप निधाना ।।
दल्दिेव को हरि ने प्रतु दीना। हस्ततापुर को हरि पगु दीना ।।
पाडो सुत को पूछन धाए। उग्र सैनु रक्षकु तजि आए ।।
सुपलकि सुत को पुरु तजि दीआ। कीर्ति ब्रह्म आज्ञा तहूं कीआ ।।
सुधन्वा तहूं ही ठहिराहो। औेर सैना पुर महि अधिकायो ।।
सुधन्वा शत्राजित को भाई। पुर महि छाडे कौर कन्हाई ।।
आप ततक्षिण हस्तनापुर आए। पाडो सुत ब्रह्मन हिपाए ।।
अति अनदु पाडो सुत पायो। श्री कृष्णचरि जब दर्सु दिर्षायो ।।
सुपलकिसुत पुर कचन माही। सुधन्वा मिल मत्र कराही ।।
शत्राजित को मार चुकावहि। इस ते मण षस करि हमि ल्यावहि ।।
हम सो इन ने पवर न कीई। अपुनी कंन्या कृष्ण को दई ।।
अर्न ने गगन कीओ उजीआरा। इनने शत्राजित को मारा ।।
सैनापति मण को ले आए। भिन्न भिन्न ग्रहि जा ठहिराए ।।
शतधन्वे इहि कर्मु कमायो। सांईदास तिह मार चुकायो ।।१३

शतिभामा जब इहि सुण पाई। रुदनु कीति पित के नग्र आई ।।
रथ पर चरि हस्तनापुर धाई। ततक्षिण महि गोबिद पहि आई ।।
सभ ब्रितांतु प्रभ आइ सुनाओ। शतिधन्वे मिल इहि कर्मु कमायो ।।
मम पित भार मण पडी दुराई। अब चाहित औरु कर्मु कमाई ।।
जब इहि विधि पाई गिरिधारी। ततक्षिण गर्ड को लीयो पुकारी ।।
तिह चरि कंचनपुर को धाए। बेग माहि पुर माहे आए ।।
शतिधन्वा सुण इहि बिधि भागा। महा बिकट वन के मग लागा ।।
प्रभ ताहूँ के पाछे धाया। शतिधन्वे बन महि आपु हिराया ।।
पकिर शतिधन्वे को हरि मारा। तब ही प्रभि मुप वचनु उचारा ।।
शत्राजित उ.गुण ना कीआ।
तैं काहे तिस को हति लीआ।
मण काहूं सो प्रगट न होई।
श्री कृष्ण कह्यो मण इन कहू सोई।
श्री कृष्ण वहुरि पुर माहे आया।
अपुने ग्रहि अहि आश्रमु पाया

मरण सुपलकि सुत पडो दुराई।
नगर वनारसी बैठो जाई।
मेघ न वर्षहि अन्नु नही होवै।
इहि विधि लोक अधिक मन रोवै।
कूकत कूकत हरि पहि आए।
श्री कृष्णचंद सों बचन सुनाए।
जिह दिन से मरण ईहा ते गई।
जरा रोग दूषन बहु भई।
पुर सकला बहुता दुषु पायो।
तौ हम तुम को आइ सुनायो।
एकु दूतु प्रभ लीयो बुलाई।
सुपलकि सुत पहि दीयो पठाई।
दूत को प्रभ ने बहु समझायो।
सुपलकि सुतु को कह्यो सुनायो।
पुर वनार्स तांको वासा।
सुपलकिसुतु हमि दर्स को प्यासा।
जो मम भक्ति शीघ्र तुम आवों।
छिन रंजिक तहा बिल्मु न लावों।
दूत आयो अक्रूर के पाहे।
जो प्रभ कह्यो सो कहित सुनाहे।
जब अक्रूर सुणी विधि काना।
आनदु भयो हृदे सुप माना।
पुर वनार्सी को तजि धाया।
ततक्षिण कौलापति पहि आया।
श्री गोपाल नें तब क्या कीआ।
सुपलकिसुत को अंग महि लीआ।
हसकर मुष ते वचन उचारा।
सुण सुपलकि सुत मीत हमारा।
किह प्रयोग इहि पुरु तजि दीआ।
वानार्स किउ वासा लीआ।

सुपलकि सुत इहि बचनु सुनायो।
लज्जामान सिरु तले करायो।
सैनापति मरा हरि को दीनी।
लज्जा अधिक हृदे महि कीनी।
सुप ते कछु ना बचन उचार्यो।
प्रभु बचु सुण लज्जा चित धार्यो।
जब ते मरा पुर माहे आई। जरा रोगु भाग्यो सभ भाई॥
भई कल्याण कचन पुर माही। साईदास दुष सकल मिटाई १३२

इति श्री भागवते महा पुराणे दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति सवादे सतवंभमोध्यायः॥५७॥

पाडवसुत बन ते ग्रहि आए। आन पेठ राजु कर्ने लागे॥
दु:ख दर्दु गए सभ भागे॥
श्री कृष्णचंदि हृदे लीयो बीचारी।
श्री गोपाल सुदर अधिकारी।
दुर्जोधनु हमि मिल्यो नाही।
इहि प्रजोग मन महि बिसमाही।
हरि पांडो सुत देषन धाए।
ततक्षिण महि हस्तनापुर आए।
अंग अंग सभहू सोहाए।
तांके दु.ख सकल हरिषोए।
तब पाडवाइन बिनती ठानी।
क्रपा करी प्रभ सांर्गपानी।
सुपलकिसुत प्रभ ताहि पठाया।
जिह समे तें प्रभ जादमराया।
हमि उपराला बहुता कीना।
अपुने जान इहि बिधि कर लीना।
तब ही पुर के लोको जांना।
इहि निश्चै मन अंतर आना।

श्री कृष्ण सहाई है इनि केरा।
इनि के दुष आवै नही नेरा।
धर्मपुत्र फिरि वात चलाई।
सुण हो प्रभ भक्तिन सुपदाई।
अव जो वासु निकट है आया।
हम मन महि एहि ठहिराया।
ईहा रहो किर्पा प्रभु धारे।
हमि कह्यो मन लेहु वीचारे।
श्री गोपाल विधि जानरण हारा।
ताह भाउ देषि मुषो पुकारा।
धर्म पुत्र जो मै मन आई।
तो पहि सभ ही कह्यो सुनाई।
जो तुम कहा सो मैं मन लीआ।
प्रीत भाउ तुमने जो कीआ।
एइ दिनमि प्रभ वचन उचारे।
सुण हो अर्ज्जन मीत हमारे।
प्रात समे वन महि हमि जावहि।
अषेर करहि मृगु मारि ल्यावहि।
अर्जन कह्यो भलो जदुराई।
जो तुम कह्यो करहि हमि साई।
सुरपति सुनति प्रभ की गल धायो।
प्रात समे वन माहे आयो।
महाबाहो को त्रिपा व्यापी।
जमना तटि चलि आयो आपी।
चाहित है जल को अचि लेवे।
तप्ति त्यागु शान मन देवे।
एक कन्या महा रूप उजीआरा।
फिरति फिरति जमुना तटि द्वारा।
तेरो नामु कहा पति तेरे।
कहु कन्या तू आगे मेरे

काहे को इसि तटि पर आई।
कौनु प्रयोगु ईहा ठहिराई।
तुमरे मन महि भौ नही आवति। साईंदास अर्जन उचिरावति १३३

तिह कन्या अर्जन प्रितु दीना। सुण हो अर्जन जान प्रवीना।।
रवि दुहिता कलिद्री नामां। रूप की अति ही सुदर भांमा।।
जिह समे श्री कृष्ण गोकल के माही।
रहित विंद्रावन धेन चाराही।
तिह समे मै दर्सनु तिहि कीना।
अवि मै असे सुण कर लीना।
पुरी द्वारका दधि माहि वसाई।
अवि हैति हो तिस भाई।
तांको प्रतु अपना मै करहो।
ताहि चर्न रज मस्तक धरहो।
महावाहो सुण तिह प्रितु दीना।
हे कन्या तें इहि मन कीना।
श्री कृष्ण द्वारका सो ईहा आयो।
हमि पर कृपा करी ठहिरायो।
मोहि सग चलु तुझे देउो दिषाई।
मम प्रतीत करु राम दुहाई।
रविदुहिता अर्जन संग धाई।
ततक्षिण महि प्रभ पाहे आई।
करी डंडौत अधिक हरि ताई।
तांकी उस्तति कहा वताई।
जमना सों श्री कृष्ण सुनायो।
मै तुझे तव अपने पग लायो।
जिह समे मै लीनो अवतारा।
मथुरा तजि गोकल पगु धारा।
मोह वछोहो तै वहु पायो।
मोहि वछोहै तुझ वतायो

अव तुम चितु अपना ठौर राषो।
विना नाम हरि औरु न भाषो।
रथि पर चार उग्नि महि ल्याया।
कौलापति इहि कामु कमाया।
चतुर मास तहा कीयो गुजराना।
श्री जदुनाथ संतन के प्राना।
पाडो सुत से आज्ञा पाई।
द्वारका को हरि चल्यो धाई।
ततक्षिण कंचन पुर महि आयो।
ग्रहि माहे आइ कर ठहिरायो।
तव ही श्री गोपाल सुण पाई।
नग्र अयोध्या भली मुहाई।
भूप तनषजति राज करावै।
तिह पुर महि लोक वहु सुपु पावै।
सत्ता नामु दुहिता ग्रहि माही।
ताहि स्वुग्रवर रच्यो चाही।
एही प्रतज्ञा तिन मन धारी।
सांईदास तिस एही वीचारी ॥१३४॥

सप्त धौल सुत तिह ग्रहि माही।
दस दस हस्त वलु इकताही।
जो इनको वाधे इकि वारा।
तिन कंन्या देवो ततकारा।
नग्र नग्र के भूपति आवहि।
ताहि सुग्रवर महि ठहिरावहि।
एक वार कोऊ वांधि न सांकहि।
थक्ति रहे कछु मुषहु न आषहि।
थकित थकित अपुने पुर धावहि।
वलु नही लागै तव उठि जावहि।
श्री कृष्ण सुनत विधि उठि कर धाया।
द्वारका वाछ अयोध्या आया।

इक बन महि आइ डेरा कीना।
नृप नपजत ने सुण कर लीना।
श्री कृष्णचंदि आइ बनि ठहिराये।
आन पुर्प सभ विप्र हिराए।
नराधिप भेटा संग लीए।
श्री गोपाल ओरहि पग दीए।
श्री कृष्णचद की चरनी लागा।
दर्सन देपि सकल भ्रमु भागा।
हाथ जोर आगे ठहिरायो।
बलिहारि जावो मुप ते उचिरायो।
कैसे है करुणा प्रभ धारी।
मोह कीटु हृदे लीयो बीचारी।
श्री कृष्ण कह्यो सुणहो नृप बाता।
तुम सुषदाई हमरे भ्राता।
हमि क्षत्री तुम विर्दु कहावहि।
जाचन काहूं पहि नही जावहि।
एक वस्तु तुम पाहि जचावो।
जाचो तौ जो मैं वहि पावो।
नृप कह्यो मांगो प्रभ मेरे।
जो मो ग्रहि आगे प्रभ तेरे।
श्री कृष्ण कह्यो कन्या हमि देवो।
एही बात मोहि मन धर लेवो।
जब श्री कृष्ण इहि बचनु उचारा।
नपिजति तब ही कीयो विचारा।
कर बीचारु प्रभ को प्रतु दीना।
हाथ जोर दोऊ बेनती कीना।
कन्या कहा प्रभ प्रांन तुहारे।
तुम बच पूर्न करो हमारे।
तब श्री कृष्ण कह्यो बतिलावो।
कौन प्रतज्ञा दीई ठहिरावो।

तांको मै पूरी कर लेवो।
तोहि प्रतज्ञा को फलु देवों।
राजे नपिजति कह्यो पुकारी।
एहि प्रतज्ञा हमहि मुरारी।
सप्तधौल सुत हम ग्रहि माही।
महा अधिक वलु है प्रभताही।
ताह को है इक वार वैठाई। एहि कंन्या लेवे प्रभ साई।।
श्री कृष्ण कह्यो ऐसे मै कर्यो। एहि प्रतज्ञा मै चित धरहो।।
कमल नैन हरि कुंज विहारी। कटि कौ वांधि हरि लील्हा धारी।।
सप्त रूप हरि लीए वनाई। अैसी विधि कीनी जदुराई।।
अौर सभूं को एक दिषावै। दूसरौ कृष्ण ताको दिष्ट न आवै।।
सप्त की एकिवार कोहै वैठीनी। श्री कृष्ण ऐसे विध कीनी।।
नृप ने जव अैसी विधि देषी। प्रतज्ञा पूर्ण भई नृप पेषी।।
कंन्या को कार्जु करि दीना। कचन मनी मोती वहु दीना।।
कुंचर अश्व दीनी वहु चेरी। कहा गणो बुद्ध गणो न मेरी।।
श्री कृष्ण लई संगि पुर को धाया। आन भूपति सभ द्रिग निर्षाया।।
उनि मन माहे कीयो विचारा।
सांईदास विधि कहित पुकारा।।१३५

भूपति सभ मिलि मनु ठहिरायो।
इनि वालक हमि सीस कटायो।
हमि वडे वडे नराधिप आए।
नृप कंन्या कार्ण ठहिराए।
वसुदेव सुत कंन्या ले जाई।
इहि विधि हमि को नाहि भलाई।
एहि मतु करि सकले उठि धाए।
श्री कृष्ण को मगु इन्हा आइ रोकाए।
महावाहो तव वचनु उचारा।
श्री कृष्णचंदि को कह्यो पुकारा।
तुम किर्पा कर आगे जावो।
कछु विस्वासु न मन महि ल्यावो

मै इन सों सग्रामु मचाई। तोहि किर्पा इन मार चुकाई।
पाछे से मैं भी प्रभ आवो। वेग विलम्ब कछु नाही लावो।
श्री कृष्ण चले द्वारका महि आयो। अर्जन पाछे युद्ध मचायो।
सभ भूपति को अर्जुन हिरायो। ताहि हिराइ पुर आप सिधायो।
एक जोपिता हरि ऊौर ल्याए। भद्रा नाम तिहि वेद वताए।
लछमना जानी श्री भगवत। स्ववर जीते भूप अनत।
अष्ट नायका वरी मुरार। कौतक करहि अनंत अपार।
सतिभावा तवि वितनी ठांनी। हे प्रभ पूर्न सारग पानी।
ऊौर सकल है द्वारका माहे। इक कल्पव्रिक्ष ईहा नाहे।
जो तुम सुरपति आप पठावो। कल्प व्रिक्ष ईहा ले आवो।
एहि वात सुगरु करि करही। तोहि कहा मन अंतर धरही।
श्री कृष्ण गर्ड को लीयो वुलाई। ताहि सवार भए जदराई।
सतिभावा को हरि संग लीना। स्वर्ग को तव ही पगु दीना।
एक असुर नरकासुरु नामा। तिन नें एही कीनों कामा।
कुडिदित्य के लीए छिनाइ। ऊौर लोक ताते दुप पाइ।
रवि सुत त्रास ते कोट वनाइ। सप्त कोटि कछु कह्यो न जाइ।
एक स्थावर को कोटु कीना। एक अग्नि केरा कर लीना।
ऊौरु एक पाहन को कीयो। एक किर्मानी को कर लीयो।
एक तोयं का ग्रह जु वनायो। एक धात को उपजायो।
ताहि द्वारे पानी वहायो। इहि विधि कर्के कोटि वनायो।
श्री कृष्णचद ताहू निकट आए। महा विकट मगु तिह निर्पाए।
नर का सुरु किवार चराए। श्री कृष्णचंद कहू मगु ना पाए।
श्री कृष्ण स्थावरि कोटु गिराया।
पाछे अग्नि को दूर कराया।
ऐसी ही सभ कोट विदारे
श्री गोपाल लीन्हा तहा धारे
नरकासुरु कुंचर चढि आयो।
युद्ध कर्नि को तिन चितु लायो।
श्री कृष्णचंद को वानु चलाया
दुष्ट को कालु निकट है आया

श्री कृष्ण सुदर्सनु चक्रु लीना। तांको सिरु तिन नें दूर कीना॥
सप्त पुत्र नरकासुर केरे। युद्ध कर्न को आए नेरे॥
श्री जदनाथ तिह मार चुकाया। नरकासुर दारा सुण पाया॥
कुंडिल से वांके ग्रहि माही। जोयना सुरपति केरे वाही॥
नरकासुर र्धास के तिह ल्याया। अपुने गृह माही ठहिराया॥
ओरु छत्रु सुरपति सिर केरा। जो भी आहा वाके डेरा॥
नरकासुर जो पिता ले आई। श्री कृष्ण आगे आइ ठहिराइ॥
कह्यो कृष्ण जी इहि तुम लेवो। हुनि को तुम अब दुःख न देवो॥
तव श्री कृष्णचंद क्या कीआ। वहुमासुर को सदि कर लीआ॥
नरकासुर को सुत वहुमासुर। हरि सौं प्रीत ताकी निनवासुर॥
श्री कृष्ण तास को कीना राजा। करो कलोल वजावो वाजा॥
नरकासुर असुर महा वलकारी।
तिह नृप दुहिता आनी अधिकारी।
षोडस सहस्र एक सौ वीस।
पसि आनी ऊचोतिहि सीस।
भले महूर्ति काजु करायो। इनि सभना सौं आप विआहौ॥
जब प्रभ नरकासुर को मारा। पाछे प्रभ इहि वचनु उचारा॥
वहुमासुर को कह्यो सुणाई। इन सौं डोले डारो भाई॥
आप सहित द्वारका ले जावो। पुर माहे इनि को तजि आवो॥
मै तुम को इहि आज्ञा दीनी। मै इहि करुणा तै पर कीनी॥
वहुमासुर तांको ले आया। सांईदास द्वारका ले आया॥१३६

इति श्री भागवत महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अष्ट पंचासमोध्यायः॥५८

श्री गोपाल तव सुर्ग सिधारे। तांकी लील्हा अपर अपारे॥
कुंडिल इंद्राणी को दीना। हिर्षमान होइ कर तिह लीना॥
सुरपति सौं हरि वचन उचारा। सुण हो सुरपति वचन हमारा॥
कल्प व्रिक्ष द्वारिका महि नाही। तौं मैं आयो तुमरे पाही॥
जो कह्यो कल्प वक्ष ले जावहि षहि द्वारका महि ठहिरावहि।

श्री कृष्ण कल्पब्रिक्ष लेने आयो। मोसो ऐसे वचनु सुनायो॥
कहो क्या कीजै मेरे भाई। कल्प वृक्ष मांग्यो जदराई॥
सकल देव त्यो कह्यो पुकारे।
हमि कल्प वृक्ष देवो न मुरारे।
कहु कैसे हमि तिस को देवहि।
हमि तिह देइ कहा हमि लेवहि।
हमि सौ कैसे वहु ले जावै।
हमि संग तांको कहा वसावै।
जव अमरो इहि वचन उचारे।
सुरपति सुण मन अंतर धारे।
श्री कृष्णचंद को कह्यो सुनाई।
सुण हो पूर्न प्रभ जदुराई।
कल्प वृक्ष तुम अमर न देवहि।
जव लेवहू तवि युद्ध करेवहि।
ईहा ऊहा है तुम वसि माहि।
हमिरे तो वसि कछु प्रभ नाही।
जो कछु मन आवे सौं करहो।
मम ऊपरि प्रभ दोसु न धरहों।
कल्प ब्रिक्ष प्रभ जी ले धाए।
अमरो ने इहि विधि सुण पाए।
सकल अमर मिल युद्ध को आए।
प्रभ लील्हा कर सकल हिराए।
कल्प ब्रिक्ष पुर माहे आना। अति गंभीर हरि चरित सुजाना॥
सति भामा के द्वार लगायो। श्री गोपाल ने ऐसे लायो॥
पडित जोतकी लीए बुलाई। तांको कृष्ण कह्यो समझाई॥
भलो महूर्त देहि वताई। इहि कन्या कार्जु करो भाई॥
भलो महूर्त तिन नें पायो। कन्या सौ प्रभ काज रचायो॥
तव ही प्रभ नें लील्हा धारी।
सभ ग्रहि प्रगटि रहित वनवारी।

सभ जानत प्रभु सभ अहि माही।
रजनी समे रहे सभ पाही।
षोडस सहस्र एक सौ बीस। अष्ट और दारा जगदीस॥
इहि सभ वनिता जगदीस।
इहि सभ बनता है प्रभ केरी। अष्ट नायका और सभ चेरी॥
प्रिथम नायका रुक्मन रानी। द्वितीया जामवंती बहु स्यानी॥
त्रितीया सत भामा तिह नामा।
चतुर कलिंद्री जमुना नामा।
पंचम भद्रा है मेरे भाई।
षष्टम लछिमी कहित सुनाई।
सप्तम मित्रविदा कहीए।
अष्टम सुतावान उचिरहीए।
सदा सदा प्रभु तिहि सुष देवै।
साईदास सुष बहु उपिजेवै १३७

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति सवादे उणाहठमोध्याय: ॥५६॥

एक दिनसि कौलापति केसर।
प्रजंकपर सैन कीयो पर्मेस्वर।
नायक सभ ठाढी हरि आगे।
कर्त सेवा माया मोहि त्यागे।
श्री कृष्णचंदि मन लीयो वीचारा।
जहां तहां मैं लीनो अवतारा।
रुकमण सदा सदा सग मेरे।
लछमी रूप कहित मोह नेरे।
इस ते पूछो इसि चित होई।
तास समे की वार्ता कोई।
रुक्मनि सों तव वचन सुनायो।
सुण हो रुक्मण हितु चितु लायो।

बडे नराधिप तुम को लोरहि ।
चाहित प्रीत तुमहि सग जोरहि ।
जरासिधु दंत वक्रत बलिकारी ।
तांमहि दिव्य महा अधिकारी ।
सभ बाते वहु हमि ते नीके ।
अति वहु भले सदा वहि जीके ।
उनि कों त्यागहो हमि हितु लाया ।
किह प्रजोग इहि कर्मु कमाया ।
जो आप सो नीच सो करे सकाई ।
ता वहि भला न होइ बुराई ।
जो सग उत्म आपते कीजैं ।
तौ भी भला ना विष को पीजैं ।
जो समसर को करै सकाई ।
महा अनंदु दु.षु मूल न पाई ।
मैं तुझ को तांसों ले आया ।
द्वारका पुर माहे ठहिराया ।
अब तूं जिस को नीका जाने ।
नेमधर्म महि भला पछाने ।
उसको अपुना पतु कर लेवो ।
हिर्षमान होइ तांको सेवो ।
जब रुक्मरण प्रभ मुष ते सुन्या ।
मूर्छा होइ लटिक तनु धुन्या ।
धर्नि गिरि सभ सुध बिसरानी ।
नैनो सों तब ढर्यो पानी ।
दीनानाथ विधि जानरण हारा ।
अंतर जामि प्रान अधारा ।
रुक्मन का कर कर महि लीना ।
रुक्मन को ले ठांढा कीना ।
तब ही प्रभ ने वचन उचारे ।
सुन हो रुक्मनि वचन हमारे

ठौर रापु चिनु नाहि डुलावै।
सुति मडिल आइ क्यु उकिलावै।
मै तो तुम ताई पतीआवों।
मै तो तुमरो अतरु पावौ।
इनि लोकन सों वैरु हमारा।
मै मन महि सचरु क्यु धारा।
तव रुक्मन हरि को प्रतु दीना।
कौलापति ने को वचु कीना।
पंचभू आत्म वैरु कमावहि।
जो इनि वसि सी वहु दुःख पावहि।
सदा सदा दुःख महि उर्भावहि।
अनिक जोन माहे भर्मावहि।
जो इनको अपुने वस करही।
सदा सदा इनि सेती लरही।
वाही गति तुम प्राप्ति होवहि।
जरा रोग सभ तन ते षोवहि।
हे प्रभ एहि वचनु जो भाषा।
नेम धर्मु उत्यमु जो आषा।
तुम सों उत्तम कोनु कहावै।
भीष्म सुता इहि वचनु सुनावै।
श्री कृष्णचदि फिरि कर प्रितु दीना।
मुष अपुने तें इहि वचु कीना।
इहि प्रजोग मैं वात चलाई।
तुम चित आवति के बिसराई।
जिह जिह ठौर मै लीयो अवतारा।
आइ जगत महि कीयो उजीआरा।
तहूं कहू तू हमि सग आई। अैसे कर मैं वात चलाई।।
रुक्मन इहि सुण भर्मु हिरायो। सांईदास सुष वहु नन पायो १३८

इतिश्री भागवते महापुराणे दस्म स्कदे
श्री सुकदेव परीक्षिति सवादे सठमोध्याय ॥६०।

रुक्मनिश्रा रुक्मनि को वीरा। अति सुजान चंचल मन धीरा ।।
कंन्या की तिन करी सकाई। प्रदुम्न सों सजुक्त वनाई ।।
अब चाहित काजु वहि करई। मन अंतर एही विधि वरही ।।
रुक्मनिश्रा रुक्मनि को भाई। रुक्मन कृष्ण को षडो वुलाई ।।
पाछे सेती बराति होइ आए। बलराम प्रदुम्न सहित सिधाए ।।
बहिन को पूतु प्रदुम्न है तांको। अवि कन्या दीनी तिहि वाको ।।
नृप वहुते तिन लीए वुलाई। तिह नराधिप इहि मतु ठहिराई ।।

वलराम सहित इक वात चलावहि।
ताहि वात सों तिसे षिभावहि ।।

रुक्मनिश्रासो मतु ठहिरावो। चौपडि पेलण सों चितु लायो ।।
तांसो दाउ राष्यो मेरे भाई।
ताहि षिभावहि अति अधिकाई।

जो वहि जीते हमि भूठ अलापहि।
भूठ कहे तुमको जितवावहि।

हमि काहे रुक्मनीश्रानें जीता।
तै कछु भूठु हमि मिथ्या कीता।

रुक्मनीश्रा वलिदेव षेलण लागें।
उौरु वात उनि सकल त्यागे।

प्रिथमे तिह ने दाउ ठहिरायो।
कचन वीस तोल तिन्हा लायो।

प्रिथमे रुकमने जिरण लीना।
वलिदेव ने तांको वहु दीना।

वहुरो एक सहस्र वहु लागो।
दुहू जोरि राष्यो उनि आगे।

अवि वलिदेव ने तांसों जीता।
इन भूपति वचु मुष ते कीता।

रुक्मना ने एभी जिरण लीश्रा।
भूठु वचनु तिन ने इहि कीश्रा।

वलदेव नै तांको प्रतु दीना।
काहि भूठु तुम मन महि कीना।

मैं जीत्या क्यू झूठु अलावो।
रुक्मने को नाम उचिरावो।
रोहणी सुत अब भी तिहि दीआ।
जाण बूझ के इहि बिधि कीआ।
दस सहस्र तिन ने फिरि धरे।
दुइ ओरि आगे तिन्हा करे।
अब भी रोहिणी सुत ने जीता।
इनि सभ कहा जो झूठ तुम कीता।
अब भी रुक्मे ने जिण लीनां।
अैसे बचन तिहि भूपति कीना।
दुष्ट सभा कहा ईहा आई।
सच्च न को मुषते उचिराही।
मँ जीत्यो रुक्मनीआ आषहि।
सकल सभा मिथ्या मुष भाषहि।
बलदेव ने बहु कोपु करायो।
अधिक क्रोधु मन माह ल्यायो।
दंत वक्र को दसन उपारे।
महा क्रोध मन माहि सम्हारे।
रुक्मने को पकिर पछारा।
तांको जीउ लीओ ततकारा।
कस कौ सर्व हता दुप पाया।
सभ ही भागनि को चितु लाया।
श्री कृष्णचंद इहि बिधि सुण पाई।
मन महि अधिक भयो बिसमाई।
जो कहो भला कीआ मैं मारा।
तिस पापी को पकर पछारा।
तब रुक्मनि मन महि बुरा मानें।
अपुने मुष तें बचन बषानें।
मम बधू को इनि ने मारा। श्री कृष्णचंद मुषो भला उचारा।।
जो कहो बुरा कीआ तै भाई। तौ बलदेव दुषत अधिकाई।।

तै पातक को लीयो हताई। कृष्ण कहित वुरा कीनां भाई॥
ईहा भला कछु नाउ चिरावो। मन कह्यो तव ही सुष पावो॥
प्रद्युम्न को कार्जु कीना। कंचन पुर चलिने चितु दीना॥
रुक्मनीआ के रे पुर माहें। कृष्ण छाड्यो पर कामु चलाहें॥
आप द्वारका को पग धारे। सांईदास गनि अपर अपारे॥१६६

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति सवादे एकाहिठमोध्यायः॥६१॥

जोपिता श्री कृष्ण सुनो मेरे भाई।
षोडश सहस्र एक सों बीस अधिकाई।
औरु वीस फुनि अष्ट है रानी।
ताम सुत की करो बषानो।
दस दस सुत सभना के ताई।
एक एक कन्या गोदि मझाई।
इकि लपि इकिसठि सहस्र सै दोई।
एते सुत इहि सुत सभ होई।
एक एक कन्या है सभ ताई।
तांकी उपमा कही न जांई।
वाणासुर असुर शिव सेव कीनी।
अधिक सेव मन अतर लीनी।
गौरापनि पहि जाचनु करी।
सहस्र भुजा होइ हमरी हरी।
गौरावर तांको वरु दीना।
सहस्र भुजा तांको कर लीना।
महा पराक्रमी अति वलिवाना।
औरु नही कोऊं ताहि समाना।
केतिकि दिन पाछे फिरि आया।
गौरापति पहि आइ ठहिराया।
हरि पहि आइ बचनु उचारा।
अधिक फिरया ढूढया ससारा।

जो कोऊ होइ तांसो युद्ध करहों।
युद्ध करनि को मैं चितु वरहों।
कोई न प्रगट्या मोहि समाना।
युद्धु करो तांसो मन माना।
आवो हम तुम युद्धु करावहि।
कर सों कर हम तुम अरकावहि।
तव शकर ने वचनु उचारा।
जिह वरु देऊं सो शत्रु हमारा।
हे मत मूढ गर्व मत कीना।
अति अभिमानु हृदे महि लीना।
जो मोहि सर दूजा नही कोई।
जो मैं करो सोई कछु होई।
जिन गर्वु कीयो सों भयो विनासा।
ताकी पूर्ण भई न आसा।
तोह नैन महि आहु आंधी।
जो है धजा गृहि ऊपरि बांधी।
आजु ते दसि दिन और माहे।
तोहि ग्रहि धुजा बसुधा पराहें।
तब ते तूं निश्चे कर जानें।
वडो छोटो तव मन महि आनें।
एक कन्या वणासुर गृहि माही।
ऊपा नामु सभ जानें ताही।
इक रैन समे ऊपा ग्रहि सोई।
तास द्रिष्ट नरु पर्‍यो कोई।
कमल नैन पीतम्बर अंग।
क्रीडा कीनो ऊपा सग:
रजनी घटी रवि कीयो प्रकासा।
ऊपा जाग परी सुषु नासा।
जो तिस देषा दिष्ट न आवै।
तव ऊपा मन महि विसमावै।

तव ही मन महि कीयो विचारा।
दुषित भई वलु सकला हारा।
कहा भयो निस ईहा आयो।
इहि प्रजोग हित चितु विसरायो।
इक कंन्या मंत्री मन माही।
रहित सदा सग ऊषा पाही।
मत्री दुहता ने निर्षाई।
विस्मकि ऊषा तिह द्रिष्टाई।
ऊषा सो तिन वचन उचारे।
राज कवर तैं क्या मन धारे।
जो इहि प्रजोग मन महि विसमाई।
चाहित अपुना काजु कराई।
ए ऊषा तूं कहु सषी मेरी।
मोको पीर लागत है तेरी।
मैं जाइ अपुनी मात सुनावो।
तोह कार्ज उपचारु करावो।
मोह माति मोहि पित सो आषै।
मम पिता तु पिता सो भाषै।
तव तुमरो कार्जु कर लेवहि। जू मांगे सो तुझि देवहि।।
जो इहि ते औरहि कछु होई। सांईदास मोसो कहु सोई।।१७०

चित्रलिषा है मेरो नामा।
मैं वहु स्यानी हो सभ रामा।
जो त्रिह लोक मैं होवहि कोई।
तैं पहि प्रगटि करों मैं सोई।
प्रथम ब्रह्म लोक लिष लीआ।
आन ऊषा के आगे कीआ।
इन महि देषु जो इनि महि होई।
मम को देहु वताई कर सोई।
ऊषा निर्ष कह्यो ईहा नाही।
चित्र लिषा सुन्यों मन माही।

पाछे प्याल लोक लिप ल्याए।
सुता वणासुर को दिपलाए।
कह्यो नैन षोल्ह निर्षावो।
प्याल लोक माहे चितु लावो।
ऊषा निर्ष कह्यो सषी मेरी।
तूं जाने विर्था मन केरी।
इसि महि भी मोह द्रिष्ट न आवहि।
मम मनु वहुता भर्मु भुलावहि।
वहुरो जादव सकल लिपाए।
श्री कृष्ण लिष्यो लिष चक्र वनाए।
पाछे से प्रदुम्न चित्रायो।
इही होइया इसि को भाई।
या इसि सुत औरु कह्यो ना जाई।
तव वाछे अनरुद्ध सवारा।
राज कन्या ने नैन निहारा।
तव मुष ते कह्यो है यही।
जो मेरो वहु भयो सनेही।
चित्र लिपा तव शब्द उचारा।
प्रदुम्न सुत है इही पुकारा।
नाती श्री कृष्णचंद को कहीयै।
इसि को नामु अनिरुद्ध जी अहीयै।
द्वारका माहि इसि को वासा।
मैं आनो इसि को तोहि पासा।
अपुनो मनु तू नाहि डुलाई।
मैं इसि को आनोगी जाई।
चित्र लिषा षग विप कर लीना।
गवन द्वारिका पुर को कीना।
अनरुद्ध ग्रहि ऊपरि चरि सोया।
श्री कृष्ण नामु मन महि परोया।

चित्ररेषा पुर माहे आई।
पग वपु तिह कीनो अधिकाई।
प्रजकु अनरुद्ध को कर लीना।
गगन मार्गि ताहि पगु दीना।
अवरुद्ध सैन कीए ले आई।
ऊपा निर्ष अधिक हिषाई।
दोनों मदिर रहिने लागे।
नृप कंण्या के दुष सभ भागे।
द्वारपालक तिह रहित द्वारा।
ऊपा को तिम नैन निहारा।
चिन्ह वडे ऊपा निर्षाई।
ताहि चिन्ह निर्षे विसमाई।
ततक्षिण वाणासुर पहि आए।
मुप ते वचन उचार सुनाए।
तोह कन्या और द्रिष्ट आवै।
वडे रामा के चिन्ह दिषावै।
अव हमि तुम सो आष सुनायो।
हमरे मन महि संचरु आयो।
वाणासुरु तव ही उठि धाया।
सुता मदिर जाणो चितु लाया।
आ निर्षे दोऊ चौपर षेलहि।
क्रीडा कर अंग अंग सों मेलहि।
वाणासुरु सैंना ले धायो। अनरुद्ध निर्ष सनमुष तिह धायो।।
ध्यानु कीआ तिह अंतर माहे। आप पठायो वलिदेव पाहे।।
जो अवि आवे वहु भलो होई। मैं एकलो दूजा नाही कोई।।
नाहि न अपुना शस्त्र पठावो। वेग विलम तुम मूल न लावो।।
वलदेव शस्त्र दियो पठाई। छिन पलु विलमु नाहि कछु लाई।।
वाणासुर वहु सैन ल्यायो। अनरुद्ध सों तिन युद्ध मचायो।।
अनरुद्ध अधिक सैना तिह भारी। मन विरोधु करके प्रहारी।।

अनरुद्ध को वाणासुर गह्या।
बांधा वचु मुष ते इहि कह्या।
काहे को इहि कर्मु कमावहि।
परदुहिता सेती चितु लावहि।
अब मै तुम को मारि चुकावो।
तुमरी रक्त की सिधु वहावो।
वाणासुर इहि वचनु सुनावै।
सांईदास कछु नाहि वसावै १७१

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री शुकदेव परीक्षति संवादे वाहिठमोध्यायः ॥६२॥

नार्द एक दिनसि क्या कीआ।
उग्रसैंन के ग्रहि पगु दीआ।
उग्रसैन कों कह्यो सुणाई।
हे नृप सुण हों मेरे भाई।
अनरुद्ध को वाणासुर बाधा।
राषा है अपुने गृहि फांधा।
जब नृप ने इहि विधि सुण पाई।
क्रोधवान होयो अधिकाई।
कह्यो वजंत्र अधिक वजावो।
वाणासुर पर सैनां उमिडावों।
सकल राजकौरों उचिरायो।
उग्र सैन सो वचनु सुनायो।
जो आज्ञा होवहि हमि जावहि।
इहि कार्जु पूर्नु कर आवहि।
उग्रसैन कह्यो भला जावों।
इहि कार्जु पूर्न कर आवो।
इक लष इक सठ सहस्र सवार।
दो सै ऊपर और बीचार।

वाणासुर को पुर कों धाए।
अश्व भले अवर अधिकाए।
श्री कृष्णचंद से आज्ञा पाई।
वाणासुर को पुर घेरवाई।
द्वादश क्षुहणी सैना आई।
महा अधिक पग धूर उडाई।
रवि गयो दरि तिहि धूरि छपायो।
गगन दीसै रवि विसमायो।
त्रिक्ष अधिक तांके पुर द्वारे।
इन सैना ने सकल उपारे।
त्रिक्ष उपार ग्रहि के निकट आए।
चाहित ताहि किवार भनाए।
तव वाणासुर सेना संग लीने।
गृहि सेती वाहिर पग दीने।
शिव वाणासुर कर्नि सहाई।
स्याम कार्त्तक सुत ले धाई।
श्री कृष्णचंद सों युद्ध मचायो।
शिव अरु कृष्णचंद उर्भायो।
शिव सुत प्रदुम्न युद्ध कीना।
महा अध्कि युद्ध कर्के लीना।
वाणासुर करे उौरु भाई।
वलदेव सेती कर्ति लराई।
शिव केरी सैंना सुण लीजै।
उौर ठौर कहूं चितु न दीजै।
भूत प्रेत सैना संग लीने।
डाकनी राकसी को सग कीने।
युद्ध कर्नि हरि सो चितु लाया।
भूल पर्‌यो चित ताहि भुलाया।
हरि सों युद्ध कर्नि चितु लायो।
साईदास शिव भर्म भुलायो १७२

अकाल मूर्त कौलापति केसर।
शष लीयो कर सकल बिसेश्वर।
शष वजायो त्रिभवन राया।
भूत प्रेत को शब्दु सुनाया।
सभ गए भाग शंष जब बाजा।
श्री गोपाल है सभ को राजा।
शंकर को वलु तव हरि लीना।
शिव सुत प्रदुम्न बिह्वल कीना।
बाणासुर वहुरो युद्ध को आया।
तव तिहि भार्ज ने सुण पाया।
नगन कीए सिर आगे आई।
श्री कृष्ण आगे आइ वचनु सुनाई।
जब प्रभ ऐसी विधि नैन निहार्यो।
सिरु तले कर मन महि वीचार्यो।
बाणासुरु रण तज कर भागा।
अहि के मार्ग तिस चितु लागा।
अहि माहे जाइ कर ठहिराया।
सैना वहु लेकर फिरि आया।
क्रोधवान होइ वान चलाए।
दोनो बाण एकनर को लाए।
तव श्री कृष्ण दुष्यो अधिकारी।
चक्रसुदर्सन लीयो वनवारी।
भुजा बणासुर की कटि डारी।
दोराषी श्री कुंजविहारी।
तव प्रभ शिव प्रभु के आगे आया।
हरि उस्तत मुष ते उचिराया।
बहुरो शिव ने विनती कीनी।
अति अधीनता मन महि लीनी।
जो मैं वरु देवों किसे ताई।
जो आज्ञा पावा त्रिभवन साई

हम भाषा तुम मूल हमारे।
सकल विश्व तुम साजन हारे।
मैं ओगुणु बहुता प्रभ कीयो।
तोह सन्मुख युद्ध को चितु दीयो।
इहि ओगुणु हरि हमि बषिसावो।
अपुनी किर्पा सहित मिटायो।
सीत को ज्वर शंकर उपजायो।
तप्ति ज्वरा प्रभ ने प्रगटायो।
तप्त ज्वर सीतहि जाइ लागा।
सीत ज्वर जुर्यो उठि भागा।
तब बाणासुर ने क्या कीआ। कन्या को कार्जु कर दीआ।।
कार्जु कर अनरुद्ध कौ दीई। गोपीनाथ संग कर लीई।।
तब ही द्वारका कों उठि धाए। सांईदास प्रभ सदा सहाई १७३

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति सवादे त्रेहिठमोध्यायः ॥६३॥

द्वारकाकों जब हरि पग धारे।
मुष अपुने प्रभ वचन उचारे।
सैना सभि कों कह्यो सुणाई।
दधि के तीर चलो मेरे भाई।
दधि तटि अपेर कर्ति हम आवहि।
राज कौर सभ आगे धावहि।
तिन को त्रिषा गह्यो है भाइ।
सकले इति उति अंभ हिराई।
एक कूप हेर्नि तहा पायो।
इकु किर्ला तिहि महि निर्षायो।
डावरी सुत ले कूप महि डारी।
मन अतर तिनि एहि विचारी।
इसकों कूप सें बाहिर आनहि।
जोर कर्ति निकसति वह नाही।

थकित भए वलु सकल हिराई।
तव श्री कृष्ण पाछे ते आए।
राज कुवर सभ वचि उचिराए।
हे प्रभ हमि थाके वलु लाए।
इहि किर्ला वाहिर ना आए।
श्री कृष्णचदि जब इहि सुग पायो।
तासि कूप के नेरे आयौ।
डावरी आइ गही कर माहे।
डावर डार दीयो तिसु ताहे।
जव वहु कूप सें वाहिर आयो।
मानस को तिन रूप दिपायो।
महा अधिक सु दर भयो रूपा।
जव वाहिरि तजि आयो कूपा।
श्री कृष्ण तास सों वचनु उचारा।
कौन रूप तू देहि वीचारा।
किर्ले की योन काहे को आया।
एस कूप महि क्युं ठहिराया।
तव तिन ने हरि क्यो प्रतु दीना।
हाथ जोरि मुप विनती कीना।
नघिराजा मेरो प्रभु नामा। निता पति एही मोह कामा॥
सुरहों सभ विपो को देवौ। नितापति इहि कामु करेवौ॥
कनक रूपा मोती अधिकाई। दान कीए मैं त्रिभवन साई॥
एक दिन सुरहों सहस्र मै दीनी। एक विप ताई किर्पा कीनी॥
उनि से एक धेन भजि आई।
हमरी सुरहो पाहे ठहिराई।
मै वहु सुरह प्रभ नाहि पछानी।
सांईदास विधि सकल वपानी॥१७४

और दिनसि मै ने क्या कीआ।
सहस्र सुरिह एक विप को दीआ।

प्रिथम विप ने धैन पछानी।
आजु के विपसो कह्यो बषानी।
आजु के विप तांको प्रितु दीना।
रे मति मूढि तैं क्या मन कीना।
नृप आजु सहस्र सुरिह दानु जु कीई।
तिन महि सुरिह् हमि ताई दीई।
दोनों भगिरित मो पहि आए।
मो को तिन ने आइ सुणाए।
आजु के ब्रह्मण को मै आपा।
तांसो मैं एही वचु भाषा।
हे स्वामी एहि सुरिह् तुम देवहु।
सौ सुरिह् और इसकी तुम लेवहु।
तब विप ने मोको प्रतु दीना।
हे नृप तै मन महि कहा कीना।
मैं अपुनी एही सुरिह् लेवो।
एहि सुरिह काहूं ना देवो।
प्रिथम विप सौ वचन सुनायो।
अैसे ही तांसो उचिरायो।
अब संकलप सिर इसि के आई।
सहस्र सुरिह् तुम और ले भाई।
तब विप अैसे वचन उचारे।
हे नराधिप तैं क्या मन धारे।
मम को स्रापु दीयो विप ताही।
तिनहूं कहा अन्यथा परे नाही।
हे नृप किर्ले की योन पावहि।
जो मम सो इहि वचन सुनावहि।
जो सरापु उन हमको दीआ।
अधिक भला उनि हमको कीआ।
मैं अधिक भला इसि कूप सो रह्या।
तोहि ओटि प्रम वहु सुष लह्या

आजु काल ईहा प्रभु आवै।
पग मोह मस्तक पर ठहिरावे।
जव प्रभि इहि विधि सुण पाई।
तांपहि हिर्ष भए जदुराई।
तांको पारगिरामी कीनो।
हिर्षमान होइ वहु सुष दीनो।
प्रभ नधि नृप सो कह्यो सुणाई।
राजु करो अपुने पुर जाई।
निर्भौ होइ कर राजु कमावो।
कछु चिता मन महि ना ल्यावो।
कर डडौत नृप पुर को धायो।
सांईदास नृप तेजु सवायो ।।१७५

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चौसठिमोध्याय: ।।६४।।

एक दिनसि करुणा निधि स्वामी। वचन कीयो प्रभ अतरजामी ।।
वलिदेव सों प्रभ कह्यो सुनाई।
सुनहो वलिदेव हमारे भाई।
गोकल के मग तुम पग धारो।
मोह कह्या घटि महि वीचारो।
नंदि पिता जसुमति हमि भाई।
गोप ग्वार सों पूछहु जाई।
हमि ओर उनि पाहे जावो।
हे वांधव इहि कर्म कमावो।
जो हमि वसुदेव देवकी जाए।
तिनहू पार कर वडे कराए।
उनि प्रसाद करहि हमि राजा।
अब नाही किस के मुहताजा।
महा पराक्रमी कंस को मारा।
अधिक जोध्यो को कीजै सहारा

बलिदेव सुण जाइ रथ पर चरिआ।
रथ पर चरि गोकलि पगु धरिया।
नंदि महिर के ग्रहि महि आयो।
जसुमति कौ डडौत करायो।
जसुमति वलिदेव को उरि लीआ।
वदन चूम वहुता सुष कीआ।
पाछे से ग्वानि मिलि आई।
चलिराम के चतुर ओर ठहिराई।
वलदेव सों तिन्ह वचन उचारा।
कहा तजो है प्रान अधारा।
कवहूं नंद जसुमति चित करही।
गोकल आवन को मनु धरही।
जव इन्ह पार कीयो अधिकाई।
इन्हि तजि मथुरा वैठो जाई।
तहा जाइ नृप पदिवी होया। हमिरा प्रेमु हृदे ते पोया।
कंस कहा मृत लोक सिधारा। जो उसि को सभ चूको भारा।
जो अब लगि कमु जीवत रहिता। मथुरा महि काहे हरि वहिता।
तव उसि के मन होत है त्रासा।
गोकल माहे कर्ता वासा।
वुरे समे इनि ग्रहि ठहिराया।
वडे भए गोकल विसराया।
अव हम को कित को चित करही।
और सुनो वनिता वहु धरही।
वहि रामा मुष देष लुभावहि।
वचन सुने सुन सुधि विसरावहि।
ताहि पिंड महि होइ कल्याना।
सांईदास एहि वचनु वषाना।१७६
वलिराम मास दोह गोकल माहें।
रहिया अधिक तामहि उरझाहे

जैसे श्री कृष्ण धेन ले जावै।
वनि मझार षडि ताह दरावै।
अैसे वलिदेव वेने ले जाई
सुर्हो विंद्रा वन माहि चराई।
उसी भांति कर वैन बजावहि।
गोप ग्वार सभ षेलु रचावहि।
एक दिन वनि जाइ कर ठहिराए।
सुर्हो त्रिरण चर्ति फिर्ति अधिकाए।
वलिदेव ने तव वैन वजाई।
तांकी सोभा कही न जाई।
राजा वर्नु तव ही चलि आया।
वारुणी मदु वलदेव कौ ल्याया।
वलदेव ने मदि को अचिवाया।
अलिमस्तु भयो सुध सभि विसराया।
रवि दुहिता सों वचन उचारा।
आगे आवो सुण कहा हमारा।
जमना वचन सुण मनि विसमाई।
कहा वचनु इहि मुप उचिराई।
जमुना ठटिकि रही ना आई।
वलिदेव हल सो लई अराई।
अभ ताहू पाछे उठि धाया।
षाल पर्यौ प्रवाहु चलाया।
जो कोऊ तहा जाइ मज्जनु करे।
ताहि अग पाप वहु झरे।
जो कछु अघ होहि सकल हिराई।
जो तिह पाल इस्नानु कराही।
रवि दुहिता डंडौत कराई।
अधिक वेनती मुप उचिराई।
सेस नाग प्रभ रूप निहारा।
सभ वर्ती को तुम सिर मारा

मोह अवज्ञा हरि वचावो।
मम ताई कोऊ दोसु न लावो।
मै न पछाना सा प्रभ तोको।
एही अवज्ञा है प्रभ मोको।
वलिदेव तिह पर किर्पा धारी।
ताहि अवज्ञा सकल निवारी।
सकल को राम व्योगु मिटायो।
जो क्रिष्ण विछोहे इनि दुष पायो।
श्री कृष्ण विछाहो सकल भुलाना।
सभ गोकल वहु आनंदु माना।
वलिदेव सभ को दुःख निवारा।
सकल लोक कौ ससा टारा।
सकल गोकल को सुषु दिषारा।
साँईदास धनु राम हमारा ॥१७७॥

इतिश्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पैसठिमोध्यायः ॥ ६५ ॥

वलिदेव आयो जसुमति पाहे। विनती करी सोच मन माहे॥
आज्ञा देहो मथुरा जावो।
जावो तौ जौ आज्ञा पावो।
वलिदेव ने जब आज्ञा पाई।
मधिपुरी को चल्यो धाई।
ततक्षिण महि पुर माहे आया।
आइ कृष्ण को दर्सनु पाया।
जसुमति माषनु सुरिह को दीआ।
तिह सुरिह को ले प्रभ पय पीया।
जौ कछु तिन ने आप पठाया।
इक इक वलदेव कृष्ण सुनाया।
पुडरपुर बानार्स माहे।
राजकर्ति फुनि रहित तहाहे।

तिन सभ चिन्ह कृष्ण के कीने।
चित्र भुजा पीतवर लीने।
मोर पंप ऊपरि सिर धारे।
वन माला उरि माहे डारे।
सकल सरूप कृष्ण को कीना।
अति अभिमानु हृदे महि लीना।
एक दूतु प्रभ पाह पठायो।
ताहि दूत को इहि सिपायो।
जाइ सभा जादम की माही।
श्री कृष्ण सों इहि बचु उचिराही।
मै हो कृष्ण तूं काहि कहावहि।
झूठ लिवास काह को लावहि।
एहि जो भेषु की आदर करहो।
नाहि त मोहि सर्मा चितु धरहो।
जो इहि करहि तौ वहु भल्याई.
ना हित आउ हमि करहि लराई।
वही दूतु प्रभ पहि चलि आया।
जो उनि कहा सो आप सुनाया।
जब श्री कृष्ण बात सुण पाई।
ताहि दूत सों कह्यो सुणाई।
पुंडर को तू आप सुणाई।
रे मति मूढ तै क्या चित आई।
जिन किस भेषु झूठ है धारा।
सो खंड खंडउ होसी ततकारा।
हरि सों प्रितु ले दूत उठि धाया।
पुर बनार्सी महि चितु लाया।
श्री कृष्ण गर्डि को लीयो बुलाई।
ताहि पीठ चढे जादमराई।
ततक्षिण तिह पुर के निकट आए।
तहू ठौर आइ के ठहिराए

मुष धर शंषु श्री कृष्ण बजाया।
सब्द संष पुडर सुण पाया।
क्षूहिणी तीन सैना संग लीए।
पुडर नृप बाहिर पग दीए।
युद्ध कर्नि कों पुंडिर आया।
तब श्री कृष्ण हृदे ठहिराया।
सैना इसि औगुण ना कीना।
इन पातकि मन महि गर्बु लीना।
इस पातक मार चुकावौ।
सैना को कोई दुख न लावो।
प्रिथम प्रभि तिह रथु कटि डारा।
पाछे चक्र कर महि प्रभ धारा।
चक्र सहित तिहि सीसु उतारा।
माईदास प्रभ को बल भारा ॥१७८

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कदे
श्री सुकदेव परीक्षति सवादे छिआहठमोध्यायः ॥ ६६ ॥

सीसु ताहि हरि पुर ओर डारा।
ताहि पूत वहु सीसु निहारा।
कृष्ण को सीसु पर्यो ईहा आई।
सकल लोक मुष इहि उचिराई।
नीक निर्ष के सीसु पछाना।
निश्चै नराधिप को कर जाना।
पुडर के वडे सुत नें लीना।
वसुधा सें ले कर महि कीना।
षडि कर सीस को तब ही जलाया।
मुष अपुनें से बचु उचिराया।
हे पित जिन तुम कौ है मारा।
कर विरोध तुझि को प्रहारा।
अब मैं उसि षंड षड न करहौं।
तब लगि ना पगु धरहौं

इहि अलज्ञा मन ठहिराई।
पुंडिर सुत निश्चा मन आई।
सकल लोक मिल मतु ठहिराहो।
पुंडिर सुत मुष इहि उचिरायो।
को गुरु वरदाता वतलायो।
वेग विलम कछु मूल न लावो।
लोक कह्यो अैसे शिव होई।
होरु अैसो सुरु और न कोई।
पुंडिर सुतु शिव सर्नी आयो।
शंकर की सेवा चितु लायो।
होम यज्ञ बहु कर्न लागा।
और वात उनि सभ ही त्यागा।
तीन दिनस जब भए वितीना।
इनि कीनी मन निर्मल प्रीना।
अग्नि कुंडि से रूपु निकसाया।
ताकि रूप मुष वचनु उचिराया।
माग लेहु कछु हमिरे पाहे।
जो इछा होवे मन माहें।
पुंडिर सुत तिह बचु उचिरायो।
अग्नि रूप सों वचनु सुनायो।
द्वारका कों जाइ कर दग्धावो।
हमरो बचु मन महि ठहिरावो॥
पुंडिर सुत की आज्ञा पाई। अग्नि रूप चल्यो पुर धाई॥
श्री कृष्णचंदि के पुर निकट आयो। द्वारका पुर तिहि नामु रपायो॥
चतुर ओरि आइ अग्नि जराई। सभ जादम उठे अकुलाई॥
धीर्जु तजि सकले विललाए। सांईदास धीर्जु ना पाए॥१७६

तिह समे हरि चौपडि चितु लाया। पेलति है सुदर अधिकाया ॥
सुदर्सनु चक्र लीयो वुलाई। तिह आज्ञा दीनी जदुराई ॥
आज्ञा ले चक्र तव धाया।
निर्ष चक्र को अग्नि रूपु भगाया।
चक्र ताँको पाछा कीना।
अग्नि रूप डरु मन महि लीना।
चक्र अग्नि रूपु हति आया। प्रभ कौ आइ डंडौत कराया ॥
एक मर्कटि ताको बलु भारी। तिन प्रतज्ञा मन महि धारी ॥
जिन नरकासुर को है मारा। मोहि सषा को जिन प्रहारा ॥
जब लगि मैं तिस मारौ नाही। तव लगि ध्रिग जीवन जग माही ॥
दस गज कों वलु वंचरि ताई। महावली वलु कहा सुनाई ॥
नरकासुर को सषा कहावै। अपुने वल मन गर्बु वसावै ॥
द्वारका पुर के वहि निकट आवै। सुता बडे लोको ले जावै ॥
तिन कौ जाइ करे वुरआई। पाछे दधि महि देइ रुढाई ॥
उौर लोक पुर द्वारे रहिईं। तांपर अध्कि जोरु वहु करईं ॥
तिन लोको को बहु दु:ख देवै। तिह सों अध्कि विरोधु करेवै ॥
सकल लोक आए हरि पाहे। रुदनु करे मुप तें उचिराहे ॥
हे प्रभ तो विनु उोटि न काई। हमि मर्कट दुखु देह अधिकाई ॥
दुहिता हमि षसि लेकर जावैं। दधि माहे पडि ताहि रुढावै ॥
प्रभ सुएा विधि तांको प्रितु दीना। उौरु करो चितु हमि उचिरीना ॥
मैं तुमरो संतापु मिटावो। तुमरो दुख मै सकल हिरावो ॥
एक दिनसि बल देव क्या कीना। सभ वनिता अपुने सग लीना ॥
ततक्षिरा महि वन माहे आया। तौ उनि मर्कट ने सुण पाया ॥
वहि मर्कट भी वन महि आया। बलिराम सहित दारा निर्पाया ॥
हरि की बनिता की उोरि देषै। कपट द्रिष्ट कर तिहि उोरि पेषै ॥
तिन सौ अपुने द्रिग मुसकावै। जिह उोकठनि तिहि सर्व लुभावै ॥
रामां बलिदेव मन महि निर्पी। सिर को ऊपरि कर ना निर्षी ॥
व्रिक्ष आएा तिहि ऊपर डारे। मर्कट अंधु कछु मन न वीचारे ॥
उौधि निकट आई सुर्ति भुलानी। एहि वात भली कर जानी ॥
जब इनि मर्कट बुरा कमाया तव बलदेव तिहि युद्ध मचाया

मर्कट दिवद को बलुदेव मारा। बुरा कीयो इति विधि प्रहारा॥
जो पापी बुरो कर्मु कमावै।
साईदास प्रभु ताहि हतावै १८०

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुखदव परीक्षति सवादे सताहिठमोध्यायः॥६७॥

सुन श्री कृष्ण सुनो मेरे भाई।
सांब नाम सुन हो चितु लाई।
धृतराष्ट्र कैरो मुत कहीए।
दुर्योधन नाम तिसे उचिरहीए।
स्वबर कन्या को तिहि कीना।
अनेक नराधिप को सदि लीना।
साब कह्यो मै भी ऊहा जावो।
उकल वाति मै द्रिग निर्षावो।
जो वहि कन्या मम को देवहि।
अधिक भला मोहि सहित करेवहि।
जो मम को वहि देवहि नाही।
तव मै एही वात करांही।
कन्या कों रथ लेउो चढाई।
ले भागो मैं इहि ठहिराई।
सांबु भी जाइ तहं ठहिरायो।
इति उति ते जाइ सोभी पायो।
कन्या तुम कौ देवहि नाही।
तुमि सो कार्जु नाहि कराही।
जवै साव इहि विधि सुण पाई।
कंन्या को तव कह्यो पठाई।
मम तुमरी संयुक्त न करही।
इहि कछु औरु भ्राति हृदे घरिही।
जो आवे तुम्हि को ले जावो।
द्वारका माहे षढि ठहिरावो।

जब कन्या इहि विधि सुण पाई।
ततक्षिण महि सांब पहि आई।
साब तासि को रथ बैठायो।
रथ पर चाढि तासि ले धायो।
पाछे दुर्योधन सुण लीना।
सांब कृष्ण सुत इहि कर्मु कीना।
कैरव अधिक तिहि दीए पठाई।
सांव को बांधि आने है भाई।
कैरव सांव के पाछे धाए।
क्षिण मात्र सांव के निकट आए।
सांव कृष्ण सुत वहु युद्ध कीना।
हार पर्‌यो कैरो वधि लीना।
वांध दुर्योधन पहि ल्याए।
दुर्योधन तव वच उचिराए।
हे सांब क्या इहि कर्मु कीआ।
कौन वात तें मन महि लीआ।
वहुरी कह्यो इसि को वंधि रापो।
इसि को औरु कछु वात न आषो।
सांब को राष्यो ग्रहि माही।
साईदास भाषहि कछु नाही १८१

नार्द ऋषि द्वारका महि आए।
जहा श्री कृष्ण उग्रसैन ठहिराए।
उग्रसैन सों बचनु उचारा।
हे नृप सुण हो वचन हमारा।
सांब को दुर्योधन बधायो।
अपुने ग्रहि महि वांधि रषायो।
उग्र सैन नृप इहि सुण पाई।
मन महि क्रोधु कीयो अधिकाई।
मुप ते एही वचु उचिरायो।
कीत ब्रह्म को तव ही वुलायो

कटिक अधिक कैरव परि चारहि।
वही कटिक कैरवि को मारहि।
वलदेव कैरवि सहित तकाई।
सुनत वात इहि आयो धाई।
उग्र सैन सों बिनती ठानी।
हे नृप महा अधिक बलिदानी।
मोहि आज्ञा देवों मे जावों।
इहि कार्जु मै कर्के आवों।
जो मम कहा मान उनि लीआ।
अधिक भला ताहूं ने कीआ।
नाहित ज्युं आज्ञा तुम होई।
हे नरपति करहि हमि सोई।
अवि तुम सैना नाहि चढावो।
किर्पा कर्के मोहि पठावो।
वलिदेव सुपलकिसुत संग लीनें।
अवर ऊधो अपुने संग कीने।
हस्तानापुर के मग पग धारे।
ताहि निकट आए ततकारे।
एक बन महि लीनो विश्रामा।
वलदेव महा वली वीर स्यामा।
सुपलिकसुत को दीयो पठाई।
दुर्योधन कों कहु तू जाई।
बलिदेव आइ वन महि ठहिरायो।
तुमरी कंन्या कार्नि आयो।
सांव को सुत कार्ज कर देवो।
मोह कहा मन महि धर लेवो।
उग्रसैन वहु क्रोधु करायो।
चाहित था तुम को मरवाहो।
मै विनती कर करि वषसायो।
कैरो कुल ना नासु करायो

सुपलकि सुत पुर माहे आया।
दुर्योधन को आइ सुनाया।
जो वलिदेव तासि समझायो।
सो दुर्योधन पहि शब्दु उचरायो।
ध्रितराष्ट्र सुत क्रोधु करायो।
जब सुपलकिसुत से विधि सुण पायो।
सुपलकिसुत सों तिन प्रतु दीना।
उग्रसैनु किस नराधिपु कीना।
अवि महाराजु भयो है वाहि।
हमि आदि अंत ते नृप अधिकाई।
जब हमि तिन से करी सकाई।
तव जादम ने लई वडाई।
दुर्योधन सुपलकिसुत समझायो।
हमि तिन से क्या बुरा कमायो।
हमिरे कीए वडे भए वाही।
अबि हम सो विरोधु उठाई।
हमि पन्हीआ पग वैरु कहा होहै।
जो बोले अपुनी पति खोहै।
सुपलसुत वेग तुम जावो।
वलिदेव को तुम जाइ सुनावो।
अक्रूर तव ही वलिदेव पहि आया।
दुर्योधन वचु आइ सुनाया।
वलिराम क्रोधु मन सुण कर लीआ।
दुर्योधन एता गर्वु कीआ।
उग्रसैन महाराज को राजा।
श्री कृष्णचंदि पूर्न सभ काजा।
एक छिन महि सभ जगतु वनावै।
छिन माहे सभ भस्म करावै।
तिन सों पग पन्हीआ सों लावै।
ऐसा गर्वु हृदे महि ल्यावै।

क्रोधु कीयो शस्त्र कर कीआ।
हस्तनापुर तापर चुक लीआ।
कहो तो अब ही सकल विडारो।
एक एक कैरव कों मारो।
तव सभ कैरव सर्नी आए।
वलिदेव पहि आइ वचि उचिराए।
वलिराम की उस्तति कर्न लागे।
गर्व गुमान सकल उनि त्यागे।
सेस नाग को रूपु तिहारा।
सकल धर्नि को तुम सिर भारा।
तुमरी उस्तति कहा वषानें।
हमि पातकि उस्नति कहा जानें।
राम ताहि पर करुणा धारे।
राष लीए तव कैरव सारे।
हस्तनापुर टेढाप्ना थीआ।
अव लगि टेढु न तांका गया।
अव लगि टेढा ही द्रिष्ट आवै।
ताहि टेढु अव लगि ना जावै।
दुर्योधनि वलिदेव कों सग कीआ।
पुर को मार्गु तिन ने लीआ।
वलिदेव सहित गए पुर माही।
अव कछ त्रासु न तिन मन माही।
कन्या का तिन कार्जु कीना।
अति अधीनता मन महि लीना।
सांब सहित सजुक्त वनाई।
मोती माणक दीए अधिकाई।
अश्व हस्त दीने वहुतेरे।
औरु अधिक दीने तिहि चेरे।
अवर अधिक दीने तिह ताई।
नामु दुर्योधन दुहिताई

वलिराम कैरो आज्ञा पाई।
साब सहित द्वार्का चल्यो धाई ॥
कार्जु कर द्वारका ले आए।
ग्रहि द्वारिका मगलि गाए।
उग्र सैन निष्यों सांव ताई।
साईदास हृर्ष्यो अधिकाई ॥१८२

इति श्री भागवते महापुराणे दसम स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अठाहठमोध्याय: ॥ ६८ ॥

एक दिनसि नार्द ऋषि मन आनी।
सो कृपा ते सकल वषानी।
षोडस सहस्र एक सौं अधिकाई।
वीस अष्ट रामा हरी भाई।
आप एकु क्युं तिन परचावै।
कित विधि चित वनि नाहि पुजावै।
मै देषो वहु क्या कुछ करई।
क्यु कर भवन भवन महि फिरई।
प्रिथमे नार्द ऋपि उठि धाए।
जांमवान दुहिता गृहि आए।
तीनों ओरि सम्याने तानें।
ताहि द्वार ते मोती पचानें।
ताहि सहित वहु मणी पचाई।
तिन की महिमा कहा बताई।
श्री कृष्णचंदि चौकी ठहिराए।
जामवती कर चौर ढुलाए।
चेरी दस कर जोरे षली।
अति सरूप सुंदर वहु भली।
नार्द ऋषि तहा कीयो प्रवेसा।
निष्यौं हरि चित कीयो अदेसा।
प्रभ जव नार्द को निर्षायो।
ठाढा भयो मुष वच उचिरायो

कृपा करी प्रभ हम पर आए।
तोहि दर्सन संताप मिटाए।
जामवती अम को ले आई।
अभु आण हरि पहि ठहिराई।
श्री कृष्ण नारद के चरण पधारे।
बहुरो ले परजंक बहारे।
प्रश्नु कीयो स्वामी कब आए।
कछु आज्ञा हमि देहु बताए।
कित प्रयोग किर्पा तुम धारी।
इसि का हमि को देह वीचारी।
तब नारद हरि को प्रतु दीना।
हे प्रभ मोह मन महि इहि लीना।
अधिक भयो दर्सनु ना पायो।
तुम दर्सनु देपन को आयो।
एही आग्या है प्रभ मेरी।
गति मोहि होइ भक्त करो तेरी।
तोह भक्त कब नाहि भुलाए।
इहि आज्ञा हमरी जदुराए।
नारद प्रतु हरि देइ उठि धाया।
औरु रामा के ग्रहि महि आया।
तासि भवन महि जाइ निर्पायो।
तिसी भवन महि हरि को पायो।
प्रथम वचन प्रभ ताम सुनाया।
हे ऋषि जी कहु कब तूं आया।
बहुरो ऋषि अवरे भवन आए।
भवन द्वार पहि आइ ठहिराए।
श्री कृष्णचंद निर्प्यो तहा जाई।
कर महि चर तरपनु जो कराई।
सुरहो वहु विपो ताई देवैं।
अपुने कर कर दानु करेवैं।

बहुर गयो गहि औरे मांही।
निर्ष्यो हरि नार्द ने ताही।
सुत को हरि लीनो अग माही।
सुत के सग प्रभ आप षिलाही।
ऐसे ओर भवन पग दीआ।
हरि निषिन कानि चितु दीआ।
देष्या जाइ हरि तिह ग्रहि नाही।
सोच वीचार लीयो मन माही।
चेरी सों तव बचन उचारा।
कहा गयो है प्रांन अधारा।
चेरी सुण तांको प्रतु दीना। कूप पर है प्रभ ब्रह्म भोज कीना।।
ऐसे चेरी वचु उचिरायो। सांईदास नार्द सुण पायो।।१८३

नार्द प्रतु लेकर उठि धाया। ततक्षिण कूप ऊपर वहु आया।।
निर्ष्यो श्री कृष्णचद को ताही। भ्रांत चुकायो तिस मन माही।
वहुरो अवर भवन को धायो। तहा आइ हरि ना निर्षोयो।।
चेरी सो ऋष कह्यो सुनाई।
कहु कहा गए श्री जदुराई।
तव चेरी ने वचन उचारा।
सुण हो ऋषि पूर्न विधि सारा।
प्रभ गज सहित गज गयो लराई।
सुण हो ऋषि विधि कहो सुणाई।
नार्द ने तहूं जाइ निर्षायो।
कुजर लरिवावति द्रिष्टायो।
जहा गयो ऋषु तहूं हरि पायो।
ज्ञान समाध गयो विसमायो।
मै मतिहीन कहा गति पावा।
य्युं ही भवन भवन भर्मावा।
नार्दि ऋषि या समाध करायो। साईदास सभ मर्मु हिरायो।।१८४

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे ॥ ६६ ॥

हरि ले तेलु मुष आप लगायो।
अधिक सुंदर हरि रूपु बनायो।
दर्पन ले कर मुष पर्षावत।
मन महि अधिक कलोल करावत।
वहुरो सुरहो को लीयो बुलाई।
तास मुष देष्यो जदुराई।
विपो अधिक कों तवी पवायो।
वहुरो प्रभ ने भोजनु पायो।
पाछे से रथु लीयो बुलाई।
एक चरयो श्री कौर कन्हाई।
एक और ऊद्धो को दीना।
एक सुदामा को दया कीना।
नृप उग्र सैन पाहे आयो।
नृप को आइ प्रनामु सुनायो।
जाइ सभा महि निकट नृप वहयो।
अग सो अंगु जाइ तिन गहयो।
जिह जिह वारी सो सो आए।
अति अनंदु नृप मन महि पाए।
एक द्वार पालकु तव आयो। आइ कृष्ण सों भाप सुनायो।
हे प्रभ एक विप दूर से आयो। तिह महि द्वार ऊपर ठहिरायो॥
अंतरजामी विधि जानण हारा। श्री कृष्णचंदि गति अपर अपारा॥
कह्यो विप्प को अंतर ल्यावो। वेग विलम कछु मूल न लावो॥
द्वारपालकु विप्प को ले आयो। विप्प आइ हरि प्रनामु सुनायो॥
हे प्रभ इकि विनती है मोरी। ईहा कहो आज्ञा होइ तोरी॥
जो तुम कहो कहो पटि माही। तव श्री कृष्ण वचन उचिराही॥
है स्वामी हमि जादम माही। निश्चै जानो अंतर माही॥
जो कछु है हमि आप सुनावो। पलु छिन रचक मूल न लावो॥
तव विप ने मुष वचन उचारा। सुण हो गिर्धिर प्रान अधारा।
सम नराधिप जरासिंघ वधाए अपुने ग्रहि महि वद दुराए।

उन नृप निसवासर तोहि ध्याना। स्मिृति तोहि को है भगवाना॥
हे दियाल विधि जानरण हारा। गुण निधान तू अपर अपारा॥
भक्त वछल श्री कुंज विहारी। करुणा निधि गिरधर हरि धारी॥
इहि प्रजोग विनती प्रभ करही। तुम आगे प्रभ इहि उचरही॥
अठदस बार जरासिध आयो। संग लीए सेना अधिकायो॥
सभ सैना तै उसि की मारी। तुम पित मात भक्तिन वनिवारी॥
हे प्रभ तुम जो लीआ अवतारा। भगति हेत निर्भौ निरकारा॥
संतनि को करो पारगिरामी। असुर संघारण अंतरजामी॥
जवहि हमि जरासिंध ल्यायो। आण अपुने ग्रहि बंद करायो॥
तुमरो ध्यानु सदा घटि माही। रहित हमारा दूरि न जाही॥
जब हमि अपुने ग्रहि महि होते। गफलति माहे पै कर सोते॥
ना जाने कैसे रैन विहाई। दिनमु कवन हरि औरि सिधाई॥
जब ते इस की बंदि महि आए। तुम चरना सो ध्यानु लगाए॥
छिन पलु ध्यानु अवर नही जाई। तुमरे स्मिरन संग विहारी॥
हे प्रभ हमि कर हो उपराला। तुमि बिनु हमरो को रषवाला॥
दिज ने ऐसी विनती ठानी। सांईदास सुणी सारग पानी॥
नार्द पुर पांडवा से आयो।
श्री कृष्णचंदि तिहि बचु उचिरायो।

पाडवो सुत की षवर सुणावो।
यथार्थ विधि सभ मोह बतावो।

ऋष कह्यो सकली विधि हरि जानो।
मै तुम पाहे कहा वषानो।
जो कृपा कर पूछो हमिताई। यथार्थ प्रभ सों आष सुणाई॥
हे प्रभ युधिष्ठिर हृदे आवे। जो प्रभु किर्पा हमहि करावे॥
राजसी यज्ञ करो तत्कारे। पूर्ण कार्ज होहि हमारे॥
हे प्रभ उहु हृदे महि धारे। कर विस्वास मन माहि वीचारे॥
तांसो यज्ञ पूर्ण ना होई। तोहि कृपा बिनु कहा करे कोई॥
जो तुम कृपा करो पंडवायण। तव यज्ञ पूर्ण होइ नराइण।
तुमरो ध्यानु सदा मन तांके घटि माहे वचि रह्यो वांके
ऊद्धव सो प्रभ वच उचिराहो एकी वचु प्रभ ताहि सुनायो

तू वसीठ सभ जादव माही। मै तव वात करी तुम पाही ॥
तू कछु मोको देहु वताई। कहा करहि इस विधि मेरे भाई ॥
ऊधो प्रितु दीनो हरि ताई। हाथ जोरि कह्यो प्रभ ताई ॥
तुम अंतरजामी विधि जानो। तुम पाहे मैं कहा वषानो ॥
जो हमि पर किर्पा प्रभ धारी। वात पूछी अव लेहु विचारी ॥
हे प्रभ इस महि वहु भली आई। सकल वात मैं कहो सुनाई ॥
प्रियमे जरासिध को मारो। इन नराधिप को वनी उतारो ॥
राजा युधिष्ठिर जो यज्ञ करही। तोहि प्रसाद हृदे सुषु धरही ॥
ऊधो औसे प्रतु हरि दीना। सांईदास हरि मन धर लीना १८६

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षित संवादे सत्तरमोध्याय: ॥ ७० ॥

नादि ऋषि हरि कह्यो सुनाई। हे प्रभ पूर्न भक्त सहाई ॥
हे प्रभ मै ब्रह्मपुर पगु डारा। तास पुरी महि एहि निहारा ॥
तुमग भजनु करहि गज इंदा। हे प्रभ पूर्न पर्मानंदा ॥
जो उनि फासी ते लए छडाई। सदा सदा तुम भक्त सहाई ॥
जो नृप जरासिंधि वदि पाए। तिनहूं देस पग हमि हो आए ॥
एकनिम तिह नराधिप ग्रहि माही।
में रह्यो जाइ हे त्रिभवन साई।
भूपति भार्जा सुत के ताई।
गोदि लीए मुष वचु उचिराई।
जो तिहि सुत वहु रुदनु करावहि।
तव वहु सुत को आष सुणावहि।
ना तुम रुदन करो चुप करहो।
मन अपुने महि इहि विधि धरहो।
प्रगट्यो है वसुदेव को नदन।
त्रैलोक ताको चित नदन।
महा अधिक वलु है तिस पाई।
ताके वल समसर कोऊ नाई।
कंसु मार तिन पर्लो कीना।
राजु उग्रसैन को दीना

आजु काल तुम पित पर आही।
आइ आप हरि क्रपा कराही।
जरासिध को आइ कर मारे।
तुम पित को ततकाल उबारे।
हे सुत रुदन करों तुम नाही।
ले सतोपु धरो मन माही।
श्री कृष्णचद ने सैन बुलाई।
ताहि कह्यो सुण हो मेरे भाई।
चलहो पाडो सुत पहि जावहि।
हस्तनापुर के मग हितु लावहि।
राम वसुदेव नृप पाहे रहई।
सुष सेती इहि पुर महि वहिई।
और सकल सैंना सग आवो।
कछु विस्वासु न मन ठहिरावो।
अष्ट नायका कों संग लीना।
तब प्रभ गवनु हस्तनापुर कीना।
ततक्षिण वन सुरपति महि आए।
वाहि वन माहे ठहिराए॥
धर्म पुत्र ने इहि सुण पाया।
श्री कृष्णचद किर्पा कर आया।
सभ ही वीर सहित तिन लीने।
श्री कृष्णचंदि उौरि पग दीनें।
वाहि वन माहे चलि आए।
ततक्षिण हरि ले अंग लगाए।
मग्न भयो कछु कह्यो न जाई।
धर्म पुत्र हिष्यो अधिकाई॥
बहुरो भीम अर्जन सहिदेव।
नकुल आइ लागो हरि सेव।
आइ डडौत करी हरि ताई।
दुख हर्नि हरि त्रिभवन साई।

हरि को संग लीए उठि धाए।
ततछिण महि पुर माहे आए।
कुंति अरु द्रुपद सुता आई।
तिन मन हर्षु भयो अधिकाई।
कुंती कृष्ण को अंग महि लीना।
श्री कृष्ण प्रनामु तास को कीना।
मास तीन प्रभ रहे तहाही। सांईदास दुख तिह कछु नाहीं १८७

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे इथत्तरमोध्यायः ॥७१॥

एक दिनसि प्रभ वचु उचिरायो।
धर्मपुत्र सों आपि सुणायो।
धर्मपुत्र तुम यज्ञ करावो।
यज्ञ करनि को तुम चितु लावो।
मै भी टहिल करों यज्ञ मांही।
मन महि और करो कछु नाहि।
तव युधिष्ठिर वचन उचारे।
मै वलि जावो प्रांन अधारे।
हमि ते कछु होवै प्रभु नाहि।
जव लगि तूं किर्पा न कराही।
जो तुम किर्पा करो तव होई।
जव तुम क्रिपा करो होइ सोई।
श्री कृष्णचंदि तांको भ्रितु दीना।
हे धर्मपुत्र तै कहा मन कीना।
चतुर भ्रात तुमरे वलिकारी।
महावलि तिन वचु अधिकारी।
चतुर दिशा इनि देहि पठाई।
इन भूपति को एहि हिराई।
जव इनसे कोऊ जोरु न धाई।
ततिछिण महि जाइ होउ सहाई।

तांको जामैं आरण वहावो।
तुमरो पूर्न यज्ञ करायौ।
तव युधिष्टर भ्रात पठाए।
पष्ट मास महि सभ जिरा आए।
ऊद्धो ने तव वात चलाई।
सुण हो प्रभ. सतन सुषदाई।
जरासिध को वलु वहु भारी।
सोक्षुहिण सैना सग सारी।
जो तुम तांसो युद्ध करायौ।
युद्ध कीए तिह नाहा हनावो।
एक बात मै देउ वताई।
जो भेदुहु करो तव हत्यो जाई।
तुम अर्ज्जनु अरु भीम सिधावो।
तीनो ब्राह्मण भेष वनावो।
धर्मयुद्ध तांसो मग लेवो।
एहि वात हरि मन महि लेवो।
वहु क्षत्री तिह वलु अधकाई।
तुमको वचनु देइगा सांई।
एक एक तुम तिस करो लराई।
जव इहि करो हत्यो तव जाई।
ऊधो हरि को इहि सुनायो। सांईदास प्रभ हृदे धरायो १८८

श्री कृष्ण भीम अर्ज्जन क्या कीआ।
भेषु ब्राह्मण कों कर लीआ।
चले द्वार जरासिध के आए।
मुष ते आइ शब्द उचिराए।
मत्री जरासिध निर्पायो।
निर्प तासि मुष वच उच्चिरायो।
हे नृप इहि ब्राह्मण तो नाही।
क्षत्री हमरी द्रिष्ट पराही।

कर पल्लो तुम इन्हहि निहारो।
इन्हहि निहार मन महि बीचारो।
दागि परे इन्ह के कर माही।
बाण चलावन कहो नमिम्माही।
भेषु ब्राह्मण को कर लीना।
तुम छत्रिने को इनि पगु दीना।
अति भलो जाचनु क्षत्री कीना।
नृप हरि सेनी वचु उचिरायो।
कहु स्वामी तुम क्या मन भायो।
तब प्रभ तामि: कह्यो सुनाई।
मुण हो नृप तुम बलु अधिकाई।
जो देवो तब कह्यो सुनाई।
नाहि त कहिते नाहि भलाई।
जरासिंध कहियो मै दीआ।
जो तुम मांगो सो मन द्रिढ कीआ।
मांग लेहु जो तुम हृदे आवै।
देओ सोई जो तुम मनि भावै।
जब नृप ने इहि वचु उचिरायो।
श्री कौलापति तब ही सुनायो।
मै हो कृष्ण अर्ज्जन इहि आयो।
इहि भीम सैणु तू सुण चितु लायो।
धर्मयुद्ध हमि सहित करावो।
वेग विलम कछु मूल न लावो।
जरासिंध तब कह्यो पुकारे।
तुम सो युद्धु न करौ मुरारे।
मोह सर बलु अर्ज्जनु कहा धारे।
मार लेओ अंत इहि हारे।
एक भीम बल मोह सर होई।
मो संग युद्ध करो फुन सोई।

जरासिंधि तव वचनु उचारा।
भीम वात मन लेहु सम्हारा।
कछु शस्त्र ग्रहि ते ले आया।
जो हमि सौं तू युद्ध को धाया।
भीम दीयो प्रतु नृप के ताईं।
मैं शस्त्र आना कोऊ नाही।
तव नृप जरासिद्ध क्या कीना।
गदा एक भीम को दीना।
एक लीई अपुने कर मांही।
चाहित है वहु युद्ध कराही।
संग्राम ठौर जाइ कर ठहिगए।
मानो मदिमाते गज आए।
उहु उसि को मारे वहु उसि को मारे।
गदा गदा उठहि चिणगारे।
तीन दिनम्हि निसि तिन युद्ध कीना।
हारि न कसि तिनि माहे दीना।
भीम कृष्ण ओर नैन निहारे।
थकित पर्यो मुष एहि उचारे।
श्री कृष्ण भीम को सैन वुझाई।
वीच से चीर डारु मेरे भाई।
भीम ने एक जघ कर लीनी।
दूसरी जघ तले पग दीनी।
हरि वलु हिर्यौ नृप के ताईं।
चीर डार्यो है मध्य मझाई।
चहूं ओर होयो जयकारा।
सांईदास भीम नृपु मारा।
जरासिंध सुत सहिदेव नाम।
सदा वस्ति जिह घटि हरि नाम।
कृपा निधान ताहि राजु दीना
तिस पर प्रभ ने करुणा कीना।

सहिदेव तव श्री कृष्ण सुनाई।
नीक बाति कहि ताहि समझाई।
जो नृप ले बंदी पिन तेरी।
तिन्हहु आण काटो निह वेरी।
सहिदेव नृप सकल ले ग्राए।
श्री कृष्णचद आण दिपाए।
तिन नृप को सभ रूप बनो।
उौर टौर कहूं चिन्नु न दीजै।
मुष पर केस भए अधिकाई।
फाटे अंवर देति दिपाई।
एक फाटे इक भए मन्नीना।
अधिक रूप निहि भयो अधीना।
आइ श्री कृष्ण को कीयो प्रनामा।
हे प्रभ पूर्नि पूर्न कामा।
आदि अत लगि सर्नि तिहारी। सांईदास करुणा हरि धारी ॥१९०

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संबादे बहत्तरमोध्यायः ॥७२॥

सकल भूपति मिल वचु उचिरायो।
करुणा निधि सों आपि सुनायो।
जब हमि प्रभ होते ग्रहि माही।
तुमरे नाम को जाने जाही।
सुत बनिता माया चितु लावहि।
कुंजर अश्व सेती उर्झावहि।
जव ते आए बंदि इसि माही।
पलि छिनु तुम बिनु ध्यानु न जाई।
हमि पर कृपा करों गिरधारी।
हमि हिर्दे होइ भक्ति तिहारी।
कवहू हमि हृदि ते नां जावै।
सदा सदा रिदे महि ठहिरावै।

तब करुणा निधि वचन उचारे।
तिन को प्रतु दीनो ततकारे।
धंन्य तुम भक्त हृदे इहि आई।
हमिरी भक्त तुम हृदे जचाई।
नराधिपु होइ कर भक्त जचावै।
पर्म मुक्त गति ओहो पावै।
सकल भूपति ने मज्जन कीना।
अपुने पान भोजनु तिन लीना।
बहुरो पान पत्र ले षाए।
दुष भयो नास अधिक सुष पाए।
श्री कृष्ण कह्यो महि देव के भाई।
बसन ल्यायौ तुम अधिकाई।
अवर इनि नरपति पहिरावो।
अश्व कुचर पर इनहि चढावो।
आयो अपुने पुर को जावहि।
अपुने पुर जाइ कर सुष पावहि।
सहिदेव अश्व कुचर ले आया।
श्री गोपाल आगे ठहिराया।
श्री कृष्णचंद उनि ताई दीए।
तव ही इहि वचु मुष ते कीए।
सकला मिथ्या कर्क जाना। निश्चै इहि विधि मन महि आना॥
माटी की एहि देहि बनाई। बहुरो माटी सों रलि जाई॥
अपुनी पर्जा को सुष देवो। जोरु जुलमु किसे नाहि करेवो॥
ऐसी भाँति तुमि राजु करावो। पर्म मुक्त गति को तुम पावो॥
तव ही तुमरी होइ कल्याना। पर्म पदार्थु लेहु पछाना॥
तब ही ते तुम मोको पावो। जो तुम इहि विधि कर्म कमावो॥
अबि जावो अपुने गृहि माही। ग्रहि त्याग तुम भयो चिराही॥
जाइ दर्सनु सुत वधू करहौ। निश्चल आसनु अपनो धरहो॥
जव धर्मपुत्र लिष पती पठावै। अपुने पुर महि तुमहि बुलावै॥
सहित कुटब लीए तुम आवौ धर्मपुत्र पुर आइ ठहिरावौ

राजसी यज्ञ युधिष्ठर करही। यज्ञ कीने कों मनिमा वरनी ।।
यज्ञ माहि नराधिप जो आवो। होइ कल्याण पर्म गति पावो ।।
आज्ञा ले भूपति उठि धाए। भिन्न भिन्न पुर मग हित न्याए ।
तिन की प्रभ ने करी कल्याना। माईदास प्रगटि भयो नीगाना ।।१९१

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे त्रिहत्तरमोध्याय: ।।७३।।

अर्जन भीम सैन गिरिधारी। श्री गोपाल भक्तनि हितकारी ।।
ततक्षिण अदर वैठ सिधाए। पुर के निकट आइ शप बजाए ।।
तब ही धर्म पुत्र ने जाना। जीत कर आए पुर्पनिधाना ।।
राजा वीर दोनो संग ल्याया। और लोक पुर को अधिकाया ।।
आइ डंडौत करी हरि ताई। ताकी उस्तति क्या उचिराई ।।
श्री कृष्ण को पुर ले आया। अग मिले आनंदु वहु पाया ।।
भए विनीत केते दिन जवही। धर्मपुत्र पतीआ लिपी तब ही ।।
लिपि पतीआ चहुं ओर पठाई। इहि लिष्यो है तासि मझाई ।।
यज्ञ निकट आयो है भाई। इहि प्रजोग हम पती पठाई ।।
वेग विलम्ब तुम मूल न लावो। पत देप तही उठि आवो ।।
सभ नृप पतीआ देपत आए। देपि कृष्ण को अति हर्पाए ।।
तब ही तिन मुप वचन उचारे।
जन्मु गवायो परे किनारे।
अव जो दर्सनु प्रभ का पायो।
भई कल्याण सभ दुख हिरायो।
भाग वडे हमरे होइ भाई।
आइयरे हरि की सर्नाई।
धर्मपुत्र तव हरि जी ताई।
कह्यो सुण हो त्रिभवन सांई।
जो तुमरी हरि आज्ञा होई।
मोह हृदे आई आपो सोई।
धर्मपुत्र को हरि प्रतु दीना।
कौंन वात तै मन महि लीना।

धर्मपुत्र तव कह्यो सुनाई।
हे प्रभ पूर्न कौर कन्हाई।
सकल विपो को अश्व देवो।
एहि वात हरि जी कर लेवो।
तव श्री कृष्ण ने वचन उचारे।
धर्मपुत्र को कहित पुकारे।
सकल विपो को अश्व देवो।
साईदास सुषु मन महि लेवो ॥१६२

श्री कृष्ण कह्यो नृप वानि ताई।
नीक वात तांको समझाई।
धर्म राजसी यज्ञ करही।
यज्ञ करने को मनसा धरही।
कचन की पुतरी ले आवो।
कछु तुम वेग विलम ना लावो।
वर्न तव ही पुतरी ले आया।
कछु वेग विलम तिन नाहि कराया।
श्री कृष्णचंद कटु वाधि के लीआ।
टहिल कर्नि सेती चितु दीआ।
सब ही ऋष नृप आण वहाए।
ताहि नाम सुण हो चितु लाए।
व्यास वालमीक विस्वेस्वर।
बृहस्पति राहु केतप्रारचर।
धूम ऋिष नार्द चलि आए।
प्रगवछ पिपिलाद अथित वताए।
'पडित किन्नर वेद वीचारे।
हरि की उस्तति मुखो उचारे।
जैसे स्मृत वेद वताई।
तास युक्त यज्ञ कीनो भाई।
अमरो सकल जैकार सुनाए।
सकल लोक मिल अनंद पाए

जब ही यज्ञ सपूर्ण होया।
धर्म पुत्र मन ससा खोया।
नृप अपुने ते वचन उचारे।
सकली विधि जनु कहित पुकारे।
इन्ह भूपति ताई समझावै।
सकल हृदे को भर्मु हिरावै।
तुम बड़े बडे नराधिप आए।
मै तुम ताई कहित सुनाए।
प्रिथम तिलकु मै किसे लगावो।
किस मस्तक मै तिलकु चड़ावो।
सहिदेव सुतु जरासिध केरा।
ऊभनि भया नृप ते इहि टेरा।
मोह पनि भूपति सा अधिकाई।
अत्रि मै तुम सेवकु मेरे भाई।
एक वचनु तुम पाहि दीचारो।
जो मन आई कहो पुकारो।
श्री कृष्ण हरि पुर्ख पुराना।
सकल जगत को देवै दाना।
इकि छिन सकल सृष्टि उपिजावै।
इकि छिन मै सभ भस्म करावै।
प्रिथम तिलक तुम तास लगावो।
हम सेवक कहचा मन ठहिरावो।
जब सहिदेव इहि वचन उचारे।
इनि भूपति तब कह्यो पुकारे।
धन्य मति सहिदेव तुम्हारी।
भली बाति तुम हिरदे धारी।
श्री कृष्ण को सकल आज्ञा दीनी।
युधिष्ठर तिलक मस्तक पर कीनां।
सकल सभा चरणाम्रतु लीआ।
अपुने वधू को तिन दीआ।

सकल सभा ने आनंदु पायो।
सांईदास मगलु मन गायो॥ १६३॥
ससिपाल असुरु जिह वलु अतिभारी।
पडा भया मन क्रोधु संभारी।
सकल सभा की मत्ति मूढ होई।
इन महि सिमरत नाही कोई।
कहित कृष्ण को तिलकु लगावो।
और वात कछु नां उचिरावो।
कृष्ण जात कहु कहा कहिज्जै।
ग्वार अहीर कहा नाम लिज्जे।
केतकि दिन ग्वानि महि रह्या।
तिन माहे अस्रमु सुषु लह्या।
तिन के संग भोजनु इनि पाया।
अब श्री कृष्ण इनि नामु धराया।
जात पात जादम क्या होई।
हमि समसर कहा होवे सोई।
सभ जादव पीवहि मदिताई।
तिन के संग भी कोई नाही।
हमि कैरो नराधिप वलिकाई।
कृष्ण कहा करे रीस हमारी।
कहित कृष्ण को तिलकु लगावहि।
अंधि सभा मुष इहि उचिरावहि।
कृष्ण कहा ते उत्तम होई।
हमि एहि वतावो कोई।
गोकल महि जिन धैन चराई।
अब श्री कृष्ण भए अधिकाई।
ससपाल अैसे वचन उचारे।
अति अभिमान हृदे महि धारे।
सभा लोक ने इहि सुण लीना।
कर अगुष्ट श्रवण महि दीना

केनकि त्याग गए सभा ताई।
हमि इहि विधि मुण साकहि नाहि।

भीम सहित वीरो को आयो।
कर किर्मानी सूती धायो।

सन्निपाल निकट आइ कर ठहिरायो।
मुष ते तब ही वच उचिरायो।

हे मति मूढ कहा उचिरायो।
कौन बात तुम मन ठहिरायो।

करुणामय पूर्ण भगवाना।
श्री गोपाल हरि पद निर्वाना।

तांकी निन्दा तूं चित धारहि।
मुष ते ग्रैसी बात उचारहि।

अब ही क्रिपति तोह मुष मारहि।
किमानि सो सीस उतारहि।

जब सन्निपाल इहि विधि सुरा पाई।
किर्मानी सूती ठहिराई।

चतुर वीर को आगे डारा।
उनि के मारै को चितु धारा।

किस प्रजन तिहि पाछे धाया।
चतुर वीर को तिनहि भगाया।

तब श्री कृष्ण क्रोधु अनि कीना।
चक्र सुदर्सनु कर महि लीना।

तांसो असुर को सीसु कटायो।
कुसम वर्षा तब अमरो लायो।

कीयो जै कार मुष वचन उचारा।
अधिक भला कीयो प्रान अधारा।

ग्रैसे दुष्ट को कीनो नासा।
सभ अमरो की पूरी आसा।

धितराष्ट्र अंश जो आया।
एक सौ इकु सुतु बलु अधिकाया।

भ्रितराष्ट्र को आज्ञा दीने।
भ्रितराष्टर गहि को मगु लीने।
नकल नृपो को विदआ कीआ।
साईदास सुपु मन महि लीआ॥१९४

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादें चौहत्तरमोध्यायः॥७४॥

श्री ब्रिजनाथ नें वचु उचिरायो।
धर्मपुत्र सो भाव सुनायो।
अधिक भयो पुर को तजि आए।
उग्रि सैन नृप ते विछुराए।
जो आज्ञा देवो हमि ताई।
उग्रसैण नृप पाहे जाई।
जिह समें युधिष्टर को राजु दीआ।
राजाधिराजु नामु तिह कीआ।
सभ नृप तिह तिलकु लगाया।
उग्रसैण अरु श्री कृष्ण रहाया।
श्री गोपाल भगतिन सुषदाई।
गुण निधान हरि जादमराई।
यज्ञ समे प्रभ ने इहि कीआ।
द्रव्य दुर्जोधन के कर दीआ।
इहि प्रजोग षर्चु वहु करही।
अधिक षर्चु कर्नि चितु धरही।
पद्म दुर्जोधनि के कर माही।
षचु करे घाटे वहु नाही।
पद्म प्रयोग अधिक वहि होई।
फुन फुनि वधे घटे नहि सोई।
अर्ज्जन को कह्यो पौंण झुलावो।
सहिदेव को कह्यो जलु अचिवावो।
नुकलि को कह्यो बासन घुवावो एही कामु कर्नि चितु लावो॥

धर्म पुत्र प्रभि सो वचु कीआ। अभ तोह कवन काज चितु दीआ ।।
श्री कृष्णचंद तांको ग्रितु दीना। हमि विपो पग धोवन चितु कीना ।।
मैं विपों के चर्न पयारो। इहि काजे पर मै चितु धारो ।।
भीमसेंन को मिली रसोई। याते भूपा रहे न कोई ।।
सभ विधि कर यज्ञ पूर्ण होया। धर्मपुत्र सभ ससा पोया ।।
एक सभा महिअसुर बनाई।
तांकी विधि कछु लखी न जाई।
तहं सभा महि फटिक पचाए।
ताकी गति कोऊ लषन न पाए।
सकल लोक को जलु द्रिष्ट आवै।
ताहि निर्प सभ लोक भुलावै।
नृप दुर्जोधन को ऊहा बुलायो।
दुर्जोधिन तिह सभ महि आयो।
जब आवति मग नैन निहारे।
तासि ठौर तिन अभ निहारे।
अंबर कर सों लीए उठाई।
तव द्रोपती निर्प मुसकाई।
जलु कहु कहा अंबर जु उठावै।
सांईदास द्रोपती उचिरावै ।।१९५

अंधि के सुत क्या द्रिष्ट आवै।
अैसे वच द्रोपती उचिरावै।
तव दुर्जोधनु आगे धाया।
ऊहा अंभु फुन द्रिष्ट न आया।
अंवर सभ कर ते तजि दीए।
अंभ न जान्यो तव इहि कीए।
रिदे माहि एही उनि धारा।
ईहा जलु नाही इही वीचारा।
आगे पगु जब ही उनि डारा।
अंभ माहि गिरयो ततकारा।

जल सो अवर सकल भिगाए।
दुर्जोधन चिनु अधिक घटाए।
तव द्रोपती वहुरो मुसकानी।
दुर्जोधन मन महि वुरा आनी।
सभ नृप मद मद मुसकावहि।
दुर्जोधन को भला न भावहि।
ध्रितराष्टर सुत अति हकारी।
तांको भुज मै वलु भारी।
नृप मुसकावहि त्यागहि नाही।
दुर्जोधन क्रोधु कीयो मन माही।
सभ वधू अपुने सग लीए।
सभा त्याग वाहिर पग दीए।
तव सभ लोको वात वीचारी।
दुर्जोधन क्रोवु कीयो हकारी।
कहा अपतिम्रो उही उठावै।
कौन वात मन महि ठहिरावै।
दुर्जोधन अपुने ग्रहि आयो।
साईदास हरि अैसे भायो॥१९६

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे पंञ्चसरमोध्याय: ॥ ९५॥

सकल भूपति को अंवर दीने। अ वर दे सभ विदया कीनें॥
भिन्न भिन्न नग्र को धाए। अपुने अपुने ग्रहि मै आए॥
धर्मपुत्र तव कह्यो मुनाई। प्रान अधानि सुण जदुराई॥
केत रस्नाकर वात उचारे। इहि विधि कैसे मन महि धारो॥
तुम भी जावो हे गिरधारी। तुम पहि डर्पति कहित पुकारी॥
जो तुन जावो प्रांन अधारा। तुम विनु पाछे कवन हमारा॥
श्री कृष्णचंद प्रभ अतरजामी। सकल जगत को हरि विस्रामी॥
धर्मपुत्र यथार्थ वीचारी। तांका मै करहो उपिचारी॥
मोह भक्त है किउ दुष पावै मोह भक्ति किस सो चितु लावहि

धर्मपुत्र सो कह्यो सुनाई।
सुणो युधिष्ठर हितु चितु लाई।
और नराधिप सभ बिदम्रा कीने।
सांईदान जिन हरि पदु चीने ॥१९७

तेरे जीइ कारण ईहा रहो।
केतक दिन मैं ईहा वहो।
असुर विशाल समिपाल को हेत।
समिपाल संग इन की वहु प्रीत।
जिह दिन श्री कृष्ण रुक्मन ले आया।
तब विशाल मन इहि ठहिराया।
मम को बलु इस स्मसर नाही।
किन विधि इस संग युद्ध कराही।
मो से बडे जोधे बलिवाना।
उनि के छेद कीए इनि प्रांना।
एक बात और मैं करहों।
रिदे महि वही प्रतज्ञा धरहों।
जो देव बडा है सभ माही।
तास भक्त मैं मन ठहिराही।
शंकर के अस्तल महि आया।
मन महि शिव को जापु जपाया।
एक वर्ष तहा भजनु कमाया।
एक मुष्ट तंदल तिहि पाया।
एक वर्ष जब भयो बतीता।
शिव प्रगट्यो निर्मल अतीता।
ताहि असुर को दर्सनु दीना।
इहि करुणा शिव तांपर कीना।
मुख से कह्यो कहा तुम देवो।
सुप्रसन्न तोह चितु कर लेवो।
तब ही शिव सो तिन वचु कीआ।
शंकर पहि जाचन चितु दीआ

एक नग्र मोहि देहु बनाई।
जिस महि अपुनी वस्तु समाई।
पांच सहस्र रथु ताहि समावें।
सप्त सहस्र कुंचर सुपु पावै।
तिसी ठौर मैं चित कों धारो।
मन माहे इहि बात वीचारों।
तत्क्षिण तिसी ठौर मैं धावै।
उसी ठौर जाइ कर ठहिरावै।
शिव विश्वकर्मे को फरमाया।
जो इहि कहे सो देहि बनाया।
विश्वकर्मे मन महि धर लीनी।
जो कछु शिव ने आज्ञा कीनी।
विश्वकर्मे पुरु दीयो बनाई।
विशाल असुर लीनो हिर्पाई।
गज अरु रथ सभ तिह महि डारे।
नग्र द्वारका को पग धारे।
निकट द्वारका जा ठहिरायो।
साईदास विरोधु चलायो ॥१६८

दुष्ट खल सभ सुर्ति भुलानी।
तब मन माहे इहि विधि आनी।
द्वारका को चहू ओरि बनि नीके।
तहा वस्त सुष होवहि जीके।
प्रिथम वाही बन कटि डारे।
पाछे प्रभ के मदर विडारे।
बहुरो गृहि तोरन को आया।
महा अधिक विरोधु चलाया।
गगन चर्यो पाथर सर्प डारे।
मार लोक कौ सीस प्रहारे।
लघु विष्टा ऊपर से करही।
महा मूढ इस ते ना टरई।

पुर के लोक अधिक दुपु पायो।
हा हा करति सकले हो आयो।
महा अधिक अंधेरो होई।
किसे पछाणे नाही कोई।
तब ही प्रदुम्न ने सुण पाया।
वीर सहित ले बाहिर आया।
प्रिथमे अधिकारी ठहिराई।
पाछे अनुर सों करी लराई।
तांकी सैना को सर मारे।
तब तिह सैना बचन उचारे।
धन्य धन्य सभ हूं उचिराया।
प्रदुम्न तबही सुख पाया।
दो दो सर सभ सैन को लाए।
तब ही विशाल आप चलि आए।
प्रदुम्न को आइ बाण चलावै।
जब प्रदुम्न मारे दडि जावै।
प्रदुम्न की दिष्टी नही आवै।
कहो बाण कहु किसे लगावै।
रुक्मन सुत को बानु लगायो।
प्रदुम्न बाणु पाइ मूर्छायो।
तब ही स्वार्थी ने क्या कीआ।
रथु गवन फिरि पुर मगु लीआ।
स्वार्थी आइ प्रभ ठहिरायो।
स्वार्थी अैसे कामु कमायो।
एक घरी बीती जब भाई।
प्रदुम्न को बहुरो सुधि आई।
जैसे सूया नैन निहारे।
तैसे रुक्मन सुत नैन उघारे।
स्वार्थी सों तब कह्यो सुनाई।
सुण हो स्वार्थी मेरे भाई

मैं सग्राम ठौर ठहिराया। मम को ईहा कौणु ल्याया॥
क्रोधु कीयो स्वार्थी सो भाषा।
हे मति मूढ कहा चितु राषा।
तूं मोको कहु कहा ले आयो।
कौन ठौर आने ठहिरायो।
जो श्री कृष्ण इहि विधि सुरण पावै।
हमि को दुप अधिक उपिजावै।
प्रदुम्न ने भागन चितु लाया।
ताते मूआ भला अधिकाया।
तब स्वार्थी ताको प्रतु दीना।
है प्रभ क्रोधु काह मन लीना।
मै श्री कृष्ण तें इहि सुण पाई।
सो तुम पाहे कहित सुनाई।
जो स्वार्थी रण मै मूर्छाई।
स्वामी रक्षा करे अधिकाई।
जो स्वामी रण महि मूर्छावै।
तब स्वार्थी तिह रक्ष करावै।
मैं कछु बुरा नाहि है कीआ।
तुम क्युं क्रोधु हृदे महि लीआ।
प्रदुम्न फिरि युद्ध को उठि धाया।
साईदास तिह बलु अधिकाया॥१६६

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे छिहत्तरमोध्यायः॥७६॥

श्री गोपाल विधि जानिण हारा।
धर्म पुत्र सो वचन वीचारा।
आजु रैन स्वप्नो इकु पायो।
ताते मोह मनु अति विसमायो।
कल्याण नाहि द्वारका के माही।
इहि विधि स्वप्नो ऐसो ताही

आज्ञा देहु जो मैं तहा जावो।
जाकर पुर की सोझी पावो।
धर्मपुत्र से आज्ञा पाई।
अपुने पुर को चल्यो धाई।
आज्ञा करी स्वार्थी ताई।
दो घट महि मोह जा पहुचाई।
दो घट महि द्वारका निकट आए।
प्रदुम्न युद्ध कर्नि निर्पाए।
श्री कृष्ण जाइ निकट ठहिरायो।
विशाल असुर तब ही निर्पायो।
कह्यो कृष्ण सौ तब ही पुकारा।
तू है शत्र अधिक हमारा।
कह गया था हनि वतिलावो। अवि भागे कह ठौर न पावो॥
कृष्ण रोक्यो बाणु लगावे। तास पल को मार चुकावे॥
विशाल असुर सरु कर महि कीआ।
श्री कृष्ण के दाहणे अग को दीआ।
बहुर पछम ओर भी लायो।
प्रभ के कर से धनुपु गिरायो।
शारग धनुपु जब धरि पर गिर्या।
तब विसवास सभ अमरो कर्या।
असुरु तब ही अकास को धायो।
सकल अमर मन महि विसमायो।
सारंग धनुष पर्यो धर्नि परांही।
अब हमरी ठौर काहूं नाही।
दुष्ट असुर हम को दुख देवै।
साईदास क्या मन धर लेवै।२००

विशाल दुष्ट पल ने वपु धारा।
ब्राह्मण भेषु कीयो ततकारा।
तब श्री कृष्णचंदि पहि आया।
श्री गोपाल सो आष सुनाया

देवकी मम तोहि पाहि पठायो।
तोहि पितु किन्ही बांधि चलायो।
जब कौलापति इहि सुण पायो। एक घटि लगि विस्वासु करायो।।
मया दैजी जैसे करई। ग्रैसी चिता मन महि धरई।।
ग्रैसा वलु किसि सों मेरे भाई। वलदेव होते बांध चलाई।।
दुष्ट ग्रसुर वहु वपु तजि दीग्रा। वसुदेव रूप माया दी कर लीग्रा।।
दामनी तांके उर महि डारी। ग्राण कृष्ण पहि वेग दिषारी।।
कृष्ण देषु पित तोहि ले जावे। पाछे से वहु मन पछुतावे।।
जो वलु लागे लेहु छडाई। फिरित कहि जो सुधि ना पाई।।
ग्रतर महि हरि ध्यानु लगायो। सकल विधांत तबही हरि पायो।।
माया रूप ग्रसुर ने कीग्रा।
चाहित है हमि को दगा कीग्रा।
जिह समे ग्रसुरु ग्रकास सिधायो।
सकल ग्रमर के मन भौ ग्रायो।
श्री गोपाल चक्रु कर लीग्रा।
ग्रसुरु को सीसु तव ही कटि दीग्रा।
उौर ग्रधिक पल हरि जी मारे।
ताहि सीस दधि महि हरि डारे।
रूढहि जात सिर षल ग्रधिकाई।
सप्त प्रवाह ग्रधिक मेरे भाई।
दत वक्र तब ही चलि ग्रायो।
प्रभ को ग्राइ कर वचनु सुनायो।
मोह वीर तैनै ही मार्यो।
युद्ध कीयो कर ताह प्रहार्यो।
वधू मीत वाही ही नीका।
जौ ग्रपजस को लेइ न टीका।
ग्रपुने वीर वैरु मैं लेवो।
तोहि मांनि को सरु कर षेवो।
दतवक्रत सरु कर महि कीग्रा।
श्री कृष्णचंदि उोरहि डार दीग्रा

वहुरो श्री कृष्ण ने वाण चलायो।
दारुण भुज तिह काटि चुकायो।
वहुरो पछम भुज कटि डारी।
वहुरो सीनु तिह लीयो उतारी।
दंतवक्रत तनु धर्नि गिरायो।
जैसा कीयो तैसा उनि पायो।
साधो हरि चर्नी चितु धारो। साईदास हरि नाहि विसारो॥२०१

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे सघत्तरमोध्यायः॥४८॥

श्री कृष्णचद सभ असुर हताए।
अति अनद सो पुर महि आए।
अमरो अधिक कीयो जैकारा।
जवही विशाल असुर को मारा।
कैरो पाडो पती पठाई।
ताह विधांत सुणो चितु लाई।
हे प्रभ कुरुक्षेत्र के माही।
अरभु कीयो है त्रिभवन सांई।
महाभार्थ को अरंभु करायो।
हे प्रभ आवो विलमु न लायो।
श्री कृष्णचंद पतीआ कर कीनी।
ले पतीआ वलदेव को दीनी।
पांडो कैरो की पतीआ आई।
पढहो वलदेव हितु चितु लाई।
महाभार्थ कर्नै चितु लावहि।
हम को इसे प्रजोग वुलावहि।
जो तुम कहो करहि मेरे भाई।
जो तुम मन महि होइ वताई।
वलदेव जव इहि विधि सुण पाई।
मन अतर इहि विधि ठहराई।

श्री कृष्ण पांडवाइण होइ सहाई।
हमि तास्युं कैसे करहि लराई।
जो मैं करो उौरि कहावो।
तौ प्रभ सो कैसे युद्ध करावो।
ताते एही है भला भाई।
एक उोर जावो मै धाई।
तिह युद्ध माहे जावो नाही।
एहो आई है मोह मन माही।
कर विचार हरि को प्रतु दीना।
हे प्रभ इहि विधि मैं मन लीना।
मै मज्जन तीर्थ ना कीआ।
अति मलीन हो आतमा हीआ।
आज्ञा होइ तीर्थ मै जावो।
तीर्थरटन कीए फिर आवो।
श्री गोपाल विधि जानण हारा।
सकल विस्व ताहूं विस्तारा।
कह्यो भला जावो मेरे भाई। तीर्थरटन करो तुम जाई॥
श्री गोपाल तिहि आज्ञा दीनी। सांईदास वलदेव मन लीनी ॥२०२

वलदेव तीर्थरटन को धाया। प्रिथमे गंगा सागर आया॥
प्रिथम तहूं इस्नान कराया। पाछे से किदार को आयो॥
वहुरो जगननाथ को धायो। जगन्नाथ पर्से सुषु पायो॥
नेमपारसनकाद रहें। अति अनद सो तहा ही अहें॥
वहुरो वलदेव जी तहा आए। ताहि वात सुण हो चितु लाए॥
तहा श्री भागवत कथा होति नताही। सनकादक सुणे हितु चितु लाई
जब वलदेव तहांही आयो। सकल ऋषीश्वर ने निर्षायो॥
ठांढे भए सकले ततकारा। सोति प्रान कछु हृदे न धारा॥
अर्घासन हलधर को न दीना। वलभद्रि क्रोधु अधिक मन लीना॥
क्रोधु कीयो कर वचु उचिरायो। सोत प्रान सों तवी सुनायो॥
हे स्वामी तू वेद पढाही वेद कहया तू कर्ता नाही

मैं आयो सभ ऋपै निहारा। अर्घासन दीनो नन्कारा ॥
तै कछु मन माहे ना आना। वेद कह्या तै क्यु नहीं माना ॥
वेद वाल इहि कहति है भाई। आप ते जो आव अधिकाई ॥
तिह ताई अर्घासनु दीजै। छिन पल मात्र विलमु न कीजै ॥
तू तो शुद्ध ब्राह्मण भी नाही। तोह मात क्षत्राणी आही ॥
पिता ब्राह्मण तेरो है भाई। ऐसी वलभद्र वात सुनाई ॥
वहुरो क्रोधु अधिक मन धारा। कुशा सहित तिह सिरु कटि डारा ॥
तव ही ऋपीश्वर कह्यो सुनाई। हे हलधर तै क्या चित आई ॥
इसे न हत्यो हमि हन लीया। इहि कारजु जो तैसे कीया ॥
कलयुगु निकट आयो है भाई। ता महि और कीयो ना जाई ॥
हमि को एही कथा सुनावै। कथा सुणाइ हमि भर्मु मिरावै ॥
इसे न हत्यो हमै हतायो। साईदास ऐसे सकल सुनायो ॥७५

हलधर ने ताको प्रतु दीना। जव इहि प्रश्नु सकल ऋपि कीना ॥
इसका कालु ऐसे सा भाई। जो विधि लिखे सो कौनु मिटाई ॥
सन्कादक हलधर सो वचु कीना। कैसे कालु प्रभ इमि इहि लीना ॥
इसि का हम को देहि वीचारा। हमिरो भ्रमु तुम लेहु निवारा ॥
राम कह्यो सुणो हो मेरे भाई। सकल विधांत मैं देउ वताई ॥
एक समै इकि ऋपि क्या कीआ। गीता कथा वर्नि चितु दीआ ॥
एक पडित तिस को निपायो। तास कथा सुण कर मुक्तायो ॥
उनि पडित श्रापु दीयो इस ताई। जो वचु कहे सोई मिटै नाही ॥
जव तू भागवत कथा करावै। अपुनो मनु ताहूं सो आवै ॥
अर्घासन वैठो रहे भाई। तव तेरो सिरु कट्यो जाई ॥
इसका कालु निकट सा आया। इमि प्रयोग मै इसे हतायो ॥
तव ही ऋपीश्वरो वचन उचारे। हे वलभद्र जी प्रान अधारे ॥
दया करो इस पर अधिकाई। मुक्ता जाइ प्रभ मुख दिखाई ॥
तुमरे कर से प्रान तजाए। तोह करुणा पूर्न गत पाए ॥
वलदेव ने ताको प्रतु दीना। सकल विचारु ताहि ने कीना ॥
जो इस सुत होइस सो लेहु वुलाई वेग विलम करहो ना भाई

जन्म जन्म तुम कथा सुनावै। तुमरे मन को भर्मु हिरावै ॥
वहुरो औरु बिनती तिह ठांनी। हे बलभद्र तुम अति बलवानी ॥
इहि स्थावर असुर जो रहे। अलल बलल तिह नामु उचिरहे ॥
हमको दु:ख देवै अधिकाई। तिह सों हमरा कछु न वसाई ॥
जिह समे मज्जन कर्नि हमि जावहि। ताहि समे हमि आइ सतावहि
अस्ति आण हमि ऊपर डारहि। ककर लेकर हमको मारहि ॥
हमि पर कृपा करी तुम आए। पूर्व जन्म हमि भाग जगाए ॥
बलभद्र जी तुम तिनहि हतावो। साईंदास को दु:ख मिटावो ॥२०४

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे अठत्तरमोध्याय. ॥७८॥

हलधर सन्कादक के लीए। नेम पार माहे पग दीए ॥
अलल बलल के मार्नि कार्न। ताह वसे प्रभ अपर अपार्न ॥
केतक दिन तह ही ठहिराए। भक्त हेत इहि कर्म कमाए ॥
पूर्नमाशी को दिनु आयो। ऋषि सभ मज्जन को उठि धायो ॥
अलल बलल पल तब ही धाए। औध निकट भई सुर्त्ति भुलाए ॥
तहा आइ दीर्घ वपु धारा। अस्त आरण ऋषि सभ पर डारा ॥
लघु विष्टा तब ही कर दीआ। सकल ऋषो दु:खु मन महि लीआ ॥
हलधर पहि सभ आइ पुकारे। हे प्रभ दुप पाए अति भारे ॥
खलो आइ हम को दुख दीना।
लघु विष्टा हमि पर आइ कीना।
ततक्षिण बलदेव जी उठि धाए।
अलल बलल तिन ने निर्षाए।
गगन चरहे इहि कामु कमावहि।
विकट बने जासौ हटि जावहि।
हमि वसुधा पर है ठहिराए।
हल मूसलु कर कीनो ताही।
वहुरो हलु तांके सिर मारा।
मार कर हलु तिह सीसु विडारा।

असुरो को हलिधर हति लीना। सकल ऋषीश्वर को सुष दीना ॥
जहा दुष्ट जन आइ संतावै। सांईदास प्रभु आप हिरावै ॥२०५॥

हलिधर तिन सो आज्ञा पाई। गोदावरी को चल्यो धाई ॥
तहा आइ कर मज्जन कीना। तहा अधिक सुष मन को दीना ॥
वहुरो हरद्वार को धायो। तहा आइ इस्नानु करायो ॥
दहि सहस्र सुरिहू सकल्प कराए। तहा मज्जनु लोक कति अधिकाए
तव उनि लोको वचन उचारे। आप मद्धि वहि कहित पुकारे ॥
पांडो कैरों कुरक्षेत्र माहे। अधिक युद्ध करहि आप मझाहे ॥
अठदसि क्षूहणी सैना मारी। युद्धि कर्नि सूरे वलिकारी ॥
याराक्षुहणी कैरव सारे। सप्त क्षूहिणी पांडव वारे ॥
वलदेव सुरा कर वचन उचारे। मन महि मचरु वहु विधि धारे ॥
वहुरो कह्यो एक वार तो जावो। तहा जाइ कर फुनि निर्पावो ॥
एक वात तिन को कहो जाई। जो समिझै होइ अति भलि आई ॥
जो समझै नाही वहु जानहि। अैसे वलदेव वचन वषानहि ॥
राम तहू मग फुनहो आयो। जहा इनहि संग्रामु मचायो ॥
श्री कृष्णचंदि हरधर निर्पायो।
तव मन महि एही उपजायो।
जो कहो वलदेव युद्ध न करहो।
युद्ध कर्नि को ना चितु धरहो।
तौ भी बुरा होइ मेरे भाई।
ताहि वचन मेट्यो ना जाई।
ऐसो होइ तिह कह्यो पठावो।
द्वारका के मग तास चलावो।
हलधर ने आइ कर निर्षायो।
दुर्जोधनु भीम लर्ति द्रिष्टायो।
हलधर दोनों पाहे आया।
दोनों को आइ शब्द सुनाया।
तुम दोनो कोनु समसर होइ भाई।
भला करो न करो लराई।

तुम महि कोऊ मुख न फिरावै।
भागन को कोऊ चितु न लावै।
मैं तुमरे भले कानि भाई।
कहित हो ना तुम करो लराई।
तुमरी औध निकट आई जानो।
मोह कहा तुम नाही मानो।
जो मन आवै करहो भाई।
वलदेव ग्रैसी ताहि सुनाई।
हलधर क्रोधु कीयो अधिकाई।
साईंदास चल्यो पुर को धाई ॥२०६

राम द्वार्का को पग धारे।
तत्क्षिण आयो तास मझारे।
उग्रसैन वलदेव जी पहि आयो।
प्रदुम्न सहित तवहि उठि धायो।
राम को षड्यो पुर के माही।
भयो अनंदु दु:ख कछु नाही।
भोजनु विपों ताई दीना।
भली विधांत पूर्ण यज्ञ कीना।
प्रिथम सुर्हे सकल्प जु कीना।
गगा तटि आय विप को दीनी।
परीक्षत प्रश्न कीयो शुक पाहे।
हे शुक जी तुम सुण मन माहे।
मतु तुमरे मन महि इहि आवै।
परीक्षत सुण कथा मन न अघावै।
एहए था अंवृत है भाई।
अंमृत से कहु कौणु अघाई।
द्रिग वही भाई हरि को निर्षावै।
हरि लीलहा देषन चितु लावहि।
सीसु भलो हरि पर उर्भावै।
सदा डडौत कर्नि चितु लावै।

जहां जहां कथा कीर्तिनु होई।
उठि धावन करे विलम न कोई।
आपस को तहा जाइ पहुचावहि।
तहा जात छिन ना अनसावहि।
सदा सदा तीर्थ तटि जाही।
चर्नो सो इहि कर्मु कमाही।
श्रवण भले मेरे सोई भाई।
हरि जसु सुनति सदा चितु लाई।
पर निंद्या सो चितु न धरहि।
हरि की कथा सुण प्रेम वीचारहि।
अैसे नृप शुकदेव सुनायो।
साईदास हरि को जसु गायो॥२०७

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे उणासीमोध्यायः॥ ७९॥

जास समे श्री कुंज विहारी।
वलदेव सहित चले तत्कारी।
विद्या अर्थि वनार्सी धाए।
विप सुदामे तव निपाए।
तीनो इकि ठौर होइ मिधाए।
जाइ संदीपन पहि ठहिराए।
विद्या भाप करी उठि धाए।
तव हरि विप सों वचन कराए।
मै ग्रहस्तु करों गा नाही।
इहि वचु कहि आयो ग्रहि माही।
तव ही अपुने ग्रहि महि आया।
ततिक्षिण अपुना काजु कराया।
विपि कन्या सुसीला नामा। अति भुज सुंदर वाही भामा।
तांसो आइ संजुक्त वनाई। प्रिथम वचनु उनि दीयो भुलाई।
त्रिण लेकर तिन कुटी वनाई अैसी विप ने यात कराई।

सुसीला वहि लोको के जाई। सिला कीए कछु लेकर ग्राई।।
औरु कछु ताको ग्रंग नाही। कवरी ओढे फिर्ति सदाही।।
विपु नग्रि ग्रहि महि ठहिरायो। इहि विधी ततिह वेद बतायो।।
जो कछु सुसीला सिला कर ग्राना। सकल षायो इकु रह्यो न दाना।।
जो कछु रहित ताहि ग्रहि माही। पक पकाइ देत विपलाई।।
ग्राप त्रिप्ति कर पावे नाही। ग्रैसे कर वहि सभा टलांही।।
इक दिन विस्मकि महि चितु धारा। तवि सुदामें इसे निहारा।।
कहु कहा विस्मकि चितु कीना। कौनु सचरु तैं मन महि लीना।।
तवी सुसीला वचन उचारे। हे प्रभ पूर्न प्रान ग्रधारे।।
हमि को एता बलु न वमाए। विनु ग्राज्ञा तुम कहो सुनाए।।
अव जो तुम ने किर्पा धारी। सकल वात मैं कहो विचारी।।
हे प्रभ हमरे ग्रहि कछु नाही। इहि कार्ण हम चितु विस्माही।।
तुम जु कहति हरि सपा हमारा। हलधर वीर है ग्रधिक प्यारा।।
उनि हमि विद्या एक सग भाषी। एक ठौर बहि भोजनु चाषी।।
त्रैलोक नाथ वहु कृष्ण कहावें। तुमरा दार्दु सकल मिटावे।।
सकल सृष्टि का वही प्रित पालकु। दयावान प्रभ सदा दयालक।।
जो तुम को माया नही देवहि। चतुर्भुजा तुमको कर लेवहि।।
वैकुठि को तुम दर्सु दिपावैं। तुमरो ग्रावागौनु मिटावैं।।
विद्या गुर सों वधू तेरा। वही कृष्ण है सुण कहा मेरा।।
लक्ष्मी ताह चर्न चितु लावें। साईदास ग्रैसे उचिरावैं।।२(

जव विप ने इहि विधि सुण पाई। तव सुसीला सों कह्यो सुनाई।।
तोहि कहा मैं रिदे वीचार्यो। श्री कृष्ण पाहि जावन चितु धार्यो
भेट नाह जो लेकर जावो। श्री कृष्ण वागे षडि कर ठहिरावो।।
तव सुसीला तिह कों प्रतु दीना। हे प्रभ तुमने इहि वचु कीना।।
हमिरे ग्रहि माहें कछु नाही। क्या देवों मैं तुमरे ताही।।
कहो कहू ग्रहि मागन जावो। कर्जु वामु किसे सेती ल्यावों।।
ग्राग्या पाइ नग्र उठिधाई। एक पड़ोसी के ग्रहि ग्राई।।
चतुर मुष्ट तदल के ल्याई। हिरषमान होए ग्रधिकाई।।
कह्यो लेहु दिज वेग सिधारो हरि दसन को तुम चितु धारो।

तबी सुदामे ताहि सुनायो। हे रामा भल्ला शब्द बनायो।।
किसे माहि इसको बधि देवी। मोह कहा घाट अंतर लेवो।।
नारी हेति अवर पायो। फाटा अधिक निन जत्नु करायो।।
जत्नु कीयो कर गांठ बन्हाया। ले विप बेग चल्यो उठि धायो।।
द्वारका पुर कों दिज उठि धायो। मग आवत मन सों झगिरायो।।
तीन कोटि द्वार्का के भाई। तांके चहूं ओरि दधि पाई।।
ताहि द्वार कपाट सजाने। ऐसी बिधि द्विज हृदे बपाने।।
पोडस सहस्र रामा हरि केरी। इकु सों ऐन अष्ट अवि केरी।।
क्या जानो कांके गृहि होई। मम को सोधि पनि ना कोई।।
ऐसे दिज मन सौझ गिरावति। मग माहे चल्या बहु जावनि।।
ततक्षिण पुर के निकट ही आयो। आइ द्वार ग्रहि के निपवि।।
तब द्वार ग्रहि आगे धायो। सांईदास पुर माहे आयो।।२

जब विप पुर महि कीयो प्रवेसा। अधिक भयो मन माहि अदेसा।।
काके ग्रहि माहे पग धारो। तहा जाइ श्री कृष्ण निहारो।।
मन महि टेक करे हरि केरी। जो काटे अघ की पग बेरी।।
दिज पग रुक्मन के ग्रहि दीने। एक टेक हरि की मन कीने।।
प्रभ अजंक पर सैनु करायो। शैन कीये आनद बहु पायो।।
रुक्मन कर महि चौरु झुलावै। श्री कृष्ण अधिक सुपु पावे।।
अंतरजामी स्याम हमारे। जाग परे प्रभ जी ततकारे।।
निर्प सुदामे को प्रभ वाए। द्विज ततक्षिण ले अंग लगाए।।
भुज से गहि ग्रहि अंतर आना। भक्त भाउ हरि हृदे पछाना।।
प्रथक रुक्मन के पर बैठ लायो। अधिक मणी तिह पचित करायो।।
रुक्मन ततक्षिण जलु ले आई। पग धोए तिह क्वर कन्हाई।।
चर्णामतु ले मस्तक धार्यो। रुक्मनी भी पुन सीस सवार्यो।।
बहुरो भोजनु बहु विधि ल्याई। ताई पवायो श्री जदुराई।।
बहुरो प्रभ ने वचन उचारे। बावनु घसि आनो ततकारे।।
बावन चदन घसि कर ल्याई। श्री गोपाल कर लीयो ताई।
अपुने कर विप के तन लायो। भक्त हेत प्रभ अधिक बडायो।।
सुदामे भगत सो कहयो सुनाई। सुण हो सुदामा हमिरे भाई।।

हे विपि क्या भयो तुम ताई। सूक्षम भयो हमि देहि बताई ।।
ताम समे अग महि ना आवति । अवि क्या भयो क्यु नाहि बतावति
वाहि समा तुम को चित आवै। हमि तुम वन जावति चितु लावै ।।
विद्या गुर की आज्ञा पाई। लकरी लेन चले बनि धाई।।
सीत काल सा मेरे भाई। मेघ भयो वन महि अधिकाई ।।
निस समे हमि रहे वन के माही। सीत भयो हमि को अधिकाई ।।
जव ते रवि नें कीयो प्रकासा। तव ही मन महि भयो हुलासा ।।
विद्या गुरु पावक कर लीए। तत्क्षिण वन माहे पग दीए ।।
हमरो नामु ले मुखो पुकारा। हमि को आइ मिल्यो तत्कारा ।।
अग्नि जराइ हमि सीतु गवायो। किर्पा कर ग्रहि महि ले आयो ।।
हमि लकरी सिर पर धरि आनी। सांईदास हरि अैसे बखानी ।।२१

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे असीमोध्याय: ।।८०।।

सनि भामा जामवंती चलि आई। अउरु नायका सभ अधिकाई ।।
ग्रहि ऊपर आइ कर ठहिराई। आप मध्य वहि वात चलाई ।।
श्री कृष्णचद को सषा निहारो। कहा सुंदर अति रूप उजारो ।।
कनक प्रयंक ऊपर ठहिराए। जिह प्रयक वहु मणी षचाए ।।
एक ताहू माहे उचिरायो। अैसे वच तिह आप सुनायो ।।
इन सेती भले सषा इनि चाहो। मै तुम कहो मुननि चितु लाहो ।।
प्रिथमे तौ इनि इनि बछे चारे। पाछे सुरही अनि कौ ले धाए ।।
भला भया हमि सषा निहारे। उलहिने ते छूटे ततकारे ।।
हमिरे पित को नामु धरावै। छिन पल हमको उलहने लावै ।।
अब इसि को सषा हमहि निर्पायो। अधिक रूप हमि कों द्रिष्टायो ।।
प्रभ दिज सों तव वचन उचारे। सुण हो सुदामा मीत हमारे ।।
तास समे तुम हमहि सुनायो। करो न काजु इही उचिरायो ।।
भला कीयो दिज कार्जु कीना। अपने चितु ठौर कर लीना ।
वडे भाग हमिरे आइ जागे। हमिरे तुमरे पग लागे ।।
विद्या अर्थि तुम सो हितु हूआ। अउरु सजोगु वन्यो नां दूआ ।।
तव दिज ने हरि को प्रतु दीना हे प्रभ कौन वात मन लीना

मोसे भिछकि कई फिरावहि। कहा बात तूं मोहि सुणावहि।।
जो तुन कहो सो तुम बनि आवै। तुम को हरि जो सकल सुहावै।।
हमि ऊपर किपा प्रभु धारी। दया करी तुम कुंज विहारी।।
असे दिज हरि भाष सुनायो। साईदास तापर वल जायो।।२१

रुक्मि ने अपुने आप दुरायो। सत्तरि पिन ऊपर प्रगटायो।।
मानो रैण भई मेरे भाई। तब श्री कृष्ण कह्यो हितु लाई।।
नीर करो पावन के ताईं। वेग बिलम कछु लावो नाही।।
तब विप को आप सहित नहायो। भोजनु बहु विधि ताहि जवायो।।
अपुने सहित ही शैन करायो। शैन कीनि हरि वचु उचिरायो।।
हे विपि अब सूक्ष्म वपु लीना। कवन संचरु तै मन नहि कीना।।
अपुनो करु तिह अंग फिरायो। असे ही वचु ताहि सुनायो।।
तमोअरु दुरा उदेभानु प्रकासा। कमल पिंड पूर्ने भई आसा।।
श्री कृष्ण कह्यो इहि भक्तु हमारा। बिनु हरि भक्त न इसे प्यारा।।
इसि को रामा दीयो पठाई। माया कानि मेरे भाई।।
अपुनी माया इस को देवो। दुख दर्दु इसि का हिरि लेवो।।
एता द्रव्य देउँ इसि ताई। जो अब लगि किस को दीयो नाही
प्रभु विसुकर्मा लीयो बुलाई। ताहि कह्यो श्री जादनराई।।
जैसे भवन द्वारका के कीए। स्वस्ति चित्त नीके कर लीए।।
और वन चहुं ओर लगाए। भली भाति के वृक्ष बनाए।।
सुदामा जी के पुर के द्वारे। ग्रहि तुम साज लेहु तनकारे।।
सकल प्रितमा वैकुंठ बनावो। द्वार्का से बहु भले करावो।।
कचन के भवन करे विप केरे। मै तुझे कह्यो सुणो वच मेरे।।
महा निकट इह भक्तु हमारा। बिन भक्ती इस और न प्यारा।।
बिस्वकर्मे आग्या हरि पाई। विप के पुर को चल्यो धाई।।
कनक भवन तहा जाइ सवारे। कीए जाइ ग्रहि तिन तत्कारे।।
ब्रिक्ष अधिक तह आण लगाए। मानो वैकुंठ लीयो बनाए।।
ताल अधिक जल भरे लील्हाही। जास निर्षे सभ दु:ख मिट जाही।।
बहुत भली विधि रचन रचाई। सांईदास देषत दुप जाई।।२२

श्री गोपाल विधि जानण हारा सुदामे भक्त सो बचनु उचारा।।

कहा भेट आनी हमि ताई। हमि को देहु तू क्युं सकुचाई।
सुदामा मन महि बहु सुकचायो। तब प्रभ ने इहि कामु कमायो।
श्री कृष्णचंद तंदल कढि लीनें। गाठ षोल्ह कर माहे कीने।
श्री कृष्णचंद तब कह्यो पुकारे। हे विप तुम हो भक्त हमारे।
केतकि दिन भए हमरे ताई। तंदल को हमरो मनु चाही।।
तुमरे हमरे मन की विधि पाई। तंदल आने तैनें भाई।
मतु तू इहि मन माहे आने। थोडे कानि मतु सकुचाहे।
जो कर प्रीत इकु कुस्म ल्यावै। हमरे मन महि बहु भलो भावै।
जो कोऊ महा अधिक द्रव्य आने। मन महि प्रेम भाउ नही जाने।।
हमि को वहि तो भावे नाही। अैसी विधि है हमि मन माही।
मतु थोरे कर जाने भाई। हमि को एही है अधिकाई।
अपुने कर हमरे मुप पावो। मन अंतर कछु ना सुकचावो।
मुष्ट तंदल की दिज भरि लीनी।
तत्क्षिण हरि के मुष महि दीनी।

बहुरो द्रितीआ मुष्ट भी डारी
तत्तक्षिण अचि लीनी गिरधारी

चाहित तीजी मुष्ट को डारै। रुक्मण करु पकर्यो तत्कारे।
मुप अपुने ते बचु उचिरायो। प्रभ को इहि बचु आष सुणायो।
दो लोक को द्रव्य दिज को दीना। अधिक करुणा तैं इनि पर कीना।
अबि वैकुंठ रह्यो जदुराई। उौरु रही मैं तो सरुनाई।
अैसे बचि रुक्मण उचिरायो। श्री गोपाल मन महि ठहिरायो।
विप सुदामे विनती ठांनी। हे प्रभ पूर्न सारंग पानी।
आज्ञा होइ तब ग्रहि को जावो। जो आज्ञा होइ मन ठहिरावो।
श्री कृष्ण कह्यो जावो मेरे भाई। मैं आज्ञा दीनी सुपदाई।
विपु आज्ञा ले ग्रहि को धाया। मग आवत मन महि विस्माया।
हमि प्रभ सौं कछु नां जाचायो। ना हरि किर्पा हमिह करायो।
सुसीला सों मैं कहा सुनावो। तांको कित विधि कर समिझावे
मोकों जत्न कीयो पैठायो। सुसीला सों बहु जत्न करायो।
बहुरो ज्ञान कीयो परकासा भूली दिज को बिषु की प्यासा।
भला कीया हरि कछु ना दीआ इहि करुणा प्रभ हमि पर कीआ

जांके ग्रहि महि माया होई। ताको मुनि रहित नहीं कोई॥
माया सकली मुनि भुलावै। हरि भक्ती से दूर दुरावै॥
ऐसी विधि विपि हृदे वीचारी। साईदास सर्नी वनिवारी॥८१

इति श्री भावगते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे इकासीमोध्याय: ॥ ८१ ॥

विपु चल्यो पुर के निकट आयो। लीला अवर नहा निपर्यो॥
कचन के तहा भवन निहारे। ग्रहि कचन निर्यो तत्कारे॥
कलस हेम के तहू पराही। विरि केरे ग्रहि अधिक सुहाही॥
चहू ओरि ब्रिक्ष अधिक सुहावहि। ताल भरे अंभ सो लीह्नावहि॥
ताल ओरि वहु मारगी पचाई। सोभावान वहु देन दिपाई॥
मानो वैकुंठ प्रतक्ष है भाई। स्वर्गि माहे वहु देल दिपाई॥
तिस वन महि माली अधिकाई। इकु सौ चेरी तां महि भाई॥
मघवा पुर सेती वह आई। वन माहे वहि कुस्म चुणाई॥
सुदामा निर्प करे विस्मायो। ध्यान विपे चल्यो कहा आयो॥
ऊहा ते पग पाछे दीने। अति सचरु मन अंतर लीने॥
लोक तास के पुर के आए। तिन हूं विप ऐसे निर्पाए॥
विप सेती तिन्हा वचन उचारे। हे विप कहा जु बनि चित्त धारे॥
सुदामे भक्त तिन सौ प्रतु दीना। एही वचनु उनि मुप मे कीना॥
मैं प्रभ दर्सनु कर्ने धायो। द्वारका महि जाइ दर्सु करायो॥
अपुनो पुर मगु दीयो विसारी। ध्यानु कीयो सुध गई हमारी॥
कौन ठौर महि आइ ठहिरायो। इहि कार्ण मैं मन विस्मायो॥
अवि अपुनें पुर के मग जावो। अपुने ग्रहि मग जावन चितु लावो॥
तव उनि लोको विप सुनायो। हे विप कत तू भर्म भुलायो॥
चलु हमि तुम को ग्रहि ले जावहि। तुमरे ग्रहि तुम को पहुचावहि॥
विप को वाही लोक ल्याए। विप ताहू के सहित सिधाए॥
आए द्वार ग्रहि पर ठहिरायो। सुसीला सों तव जाइ सुणायो॥
सुसीला वेग सुनति उठि धाई। विप को जाइ डंडौत कराई॥
कह्यो कृपा कर अंतर आवो। मन का सकला भर्मु हिरावौ॥
ऐसे रामा विप सुनायो साईदास विपि सुण सुखु पायो।२

विप को ले आई ग्रहि माही।
सुष उपिज्यो दुख मिट्यो ताही।
आए अर्घासन परि बैठलायो।
तहा अधिक मणी रतनि षचायो।
जल मो विप के चर्न पषारे। चर्नामतु ले मस्तक धारे।।
एक प्रजक तास ग्रहि माही। तासो मणी पची अधिकाई।।
सम्याने दर पर षलिवाए। मोती मणी ताहि उरिझाए।।
पव सों बहु मणी षचाई। ग्रैसी लील्हा देति दिषाई।।
सुसीला ने बहु पाक पकाए। विप के आगे आण टिकाए।।
सुदामे भक्त मन महि बीचारा। इहि वैरी मिष्टानु हमारा।।
जो इसि को पावो मेरे भाई। रसना स्वाद अचे अधिकाई।।
हरि की भक्त से दूर पराही। इसि पाधे कछु नाह भलाई।।
लोण अ भु ले तिस महि डारा। पाछे से पायो ततकारा।।
सुसील्ला ने इहि कर्मु कमायो। विपु लेफनिहाली माहि सवायो।।
विप अबर सभ दूर कराए। नग्न होइ हरि को जसु गाए।।
एही मन माहे ठहिरायो। सुषु उपज्यो हरि भक्त भुलायो।।
मतु हरि की हमि भक्त भुलावै। ग्रैसे विपु मन महि ठहिरावै।।
सुसीला प्रात समै उठि आवै। दिज को आइ डडौत करावै।।
दिज के अंग को तेलु लगावै। वहुरो नाना पाक ल्यावै।।
सुदामा भक्ति इकत्र करावै। पाछे से लै कर बहु पावै।।
पाणी लूण करावै भाई। इहि विधि दिज भोजनु ले पाई।।
कहरि रस्ना मतु स्वाद अचाए। गोविद केरी भक्त भुलावै।।
एक दिन सुसीला क्या कीआ। अंबर विप अंग नीके दीआ।।
विप ग्रहि तजि के वाहिर आया। वसन अंग सभ दानु कराया।।
जो हरि केरा भक्त कमावै। सांईदास सभ भर्मु गवावै।।२१

एक दिन रवि को केत ग्रसायो।
श्री कृष्णचदि सभ मतु ठहिरायो।
श्री कृष्ण राम दोऊ उठि धाए।
वसुदेव उग्रसैन सहित चलाए

देवकी रोहिणी को संग लीग्रा। कुरक्षेत्र को निन पगु दीग्रा ॥
नन्दि महिर ग्रपिमान जी ग्राए। सकल कुटब को महित ल्याए ॥
गोप मकल जोपना सन नीए। सकलो पग कुरक्षेत्र दीए ॥
कुती सकल कुटुव सो ग्राई। एक वन महि ग्राइकर ठहिराई ॥
नदि महिर ग्ररु जमुननि रानी। जो हित ग्राए मारंग पानी।
ग्राए श्री कृष्ण को दर्सनु पायो। श्री गोपाल दूर से निपायो ॥
निर्प तही प्रभ जी उठि धाए। ततक्षिण नदि जमुमनि पहि ग्राए ॥
ग्राइ डडौत करी प्रभ ताको। महा ग्रधिक सुपु दीनो ताको ॥
जमुनति प्रभ कों ग्रग महि लीग्रा। प्रेमु ग्रधिक घटि ग्रतर कीग्रा ॥
ग्राइ कर तहू ठौर ठहिराए। जहा कृष्णचद सुप ग्रासणु छाए ॥
जसुमति ने तव ही क्या कीग्रा। एक ग्रग कौलापति लीग्रा ॥
दूसर ग्रग ले राम वहायो। जसुमनि निर्प ग्रधिक सुपु पायो ॥
ग्राप दोनों के मद्धि समाई। जमुमनि सुपु उपिज्यो ग्रधिकाई ॥
देवकी रोहिणी वचन उचारे। जसुमति पाहे कहित पुकारे ॥
तुम किर्पा कर हमि को दीने। एहि दो वालक किर्पा कीने ॥
तुम प्रसाद राज लीरह कराही। हमि को ग्रानदु ग्रति उपिजाही ॥
जो कछु लर्कपन महि होई। सकल लील्ह कीनी तुम सोई ॥
पालन माहे ग्रधिक भुलायो। ले दधि माषनु ग्रधिक पवायो ॥
तुम प्रसाद ग्रदि भए ग्रधिकाई। वल कर कस को लीयो हताई ॥
वडो प्रतापु भयो इनि केरा। सांईदास है तुमरो चेरा ॥२१

ग्वार्नि सभ मिल कर उचिराही। वडो ढीठु हमि ताते नाही ॥
मानो कवहू न हमि प्रीत धारी।
ग्रवि हमि को इनि नाहि चितारी।
माषनु दधि ग्रचिवाइ कराही।
पय ग्रचिवाइ कीयो ग्रधिकाही।
जब ते गोकल को तजि ग्रायो।
हमि को कबहूं न चित करायो।
श्री गोपाल विधि सकली जाने। घटि घट विर्था सकल पछाने ॥
ग्वार्नि के मन की विधि पाई। तव मन महि इहिविधि ठहिराई ॥

जिह समे मै सुरही ले जावो। बनि जावन कों मै चितु लावो॥
तब इहि हमरो दर्सु कराही। वाही ध्यानु घट महि ठहिराही॥
जासि समे बनि ते ग्रहि आवो।
तब भी इनि को दर्सु दिपावो।
दर्सनु कर हमि आनद पाही।
मन ते सकला दुख मिटाही।
पलि छिन ध्यानु न हृदे चुकावहि।
बिनु हमि ध्यान चितु औंर न लावहि।
अबि इनि की बिधि जानो नाही। कैसे कर धीर्जु इहि पाही॥
इनि बिधि ने क्या बात बनाई। कबहूं इकत्र कबहू बिछुराई॥
श्री कृष्णचंद ग्वानि समिझावै। ताके मनि का भर्मु हिरावै॥
जो कोई तुमरे घटि नाही। सदा शब्द मुष ते उचिराही॥
वाही हमि को सहिजे जानो। इसि बिधि महि अ तरु ना आनो॥
जो ग्रहि विषै प्रीति चितु धारे। सो वैकुठ जाइ तत्कारे॥
जो कोऊ निकट मोह भक्त कमावै। तास हृदे वहु प्रीत न आवै॥
दूर होइ भक्ती चितु लावै। तां के घटि बहु प्रेमु समावै॥
बिना प्रेम मोहि भक्त न होई। बिना भक्त तर्यो नही कोई॥
ऐसे ग्वानि हरि समझायो। सांईदास तिस भर्मु चुकायो॥२१७

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे व्यासीमोध्याय: ॥ ८२ ॥

कु ती सुत सो जोहत आई। प्रभ पाहे आइ कर ठहिराई॥
मुष ते एही वचनु उचारा। हे पूर्न प्रभ प्रांन अधारा॥
जादम सभ की करु कल्याना। हे पर्मानंद पद निर्बाना॥
इक दिन हमरी करहि सहाई। जादम प्रभ होवहि अधिकाई॥
कैरो मन तब करहहि त्रासा। जाने कृष्ण हमारे पासा॥
कुंती वसुदेव सों उचिरायो। वीर जानतिहि आष सुनायो॥
कैरो हमि सों वैरु करायो। तुमहि हमारी सुति न पावो॥
मैं तो कहित तू वीरु हमारा। कह्यो कवन विधि तैं मन धारा॥
बधू और काम किस आवहि जो इस औसर ना उठि पावहि।

इक दिन भी हमि पहि नही आयो।
हमि पूछनि को चितु न लायो।
तव वसुदेव दीयो प्रतु ताका।
इहि विधि कर परचायो वांको।
दुष्ट कस हमि बदि डलायो।
तासे महा अधिक दुप पायो।
कृपा करी हमि पर वनवारी।
दुष्टु हत्यो श्री कुंज विहारी।
हमि कों तासि सें लीयो छडाई।
इहि करुणा हरि हमहि कराई।
अवि चाहित था तुम पहि आयो।
तुमरो हरि ईहा दर्सु दिपायो।
कुंती सुण वचि शात घर आई। मन की विर्था सभ सुण पाई।'
साधो हर जन सदा सहाई। माईदास सुर रह्यो समाई ॥२१८

द्रुपद सुता तव वचन उचारे। रुक्मण सो कह्यो तत्कारे॥
कार्जु कैसे तोहि भयो है। श्री कृष्ण कुदन पुर कैसे गयो है॥
इसि का मोहि वीचारु सुनावो। छिन मात्र ना बिलम करावो॥
रुक्मन ने तांको प्रतु दीना। मोहि कार्जु ऐसे कर लीना॥
मम पिना भीष्म नामु कहावै। ताकी वात कर मनु सुपु पावै॥
तुलसी है जननी को नामा। अधिक भलो वहु नीकी रामा॥
मोह पित मात ने मतु ठहि रायो। चाहित कृष्ण सयुक्त करायो॥
रुक्मना नामु वंधू इकु मेरा। तिह तिन सो उठि कीनो फेरा॥
ओहु कहे ससपाल को देवो। तासो एहि सजुक्त करेवो॥
मैं लोको सों इहि सुण पाई। महा वली प्रभ जादम राई॥
कस दुष्ट को जिने प्रहारा। तांकी भुज महि वलु वहु भारा॥
मै मन ध्यानु तास को कीना। चर्न कमल सों मैं चितु दीना॥
रुक्मे पतीआ वेग पठाई। ससपाल वेग आवो मेरे भाई॥
कार्जु रुक्मन को कर देवो। आदर भाउ तुमरा मैं लेवो॥
मैं भी इक विपु लीयो वुलाई नामो सकल्लो वात सुनाई।

दीई अक्रूर तास के तांई। पतीश्रा ले जाह् कृष्ण के पाही ।।
मो ते जव दिज ने कर लीने। तास समे पग मग महि दीने ।।
तनक्षिण महि आयो हरि पाही। मोह पतीश्रा तिहि आन दिपाही।।
चर्न वंदिना मोहि सुनायो। प्रभ सकली विधि मन ठहिरायो।।
रथ पर चढि वेग उठि धायो। ततक्षिण कुंदन पुर महि आयो।।
ससिपाल अधिक सैना ले आया। दत वक्रत जरासिंध सवाया।।
मोको रामां लेकर धाई। गौरांके अस्तल ले आई।।
हमि सें पूजा तहा कराई।
जोषिता सभ मोहि कह्यो सुनाई।

कहु ससिपाल हमि होइ सुपदाई।
अैसे रामां मोहि सुनाई।

मैं कह्यो श्री कृष्ण मोह होइ सुषदाई।
तव सभ रामां ने सुण पाई।
मोह कह्यो तैं क्या उचिरायो। हे रुक्मण क्या शब्द सुनायो।।
तव मै कह्यो जो तुमने भाषा। सोई है मैं मुष ते आषा।।
मो को फिर ग्रहि को ले धाई। मम संग जोधे थे अधिकाई।।
मोहि रक्षक मोहि बंधू दीने। अधिक उपाउ तासि ने कीने।।
मैं मग महि हौरे हौरे जावो। मतु श्री कृष्ण को दर्सनु पावो ।।
प्रभ ने तव ही बेन वजाई। सुनति शब्द सुधि सकल भुलाई ।।
मोको रथ प्रभ लीयो चढाई। गवन कीयो तव जादम राई।।
पाछे से जोधे वहु आए। श्री गोपाल जी सकल हताए।।
रुक्मन सभ विधि ताह सुनायो। सांईदास द्रोपती सुण पायो ।।१

वहुरो द्रोपती ने वचु कीआ। सत भावा सो एहि पुछ लीआ।।
अपुने कार्ज की वात सुनावो। एहि वचु मोह हृदे ठहिरावो।।
सतिभावा तांको प्रतु दीना। जो कछु वचु द्रोपती ने कीना।।
मम पित हरि को दोसु लगायो। भूठु वहु कीयो आगे आयो।।
मन अपुने महि लीयो वीचारी। मैं औगुणु कीनो अति भारी।।
कैसे औगुणु हमहि मिटावै। कित विधि कीए औगुण हमि जावै
इक दिन मन महि कीयो वीचारा कन्या प्रभ देवो ।

तब हम को औगुणु मिट जावै । नाहि त हमि नाही बनि आवै ॥
इक दिन सभा जादम महि आया । भुप ते एहो बचु उचिराया ॥
मै सतिभामा श्री कृष्ण को दीनी । सैनापति मरण भेटा कीनी ॥
तब उग्रिसैन जादम संग लीए । हमिरे पित ग्रहि महि पग दीए ॥
मम मघर मोह काजु करायो । अैसे सति भामा उचिरायो ॥
मम को पित माया बहु दीनी । चेरी अधिक संग मोहे कीनी ॥
द्रोपती पूछ्या जामवंती पाहे । तोह काजु कहा भयो देहि बताहे
जामवंती तब कह्यो सुनाई । मोहि पिन जोधा अति बलिकाई
श्री कृष्ण सैनापति मरण के लीए । महा विकट बन महि पग दीए ॥
विधि जो कछु कीनो होइ भाई । ताको कोऊ न सकै मिटाई ॥
प्रिथम मोह पित सो युद्ध कीना । मोहि पिन को निहबलु कर लीना
मम पित ने मन महि बीचारा । पूर्न है प्रान अधारा ॥
चर्न गहे भुप विनती ठानी । हे कौलापति सारंग पानी ॥
इहि कंन्या हमिरी ले जावो । अपुनी इनि सों टहिल करावो ॥
सैनापति मरण भी लेवो । हमरो औगुण मेटे देवो ॥
हमि को ले आयो पुर माहें । काजु कीयो हमरो प्रभु नाहे ॥
जामवती सभ बात बखानी । साईदास सभ विर्था जानी ॥२२

सुता सो फिरि वचन सुनायो । तोह काजु कहु कैसे करायो ॥
सुता तब अैसे प्रतु दीना । मोहि काजु अैसे कर लीना ॥
सप्त बैल मोह पित ग्रहि माही । दस सहस्र गज बलु इक ताई ॥
मोहि पित ने प्रतज्ञा कीनी । महा कठन प्रतज्ञा लीनी ॥
एक वार तिह को है बहावै । सो इहि कन्या हमिरी पावै ॥
श्री कृष्ण इहि विधि सुण पायो । अपुनो पुरु तजि हमि पुर आयो ॥
सप्त बैल की कुहो बहाई । मोह काजु कीनो जदुराई ॥
काजु कर हमि को ले आया । मोहि काजु इहि भांत करायर ॥
बहुरो रवि दुहिता सो भाषा । तो काजु कैसे भयो आषा ॥
कालीन्द्री तब कह्यो पुकारी । सुण हो द्रोपती सखी हमारी ॥
मैं जल तटि प्रिति अधिकाई तहा निकसे आइ कवर कन्हाई

मम को तव ही सग ल्यायो । पुर महि आण मोह काजु करायो ॥
बहुरो कह्यो पोडसहस्रो बीस । तुम प्रभु कैसो भयो जगदीस ॥
पोडसहस्रो बीस सुनायो । हमि कार्जु असे होइ आयो ॥
असुरु बनासुरु हमहि ल्यायो । आरण सकल इकि ठौर वहायो ॥
श्री जाइ तांको हति लीना । इहि कार्णु कौलापति कीना ॥
हमि को द्वारका माहि ले आयो । ईहा आइ कर काजु करायो ॥
हमिरे भाग विधि एहि करायो । कृष्णचंद पतु हम ने पायो ॥
द्रोपती सुरण विधि सभ मन धारी । सांईदास सुष मन अधिकारी ॥२२

इति श्री भागवते महा पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संबादे त्रिआसीमोध्याय: ॥८३॥

श्री कृष्ण जोपिता कह्यो सुनाई । सुण हो द्रोपती हितु चितु लाई ॥
अपनी बिर्था तुमहि बनावो । तोहि कार्जु कैसे भयो सुनावो ॥
द्रोपती कह्यो सुणो चितु लाई । सकल वृथा मै देउ बताई ॥
मो पितु भूपति अति बलिकारी । मन महि लोई प्रतज्ञा भारी ॥
मध्य अकास मीन लरिकाई । भांजन जलु भर्यो अधिकाई ॥
तास मीन के तले रपायो । धनपुवारण तिह औरि टिकायो ॥
मीन प्रितमा जल माहि निहारे । षिच बांणु मीन को मारे ॥
इहि कन्या मैं तांको देवो । आदर भाउ अधिक तिहि लेवे ॥
पांच वीर पांडो सुत आए । भगवान तिहि दर्सु दिपाए ॥
अर्जन प्रितमा देषि मीन को मार्यो ।
मध्य अकास ते धर्नि उतार्यो ।
मम को मोहि पित इनि ताई दीना ।
इन मोह लीए गवन तव कीना ।
औरु नराधिप आगे आए । तिन इहि विधि मन महि ठहिराए ॥
मुकट्ठु बांधे हमि सकले ले जाई । इहि सैना सें लेकर धाई ॥
आइ पाडो सुति को मगु घेरा । मन महि गर्बु कीयो अधिकेरा ॥
इहि बिधि वहि भूपति ना जानहि । पांडो सुत को नाहि पछानहि ॥
अज्जुन युद्ध कीयो अधिकाई । सकल भूपति भागे तव आई ।
मोको ले बनि माहे आए केतकि दिन तहू ही ठहिराए

अधिक कष्टु हमि वन महि पाया। कहा कह्यो कछु कह्या न जाया॥
तुम द्वार्का महि वहु सुष पायो। हमि वन महि बहु कष्टु कमायो॥
द्रोपती सभ त्रितातु सुनाया। सांईदास सभ सुण सुषु पाया॥२२

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे चउरासीमोध्याय: ॥८४

सकल ऋषीश्वर मुनि सुण पायो। श्री कृष्णचद कुरुक्षेत्र आयो॥
कैरो पाडो सुत भी आए। और जादम आए अधिकाए॥
नदिर महिर भी तहूं ही आया। सकल ऋषो इहि मनु ठहिराया॥
चलहो हम भी तहूं ही जावहि। ग्यान गोष्ट स्यु मनु पर्चावहि॥
ततक्षिण सकल ऋषीश्वर आए। ताहि नाम सुण हो चितु लाए॥
बृहस्पतु व्यास वशिष्ट गुसाई। विश्वामित्र ऋषि अधिकाई॥
शुक्र जती तास ही माही। दर्सु कीयो आइ त्रिभवन सांई॥
और अपग धूमरिष आए। प्रविछ कपिलाधरि आइ निर्षाए॥
वसुदेव इनि सो बचन उचारे। सुण हो ऋषीश्वर प्रांन अधारे॥
हमिरे ताई यज्ञ करावो। हमिरे मन का भर्मु हिरावो॥
सकल ऋषो नें इहि प्रतु दीना। हे वसुदेव कहा चित लीना॥
एहि वात बाही भई भाई। सो मै तुम को कहित सुनाई॥
प्रवाहु गगा को चल्यो। तांको मूढ नांही अचिवाई॥
कहे कूप को पानी पींवहि। तांते सुप अधिक मन थीवहि॥
तिह समे मज्जन ना करही। मज्जन कूप अभि चितु धरही॥
जो कोऊ यज्ञ करे मेरे भाई। इहि प्रयोग हरि होइ सहाई॥
वही कृष्ण तोहि टहिल करावै। और वाति कहा तुम मन आवै॥
सकल देव इस पग रज लोरहि। तू कित नाना मार्गि डोरहि॥
ब्र ह्म लोक अरु प्याल के मांही। इसि के पग की रज सभ चाहीं॥
जतन करहि फुनि हाथ नि आवै। ध्यान धरहि तौ भी नही पावै॥
तू कहै हमि को यज्ञ करावौ। अैसी विधि मुष ते उचिरावों॥
सकल ऋषीश्वरो इही विचारा साईदास हरि गति अपारा २२

मोहि पित यज्ञ कर्नि चितु धारा भली भांति घटि माहि वीचारा
इसि के तांई यज्ञ करावौ। इसि की सर्धा मकन्न पुरावो।
एक मास तहां यज्ञ करायो। वसुदेव महा अधिक सुषु पायो।
नंदि महिर तव बचु उचिरायो। श्री कृष्णचंदि सो आप तुनायो।
हे प्रभ तुम आगे पग धारो। हमि पाछे आवहि तत्कारो।
श्री कृष्ण सहित जादम उठि धायो। तिह समे मुप ते उचिरायो।
जो मोती अंबर वहु नीके। ताहि अंग कीए सुप होइ जीके।
सकल दीए जसुमति के ताईं। कचन दीनो हरि अधिकाई।
कह्यो औरु हमि जाकर लेवहि। इहि सभ जसुमति ताईं देवहि।
जसुमति से आज्ञा ले धाए। द्वार्का के मग सो चितु लाए।
जसुमति नंदि औरु सकल निहारहि। ठाढे होइ हरि रूपु सम्हारहि
मास दोऊ नंदु तहूं ठहिरायो। मन महि अधिक तहा विसमायो।
कहित कृष्ण ईहा पग धारे। अधिक सुषु वहु हमहि दिषारे।
चौमासा जवही निकट आयो। नंदि सकल सों वचन सुनायो।
ईहा ठौर नाहि कोऊ भाई। कष्ट पाहि कित को ठहिराई।
रुदनु कर्ति सभ ही उठि धाए। अपुने पुर को इनि हितु लाए।
श्री कृष्ण द्वारका माहें आयो। अति अनदु लोको सभ पायो।
जो वार्ता कुरक्षेत्र भई भाई। सकल श्री कृष्ण अनरुद्ध सुनाई।
पांडो कैरो सभ ही आए। नंदु जसुमति अरु गोप अधिकाए।
अनरुद्ध को श्री कृष्ण सुनाया। सांईदास सभ सुपु पायो॥

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कदे
श्री सुकदेव परीक्षति पंचासीमोध्याय: ॥८५॥

श्री कृष्ण वलभद्र दो भाई। तिन घटि महि प्रेमु अधिकाई।
नितापर्ति वसुदेव पहि आवहि। वसुदेव को डंडौत करावहि।
एक दिवसि बसुदेव पहि आए। वसुदेव दोनों ही निर्षाए।
ठांढा भया हरि को निर्षाई। नमस्कार वसुदेव कराई।
श्री कृष्णचंद तव वचन उचारे। सुणहो वसुदेव पिता हमारे।
कवन वेद इहि वात वताए। सुत को पित डंडौत कराए।
वसुदेव प्रतु दीनो हरि तांई। एही उपजी हमरे मन माही।

कुरक्षेत्र विषै सभ ऋषि आए। मैं तिन सों इहि वचन सुनाए ।।
मम अभिलाषा यज्ञ करावों। हमिरे मन की आत चुकावों ।।
सकल ऋषीश्वर मोहि प्रतु दीना । यज्ञ कर्नि तै क्युं चितु कीना।।
इति विधि सभ लोक यज्ञ कराई। अंत समे होइ कृष्ण सहाई ।।
श्री कृष्ण तोह सेवा ठहिरायो। तै यज्ञ कर्ने क्युं चितु लायो ।।
जो ऐसी विधि होई गिर्धारी। तो मै ऐसी लेउँ चित धारी ।।
श्री कृष्ण तवी वसुदेव सुनायो। हे पित किह बाती चितु लायो ।।
हमि प्रजोग तुम वहु दुपु पायो। पातक कम तुम बदि डलायो ।।
अब जो ऐसी करो पित मेरे। वहुरो वही दुप आवै नेरे।।
हे पित कलियुग के माही। मौसो सुत हैतु कराही ।।
जो कछु तुमरे मन महि आवै। मोहि कहो जो तुम को भावै ।।
मैं तत्काल आन पित देवों। तोहि आज्ञा मस्तक धरि लेवो ।।
जैसे सुत पित रीत चलाई। हे पित अब करहो तुम साई ।।
ऐसे वसुदेवहि प्रभू सुनायो। साईदास जो वेद वतायो ।।२२५

देवकी प्रभ सों वचन उचारे। मैं वलि जावो प्रांन अधारे ।।
विद्या गुरु के सुत ले आयो। अधिक कृपा तुम ताहि करायो ।।
जो हमरे भी सुत आण देवो। हमिरो मनु सुप्रसन कर लेवो ।।
महा अधिक सुपु तो मै पावों। जौ वही षट सुत फिर निर्षावो ।।
श्री कृष्ण कह्यो वहु नीको भाई। इहि विधि कब तै मोहि सुनाई ।।
अबि षट सुत तुमरे ले आवो। तुम चितु सुप्रसन्न करावों ।।
श्री गोपाल दाता सुप जन को। तास प्रसाद भया सुषु मन को ।।
हलिधर को सग ले कर धायो। तत प्याल लोक मध्य आयो ।।
नृप वल निर्ष आगे को आया। हरि को आई डंडौत कराया ।।
भूप ते तव ही वचन उचारे। हे प्रभ कहु कैसे पग धारे ।।
कछु आज्ञा होवे जन ताई। कृपा करो दर्सनु दीयो आई ।।
श्री नद नंदन कह्यो सुनाई। सुण हो नृप वल हमि सुपदाई ।।
षट सुत माता देवकी केरे। आई धरो तुम आगे मेरे ।।
कहो कहा है मेरे भाई। हमि को देवहु तासि वनाई ।।
नृप वल ने प्रतु हरि को दीना। हे प्रभ तिह वपु असुर को लीना ।।

इकु दूषु कोई उनि कीआ इहि प्रगोय वपु असुर को लीना
श्री कृष्ण कह्यो उनि को ले आवो।
ममिरे ताई आण दिषावो।
प्रभ आज्ञा सो तिनहि ल्यायो।
प्रभ तिह रूप असुर निपायो।
श्री कृष्ण तास बाल्क वपु दीआ। बाल्क वपु कर सभ सग लीआ।।
आन देवकी को हरि दीनें। देवकी वहु सुषु मन महि लीने।।
प्रभ जूठाली तिन अचिवायो। पंषी वपु ले वैकुंठ धायो।।
देवकी अधिक भई हैराना। कहा होइ जब समा विहाना।।
प्रभ उस्तत कर वैकुंठ धाए। साईदास सुष सागर पाए।।२

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे छयासीमोध्यायः।।८६

नृप परीक्षत ने प्रश्नु चलायो। शुकदेव पहि तिन आष सुनायो।।
हे प्रभ जी तुम एहि सुनावो। करुणा कर सुष हमि उपिजावो।।
सुभद्रा को कार्जु कैसे कीना। कैसे तिह कार्जु कर दीना।।
शुकदेव प्रतु दीनो नृप ताई। सुन हो परीक्षत हितु चितु लाई।।
श्री कृष्ण वसुदेव मतु एहि ठहिरायो।
उग्रसेन नृप सहित करायो।
अर्ज्जन सों सजुक्त करावहि।
और ठौर काहे भरमावहि।
हलधर कह्यो अैसे ना करहो। इसि विधि कर्न चितु न धरहो।।
दुर्योधन सहित सयुक्त बनावो। और ठौर काहू नाही जावो।।
अर्जन मन महि लीयो विचारी। भेष बनाइ जावो तत्कारी।।
क्या जानो मोहि देवहि न देवहि।
कौन ठौर सयुक्त करेवहि।
भगवान रूप अर्ज्जन कर लीना।
द्वार्का पुरी को तिह पगु दीना।

---

१. यहां 'प्रयोग' शब्द चाहिए।

तात्क्षिण निकट द्वार्का आयो। अस्तल सोमनाथ ठहिरायो॥
पुर के लोक तहू चलि आवहि। भोजन कार्नि इनहि ले जावहि॥
एक दिवस हलधर क्या कीआ। अर्जन को सहित कर लीआ॥
भोजन कार्नि ग्रहि ले आया। सुभद्रा ने तव पाकु पकायो॥
अर्जन को तव ही निषयो। मन अंतर एही ठहिरायो॥
मम को अर्जन देवहि नाही। दुर्योधन सहित सयुक्त कराही॥
अर्जन कौ मैं लीयो निहारी। महा वली सुर सर बलिकारी॥
कौलापति प्रभ अतरजामी। घटि घटि के वाही विस्रामी॥
अर्ज्जिन को तव कह्यो पुकारी। सुरण हो अर्ज्जन हमरे भाई॥
हमि सभ ही मिल मतु ठहिरायो। हमिरे मति हलधर ना आयो॥
हमि तुम सहित सयुक्त वनावहि। सुभद्रा कौ तुझहि देवावहि॥
हलधर मन माहे ना आनें। इहि विधि वहु मन नाही माने॥
चितु अपना तुम ठौर करावो। साईदास सभ भ्रांत हिरावो॥२२७

अर्ज्जन को प्रभ फिरि समझायो। हे अर्ज्जन कछु तोहि मन आयो॥
सोमनाथ के अस्तल माही। जाइ वसो भौ सकल हिराही॥
भक्त लोक ऊहा सभ आवहि। पूजा कर्न को चितु लावहि॥
तिसी ठौर पहि तुमहि हिरावो। उौर वात किते नां चितु लावो॥
सुभद्रा को तहू से ले जावो। मोह कहा घटि माहि ल्यावो॥
अर्जन ने तव विनती ठानी। हे परमानिद सारग पानी॥
रथु अरु धन्षु नाह मोह पाहे। इनि कार्नि मन महि सुकचाहे॥
श्री कृष्ण धनुषु रथु अर्जन दीआ। इहि करुणा प्रभ ता पर कीआ॥
रथु अरु धनुष अर्जन लीआया। सोमनाथ अस्तल ठहिराया॥
निस वीती रवि कीयो प्रकासा। सकल लोक मन भयो हुलासा॥
सोमनाथ को पर्सन धाए। अर्ज्जन ठाढा तासि हिराए॥
वसुदेव सुता तव ही प्रगटाई। अर्ज्जन ने तव ही निषाई॥
भुज से पकर लीई चारे। तव ही गवनू कीयो तत्कारे॥
लोको राम को जाइ सुनायो। अर्ज्जन सुभद्रा को ले धायो॥
हलधर क्रोधु कीयो अधिकाई। मुष ते एही वात सुनाई॥
मोहि शस्त्र देवो मैं जावों। अर्ज्जन को जाइ मार चुकावौ॥

श्री कृष्ण चाद तव ही सुण पायो राम क्रोधु कीयो अधिकायो
अर्ज्जन सो जाइ युद्ध मचाव तब लज्जा हमि रहि ना आवै
राम सों तव ही कह्यो सुनाई। हे हलधर सुण हो मेरे भाई ॥
अर्ज्जन कोई पराया नाही। कहा क्रोधु कीयो मन मांही ॥
कहे ते अर्ज्जन को ले आवहि। काहे इतना क्रोधु करावहि ॥
वलदेव प्रतु दीना जदुराई। करो कृष्ण जी जो मन आई ॥
अर्जन को तुम लेउो बुलाई। तुम सग हमिरा कहा वसाई ॥
श्री कृष्णचंद इकु दूतु पठायो। अर्जन को वहु फिरि ले आयो ॥
सुभद्रा को कार्जु कर दीना। कुंचर चेरी वहु सग कीना ॥
अश्व कंचन मोती वहुतेरे। अर्ज्जन को विदया कीयो सवेरे ॥
अर्जन कार्जु कर ले आयो। सांईदास आनंदु सुषु पायो ॥२

इक पुर महि इकु भूपतु रहे। एक विपु ताहूं महि अहे ॥
दोई भक्त महा हरि केरे। द्वितीया भाउ न तिन के नेरे ॥
श्री कृष्ण आयो ताहूं पुर माहे। सोच वीचार लीयो घटि माहे ॥
इहि दोनों है भक्त हमारे। विष्यालिप्त ते रहित न्यारे ॥
जो मैं भूपति के ग्रहि जावो। तौं त्रिप मन संचरु उपिजावों ॥
विपु मन माहे करे वीचारा। हमिरे ग्रहि हरि पगु ना धारा ॥
नृप निर्ष्यो हरि किर्पा धारी। मैं अधीन कों दीयो विसारी ॥
जो प्रिथमे ब्राह्मण के जाउ। सत उधार्न मेरो नाउ ॥
राजा विलषे हमिरो सतु। गए त्याग मोहि कमला कत ॥
दोनों भगत हमारे भाई। ता महि किस दुष दीयो न जाई ॥
अैसी विधि कर हो मेरे भाई। दोनों को चितु नाहि डुलाई ॥
प्रभ दो रूप माया के धारे। चिन्ह चक्र तिह एक सवारे ॥
एकु गयो भूपति ग्रहि माही। एकु आया विपु भौन मझाही ॥
नृप के ग्रहि महि सभ किछु भाई। आशण धरो आगे जदुराई ॥
भली भांति सेवा तिहि कीनी। द्वितीआ गति घटि माहि न लीनी
विपु ने एकु कुटीआ पुरानी। करद न कछु सग आनी ॥
दर्भ किडी ले तले विछाई। एक वृक्षि ताके ग्रहि भाई ॥
तास पत्र तोर तले आयो। कर मडल जल भर ठहिरायो ॥

ाप निर्त कर्ने उठि लागा। घटि से द्वितीया भाउ त्यागा॥
श्री कृष्णचद वहु आनंदु पायो। प्रेम भाउ तांको द्रिष्टायौ॥
विप को चतुर भुजा हरि कीना। वैकुठ माहि आसनु तिह दीना॥
जन्म मर्ण ते करी कल्याना। साईदास हरि पद निर्वाना॥२२६

इति श्री भागवते पुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे सतासीमोध्याय: ॥ ८७ ॥

परीक्षत प्रश्न कीयो शुक पाहे। हे शुकदेव मै वलि वलि जाहें॥
जास ममे पर्लो मभ होई। इसि धर पर कोई थिरु होई॥
एहि कथा प्रभ मोह सुनावो। मेरे मन का भर्मु हिरावो॥
सुकदेव प्रतु दीनो नृप ताई। हे नृप भली लई मन माही॥
नार्द एही प्रश्न नृप कीना। वद्रीनाथ उतर तिहि दीना॥
चीतु धरो मैं सोई सुनावो। तुमरे मन का भर्मु चुकावो॥
प्लै काल जव होवै भाई। सभ विनसै रहै कौर कन्हाई॥
चतुर वेद सुर को अवतारा। चरहो पुत्र है ले चित धारा॥
नाम ताहि सुण हो मेरे भाई। सन्कसनदन सुण हितु लाई॥
औरु सनात्न सन्त कुमारा। घटि माहे तुम लेह विचारा॥
ताम ममे इहि उस्तति करही। अनक भांत मुप ते उच्चरही॥
निरकार कछु द्रिष्ट न आवै। तुमरो कछु नाहि सुभावै॥
आद अनादी रह्यो समाई। निरवैर अजूनी संत सहाई॥
अकाल मूर्त्त श्री कुज विहारी। पर्मानदि गिरवर हरि धारी॥
दुष सुप ते प्रभ तुही न्यारा। सकल विश्व प्रभ तोहि पसारा॥
चिन्ह चक्र कछु द्रिष्ट न आवै। रूप रेप कछु कहा वतावै॥
जल ऊपर धर तोहि बनाई। इहि रचना प्रभ तोह रचाई॥
जेसे जल मै कमल वसेरा। ऐसा प्रकासु सकल घटि मेरा॥
अघनाशी प्रभ तेरो नामा। पतति उधार्न एही कामा॥
तोहि उस्तति को पार न पावै।
तुमरी गति मित तोहि वनि आवै।
हमि तोहि उस्तति कहा वषानहि।
तुमरी उस्तति कर क्या जानहि।

तू अविनाशी नासु न तेरा
तू गुरु सकल जगतु तोह चेरा।
काह रस्ना हमि उस्तति भापहि
सांईदास क्या गति मित भाषहि ।।२

नृप परीक्षत इकि दिन क्या कीआ।
शुक पहि प्रश्न तिन ने इहि कीआ।
हे शुक जी सुन हो चितु धारे
तुम निर्मल भक्त विधि जानण हारे
शभू सदा कुचील है भाई। तिह सेवा जगु काहि कराई।।
जो उसि पर कोऊ आन चरावै। सकल अपवित्र होइ कर जावै।
पर्म मुक्त दाता गिरधारी। ताहि त्याग कित पूज जचारी।।
सुकदेव नृप ताई प्रतु दीना। हे नृप भलो प्रश्नु तै कीना।।
मुक्त दाता श्री कुज विहारी। और देव वरिदाते सारी।
मुक्त देवनि के माहें नाही। वरु मांगहि देवहि अधिकाही।
नर्कासुर असुर नें प्रश्नु चलाया। नार्द को तिह आप सुनाया।
ऐसो सुरु कोऊ है मेरे भाई। ततक्षिण वरु देवै विल्म न लाई।
नार्द नें ताको प्रतु दीना। शिव है असुरु हृदे धरि लीना।
नर्कासुरु शिव अस्तल आयो। पष्ट मासि तहा भजनु कमायो।
होम यज्ञ कीनो अधिकाई। तासि अहूती ले कर पाई।
शकर तव ही दर्सनु दीना। मुष अपुने से इहि वचु कीना।
वरु इनहूं मांगो कछु भाई। जो तुम मांगो देवो तुम सांई।
नर्कासुरु कह्यो सुन शंभू देवा। मै तुमरी कीनी है सेवा।
तैने मो पहि किर्पा धारी। वरु इनहूं होयो तत्कारी।
एही वरु हमि ताई दीजै। अपुनी किर्पा हमि पर कीजे।
मै जिह सिर पर करु ठहिरावो। क्षिण माहे तिह भस्म करावो।
शिव कह्यो ऐसे ही होई। जो तै मागा दीआ सोई।
तव ही नरकासुर मन धारा।
सोध हृदा मन लीयो विचारा।
अवर कौन सिर करु ठहिरावो।
औरु कवन को जो हन जावो

शंकर का अवि भस्म करावो।
पार्वती को ले मैं जावो।
असुर इही विधि मन ठहिराई।
साईदास शिव ने सुधि पाई ॥२३१

नर्कासुर शिव ओर सिधाया।
भस्म कर्नि शिव को चितु लाया।
शिव इहि विधि पाई उठि भागा।
नर्कासुर तिह पाछे लागा।
शिव दौरत दौरत हिरायो। श्री कृष्णचंद को चित्त करायो॥
हे प्रभ पलु मोहि भस्म करावै। तोहि विनु हमको कौनु छुडावै॥
अंतरजामी स्यामु हमारा। ततक्षिणमन महिलीयो विचारा॥
शंकर कष्टु अधिक ही पायो। तव प्रभ देवी रूपु करायो॥
शंकर को प्रभ लीयो दुराए। आप असुर सन्मुप चल्यो धाए॥
असुर रूप प्रभ को निर्षायो। पार्वती देषि सुधि बौरायो॥
श्री व्रिजनाथ तिह कह्यो सुनाई। हे नर्कासुर क्या मन आई॥
कहा जात दौरे ठहिरावो। हमि तांई तुम आपि सुनावो॥
नरकासुर हरि को प्रतु दीना। मैं सेवा शंभू की कीना॥
षष्ट मास मैं सेवा करायो। तौ शंभू ते इहि वरु पायो॥
जास सीस पर करु ठहिरावो। तांको छिन महि भस्मु करावो॥
मम मन माहे एही आई। औरु ठौर जावो कहा धाई॥
शिव के वरि तांई पतीआवो। पतीआवन और कहा मैं जावो॥
शिव ही के सिर पर करु धारो। वरु पतीआइ लेऊं तत्कारो॥
महादेव हम से है भागा। मैं तिह जोहन को उठि लागा॥
प्रभ नरकासुर कों समझायो। कौन वात तू मन महि ल्यायो॥
मोह कार्ण ऐसे तूं करही। शंकर मार्नि को चितु धरही॥
जाण देहि शिव कछु ना आपो। मोह कहे ऊपर चितु रापो॥
मैं तुमरी सेवा चित धारो। तोह कहा घटि माहि वीचारो॥
प्रथम हम तुम निर्त कराहि। पाछे एक ठौर ठहिरावै॥
प्रभ ने निर्त कर्न चितु लायो।
असुर कह्यो हमि को सिषवायो।

ाभ कह्यो तुम भी सिष लेवो
न्यु म करो औसे कर लेवो।

प्रभ निर्त कर्ति करु सिर पर आना।
औसे नर्कासुर भी ठहिराता।

भस्म भयो नर्कासुर तांही।
इहि विधि प्रभ तिहि लीयो वैराही।

खलि को प्रभ ने भस्म करायो।
साईदास शिव को छुटकायो ॥२३

इति श्री भागवते महापुराण दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संबादे अठासीमोध्याय: ॥ ८८ ॥

भस्म कीयो खल को जदुराई। तब शंकर को कह्यो सुनाई॥
हे शिव तुमरी सुति बौरानी। कौनु वात तै मन महि आनी॥
औसे षल कों को वरु देवै। औसी विधि कोऊ मन महि लेवै॥
श्री गुपाल भक्तन सुषदाई। शकर को तिन लीयो छडाई॥
भक्तन हेत प्रभु अधिक बढावै। अपुनी सेवा तिह को लावै॥
माया देत तिह जनके ताई। ताहि की द्रिग कछु आवै नाही॥
माया को कछु कर नही जानहि। एही वात घटि माह पछानहि॥
जैसे उदर मात से आए। अत समे औसे उठि धाए॥
इहि माया संग जावै नाही। भक्ति दृढ इहि विधि मन माही॥
इहि प्रयोग तिह हेतु न लावहि। विषु कर जानहि निकट न आवहि
सुत वनिता वधू के कीए। माया जोरहि मिथ्या कीए॥
वहि सकले ही संगी नाही। शत्रु है जानति मन माही॥
सकले ही इहि कहति पुकारे। प्रितपाल्कु तुम करहि मुरारे॥
जहा ते जानो तहा से ल्यावो। हमिरी किर्त तुम चलिवावो॥
माया सतन को ना देवे। एहि वात प्रभ मन धर लेवे॥
जो इनि को माया देवा भाई। तिह उर्भै मोह देहि भुलाई॥
भक्तनि को बैकुठ पठावो। ताको आसनु तहू करावो॥
अवर सकल देव सापा भाई। व्रिक्षरूप श्री जदुराई॥
इसि ही से उतपति है वांकी। इहि सभ गत पावहि नही वांकी॥

प्रवाहु गंगा को चल्यो जाई। तासो को कुभ लेइ भराई॥
इहि प्रवाहु घटे नही जावै। दधि माहे जो कुभु भर पावै॥
ऐसे प्रभ है मेरे भाई। सकल विश्व है तासि बनाई॥
जो सभ विश्व ताम है कीनी। तांकी जोत कछु नही भीनी॥
जो सभ विश्व तिह जाइ समावै। अगवाही ज्योत अधिक होन न पावै
सकल विस्व नाहूं विस्तारा। साईदास भजु राम प्यारा॥२३३

चतुर्मास आयो मेरे भाई। चौदिस थिति सुनो चितु लाई॥
प्रथोदक सकले ऋषि आए। मज्जन कर्ने को चितु लाए॥
पंडित वेद पुरान बिचारहि। ज्ञानु करहि प्रभु जी का टारहि॥
तिह पंडित इहि बात बीचारी। तीनो देव समसर अधिकारी॥
इन महि काकी पूजा कीजै। नासे भर्मु मुक्त मग लीजै॥
सकल ऋषो भृग कह्यो सुनाई। हे स्वामी तुम सभ सुप दाई॥
तुम को अधिक परीक्षा होई। तुम बिनु अवर न पावै कोई॥
सोच देहि तुम इहि विधि हमि को। हमि आपहि प्रभ विनती तुम को
पर्म मुक्त दाता किसु कहीए। ताकी सेवा मन चित लहीए॥
भृग सभ ऋषि की आज्ञा पाई। इहि विधि सोचत चल्यो धाई॥
प्रिथम ब्रह्म जी के आया। पद्मज पहि जाइ कर ठहिराया॥
नमस्कार कीनो तिस नाही। ब्रह्मे क्रोधु कीयो अधिकाही॥
लोचन अग्नि ज्यु तामि ललाए। क्रोधु कीए भृग ओर तकाए॥
भृगु निर्पित ताको उठि धाया। वेग ही शिवपुर माहे आया॥
शंकर ने भृग को निर्पायो। अर्घासनु तजि आगे आयो॥
आदर भाउ अधिक तिह कीना। भृग ने ताको इहि प्रतु दीना॥
हे शंभू तुम निकट न आवो। तू अपित्र तापसु करावो॥
मरघट भूम तुमरा है बासा। मै नाही तुम दर्स पिआसा॥
भामनी रहित सदा सग तेरे। तुम आवो नही हमरे नेरे॥
सोच पवित्र है हमरो कामा। भृगु देव कहीए हमरो नामा॥
गौरापति तब क्रोधु करायो। ले त्रसूल मार्नि तिह धायो॥
पार्वती तब ही उठि आई। शिव के चर्ना सों उरझाई॥
मुख अपुने से विनती ठांनी। हे शंभू तुम ब्रह्म ग्यानी॥

इहि विपु है वैष्णव अधिकाइ हमि स हतिना नाहि भलाइ ।
जो ब्राह्मण चित क्रोधु ल्यावै। तांको कोऊ नाहि हतावै ॥
तुम शभू सदा दया द्यालक। सकल जग के तुम प्रित पालक ॥
क्षिमा करो इसि देहू तजाई। अैसी गौरा बात सुनाई ॥
शभू क्षिमा करी ग्रहि आयो। साईंदास भृग तिह पतीआयो ॥२३

वहुरो भृगु वैकुंठ सिधायो। तहा श्री कृष्णचद को निर्षायो ॥
शेनु कीयो परजंक पराही। महा सुषी दुषु तिह कछु नाही ॥
लक्ष्मी पग कर सो पलिसाई। भृग ने अैसे ही निर्षाई ॥
भृग ताइ लात पिजर महि मारी। प्रभ जी जाग परे तत्कारी ॥
भृगु को ले प्रजक वैठाया। प्रभ ने दीन बचन उचिराया ॥
प्रभु भृग चर्न पलोवन लागा। श्री कृष्णचद मन गर्बु त्यागा ॥
भृग को प्रभ जी वचन सुनाए। हे भृग क्रपा करी तुम करी तुम आए
वैकुंठ को तुम पावन कीना। जो तुम ने पगु ईहा दीना ॥
तुमरे चर्न कौमल अधिकाई। मोहि पिजर अति डाढो भाई ॥
तुमरे पग दु:ष वहु जो होई। मोको पीर भई नही कोई ॥
इहि प्रजोग मम रिदा डुलावै। तुमरो चर्नु कष्टु अति पावै ॥
द्विज के पगि जिह मंदर जाहि। सो ग्रहु लछमी छाडत नाहि ॥
ममरे[1] रिदे लात की दई। पग प्रसाद श्री निश्चल भई ॥
नौतन भूषन पायो अग। चर्न चिह्न राजो हमि संग ॥
करी कल्याण हमारी आए। क्रपा करी तुम दर्सु दिषाए ॥
कछु आज्ञा कीजै भृग स्वामी। तुम सभ विर्था अतर जामी ॥
हे प्रभ मै क्या कहो सुनाई। सकल विस्व प्रभ तुम्है उपाई ॥
तोहि समसर दूजा औरु न कोई। तोह भक्त करी मुक्ता होई ॥
आद अनादी नामु तिहारा। गर्भ योन ते तुही न्यारा ॥
गोकलचद नद को नद। सकल जगत मत तूं ही चद ॥
जो महा कदरा होत अंधारा। तू तहूं प्रभ कर्ति उजीआरा ॥
घटि घटि तुमरी जोत प्रकासी। तूं ठाकुरु माया तोह दासी ॥

१ 'मम' का अर्थ ही मेरे है यहाँ 'मम' के साथ 'रे' का प्रयोग भाषा विज्ञा
ो दृष्टि से महत्वपूर्ण है।

पर्मानंदि माधो बनवारी। श्री गोपाल ग्वर्धनधारी।।
गोपीनाथ अनाथ को नाथा। बिश्मदोहनी भरि काथा।।
रूप नरायण सुप को दाता। भक्तिन सुपु ताहू घटि राता।।
त्रैलोक को नाथ बिहारी। असुर सघार्ण तुमही मुरारी।।
तुझै त्याग जो अवर ध्यावहि। मानो किर्पति महि ऊर्भावहि।।
हे प्रभ मुक्त तिहारी दासी। तुम प्रभ द्याल सदा अबिनाशी।।
क्षिमावान क्रोध घर नाही। सदा सतोषु तुमरे घटि माही।।
उस्तत प्रभ ने अधिक उचारो। साईदास सुनि सुति संभारी।।२३५

प्रभ सो भृगु आज्ञा ले धायो। ततक्षिण महि पर्थोदक आयो।।
जैसी विधि भृगु आयो निहारी। सभ विधि ऋषो पहि आइ पुकारी
सकल ऋषीश्वर मन ठहिराई।
मुक्त को दाता श्री जादमराई।
ताहूं की सेवा चित धारहि।
औरु कोई को नाहि सम्हारहि।
सकल ने हरि सेवा चितु धार्यो।
श्री कृष्णचंद घटि नामु चितार्यो।
दुर्वासा बिपु द्वार्का मांही। अपुनो भवनु तिन कीयो तहाही।।
तांको ताहूं माह निवासा। भक्त कृष्ण को हरि को दासा।।
तांके ग्रहि जो सुत उपजावहि। माति गर्भ निकसति बिस्मावहि।।
जहा सभा जादम की होई। दुर्वासा सुत ले जावै सोई।।
जादव को बुरा कहावै। उग्र सैन को जाइ सुनावै।।
पाप कति जादम अधिकाई। तिहि प्रजोग हमि सुत बिनसाई।।
अष्ट पुत्र हमिरे तजे प्राना। इनि जादम कछु रिदे न आना।।
इकि दिन दुर्वास जो आयो। बुरा कहित अर्ज्जन सुन पायो।।
अर्ज्जन बिप सो वचन उचारे। हे प्रभ क्रोध काहि मन धारे।।
दुर्वासा तांको प्रतु दीना। इहि प्रजोग क्रोधु मन लीना।।
सकले जादम पाप करावहि। इन प्रजोग मोहि सुत बिनसावहि।।
अर्ज्जन सुण फिरि तिह प्रतु दीना।
इहि प्रजोग तैने क्रोधु कीना।

जो फिरि तोह ग्रहि सुतु उपिजचि आवे
तोहि वनिता जपन चितु लावे
तव तुम मो को आइ सुनावो। वेग विलम कछु मूल न लावो।
तव मै आइ रक्षा करो भाई। अवि तुम अपुने ग्रहि वहो जाई।
दुर्वासा प्रतु पाई उठि धायो।
तत्क्षिण जोपिता पाहें आयो।
जो अर्ज्जन कह्यो आइ सुनाओ
जोपिता को चितु ठौर करायो
भई प्रतीत तासि मन भारी। साईदास सतिगुर वलहारी।।२

गर्वु भयो विप वनिता तांई। भयो अनंदु तास मन माही।
समाप्रसूत निकट जव आयो। दुर्वासि अर्जन जाइ सुनायो।
अर्जन सुनत आयो तत्कारी। तांकी भुज महि वलु अति भारी।
पिंजरु सर का तवी वनायो। रक्षा चाहति ताहि करायो।
वाल्कु उदर से वाहिर आयो। ताहि समे गनती चितु लायो।
तांको मुषु किसे नां निर्षायो। विप वनिता तव वचनु सुनायो।
हे प्रभ औरु वालकु जो आवै। वहु हमि कों दर्सनु दिखावै।
इसि वालक का दर्सु न देपा। ना उनि वालक हमि को पेषा।
अर्जन सुरण लज्जा चित धारा।
धनषु वाणु तिन तव ही सम्हारा।
तिस जोहनि कों वैकुठ आया
वैकुंठ महि तिस को नही पाया
वहुरो ब्रह्म पुरी चितु लाया। तहा आइ पुन दर्सु न पाया।
ब्रह्म पुरी तज दीई तत्कारे। शिव पुरी माहे तिन पग धारे।
तहा आइ फुनि ना निर्षायो। त्रैलोक देपि ठहिरायो।
मन माहे तव लीयो वीचारी। मोको आइ वनी अति भारी।
मोह वचन मिथ्या भयो भाई। अव मोहि जीवन नाहि भलाई।
वन सें लकरी ले अधिकाई। तांकी लेकर चिता वनाई।
चाहित आपस ताहि जलावे। क्षिण माहे वहु प्रांन तजावे।।
प्रदुम्न निर्ष ताहि उठि धायो। ततक्षिरण कौलापति पहि आयो।।

श्री कृष्णचद सों कह्यो सुनाई। हे प्रभ पूर्न जादमराई॥
अर्जन लकरी अधिक चुनाई। चाहित अपुने प्रांन जलाई॥
प्रदुम्न अैसे श्री कृष्ण सुनायो। साईदास हरि जी चितु लायो॥२३७

श्री कृष्णचद जब इहि सुण पाई। कहु काष्टु क्यु लेवो सुषु अधिकाई
अर्जन प्रभ सों बिनती ठानी। हे धर्नीधर सारंग पानी॥
दुर्वासा नित प्रति तुम बुरा आपै। सुत प्रयोग प्रभ अैसे भापै॥
जादम पाप करहि मेरे भाई। तिह प्रजोग सुतु हमि बिनसाई॥
मैं परज्ञा[1] तासि कराई। हे प्रभ पूर्न जादमराई॥
जो फिरि सुत तुमरे गृहि आवै। तू मोहि षबर कर्नि चितु लावै॥
मैं प्रतज्ञा तिह आइ करावो। तोह सुत बहु सुप उपिजावो॥
तब तिह ग्रहि सुतु होवन लागा। दुर्वासे विधि सकल त्यागा॥
तिन प्रभ मोसों आइ सुनायो। मैं बच तासि सुने उठि धायो॥
पिंजर सर को तहा सवारा। बालक जन्म लीयो तत्कारा॥
लेवत जन्मु अकास सिधायो। तब वनिता बिप मोह सुनायो॥
जो औरु सुतु जन्म नसायो। ताहि दर्सु देपति चितु लायो॥
अब जो बाल्कु हमि उपिजायो। ताको दर्सनु मूल न पायो॥
हे प्रभ मै सुकच्यो मन मांही। धनपु बाण ले चल्यो धाई॥
त्रैलोक प्रभु देषि कराया। वहु बाल्कु कहूं सो नही पाया॥
खडित वचन हरि भयो हमारा।
तब काष्ट लेवनको चितु धारा।
अर्ज्जन को हरि कह्यो सुनाई।
सुण हौ अर्ज्जन हमरे भाई।
चितु अपना तुम नाहि डुलावो।
हरि चर्नासों ध्यानु लगावो।
भलके[2] मै तुम को ले जावो। सुत दुर्वासा के दिषलावो।
अर्जन सुण मन महि वीचारा। कहा कहति श्री प्रांन अधारा॥
मोहि चित लेइहि उचिरायो। नाहित हमि को कहा रिपायो॥

---

१. 'प्रतज्ञा' शब्द चाहिए।
२ 'भलके' पजाबी शब्द है। अर्थ है—कल (भविष्यार्थी)।

त्रलोक मैं देषि कराया मैं कहू उौर नहि निषाया
कौन ठौर मो मोहि दिषलावै। कौन ठौर से मोह बतावै।
अर्जन मन महि अैसे धारा। साईदास हरि गत्त अपारा॥८

निसवीती रवि कीयो प्रकासा। श्री कृष्णचदि मन भयो हुलासा।
श्री कृष्ण गर्ड को लीयो बुलाई। तासि सवारु भयो जदुराई।
अर्जन कौ हरि सहित चर्यो। दुर्वासे सुत जोहन धायो।
अर्जन संग लीए उठि धायो। सप्त समुद्र के आगे आयो।
आगे जावन को चितु लाया।
सब ही सभु जलु बिब दिखावे। अर्जुन निर्प मन महि विस्मावै।
इकु स्थावरु तांहूं माहे। अति दीर्घ कछु कह्यो न जाहे।
इकि वसुधरि को तांपर वासा
एक सीस तिह तिह पर ग्रहु भाई। अर्जन विधि ने दई दिपाई।
सेस गोद बैसे भगवान। अष्ट भुजा प्रभ पुर्ब पुरान।
नमस्कार जाइ कीयो मुरार। अष्ट भुजा हू करी जुहार।
आवहु कृष्ण हमारे मीत। तुम देषन कीथी वहु प्रीत।
इकु गत वर्ष पाच अरु बीस। भए वितीत सुनो जगदीस।
तुमरे देपन की मन प्यास। वहुतु वढी थी हमरी आस।
इसि निमित्त आनें दिज बाल। सुन हो केशिव सदा क्रपाल।
तुम देपे अब सभ गया। हर्षि हमारा तनु मनु भया।
मदर के पीछे थे वाल। पेले थे तहा गए क्रपाल।
नौ सुत दुर्वासा तिह माही। निर्ष्यो अर्ज्जन अति विस्माही।
देवकी नदन ने क्या कीआ। ले आसन तिह गर्ड पर दीआ।
वेग माहि द्वार्का ले आए। इहि कार्णु श्री कृष्ण कराए।
आण दीए दुर्वासे तांई। दुर्वासा हिर्ष भयो अधिकाई।
अर्ज्जन गर्वु हृदे ते त्यागा। नीच मार्ग केरे वह लागा।
कर्नि कार्नि श्री कुज विहारी। अर्ज्जन इहि विधि मन महि धारी।
अर्ज्जन ने अभिमानु तजायो। साईदास सुप आनदु पायो॥२

इति श्री भागवते महापुराणे दस्म स्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे उणानमोध्याय: ॥८९॥

पूतना दंत वक्र से लीए। अधिक असुर संघार्ण कीए ॥
द्वार्का माहि भई कल्याना। सकल लोक पुर आनद माना ॥
वैकुठ वासी मन ठहिरायो। हरि चर्ना सेती चितु लायो ॥
सभ ही मिल मतरु कीना। हरि दर्सनु देषन चितु दीना ॥
श्री कृष्णचद वैकुठ न आवहि। इहि प्रजोग मन महि विस्मावहि ॥
चल हो द्वार्का माहे जाही। तहा जाइ हरि दर्सनु पाही ॥
सुदर रूपु हरि दर्सुनि हार्रहि। चिहन चक्र हरि मन महि धारहि
सदा रहे हमिरे मन माही। हमिरे मन से भूल न जाई ॥
पद्मज शकर ध्यानु लगायो। मुरार वर्न कुमेर सभायो ॥
सोई दर्सनु हमि जाइ कराही। हरि चर्न सेती चितु धरही ॥
नान्हां अधिक सकल ही आए। द्वार्का पुर महि आइ ठहिराए ॥
प्रभ को आइ कर दर्सु करायो। महा अधिक सुषु सभनो पायो ॥
श्री कृष्णचद तिह कह्यो सुनाई। वैकुंठि अनदु है मेरे भाई ॥
इनि सकल्यो हरि को प्रतु दीना। तोहि दर्सन आनंदु हरि कीना ॥
मघवापुर से अपसरा आई। इहि मतु कर अपुने मन माही ॥
जादम वनिता सुदर अधिकाई। तिह उस्तति कछु कही न जाई ॥
मोहनीआ तिहि सर्नि दिपावहि।
तिह उस्तति कछु बर्नि न जावहि।

सकल ऋषीश्वर कह्यो सुनाई।
हे कौलापति सदा सहाई।

तुमरा दर्सु देषनि आए। मतु हमिरे मन जाइ भुलाए ॥
चिन्ह चक्र हरि मन ठहिरावहि। हमरे मन ते चूक न पावहि ॥
श्री गोपाल तिह को प्रितु दीना। भली वात तुम मन धर लीना ॥
जो मोह रूप तुम जाइ भुलाई। तीन ठवर मोह पावो भाई ॥
प्रिथमे तौ वैकुठ मझाही। द्विती कहा[1] श्री भागवत माही ॥
तृतीआ ब्रिद्रावन महि भाई। ब्रिद्रावन महि रहो सदाई ॥
माषुन गोपन ग्रहि से षावो। सदा सदा तिह महि उर्झावो ॥
अैसे प्रभ जी सकल सुनायो। साईदास पूर्न सुषु पायो ॥२४०

---

१. कहा < कथा

इकि दिन प्रीक्षति प्रश्नु चलायो। श्री शुकदेव कों आष सुनायो।
हे प्रभ सकली विधि तुम जानो। मैं तुम पाहे कहा वषानो।
किर्पा कर हमि बतिलावो। हमिरे मन का भर्मु हिरावो।
जादम सभ केते मेरे भाई। किर्पा कर मोह देह वाताई।
श्री शुकदेव तवी प्रतु दीना। हे नृप भलो प्रश्नु तें कीना।
जादम सभ कों जानो नांही। एती विधि आवे हमि ताई।
तिन चटिसाल को मै जानो। सो तुम पाहे सकल वषानो।
जादम तिह पहि वेद पढाही। तौ मैं तुम को सकल सुनाई।
तीन क्षुहिणी मेरे भाई। षोडसहस्र पाच लक्ष अधिकाई।
सप्त सै ऊौरु तासि ही नाली। इहि चटिसाल तिहि मोहि सम्हाली।
एक एक ओझै पहि पढिही। सभ विधात मैं आपे उरही।
एक सहस्र एक सौ तिहि पाही। एक एक पहि वेद पढाही।
श्री कृष्णचद भक्तिन सुषदाई। लीयो ऊौतारु इहि कारनि भाई।
भक्तिन सुप देवौ अधिकाई। दुष्ट खलो को नासु कराई।
श्री कृष्णचद मन महि ठहिरायो। जादम अधिक भए सुप पायो।
तोहि पाछे आन भूपति आवहि। जादव तिन सों वहु दुःख पावहि।
इनि पहि द्रव्य अधिक मेरे भाई। आन भूपति इनि दुष दिपाई।
कर क्रोधु इनि को प्रहारहि। हमिरो नामु इहि सकल विगारहि।
इनि पहि डड लेन चितु लावहि। तव कलक महि हमि उर्भावहि।
सभ जादम का तेजु गवावों। तव कलक महि नां उर्भावो।
सकल जादम को लीयो वुलाई। तिन सों कह्यो सुणो मेरे भाई।
मै जावति हौं वैकुंठ माही। भयो समा पूर्न अब वाही।
जादव सभ जव इहि सुण पायो। जगननाथ को तिन चितु लायो।
तहा आइ चौपड चितु लायो। षेलति क्रोधु हृदे महि आयो।
आप मध्य युद्धु कर्ने लागे। ऊौर वात सकले उनि त्यागे।
ततक्षिण सभ ही प्राण तजाए। सकल जादव बैकुंठ सिधाए।
प्रभ ऊद्धो सों कह्यो सुणाई। सुण हो उद्धो हमि सुषदाई।
अर्ज्जन को तुम जाइ सुणावो। हस्तनापुर केरे मग जावो।
कृष्णचदि वैकुंठ सिधारे। अर्ज्जन सों जा कहो तत्कारे।
तुम सो कृष्ण कह्यो मेरे भाई। द्वार्का महि आवह तुम धाई।

सकल लोक पुर के ले जावो। अपुने पुर मध्य जाइ वसावो॥
द्वार्का महि पूरीं दधि माहे। आज्ञा कृष्ण लेहु मन माहे॥
ऐसी तुम जाइ तासि सुनावो। सांईदास छिन मूल न लावो॥२४१

परीक्षत प्रश्न कीयो शुक पाहे। मोह मन सचरु है अधिकाहे॥
जादम किउ आप मध्य झूझाए। क्यु कर सभ ही प्रांन तजाए॥
एहि वात तुम मोहि सुनावो। मेरे मन का भर्मु चुकावो॥
शुक देव प्रतु दीनो नृप ताई। सुण हो नृप द्रिढ होइ मन माही॥
दुर्वासा ऋषु भजनु करावै। श्री गोपाल चर्नी चितु लावै॥
जादव ने इकि दिन क्या कीना। एकु रूप तिन ने कर लीया॥
वहु गुणा आपिका तिह लीना। रूपु उदर के बांधन कीना॥
मानो गुर्बणी है मेरे भाई। वनिता रूपु तिह लीयो वनाई॥
चले चले ऋषि पाहे आए। ऋषि सौ तिन ने वचन सुनाए॥
एहि गर्बि ते क्या बाहिर आवै। हमि मनु अबि ते डुलावै॥
ऋषु सभ विधि जानण हारा। मन माहे तिन लीयो विचारा॥
कह्यो मोह सो कपटु कमावो। हमिरे पतीआवनि चितु लावो॥
इसे उदर ते बाहिर आवै। वही तुम सभ का घातु करावै॥
जवि जादम ने इहि प्रतु पायो। श्री कृष्ण पाह आवन चितु लायो॥
आइ कृष्ण सों बात सुनाई। सुण हो प्रभ पूर्न जदुराई॥
दुर्वासे ऋषि इहि बचु कीना। इही आपु हमि ताई दीना॥
इस ही गर्भ ते तुम हि विनासा। अव तुम त्यागो सकली आसा॥
कहा करहि प्रभ देहि वताई। इसि उपिचारु बतावो भाई॥
श्री कृष्णचंदि तिहको प्रतु दीना। सभ जादवने मन धर लीना॥
इसि आपको तुम जाइ घसावो। ताहि घसाइ दधिमाहि रुढावो॥
जादव सभ ऐसे ही कीआ। ताहि घसावन को चितु दीआ॥
सकल घसायो मेरे भाई। रंच रह्यो फुन घस्यो न जाई॥
ताह के हाथ माहि नही आवै। इहि प्रजोग घस्यो नही जावै॥
आतर होइ दधि माह रुढायो। मीन एक ले उदर करायो॥
वाही मीन वंधक कर आई। बधक ने वहिउोयो हताई॥
मीन को ले आयो ग्रहि माही। उदर फारयों वधक ताही॥

आहो आप निकस के आयो। बंधक बांण के मुष ले लायो ॥
जो वसाइ अभ दीयो रुद्हाई। ताहि कूदर उपज्यो मेरे भाई ॥
कूदर सहित जादव विनसाए। ऋषि श्रापु पूर्न भयो आए ॥
शुकदेव ने नृप को समझायो। साईदास आनदु तव पायो ॥२८२

इक दिन श्री कृष्ण बन महि ठहिराए।
जंघ पर जंघ धरि परि अटकाए।
पद्मु श्री कृष्णचंद पग माही।
मानो द्रिग मृग देत दिषाही।
मृग जान इहि वधक मन धारा।
षिच वाण वंधक तव मारा।
नृप परक्षत इहि सुण उचिरायो।
हे प्रभ मोह मन संचरु आयो।
वधिक बाणु काहु हरि लायो।
हरि तांको सरु कैसे षायो।
एहि वीचारु मोह प्रभ दीजै। इहि करुणा कर सुण कर लीजै ॥
शुकदेव कह्यो सुण हो मेरे भाई। सकल वात तुझे देउों बताई ॥
श्री रघुपति जव भयो अवतारा।
तत्र रघुपति सरु वधक मारा।
सुग्रीमु वालु कपि दोई भाई।
वालु नान्हां सुग्रीमु अधिकाई।
वाल कपि वहु जोरा कीना।
सुग्रीम सौ राजु षसि लीना।
ताहि भार्जा भी षसि लीनी।
महा कष्ट बाल विधि कीनी।
सुग्रीम को कछु बलु न वसायो।
आइ एक स्थावर ठहिरायो।
सद हल ऋषीश्वर को जहा वासा।
तहा आइ इनि कीयो निवासा।
रघुपति जानुकी जोहत आयो।
सुग्रीम नें तव ही निर्षायो।

हनूमान कों दीयो पठाई। तुम इसि को ले आवो भाई ॥
हनूमान रघिपति ले आयो। लक्ष्मण बीर सहित सुपु पायो ॥
कपि पति ने तव कह्यो सुनाई। कहा चले श्री रघुपति राई ॥
श्री रामचंद ताको प्रतु दीना। जानुकी जोहनि को मनु कीना ॥
जब सुग्रीम इहि विधि सुण पाई। विस्मक होइ रह्यो अधिकाई ॥
श्री रघुपति कह्यो कहा विस्मायो। कौन वात तुमरे मन आयो ॥
सुग्रीम तव कह्यो सुनाई। मोह बनिता मोहि वीर हिराई ॥
हमिरा वलु तांसों न बसावै। वहु हमिरे पर जोरु करावै ॥
तव रघुपति तांको प्रतु दीना। इहि कार्ण संचरु मन लीना ॥
अपुनो वीरु मोह देहु बताई। जिन तोहि वनिता लोई हिराई ॥
मैं जाइ तिस ताई हति लेवो। तोहि बनिता तुभि को ले देवो ॥
कपि पति प्रभ प्रीत वढाई। अग्नि जराइ प्रतज्ञा पाई ॥
सुग्रीम के सग रघुपति उठि धाए। ततक्षिण किंकिधा निकट आए ॥
साषा हेतु कर्के हरि धाया। सांईदाम मन हेतु बधाया ॥२४३

श्री रघुपति कह्यो सुग्रीम के ताई। वाल को जाइ कहो अधिकाई ॥
मुष से जाइ कर गारी देवो। ग्रहि से किवे वाहिर कर लेवो ॥
सुग्रीम सुनत वही उठि धाया। ततक्षिण द्वार वाल पहि आया ॥
वाह युद्ध दोऊ कर्ने लागे। तव प्रभ बाणु धनष धर्यो आगे ॥
रघुपति सरु सांध्यो तिह मारा। तव ही वालकपि सुपो पुकारा ॥
हे प्रभ मै औगुणु नही कीना। तै काहे मोको हति लीना ॥
रघुपति वाल सों इही सुनायो। तोह वाण मै देणा आयो ॥
वाल कह्यो प्रभ जी कव पांवा। तत्क्षिण अबि मै प्रान तजावा ॥
तव रघुपति तांको प्रतु दीना। एही वचु प्रभ तांसौ कीना ॥
श्री कृष्ण अवतार लीयो जब जाई। तव तोह वाणु देऊ मेरे भाई
वाही वालु वधिक होइ आयो। आण बाण हरि चर्न लगायो ॥
शुक प्रीछत को भर्मु हिरायो। इहि प्रतु निर्भौ सुपु पायो ॥
ऊद्धो हस्तनापुर पगु धारा। पांडो सुत पहि आया तत्कारा ॥
अर्ज्जन सों तिन आषि सुनायो। श्री कृष्णचंदि वैकुंठ सिधायो ॥
तोहि कह्यो सुण हो मेरे भाई। द्वार्का माहि आवो तुम धाई ॥

सकल लोक पुर के ले जावे हस्तनापुर महि आण वहिसावो
अर्जन इहि विधि सुण उठि धायो ततक्षिण द्वाका माहे आयो
जब श्री कृष्ण के दर्सन आवति। विहगम शब्द अधिक उचिरावति।
महा अधिक वनु सोभति भाई। मराल मोर तहा देत दिषाई।
अब जो लोक लेन को आयो। वन महि कहूं कहूं निषयो।
ग्रहि के ग्रहि सकले गिराए। गिर गिर पति सेत महि आए।
काग ताहि ऊपर कुलिलावहि। अपुनी भाषा शब्दु सुनावहि।
नायक सकल बैकुंठ सिधाई। अर्जुन आयो पुर मांही।
केतकि वनिता नैन निहारे। अर्जन निर्ष तिन कह्यो पुकारे।
हे अर्जन तोह कृष्ण सम्हारहि। चौपड पेलन कों चितु धारहि।
अर्जनु केतकि दिन ठहिरायो। वहि सभ बनिता लेकर आयो।
अपुने पुर महि आण वसाई। जो आज्ञा कीई त्रिभवन राई।
तब रचिना नंदि नंदन धारी। द्वार्का पूर दीई तत्कारी।
सेत माहि ताहि पूरायो। कौलापति इहि कर्मु कमायो।
साधो हरि चर्नी चितु धारो। सांईदास क्षिण नाह विसारो ।।२

इति श्री भागवते महापुराणे दस्मस्कंदे
श्री सुकदेव परीक्षति संवादे नबेमोध्याय: ।। ९० ।।

साधो मोहि विनती सुण लीजै। किर्पा कर्के श्रवणी दीजै।
जो कहू चूक परी होइ भाई। किर्पा कर तुम लेहु बनाई।
महा अपार पार को पावै। सिंध अपार हाथ नही आवै।
एक समे उपजी मन माही। दश अवांतार ग्रंथु उपिजाही।
साईदास किर्पा प्रभ कीनी। सकल विधात वीचार के लोनी
साईदास हरि सर्नि तिहारी। साधो निस दिन कहति पुकारी ।।२

मै मतिहीन कहा मति मेरी। उस्तति कर सांको हरि केरी ।।
भाषा मैं जोड जोड कराई। मसा मसा जोड कीई अधिकाई।
साईदास गुर सदा सहाई। तौ मैं ग्रथु कीयो अधिकाई ।।२

जो मै औगुण हार गुसांई। तुम दयावान हों त्रिभवन सांई ।।
हमि जाचक हरि दर्सु जचावहि। तुम दया कर तुमरो नामु पावहि ।।

माधि सग करुणा हरि कीजै। इही दानु हरि जन कौ दीजै।।
भक्त तुमारी घटि ठहिरावै। छिन पलु हरि जी ना विसरावहि।।
श्री कृष्णचद तुम किर्पा धारो। सांईदास को तुम निस्तारो।।२४७

सदा सदा हमि सर्नि तिहारी। तुम दाते हमि दीन भिषारी।।
श्री भगवत दसम स्कंद संपूरण। पढे सुने हरि भक्त वढाइण।।
जय जय जगननाथ जगदीस। पूर्ण पुर्ष प्रभ जग को ईस।।
ताकी महिमा कौनु वषानें। गति मित वांकी क्या कोऊ जाने।।
धर्म्म धरावति लीयो अवतारा। तांका सुण हो सभ विस्तारा।।
लेकर आदि अंत बीचार्‌यो। गुर किर्पा ते शब्द उचार्‌यो।।
जो चितु धर कर मन सुण लेवै। तांको जीवन मुक्त करेवै।।
पश्चम दिशा लीयो अवतारा। मिट्यो तिमर भयो उजोआरा।।
ताकी पूर्व बात वषानति। जो नही जानति सौ सुण जानति।।
लेप की गति लषी न जाइ। वाकी गति कों पारु न पाइ।।
महा समुद्र कों गति जाने। जो जानें सो आष बषानें।।
तांको दर्सनु जो नित करही। जरा रोगु नां तिहि कछु लरही।।
सुणो हृदा धरि जो तुमहि सुणावो। सांईदास नित हरि जसु गावो।।

इति श्री भागवते दसम स्कंदे श्री सुकदेव परीक्षति संवादे
दसम स्कंद नवेध्याय सपूर्णम् ।।समाप्त।।

समतु १८३५ वर्ष फालगुण मासे शुक्ल पक्षे १३ रविवासरेण संयुतायं श्लेपानक्षत्र अतिगडयोगाय कुंभार्क दिन २० तद्दिने वद्दोकी मध्ये लिषत आतमारामु धम्मी।

पद साहित्य

रागु गूजरी

जगुतु सभु माया के फांस पर्‌यो।
भक्ति प्रतीति पुकारि सुनाई सूया सुनिति तरयो।। १।
माया के फंधि आदिअंतिलग निकस्या को दिषरावहु।
अजनि सलाई नेत्री मेलहु आतम माह समावहु।। २।
सिध बूद ममता मनि मांनियो अचति जालु वहै।
निकटि दिवान गुरु नही बूझै किनी नि पुकारि कहै।। ३।
कर्म कर्तूति जरा की पूजी जनिम जनिमि परितापै।
ब्रह्म सिंजानि सहिज घरि सिंचै वीजु कीटि का मापै।। ४
नामु पुकारि तरै कैई कोटी कजिल ते निकसाए।
भ्रम सागिर ते नाम साईदास पूजी सचु मुक्ताये।। ५।

नाम सरि कछु नि लागे वीरि।
धर्न धरायसहति जो अर्पे भुगवे कर्म सरीरि।। १।
असुरिपति लंक समेत दैताहो सुरिपति सण भंडारि।
एक नाम सिमरनि के आगे इतिने दानि की हारि।। २।
चौदा रत्न सहत रतिनागिरि मुक्ता सिधु समेति।
अठसठ तीर्थ घटिही मजिन भी नाह नाम के हेति।। ३।
है गै गौऊ पीताबिर वनिता प्राग मकरि वति चीरि।
वेद लिषै फल नाह निरार्थं कर्म षेत्र सुष तीरि।। ४।
तीर्थ वर्त नेम तपि सजम मर्तु को निदे जानि।
कहु साईदास नाम की महमा होति नि नामा समानि।। ५।

जनि को नामु भरोसा हूआ।
पूर्ण इर्ण गजेद्र उधारे वह गनिका वह सूआ।।
सर्व रसां के ऊपिरि रारा जो पीवे सोऊ जाने।
आधा अधिक होति तहा निपजे अंति काल उरि आने।।

अति बलिवत राविण की सैना जोध युध्या पहुंचाए।
काटिनि सीस राम दल पहुचे ते वैकुंठि पठाए।।
सरि सिहजा[1] परि सांतिल कों सुति नाम भरोसे परिआ।
तजि करि ताति दिष्ट के आगे वेदि स्मृति लै तरिआ।।
इमी नाम ते वेद भडोंहै फुनि वेद नामु प्रगिटायो।
यत्र अजीति भए सांईदासा इति रसना जसु गायो।।

जिति निरती पहुचे सो कौन कहे।
हउ भै चकिति भर्मंका भूला, ह हं करिती निकटि रहे।।रहाऊ
अकारि मकारि रतिन वच, अनिभै मात्र की रूप नि रेपा।
जगिति भगित ते नाम निरारा इति साजनु प्रभु जाय वेपा।।
जिस विर्ष के तैं रस फल चापे रसिक रसा अधकाई।
अषेउ विर्ष की छाइआ अषे पुहपा फला नि पाई।।
बनि षडि जाऊ तिधिरि को भागे धरे ध्यानि वनि चाहे।
कदिली उलटि त्रिकुटी मूदो रहित नहीं बन चाहे।।
मिृगि त्रिण जिउ मुसकाति रहे रह सकी सेज नि आई।
लैन कचु कंचनि तज सांईदासा ही ऊस पास मिमराई।।

दुभदा मनि ते कविहू नि जाइ।
तोरि नि साके पिंजरी पगिरिपु जो हरिकी सर्नाइ।।रहाऊ
सर्व शास्त्र सुर्त सवृत्त लै दौरचो वेद नि बाति सुणाइ।
नेक रहति सभ बसुधा मापी जितिनी सुर्त बकाइ।।
आनद दान तीर्थ करि मज्जनि निर्मल जलि इशनाइ।
प्रात मुप प्राहन सजुगिता कर्म सहित कठणाय।।
निविली कर्म भुअंगम भाठी नाम कविलो उलिटी उलिटाइ।
नगिन रहआ वण पडि मैं जटा जूटि उरि भाइ।।
इसुअरि हस अदोष अहन जल इहि गति लपी नि जाइ।
कहु साईदास दुभिदा की चोटे कर्म सति कोटि भरिमाइ।।

---

१. शरशय्या।

दसि अवितार

देह जिसौदे तेरो जनिमि सकार्था व्रिजि नाथ को लोरी देह री।
सुर्द[1] अधिक सुहाविरणा तुम करी षिलौना लेह।।
सकिल श्रिष्ट का बीजु था सषासिरि वेद लोए।
कुदि पसारिन नाम ते तदि प्रभि मीति भए।।
मघु कैटे कार्न कछि रूप द्रिग जनि चर्न समेत।
पिष्टी धरिती राष के आकासी ध्रू केत।
इह लरिका वैराह था मानोर्थ कारण छेदि।
सूकरि धरिती उधरी सेत सुमेरि सवेद।
नरि सिंघ न पूछनि अर्ध नरि देपो चर्त अचर्ज का।
रवि नछत्रा वाभु काल हरिनाकस नाल इह वचनु था।
सेसाअर्जुन परिसराम अपेड करण गिआ वस पिआ।
देष धेनि भुला जमदिग्न दी नाल कुठारे दे गति गिआ।
कनिक पुरी निज बद सुरि तारिगणको सुप हेत।
अधम दमेही कटाइआ इउ रघपति बाधे सेति।
बलि पै गए त्रैलोकनाथ गह अरिपी धर्न अचेत।
आध करु मापने इउ बाविन वेद समेत।
नौउचारि अठारा सुक वदनि अध्यातम सकलि समेत।
अजिहूं वर्ण नि साकते कस दलनि व्रज हेत।
वोधि गिआ सुरि चापिआ सुरिती का नौउ नाथ।
अतु न पाने बोधि का तेरी कथा अगाध।
कलि युगि मातगी घरि आविरणा कलि कारण निह कलक।
साईदास दस अवितारा जो सुने वैकुठ जाहो निसगि।

दैया करि तारि पतित को तार।
अघमर्दन समरथ तुमु सूझो दीनानाथ मुरार।।रह
तू पतित पावन मैं बडो पतित हों मेरे औगन गुण न बीचारि।
जो कछु घाटि कीए पतिता सो सो तुम तुम लेहु सम्हारि।

---

1. सुन्दर।

हेमटुकनिआ[1] तिल पलि रींधे ईधनि चंदन जार।
कदिली काट कडआरी बोई अयसो पेतु सवारि॥
पांतो दुष्ट कुटल मति मेरी मैपता सो कह्यो पुकारि।
छाडि चल्यो लय हाथ पछोरा जूए सो धनु हारि॥
सिध वीच झकझोरि करित हय ना उरिवारि ना पारि।
साईदास के तनि अबिरिदास कों अपिना मुप दिपारि॥

आनद को परिवाहु जना को दीआ।
जिन के भागि चूको भ्रमु तांका अति प्रीतम करि तिनहूं पाआ॥
गगि प्रवाहु वहे, वसुधा परिगवनु[2] करे, जाइ तीर्थं डोवे।
नामु प्रवाहु वहे हीयरे मै सत मिले ते परिगट होवे॥
इह प्रवाहु प्रहलाद वचन हित सुकि नार्द रीझायो।
चारों वेद करे जाकी स्तुति धंनि बदनि जित व्यास सुनायो॥
गुरि की क्रपा साध की संगति आनदि की निध अगाध उठीआ।
किर्न विहग नाम रुचि साईदास चात्रक को चित पावस लीया॥

रागु भैरों

जागीयो क्रपा निधानि स्यावरे कन्हाई।
उडिगनि अबि भए मलीनि दीनि टेरति द्वारि द्वारि॥
सुरिभी सभ हूंग करिन औध रजिनी आई।
दिउज उचारि निगम करित प्रातिहू सिरि सिषा धरित॥
वार्ज[3] अति विगस भए देषति अरुन्हाई॥
गावित गुपाल लाल नद लाल के दयाल।
व्रजि की व्रज नारि जेती आरिती ले आई॥
निर्षती मुपारि बिद बारि देत कोटि इद।
नरिहरि हरि चर्नन ते आनदि निध पाई॥

---

१. सभवतः यहां 'हेम मटुकनिया' शब्द है।

२. परिगवनु <परिगमण=परिक्रमा।

३ वार्ज <वारिज।

स्वामी हम वारि वारि दासु तिहारो,
तू ठाकुरु हमारो ।।
पीसना करो पाणी भरों असु असिथान सोचो अंगना वहारो ।
काग उडारो लोचौ पै लोचो उपिले ले आवौ काठी कटावो
औरि लिआवों घासा ।
हम तो ठाकुरु करि जानै तुम करि जानो दासा ।।
चमेली मलो कांघी करों आसन पैठावो ।
चर्न पषारो धोती पछारो इह औसिर मोह पावो ।।
ले भारी रहो चर्ण गहो ठाढा दिज द्वारे अवृत जलि लेन कों ।
मों को स्वामी चितारे महाराज तुम को सभ लाज अपुने करि जानो
साईदास की वेनती फुन गर्भ न आनो ।

ब्रह्म हस्त, भगिवानि पादके, ईसरि मुकटि वसाई ।
भेद पषांण सगर तै तारै भागीर्थ को देन्ह वडिआई ।।
भओ रहस सहस्र समुद्र को सुरि नरि कहे गंग वहि आई ।
साईदास इहि गगा जलि ऐसो निर्मल द्रिष्ट परिआ कोऊ नर्क न

गगा जी तेरे दर्सन तो वलिहारी ।
इह गगा जलि ऐसो निर्मल जिन सकिल श्रिष्ट तारी ।।
शाम शरीरो उपिजी गगा मुकिटि वसी महादेवे ।
भूधरा जांकी महिम न जानी सुरि नरि जांकी सेवे ।।
सर्बत गगा दुर्लभ कहीए तीनि विशेष असथाना ।
दिष्ट परी सभ पाप उतारे पीविति महिम न जाना ।।
जगम जोग जती सन्यासी पीवितकै अविघाए ।
हरि दुआरि हरि मूर्त पर्सी जनिम जनिम कै लाहे ।।
सागिरि संग रली भागीर्थ कीन्हे अनिक तारगा ।
साईदास मनु भजनि होवे वैकुठ जाउ निसंगा ।।
इह पराग मनिसा कों दाता वेणी सगिम तीरे ।
दिष्ट परी सभ पाप उतारे निर्मल वुद्धि सरीरे ।।

रागु प्रभाती

द्यालि[1] हो कृपाल माधो सभनि के प्रतिपाला।
आगे आवित पै पठाविनि पाछै आवित वाला ॥रहाउ
बर्न कीटि पष पसु विराजित कछु गाठ ना वधाइउो।
देन हारि करि सम्हारि विरिद ही वहाइउो ॥
पप्यान मध्य गुफा कीटि मार्गु नही कोऊ।
तांको कित भांति देति सभनि का प्रभू सोऊ ॥
भूम मद्ध पैं अकासि जलि मै जो जीआ।
कर्न कार्न प्रभ अपारि जानिआ सो कीया ॥
जैसे जानि तैसे देति आतिमि विसुवासा।
चर्न ओटि रिदे राषु तां सो साईदासा ॥

हर्प हर्प हरि को जसु गाउ।
वारि वारि फिर जन्म नि आउ ॥—रहाऊ
मूल द्वारि की रोको वाटि। चारी देत है वज्र कपाटि ॥
नाभ कुंडली भउों प्रकासा। रिदे सरोवरि कौल विगास ॥
शिव अरि शक्त समोकरि जानो। पौनि मध्य गुरि ज्ञानि विषानो ॥
जबि लग रसना पीवै पानी। तबि लग भज मनु सारङ पानी ॥
तुरीआ तत्त तहा अनुरागा। वादर बिनु घनि वर्षनि लागा ॥
फूटा तिमरि जोति प्रकासि। इह विध प्रणवै सांईदास ॥

कैसे मैं वर्नो तू अरिधक उरध।
वर्न नि साको द्ययाल वाल कवि रिर्ध ॥ —रहाऊ
विरछो नि पत्रो न मूलो नि डाली।
पुहपो नि गधो वासो नि माली।
तेरा निरभोउ वाडभन्नानि घडिआ।
वजे निशानु पुरातनु जडिआ।

---

१. दयाल।

सधा सनातिन साषी
एक महादेव न भाषी।
आतम ब्रह्म भया निहके
साईदास अर्चा नि पूजा न देवी नि

सुनि लीजे भगिवानि बिथा मेरी सुनि लीजे भगिवानि।
मैं अकेली एह पांचि वली है मारि कीऔ हैरान।
लोभ की लहिर लपेट लीओ है क्रोधु निचावै तानि
भ्रमती मनिसा टिकनि नि देती जिउ भ्रम तर्फत है स्वानि
काम कुचील कर्त हैरानी त्रिशना की सतान
मोह जंजीरि पर्यो अति भारी छूटि गए अविसान
पलिक न न्यारी होइ जीइते कपटि कर्न की बानि
तुमरी दैया बिन कैसे छूट दुष्टन के वस प्रान
मोतनि पीर कहा कोऊ जाने प्रभ मेटनि की बान
साईदास निज दुआरि पर्यो है, तू विपत निवारनि शाम

षगि नगि मृग चात्र धनिष[1] कुंजरि भूधरि भ्रिग
कविल काम घन चद्रमा एह कही अति सारग्य

दूरि नि जावहु जनि राघवे षेलो आडनि घर्के[2]।
नैननि सो न्यारो जनि टरो मोरी छतीआ धर्के ।।रहा
निस दिन रहत चटापटी राम तोके डर्ते।
धनिप बान धरि अपिने हाथ तो रोग तर्के।।
एक बाति मै सुनि नीके चितु धर्के।
लकापति कैसे मरे अभमानी डर्के।।
कौशल्या विसमे भई जीय आनद भर्के।
मोह अचंभा यगिदीस कहा नान्हो से लर्के।।

---

1. धनिप<धनुष्य।
2. आंगनि घर के।

सषी ए मधवनि विषु भओ है छाड चलै अबि रीत।
वादिर होए नैन दुइ हर बिनु वर्षे नीति॥
असअनि[1] नान्ही वूद जिउ कुचि ऊपरि ढुर आह।
एह प्रभु है सांईदास कों हम को किउ नि मिलाह॥
एक चात्रक अरि वैन सुनि सुनि धुनि विकल भई।
टूटी जाति नि स्याम सो प्रीति जो अपै भई॥
प्रेम चषाओ षस लीओ जाति न बाति कही।
साईदास गोपी कृष्ण बिनु चात्रक होइ रही॥

राग बिलावल सुधि

ठाकुरि मेरा रंगुला सभ रंगि मैं राता।
दीनानाथ दियाल है सभिहूं सुषिदाता॥—रहाऊ
अंतिरि जामी जगि पिता सभ मैं जाकी बास।
मतु को जानै दूरि है घटि घटि ही प्रकास॥
क्रपा होवे गुरि चर्न ते कसक चिन लीजै।
गुपति चिहनि जा पसरया अपिती जिपती जे॥
जहां जहा देषो तहा तुही दूसरा नाही कोइ।
मर्बषंड व्रहमंड मै तत्त जोति की लोइ॥
सहज मिले सुष पाईए दुष दीने डारि।
पूर्ण गुरि मिलाइआ सांईदास वीचारि॥

मुपि बिनु अंवृति मै पीआ मैयों भयो दिवाना।
सुधि वुधि भूलि देह के कछु गुरिमुष जांना॥—रहाऊ
जानि समानि जानि मै ग्याना सो ज्ञाना।
षेल हमारी परासो जहां ग्यान नि ध्याना॥
तीनि तजे तुरीआ तजी पर्से भगिवाना।
सांईदास उ दासमति तहां पदु निर्वाना॥

---

१. असअनि > आसू।

राग तिलगी

जो कहे यारा जौ कहे गमु कोई ठो नाही।
महिल फकरि के माह आवे किन्हे शौकहे॥—
दुनिआ वातिशाही चंद रोज फकरि अटिल वातिशाही।
रोज नौतनि दीवानु सदा दा तहा गमी नि काई॥
फकिरि के तपित पर अपुतु है कोई जौहरी जांने।
जोरु जुलुमु तहा कछु नही मुलुपु जापता मांने।
तीनि लोक के अतिरे वडा फकरि का वाणा।
आंनि जगति माने सकल नही जोरु जुलिमाना॥
राह मो परी है जेवरी मानो सापु दिपाई।
मैहर्मी थे निर्भे भए अजानि भै पाई॥
निर्दुंदी निहकामता भूले हाल दिवान।
साईदास के दयाल क्रपाल भए लगा चिहन का वाणा

भजु राम राम सुणु नदि तूं व्रजि को अजि तेरो
आगे भूम भंडारि तिहारो मै आवित नही नेरो
मथुरा जाइ मिलयो वसुदेव कों गहि अंचिर करो मेरो
तुम तो लोक वडे अनिचारी गहि सुतु राष्यो मेरो
किउ पगि उलिट दीए फुनि तांको ना कुमत लगि तेरो
साईदास के नंद के लोइ नि देष्यो तवि जसुदे उठि टेरो

लाडुले जनिम की भूम पछानी देवकी गोदि जाइ जवि वैठे
नदि भैया हैरानी थाकी कुल वृजि गोकुलि थाको
कठिनि वृथा मनि मानी उठाई असुर हाथ जब दीउो।
एक घटा विहानी
जवि हम सुतु तुम ताति कहावो जसुदे जसुमति रांनी।
हम तो सुति काहू के नाही तुम विध अजिहू नि जांनी।
नद चलियो पछुताइ नैन भरि सुनि बक अपुनी कांनी।
जाका सी ताहू होइ मिलआ सांईदास यह अकथ कहांनी।

रागु गौरी

किउ विसरी मनि किउ विसरी राम भगित मनि किउ विसरी ।
उहु ठाकुरु सभना को पूर्ण पर्मानंद गुपाल हरी ।।—रहाऊ
ममिता पटिल पर्त निसिवासरि डाकन डोरी उमिग लरी ।
और सभे ही तुमरे अतिर कौनि कुमत लगि भगत टरी ।।
लालच लेन देन तनि पहर्न ग्रह अतरि कछु काजि करी ।
लोभ मोह् अभमानु नि विसर्यो काम कला चित नारि धरी ।।
इसि वीर्ज ते विष फल लागे रत्रि-सुति तत्नबि दुआरि परी ।
आजु काल छिन पलक महूर्त गागिर फूटे जरि कजरी ।।
करु हरि भजिनि साध की संगत जो सुक व्यासे मुष उचिरी ।
कहु साईदास दास के दासा औरि नही कोई गल हमरी ।।

पारिस ढूडनि अनिकति जाये,
कितिहूं नि दूरि अदिष्ट निकटि अति साध सगित ते सहिजे पाये ।।
अष्ट धात जित कचनि होवे सो पारस पास कुवेरे ।
यंत्रु मुक्त का पारस गुर पहि निगम दिष्ट कोऊ हेरे ।।
जिह् पारस प्रह्लादि कचना जरा मर्ण भ्रम मेटियो ।
सोऊ पारिस सुक शकराचार्य अक्षय द्वादस भेटयो ।।
यंत्र यत्र में सकिली सम्या हंस हंस करि गावे ।
तेऊ पारस वैकुंठ निकटि अति परि पोविति सकल अघावे ।।
नषि सिष लौ एका मति उपिजो दूजी नाह् वरेहा ।
सूरि किरण वादरि जिउ साईदास मणि चमक तिवि विदेहा ।।

कहो कोई नाम विनु मुक्ता,
देहा पुरातन ले चल्यो गज इद्र ध्रुगन सूहटा सुनिता ।। रहाऊ
शिक राज बध कै हाथ थाकै कलिप यत्र नि पात ।
तेरे नाम लगि मुक्ता भआ कछु वारि नाही लगि जाति ।।
सागिर जसु पठ जवाहरी विच कचु तै पाओ जमणा मर्णा ।
नामे की नावे जो चढे तिन्हा पुछो अजाणा ।।

रि कोटि तीर्थ दान सयम आपहू षात
् माह तत्व नि विदही फिर जून सम भ्रमत
पंष पंषी तने माही असरीरि सुर्त निधा

हु कोई नामु विनु तरिआ ॥
रि लेहु करिणा पहुज रहु तै शर्मु किउ करिआ ॥—र
जित नाम गनिका ऊधरी प्रहलाद सर्न पैआ।
अटिल पदिवी दई ध्रू को नाम संग गहिआ।
अपिती जमन मूर्ष निरा कै वारि आवै जाइ।
समिभइ निही समिभआ क्या उठे भर्म भुलाइ।
महल मदिरि देष कै मनि मै कीओ अभमानि।
एह माया थिर कछु नाही हरि चेत लै भगिवानि।
गोविद नामु अमोल हीरा करि साध सगि निवासु।
चर्न कविल ऐक वेनती कहियो प्रभ सांईदास।

रैजनि अनिकति जाये लैन।
दुर्गध देही जगित की संतनि की कामधैन॥
सति चर्न पहु वेनती इकु अचरुजु कहा जु आपो।
लष सागिर अरि बूद एक है सभो दिष्ट करि रापो।
जोति प्रगिट अरि जात नाह जनिमे ते अंत मरे।
गगिन की निर्त नि जानिही सपत प्याल परे।
आनि नि सको अगोचरी क्या आनो आनि रही।
सांईदास तेरे ही अतर बस रहआ मुशकल कर्न सही।

साधो एह अचिरिज मोह आवे।
इस मंदरि मह कौनि वसेरा कौने दह दिश धावे।
रकित विद ते साजि निवाजा किह विध रामु समाया।
कीट्ट भआ क्रियनि मै वसिआ नरिकै कौनु सिधाया।
लोकु कहत एह मूया प्रानी मूआ कौनु कहीजे।
मूए ते कहू जाइ निल्हाना एह उतिर मोह दीजै॥

सुनी अति निकटि कहनु नही आवै बिनु देषे क्या कहीए।
साईदास भजु गुरि की सर्ना भ्रमु फूटे सचु लहीए॥

कित विध राषो मोह मुरारी।
तनि अनंग मृग माता इहि वियोग मै भारी॥—रहाऊ
विदआ कर्त जात निसिवासरि नोरि प्रवाह जो वहउो।
सील सतोष दान तप सयम करि नै वेद पुकारत रहिउो॥
दो नेत चीत पांचक आगम पचे मोहे एन्ही।
अवि मोरी काम कुटल मति वयरी वाधनि धीर्न देन्ही॥
आदि अत मध कीर्त की निध अपे नि आवे गाथा।
इह जगु पुहप फध प्रीति का अलिवरि जिउ पै फाथा॥
मै तो भील भर्म सपूर्ण जिउ किउ भीत चुकावो।
सांईदास की सकल वदिना अपिना करि छुटिकावो॥

तत्ववेत्ता विर्ला कोई रे।
जै तै ब्रह्म पछान्या उनिमनि तेरी अभे सरीरी होइ रे॥—रहाऊ
थीउ तारु तारु आप ही तेरा तार्नहारि नि कोइ।
भौजलि तुल्हा[1] तनु थीआ जे तत्ववेता होइ रे॥
चारो पढे मुषागरी नित कचुनु देह तन तोल।
गुरि बिनु पारि नि उत्तरे जे तीर्थ पीवे भ कोल॥
जटा मुड तन लेपना करि पात्री करे अहार।
गुफा सरीरे जोगना जे ढूडे अलिष अपार॥
तीर्थ वेद वरित नेमु गुरि नामु जिन्हा परिधानि।
जगित षलौना जोगना तत्तवेता मनो नि मानि॥
भविन चतुर्दस तीन लोक मै अनिकति ढूढनि जांह।
साईदास बूंद समानी सागिरे सागिरि बूंदे माह॥

हरि भज भर्म सभ फांसी।
पाषंड छडि निवारि दुर्मत चेत अविनाशी॥—रहाऊ

---

१ तुल्हा—छोटी नौका।

इकु जान रहु कोऊ नाह दूजा अकथ कथियो नि जाइ।
चलु अचल मूर्त एकु कहीए सर्ब रहउो समाइ॥
करि कोटि तीर्थ दान सजम युगित जोग फिराह।
जटि मुड लेपनि सभ अविर्था जा दुष्ट वस गति नाह॥
सर्ब भूत सरीरि देपे तुही प्रान अधारि।
सभ होइ रहु तहा कोट तीर्थ दआ ब्रह्म विचारि॥
धूप दीप तहा पानि तुलसी चोए चदन वासु।
कौन पूजा करो तेरी सर्ब तुही निवासु॥
जहा पुहप तहा विच वासु तूहे तेरी कौन पूजा करो।
साईदास होरु काई ओटि नाही तेरे नाम ही लगि तरों॥

माधो जी मनु पकर्त नही ठाह।
क्रियाहीन नाउ अति डोलित जलि सागिर अस गाह॥—रह
अगन तपति प्रतिविब भान को मृगु भूल्यो जलु जान।
अैसे ही रघुनाथ चर्न तज कहा कर्त मनु हान।
कीचि विच वास रहे जल-दादिर[1] कौल प्रीत नही जानी।
लोग विलोक स्वाद सभ लपटउो विसरउो सारङपानी।
सूघत फर्त अनेक अर्न त्रिण निकटि नामु रस तेरे।
नर्हरिदास तुछ जगि जीवण हरि भजु सिमुरु सवेरे।

अवि मनि चेत लै गुरि ज्ञान।
जनिम मर्न का ससा चूका पाए पर्म नधार्न॥—रह
अगम गम जाके कछु नाही अबगति अपर अपार
सुन्न सविद ले रहति निरालम तत पद करि विउहार
गर्जत गगिन मगिन गति उपिजी सहिज भाउ रिद आन
पसरी किर्न उजिआरा हूआ अधै उर्ध समान

1 जलदादिर > जलदादुर = पानी का मेंढक। सपूर्ण पंक्ति का अ
जल से उत्पन्न होने वाला मेंढक कीचड़ मे रहता है और वही क
कमल भी है, पर मेंढक की उससे प्रीति नही। इसी प्रकार स
प्राणी की इसी घट भीतर रहने वाले कमल स्वरूप, प्रभु
नही है।

शविद भेद घटि भीतिर पैठा लैश्रा लीन लिव जान
कहु सांईदास विकटि घटि पाए वाजह श्रनह नीशानं ॥

श्रवि मै सांचो पतित हरी।
श्रौरि पतत सभ झूठ कहित है कहीओ वाति षरी ॥रहाऊ
सूरि कहा दो काम विगार्‌यो पतित ही नामु धराइयो।
श्रतिरि ध्यानि प्रेम लिव लागी सहजे ही गुनि गाइयो॥
श्रजामल्ल वै गनिका कहीए भक्त पुरातन श्राही।
श्रापु दीए ते मैल उतारे प्रगिटि भए जगि माही॥
सुनिने जाह न गिनने श्रावह जो हम कर्म कमाए।
श्रागे हूए नि होवे कविहूं नए नए उपिजाए॥
पापु करे सो पापी कहीए श्रनिकीए किह पापी।
सांईदास सर्न भजु हरि की हरि ही सर्व बिश्रापी॥

जानिकी नाथ सदा सुषदाई।
लीजै भोजनि श्री रघुराई॥
माति कौशल्या करी रसोई भोजनि श्रानेक प्रकारि।
छपनि भोग छतीसे विजन षटिरस धरे मदार॥
गगा जल इंद्र भरि ल्याए चर्न पषाले हरणवति वीरि।
श्रौधपुरी मदर श्रति नीको वैकुंठ धाम श्री सर्जू तीरि॥
पनिवाडा सनिकादिक ल्याए जै विजै दोऊ ठाढे द्वारि।
पान सुपारी लौगलाचे नार्द ल्याए भले वीचारि॥
घंटा तालि मृदगि झालरि वाजे सष सविद झुनिकार।
पनिवाडा सतनि कों दीना वांकी महमा श्रपर श्रपार॥
सनिमुष राम बांवी भुजि सीता पुहप पत्र लीने करि धारि।
साईदास ध्यानि रिदे पाही दर्सन दीजै नेत्र निहारि॥

शबदि सुर्त दुइ कनी मुंद्रा पर्मत वाहरि षिथा।
सु न गुफा मै श्रासनु वासनु कलपति विवर्जत पथा॥
श्रषंड ब्रह्मंड विभूत को वटुश्रा एह जगु भसमाधारी।
ताडी लागी त्रिपल पलटीए छूटित नाह पसारी॥

मेरे राजनि मै वैरागी योगी मतन सोग वियोगी
जनिममर्ण का संसा चूका फिर आवागविन न होगी
मनि पविना दो तूबा करिहों सारे जुग जुग साजी
थिरि भई तती टूटित नाही तौ अनिहदि किंगुरी बाजी
सुन मनि मगुनु भैआ है सिरपरि ता मागा डोल नि लागी
साईदास तहा पुनरिप जन्मु नहीं तहा पेलेगा वेरागी

रागु आसा

बाबा जी निधानि निध तेरे पास ।
देप निग्म दिष्ट निरतिरी गुरि पूछ के नरिदास ।।
जित निधी पसु पष गनिका मुक्त ठौरि निवासु ।
सोई अभे पदि ध्रू नारिदे पीआ वेद रस सुक व्यास ।।
सकल भूति व्यापता प्रभ वनिउो घटि घटि स्वास ।
सांईदास को प्रभु तिति किते प्याल[1] मध्य अकासि ।।

या गति कहे जे कोइ जन जान।
गुरि कृपा ते भर्म भागे प्रगिटि होत नीशान ।।
कहा जे मै कह नि सकों अगिम का व्यवहारि ।
अनह धरि परे भाती तहां भूझनिहारि ।।
सहिज के मैइदान या मनु सुन धरो ध्यान ।
विमल गति ते तिमर फूटा तहा पूर्ण ज्ञानि ।।
कोई जनि जान हरि रसु पीवे अवृति उलिट मज्जनि करे ।
साईदास निवासु ऊहा जहा वहुड नि मरे ।।

हरि भजु जनिमु लेह सवारि ।
तू भर्म भूला क्या फरे हरि चर्न हिर्दे धारि ।।
वेद स्मृति सकल उचरे वारि वारि पुकारि ।
रघुनाथ विनु कोऊनाह समरथ जो उतारे पारि ।।

---

[1] प्याल = पाताल ।

भूपत ति राजे[1] जाह छिन मै नाह थिर ससारि।
अभमानि करि सभ पचे धर्नी देष रिदे बीचारि॥
ओआत चंदन अगिर लेपनु सहिज करि सीगारि।
साहुरे तै जाणा सिरपरे पेउके दिन चारि[2]॥
भजु सर्न हरि की छाड दुर्मत दुष्ट सकिल निवार।
साईदास की इक बेनती करि सर्न सर्न पुकारि॥

पीओ रसना रसु जो मुनि जनि पीता।
जिन पीआ तेऊ नरि सकल अजीता॥
एह रसु अमृत शकली स्रिष्टी। बिरले को प्रगटि औरि अदिष्टी।
वेद पढो तट देहरी अघारी। निर्भौउ पदि जित तेरी निर्तनिहारी॥
खेचर पाषंड भर्म नि भागे। काचे मटि सो समाध नि लागे।
कौनु निर्त जित तेरी पौहच नि पायो।
ब्याघरि होवे सांईदास कूक सुणावो।

सही कर्न को मै कित घरि जाई।
नेत्र निहारी बसआ सकिली थांई॥
तीर्थ वेद सकल वैरागे। जित घरि जाई दियाला तितहीं तू आगे।
दू चौ पद षग त्रिकुटी अजेती। प्याल परे रे दयालि गगन समेती॥
रवि सागरि वय सस जो निछत्री। वण फल पेडी दिआल पुहपी सुपत्री
गुरि पुछ सांईदास ढूड लै आये। कांते की कनिक कुरग जैसे नापे॥

१. भूपत ति राजे—यहां "ति" का भाव अते=और से है।
अर्थ होगा—भूपति और राजा लोग एक क्षण मे चले जाते है।

२. साहुरे=ससुराल, पेऊके=पीहर, सिरपरे=अवश्य। तै=तूने। सपूर्ण पक्ति का अर्थ इस प्रकार है—तूंने ससुराल अवश्य जाना है, पीहर के (यह मौज मेले के) चार ही दिन है। इस भाव की जायसी के पद्मावत की इन पक्तियो से तुलना कीजिए—
ए रानी ! देखु विचारी। एह नैहर रहना दिन चारी॥
जो लग अहै पिताकर राजू। खेलि लेहु जो खेलहु आजू॥
पुनि सासुर हम गवनब काली। कित हम कित यह सरवर पाली।
मानसरोदक खंड

घरि विच वसग्रा तेरी हरि निर्त न जानी
एह क्या बोले साधो अभै विरानी ।।—रहाऊ
मूलु सभालु घरि कित बिध हूग्रा ।
जित विध हूग्रा दिग्राल जाइ वसूग्रा
इटा बूद रकत को गारा । धनि धनि राज उसारिग्र हारा ।
इस घरि को नित पोचे परोले । अभे बिरानी साधो एह क्या वोले ।
घरि विच तजि गिया कैई कोटि मुकनाहल ।
जांदरि पोले सांईदास ग्रनत गुजाहल

सुर्त रही सुर्त कहा गई । चाहत थाके दयाल इह नि भइ ।
कहा ते ग्रावे कहा ते जाइ । ताका मार्गु कोई न बताइ
पाछे पकरि पकरि रवि किर्णी । नेत्र निहारी दयाल निज घरि फिरनं
कहिना श्रुना सभ तुमरी गाथा । सांईदास का प्रभु दह दिस लाथा

जसु गाउ छाड़ दुराउ रे जनि जानि हरि जसु गाउ ।
तुछिमित भलि मूलु बांका तू ग्रादि इस की जानु
ग्रस्त तुचा का पिंजुरा विच नामु हे परिधानु
तैं न सुनि ए गाविता ग्रनि पास गावै गीति
मलि नीजि गाडियों ग्रातमा मिटि गई ज्वाला भीत ।
जे लहै ज्वाला भाग तेरे जरा मर्ण ते रहे ।
ग्रगाध ग्रवर्ण ग्रकीत को पर्वाहु विच वहे ।
सागिरि ज बूदे माह था फुनि रच सागिर पई ।
सहिज के घरि मजुरे जित जाय पिछली क्षयी ।
मराल सागरि ग्रतरे चुनि चुनि सघूटे खाह ।
ग्रभ विनु सागिर सुपट सांईदास झोल पीऊ ग्रघाई ।

संतो भक्त[1] का यहि स्वादु ।
गज इर्ग ध्रू गग्राका तरी तिल्परस तर्‌यो प्रह्लाद ।।

---

१. भक्त < भक्ति ।

कपिलादि सुकि जड भर्थरी तिन अभे पदि रम रह्यो।
जाके पदिम नाभि निधानि नारद निगम दिष्टी लह्यो।
वपरी जु गौतम भार्या शीलवति जतिनी।
लज्जा निवार्ण शर्ण उबिरी भोरथे पतनी।
प्रभ डंडयो नचि तिलक भूला उरिग देह निवास।
अपिती जु जगु भौजल बहे तेरी शर्ण सांईदास।

तेरे सिमरण की गति मै नि आवे।
विशु की वेल रही छाइ अंतर विषआ नि छाड सुभावे।
ओहो गर्भ भला जनिमे ते स्मिरी जित उरि ध्याआ।
लिपन ललाटि चोटि मूडिन परि सिमरण गोत्ता आया।।
गुडती दुग्ध जिमूल रसा को आनंदि अनगि उठाआ।
चित्त चित्तरंग चातुरी उपिजी पढ जन्मा किने न पढाआ।।
जौबिन गिआ करि अपिनी गाथा अभमानियो रूस भहूटा।
दीपक जोति लिलाट चंद्रमा किउ वले जु तेलु निखूठा।।
आदिज भई अध का पीसो क्या जित मुप मोडे।
कहु सांई दास भजु गुरि अपिने फिर मिले त कबिहू बहोडे।।

लाहा लेहु रे कोई लेहु
मानिस जनिम दुलंभु है जिण चल्यो अविसरि एह,
लाहा लेहु रे कोई लेहु
निसि विर्छ पंषी आइ वसयो उठि चलयो प्रभात।
आआ त स्वास नि आइआ कछु वारि नही लगि जाति।।
जैसे धनि जुआरी संचआ वहु षेलन के चाइ।
षेल के धनु हारियो धन हार के पछुताइ।।
जैसे नीर भर घरि चली साधनि सिरो उलिटि गागिर परी।
पछुताहगे पानीहारि जिउ, ग्रह जाइ रीती परी।।
जैसे फूक भरि सीनाह[1], छुटिकी पविन की तेरी देह।

१. सीनाह—तैरने का साधन। पानी की मशक के समान बकरे की खाल जो चारों ओर से बंद होती है, एक ओर से मुह से तैराक हवा भरते हुए उससे तैरते हैं (पजाबी शब्द)

राम की भजु सर्न नरि हरि अति एह तनि षेह ॥

रे मनि अपति जप हरि नामु ।
श्री पतित पावन विर्द जाको नाह यम सो कामु ।
मृग चाह विध नरि सिह बाध्यो बधक कीओ उधारि ॥
अविर सर चरिणन लिगायो भयो मुक्त दुआरि ।
सकटे जलि भीतिवे गजि कौणु विद्या परी ॥
काम भाम जि करित निशपति किह विध तरी ।
दीनि द्विज की पैज रापी कौण कीने दान ॥
करि कृपा प्रभ चारि दीने राषु भक्त को मानु ।
एक छिन्न मै अनिक लील्हा पर्म पूर्ण देव ।
गुण नाह अवगुण अधक है जनि करित नरि हरि सेव ॥

वनि घनि बीचि विराजत मोहन हठ तजि चलि मिलु प्यारी री ।
लता प्रफुलि सुगध सभे विधि विहरति कुंजि विहारी री ॥
मोरि चद्र का अति सोम कछु राका चंदु हिराओ री ।
नगि मुक्त गुजा छबि निर्षत जगि मगि रूपु दिषाओ री ॥
पकजि नैन भौंहु अति लपटि वीच तिलक बिध दीने री ।
मीनि कुरंग हनि भइ षजनि कीरि मृग छबि छीने री ॥
कुडलि लोल कपोलि निकटि अति डोलति किह विध दीनेरी ।
मुष सागिर पूर्न जलि अंतिरि क्रीडित मकरि सुहाए री ॥
दड विसाल वनी करि पौची मुष मुरिली कछु सोहे री ।
छुटी समाध अगाध संभू की सुरि किनिरि मुन मोहे री ॥
उरि वनी माल लाल की आभा तिह मिल अग सुहाए री ।
गगि तरंग उलिटि ऊपरि ते नीला गरि छाए री ॥
पीताबिर पट कटे छुद्र का कछु मध रोरि सुनाए री ।
व्रजि वासी निधनी के धनि जिउ देषत सुत उपिजाए री ॥
पूर्न ब्रह्म भागि जिह मिल दर्सुनु पाओ री ।
करिणा सिंधु क्रिपाल कृपा निध लघ नरि हरि जसु गाओरी ॥

नाम समाल निहाल करे जिन जान्या जगि तेऊ तरे।
ब्राह्मण योगी ते संन्यासी। जो जाने तांकी गति नासी।।
साहबु साचा प्रभु अबनाशी।
ठोलीये अंबे तेऊ पीरि। शेष मसाइक तेऊ मीरि।
हिर्दे राषो गहर गंभीरि।
काजी मुला तेऊ शेष। लिष लिष राषे एक अलेष।
तेरे नाम विना सभ पाषड भेष।
सुनिहो हिंदू मुसलमानि। दोनो राह कीए परिवानि।
साईदास का प्रभु अलष निधानि।

जाचो राम नि जाचो औरी।
आनि जाचिती रसा बौरी।
कहु शिव शक्त कहु शिव देवा।
औरि देव सभ तुमरी सेवा।
थाट घाटि घटि घटि कों दाता।
स्थाविर जगम मै तू राता।
कार्ण कर्ण तुही सभ ठौरा।
केऊ स्थित केऊ उठि दौरा।
वण अवर्ण सगली की लाजि।
अंतिर जामी तू महाराज।
भ्रम भौजलि गहते सभ कोइ।
तुम विनु औरि निवाहति कोइ।
निपजे षपितेउ व्यवहारी।
नाम पंज राष लेहु मुरारी।
जलि थलि मध्य लसे रवि माह।
जहा दाता तित्पहुचल जाह।
दीनानाथ अनाथ मुरारि।
संत चर्न नरिहरि बलिहारि।

आजु सषी मै कुंज भविन मै देष्यो कुजि विहारी री।
नवि नागिर गुण आगिर जांके पीति वसन बनिवारी री।।

आली री उभ्भ रहे अलि उपिर ताके मदिन राइ सरि साधे री
चपिल होति पजन सुक राजति रहित प्रेम के फांदे री।
आली री मृग मदि तिलक गुज के सीस मुक्ता षचतबनाए री।
छूटी भ्भाल लाल की आभा अति सोभा छवि छाए री।
निर्षत नैन मयन कछु उमडत अवि विसरे ग्रह काजि री।
वारि सुता की वनी अरिराता वंधप उभय विराजे री।
अलीरी दध सुतिसीउवी विडारि वदत व्यवि वथुर मुसकाति री
नषि सिप अग कहा ले वर्णो लघु नरि हरि वलि जाति री।

आली मोरा मर्मु नि जाने कोइ री।
विहुं विआकल भओ सरीर।।—रहाऊ
विना वैद सुंदिर सुषदाई, कौन निवारे पीर री।
मनि पौना डरि प्रेम गिरासे जीइ की कहा कहीजे री।।
निकसित प्रानि नही होत छुटिकारा लागो भारो रोगु री।
शाम सु दिर तजि गए इकेली कै संग कीजै भोगु री।
कुलि की लाजि त्याग हरि सर्ना भाजी मतु सुषु होइ री।
ना हरि मले नि कुलि की लाजा, दोनो बैठी षोइ री।
नैनन नींद चैन नही मनि कों चटि पटी जैसी लाग री।
दौरी दौरी बनि वन को जावो जरो विर्हो की आगि री।
घायल प्रेम चैन कहु कयसे चैन निवे हर भेटे री.
तीनि ताप जो उपिज रहे तनि, विनु गिरिधरि को मेटे री।
साईदास जिउ हरि भावे भावे करे सो आप री।
कविहूं मेल विछोरे कविहूं रीझे पुनु न पाप री।

नामे की छपिरी वाधे राम।
भगित वतसल भगता वस केशव कर्ने लागा कामु।
ब्रह्मादिक जांका अंतु नि पावे सो नामे वस कीआ।
षड ब्रहमंड त्रयी लोक को धार्ने सो छनि वांधनि लीया।
कर्ने मजूरी लगा मेरा गोविंदु बैठा धनि सवारे।
पर्सो चर्न तिलोचन हरि के एह रघनाथ हमारे।

सुनि रे नामा इह नही रामा झूठी वाति दिषाई।
मोरो दर्सु तिसी का देषो जिन इह रचना रचाई॥
सुनो तिलोचनि करो रसोई तीर्थ हू ते जाई।
आछे नीके विंजन बनावो आवेगे रघुराई॥
तुर्त तिलोचन करी रसोई नामा लेन गयो है घीउ।
उलिटि रूप मेरा गोबिद आयो भोजनु ले गउो जीउ॥
दुरि दुरि करे त्रिलोचन वपुरा ठाकुरि भेषु बनाइआ।
षड ब्रह्मा इनि को नायक ठाकुर देवनि दर्सन आइआ॥
नामा दौरि पआ हर पाछे मतु रूपा भोजनु पावो।
ठाढे रहो जगित के स्वामी मुड घीउ लैय जावो॥
नामा गोबिद भए है सनिमुपि वाति कहे विधाता।
नामा हम तो रूपस्वानि को धरिआ तुम हमि किउ करि जाता॥
जहा जहा जाई सकिली थाई सभ ही जोत तिहारी।
तुह समानि औरि वही देषौ दीनानाथ मुरारी॥
धनि तिलोचनि धंनि रे नामा जिन पूर्ण भगित कमाई।
लबु लोभ सभ मोहु चुकाया हरि सगि डोरी लाई॥
नीचि जाति भी तारी गोबिंद ऊचि जात भी तारी।
नरिहरिदास जाति वलिहारी कछु गति करो हमारी॥

रे मनि सर्न गहु रघराइ।
जो रहे भैय भगिवत के जम डंड सो नही काइ॥ रहाउ
मनि सुहटा[1] सुनि वाति मेरी मै कहों तो समझाइ।
मंजारि जिउ जम जोहता मतु पलकसे लैजाय॥
करि चर्न प्रभ के पिंजरा तूं रटत रहु तिह माह।
अभमानि तजि मिर्तुक कहावे भै नि देपे जाह।
हरि नाम साधू तरे जिन जानआ मनि माह।
सांईदास नौनिध पाईए जे मिले अतर ताह॥

१. सुहटा > सुभटा = वीर।

आसा

भूला भूला पुनि रिपु भूला।
भूले गुरु गवाइडो मूला ॥—रहाऊ

चित तरग होइ प्रथम भुलाना।
दुतिऐ मनि बुध निज करि जाना।
तीसरे देह होइ सुध षोई।
चौथे इनि मैं आप नि कोई।

उलटे गुरु उलट उपिदेसा।
सोह हसा दीओ उपिदेसा।
नादि विद को सगु वताइयो।
करि अभ्यास इनि औसा पाओ।

तांकी यांको भई घुमारी।
आपा समझे सभते भारी।
इहि विध जीव भूल सो कहीए।
चिदाभास एह कैसे लहीए।

तुरीआ तजि तव भओ दिवाना।
विसर्‌यो जगित ज्ञान अरि ध्याना।
मगन तियागति पाई ठौरि।
सांईदास गुंजित तहा भौरि।

एह भूलो भूलो मूलो भूलै जगि सभै।
यह देह षेह निज मानी पावे किउ अभै ॥—रहाऊ

एह ठाकुर आप विराजे देषो सुर्त धरि।
एह अलिष पुर्ष को ढूडे दसिवे द्वारि परि॥
सो हाड चाम कों मदरि प्रभु नही तहा बसे।
प्रभु अति पवित्र अति निर्मल तिह ठाकुर किउ दिसे॥
जगिमों जीवुनु तबिहूं साधू जानिए।
वडे दानि को दाता प्रभ करि मानीए॥
जो षोल्हे कविहूं औरि तू तूटेस्त तुतवि।
इह सहिजे ही मुरिझाइ नि करिए जतुनु अबि॥

इह बूद समानी सागरि देषो सुर्त धर।
इह सहिजे गई समाइ नि करीए जतुनु अबि[1]॥
सांईदास एह अचरजि कित हूं न भाषीए।
अचेए[2] निज रस सारि रिदे मै राषीए॥

भूलो भूलो सकिल ससारा।
साचु छाड लगो जंजारा॥—रहाऊ
मीठी चाटि जनिम सभ पोइयो।
अंत काल फांसी फस रोइयो।
धनि सुति दारा औरि सरीरा।
जलि तरग जिउ रहे नि षीरा।
अबि तुम चलो ना इनि की बाटा।
इह रसु करुआ फीका षाटा।
षाते पीते चलिते बाटा।
चेतो आप सीस धरि साटा।
आपा जो वह मनह पसारा।
सांईदास सो मिथ्या आत्म निजि न्यारा

राजा रामु आए आनदि भए नगिर अजोध्या माहरी।
मगल चारि भए दसरथ के चलो बधावे[3] जांहरी॥ रहाऊ
पुहप विवानि चढे रघनदन भगित बभीछनि सगिरी।
लछमनि साथ अजोधआ आए जानुकी बावे अगिरी॥
इकन्हा दूध दही करि लीन्हा किन्हा हाथ तंबोलुरी।
इकिन्हा राजु सिघासनि लीना इक बोलति मीठे बोल री॥
हर्ष्यो भर्थि शत्रघन हरष्यो हर्षी कौशल्या माउ री।
नरि हरि दास सभे जनि हर्षे फूल रही बनिराइरी॥

---

१ यह पक्ति पुनरावृत्ति नहीं है। दोनो पक्तियों में शब्द समान होने पर भी अर्थ मे सूक्ष्म अंतर है।

२. अचेए=अचिए—आचमन कीजिए—स्वाद लीजिये।

३ बधावे=बधाई लिए।

जोगुआसा—

ऊधो आए सुनित समे आनंद भए व्रजि लोक।
पतिआ लीनी हेत सो बाचति निकस्यो जोगु ।।
जोगु लेहु तुम गुआरणी बिसम भई तजि धीरि।
नरि हरि हरि बिछुरन विथा को जाने परि पीरि।
पीरि पराई पावे सो वैदु बषानीए।
जो उपिदेस दिढावे गुरि करि मानीए।
मानो कहा कहो मधकरि सो उरि नाही औरि समावे।
अगि अगि पूर रही वह अतिर ऊधो ज्ञानि बतावे
पतीआ पर्सत कप उठितीहो अनिक विलोकत डरोहो
जौग लीए कहु वैरस लील्हा इनि बातिन हम मरीहो
जतिन अनेक वसीठ करित है मनि मय एक नि आवे
श्रीनरिहरि प्रवीन व्रिथा कोई पीर पराई पावे

सो वैदु बषानीए हम तो घाइल विरहुं की
तुम तापरि लावित लोनु।
रोम रोम हरि वस रहिउो, अवि जोगु धिआवे कोनु।।
हर दर्सन के दर्स को या घटि उपिजयो प्रेमु।
नरि हरि औरि नि उरि वसे मनिसा वाचा नेमु।।
नेमु लीउो मनि मेरे तहा औरि नि ध्याईए।
मनुआ दह दिस फेरो ता प्रेमु नि पाईए।।
पाई प्रेम कला जिन हर्की भूलिए नाह भुलाए।
मधुकरि छलवल सो तेरे फुनि बवरत किउ बौराए।।
मूरा जनि गोली ले आए ते व्रजि मै नृप कैये[१]।
इक चटि सालि पडी मोहन सो ते किउ भर्म भुलै।।
ये ठगि वाजी वह तेरी षेले कीए उपाउ घनेरे।
जाग्रति सोवित मन मेरे मै नेमु लीउो मनि मेरे।।

यहा शब्द गौली है। जिसका अभिप्राय ग्वाले किसी व्यक्ति को अपने राजा के पास ले आये और कहा यह कृष्ण है।

ता ओरि नि ध्याईए ऊधो हमरी बेनती कहीओ हरि पह जाइ ।
औसी[2] पतिश्रा तुम मतु पढो हम सुपने नाह सुषाइ ।।—रहाऊ
ज्ञानी शबिद विचारि के ध्यावित पुर्ष अलेष ।
जिह विध पायो प्रेम रस हम लीने सोई भेष ।।
भेष अडंबरि डारो तां किउ करि लीजिए ।
जोग कथा निरवारों ता मनु नही भागिए ।।
भीगे केस रहत साधों सगि कैसे जटा वधावो ।
घुघा किउ पहरे ते अविला जिह उरि मोतिन माला ।
जिह अ गि पाट पटंविरि उोढे किउ उोढे मृग छाला ।।
कु डलि कचन तजि करि कैसे मेषुली मु द्रा धारे ।
मुर्ली वदले नाद न सुनहो भेष अडविर डारो ।
ता किउ करि लीजिए डारो ।।
सभ विजोग की सुनत न आवे कानि ।
मधकरि सो कैई वर्स की दूरि करी पैहचानि ।।
पावे प्रेमी प्रेम रसु हमरे याही ध्यानु ।
स्याम निरतर वस रहआ अवि पाउो पूर्न ज्ञान ।।
होवे परिम ज्ञानि मै तांकी चेरीआ ।
हम विनु मोल विकावे दासी तेरीआ ।।
तेरो मत्र जपो निसिवासरि तेरो हित रसु पीवो ।
तेरो नामु अधारि हमारे छाडि कहा लगि जीवो ।।
जीउ निरतरि तैय हिर लीना ध्यान धरो अबि कांका ।
रीती षौड रही अजि भीतिरि जात ज्ञानु कहां का ।।
हम तुम अतरि अवि की नाही जागी प्रीति पुरानी ।
साईदासु नरिहरि गुरि सिमरो होवो पर्म ज्ञानी ।।

मैं तांकी चेरी आं !
छुहे कसाई की छुरी पार्स सहजि सुभाह ।
गुरि कृपा ते साईदास अविगन गिने न जाह ।।

---

२. औसी (ऐसी) 'अ' के ऊपर मात्रा देना प्राचीन प्रचलि ।

आपा दीने बाघ के मनि मत्री के हाथ
सांईदास भूल गियो निज ब्रह्म सुष मांनयो आप अनाथ ॥

श्यासुंदरि दे माथे परि
मुकट विराज रह्या, गिरधरि सीस धरिआ ॥—
मोहनि दे सिर मुकुटि विराजे लाल जवाहरि जडिआ।
हीरे बहुति अमोलक लागे प्रेम मगिन हो घडिआ ॥
गऊ मछ मृग पछी मोहे मोहे सुरि नरि देवा।
महादेव की ताडी छुटकी भूल गई सभ सेवा ॥
ब्रिंद्रावनि में रास रचाया मोहनि कौरि कन्हाई।
भुजा पकरि संग गोपी षेले सतनि का सुषदाई ॥
चंद सूर्ज सकले वनि छाए ऐसी जोति प्रकासी।
तीन लोक मै भओ उजाला सोहे सिर अविनासी ॥
हरि की लीलहा जाइ नि वर्णी सुमती कहा बषाने।
अविरदास नरिहरि नाराइण अमरा पदि को माने ॥

दो०—तिमुरु गिआ रवि देष के कुमत गई गुर ज्ञान।
मुमति गई अति लोभ ते भगत गई अभमानि ॥

रामकली—
अगिम अगोचरि अनिहद नांनी।
क्या कछु कहो कहन की नाही अनिभै गति हैरानी ॥—रह
पांचो मारि करे अपुने वस सो एह ज्ञानि विचारे।
दह दिस गविन कर्न ते थाका आप तरे मोह तारे ॥
सहजि समाधा सुनि लिव लागी मनु लै तहा चढावे
पसरी किर्ण तिमर तवि फूटा सोहं सवद सुनावे
त्रिगुण अतीति रहत गति उपजी तति पद माह विल्हावे
गंग जमन के भीतिर पैठा अगिमो निगम नि आवे
ससि नही सूर पवन गति तहा पुर्ष को वासा
जनिम मर्ण की सका नासी तहा वसवो सांईदासा

कल्याण

सोह् सहज रहु सगंन्य ।
अष्ट कर्म देह् धर्म जलि गए ब्रह्म अगंन ।।
वासुदेव प्रभू आप बोले अनदह् धुन गगनि ।
जिह् कारनि को कोट जप तप जतिन करित नगंन ।।
सांईदास के रिदे राम नाम प्रभू पाए सुभ सगन ।

है कोई पंडित गुनी ज्ञानी एह् पद तत्तु वीचारे ।
जवि देह् न धरी सी कहा सा रह्ता देह् धरी कहा जाई ।
इसि ससे मोह् आनंदि न व्यापे देओ कोऊ समुझाई ।
वकिता कौणु सुणता स्वादी, कौण सुदेवणु हारा ।
चंचल चले अचल थिर पावे घटि घटि एही पसारा ।
एह् तो ब्रंह्म अशक्त कविन ते ब्रह्म कर्म वस हूआ ।
कर्म अकर्म भौ सागिर डुभदा जाने दूआ ।
एह् तो कीटि कर्म की जाली कर्न हारि कोई औरे ।
साईदास के पर्म बवेकी जहा आजा तहा दौरे ।

भगित विनु तेरो जनमु अकारा ।
जो दीसे सभ सुपने सारवा भूले भर्म गवारा ।।—रहाउ
रे मनि तै इसाथिर नही रहणा क्या मनि करे पसारा ।
चलिती वेर कोई सग नि साथी माति पिता सुति दारा ।
उस्तत अपिनी निंदआ औरा की पापंड पाविन हारा ।
पाषंड नामु नि पाये बविरे सो ततु इनि न्यारा ।
रस रात्यां रतुनु तै षोइआ बाधे कचि के भारा ।
जवि जमु आइ चोट दे पकिडे तवि लागे पछुतारा ।
कीए चलित्र सकल प्रभ तेरे नान्हा रंग अपारा ।
सांईदास अकीत गुन गावे जनि को पारि उतारा ।

मनि रे हरि सर्ना भज परीए
गुरि पूरे अजर जरीए।
ग्रह मधे कर्म कमावे, कर्म कीए ते गति पावे।
जबि कर्म की हांनि करीजे, मुष लोक पर्लोक नि दीजे।
ता कर्म भेद निहकर्मा, तहा टूटे बधन भर्मा।
तहा शिव मिल शक्त निवासी, तहा बिष्या ताकी दासी
तहा सविद सुर्त ले मेले, तहा सहज निरंतरि षेले
तहा आपा मधे जान्या, जवि जान्या तवि मनु मान्या।
जहा वधनि मुक्त पलासा, तहा वसवो सांईदासा

रागुमारु

सतित सोई भली हरि ध्यावे।
हरि सिमरन सकिली कुलि तारे माति पिता मनि भावे।
कीने जतिन कोटि बिध नान्हा। गुरि किरपा दे धारी।
वडे भाग भागीर्थ वपु के सकिल श्रिष्ट निसतारी।
आज्ञा भग करी प्रहलादे हरि चर्नी चितु लाओ।
सपत दीप नौषड प्रथवी राजु इद्रापुरी पाओ।
नरि नारी को युगलु बन्योहै पूतु जने सभ कोई।
रामचद्र दसरथ ग्रह उपिज्यो सकल रघा गत होई।
धनि वह नारि गर्भ जिह उतिरे सिध साध मुन ज्ञानी।
साईदास ध्रू पद पहुचाइओ भजि मनि सारङ्पानी ॥

रागु मदिमांझ

छोडि नि जाई प्रीतमा मैनू छोड़ि नि जाई।
जेतूं मैनूं जाह छुडेंदा किथो लोड लहां ॥ —रहा
मै रक्त-विदु की तू पौना सर्व निरतिर तैरौ ना।
मै जान्या तूं आदि निरोतमु लागी सगि रहा।
मै जजिर नूं सदा निवेलुकु मै तुधज मूआ विछोडे पेलुकु
मै धरती तू उडरि चल्यो कांकी सर्न रहां।
मै माटी तू पर्म पदार्थ मै किर्तिम तूं सदा सकार्थ।
तू अतर मै किटा पुठा विटि लागी सग रहा।

साधनथो फरि विदया कीती तुटिदी पलिक नि लगमु प्रीति ।
छिनि मैं नाउ वटाग्रा देही मैं कंत विसारी सां ताह ।
प्रीतिम वाभु डराविरण होई ग्राहरि कढरण दे सभ होई ।
रहणे दी वाति नि ग्राखे कोई परे पिग्रारे प्रीतम वाभो
भाही ठेल मिला ।
कुंजि मुग्रंगम तू मै तेहा तां जाणा जे जाह सदेहा ।
तांते कतो तोड विछोडी साईंदास हुरण क्या होर कहा ।

श्री राम राम गह रहग्रा प्रभु किते जुगहरणी रहग्रा ।
हन्याजाइ नि कीता होवे जाइ नि ताका कछु कहग्रा । —रहाउ
सूषम देषां ता एकारचिक ग्रति दीर्घ परे पराही ।
नेत्र निहारि देषु प्रभू ग्रपुना कौनि ठौरि जित नाही ।
ग्रटल ग्रनेक ग्रजूनी ग्रसभू ग्रसरीरि ग्ररर्ग ग्रदेहा ।
दू चौपदि पगि त्रिकुटी जेती कौन कहे किस जेहा ।
पिड षड ब्रह्म ड भए को धारी सकल समाने ।
रजि, तम, शालक[1] तिन कि उपिजे जो एह रचक जाने ।
ग्रमत ग्रमत परितीति ग्रातमे ग्र तर ही पतीग्राने ।
भविन चतुर्दस तीन लोक मैं सांईदास जजिर माह समाने ।

वार्णो लियो तेरे वार्णो लियों स्याम चतरभुज वार्णो लियो ।
शंकरि सिषर सुमेरि सुमुक्त कैसे चदि षलौना दियों ।।र
शंकरि कंठ मैं इन निव तीजा नेत्रु वहन का देह जाइ जित जा
सस पर कुड मयन भरि राष्या गग मुकटि ले धारी ।
गोकल षेल वने है गेंदू जतन सकल करों बलिहारी ।।
जंत्र जंत्र की नेत्री रव सस तूं कछु ग्रविरे मागु मुरारी ।
रिषवकारि दूधु दधि रसवल बैकुठ के लेहो वाली ।।
मधवनि जाह सुगव सिला जहा गरी सांकुरी संग लेहु सभ दा
इह ग्रचरुज लेगे मुह मांगो ग्राद ग्रंति सभ धारे ।
रहु रहु कान्हा जाहु बलिहारी मतु कंसु मुने बदुग्रारे ।।

1 सत्व रजस्तम तीन गुणों का वर्णन

सत वेद सभ मेर मर्मी मै जु कीआ सो गावो
हौ परे पुरातन पीतनि से ता सत सुर्त ते पावो ॥
वसुदेव देवकी कार्ण जुडे किवारि उपाडे।
जलि निध मै लका परि-जाली दसे सीस कटि डारे॥
संषासर मधुकेट मनोरिधि हर्नाकस वल छलौना।
संसाग्रर्जुन कस आदि दे सांईदास मागे चद पलौना॥

किउ नाही रामु समाल्हया।
जीविण दा भरिवासा केहा कचे भांडे जेही देहा।
जिउ घणि वसदे वुद वुद जेहा इक सपलक नाल उपिज वणिसे।
एह तनि एसे हाल दा वंदा वदा करिदा मेरी मेरी॥
एह तनु होगु भसमदी ढेरी जीविण दी तै आस घनेरी।
मर्ने दी हरि चिता नाही साह विस्वास नि हारिदा॥
गौठीईवटि करे चतुराईआ डिगी पगे दीआ वुरिआईआ।
चिति नि घते भैणा भाईआ आपे कर्ते दाथा होइआ॥
वादल घटा उठालदा, मै जु कीआ किने होरु नि कीआ।
मै सलाद्री सिधु हथआ, मेरे मुह धिर तक रहीआ।
मेरी भभक गगदड सभे देषो तनि पर्जालदा।
पापी पापों मूल नि संगे ता जाणा जमु लेषा मगे।
रसिडा पापी दी पिउसु टंगे उघडि गैआ।
साईदास डिठो साहवि तारिदा॥

रागु मारु

सभु मुईआ दावे माही, सभ मुईआ दावे मांही।
सभ कोई सेरु सदाइदा, कोई घटि नि पाउ अषाइदा।
दुजा माझ जाइआ, कोई मंझ वरावरि नाही।
पंडति ज्ञानी पीर वे सभ इक ते पए वहीरवे।
वैठे ढेरी मल्ल के सभ आयो आपणी राही।
षटि दर्सन वैरागवे गृह माआ चले त्याग।

दे मती देन्ह् बि अन्यसो भुलिया येम्रो भड़ि पाही
साईदास दिम्रालवे हरि सिमरे सोई निहालवे।
जिन्हा दावा छडिआ मैं सोई पुर्ष सलांह।

लील्हा दीनद्याल दी।
गाउ लील्हा दीन दिम्राल दी ।।—रहाऊ
इकिनाथो भक्त कराइदा, इकना नू भर्म भुलाइदा।
जित लगे तिते तित लाइदा, देखु वाति साई दे ख्याल दी।
प्रभु भरिया नू सखिनीरिदा, सखिनीर्यानू फेरि वडीरिदा।
कौणु जाणै अतु गभीरि दा, कछु मुख नउ घप्पाल दी[1]।
परि नारी दे वाण नि बेध्या, करि उस्तति किने नि घेध्या।
वैकुंठे सिधा सेवम्रा, छड्डु ताति विराने माल दी।
उचे महिल उसारि के, सभ बैठे मर्नु विसारि के।
जमु आउसु लैण वगार के, ढहि चडिआ करिडे काल दी।
जैदे मनि तो नही वीसरे रोम रोम कन्हया नीसरे।
कौणु जांणे बिनु जगिदीस रे, घटि साईदास दे हाल दी।

प्रथमे चढत किवाड़ उघाडे, तब व्रज माह वसुदेव सिधारे।
सेस सहस्र फण अंग पसारे, अंबृत घरि वर्साविणा।
घरि नद के हर।—रहाऊ
कालिद्री तवि मोहनि आए। अनिक तरग कालिद्री भाए।।
चर्न पर्स मगु दीओ कालिंद्री। तवि गोकल-मय आवणा।।घर०
कन्या ले वसुदेव सिधाए। पगि गृह घरि किवार चढाए।।
रुदनि कर्त देवकी उरिलाए। तवि दरिवानि जगावणाए।।
दरिवाना कंसु जगाइआ। खडा ले बंदसाले आइआ।।
ऊंचे टेर कह्यों जवि भूपति। क्या वालु भआमेरी भाविणा।।घर०
सुनु राजा तू अति वडि भागी। देवकी दौरि चर्न सग लागी।।
दीजे दानु मोको रे भाई। नही वालुकु इह भाविना।।घर०
भुजा पकर अपुने वस कीनी। देवको रुदनु करे अधोनी।।

---
१ घप्पालदी—गुपालदी—गप्पाल=गप्पी।

छुटक गई जाइ चढी अकासे क्या क्या वचिन सुणाविणा घर
मर्कट कतिल-सैन ते आए। सेतवध गड लंक लुटाए।।
काटे दस सिरि सीआ लिआए। अवि कंस को कालु करावरणा।।घर
तवि राजा को लागो भोरा। छुटिक गियो हाथनि सो मोरा।।
अैसा रोगु भओ भूपति कों। औपद कछु नि मिलाविणा।।घर
वासदेवा प्रीति निहारी। नद नदनि अब भए मुरारी।।
भूम को भारि उतारण आए। एह विध निगम सुणाविणा।।घर
रिप देव मो दर्सन को आए। संत भगित मिल मंगल गाए।।
नौ निध आइ परी गोकल मै। लील्हा वाल पिलाविणा।।घर
वाजे ताल वजत्र वधाई। नगिरी यूथ जोटि मिल आई।।
दूध दही षेले व्रजि वासी। नंदे पुत्रु मनाविणा।।घरि
मछ कछ वैराह है सोई। नारिसिघ वावन है ओही।।
पर्सराम अरु राम कृष्ण जी। सिमरे सो भक्त करावणा।।घरि
साईदास भक्तनि देह धारी। अमरि दास की पैज सवारी।।
ताको पूतु गोविद जसु गावै। नामसौदा न करावरणा।।घरनद केह

ऊर्ध जानो रे मना कीर्त किउ नि करों।
आधो निध मुष वक नाउ, विषु आप अहारी लेंह।।
रास लिआउों जरा मर्ण, हीरा कऊडी के वदले लाइ।
नाम वाभों प्रभ सांईदास किर्त न मेटओ जाइ।।
वटो कटि नि सकिए भीग लिओ हा पाइ।
पुछो कटण हराआ जै घरि ओह रहे।।
निज घरि वाभु नि लु रही साईदास कहो।।

रे जनि अनिकति दूर करि, चिर जीवन चितु चेतु।।
हीरा हिरयो गुजाहली देषजु कीओ हेत।।
हर रसिना रसु पीउ तू जिस पीते हांन न होइ।
प्रभ कहओं साईदास के दुर्मत का वीजु नि वोउ।।
अंतिर औगनि रच गए जिउ घुनि काष्टनि पाइ।
हीरा वदिले हांनिओं रतक मोल विकाइ।।

साईदास पुकारआ वांध्या जमु पुरि जाइ।
बाध्या चित्र गुप्तनि सो पउो दुष्टे नूं एह पुछु॥
उचा पत जांकी वधु पई आगित नाही तुछु।
दफतरों भूठा होइआ जत पति होई हान॥
प्रभ कहिउो साईदास कों गुरि का कहिआ मांनि।
नाम षजाना मुनि जना लष जाने सुभ उरिभाई॥
इद्र इद्रासनि ध्रू कुवेर मुकती यह ते अधक सदेहे।
साईदास हिर्दे ने किउ वीसरे जो मुत्ती दे चर्न अजेहे॥

जिउ जल सर्दल सम रहयो इउ लसकरि देही माह।
साईदास वह करि मिलआ मेटीए इहि साध सग ठहराह॥
जो ठहराने निगमदिष्टि तिन को पूरनि दाति।
साईदास बाजन ही ते रह गए जिनि निज घरि पाई भाति॥
भाती पाईआने तित घरि जहा लालनि की ठौरि।
ऊति भमके भाती परे द्रष्ट तन्हा की औरि॥
गगिन पिआले गाह रहे बांकी गहन जही।
साईदास दोनो रहे पुकारिते कहन न आयों कहीं॥
इद्री का भौउ छुटि गआ सदा ध्यानि की निरत।
साईदास का प्रभु रम रहया सदा नाम की किरत॥
भ्रम सागिर मै मनु गलतांना असली षाति भकोरे।
माआ मगि मोह मदमाता इह विध अजहू नि छोरे॥
देह वीचार दास प्रभ अपुने जिह मिल मनु ठहरावे।
साईदास साध की सगति गुरि मिल ठौर बतावे॥
एको एक नाही कोऊ दूजा घटि घटि मह निवासु।
जो मनि वांछति हरि भजे साईदास तित ही पूर्न आस॥

आर्ती लीजे दीनि दिआल।
भाउ भगित सतन सुषदाइक कविन्न नैन नदलाल॥
कचन धर्त जर्त ऊपरि मुक्ता षचति वनाइ।
जोत प्राकास चद रवि जांके इंद्रादिक सुरि लिआए॥

चोया चदनि अगिर केवरा पुहप गध धुप कारी।
चाविर चविर छत्रि सिघासन अदिभुत मह तिहारी॥
वाजित सष मृदग झालरी डफि रवाब अरि ताल।
घटिन की घनिघोर परति है वोलति वचनि रिसाल॥
ऊधो अरि प्रहिलादि विभीछनि सुक नार्द मुन व्यास।
ब्रह्मादिक सनिकादिक ठाढे गुनि गावैं निज दास॥
जोग भोग सभ रस को वांधे महमा कही नि जाइ।
कहित सुनित मुक्ता सो नरिहरि हरि जो भए सहाइ॥

जनिम जनिम के पाप हिरे।
जिस हर नामु वसति हीरे मै ताके दुप विन अग्न जरे॥
अतिर सारि सुधा निध निर्मल ते भौजलि ते पष तारे।
नाम की नाउ पविन पति संगति इह विध साधू पार तरे।
तासो जमि ले भेटा मिले, कछु भजिन प्रताप ते औसा डरे।
साईदास मुकद[1] भगित मिल, आवागौन ते छूट परे।

रामकली

औसो कोऊ ब्रह्म ज्ञानी सुने ज्ञान वांनी।
ब्रह्म की धुन पहि वासना सभ भजे जुगित सभ रूप इउ जाय जानी
मुकिर प्रतिबिंव ते याह जलि पेषीए कीजए कौणु विध ताह सेवा
आपिनी भालि परि तिलुकु जो दीजए, पूजिए तत्त निज देव देवा
अगम की वात परि निगम क्या करि सके संध तिआगे सोई सिध पावे
आदि ते अति लै मध्य मै पेषलै सतिगुरु एह निरनो वातावे
अटि पटी वाति का अटि कपट पोल्ह के निर्ष के भेद सांईदास हारिओ
झमक झाती परी वाति पाई परी जिउ का तिउ पूर्ण निहारिओ

कल्याण

तेरी गति जांनते कछु नाही वीचारि देषु मनि माही।
जे को कहे मै जानित हो तिसै पूछ होइ दासा।

---

१. साई दास के गुरु मुकुन्ददास थे, इस पद से स्पष्ट है।

एह धरिती केतक मरा माटी केतक बीच अकासा।
जलि परि धर्न धर्न धर्न[1] परिवर्षा, एह जलु कहा ते आवे।
आपो अपिनो बूद परित है मेरा सतिगुरु एही बतावै।
एका रकत बूद फुन एक सुति दुहना किन साजी।
करिम कर्तूत कीए सभ उनि के बीचारो एहबाजी।
क्या मै लिपो तूं अलिप कहावे लिष मै परित भुलाना।
जैसी सूझ फुनि तैसी जो काहूं मन माना।
ओहु अविगति नाथ अगोचरि कहीए कहवो सांईदासा।
जबि लगि हंस मुआद सभ तबि लग पाछे भओ विनासा।

रामकली

अनिल अनील अतीति वानी।
तहा मनु रचना आवागौनी भरम चूका, सारि गुरवचना।
कोई जनु जोग का अरमु साजे, सदा षोजे अनहा बाजे।
अगम सपी सुनि लावे, षोजता अगति पावै।
एडा पिंगुला सुपमननाडी जोग की इक बिध सारी।
सविद गुर्के[2] श्रोत्र ताडे पूरिवो पश्चम चाडे।
नादि विद कला चाई तत्त बस तिमु कटि आई।
अन्हा धरि जब भैओ वासा ता अकथ कथयो सांईदासा।

रामकली

बिरिथा नवारणा भजु सरिणा।
तेरी कौण चुकावत चितवति मन ते क्या करना।
जबि लग बूंद परी गर्भ अंनर सहज देहा उरि धाई।
नषि सिष नेत्र विधाता कीने लेषु न मेटओ जाई।
बिहु लिषआ दुषु सुप तपु संजम सील सुमति दुआई।
चंद सूर्ज ब्रहमड टलेगो लेषु न मेटओ जाई।

---

१. एक धर्न शब्द लिपिकार का दोष।
२. गुर्के = गुरु के।

अमत अमत चतुरादस मनुआ आदि अतनू जाण भआ
इति मदरि जो रास लिआओ तिन वरितारे वर्त नैआ।
सुअरग मध पिआल[1] सरीरे कर्म भूम एह देहा।
जो कछु वीजे सोई कछु उपिजे साईदास मत एहा।

श्री गगा जी तेरे दर्सन तो वलिहारी[2]।
शाम शरीरो उपजी गंगा, मुकटि वसी महादेवे।
अ.धा जाकी मैहम न जानी सुरि नरि जाकी सेवे।
सर्वत गगा दुर्लभ कहीए तीनि विशेप असथानं।
दिष्ट परिआ सभ पाप उतारे पीवति मैहम नि जानं।
जंगिम जोध जती सन्यासी षोजत को अविगाहे।
हरि दुआरि हरि मूर्त पर्सी कोटि जनिम के लाहे।
एह पराग मनिसा कों दाता वेणी संगम तीरे।
दिष्ट परी सभ पाप उतारे निर्मल वुध सरीरे।
सागर सग रली भागीर्थ कीने अनिक तारंगा।
साईदास मनि मजिनि होवे ता जाहु वैकुठ निसगा।

तू दाता यगु मगता देह दिवाए नित्त।
लष करोडी पाइआ जे तू आवे चित्त।
चित्तो धडी नि विसरे केही होवे मुप।
साईदास नामु अराधआ सभ मिट जादे दुष्य।

नारि हरि तेरा त्राणु।
सभना जीआ साझवा तेऊ घुले जानु।
जिन्हा पकिडआ साध सगु, साध सग भीति नि को।
जिन को पूर्न भाग नरिहरि तेऊ ऊबिरे जिन्हा लधी उ
सो जागे जिन्हा चेतआ हरि का नामु सवेरि।
कैइ जीता कै हारिआ नरि हरि एहा वेर।
आण सुणाई वेनती प्रभ तेरे अगे।

---

[1] पिआल=पाताल।
[2] इस पद की पुनरावृत्ति हुई है, देखिए पृ० ६३६।

होरीथो की मगणा वाभु तेरी पगे।
नामु षजाना दानु देह चरिनी चितु लगे।
आवा गौविण निवाह दे भौउ मेरा भगे।
नरि हरि याचे सत धूडि, चरिणी चितु लगै।

मै तनि औगन एतने जेते रोम सरीरि।
एदू सम सिर अगिले गंगा वालू तीरि।
रवि किर्णी ते अधिक हे, उडिगण जिवे अकास।
औगण गुण पह आपणे, कहि दीने साईदास।
तू चंगिआईआ नित करे, बुरिआइआ मै पास।
मै सपूर्ण दुर्मती, मै पह एहा रास।
पलिक प्रीति करि ऊवरा के उोहु रच लहा।
जे गुरि भेटे प्रभ साईदास, विरिथा सकल कहा।
भरिम नि जाई भगित विनु, चूके नाही भीति।
उोहु नि टरवे साईदास, जो कछु कीति आकीति।

अनि कीए कही नि लाग ही, कीए न अनिकति जाह।
कीति अकीत दोऊ मिटे, हरि सर्नी जवि पाह।
काया सागुरु रे मना, तू विच वणुजु करे।
भरिती भरे गुजाहला, हथो हीरा देह।
सुति दारा धनि माल ते, पले पिआ विकारि।
साईदास गिया प्राणी सागर थो सषणा लै कौडी के भारि।

सागुरु एह ससारु है, निधी सपूर्ण एह।
इसी ते ध्रू ले गयो, सिषर सुमेर सहदेव।
प्रहलादि पहूता इसी ले, सक्रा के असथान।
साईदास महमा तेरे नाम की, इस दे परे निधानु।
गुरि जहाज हम पाहुने, जित मिल पार चडे।
साईदास जिन गुरु जहाजु नही जानआ, सो रोवे घाटि षडे।
घाटि यगाती धर्मराइ, गुरि मुषु लए पछान।
सांईदास जिन्हा छाप नही यगिदीस की, साषति रहे निदानु।

कस रावरण अरि ससेपाल, इसि तै तनि वडिभाग।
वपरी गनका पूतना, कवि चाहै वैराग।
संता धरि हरि नाम को, अचरजु नाथ भए।
सांईदास देषो अचरजु शाम का, वैकुठ दैत गए।
विनु देहा ध्यावित रहे, विन घुन धरे ध्यान।
साईदास कित पाईए, ठौरि विना निशानु।
जिन के हाथ निशानु है, तिन अटिकावै कौनु।
सांईदास भरि षजाने नाम के, मिट गए आवागौनु।

जे कुलि वडी ति राम जपु, भाग वडे कछु देहु।
वुध वडी उपिकारु करि, सांईदास जीविण का फलु एहु।
सुषा नू डुढेदआ, दूणे दुष पाए।
जे सुष छडे साईदास, तिना ले दुष गए।

जिउ दीपक दीपक मिले, जोते जोत दई।
जो पारस सांईदास को, सो नरि हरि भेट भई।।
रथु कीना प्रति धर्म का, ता परि भए असिवारि।
श्री नरि हरि इछा भई, देषन को हरि दुआर।
हरि दुआरि नरि हरि चले, सगत कीयो प्रणाम।
दीओ तिलक जसि पूत को, कांशीदास जिह नाम।
जहा सांईदास नरिहर तहा, ऊहा गोविद भजिन परिकास
तिह दर्सन को पर्सन चले, मुनिवरि काशीदास।
वुधि विशिष्ट सुषि धिआनि ज्ञयान, गोरष भैइ चक्र
इद्र करिण कुमेर दान, दान नही संव्रति।।
सक्रति सिधो मैं वडि सिध्य, मुनी जथार्थ।
कलि कलेश अगआन, आनि कीनी परिमार्थ।
दस औतार तैही कीउ, संकट काटयों गजिइरण।
प्रभ नौरंग रिदे ध्याआईए, गुरि कांशीदास पर्दुषहरण।
गुरि तरिवरि गोविद जल, सेवक साषा होइ।
फलु लागा डाली रहे, ता पक पूर्ण होइ।।

फलु टूटा जल मैं पडा, मिटी निवा की प्यास।
साईदास गुरि छाड गोविंद भजे, निश्चे नर्क निवास॥
गुरि गोविंद दोनो षडे कांके लागो पाइ।
वलिहारी गुरि आपने जिन गोविंद दीश्रा वताइ॥
गुरि मूर्त विध चद्रमा, सेवक नैन चकोर।
साईदास निर्पत भए, गुरि मूर्त की ओरि॥
सति गुरि की भुजि दोइ हे, ठाकुरि की भुजि चारि।
ओहु चारो ठाढी रहे, दोले उतिरे पारि॥
साध मिटावे भाविनी, करे जु हरि की सेव।
गुरि क्रपा ते प्रभ सांईदास, मिले निरजन देव॥
नरि हरि नामु नि वीसरे, सदा साध के सगि।
रसना रसीए राम रस, श्रौरि नि लागे रंग॥
श्रानद मगल सोहला, नित भगतिन के द्वारि।
नरि हरि ते जनि धंनि है, निस दिन जपे मुरारि॥
श्रनिल पवे जो धर्न मै, श्रकि श्रवि जो पाइ।
सांईदास जद्रा कूजी वनि लहे, ता गुरि विनु मुकली जाइ॥
जो फलु फूटे श्रक का, रोम नि पावे टेरि।
सांईदास इउ निगुरे की गति नही, जो करितूती करे श्रनेक॥
भूषा रोवे मनि के भाइ, नागा कपिडे को विरलाइ।
निरिधनि रोवे धनि वति प्राणी, धनिवति रोवे श्राविण जाण
दुषिश्रा भी रोवे सुषश्रा भी रोवे, जवि लग मनि का भर्म नि ष
भूठा धंदा जगति तमाशा, हरि हर्दे भजु सांईदासा॥
हरि मिलश्रा ते गुरि मिलश्रा, गुरि हरि श्रंतर नाह।
सांईदास गुरहरि श्रतर जाणदे, ते नरि नरिके जाह॥
करी उधारियों करीते, करी करी पुकार।
करिणामै करिणा करी, कछु करित न लागी बारि॥
सांईदास पुकारिश्रा, लोको सभ सुनेहु।
मिठा वोलो निउ चलो, हथो भी कछु देह॥
दर्सन गुरि गोविंद के, मन मै सदा हुलास।
प्यासा श्रावे नीरि पह, नीरि नि श्रावे पास॥

सेवक के मनि गुरि वसे गुरि सेवक के पास
चात्रक कारण साईदास, टूटे बूंद अकास ।।

जिनको उपिजी सति पारितीति ।
मोन रहे भावे गीति ।।
भावे कुटा विचरो चारि, भावे बैठे आसुन मारि ।
भावे कूदो भावे नाचो, भावे सुंन सविद मैं राचो ।।
भावे लमे कैस वधाइ, भावे बैठे मूड मुडाइ ।
भावे नागा फरे मलग, भावे कपिडे अगि ।।
भावे उदिर भरे भरि षाइ, भावे सूषम भोजनि पाइ ।
साईदास सती की निआई, तनि सगार मनु भर्त माही ।।

रागु धनासरी

पहिले पहरे रैण दे,
मनि मेरेआ भाई, सुतिआ गई विहाइ ।
परिम पदार्थु षोजि लै भाई, वोइ साध सगत चितु लाइ ।।
साध संगत चितु कविहूं न लागे, करिम धरिम सभ हारे ।
आगे भौजलि विषडा कहीए, किति चड लघे पारे ।।
पदिम विषम बिष्या रस लपटि, काटे रतन पराए ।
गुरिप्रसाद कहे साईदास, सुत्या गई विहाइ ।।

दुजे पहरे रैण दे,
मनि मेरिआ भाई, तै ज्ञान पदार्थु षोइया ।
सिरि तेरे अजिली जमु गरिजे, तू कित निहचल सोइया ।।
निहचलि सोइआ जनिम विगोइआ, तसकरि पंच फरते ।
पै तरिनी राता, जोविन माता औगण किसी नि सुझदे ।।
देहरी को तसकरि लूटण लागे, किते जु सौणी सोइया ।
गुरि परसादि कहे साईदासा, तै ज्ञान पदार्थ षोइआ ।।

त्रिजे पहर रैंण दे
मनि मेरआ भाई तेरी पंजा देहा साधी।
ते विष सो राते, जिन्हा हलाहल षाधी॥
पजा मिल हलाहल षाधी, भंने हरि पराए।
चरिम दिष्ट विष सागर भरिआ, तिस ते कौणु लघाए॥
अतरि पहरे दुष्टु जु बैठा, थिर न रहे अपिराधी।
गुरि परिसादि कहे साईदास, पंजा देहा साधी॥

आए पहर वंझाइके माही, चौथे रहु उशिआरा।
रामनाम की सरिनी आवे, काटै विष्य विकारा॥
विष्या विकारि जे काटिया, लोडे को गुणु देहुरी नाही।
जाग दिआ तैं इवसुतु वझाईआ, वांधआ जमपुर जाही॥
आउ भगित भैइ चक्रत होइयो, सुण सुण हरि का दुआरा।
गुरि परिसाद कहे सांईदासा, चौथे रहु उशिआरा॥

मनि गोइ लीआ भाई,
गोइ लडा दिन चारे, वीचारि विना तैं कीते रंग पसारे।
रग पसारि कीए वह तेरे, गोइल छाइण छाए॥
चलुणु तैंनू चित्त नि आवे, रहणु भी नाह भराए।
इस धरिती ते केई गोइल लथे, लह लह अंत सिधाए॥
सांईदास कहे मनि, गोइ लीआ मेरे भैंआ।
गोइखडा दिन चारे, मनि पधाणुआ मेरे भैआ वोइ॥
राते दी रहु राते,
रैंण किवे किवे विहाणीआ, उठि चल्यो परिभाते॥
उठि चलियो परिभाते भाई, जवि लगि सूर्जु चढआ।
रहु रहै नि कोई रहणु नि होई, करिम पजूता षडआ॥
नाम निशानु नहो सिर ऊपरि, सति गुरि दीन ही दाते।
सांईदास कहे मनि पधाणुआ मेरे भैआ, राते दी रहु राते॥

मनु पंछी राम मेरा भाई, तरिवरि आइ निवासे।
तिल हो वेले उडिणा, हुकुमु पिआ गरिभासे।

हुकुमु पिआ गिरभास तिहार सो तै पल्ले वधा
कहु रहे नि कोई रहणु नि होई, कर्म कमाइआ लधा।
कसे तोले पाइ अमोले गिणगिण रतीआ मासे।
साईदास कहे मनि मेरे भैइआ, तरिवरि आइ निवासे।

करितूति कुटवि दी मेरिआ भाई, वेडीदा पुराणा।
सजोगी मेला, सजोगी उठि जाणा।
सजोगी मेला तित ही षेला, कोइ नि किसे साथे।
सगि वापु नि माई भैण नि भाई, वेटा नारि निराथे।
विनु नाम नि छूटे भाडा फूटे, घडिआ घाटु सत्राणा।
साईदास कहे करितूति कुटवि दी भाई, वेडी दा पुराणा

रषु साष डुवंदी भाई, वंन्ना देह करार।
भरि सरिवरि उछले, किउ तरीए संसारा।
भरि सरिवरि करि उछले, किउ तरीए संसारा।
साउरु तरिसी मनु डुवि मरिसी, जित सरि हाथ नि वेड
कूक कहाइ पैईआ दिल भैडे, पतुणु नाही नेडा।
करि सति गुरि वेडा, चढ वहु नेढा तारे तारन हारा।
साईदास कहे रषु साष डुबदी भाई वन्ना देह करारा।

तनु षेत्री किरिसाण दी भाई।
लोडिनि दूतउ जाडी, किउ रहे सुहुली वाझु सत्राणी बा
वाडी राषा कोइ नि वैठा, चुणि चुण मिरुआ षाधी।
चेते विच नि रही आम नि भुप काहे नू तै राधी।
पाप बिकारि कीए वह तेरे, तै अपिणी वात विगाडी।
सांईदासु कहे तनु षेत्री किरिसाण दी भाई लोड नि दूत

किउ षेतु उजाडयों आपिना भाई, साहुवु मंगी हाला।
मगी हाला पवीतरि टाला, मंदे कर्म कमाए।
चेते विच नि रहउो मूर्ष, दरिगा कौणु छुडाए।
दरिगा कोइ नि जामुनु थीवे वंध्या कौणु छुडाए।

चित्रगुपत दुइ दफतरि बैठे, करिदे कर्म संभाला।
माहबू मगी हाला।

औगरण करिना छूटे भाई, गुण करि छूटे वीरा।
राम रसाइरण चैन लै भाई गलिदे झडनि जजीरा।
गलि दे झडनि जजीरा भाई तेरे, जे गुरण गाहकु होवै।
गुरि के वचिन सही करि छूटै, मनि मुष वैठा रोवै।
तेरी दात तुधे नू सुझै, मेरे साहब गहर गंभीरा।
सांईदास कहे औगरण करिना छुटै, भाई गुण करि छुटै वीरा।

गिआ जोबनु नौ सोहणा भाई, चादर भई पुराणी।
चुका रंगु कसुभेदा मोरे भंआ, कली तुटी कुमिलाणी।
कली तुटी कुमिलाणी भाई, रगु कुसुभेदा चुका।
पाणी वाझो परा दुहेला, सरिवरि दा नाउ सुका।
रजि बीरिज ले पुरिषु सिधाइआ, पाछे देह निमाणी।
सांईदास कहे गिया जोवुनु नौउ सोहणा भाई चादरि भई पुराणी।

सरु सुका कौलु डुम्हरणा,
मनि मेरिआ भाई, औध पुनी कुमलासी।
औध पुनी कुमलासी भाई, विच हम नि दे झुलारी।
यह वेला उडि जासी भाई, विच हमुनुदे झुलारी।
उडि गिआ पषी सीटी अषी, तजी सु ठौरि पिआरी।
काल जाल जम आइ परोना, चुगिदा फाही फासी।
साईदास कहे सरि सुका कौलु डुम्हाणा औध पुन्न कुमिलासी।

जापासा छकि आइआ भाई, ढुलएह पाधी सारी।
ढुलि षाधी सारी भाई, जापासा छकि ढुल आइआ।
पिआ अपुठा साहबु रुठा, कची षेडे गलआ।
हारी पिंड षई गल फासी, देषहु मनि वीचारी।
सांईदास कहे जांपासा छक आइआ भाई, ढुल षाधी सारो।

गढी मिसीओ हृथ पिआ
मनि मेरिआ भाई, कलि मल साहा धरिआ।
पुना साहा जज वलाइआ, अनिवरि देही वरिआ।
पुंनु पापु दुइ दाज मिले, जमु ले चलआ परनाई।
सांईदास कहे ऊपर गुलानि भेविही जाभरि पुनी तेरी आ
चार पहिरे ते बारा अष्टपदिआँ बावेदिया।

भगित माल लिषते

सरिन हरि जो आवे सो आवे।
जाति पात कुल को नही आदरि, भजनि करे सोई भावे।
तारणी उणति औध सभ वीतो, जुलहा नामु अधीरा।
भजिन प्रताप नीचि भओ ऊचा, मिलि रह्यो राम कंवीर
छीपाग्रह की बूद परति है, बिनु इ ध्यानि रहीए।
नामे के करि दूधू पीओ है, विधि निषद्ध क्या कहीए।
ढोरि मरित दुरिगध उठित है, मुषि ढापति लेति खासा
ताहि तुचा ले पनिआ गाठे, भगित भयो रविदासा।
काटित गाएला पछारित अजिआ, सधिना नामु कसाई
चढि बिबाण वैकुंठ सिधारे, अति उत्यमु गति पाई।
कुलि कुचील ले जूठे वस्त्र, पहरति सैणा नाई।
तांकी ठौरि राजा पह जांके, दरिपण कृष्ण दिषाई।
अजामल्य पतितां को नाइक, कठया हीनि चिकारी।
सुति के हेत जपओ नाराइण, दीनीमुक्त मुरारी।
बंस कुबंस नि लाजि भामनी, गनिका कुले निवासा।
पंछी हेत मनो हरि सिमरिओं, भओं मुक्त मै वासा।
जूठे बेरि षाए भीलनि के, हिति चित प्रीत लगाई।
कौण तपस्या करी बावरी, भगितनि दई मिलाइ।
धंना जटु चरावे गौआ, जिसि चितु दे गोबिंद पाइआ।
बेदपुराण पडिओ नही स्मृति, भगित माल मैं गाइआ।
नाचकूद के हरि गुण गावे, आछा भगितन रोला।
दासी का सुतु जगि मैं कहोए, सो तो कान्हा गोला।

जो जो सरिण आए तै तारे, असरनि सर्न मुरारि।
सांईदास के प्रभ पूर्ण स्वामी, विर्द की लाजि सवारिन।

विलाविल

नही कोई दाता गुरि की भांति।
त्रिकुटी हस अनीलि अनाहदि, तिति ही ठौरि बतावे भाकी।
नार्द मिलि मुचकंद पुकारिउो, ता उसिदा जनिमु बिचारिउों।
गुरि प्रतीति परति जो नाही, सिषरि सुमेरि ध्रू अपे निहारिउों।
असा दान करे कोई भूपति, लाषि टगा वषसावे।
गुरि की दाति बावे की विचरे, कोटि जनिम मुक्तावे।
मिले मछंद्र अभे भैं पदि गोरिष, लोका कारिण वाति ठहराई।
गुरि चेले भै एको सांईदासा, गुरि को मिले वडआई।

राग वसंत

प्रहलादि को सुषु तुझे ही दीन, भगित वछल ध्रू अटल कीनि
हरिनाकस नषी विडारिना, पसु सूआ पारि उतारिना।
अहनिस गनिका रची काम, अपिराधी उधिरे हरि के नाम।
पूतना के असथनि वदन माह, वाको पारुसु भेटिउों छिने माहि
छिन माह उधारियों ससेपाल, राजे बलि को दीना तै प्याल।
कनिआ द्रोपती भूपत वस परी, वहि वस्त्र षेचति लज्जा मरी।
औसरि सिमरियों तित निधानि, तांकी लज्जा राषी गुणा निधा
तेरी भगित बेमुषु पापी क्या करे, वहु निस दिन भै जमि के डरे
सकले उधिरे सर्न पाइ, सांईदास को चितु ठौरि माहि।

गुमानिण माणु नि करिऐ,
आगे तेरा को नाहो, किस आष सुणावेगी।
गलि पवीगा जेविडा, ध्रूदी पडिएगी।
दभ सूला, पुढिनी तनु तापे, किस रोई सुणावेगी।
सांईदासकी इकि बिनिती, एह अजुरु जरि नाही।

जौ कहे राजे गमु कोई नही ।
महल फकरि के माह आवे, किने शौकु है[1] ।
फकिरि के तपित परि वपुतु है, कोई जोहरी जाणे ।
जोरु जुलुमुना कछु नाही, मुलुषु जापिता माने ।
राह मै पडी है जेविडी, मानो सपु दिषलाई ।
महरि मीते निर्भे भई, अजानि भै षाई ।
निर्भे दो नाही कामता वोइ, भूले हाल दिवाना ।
साईदास को दियाल क्रपा परी, लागा शेर का वाणा ।

पूरिबी—

क्रष्न तेरे चलित्र नि वर्ने जाहृ ।
सभ पषी जल अधिक पीवित है, चात्रक किउ विलौलि ।
सभ वनिराई सघन घनि सोभति, कलि अरिकिउ[2] नहीपाति
वैंता मल्ल भए रति हीने, न फलि ना कुसमाति
इकि जगि मूक पगि द्रगि हीने, दैनी इकि धनि पाति
गजि को पैआ मैआ नही अस्थनि, सागिरि किउ अपिआति
वहुतो बंस थीति बलि उपिजति, शाम कलंक लगाति
दिनि को अंध घोघ होइ बैठति, निस को सभ दिषलाति
कहु सांईदास पुरातन रेपा, नौ तिन होत नि वाति

नरिसिघ माह प्रभू छवी रसि, विजनि भोगि बानाए
नाना बिध के रगि लक्षमी, भोजुनु सवारे
मनि मे करित अनंद नार्द मुनि पनिवाडा ल्याए
जलि भरि लिआई गगि, अतिरिगति की अतिरि जाने

सभि विधि जानिन हारि, माधो हमरे भोजुनु कीजे
हम तो सेवक जनिम के, नामु अभै पदि दीजे
माधो छवी रसि विजन भोगि वनाए, आछे बने पकौडा
फल पकिवानु आचरु जु मीठा, हछे दषि विजौरा

---

१. इन पक्तियो की पुनरावृत्ति हुई है । देखिए पृ० ६४० ।
२. अरिकिउ=आकको ।

जिस माता दा माखुनु खाइआ, चारि पदार्थ पाए।
सुदामा जी के सतू खाए, कचिनि भविनि बनाए।
छीन दही जमना तटि खाइओं, बडी भगित सम्हारी।
अपिनो विरदु तुम जानि मनोहरि, केती सिपत तैथ धारी।
जूठे बेरि भीलिन के खाए, सो तैं अम्रतु करि मानिआ।
बाथू सागि बिदरि को खाइओ, सो तैं हितु करि मान्या।
दिजि पतिनी निर्भो करि राखी, जांके भोजुनु कीना।
पांडवि सुति बैकुंठ पठाए, जापु सुफलु तैं कीना।
पाइ गोरुसु धना तारिओ, नामे दूधु पिलाइओं।
जनि साईदास के भोजुनु कीजे, अपिनो बिरदु वधाइओं।

रागु सोरठ

भगित बिनु तेरा जनुमु अकारा।
जो दीसे सभि सुफने सारखा, भूले भरम गवारा।
रे मनि तैं इस्थिरि नही रहणा, व्रथा मनि करे पसारा।
चलित गिआ सग नि साथी, माति पिता सुति दारा।
उस्थिति[1] अपिनी निद्या औरा की, पाखड पाविन हारा।
पखड नामु नि पाईए बाविरे, सो तत इनि ते न्यारा।
रसि रते रतिन तैं पोइओं, बाधे कचि के भारा।
जबि जमि आइ झोटिये पकडे, तब लागे पछुतारा।
कीए चलित्र सकल प्रभ तुमरे, नाना रग अपारा।
सांईदास अकीति गुन गावो, जनि को पार उतारा।

मैआ तेरा वैकुंठि सारिख भौनु।
जहा सील सुमति सरीरि दिढता, करित मुनि जनि गौन।
तारा सीआ मदोदरी धारोपेती[2], अहल्या नार।
इंद्र सहता मोहनिआ नित निर्ते करति दुआरि।

---

१. उस्थिति < स्तुति।
२. धारोपेति < द्रौपदी।

प्रहिलादि ऊधो अर्जना, तुही सुसलित रंगि।
नित निर्त नारद द्रिढ रहउो, सुरितलि सुरि मरंद।
वशिष्ट गरिगा गोतमा, सुषि व्यास वदिन सारूप।
अष्ट सिध्य नौनिध्य द्वारि उतिरी, तहा भौनि अनूपु।
सिध्य साध सकिल मुनि जनि, जहा वसे तीर्थ कोटि।
सांईदास नौउनिध समानी, जगति भौनि की उोटि।

सहिज मो समाध लागी, ज्ञानु तहा भूला।
प्रेम भगित चित समानी, उनिमनी मैं भूला।
पषंडी की कला छूटी, मेरि धुनि समानी।
देह ते विदेह भउों, ग्रैसौ अज्ञानी।
सेस लोक लगि प्रजंति ब्रह्म लोक तांई।
आपिना सारूपु देष आपे विगसांई।
आपिना ही चिमतकारि जित कित निरषावै।
ग्रैसो बिंज्ञानी बिज्ञानि ही मैं लिग्रावे।
कहिना अनि कहिना सोई कहना।
सांईदास दास मोही रहना।

जम तनि विचो निकले, जाली कर्म भए।
जो तुध वीजे अंधग्रा, सोई उपिज षडे।
जो तुध कीते छपि के, सो दफतरि जाइ चढे।
दोसु कैनू दिचे सांईदास, कीते उठि लडे।

दो०—चारि वर्ण हरि को भजै, एक वर्ण होइ जाह।
सांईदास ग्रष्टधाति पारस लगे, एकै मोल विकाइ।

रागु षटि

आजु बने नदलाल दीए तिलक केसर भाल,
मुकिटि की लटिक छव कही नि जाई।
श्री मदनमोहनि ठाढे सघन तरवरि तरे,
मंद मुसकात सुंदरि कन्हाई।

स्रविन कुंडल झलकु छुट रही, अति अलक,
मुरिलक तान रस सो बजाई।
स्रविन सुनि ब्रह्म सनिकाद मुन थक्त भये,
देह की दिसा मनि ते भुलाई।
स्यामिरो वर्न अति नैन राजति अर्न,
पीति पट फर्न सुंदरि सुहाई।
हीए बनिमाल संग लीए गोपी ग्वाल,
रास रसभ से गोपाल माही।
लीए करि जोरि तत्त उघट ततथैई थैई,
दोऊ एक ते एक सुंदिरि सुहाई।
कहत विष्णदास हित कमल नैनाभ सुष,
मुर्ल का पर्न मै सभ रिझाई।

रागु रामकली

एहिउो सुत्तं मतु षोईउो रे
हरि सा मीत काल सा वैरी, मनो विसार न सोईउो रे।रहाऊ
मनु किर्साण धर्नि करु काया, बीज अवृत नित बोईउो रे।
सांत सहिज जल अंवृत वर्षे, हौमे कलिर धोईउो रे।
इहि संसारु अग्नि का भामुडु[1] ताते आपु संगोईउो रे।
गुर का शब्दु रत्न निरमोल, कुसासा के सूत परोईउो रे।
साधू जन भगवान भक्त विनु मुकतया कबू न होईउो रे।

रागु सोरठ

ममता विचलायो मुन जन को।
तिन ही को भगवान मानता अरि जानत कर मन को।
शिव गृह देषि लुभाने जगपति, मांगत हेम भुवन को।
हाटक मृग देषि राम भुलानो, मानत बनति वचन को।
संच पर संच थक्त भयो प्रांनी, कहति हमारा धन को।
कहु सांईदास पुरातन रेषा नौतन होत न कन को॥

१. भामुडु=ज्वाला।

सोठ

लाहा सुति शरीरो पीवणु ।
भ्रमु की भीत चुक्कयो नाही, भठ परयो इहि जीवणु ।
भ्रमु चूके कछु जान्या, तब दिष्ट न आवे दूआ ।
जरा मर्ण ते छूटा सतो, अभी भया तो मूया ।
रवि की कीर्ण सुरसरि विहग, कर रसना इहि पीवन की भावी ।
हं हं करति सुनावै सो हं हं कहा करो जब दिष्ट न आवी ।
रबि की कर्ण पकर पौ अंतर इहि उहु एकौ कोई ।
रास कचु जिस है सांईदास, कचन कबहू न होई ।

सोठ

जौ लौ राम शर्ण नही जानी ।
तौ लौ ढीठ अधम नही को, जूहै हि पसु नामु परानी ।
वोयो विपु षोयो सभ अपना, जानु जन्म अभिमानी ।
भूल परयो मग ही के जल जिउ साईदास भजु परु रैन विहानी ।

रागु आसा

सही कर्नि को मैं कित घर जाई ।
नेत्र निहारी वसिआ सक्लो थाई ।
तीर्थ वेद सक्ल वैरागे जित घर जाई ।
द्ययाल तिते तू आगे, दूचो पद षग त्रिगुटी जेती ।
प्याल परे द्ययाल गगन समेटी ।
रवि सागर वपु ससी जो न क्षत्री ।
वण फल फूले दियाल पुहपी पत्री ।
गुर पुछु सांईदास ढूढ लै आपे ।
कांत की कनक कुरग जैसे नापे ।

आसा

सुति रही सुति कहा गई ।
चाहित थाके दियाल एहि न भई ।
कहा से आवे कहा ते जावे, तांका मार्गु कोऊ न वताई ।

पाछे पकर पकर रवि किरणी,
नेत्र निहारी धायाल निज घर फिरनी।
कहिना सुनना सभ तुमरो गाथा,
सांईदास का प्रभु दसि दिश लाथा॥

सोरठ

मन रे इन मैं है कोऊ तेरा।
मूनिस पखी जैसे विर्ष बसेरा॥—रहाऊ
मात पिता ते पत्नी प्यारी, ढूढ ढढोर तनु पायो।
तिन तो अति गवन की विरीया, इनि उति वदनु दुरायो।
सीत घाम दुख सुप कर मान्यो, रच पच धाम बनायो।
तांते धीस निकाल्यो पिन मैं पलिक न रहिणा पायो।
इष्टि मीत अरु संजुन सहोदर, सदा रहित तुझि घेरे।
तेऊब उलटि कहै क्या विलमो काढो प्रेत सवेरे।
तन सुख हेत चर्न तजि के शिव प्रतिपालन मनु जोरयो।
तिन ही प्रिथमे लूका दीनो, सीस हडाहल फोरयो।
नरनारी अरु नेह कुटवी भर्त पोपन प्रति पारयो।
तेऊ बनोर अडाल चले है पाछे किन न निहारयो।
मै जग ढूढ ढढोर निहार्यो, सौच सुकच जीय माही।
सांईदास भगवान भजन विनु अंत काल कोई नाही।

रागु रामकली

अगम अगोचर अनहदि वाणी[1]।
कथा कोई कहे कहिन की नाही, अनभय गति हयरानी।
पांचो मार करे अपुने वश्य तौ इहि ज्ञानु बीचारे।
दशि दिश गवन करन ते थाको आप तरे औरो को तारे।
त्रिगुण अतीत रहित तति उपिजै तत पद माह बिल्हावे।
गंग जमुन के भीतर बैठा अगमो निगम लयावे।
सुन समाध सहिज लिव लागी मनु ले तहा चढावे।
पसरी किर्ण तिमर तब फूटा, सोहं शब्द सुनावे।

---

१. पृ० ६५८ पर यह पद आ चुका है। यहां दो पंक्तियां अधिक हैं।

शशि नही सूर पवन गति छूटी महापुष के वासा।
जन्म मर्ण की शंका नाशी तहा वसमो सांईदासा।

रागु धनासरी

पहिले पहिरे रैन दे मन मेरआ भाई, रहिता धुंधूकारे।
तदि सूर्जु चदु न होत आकै जुग गए अधिआरे।
सूर्य चंदु पौन न पाणी, धर्ति न गगन न गैणी।
सकल समाइ सपूर्ण रहयो, अबिला सतु वीचारे।
आदि जुगाद जु पहिरे बैठा प्रिथमे धुधूकारे।।

रहिता धुंधूकार विच मन मेरआ भाई निर्भो अनल अन
तद दूजा कोइ न जाणोए, साधिक सिध वकीलो।
साधक सिधि वकील न जापे, निर्भौ ऊहु निर्वाणी।
पार ब्रह्म परपूर्ण कहीए, सहिजे सुर्ति समाणी।
शास्त्र वेद पुराण भी आपे, जंगम जतन असीलो।
आदि जुगाद जु पहिरे बैठा, निर्भौ अनल अनीलो।

रहिता धुधूकार विच मन मेरआ भाई निर्भो ताडी लाइ
हसा सोइ समाइआ हरि गति लषी न जाइ।
हंसा सोइ समाया जंची निर्भो उहु निर्वासी।
पार ब्रह्म सपूर्ण कहीए अनूपान अविनाशी।
साधक सिधि रहे लिवलागी, बह्म अंतु न पाइ।
आद जुगाद जु पहिरे वैठा निर्भौ ताडी लाइ।।

देषो नेत्र निहार के मन मेरआ भाई तै विनु दूजा नाही।
सर्व निरतर रम रहिया निरजनु जत्रा माही।
जंत्रा माहि निरजनु रमिआ देषो हृदे विचारी।
अकुल नामु जिन्हा भौजुन्ह नस्कार। निरहारी।
अलष कोट पदभकर वैठा वहे जु जुगा जुगाही।
सांईदास प्रभ अकथी मूर्त तिस विनु दूजा नाही।।

रागु कल्याण

राम नाम निर्मल जलु, जलि मलन काटि डारे।—रहाऊ
औरु न कोई अैसो द्वार भार भय के दूर कानि चितवते चित
चारो जामदीन दूपटारे।
एक हूं तेज गत नाथ देव को अनाथ नाथ सात विघन जारे।
राजन के महाराज काज कानि संतना के द्रोपती भय अभै।
कौन लाज को न हारे
गनका गज अजे जान मान लीयो करुणामै हेत प्रीत धारे।
नर हरि चर्नि चीत मीत अंत के सहाइ बधि व्याध मुक्त कीने
काटे अघ भारे॥ ५।

राग कल्यान

रसिना राम नाम जपि लीजे।
तनु मनु धनु हति हेत अपन मै सकल समर्पनु कीजै।
वेद पुरान बहु विधि व्याकरणा काहे को पढि पच मरीए।
काम क्रोध मद लोभ मोह ते जो मनु सुद्धि न करीए।
जीवनवृत्त उदर के कानि जो विद्या गुन गहीए।
सो पंडतु समान धर्मु है अधिकारी ना कहीए।
छाडि कपटु अतिडिभ चतुराई अति आनंदु वढो है।
सर्व शास्त्र को सार भूप रसु माधोदास पढोजो है॥ ६॥

रागु आसा

राजा राम आए आनंद भए नगर अजुध्या माइरी[1]।
मंगल चार भए दसरथ के चलो बधावे जाइरी।
लछमन साथ अजोध्या आए, जानुकी वाम अगरी।
इकन्हा दूधि दही कर लीना, इकना हाथ तंबोल री।
इकना राज सिंघासन लीने इकि बोलत मीठे मीठे बोल री।
हष्यों भर्थ शत्रघन हष्यों हर्षी कौशल्या मांइरी।
नर हरदास सभे जन हर्षे फूल रही बनराइ री॥ ७॥

---

[1] यह पद एकबार पृ० ६५५ आया है। संभवत. राग भेद है।

रागु मलहार

रषने एक ही हाट के घर आनी त्रयलोक
नाल उपाया पाप पुन्य नाले सहिज वियोग ।
सकल समानो कृत्यमी, जाके रूप अनंत ।
सांईदास हृदि रचायो चतुर्दश किरयाण जीय जंत ।।८।।

मुर्ली जहि जहि श्रवण सुनी ।
दौर दौर दस दिस ते आए तजि तजि ध्यान मुनी ।
धेन न गहे जानु दतो तनु जमना चलन पायो ।
गवन न करति ताहु रवि को रथ पौन ध्यानु लगायो ।
जेती बधू बाल गोकल अहि पर्म प्रीति उपजाइ ।
गहु कर कलम पहिर अबि लेयन तिह तिह ऊमर आई ।
आनदेवे व्रिज के लोको आनदु प्रेमु वढायो ।
लील्हाधर करुनामय ठाकुर साईदास जसु गायो ।।९।।

रागु कल्याण

हरि को नाम मन किउ न जपत रे ।
काहे रे भरोसा करो जीवण का निसवासर तेरी अवधि घटात
तन धन जोबन तरवर छैईआ अजरी को पाणी जैसे जात ढुरा
बिनु रघुनाथ कोऊ काम न आवे काहे को झूठो गर्बु करात रे ।
साधि सगत हरि कथा कीर्त्तिन इनि बतीअन सौ पार परात ः
तूल रास जैसे अग्न दहति है राम जपति तेरे पाप जलात रे ।
राम नाम जपो उर अंतर आद अंत तेरे सग चलात रे ।
कहे साईदास जपो निसवासर मुखो कहति कछु मोलु लगात

अथ आर्ती लिख्यते

खंड खंड ब्रह्मड सकल मै बिधि बिधि जोत समानी ।
थाली गगन दीप रवि चदा निसपती ए बिधि ठांनी ।।
अटल ध्यान धरयो निज धर्नी मारुति चवर झुलावै ।
गावन हारे सदा द्वारे शब्दु अनाहदि गावै ।
तेरी आर्ती मेरे कवलापति पर ध्यान मेरे माधो गुणानिधान
मैं वार्या जां, सत उधार्न राम तेरी आर्ती ।।१।।

ग्गम गम्य गम निगम बीचारया विचर बीचार सुणाश्रा
सुण सुण सिद्ध साधि सुर पानी मुक्त पर्म पद पाश्रा।
गार ब्रह्म अपर पर सोहं हसा सुर्ति जनाश्रा।
मुलमा मध्ये हीरा पेष्या सतिगुर निर्प जनाश्रा। ॥२॥ तेरीआर्ती

अगम गुफा मग गुर दिषलाश्रा ताते सुर्ति लगाई।
अवघट घाट बाट घर ऊपर बिर्ला को बसिश्रा जाई।
उति घर बसे सो बहुर नि निकसे ओस घर यहि व्यवहारा।
साईदास फिरि बहुरि न घडीए न फिरि पवै पसारा।
तेरी आर्ती मेरे कवलापति पर ध्यान मेरे माधो गुणानिधान।
मैं वारे जां सत उधार्नि राम तेरी आर्ती ॥३॥

कैसे कर आर्ती तोह रिझावो।
मैं मूर्ष मति बुधि मेरी काची कहा तेरे गुण गावो।
ध्रू नार्द तेरे आगे नाचे क्या मै नाच दिषावो।
अनहदि शब्द बारे द्वारे घटा कहा बजावो।
कै त्रैकोट तेरे चर्न मलोवे क्या मै टहिल कमावो।
कोट पवन तेरे देह बहारी क्या मै चवर झुलावै।
जीय पिंड सभ तुमरा दीश्रा क्या मैं सीस निवावो।
अषत भवन मैं जोत तिहारी क्या मै फूल चढावो।
ससी अर भान छाए मन सोभा दीपक कहा जगावो।
महादास भजु लाल त्रिभगी कहति सुनति गति पावो ॥१॥

आर्ती लेहो मेरे राजा राम, आर्ती लेहो मेरे श्रीभगवान
अषल भवन के नायक माधो कमलापति परधान।
दीप धूप लै करो गार्ती चोश्रा चदन पान।
कोटक नार्दि बीन बजावे गावे गोपी कांन।
जो जो सर्नि आए प्रभ तुमरी सेवा कीए निधान।
क्या लै गुन बर्ने मेरी रसना निगम रहे हैरान।
स्मृत शस्त्र बेद पुकारे पतति पा न तेरो नाम।
कौट भक्त तेरी करे आर्ती सिद्धनाथ सुर ग्यान।

जनम जनम एही फलु मागो प्रम भक्त देहो दान ।
महादास सचु प्रगटि कहति है सुनीए श्री भगवान ।।३।।

जय जय आर्ती राम जी तिहारी ।
दीन दियाल भक्त हितकारी ।।
जन हित प्रगटे हरि बपु धारी । जन प्रहिलादि प्रतज्ञा पारी ।
द्रुपत सुता के चीर बधाए । गज के काज पिआदे धाए ।
दस सिर छेद बीस भुज तोडी । सुर तैतीस बंद ते छोडी ।
छत्र गहन कर लछमन भ्राता । आर्ती कर्त कौशल्या माता ।
सुक सार्द नार्द मुन गावै । भर्त शत्रघन चवर भुलावै ।
सन्मुष चर्न गहे हनूबीरा । ध्रू प्रहिलाद बाल सुभ बीरा ।
सीता सहित अयोध्या आए । सभ सावल मिल मंगल गाए ।
रावण जीता राम ग्रहि आए । रामानदि स्वामी आर्ती गाए ।।४।

आर्ती करत जनक करि जोरे ।
हरि हरि बडे भाग राम जी आए हो मोरे ।
सीया स्वंवर धनष चढायो । सभ भूपन को गर्बु मिटायो ।
तोड पिनाक कीयो दोऊ तुटिका । रघुकुल हर्षि रावण भई संका
आई सीता संग सहेली । हर्षि निर्ष उस माला मेली ।
कचन थाल कपूर की वाती । सुर नर मुन जन आए बेराती ।
गज मोतीअनि को चौकु पुरायो । कनक कलस भर मंगल गायो
धंन धन राम लषमन दोऊ भाई । धंन्य दशरथ कौशल्या माई ।
मिथुला पुर मै वजत वधाई । दास मुरार स्वामी आर्ती गाई ।५।

आर्ती नृसिंह कवर की बेद बिमल जसु गावै ।
प्रभ जी पहिली आर्ती प्रहिलाद उबारे हरिनाषस नषि उदर बिड
दूसरो आर्ती बाबन सेवा बलि के द्वार पधार्यो देवा ।
तीसरी आर्ती ब्रंह्म पधारे सहस्राबाहू के कार्ज सारे ।
चौथी आर्ती असर सिंधारे भगत भभीछन लक पधारे ।
पंच आर्ती कंस पछारे । गोपी ग्वार सकल प्रितपारे ।
तुलसी को पत्र कठ मन हीरा हर्षि निर्ष गावै दास कबीरा ।।६।।

कहा लै आर्ती दासु करे हरि हरि, सकल भवन जांको जोत फिरै।
सात समुद्र जांके चर्न निवासा काहा भयो जल कुंभ भरे।
कोट भान जाके नष को सोभा कहा भयो कर दीप धरे।
ठारा भार रुमांवल जांके कहा भयो सिर पुश्प धरे।
अनेक भान जांके वाजे कहा भालरि भनकार करे।
शिव सन्कादक अरु ब्रह्मादिन नादे मुन जांको ध्यान करे।
लष चौरासी व्यापक रामा केवल हरि जसु गावे नामा ।।७।।

आर्ती कोजै राजा राम रीभै।
भक्त करो जम त्रासु न दीजै।
पहली आर्ती पुहप की माला काली नाग नथ ल्याए कृष्ण गोपाला
दूसरी आर्ती देवको नंदन भक्त उधार्न असर नकंदन।
तीसरी आर्ती त्रिभवन मोहे गडै सिंघासन राजा राम जी को सोहे
चौथी आर्ती चौदस पूजा एक नरंजन स्वामीऔरु न दूजा।
पाचवी आर्ती रामजी को भावे रामजी के हरि जस नामदे गावे ८

आर्ती हनूमान लाला की। दुष्ट दलन रघुनाथ कौला की ।।
जांके बल गर्जे अरु कापे। रोग सोग दुष्टंसीव न जांके ।।
अजुनी पूत महा बलदाई। साधन सेवक सदा सहाई ।।
दे बीड़ा रघुनाथ पठाए। लंका प्रजाल सीया सुधि ल्याए ।।
लंक सी कोट समुद्र सी षाई। जात पवन सुत वार न लाई ।।
लक प्रजाल असर सभ मारे। राजा राम जी के काज सवारे ।।
लछमन मूर्छ परे धर्नी पर। आन सुजीवन प्रांन उबारे ।।
वावी भुजा सभ असर सिंघारे। दाहिनी भुजा सभ संत उधारे ।।
पैठ प्याल तोडे सभ किंकर। अही रांवण की भुजा उफारी ।।
घंटा ताल पषाउज वाजे। जगमग जोत अवधि पुर राजे ।।
कंचन थाल कपूर सुहाई। आर्ती कर्त अजनी माई ।।
सुर नर मुन जन आर्ती उतारे। जय जय जय हनूमान उचारे ।।
जो हनूमान जी की आर्ती गावे। बसे बैकुंठ बहुरि नही आवे ।।
लक वधो सन सीया रघुराई। तुलसीदास स्वामी आर्ती गाई ।।६

हर्ति सकल संताप जनम के मिटत तलब जम काल की ,
आर्ती कीजै मदन गुपाल की ।।
गो घृत रचित कपूर की बाती झलिकत कंचन थाल की ।
चद्र कोटससि भान कोटि छबि मुप सोभा नद लाल की ।
शष चक्र गदा पद्म बिराजे उर बाजंती माल की ।
कीट मुकट कर सारंग सोहे अजरी कुसम गुलाल की ।
सुदर लोल कपोलन की छबि निर्षत ब्रिज के बाल की ।
सुर नर मुन जन करे आर्ती मोक्ष मुक्त प्रितपाल की ।
घंटा ताल मृदग झाझरी बाजत बैन रिसाल की ।
हों बल बल रघुनाथ दास पर मोहन गोकल बाल की ।। १० ।।

निर्ष सरूप सीया रघुबर को छव नही जात वपानी ।
आर्ती कर्त कौशल्या रानी ।।
कनक थाल गज माणक मुक्ता भरे सो बहु विधि आनी ।
मार्यो मान सकल भूपन को कीर्त्त बेद बषानी ।
तोड्यो धनष जनक जगपूर्ण तीन लोक मैं जानी ।
जनकराय की लाषी पर्सराम हित मानी ।।
दसरथ सहित अवधपुर वासी उचिरति जयजयबानी ।
तुलसीदास प्रभ अवचल जोडी भक्त अभैपद दानी ।। ११ ।।

अथ श्री जोग चांदना

ओं सति सरूप बाबा साईदास जी

रागु हिडोल

परिसादि गुर के भओ आनदि।

पूर्न पाओ मुनि मुकद॥—रहाऊ

मनुख उलिटयो एके त्तारि।
संसा भर्म सभ दीयो टारि।
नषि सिर पूर्न ब्रह्म ज्ञानि।
मानो नाही देव वहु आनि।

सति गुरि किरिपा तिविहूं जानि।
जवि लागे गुर चर्न ध्यान।
विहारी दास प्रभ भए क्रपाल।
कर्मचद रहे चर्न नालि।

उलिटि परियो जवि आतिमा।
आनि ठौरि काई रही नाह।
जलि थल महल सर्व पूरि।
जवि देपो तवि है हजूरि।

चौपाई—

सति गुरि पलक है बहुति प्यारी।
रोम रोम विच लागी तारी।
नषि सिप पूर्न ब्रह्म ज्ञानि।
कर्मचदि गुरि लागो ध्यानि।

सतिगुरि किर्पा अपर अपारि।
जांको नाही पारावारि।
हरि की क्रपा कोई दासु विष्याने।
कर्मचदि गुरि चर्न पछाने।

द्वादिस मेलो सुत लगाइ।
अंतिर वाहर रहयो समाई।
गगिन चढे चढ गर्जे जाइ।
कर्मचदि गुरि चर्न मिलाइ।
इसि चर्नन का इस्थर धरो ध्यानि।
कर्मचंदि गुरचर्न मै सरहो गलितानि।
अयसा धारो जु दौडि मिटावे।
कर्मचंदि तवि दर्सन पावे।
इस दर्सन का पावे भेव।
नषि सिषि पूर्न आतिम देव।
अनिभेय कथा भैं नाही कोई।
कर्मचदि गति पावे सोई।

चौपाई—

अयसी वाणी वणिने लागी।
राम नाम पाओ वडिभागी।
अनिभैय कथा सोह जाप।
अयसे जाप वढे परिताप।
कर्मचदि गुरि चर्न वीचारि।
वाहर अंतिर जोती तारि।

दो०—आसा अंतिर मारिए पाईए पदि निर्वानि।
कर्मचंद गुरि चर्निते आठि पहरि गलतान॥
कर्मचद परि करणा करो धरो पीठ परि हाथ।
मानि वलेके बगते राष लिओ महाराज॥

सो०—वुकिल विच यारु असाडा काहे वाहरि जाईए।
इसि यारि दी सूर्त ऊपर पलि पलि विलम नि लाईए॥
अयसे स्वास मतु करों अजाई स्वास स्वास चित लाईए।
सतिगुरि सिहजा उपरि वसिए त्रिगुटी महल सुष पाईए॥
त्रिगुटी पाईए गुरि परिसाद कर्मचदि गुनि गाईए।

अइसी लगी वलाइ लागित ही भ्रमु जरि गियों।
जनिम मर्नि भौउ जाइ चर्न कमल की मौजिमै।।
चर्न कविल मै छकि रहे निसिवासरि गलतानि।
कर्मचंदि गुरचर्न धूर परि लागि रहे गुर ज्ञानि।।

चौ०—अइसा दाता कौन है दे आतम को वीचारि।
बिन गुरि कैसे पाईए अंतिर गत रस सारि।।
गुरि दाते गुरि वडै है गुरि किरपा ते पाइ।
कर्मचंदि गुर चर्न धूरि परि अनिक वार बलि जाइ।।

पौड़ी—

अंतिर अइसी जोति प्रकासी।
झिलि मिल दर्सन सदा बिगासी।
अयसी जोति को लागे भाई।
कर्मचंद गुर चर्न सहाई।
सनिकादिक ब्रह्मादिक थाके जानि।
तुम भी भजो सभ मेरो कानि।
अइसी किर्पा जनि पहराई।
कर्मचंदि सोहं स्वास स्वास समाई

पौड़ी—

उलिटि कौल जवि ऊपरि जाइ।
नाडी नाडी स्वास बनाइ।
सूषम नाड सूषम गति पाई।
कर्मचदि गुरि सदा सहाई।
अष्ट कौल है जांके पात।
पाति पाति फूल बिन सोह् जाप।
इसि सोहं का करो वीचारु।
कर्मचंद गुर चर्न अपार।

पौड़ी—

अपारि कला को जो कोई लागे।
जाके भागि सोई निसि जागे।

कमचदि तुम जागो भाई
सोआं सोइआ किउ रैन गवाई।
उलिटि पौन गगनतरि जाइ।
चर्न कोल मै रहुजो समाइ।
अइसा दर्सुन देपो भाई।
कर्मचंदि मिल जोति सवाई।

दो०—गगिनि मार्ग मै जोति झिलमिली तहा अंवृत रसु पीजे।
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि चितु चेतिन करि दीजे ॥

पौ०—गगनि मडिल मै अंवृत कूआ तहा जाइ लिवि लागे।
तहा जोत झिल मिल हरिसे मोहं सविद मिला जागे ॥
कर्मचदि गुरि चर्न धूरि परि स्वास स्वास चित लागे।
सुर्त समानी सविद मै सवदि चढिओ अकास।
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि लागी वहुति प्यास ॥
इही प्यास लागी रहे निस वासरि अरि भोरि।
कर्मचदि गुरि चर्न धूरि परि होए नैनि चकोरि ॥
चकोर दिष्ट अकास की आनि नि कितिहूं जाइ।
कर्मचदि गुरि चर्न धूरि परि रहियो सर्व समाइ ॥
अकास चादना सविद है चंदि चकोरि के भाइ।
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि अनेक वारि वलि जाइ ॥
अग्नि चुगे चितु ना जले सीतिल ब्रह्म वीचारि।
कर्मचंदि गुर चर्न धूर परि अनिक वारि वलहारि ॥

पौ०—उलिटि परा जवि आप मय मर्धा रही नि काइ।
रोम रोम विच छकि रहियो अतिरगति लिव लाइ ॥
रूप रेष अश्चर्ज है तहा कर्मचदि चितु लाइ ॥

पौ०—पर्म पुर्ष को जानीए तौ परिमार्थु होइ।
जहा सति गुरि का उपिदेसु है परिमार्थ कहीए सोइ ॥
औरि परिमार्थु कछु नही देषो सविद वीचारि।
कर्मचदि गुरि कृपा ते पाए अपरि अपार ॥

रिमार्थु परिलोक बतावे सति गुरि चर्न मिलेत हरि ध्यावे।
रिमार्थु है इसका नाम कर्मचंद गुर चर्न ध्यान।
लिटि परा जवि प्रभू अपार सोहू आतम करो उचारि।
म परसादि गुरि लागो धाइ कर्मचंदि गुर ज्ञानि बताइ।

-अपिर अपारि की बाति कौ लागि रहो दिन रात।
कर्मचदि गुरि चर्न धूरि आइ मिल्यो परिभाति।।

उलिटियो कौलि चडियों अकाम मनि पोने को लीयो ग्रास।
रनि आम यों मुति लगाइ कर्मचदि गुरि चर्न धूरि परि
अनिक वार वल जाइ।।

मनु चंचल निश्चल भयौ सतिगुर के परिसादि।
औरि जतनि सभ कछु नही सतिगुरि चर्नी लागि।।
इस मनि का एही उपाउ निस वासरि पल ध्यान।
कर्मचद गुरि चर्न धूरि परि लागि रहियो गुर ज्ञानि।।
मनि की बूटी गुरि सबिद है मानि लियों तति काल।
कर्मचदि गुरि चर्न धूरि ते मिटि गियों सकिल जंजाल।।
बूटी एह अश्चर्ज है सति गुरि दैई बताइ।
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि अनिक बारि बल जाइ।
सति गुरि का उपदेसु मानि के बूटी लेहु बीचारि।
सति गुरि किरपा गुर नजिर है बूटी अपर अपार।।
बूटी अपिर अपार परिसति गुरि ते पाइआ।
कर्मचदि गुरि चर्न ते घरि निर्भो आइआ।।
आ जीत्या सति गुरि कृपा ते जनिम ते जनिम मर्न दुषि जाइ
कर्मचदि गुरि चर्न धूरि परि अनिक वार बल जाइ

संति सर्न की ऊपमा मो पह कही नि जाइ।
अइसी सर्न सहाइ हम्हारे जनिम मर्न दुष जाइ।।
सांई सर्न पहलादि उबारिओ कर्मचदि बलि जाइ।
सनिक सनंदन व्यासदेउ गहर गभीरा।।

सांई सर्न नार्द जी कही वही सर्न रघवीरि।
गुरि किर्पा ते पाईए एही संतिन की धीरि॥
संतिअचर्ज अचरुजु कतीने कर्मचद गुरि ज्ञानि बष्याने।
सत सहाई सेवका जनिम मर्न दुष जाइ।
कर्मचदि गुर चर्न धूरि परि अनिक वारि बल जाइ॥
सतिन धूडि अपार है अदिभुति कही नि जाइ।
कहिन सुनिन ते परे है तहा कर्मचद ठहराइ॥
चात्रक चित चकोरि के एन्हा प्रेम की वांण।
चातक चद मै थस रहो प्रेमी दर्स नि मानि॥
चात्रक बूंद प्यास है रलि मिल एको दान।
कर्मचद गुर चर्न धूरि परि रिदे न करु अभमान॥
वर्ण आश्रम अभमानि है इउ मै चिता रोग।
अभमानि त्याग लाग नाम को पावो अंब्रित भोग॥
इही भोग इही जोगि है इहि लीला अपर अपारि।
कर्मचदि गुरि किर्पा ते लाग रही लिव तार॥
इहि लील्हा लिव तारि की मोपे कही नि जाइ।
कर्मचदि गुर किर्पा ते लील्हा माह समाइ॥
अनिभय मथे इस तुल नाही छदि।
कर्मचद गुरि किर्पा ते पाउो सर्व अनंदि॥
इह अभमानि को त्याग के रहो चर्न सो लाग।
कर्मचद गुरि चर्न ते तवि पावो वैराग॥
वैर राग ते रहित है वैयरागी कहीए सोइ।
कर्मचंद गुर चर्न लगि दुरिमति मनि ते षोई॥
योगु चांदना नामु है पंथु है अपर अपार।
कर्मचंद गुरि चर्न धूरि परि लागि रही लिव तारि॥
लिवि लागी चांदनु भया निसिवासरि अरि भोरि।
कर्मचदि गुरि चर्न धूरि परि होए नैनि चकोरि॥
चकोरि चांदना आपि है प्रेमी लीजै मानि।
कर्मचंदि गुरि चर्न मै लाग रहयो है ध्यानि॥

बैन समाने नैन मै नैन रहे निराधारि।
नैन बैन मै एकता पाए पुर्ष अपारि॥
अपारि कला नैनन मै आई नैनो भीतिर रह्यो समाई।
इक पल जांदा नजिर नि आवै अजन माहि निरंजन पावै॥
कर्मचंदि गुरि चर्न मिलाइ।
अइसा परिचा अंतिर पाइआ। पलि पलि चड्डिदा रूपु सवाइआ॥
उसि परिचे को जांने कोइ। सति गुरि मिले निरंजन होइ।
अइसी दात सति गुरि की जांनि। कर्मचंद गुरि चर्न ध्यानि॥
निर्मल जोत प्रकासीए सतिगुरि के उपिदेस।
कर्मचंदि गुरि किर्पा ते पाए अंतिर वेस॥
एह वेसु बिसवासु है भाई रुपु रेष कछु लषियो नि जाई।
अपरि अपारि गति लषी नि जाइ कर्मचंदि गुरि चर्न समाइ॥
अंतिरि गति रसु पावो भाई गगनि मार्ग मै जोत समाई।
गगन गुफा मै अंब्रृत सारि कर्मचंद गुरि चर्न अपारि॥
सति गुरि सबिदु प्रकास्या आओं अंब्रृति स्वादि।
कर्मचंद गुरि चर्न धूरि परि मिटि गए सकिल बिवादि॥
सतिगुरि बिरहो जागआ रोम रोम छक जाइ।
कर्मचंदि गुरि चर्न धूरि परि अनिक वारि वल जाइ॥
उलिट पलट का षेल क्या जाने चतिर सुजानि।
कर्मचंदि गुर चर्न धूरि परि लाग रह्यो गुरि ज्ञानि॥
मनुआ उलिटि चढयो अकास। गगिनंति मै लीनो वास॥
सर्व सुषु तहा भओ कल्यान। तहा आत्म पूजा गुर चर्णन ध्यानि॥
जाइ निरिवास भओ तहा भाई। औरि चितिवना उठे नि काई॥
नषि सिष पूर्न भओ प्रकास। तवि ही पाओ अंतिरि बास॥
अंतिरि कथा सुनो रे भाई। रूप रेष कछु लषयो नि जाई॥
कोटि सूर्य का भओं प्रकास। तवि चर्न कौल मै लीनो वासु॥
अपरि अपारि लील्हा तेरी जानी। भ्रम भौ जल ते उतिरे पारि॥
भ्रम भौ जल कहा रे भाई। चर्न कौल की एह वडिआई॥
स्वासु अविर्था कतहूं न जाइ। स्वास स्वास मै सुर्त समाइ॥

स्वास सुत का मेलु है सोह अपिर अपारि
सुर्त समानी सबिद मैं सबिद रहयो निरिधारी ॥
कर्मच दि गुर चर्न धूरि परि पाए पुर्प अपारि ।
चर्न अपरि अपारि है चर्नन का करो ध्यिान ॥
कर्मचंदि गुर चर्न ते पाउौ अभे पदि दान ।
वडिभागी तिस को जानीए पावह गुरि को ज्ञानि ॥
कर्मच दि गुरि चर्न ते चढियो पदि निरवांनि ।

सति गुर ज्ञानि है अपर अपार । नपि सिप पूर्न ब्रह्म वीचार
ब्रह्म वीचारि का करो वध्यानि । योगि चांदना लीजै मानि
योग चादने सबिद प्रकास । कर्मच द गुर पूरी आस

ज्ञानि कला वढती रहै सति गुरि अपिरि अपार ।
योग चांदना जानीए कर्म च द बिसथारि ॥
हौउ भा चिता रोगु है तिस का करो त्याग ।
कर्म च द गुरि चर्न ते पाउो ब्र ह्म वैरागि ॥
वैराग कला गुरि ज्ञानि है औरि जतिन नहीं कोइ ।
रोम रोम मय छकि रहे तहा जनिम मिर्त नही होय ॥

जनिम मिर्त कौनि को कहीए । अपारि कथा अतिर ही लहीए
अपारि कथा का करो वीचारि । तहा योग चांदना अपरि अपारि
जहा जोति प्रकासी है निरधारि । सुर्त स्वास मिल सबिद उचारि
उलिटि कौल गगनंतिर जाइ । कर्मचंदि गुरि दीया दिपाइ

अतिरि बाहिर छक रहियो निसि दिन आनंदि पाइ ।
कर्मचंद गुरि चर्न धूरि परि रोम रोम छक जाइ ॥
योगि चांदना नामु है सति गुरि लियो सभालि ।
अनभय कथा कौनि सो लहीए सतिगुरि पूर्न द्याल ॥

सति गुरि पूर्न नामु दिढाए । करि किरिपा गुरि चर्न मिलाए
अतिर पाउो ब्रह्म ज्ञानि । कर्मचंद गुरि का एह दानि
पूर्न आतम ज्ञानि किर्पा सति गुरि होइ । जनिम मिर्त नही जाने कोइ

जीविति मुक्त कहीए सोइ। कर्मचंद गुर चर्न ते अभे पदार्थु होइ
गगिनंतरि मैं पेलीए निसि दिनि आठो जामि।
कर्मचदि गुरि चर्न धूरि परि लागि रह्यो गुरि ज्ञानि ।।
जनिम मिर्त ते पारि है गावे सोह गीति।
कर्मचद गुरि चर्न ते होए नैनि अतीति ।।
मनि को जीति अजीति पदि पावै। सूर्त सविद लै कठ लगावे ।।
गुरि किरिपा गगनतिर जाइ। मनुआ उलिटिआ मने समाइ ।।
गुरि अ तिरि रग दीउो थताइ। अ तिरि गति लिव पूर्न लाइ ।।
आतम सो लिव लागी रहे वाजे सविदि गँभीरि।
तहा अनहद सविद अपारि है सोह गावे गीति।
कर्मचद गुरि चर्न ते होए नैनि अतीति ।।
करि किरपा पाईए हइ भाई। आपे आइ जोत समाई ।।
रोम रोम विच रूपु सवाई ।।
नपि सिष पूर्न आत्माज्ञानि। तहा चर्न कौल का लागा ध्यानि
सो एह चर्न है अविर अपार। कर्मचंदि लिव लागी तारि ।।
प्रेम कला वढती रहे घटिती भली नि जानि।
कर्मचदि गुर चर्न धूरि परि पाए पुर्प सुजानि ।।
एह प्रेम अश्चर्ज है अतिर रह्यो समाइ।
कर्मचदि गुरि चर्न धूरि परि अनिक वारि वल जाइ ।।
प्रेम समाना सहिज मै सहिज प्रेम मिल जाइ।
सहिज प्रेम मिलए कहे आनि न कतिहूं जाइ ।।
कर्म चदि गुरि चर्न धूरि परि प्रेमी सहिज गति पाइ।
सुर्त समानो प्रेम है उलिटि मनि ही को षाइ ।।
मनु ही सवुदु हो रह्यो गगिनंतिर मै जाइ।
कर्म चदि गुर चर्न धूरि परि अनिक वारि बल जाइ ।।
सुन्न सविद का चादना देषे अचरज रूपु।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूरि परि पाए प्रेम अनूपु ।।
सुन सविद अति सिषर हे गावे सोह गीति।
कर्मचन्दि गुर चर्न धूरि परि होए नैनि अतीति ।।

अतीत मार्ग अपारि है अगम पथ को सारि।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूरि परि पाए प्रेम अपारि।।
प्रेम पुर्प अपारि है निरजन की हय जोति।
कर्मचन्दि गुरि चर्न ते आतम निर्मल होति।।
ागे अगे अगे रिजाइ। रोम रोम विच रहयो समा
ापि सिषि पूर्न आतम ज्ञानि। तहा चर्न कौल का लागा ध्या
र्न कौल कैसे है भाई। ताकी महिमा कही नि जा
तेन चर्नन का करो प्यारि। तवि ही पावो मुक्त द्वा
ाधनि मुक्त तहा कछु नाही। प्रेम पदार्थ हे घटि माह
अचिव अवृत छक रहे पाइउो पदि निर्वानि।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूरि परि सदा सदा गलितानि।।
अयसा दाता को नही जैसे संत उपिकारी।
सति चर्न की धूरि परि जाउ सदा वलिहारी।।
संनि जवी किरिपाल होइ तवि मिले मुरारी।
चर्न कौलि की धूरि परि कर्मचन्द वलिहारी।।
सांई देवल देवता आत्म देवल होइ।
आत्म देवल स्वास है मनुआ लेहु परोइ।।
मनु मनिसा मिल षेलु है देबल कहीए सोइ।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूरि परि तहा जनिम मिर्त होइ।।
जनुमु मिर्तु एक वाति है इहि वाति मै नाह।
वाति समानी बाति मै एह अचरजि रूप अपारि।।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूड परि पाए अलिष अपारि।
अतिरि लिवि लागी रहे गर्जे सविद गंभीरि।।
चहु दिस चमिकै दामनी सोहं पुर्प रघुबीरि।
कर्मचन्दि गुरि क्रपा ते उतिरे बेनी तीरि।।
गुणु को ग्राहु जु कीजिए औगिण देहु बहाइ।
गुण औगण ते परे है तहा कर्मचन्द ठहिराइ।।
भगित भय को दूरि करि निर्भौ गावो गीति।
कर्मचन्दि गुरि क्रपा ते होए नैनि अतीति।।

भिख्या मागी नाम की सति गुरि सदा क्रपाल।
कर्मचन्दि गुरि क्रपा ते एह स्वासनि की माल॥
एह माला है नाम की मका मनुआ नाहु।
कर्मचन्द गुरि क्रपा ते सोह हसा गाहु॥
कांटा लगियो प्रेम का अतिर घसता जाइ।
जाता जाना तहा गया जहा सबदि सुर्त मिल पाइ॥
एह बाति है प्रेम की नपि सिप्र रहयो समाइ।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूड परि अनिक वारि बलि जाइ॥
प्रेम प्रकासयो सहिज मै सति गुरि दीओ बताइ।
नषि सिप आत्मु प्रगटियो अतिर गति लिव लाइ॥
अतिर लिव लाइी रहे सतिगुरि दीयो बताइ।
कर्मचन्दि गुर चर्न परि अनिक वारि वल जाइ॥
सतिगुरि विरिहो जागिआ जनिम जनिम सुपु पाइ।
कोटि जनिम का पशु था पल मै पहुचे जाइ॥
स्वास स्वास भजु नाम कों बिरिथा स्वास नि षोइ।
रतिन स्वास जबि जबि जान्या मनु माने सुषु होइ॥
अयमे स्वास तां बलि बलि जाईए। चर्न कौल चितु द्रिढ करि लाइ
चर्न कौलु मै कौतिक देष्या। निज सरूप मिल आनंद पेष्या॥
आनदि कला बढती ही जाए। कर्मचंदि चितु चर्न समाइ।
रा रा ममा भगतु है सोहं गावा गीति।
कर्मचदि चितु गुरि चर्न धूरि परि होए नैन अतीति॥
भानु प्रकासयो जगित मै तिमर गियो बिवहाइ।
कर्म चन्दि गुरि चर्न धूड पर अचिरजि भानि चढाइ।
कुसंगि कविहूं नि कीजिए सदा रहो सति संगि॥
कुसंगि मार्गु अज्ञानु है सति संगु सदा बीचारु।
दुषु सुपु कविहूं न लागही इहि संतिन का उपकारि॥
सत सदा अरोग है रोगी सदा कुसगि।
इसि कुसगि को त्यागि देह सतिनि सौ लिव लाइ॥
कर्म चन्द गुरि चर्न धूड परि जनिम मर्न दुष जाइ।

हमरी सति सो बनि आई ।
सतिन सो हमि लेवा देवा सतिन सो वि
सतिन सो हम लाहा पटआ भग्नि भरे
सँति चर्न की किरिपा होई उनिरे वेनी
कर्मचन्दि गुरि कृपा ते पाए चर्न
गुह्यि कथा मै लागो भाई । अतिरि वाहरि रहयो
अतिरि वाहरि जाका वासा । रोम रोम विचरहयो
प्रकास भउो जवि आत्म निर्मल रूप अपारि ।
निर्गुनि सुर्गुन एकता अटिल रूप चित्त धारि ।
सति कृपा ते जानिआ गुह्य कथा अपारि ।
गुह्य कथा निरिवैरि है वैरु नि कबिहूं जानि ।
कर्मचन्दि गुरि कृपा ते लागि रहयो गुरि ज्ञानि ।।
प्रेमी सदा चकोरि है वासना उठे न काइ ।
नैनि समाने जोति मै जोति नैनि मिल जाइ ।
कर्मचन्दि गुरि कृपा ते नैनिन जोत समाइ ।।
च चल मिर्गु मारो रे भाई निहचलु सुर्त सदा र्घा
च चलु मारिउो गुरि किरिपा जानि कर्मचन्द गुरि
एक कनिक अरि कांमनी दोवे करो सभ त्यागि ।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूड परि तवि पावो वैराग ।
कनिक कांमिनी वाति है मनुआ कतिहूं न जाइ ।
कर्मचन्दि गुरि चर्न ते अतिरि गति लिवि लाइ ।
अइसा प्रेमु प्रकासउो मनुआ लेहु उलिटाइ ।
मनु उलिटाना देह ते गगिन गुफा मै जाई ।
गगिन गुफा मै षेलते कर्मचन्दि सुषु पाइ ।।
नैना अटिके जोति सो जोति नैनि मिलि जाइ ।
नैनि जोति है आत्मा परिमात्म रहयो समाइ ।
गुरि किर्पा अश्चर्ज है अचरजु रहयो समाइ ।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूड परि आत्म गति लिव लाइ
बिन परितीति कार्ज नही जो तीर्थ फिरे सकल बनि
जवि प्रतीत आवे घटि माह कार्ज सकल अतुंही म

काज मकिन पून भए चन कबिल चितु लाइ।
कर्मचन्दि गुरि चर्न धूड परि अनक वारि बलजाइ।
हरि सेवा द्वादस वर्ष गुरि सेवा पल एक।
ताह बराबर सांईदास धर्म नि होति अनेक।
नेह रीत की प्रीति का मर्मु न जाने कोई।
कर्मचन्द गुर चर्न ते लगे सो पूर्न सोइ।
नेह रीत की प्रीत करु और प्रीत नही जान।
कर्मचन्द गुर चर्न सौ सो मादी लागी मान।
बेपरवाह सतगुर की कृपा जानति लेह वीचार।
कर्मचन्द गुर चर्न धूर पर अनकवार बलहार ॥

इतिश्री जोग चांदना समाप्तं शुभंमस्तू ।

हरिश्चन्द-कथा

ओं स्वस्ति श्री गणेशाय नमः

दो०—कौलापति को सिमरीए गणपति गिरा व्यास।
गुरु चर्नन को रिदे धरि कार्ज होवे रास॥

चौपाई—

वदो प्रथम गुरां के चर्ना। जिह प्रसाद दुस्तर जग तर्ना॥
सूर्य रूप तिमर के हृता। दाता मोक्ष प्रभू भगवंता॥
वर्षे ज्ञान शक्र की न्याई। शिष्य अचै चात्रक सुप पाई॥
इंद्र वर्से समा विचारी। गुरु नित वर्से जगत मंझारी॥
वर्तन नीच जिवे जलु रहे। ऊच पुर्पु तिस कोऊ न छुहे॥
मिले सुरसरी होइ न आना। पान करे पडित परिषाना॥
तिमि गुर मिले नीच जनु कोई। ब्रह्मा की सम सर सोऊ होई॥
गुरु है सकल भवन के राजे। ब्रह्मा शंभु गुरा के साजे॥

दो०—सप्त लोक चौदा भवन आद अंत के माह।
गुरु समान दाता अवर तीन लोक मै नाह॥

चौपाई—

वदौ कृष्णचंद के चर्नां। कवल वदन सुंदर सभु वर्नां॥
दुष्ट * विदार्न संत सहाई। विघ्न विदार्न सभ सुषदाई॥
अचल रूप अच्युत अविनाशी। जगु उपजावन सकल विनाशी॥
ज्ञान रूप विज्ञान सरूपा। काल द्वैत ते पर्म अनूपा॥
श्रिष्ट रूप सभु पेलु तुम्हारा। तू प्रभु सकल रूप ते न्यारा॥
जो जनु तुमरी सर्नी आवै। जग मै सुष पर्म गति पावै॥

छन्द

सिर मौरमुकटि वजती माला पीत वसन सुहावहे।
कचन तनी नव सात साजहि नील पट छव पावहे॥
नित करे नव तन चर्न सुदर कवि कवन छवि को जानही।
जो धरे जुग पद रिदे भीतर सोई पर्म सुजानही॥

सोरठा—

सुनो सत चितु लाइ हरि भगतिन की बार्ता।
करै कृष्ण सहाइ कथा सपूर्ण होइ तब॥

चौपाई—

नमो नमो गुर पर्म दियाला। नमो नमो जसुधा के लाला॥
नमो नमो सभ जग के सगी। नमो नमो महादास त्रिभगी॥
नमो नमो गज वदन विनायक। नमो नमो सूर्य वर दायक॥
नमो नमो शिव शक्त गभीरा। नमो नमो सुक व्यास समीरा॥
नमो नमो जल धर्न अकासा। नमो नमो पावक पर्गासा॥
नमो नमो सुर मुनी चौरासी। नमो सत सभु ग्यान प्रगासी॥

दो०—नमो नमो सभ श्रिष्ट को इद्री नमो शरीर।
पच तत्व आतम नमो नमो भानसुत वीर॥

चौपाई—

स्यामदास सति गुर के चर्ना। ताकी गहो सुद्रिढ करि सर्ना॥
सतदास जो रिदे ध्यावे। दर्गा गिया पर्म सुषु पावै॥
गुर्वषशदास गुर दया सरूपा। ज्ञान दया मै महा अनूपा॥
जो सिमरे सोई सुष पावै। गुर जन सोई गुरो को ध्यावै॥
सवत ठारा सै अरु तेई। कृष्ण पक्ष एकादश तिथ एई॥
मघर मास बिष्ण की वीसी। मगलवार पुनर्बस थीसी॥
ता दिन उपज्यो रिदे मंझारा। रचो कथा कछु होइ उधारा॥
जग मै जीवन सुफन समाना। कहो कथा गुरि करै जु दाना॥

दो०—जग मै जीवन तो भला करै कछुक सुभ काज।
नही तो मृतक ही भला काहे करे विषाध॥

चौपाई

जीवै तो जो धमु कमावै। कै जीवै परि स्वाथ धावै
कै जीवै परमातम जाने। कै जीवै गुरु भगति सुजाने।।
कै जीवै सा मानस रूपा। कै जीवै धर्मी जग भूपा।।
कै जीवै तीर्थ के वासी। कै जीवै जग सदा उदासी।।
जीवै पुरुषु जो जस के साथा। स्त्री जीवै सील सुहाता।।

दो०—जीवन तांका धन्न है जो जस सेती जांह।
ध्रिग जीवन तिस नरो का अपिजसु जाके नाइ।।

चौपाई—

जन्म अनित्य सदा थिरु नही। तांते एहि उपजो मन माही।।
अवध घनी दिन अधिक विहाए। हरि जसु मुष ते कबू न गाए।।
अवि कछु हरि की कथा वषानो। गुरु चर्नी पंकज चितु आनो।।
सभि संतनि की आग्या पावो। हरीचंद की कथा सुनावो।।
ऊक चूक को हास नि कीजै। दधिसुत की रक्षा करि लीजै।।
श्रुत नही सुने नही वुध भारी। रसना वासु करो गिरिधारी।।
उपजी अधिक मोह मन आसा। कहो कंथा चित पर्म हुलासा।।

दो०—जुग पुनीत सति युग बडा सुंदर पर्म रिसाल।
उपज्यो ताके मध्य मै हरिचन्दु भूपाल।।

सोरठा—

सुनो संत चितु लाइ कथा पुनीतम सुधा सम।
रोम कही प्रगटाइ धर्म पुत्र वन मै सुनी।।

चौपाई—

प्रथमे गुर पद सीस निवावो। हरीचन्द की कथा सुनावो।
पुरी अयोध्या पर्म पुनीता। रतिन जड़िति कंचन की भीता।
सुदर पुरी अमित विस्तारा। धरे कलस दल सुभग सवारा।
जड़े अनेक मणी के साथा। चमिके ससि सूर्ज की भांता
ध्वजा पताके सभी दुआरे। पूर्न लछ सभी भंडारे
पर्म विवेकी नर तिहि ठौरा। रसे प्रेम सभ ही सिर मौरा

मांगत जन गंधर्व समाना। पडित जन को लाल विधाना ॥
चार वर्ण जानो फलचारी। सचिव जान सुभ कर्म विचारी ॥
दो दसि जोजन वसै वजारा। होवहि कर्म धर्म विवहारा ॥

दो०—आठ पहिर तिस नगर जन करे निगम उचार।
हाथ कमावै कर्म शुभ हिरदे प्रभू पियार ॥

सोरठा—
सोभा पर्म अनूप अवध समान वैकुठ के।
कौनु कहै नर रूपु उमा व्यास न कहु सकै ॥

चौपाई—
तांके निकट वहै अनुरागी। अघ नासन सरिजू वडि भागी ॥
तांकी उपमा वेद वषाने। कै उपमा शकर जी जाने ॥
ता परि चले तरग अपारा। सभ प्रवाह मुक्त को द्वारा ॥
तरि वरि सघन सकल फल पूरे। दातु करै दाता जनु सूरे ॥
षग अथित्य ता करै अहारा। रसना रटै अनक परिकारा ॥
फूले फूल अनक परकारी। वर्णो वस्त होइ विस्तारी ॥

दो०—राजु करै तिस पुरी मैं हरी चंद बलवान।
पर्म विवेकी कर्मवानु देत मान शत मान ॥

चौपाई—
उठि प्रभात नृपु करित सनाना। वहुरि करै कोलापति ध्याना ॥
नौ सति साज करै हरि पूजा। केशव विना रिदे नही दूजा ॥
पूजे वहुरि वसंतर देवा। तापरि करै सकल सुर सेवा ॥
धेन अनेक करै तव दाना। वहुरि पितर के कर्म विधाना ॥
अवनीसुर[1] के चर्न धुलावै। सुधा समान भोजनु त्रिपतावै ॥
हीरे रत्न दक्षणा देई। तव चरणोदक हरि का लेई ॥
दिज चर्नन का नीरु औचावै। विष्ण अर्प कछु भोजनु पावै ॥
वस्त्र पहिरि सिहासन जाई। पहिर एक नृप न्याउ कराई ॥

---

१. अवनिसुर=ब्राह्मण।

दो०—ता पाछे नृप सभा मै होइ राग धुनिकार।
निर्त होइ सभ अपसरा मानो सुरपति द्वार॥

चौपाई—

तापरि होइ कथा भगवाना। तीर्थ वर्त महातम ज्ञाना॥
पुस्तक पूज भूप सिर नावै। मागत जन को दान दिलावै॥
जाइ अपेट तवै भूपाला। परिजा पाप हरै ततकाला॥
सध्या समे भवन के आवै। त्रिकालग्य शुभ कर्म कमावै॥
आठ पहिरि सुभ कर्म कमाई। परिस्वार्थ मुति उठि कै धाई॥
ताकी नार कर्म अनुरागी। तारा लोचन अति बडिभागी॥
तिस के कर्म सुनो चितु लाई। मानो सील सुकर्म वनाई॥
प्रभु की भगित दया को रूप। विषे कर्म ते रहित अनूप॥
संत दिजो के पद अनुरागी। प्रभु की भगति रिदे महि जागी॥
करै वर्त्तु चद्रायण आदा। बोले वचन न विनु मर्जादा॥

दो०—तन सुगध सीस सों वदन द्रिग कुरग गज चाल।
मानो सागर की सुना रितु ते पर्म रिसाल॥

दो०—तेजु समान मयक के सभ सपीअनि परि दियाल।
हरे सकल दुःख जगत के असी बुद्धि विशाल॥

चौपाई—

वरस पचीस दोऊ नर नारी। विधि जोरी निज करै सवारी।
एक पुत्र तिन के गृह जायो। नाम रिवतास वसिष्ट धरायो।
अति पुनीत सुन्दर बडिभागी। स्याम चर्न मै अति अनुरागी।
करी भूप दिज सेव अपारा। गऊ लक्ष संकलप उदारा।
धर्मराज जग करै भूपाला। मत्री नृप के बुधि विशाला।
एक दिवस भूपति मनि आई। रचो यग्य कछु संग नि जाई।
इकताली अरु साठ बिचारे। करि सकलप भूप मन धारे
जिउ जिउं वेद कहे मथ कर्मा। तिउ तिउ भूप करै नित धर्मा

दोहा—करै यग्य विधिवंत नृप हरीचंद वलवान।
सप्त लोक को वेध के जसु छायो निर्वान॥

चौपाई

हरीचंद को धर्म विलोकी। इद्र उपज्यो मन महि सोकी।
देव अपसरा सकल बुलाए। सभि को अपना कष्ट सुनाए।
हरीचद को तपु वलवता। छीने राजु करे मम अता।
कहे देव सुन ए सुर राजा। पठो अपसरा पूरे काजा।
चली उर्वसी आयसु पाई। पात्र रूप सभा मै आई।
भूप कह्यो तुमरो को देसा। कित निमित्त कीनो परवेसा
बोली वधू तबै छलवानी। सुनो उदार धर्म सुरज्ञानी।
मुनि गुन दछन तज्यो तुमारे। वडी प्रीति अति रिदे हमारे।
तुमि देषो निज गुन दिषरावो। आज्ञा लै निज भूम सिधावो।
उठी तबै भूपति सिरुनाई। निर्त करी कछु कही नि जाई।
राग तान सुर ग्राम अनूपा। गावहि राग धरे जन रूपा।
काम बान तिन दीए चलाई। हस मुसकाइ निमज होइ जाई।
कबू दीन होइ तनु सुकचावे। कवि प्रसिद्ध हो चर्त दिपावे।

दो०—सभा सकल मोहत भई भूपत सहिज सुभाइ।
जैसे प्रवल वियार ते मेरु नही अकुलाइ॥

चौपाई—

जैसे पारस धर्म पदार्थ। संत जना के नाही स्वार्थ।
अनेक जतन करि अति अकुलाई। दीए पान भूपति बैठाई।
छल्यो न भूपु दीन अति भई। अवर सभा आतुर चलि गई।
जाइ इंद्र को त्रितंतु सुनायो। वहुरि एकु प्रसंगु दिढायो।
कहे उर्वसी सुनो सुर राजा। कहो कथा पूरो सभ काजा।
व्रह्मनु एकु रहे षट कर्मी। विष्ण भगत अरु महा सुधर्मी।
एक दिवस तीर्थ के हेता। चल्यो विप्प ज्ञान तत्ववेता।
मार्ग माह कुरंग दिषायो। तांके सग स्वान लपिटायो।
अपुनी पूज देष सकुचावे। स्वान कहे मतु छीन लि जावे।
कहो नाथ तांके कित काजा। हरीचंद को तिव तुम राजा।

दो०—नहि इछा तुमि पुरी की हरीचंदु सुरईस।
त्रास न मिटयो इद्रि को गयो शर्ण जगदीश॥

चौपाई

रच्यो इन्द्र तपु केशव द्वारे सभ शरीर पद नष पर धारे।
अवर इस अैसो तपु धारयो। जल अहार चित ते सभि टारयो।
शिव विधि वरुदे कष्ट दिषाई। कष्ट निवार्ण केशव राई।
देष कष्ट सत का जवही। लज्जावान होइ हरि तविही।
देष इंद्र का तपु अधिकारी। चलि आए तब विष्ण मुरारी।
दया सिंध प्रभु क्रपा निधाना। इद्रि प्रति बोले भगवाना।
अहो तात कित कष्टु कमावो। जो चाहो वरु तप ते पावो।
देहु नाथ वरि वचन समेता। मांगा तुम मनि आवे जेता।
हरीचंद नृप अवध रहाई। तांका धर्मु नष्ट होइ जाई।

दो०—सुने देवपत वचन जवि अति सकुचाने नाथ।
धर्मु निवाहन नामु मम करो धर्मु कित घात॥

चौपाई—

तापर नृप निज भक्त हमारा। जन समान मुह औरु न प्यारा।
जैसे वेद बडा जग माही। विनु दिज निगम नि सोभा पाही।
दिज चाहित कति और वनावै। श्रुत कहु कैसे दिज प्रगटावैं।
सत अनेक मोह सभ भए। ईसर कहो संत किन कहे।
सत दुःख मोको नही सोहे। तुम जा करो जु तुम ते होहे।
सुरपति जाइ कहो रिषि राजे। हे स्वामी पूरो मम काजे।
हरीचंद का धर्मु गवावो। हमिरे रिदे अनद वढावो।
देव रिषै चित वाति विचारी। देषो भूपति प्रतीत प्यारी।
जाय विलोको नृप को नेमा। है इस्थिर किधो होत अनेमा।
रूप तपी वैराह वनायो। द्रुम आश्रम नौतन सभ धायो।
रक्षक देष्यो नैन निहारी। जात अनेक न उबिरी डारी।
रक्षक औधपती पहि आयो। सभ व्रततु तिन भाष सुनायो।

दो०—भूप सुनो रक्षक कहे कह्यो नाथ सत्त वाति।
आस नि कीजे फूल फल नौतन वाग निपात॥

चौपाई

भूप कहा तांको कहा हूआ। तांका दुष्टु कौनु जग हुआ।
जिहि वप हरि हरिणीय चमारे। नाथ रूप तिहि वाग उपारे।
सो अविलौ ठांडातिहि ठौरा। चलो नाथ लावौ गौरा।
कै वहु तनि धरि शिव विधि आइयो। कै होणी निज रूप बणाइयो।
तवि राजे हय वेग वुलाया। चमू रहित भूपति उठि धाया।
नरपति देष वेराह नसाना। पाछे चल्यो भूप वलवाना।
सरजू अघनासन के तीरा। धरि बैठो मुनि तपी सरीरा।
तिसी ठौर पहुच्यो नर नाहू। बैठो रूप तपी घर जाहू।
देप तपी नर्पति सिरु नायो। बहुरोभूप वराह पुछायो।
तपी कह्यो हमि नाहु निहारे। कोऊ न पडित सचित्र तुमारे।
अैसे समे पुनीतम राजा। सूकर षोजो तुमि कित काजा।
मानस जन्म न वारंवारा। कित विसरायो प्रान प्यारा॥
ते नर धन्न जगत के माही। करै दान हरि भगति कमाही॥

दोहा—धन्न पुरुसो जगत मैं सुनो भूप बलवान।
परि स्वार्थ हित सो करे भक्त प्रभु सनमान॥

चौपाई—

तांते तुम छत्री को रूपा। होते नैन परो परो किति कूपा॥
विलम त्याग कीजे इस्नाना। करो दान केशव के ध्याना॥
तवि राजे दोनों कर जोरी। हाथ वंध के करो निहोरी॥
उत्तरैया भूप मुनी के भाषे। शस्त्र पोल्ह अस ऊपरि राषे॥
मज्जन कीयो पुनीतम वारा। गुप्त दान मन भीतर धारा॥
सरजू मज्ज मुनी पह आए। आगे पेल मुनीस वनाए॥
कन्या तरुण वाल वलवाना। वस्त्र अंग विवाह समाना॥
नृपत देषि मुनी को भाषे। कहो सत्य इहि क्या रचि राषे॥
भाषु यथार्थ हमरे आगे। छल अरु कपटि गिरा को त्यागे॥

दोहा—दोनो संतत नृपत की सुनो भूप चितु लाई।
पढो जान परमार्थी इनका करो विवाह॥

चौपाई

देस विहीन याके पितु माता तू भूपति है जग विख्याता
कन्या कुल का मय पुजारी। आयो जान तुमे उपिकारी ॥
ताको भूप कह्या श्रुत ज्ञाता। जाको मात पिता नहीं भ्राता ॥
तव मुनि कह्यो नि लावो वारा। भूप जात है समा हमारा ॥
देवा लग्न निवहु जु राई। जाते अवधि होत अधिकाई ॥
वेदी रची नदी के तीरा। वैठो भूप सिमर रघुवीरा ॥
कीयो विवाह निगम जो कह्यो। बालकु तिसी ठौर वहि रह्यो ॥
कह्यो कुअर कु कुछ देहो राजा। देन दर्व विनु विआह नि काजा ॥
भूल्यो मै जो व्याहु करायो। अगला कष्टु मोहि दिखायो ॥
सोच करो सुत रिदे नि आना। मै निज राजु दीयो तुभि दाना ॥
तवि दिज कह्या दक्षिणा दीजे। व्याह दान विधि पूर्ण कीजे ॥

दोहा—कीयो नृपत सकलप तव कंचन चाली भार।
होणहार हिरदे वसो पाछे करी संभार ॥

चौपाई

तव एहि वात भूप मन आई। दानु कीयो ग्रह मै कछु नाही ॥
तव दिज कह्यो द्रव मुहि दीजे। जाह भवन राणी ते लीजे ॥
आगे करत हुती सुभ कर्मा। भूप वचन सुनि उपज्यो भर्मा ॥
राज दान सुनि अति हरिषानी। कचन की चिता उरि आनी ॥
वस्त्र भूषन सकल उतारी। चेरी चीर लीए तनि धारी ॥
चली भूप पै सिमर गोपाला। संचव चले संग वुद्धि विशाला ॥
स्मिरत जात पंथ रघुनाथा। धर्म निवाहन सकट साथा ॥
निकट जाइ पत कीयो प्रणामा। बोली वचन शुभग नृप वामा ॥

दोहा—चितन कीजे जगत पति सभा न ईहा एह।
राजुदीयो जिउ वालको दिज को तीनो देहू ॥

चौपाई—

वाल सचिव को भुज गहि दीने। तवी अवधि को विदआ कीने ॥
भूपत कह्यो सुनो मुनराई। वेचो हमे जहा मनि आई ॥

कचन कह्यो बतावो माटी। घोवो सकल तुमारी घाटी॥
तब दिज क्रोधु रिदे मह कीना। नृप रानी को अति दुखु दीना॥
वचन हाथ कर लानन मारे। त्यागो तुमै कहो सुत हारे॥
नृपति कह्यो होइ नही एही। कचनु लेहु बेच मम देही॥
तब दिज तीनो पथ चलाए। जल अहार विनु घाम दुखाए॥
पंथ कष्टु कछु कह्यो न जाई। धर्म पुत्र को रोम सुनाई॥
अपना कष्टु भूप बिसराना। दिज दुख देष बहुत अकुलाना॥
ब्राह्मण भूपा हमरे साथा। यहि है हमै बडो उतपाता॥

दोहा—मन महि सोचत मग चलति बीते षटि दिन चार।
पहुचे काशी दिज सहित रानी भूप कुमार॥

चौपाई—

काशी धर्म कतूहल भारी। अति पुनीत शंकर की प्यारी॥
कहिन नि आवै सकल समाजा। रवि प्रकास अलूक कित काजा॥
विकै दास तिह ठौर उतारे। आए लोक षरीदन हारे॥
नृप रानी को रूपु अपारी। आई गनका लेवन हारी॥
तब राजा मन अति बिलपाना। कीओ रिदे सूर्य को ध्याना॥
हम रघुबसी अंस तुमारी। जात धर्म अस्नुषा तुमारी॥
कुप्यो भानु सुर सकल पठाए। मर्कट रूप धर्न पहि आए॥
नगर नायका सकल सिधारी। गई भाग सो उबरी नारी॥

दोहा—चली धर्म की वार्ता आई नगर मंझार।
रानी बालक लै गयो दे दिज पझी मार॥

चौपई—

ब्राह्मण हुतो तत्व को वेता। ज्ञानवान हरि भगति सुचेता॥
वृद्धि अवस्ता परि उपकारी। ता प्रति रानी बात उचारी॥
तात कहो हम कछु सेवा। धरो सीस जो भाषो देवा॥
पुत्री कोऊ न सेव हमारे। केशव सिमरो बैठो द्वारे॥
कुअरि कह्यो मोय आज्ञा ताता। ल्यावो कुस्म प्रभू को प्राता॥
रानी कुअरि रहे दिज साला। सुनो भूप की बात भुआला॥

सोरठा

दिन मए को वोले प्रभू केशव कृष्ण मुरार।
धर्म छुडावौ अवधि पति कला द्वादस धारा।।

दोहा—धर्म कही रिपि रोम को कह्यो नाथ प्रगटाइ।
इद्र कहा सुधारयो भूप विगार्‌यो काइ।।

चौपाई—

रोम कहे सुनीए राजाना। कीयो मप को नृप अभिमाना।
जग्य दान तप तीर्थ करे। विनु हरि भजन काज नही सरे।।
कर्म करे जा लहे सरीरा। सो सरीदाता रघुवीरा
ताको त्याग करे हंकारा। अनेक जन्म पावै दुपभारा।
उौर वात इक रही दुराई। इंद्रि वचन दीयो रघुराई
अपिने हित प्रभ नाह वढायो। विधि शंकर का नाह मटायो।
अपने तैसो गुन वडआवै। जो जनु प्रभु की सरनी आवै

दो०—सतन के अघ हर्ण को देत कष्ट गोपाल।
जव लग चंदन ना घसे चढे न केशव भाल।।

चौपाई—

आग्या मान प्रभू भगवाना। दीयो कष्ट नरपति को भाना
तेज जरे परि धर्म नि त्यागे। करी विनै तव देवो त्यागे।
आयो तिसी समे चंडाला। भार बीस दे लियो भूपाला
जब दिज आगे नृप सिरु नाया। ता पाछे जल पान करायो।
द्वादश दिन महि जलु नही लीना। हरीचद अैसो प्रण कीना
नृप मतग प्रत बचन उचारे। अवि सरीर मम भए तुम्हारे।
जवि लग प्रान कलेवर माही। कहु दियाल क्या सेवक माही
मातग कह्यो सुनहो वुधवाना। कहो सत्त सुनो सुजाना।
जाम तीन जल को तुम ल्यावो। रजिनी प्रेत नगर दिष्टावो
मति शव जाइ जराइ न कोई। मुहिर जुगल दे जारे सोई।

दो०—हमि को आज्ञा नृपत की शव सो लेहु संभार।
काठी वस्त्र युग मुहिर नरि दे करे जुहार।।

चौपाई

आग्या मान लई भूपाला। कर्न लगा कारज ततकाला।
ल्योवे नीर त्रिवेनी पावन। धरे नीच ग्रह सुर जसु गावन॥
जाम चार ग्रह टहिल कमावे। विना कहे जो दिष्टी आवे।
जिह को कहे तहा उठ भागे। मान विश्राम नृपत सभु त्यागे॥
ऊच नीच सभु सेव कमावे। मन मै कृष्ण गुन गावे।
तीन जाम जलु भरे भूपाला। गवने नगरी वुध विशाला॥
जाम एक दिज के ग्रह जावे। सुने कथा पर्मातम ध्यावे।
रजनी जाइ प्रेत अस्थाना। ध्यावे हिर्दे पुरुपु पुराना॥
निद्रा कैसी विना अहारे। कहे रोम सुनु नृप हरि प्यारे।

दो०—करे सीव ग्रह नीच के रघुवसी राजान।
गर्व करे क्षित दर्व को ते मत मद अजान॥

चौपाई—

अपदा वल भूपत परि पायो। तव नर पति चित इउं ठहिरायो।
हमि परि कृपा करी गोपाला। सिमरन समा दीयो नदलाला॥
राज समै हरि भगति न होवे। ध्रिग नर स्वास भजन विनु षोवे।
अपदा हुतों तेऊ तपु भयो। ज्ञान विचार नृपत सुषु लयो॥
शक्र जाने हेतु हमारा। लहित कष्ट भूपति अति भारा।
प्रभु विषयनि की मैलु गवावे। बिना भगति प्रभु भेदु न पावे॥
अैसे वीते नृप दिन तीसा। ईस रिदेइ धरे नरि सीसा।

दो०—गई देह घटि भूप की रहे संप अरु स्वास।
जाए त्रिवेनी नीर को सके न कलस उकास॥

चौपाई—

निज सत्या प्रभु नृप तन धारी। कोऊ न जाने षेल मुरारी।
रानी के मन उपजी वाता। देदो जाइ प्रान पति नाथा॥
ईश्वरु भर्त्ता भेदु न कोई। ईसी नगर दासन मै होई।
दिज आज्ञा ले चली त्रवेनी। सुंदरता को सुन्दर देनी॥
सीलवान हरि भगत सुजाना। पहुची तव गंगा अस्थाना।

दोहा—गई त्रिवेणी के निकटि देष सभ ही घाट।
द्रिष्ट न आयो नृप कहूं अति कुमलानी गात॥

चौपाई—

मन मै सोचे करे बिचारा। कौन ठौर मम प्रान प्यारा॥
इसी नगर के उौर हि गियो। अवि पीआ मिलन दुहेला भयो॥
सेव न रही दर्सन भी नाह। विधि के अंक न मेटे जाह॥
अमे विष्णु चव्यी अवतारी। ऐसी भावन होवन हारी॥
तव मानस की कौन चलाई। नरि मति सोभ करे कोऊ भाई॥
पै देषो नीचन को घाटा। होइ सोई जो ईस्वर ठाटा॥
षोजत गई त्रिवेणी नीरा। घाट मतंग भरे नृप नीरा॥
रानी देष्यो भूप सरीर। समा विलोक उठी तन बीर॥
हुतो मास सौ भयो उदासा। रहे सप नृप चर्म स्वासा॥
उौर रहे द्रिग कमल सरूपा। देह विहीन नि पावै रूपा॥
रानी तव नृप कीया प्रणामा। धन्न धन्न मुष कीया बषाना॥
देषी भूप पतिवृता नारी। चले चार द्रिग नीर अपारी॥

दोहा—धर्म कहो रिप रोम को हे मुन मर्मु मिटाई।
राजु त्यागो धर्म हितु किउ पछतावे राइ॥

चौपाई—

धन्न बुद्ध तुमरी राजाना। राजा नमित्त नाही पछुताना॥
बिछुरे मीत मिलै जव आई। चलै नीर द्रिग एही सुभाई॥
रानी कहयो कवन ग्रह रह्यो। सभ व्रितंतु भूपतु सभ कह्यो॥
रानी पूछ्या वहुरा राजा। कीओ अहार किधो नही काजा॥
भूपत कह्यो सुनो हे नारी। ग्रहि चंडाल के ठौर हमारी॥
तिस ग्रहि कैसे भोजनु पावो। हित करि देइ तबू नही षावो॥
पूछो और वात अवि तोही। उठे कलस भाषो विधि सोई॥
रानी कह्यो हाथु नही लावो। जुगत एक अवि तोह वतावो॥
जल मै पैठो कांधे धरो। चलो भवन दिज करुणा करो॥
नृपत नीर घट सीस उठायो। जीरन चीर सुकांधे पायो॥

कलस उठाइ चल्यो भूपाला। निर्षयो आवत दुषी चडाला ॥
हरीआ सुनो हमारी बाता। कहो कवन दुषु तुमरे गाता ॥
करो अहारु कि रहो उपिवासा। कहो साचु मम आगे दासा ॥
तुम आज्ञा बिनु कछु नही पायो। तुम पूछ्यो नही मोह सुनायो ॥
चलो भवन अवि करो अहारे। नही नाथ सो काज हमारे ॥
सीधा लेहु जोऊ मन आवै। सुनो नाथ सो मोह न भावै ॥
आज्ञा होइ तो करो अहारा। ल्यावो नगर माग घर चारा ॥

दोहा—जन्मु हमारा पतरी भए तुम्हारे दास।
देह तुमारी सर्ग है धम्र हमारे पास ॥

चौपाई—

तुमरो ग्रह नही करो अहारा। मानस जन्मु न बारबारा ॥
सेव करो तुमरे अस्थाना। जब लग बसे देह मै प्राना ॥
मातंग कहे सुनु बुद्धि विशाला। वेचो कोए मो हथे माला ॥
देह कहो तुम सो नही काजा। मास सष और रुधिर समाजा ॥
उौर देह मै भरे विकारा। वेचो तुम मौ कहो विचारा ॥
मैं तु दर्ब दोयो अति भारी। तुम का मोह दीआ मो कहो विचारी ॥
पंच तत्व सो द्रिष्ट नि आवै। आतमनिहस्वार्थ श्रुति गावे ॥
इद्री अरपरिकिर्त हकारा। मन है सो निर्बंध अवारा ॥
पाप पुन्य जौ देह कमावे। सो प्रानी ले सग सिधावे ॥

दोहा—तोह कह्यौ मै विक्यो हा कहा बिचायो तोह ॥
ठौर धनी देह तुम विकी छुटी कवन विधि होई ॥

चौपाई—

प्रथमे देहि तिसकी की कहीए। आद पुरुष की जिस ते लहीए ॥
माता पिता की प्रगटि कहावे। जाते जनमु अमोलक पावे ॥
गुरु धारे ता गुरु की होई। जुवती की जाने सभ कोई।
फुन प्रोहित की कहै ज्ञानी। असी वात सो श्रुती वषानी ॥
हसे रिदे मुष कहै चडाला। लषे दास की बुद्धि विशाला।
उनि की हैं तां कहो बिचारी। उत्तरु दीजे मोहि सभारी ॥

दो०—उन ते मै उतपत भयौ रह्यो एक अब तोह।
सुनु मतंग चितु लाइ के कहो जथार्थ मोह॥

चौपाई—
सकल जगत ईश्वर को आही। सो अबि कहो सुनो चितु लाई।
तो पैं वेचो मम पुर्षार्थ। दीयो उौर मो कहो जथार्थ॥
पितर कर्म से करि सुत छुटिकावे। तिरीआ ते जब मुतु प्रगटावे।
गुरते मुक्ता ते शिष्य तबे। गुरु के वचन धरे चित जबे॥
प्रभु प्रसन्न जा भगत कमाही। दास उरण[1] तजो आज्ञा माही।

दो०—वेचे मन की भावना उौर वेचना काहि।
इष्ट न त्यागे वस का कहे वेद प्रगटाइ॥

चौपाई—
नीच जनम वड बुद्धि तुमारी। कांते लही देहि भ्रम टारी।
कहो दास सुनीए चितु लाई। क्षत्री जन्मु पूर्व मै आही॥
नीच संग दिज धन हित धायो। मातग जन्म तां फल ते पाओ।
उजैन नगर मम तुम था वासा। तुमरे भवन होत मै दासा॥
सेव करी तुम दर्व न दीआ। उलिटा देस निकारा दीआ।
मम तुम वीच हुतो करतारा। तिन प्रभ कीयो तौह पनहारा॥

दो०—जैसी तुमरी भावना तैसे करो अहारु।
दोसु न दीजै मोह कछु फल दाता करतारु॥

चौपाई—
नगर जाइ कै करो अहारा। मैं जोहित था धर्मु तुमारा।
ते नर धन्न जगत के माही। अपद परे सत्तु त्यागे नाही॥
जो जनु अपना धर्मु गवावै। जम पुर दुषी जगत दुष पावै।
लै आज्ञा नृप पुरी सिधायो। जाच नगर तदल ले आयो॥
इन की भिक्षा तजी भूआला। नीच भवन अरि दिज भूपाला।
आइ त्रिवेनी तीर सधारे। दया रूप नृप कीयो विचारे॥
आवे दिज कोऊ करै अहारा। तब सेवन है जोगु हमारा।
विश्वामित्र रूप दिज आयो। चर्नं पषार भूप वैठायो॥

---

१. उण < ऋण

सभ भोजनु दिज कीयो अहारा। कहो भूप नित निवत हमारा।
नीर पीयो नृप तब वड भागे। नित्य सेब सो करणे लागे॥
उठे प्रात बहु तदल ल्यावे। तिन सभिनन सो दिज तृपतावे।
अैसे बीत गयो इक मासा। दिज भुक्ले नृप रहे उपासा॥

दो०—दया सिंध उपजी दया बोला लीये रिषिराइ।
कष्ट निवार्न सुष दैन संकट कर्न सहाइ॥

चौपाई—
लै अहार भूप तहा आए। श्रम अति भयो दिज कहूं सिधाए।
नरपति घटि भीतर अकुलावे। धर्म रहे दिज भोजनु पावे॥
सूर्ज साष भरी तिह काला। करि अहार श्रुत बुद्ध विशाला॥
दिज जोहत था धर्मु तुमारा। तुम सत राष्यो जगत अधारा॥
तव ब्राह्मण नृप डौर जिवायो। उपज्यो अधिक सो भोजनु पायो॥
विश्वामित्र तव शक्र बुलायो। तांको इक उपदेसु बतायो॥
देषो धर्मु भूप की नारी। अरिधगी हहि बुद्धि उदारी॥
जो त्रिआ का धर्मु छुडावो। तौबी भूप धर्मु को धावो॥
सुनो मुनि श्रुत कहें विचारी। पाप पुण्य पति षोवे नारी॥
भूप श्रीआ पति पापी तारे। नीच नारि पत नरके डारे॥

दो०—स्वर्ग षडे पति पतति को सतु राषे जो नारि।
शुभ भर्ताके नीच तीय देवे सभ गुन टारि॥

चौपाई—
ताते जाइ देषु नृप नारी। सभ ते बुद्धि तुमारी भारी॥
चलै तपी सुन सुरपति वानी। पहुच्यो तहा जहा नृप रानी॥
जात कुअर नित दिज फुलवारी। ल्यावन पुशप हेत वनवारी॥
वन भुयग तिहि हाथ डसायो। गिरयो कुअर माली दिष्टायो॥
गियो निकट तरवर रषवारा। देष्यो वाल प्राण ते प्यारा॥
सोभा विनु प्राणनि इउं पावे। जो विसत ते मदन रिसावे॥
फूले फूल अनक चहूं ओरा। पर्यो मध्य तहा वालकिसोरा॥
उडगण सो मैंयंक रुसाए। मानो सभी मनावन आए॥

वदन सुधारयो गोद हि लीग्रा मानो ससी ग्रलोपन कीग्रा
पथ चले ग्ररु वदन निहारे। जिउ सरोज हिमकर के मारे।
मार्ग मिले जोऊ नरि नारी। करै प्रेमु तिस रूपु निहारी।

दो०—गयो भवन तब विप्र के माली जगत ग्रपार।
प्रेम विकल बोलत वचन दामी पून सभार॥

चौपाई—

बीनन कुसम भुयग डसाना। कीयो बाल के प्रान पयाना।
रानी कहेउ तजो इस ठौरा। सेव करो द्विज बोल न बौहरा।
तुमरा पूतु मैयंक समाना। बिना हेत कित बचन बपाना।
सुनो दास नदी नाम सजोगा। करे मूढ भावे क्या वियोगा।
सो धरि ग्रवनी चलता रहयो। वचन श्रवण बुल द्विज इउ कह्यो
पुत्री ना कछु दोसु हमारा। तुम परि क्रोध बत कर्नारा।
जाहु देस की रीत कमावो। भाला दाग गगा महि पावो।
तिसी हेत तिन लीउो उठाई। बालु कठ मो लीयो लगायो।
चली तहा जहा प्रेत निवासा। मनि ते तजि नार सुघ ग्रासा।
तिसी समे हरी चंद निहारी। बोल्यो वचनु सुनो हे नारी।
जुगल मुहिर दे चीर हमारा। तबि इसि ठौर करो बौहारा।
रानी कहे सुनो पीग्रा प्यारे। तुम सो भिन सु कहा हमारे।
इकु भूषनु रह्यो कठ दुराई। लीयो भूप सो वेग छिनाई।
दागु देइ ग गा तटि ग्राई। बालक जल मैं दीयो वहाई।
ग गा को प्रभ वचन उचारे। राषो समझ ग्रमान हमारे।
इसको जीवन करै ग्रहारा। एहि बालकु मोह सभि ते प्यारा
भूप वचन करि चलता रह्यो। रानी का दुप जानि न कह्यो।
होइ विकल इक मठ मै सोई। सकल ग्रास तिन जग की पोई।

दो०—विश्वामित्र तिसे समे कीयो ग्रौरु छलु जाइ।
काशीपति के सुता के भूपन लीए दुराई॥

दो०—ग्रान पहिराए सोवती इस मन नही सभार।
रचि माया का बालु इकु धरियो तहा सिंघार॥

दो०—रुधर नार के हाथ मुष दीयो वेग लगाइ।
प्रतीहार को रूपु धरि कह्यो भूप को जाइ॥

चौपाई—

कहो बात सुनीए राजाना। सुनो नाथ दिढ वल विधाना॥
एक वधू तुमि पुर मैं आई। अति कलजोगन वड दुषदाई॥
भज्यो तिन तुम सुता भंडारा। पहिरे भूषन अनक परकारा॥
धाइयो वालु इकु ठौर मसाना। परयो तहा सुनिए वलवाना॥
धाइयौ घना परयो तिहि थोरा। सोई मठि मैं निद्रा घोरा॥
पठो सैन तिस वेग ले आवे। मतु जागे कितहूं दुर जावे॥
तव राजा कछु दूत वुलाए। आज्ञा करि तिस ओर पठाए॥

सोरठा—मतु को करे गुमान दान धर्म अरु राज को।
इसके कौन समान जो कलजोगन अवि भई॥

दोहा—रोम कहे जो नर उचित सुनीए सो राजान।
करे नि आसा कर्म फल बिना भजन भगवान॥

चौपाई—

कहे रोम सुनीए राजाना। आई सैन जुवत अस्थाना॥
लई उठा इनिनो तव रानी। देष कोप नरि अति विलपानी॥
वहुरि निहारयो आप शरीरा। भूषन अग रुधिर तन चोरा॥
मन महि कपवान तव भई। पकिर भुजा तव गारी दई॥
नगर लोक सभ जुरे अपारे। बड़े क्रोध तिन के तन भारे॥
मारे ईट ढला उर लाटी। वजै लत्तनन छटी चपाटी॥
एक अकेले देवहु गारी। कुपे ईस तव कोनु उवारी॥

दो०—अवरा लाग रिषि राज के त्याग धर्म वर मोह
सुष भौगो सभ जगत के अवी छुडावो तोह॥

चौपाई—

रानी कहे सुनो दिज देवा। उचित हमो को तुम पद सेवा॥
करहु अनुग्रहु मोपर सोई। ईसर चर्न रिदे द्रिढ होई॥

लागी होन तब मार अपारा नरि मोग जो दे करितारा
इसी भांति नृप पैं ले गए। तब भूपति इउं भापन भए।
भेजो इसे मतंग के द्वारे। त्याग विलम इस प्रान सिधारे॥

दो०—गई भवन चंडाल के होते जहा भूपाल।
देष दया उपिजी तिसै बोले बचन दियाल॥

चौपाई—
सुनो दास तुम बात हमारी। नहि कल जोगन एहि विचारी।
मारन तज्यो त्याग जीय आयो। कहो सोई जो तुमि मन भायो।
पूछो मोह तजो मतु नाथा। सुन नृप कुगे तुमारे गाथा।
सो दिन धन्न दास जिय जाने। पूछे मंत्र ईस मत्त माने।
उचित दास को भाषे सोई। जाते ईसर हानि न होई।
तुम को त्यागन कह्यो न भूपा। कही नृपत सो बात अनूपा।

दोहा—निज कर हनो नि जात है सुनो दास चितु लाइ।
आज्ञा कीनी तोह को इसे सिघारो जाइ॥

चौपाई—
आज्ञा मान लई घर आगे। वधू सराहे अपने भागे।
रानी मन उपिजे सुष भारे। कहे रिदे वडि भाग हमारे।
पति के हाथ मृत्य तीआ पावे। विना दोप सो स्वर्ग वसावे।
रोम कहे सुनीए भूपाला। मिटै न अक लिषै विधि माला।
देप समा मुसकावे राजा। हो तो और अब एह समाजा।
सग उतिसाह इसे वर ल्यायो। विना दोष अवि मारण धायो।
रानी तव मुष भूप विलोके। अपनी चितन पति हित सोके।
दया भूप मन कीयो निवासा। वन त्यागन की धारी आसा।

दो०—रानी अपने ईस के देषे नैन कृपाल।
धर्म निवाहन के लीए बोली बुद्ध विशाल॥

चौपाई—
सुनो नाथ तुम कहा सिधाए। करो नि काज जासु हित आए।
भूप कह्यो सुनु प्रान प्यारी। त्यागो वन तुम जाति नि मारी

सुनो नाथ जो दया कमावो। हमिरा अपिना धर्म गंवावो।।
वनि मैं मोहि लि जावे कोई। तुमि ईश्वर को द्रोही होई।।
तजी अवधि हित धर्म पुनीता। नीच वाल धारी किंतु चीता।।
कूपो भूपु सुन वचन पियारी। गहे केश अविनी परि डारी।।
छुरका काढ कठ पे धरयो। ब्रह्मा विष्णु रुद्र आ फरयो।।
और आइ संग अमर पुनीता। कुस्म वरप जय कारा कीता।।

दो०—धन्न धन्न भाषत भए सुरन सहित भगवान।
त्याग करो रानी हनुन बैठो अमर बिवान।।

चौपाई—

तब नृप को हर कठ लगाया। रानी सो अति नेह बढाया।।
कहे भूप मातग जु आपे। तजो तबै नही तुमरे आपे।।
देवो तबे मतग वुलाइयो। नगर सहित काशी पनि आयो।।
नीच कही तब त्यागी नारा। सुमन वरिप सुर कीयो जयकारा।।
नीच त्यागुनही करै भूपाला। तरयो नगरु अरु पसु चंडाला।।
गंगा ते वालकु हरि लीआ। तबी नृपती को गोदी दीआ।
कांशी जन अवधि सभ आए। उडी अवधि वैकुठ सिधाए।
चार षाण ले मुक्त सिधाइयो। रोम युधिष्ठर भाष सुनाए।

दो०—कथा नृपत हरीचद की सुने सकल चितु लाइ।
होह रूप सोऊ कृष्ण को गुरु जन हरि गुनराइ।।

चौपाई—

जो जनु सुने मुक्त होता। होइ मुक्त परवार समेता।
अपिदा मो नरि सुनै जु कोई। ताकी अपदा सभु षिउ होई।
पुत्र हेत जो सुनो सुनावे। वढै वंस इउ वेद वतावे।
अवि मुह दान प्रभु ईही दीजै। आवागौन निवार्ण कीजै।
दधि सुत अक्षर जनिन हारे। तांसो रछा करु करितारे।
गुरवपसदास गुर भए सहाई। कथा कही तब सभु प्रगटाई।
जो जन सुनै रचे हरि सगी। महादास प्रभु लाल त्रिभंगी।

दो० चैत्रमास नवमी दिन शुभ विधि मगल वार
कथा भूप हरीचद की पूर्ण भई वीचार ॥

अडिल्य—सुने कथा जो प्रानी प्रीत लगाइके।
पावे सभ सुप भोग प्रभ् को ध्यायके ॥
भिन्न भिन्न होवे कथि ही ईश्वर मगते ॥
भक्त प्रेम लहे दान महादास त्रिभगते ॥

इति श्री महापुराणे दान धर्म हरीचंद कथा संपूर्ण, शुभंमस्तु
संवत् १८३७ लिषत आतमाराम ।

साईंदास जीवनी

ॐ स्वस्त: श्री गणेशाय नमः

दो०—सिमर सदा ओंकारि को जोति रूप भगिवान।
निर्गुण सुर्गण जो पुर्ष दूजा कोऊ नि आनि॥
जगिदवा को ध्यान धरि विनती करों बहोर।
कथा संपूर्ण कीजिए वसो वदन सदा मोर॥
मारति सुति कों सिमरीए सदा कृपाल अनति।
जिहि प्रसादि सुकृत सभै अरि भजनि हरि सति॥
गौरी सुति का ध्यान धरि सभ सिध कारण हारि।
विघनि हरिन मगल करन गणपति लेहु वीचारि॥
गुर पद प्राग ध्यावहौ मनि वच कर्म वीचारि।
सकटि मै रक्षा करै भय जल तारन हारि॥

चौपाई —

प्रथमे सिमरो एक ओंकारा। सकल सृष्ट के रचनेहारा
जगि उपिजाविन सकल सिधारी। सभ मै व्यापक जोत तुमारी
सकल कर्म के किरणे हारा। कर्म वानु कर्मा ते न्यारा
ब्रह्मा विष्णु रुद्र सुरि ध्यावे। निगिम पुराण संत जस गावे
मुनि जनि जांको अंत न पायो। नार्द व्यास रमा अह गायो
तुमरे गुन प्रभ अपर अपारा। जग में कवि को वरिननहारा
चीटी सिंधु हाथ नहि पावै। गगन प्रभू नर करन समावे
ए कारनि करि आवे नाथा। लहे न तुमरे गुनि को गाथा

दो०—आदि सनातन एक तू दूजी कोऊ न वात।
वरितनि कहा कुंभारि कों अत वतावै नाथ॥

चौपाई—

ताते तुमको करो प्रणामा। अपिनी भगित देहु घनि स्यामा॥
श्री कविला को सीस नवावों। जिह प्रसादि सभ करि सिध आवों॥
एक रदन को धरो ध्याना। होए सिध सभ त्रिबिध विधाना॥
पविन कुमारि चरिन सिर नावो। जिह प्रसादि निर्मल मति पावो
प्रणवो शश सूर्य भगिवाना। जिहि प्रसादि पावो सुष नाना॥
सिमरो सिध साध सुरि देवा। जिहि प्रसाद पावो हरि सेवा॥
प्रणवो हरि के सत अनंता। जिह सिमरे पावो भगिवता॥
सिमरो सति गुरि सदा कृपाला। जिह सिमरे पर्सो नद लाला॥

दो०—प्रणिवो सतिगुरि साईदास रिध सिध गुणि देहु।
मनि वच कम ध्याईए जो चाहे सो नेहु॥

चौपाई—

प्रथमे सिमरो सांईदासा। जांके सिमिरे सदा हुलासा॥
अमिदास नरि हरि गुनि गावो। विष्णदास सुपानदि ध्यावो॥
रामानंदि कौं धरों ध्याना। कांशीदास सिमरो गुरि ज्ञाना॥
वसी राम चरित सिर नावों। यथा बुद्धि मे भाष सुनावो॥
माधोदास सिमरो गुर तोही। भार्थी चदि सिमर सिध होई॥
विहारीदास मुरारी गावो। जगि जीवनदास प्रेम सो ध्यावो॥
सविल सिध वलराम भगौती। नौरगराई पूर्ण सभ जोती॥
नूप राइ ध्यानतराइ वरिनो। दलपति राइ हरीचद संरिणो॥
हकूमत राइ पूरन गुरि गावौं। महाराज पूरनि गुरि ध्यावो॥
कर्मचदि गुरि कृष्ण सरूपा। निवलराइ गुरि परिम अनूप॥
हरी राम साहवराइ वरनो। हरि जस कृष्ण चंदि की सरिणो॥
अवृत राय भागि मल जांनो। हरि जस चोपति राइ पछानो॥
सभ परिवारि कहनि नही आवे। गुरिजनि सोई गुरौं को ध्यावे॥
सिमरो गुरि महादास त्रयभंगी। आदि अति मे होवे सगी॥
सोभा राम सिमरो गुरि तोही। कृपा राम सिमरे सुष होइ॥
तांते सभ कों करो प्रणामा। करो सहाय होवे सुभ कामा॥

दो०—इछया मनि मै उपिजिआ गुरि जस कहू बनाय।
कथा संपूर्ण होय तब सभ मिल करो महाय॥

चैपाई—

प्रथमे सिमरों श्री गोपाला। नंदलाल सुदर वृज वाला॥
दसरथ सुति कौ धरो ध्याना। रामचंद्र पूरण भगिवाना॥
जनिक सुता को सीस निवावों। यथा बुद्धि मै भाष सुनावो॥
ऊक चूक जहा मोसो होई। वुद्धवानि करिए सुद्धि सोई॥
समत ठारा सैय नातीसा। करो कथा गुरि पगि धरि सीसा॥
मघरि मास कृष्ण पक्ष जानो। ता दिन कथा कही पहिचानो॥
तिथ अमावस मंगल वारा। मध्यानि समे कीर्यो विस्तारा॥
वरिणो नरि हरि पुरी अनूपा। अति पुनीति सुदरि जिस रूपा॥
ताकी सोभा कही नि जाई। सर्वर द्रुम वेली कर छाई॥
सुदिर तटि मैं वारि सुहावे। विगसे कविल भविर छवि पावे॥
नाना विध के वृक्ष अनूपा। अति विसाल सुदिर जु सरूपा॥
पग रसना तहां रटै अपारा। चले सुगध मुक्त को द्वारा॥
कोइल कीर कपोत मुहावे। चकिवी चकवा प्रेम वधावे॥
मोरि चकोर षजन वग राजे। वक वुलवुल सुर्पं चिराये॥
तूती चिडी मुनिआ गावै। पपीहा घना गरिज सुनावे॥
और जत तहा वसे अपारा। कहियो न जाइ सकल विस्तारा॥
अनिक भांति तहा फूल विराजे। जाकी सोभा उडगण लाजे॥
रावेली संग चवा सोहे। सदा गुलावि गुलाला मोहे॥
गुल दादी सनिवरगि सुहावे। गुलावास अध्क छवि पावे॥
नाना विध तहां कुज आपारी। कही न जाय सकल फुलवारी॥
सुदरि पुरी अमत विस्तारा। यथा वुद्ध मे कहो विचारा॥
परिम अनूप तहाराजे। सुदर कुज परिम छवि छाजे॥

दो०—अल्प वुद्ध मम तुछ है कथा अमित विस्तार।
गुरि आज्ञा कों सीस धर कहो सकल विस्तार॥

पाई

अनिक भांति के भविन विराजे। छजा अटा अधक छव छाजे॥
लिप चित्र का अधक अपारा। गुर्दार मूर्त भीत मझारा॥
जा पताका कलसा विराजे। सुंदर सकल सभी ग्रह गाजे॥
जगि हौम का धूप सुहावे। रवि मार्ग मग सोभा पावे॥
नर हरि पुरी अधक छवि छाजे। साईदास का वंस विराजे॥
परिम अनूप सभै सुरि ज्ञाना। बुद्धवान हरि भगत सुजाना॥
ज्ञानि धर्म के जानन हारे। जोगि विराग अधक विस्तारे॥
गीता आदि सभै श्रुति गावैं। क्षमावान धर्मग्य सुहावे॥
कर्मवान सभ दया निधाना। हरि सिमरन बिन बानि न आना॥
रूप वानि सुदिर छवि भारी। मैन कामदेव निर्प होवे छवि हारी॥
भूषन वसनि अनिक परिकारा। सुदिर सभी सकल परिवारा॥
चारि वर्ण तहा अधक सुहावे। कर्म वान सभ सोभा पावै॥

दो०—हरि चरिचा विन वाति कों दूजी करे न आन।
परिम ववेकी कर्मवान सभ हरि भक्त सुजानि॥

चौपाई—

साईदास तिहि कुल उजियारा। नरिहरि दास भए औतारा॥
नरहरि दास वैकुंठि समायो। कांशीदास तवि टीका पायो॥
तांके संग सभी परिवारा। कह नि सको छबि अधक अपारा॥
सकल परिवारि सभा मैं छाजैं। कांशीदास तहा मध्य विराजे॥
ताकी उपमा कहनि न आवै। सुरन सहत जु सक्र सुहावे॥
उडिगण सहत शश जो विराजै। मणनि मध्य मानिक जु विराजे॥
कही नि जाइ सभा की सोभा। निर्ष जोऊ सोऊ मनि लोभा॥
वाजे वजे अनिक परिकारा। कही नि जाइ परिम धुनि कारा॥
जल तरग्य सुभ वाजे वीना। कानूं वजे प्रेम रस भीना॥
रवाव पषावज अरि षटताल। झाझरि छइणे भेर करणाल॥
राग जहाज सभी विध राजे। औरि साजि तहा अनिक विराजे॥

दो०—अंवृति कुंडिली तूवरी डफ मृदंगि पछान।
सितार दुतारा सारङी ढोलक षजरी जान॥

चौपाई—

वाजे वाजे अनक परिकारी। उपिजे राग परिम छवि भारी।।
गावै भइरों देव जंधारी। राम कली अरि ललत तुषारी।।
टोडी आसा पंचम जानो। जैतसरी असावरी मानो।।
गारा सिध सूही वड हंसा। सारगि सोरठ सभ ते सरसा।।
वरिवा गौरी नटि कल्याना। विहाग कानडा अधक सुहाना।।
किदारा दरिवारी अरि गोडा। दीपक सुने होइी सभ वौरा।।
मेघ मिलाइ हिंडोल वसना। जै जैवती कमोद अनंता।।
जैतसरी का छेलीजानो। कामोदी मालसरी पछानो।।
गूजिरी गावै अति छवि भारी। ओरि राग तहा अधक अपारी।।
जो समझे सो आष सुनाए। गुहज राग सभ कहि न जाए।।
समे समे करि सभ को गावै। मांनो सुरि पति सभा सुहावै।।

सोरठा—उठे जो रागि गभीरि होह तान अनेक छवि।
परिम गुननि की भीरि कह्यो न जाइ समाज सभ।।

चौपाई—

होइ सभा मै परिम अनदा। चोया चदन अतिर सुगंधा।।
कांशीदास तहा अधक सुहावे। चविर मोरछडि अनिक झुलावे।।
वदि जनि जसि करे अपारा। चर्चा होइ अनिक परिकारा।।
निर्गुण सर्गुण ज्ञानि विरागा। कर्म विवेक श्रुति निगम विभागा
वरत महातम प्रभ कों ध्याना। तीर्थ उपमा हरि जस ज्ञाना।।
चारि वर्ण के कर्म वषाने। सभ कुलि की मिरिजादा जाने।।
करे परसपर हरि गुन ज्ञाना। बुद्ध वानि हरि भगित सुजाना।।

दो०—कांशीदास का वीर लघ माधोदास जिह नाम।
गुनी ग्यानी सा पुरष निर्मल भक्त नहिकाम[1]।।

चौपाई—

ताके रिदे फुरी इक आसा। सुनो संत सो कहों प्रगासा।।
अपिना वस धंन करि जान्यो। पूर्न गुरि साईदास पछान्यो।।

---

१. नहिकाम <निष्काम।

जाके वम परिम सुप पाउो ताका जनम मुनिन जीआ आयो
काशीदास को कीयो प्रणामा कीयो प्रश्न सदिर नहकामा
नाथ एक ससा मनि माही। सिध होय तुम कृपा गुसाई।।
काशीदास तवि कह्यो बीचारी। कहो तात जो ब्राति तुमारी।।
नाथ एक पूछो तुम वाता। भ्रमि मिटाइ मोह करो सनाता।।
साईदास का जनिम सुनावो। श्राद श्रति सभ मोह वतावो।।
कविन काज श्राए जगि माही। क्या करि गए सुनी मोह नाही।।

सोरठा—कहीए सभ प्रगटाइ नाथ न सका रहे कछु।
सो मोह देह वताय श्रादि श्रंत पूर्ण कथा।।

चौपाई—
बोले काशीदास कृपाला। माधोदास धनि बुद्धि बिसाला।।
पूछी तोह भली सुरि ज्ञानी। सुनो सकली सभ कहो वपानी।।
सो दिनि धनि जगित मै जान। हरि गुरि चर्चा करे वपान।।
तुम पूछा गुरि कथा गभीरा। जो कोइ सुने हरे भौ पीरा।।
एक समे द्वापर के श्रंता। भयो विप्र इक हरि को संता।।
काशीपुरी नगिर तिस जानो। नाम सदा सरूप पहिचानो।।
ज्ञानिवानि सुदरि षटि कर्मी। निर्मल भक्त समान सुकर्मी।।
ताके सुति इक भयो श्रनूपा। बुद्धिवान हरि परिम सरूपा।।
विद्या गुनि मै श्रति भरिपूरा। ज्ञानिवानि सभ ही बिधसूरा।।
जोगभरिष्टी[1] ताको जानो। नाम नरोंतम राय पछानो।।
हरि जस गावे सदा सुज्ञाना। पूजे दिज सूरि सति पुराणा।।
वरस द्वादस का जवि भयो। सभ सुप त्याग तवी वनि गयों।।
जाइ लगो तपि करन श्रपारा। गंगा तटि मय वाल कुमारा।।
श्रति पुनीलि श्राश्रम सुषिदाई। तांकी सोभा कही न जाई।।
तरिवरि सकल फलन के पूरे। दान करे दाता विध सूरे।।
श्राभ्यागत पग करे श्रहारा। सीतिल नीरि सुगंध श्रपारा।।
वेली के सगि पुष्प विराजे। मानो निश मैं उडिगन राजे।।
तीनि भांति की विहारि श्रनूपा। सीतिलि मदि सुगध सरूपा।।
तिस श्रस्थान करे तपि भारी। सुनो तातिसभ कहो विचारी।।

---

१. जोगभरिष्टी < योगभ्रष्ट।

सौ वरिसां तहा वनि फल षाए। दो सै वर्ष पत्र भुगताए॥
दो सै वरिस कीयो जलि पाना। बहुरि कीयो प्रभ पंकज ध्याना॥
नवि सै वरिष कीयो तपि भारी। आए तहा प्रभू गिरिधारी॥
उस्तति करी प्रभू भगिवाना। धंन्न मुनी सरि संत सुजाना॥
कीयो कठन तपु अधक अपारा। अवि मुनि भोगो धाम हमारा॥
जो वरि मागो देवो सोई। संत सप्त है निश्चे सोही॥
तवे मुनी सरि नैन उघारे। निर्षे केशवि प्रान पिआरे॥
उपिमा प्रभ की कहन न आवे। तुछ वुध कहु कहा वतावे॥
तदप कहो योऊ मनि आई। यो ओह मूर्तं होइ सहाई॥
कोटि मुकटि प्रभ के सिरि सोहे। ससी अरि भानि कोटि मनि मोहे
सोहे सुदरि कछ[1] घुघरारे। अति सुष धाम प्रान ते प्यारे॥
मस्तक परिम बिशाल विराजे। भवा कमान कोटि छवि छाजे॥
तापरि सुदिरि तिलक सुहावे। ताकी सोभा अति छवि पावे॥
श्रविनन कुडल परिम अनूपा। निर्ते मैन धरे विवरूपा॥
कपोल निर्ष मनि होय अनदा। विना कलंक जानि जुग चदा॥
नैन विशाल श्रवन सग सोहे। विन गुन श्याम मीन मृग मोहे॥
मुष पराग छवि कही नि जाय। अलमुन जानि तहां रहे लुभाय॥
वदिन मध्य वतीस विराजे। सलनापत सुता सुत छवि छाजे॥
कीरि नासका परिम सुहावे। दध सुति तहा परिम छवि पावे॥
सुदिरि कंठ वैजंती माला। उरि विशाल सोहे नदि लाला॥
शिव सुत वाहन तस भषयोऊ। तस प्रय कठ विराजे सोऊ॥
भुजा अनूप भूषण संग सोहे। अति विचत्र सुरि नरि मुनि मोहे॥
पीतांविर कटि कंकनी राजे। नाभि पराग कोटि छवि छाजे॥
रजिनी मंडिन रिपजु कहावे। तिहि वाहन रिप कटि सो पावे॥
छुद्र घटिका वजत अनूपा। कौलापति सी पीठि सरूपा॥
कचनि दड जघ छवि वरिणी। नूपरि वजे सुभगि मनि हरिनी॥
चरिन पराग छवि कही नि जाइ। सुर मुनि जनि तहा रहे लुभाइ॥

---

१. कछ<कच=बाल।

वेश्वे नब अति सोभा पावे मानि कांति छवि दप नजावे ।
एमूर्त जो रिदे बसावे । माधोदास सो जनिम नि आवे ॥

काशीदास उवाच—

दो०—अयसो रूप निहार के पायो मुनी आनंदि ।
हाथ जोड ठाढा भयो निर्ष प्रभू सुष कंद ॥

सोरठा—पुनि पुनि पुलकत गात पकज लोचनि जलि ढरे ।
रिदे न प्रेम समात करिन लगो उस्तत मुनी ॥

मुनवाच—चौपाई—

नमो नमस्ते एक ओंकारा । अचल रूप सभ पेल तुमारा ॥
नमो नमस्ते प्रभ जगिदीसा । निर्गुण रूप सकल जगिईसा ॥
सकल भविन मे जोत तुमारी । सदा निकाम प्रभू गिरधारी ॥
एक पलक सभ सृष्टि उपाई । नमो नमस्ते सभ सुषिदाई ॥
तीनि गुननि ते रहत न्यारा । चौथे पदि मैं बास तुमारा ॥
असुर दहन सुरि सत सहाई । नमो नमस्ते केशव राई ॥
षीरि शयन कविला के स्वामी । नमो नमस्ते प्रभ निहकामी ॥
तुमरे गुनि प्रभ अपर अपारा । शिवि विध शेश गिरा नही पारा ॥
उस्तति करो कहा लग तोरी । नाथ अनाथ नाथ मति थोरी ॥
वरि दीजे प्रभ होय क्रपाला । मांगे मुनी सुनो नंदि लाला ॥
तुम सा सुतु पावो जग माही । रहों सदा प्रभ पकजि छाही ॥
एही कामना मनि मह आई । विषे बासना फुरे ना काई ॥
वचिन वृथा नही होय तुमारा । रहे बंस धरि जगिति हमारा ॥
जो प्रभ हमारे कुल मह आवे । तुम चरनंनमैं प्रीति लगावैं ॥
जवि उपजो तवि तुमरो सरिनी । करों सदा संतन की करिनी ॥
तुम मूर्त वस रिदे मझारा । टरे न कविहूं सुनि करितारा ॥
ए कह मुनी नियायो सीसा । हो प्रसन्न बोले जगिदीसा ॥

क्रष्ण उवाच—

सोरठा—बोले प्रभ मुसकाय धंन्न मुनीसरि वचन तुम ।
मम कह वृथा न जाइ जो तोह मांग्यी सुफल सभ ॥

चौपाइ

बोले तवे प्रभू भगिवाना। धंन्न मुनीसरि सत सुजाना।।
वरि मांगो तुम परिम अनूपा। तुम सुत होय धरो जगिरूपा।।
अवि चलीए मुनि धाम हमारे। सुफल करो सभ काज तुमारे।।
सुरि विवान प्रभ लीए वुलाई। बैठे तहां मुनीसरि जाई।।
गए मुनीसरि हरि के धाम। पाए सुप मुनि अति विश्राम।।
प्रभ की क्रपा जा परि होई। ताको विघन न व्यापे कोई।।

काशीदास उवाच—

दो०—वसे मुनी वैकुठ मै भोगे भोग अपारि।
माधोदास मुनि लीजिए कह्यो सकल विस्तारि।।

चौपाई—

वसे मुनीसरि प्रभ के धाम। भोगे भोग सदा निहकाम।।
दश सहस्र मुन वरि सुप पाए। हर्ष शोक मनि कबू न आए।।
एक दिवस मुन के मन आई। बरि मागो जो कहो कनाई।।
प्रभ की प्रीति विना जग माही। राजि भोगि पेले सुप माही।।
अतिरजामी प्रभु भगिवाना। हिरदे की जाने घनिश्यामा।।
वोले विहस प्रभू गिरिधारी। धंन्न मुनीसरि प्रीत तुमारी।।
जगित माहि सुष परिम अनूपा। असन वसन त्रीया अनिक सरूपा
तिने निर्ष मुनी नाह लुभाई। हमसे प्रीत रही उरिछाई।।
ताते मुनि तुम अति वडिभागी। प्रीति राष माया निज त्यागी।।
हमरी प्रीति जोऊ उरि धारे। रहे मुनोसरि सगि हमारे।।
तुमरे मनि की सभ मैं जानी। कहो तोह सुनिए मुनि ज्ञानी।।
चाहो वरि मांग्या मुन राई। भूरि लोक मैं पैठो जाई।।
बचिनी वर्था नही होइ हमारा। ऊहा करो सभ काज तुमारा।।

दो०—जाहु मुनी अवि मही पर होय सिधि सभ बाति।
तिसी वस मय प्रगिटीयों जहा तुमारो ताति।।

चौपाई—

कविन ताति हय नाथ हमारा। कहीए प्रभू सकिल विस्तारा।।
सुनो संत मै तोह सुनावो। ताति माति सभ वंस वतावों।।

जवि तुम तपि करिने बनि आए। पिता तुमारे पाछे धाए ॥
षोजे गृह वनि सभ स्थाना। तीर्थ षोजे विविध विधाना ॥
तुमरा षोजु कहूं नही पायो। तवि दिज गंगा तटि कों धायों ॥
गंगा जलि मथ प्रानि त्यागे। वरि माग्यो हम से वडि भागे ॥
आगे जहा जनिम मै जावो। वोही पुत्र कविलापति पावो ॥
अस कहि दिज ने प्रान त्यागे। वसे स्वर्ग मैं दिज वडि भागे ॥
तुमरे हेत दीए दिज प्राना। तांके बंश जाह सुरि ज्ञाना ॥
उसके सुति होइ धरो औतारा। नामि मल्लिरिष पिता तुमारा ॥
प्रगिटो जाइ तिसी के द्वारे। हम होवें मुनि तात तुमारे ॥
रामानदि मोह नाम पछानो। चारो सुति चारो फल मानों ॥
वैकुठ माहि प्रभ कथा सुनाई। माधोदास मै तोहि वताई ॥

काशीदास उवाच—

दो०—इस विध आए मही परि सुनो अनुज चितु लाइ।
धरि औतारि कार्य कीए सो सभ कहो सुनाई ॥

चौपाई—

इस विध आए जगित कृपाला। सुनो कथा अवि परम रसाला ॥
आज्ञा भई प्रभू की जवै। आए नाथ मही परि तवै ॥
दिन्न पूर्ण जवि होइ वताए। नाथ मात के गर्भ समाए ॥
जनिम लीयो तवि जगत मझारा। सो अवि कहो सकल विस्तारा ॥
सवतु पंद्रा सै पचीसा। कहो कथा सभ प्रभ पगि धरि सीसा ॥
पुष्प नक्षत्र न्रिस्पति वारा। अर्ध रैन प्रभ भए औतारा ॥
बीसी विष्ण कृष्ण पष्य जानो। दश अरि तीनि थिति पहिचानों ॥
माघ मास सुदिरि सुषिदाई। अति पुनीति छवि कही नि जाई ॥
अति अनंदि की रैन पछांनो। भई प्रभात पुनीतम मानो ॥
मल्लिराय दिज लीयो वुलाई। उपिमा तांकी कही नि जाई ॥
सास्त्र वेद प्रश्न पहिचाने। सामुद्रीक विध वतिकरि जाने ॥
वेद बचन मैं पूरा जानों। जोतकराय तह नामु पछानों ॥
कर्म वान सुंदिर गुण जाता। विद्या वान परिम विख्याता ॥
लग्न समा सभ तात वतायो। जनिमपत्रका दिज लिष ल्यायों

पूजा करी अनिक परिकारा। बहुरि कह्यो कहूं बाल व्यवहारा
सगल पत्रका वाच सुनाई। गृह नक्षत्र सभ दीयो बताई॥
सभ गुनि दिज ने भाष सुनाई। हेमराज नाम ठहिराई॥
वहुरि कहो दिज सकल सुनाई। होइ हरि भक्त वृथा नहि जाई॥

दिजउवाच—
इस का वस सदा सुषि पावे। ब्रह्म वाक्य वृथा नही जावे॥
इसकी कुल प्रभ धरे औतारा। वधे वस सदा अपर अपारा॥
वेद वचिन सभ भाष सुनावो। वृथा होइ तवि दिज न कहावो॥
अस कहि ब्राह्मण भविन सिधाए। वदि जनि जाचक तवि आए॥
यथा शक्त तिन दीना दाना। सादरि सहति कीओ सत माना॥
सभ वृतांतु दियो तोह सुनाइ। माधोदास सुनो चितु लाइ॥

कांशीदास उवाच
दो०—देव पितरि गुरि महि सुर पूजे विवध विधान।
मगत जानी लागै सभै तोपै करि सति मान॥

चौपाई—
चक्ष पुत्र जिह भविन वसावे। तांकी सुता कों सुत जो कहावे॥
प्रथम करी ताही की पूजा। मारति सुति पित पूज्यो दूजा॥
सलतापति की सुता कहा वे। तिह पति पूज परिम सुध पावे॥
निश दिन रचे जगित विवहारा। तिसको पूजो सहत प्रवारा॥
सुर पति गृह नक्षत्र सभ पूजे। औरि सभी जो वेदन सूझे॥
करी वस की रीत अपारा। होइ परसपरि मगल चारा॥
निसि दिन होवे परिम अनदा। आए चेत परिम सुष कदा॥
नाम कर्ण के विप्र जवाए। व्यजनि अनिक दिजै भुगिताए॥
करि पूजा दिज पगि सिर न्याए। सांईदास तव नाम धराए॥
पांच वरिष के भए कृपाला। आए लागी परिम रिसाला॥
देख्यो वालक परिम अनूपा। वुद्धवान और महा सरूपा॥
तातमात कुल वंस पुछाए। भविन पूछ लागी गृह आए॥
समा जानि कीनी कुडिमाई। लागि लीए मिरजादि सुहाई॥

विदया मांग गए निज द्वारे। मंगल भए दोऊ दिस भारे॥
वरस जुगल जवि और बीताए। लागि विवाह देन तवि आए॥
कहि सभ वाति गए निज धामा। होन लगे दो दिस सुभ कामा॥
कुलि मिरजादा सकल कमाई। मदा वस जो होती आई॥
चारि भाति की बनी वराता। बालक वृद्ध जुवान गौराता॥
भूषन वसन सभी को छाजे। वाहन पिजमतदार विराजे॥
दूलो की छवि कही न जाई। पीति वसनि निन रहे सुहाई॥
सीस सेहरा मुकटि विराजे। लुदरि पडग कथ गरि राजे॥
भाल तिलक द्रग गुनज सुहावे। झुमका श्रविन परिम छवि पावे॥
मुपि तमोल दसा रचा सोहे। सुदरि हाम सभी मन मोहे॥
भूषन सकल अग मै राजे। सुदिर पनी आर्चन विराजै॥
और सकल छवि कही न जाई। माधो दास गुनों निनु लाई॥

काशीदास उवाच—

दो०—चली वरात अपार तव होइ परिम आनंदि।
लयो समाज संभाल सभ अनुज सुप कंदि॥

चौपाई—

चलो जनेत वजावत वाजे। दीसें सभी सकल विध राजै॥
तिसी नगर मै पहुचे जाई। जहा वसे समिधी सुषदाई॥
आगे लोक लेन तव आए। सुदरि धाम तवी वैठाए॥
निश मिलनी मही अपर अपारा। अग्र षेल कीयो सभ व्यवहारा॥
केसरि छिडक सभी नहिलाए। जस के चीर भटि पहिराए॥
वैसाप इकीया साहा जानो। अर्ध रैंन कीयो कंन्या दानो॥
निसवासर षटि ऊहा विताए। तोषे लागी सभि मिरिजाद॥
गृह को काजि करै मनि भावै। विद्या पडे परिम सुष पावे॥
वरिस द्वादस के जवि भए। सुरिभी के संगि वनि मै गए॥
धेन चराइ प्रभू गृह ल्यावै। मनि भीतरि केशवि को ध्यावै॥
आज्ञा करो प्रभू गिरधारी। मुकंद दास को कह्यो मुरारी॥
अवि तुम भूर्लोक को जावो। साईदास कों करि सिष आवो॥

आज्ञा लइ तव मही सिधाए। प्रभ नगिरीं तास गुरि चली आए ॥
तरिवर तले विलोक्यो आई। पोढयो हुतो चीर घरि पाई ॥

रांईदास उवाच —

दो०—चर्न लगाइ उठाययों जपत उठयों प्रभ नाम।
निर्ष्यो रूपु जु सत कों कीन प्रभू प्रणाम ॥

चौपाई—

मुकंदिदास तवि कीजो उचारा। दूध पिआवो बाल कुमारा ॥
वैठो प्रभ इसी अस्थाना। जावो नगरी कृपा निधाना ॥
काहे नगरी बाल सिधावो। दुहाइ दूध लै आवो।
एक सुरभि तवि दैई बताइ। इसको दुहो दूध ले आव ॥
दुही लीयो षीर अपारा। आनि चर्न पर करी जुहारा ॥
लीयो दुध तवि निकटि वैठायों। श्रविनन मैं हरि नाम सुनाउयो ॥
पीआ दूध जेता मनि आवा। अधक वधा साईदास पीआवा ॥
जो कोऊ कहे दूध किह काज। लीने भेट करी मिरजाद ॥
लीयो प्रसादि गुरों को जवे। दिष्टयो जनिम पाछला तवै ॥
मुकदिदास को सीस निवायो। उठो जव तवि दिष्ट नि आयो ॥
मनि मह लागि रही एह आसा। कैहे प्रभू कै ताके दासा ॥
सतिगुरि सोई भया अवि भोरा। नाम न पूछो मैं मत भोरा ॥
हरि गुरि को जो नाम नि गावे। यम पुर माहो परिम दुष पावै ॥
ताते कहा जपो मै नामा। दे प्रभ लैहो विश्रामा ॥
भई गिरा तवि गगनि मंभारा। मुकंद दास हय नाम हमारा ॥
औरि कामना मनो गवावो। प्रभ पंकज मैं प्रीत लगावो ॥
गिरा सुनी तवि भय आनंदा। जपन लगे तवि नाम मुकदा ॥
लागी वेरि प्रभ वहु विरमाए। गौयां षेत घने तवि पाए ॥
गौऊनिकारि नगिर ले आयो। षेती का पति पाछे धायो।
आनि नगिर तिन करी पुकारा। साईदास सभ षेत उजारा ॥
और साहदी कहे अनेक। षेत माह नाही षिलचा एक।
मलराय साईदास वुलायो। कहो षेत किह हेत गवायों।
नृपति गाति के होयो भैय भारी। गाई तात नही एको डारी।

सति कहे जो सहज सुभाइ। करे काज प्रभ पल मै जाइ।
साईदास जबि मुष ते भाष्यो। षेत जमाइ तबै प्रभ राष्यो।
षेतीं के पति पँच बुलाए। मल्लराय देषन सगि आए।
गए षेत के जबी हजूरि। चहू दिसा मइ हय भरिपूरि।
षेती का पति विसमय भयों। दीसे पात न एको गयो।
माधोदास सुनो चितु लाई। सकली कथा कहो प्रगिटाई।

गशीदास उवाच—

सोरठा—करी तबै धिधकार षेती पति कों मिल सभै।
पाछे करी वचारि धन्न मल्लराय तात तुम॥

चौपाई—

सकल पंच ने कीउो विचारा। धन्न मल्लराय तात तुमारा।
पेती पाई मभो निहारी। अवि नही छीनी एको डारी।
ऐसी कही भविन चल आए। आपो अपिने काज लुभाए।
पिता मल्लराइ करी विचारा। बनि नही भेजो वाल कुमारा।
ताते भविन रहन प्रभ लागे। सेवे प्रभु पंकज अनुरागे।
सत सेव पटि कर्म कमावे। हरि मूर्त लइ रिदे बसावे।
करे गुहज तप अपर अपारा। प्रगिटि करे सभ जगत व्यवहारा।
वीस वर्स के जवि प्रभ भए। अमरदास तवि गृह प्रगटए।
शादी करी सभी कुलि रीति। भई वाल की सभ मनि प्रीती।
पच बर्ष जवि बीते जानो। नरिहरिदास जनिम पहिचानो।
चतुर्वर्ष जवि बीते भाई। विष्णदास प्रगिटे जगि आई।
तीन वर्ष जविही चलि गए। सुषानद तवि जगि प्रगटए।
चारो सुति प्रगिटे अवितारा। तुछ बुद्ध कहा करो वीचारा।
ताते सभ को करो प्रणामा। हरि गुन गाइ लहो विश्रामा।
द्वादिस वर्ष भए सुति चारो। क्षौरी कर्म कीयो पित भारो।
चारि बंस के लागी आए। निर्षे बाल परिम सुप पाए।
नविता देह गए निज गेहू। भयो वस मै परिम सनेहू।
भिन्न भिन्न सभ तवी विवाहे। होवै वस मै परम उछाहे।
भए विवाह बडन जो आषे। उपमा औरि कहा कोऊ भाषे।

सोरठा—कीए जगित व्यवहार और मृजादा वस की।
सुकृति धर्म विचार पाए परिम आनदि तवि॥

चौपाई—
होय वस मय मगल चारा। रामा नंद भए औतारा॥
हाड मास नौमी तिथ जानो। बृहस्पति बारि पुनर्वस मानो॥
बचन हेत आए महाराज। सकल सत के पूर्ण काज॥
सुंदिरि देह सभी विध राजे। सिरि परि कच घुंघरारे छाजे॥
भाल तिलक सुभ रचयो विधाता। द्रगि दिशाल सुदिर सभ गाता॥
दिज बुलाइ सभ अगि दिपाए। लछनि देष दिजै मुष पाए॥
सकल लोक कों दिजह सुनाओ। धरि औतारा ईस जगि आयो॥
कविन काज आयो जगि माही। ए हम मर्म मय जानयो नाही॥
द्वादिस वर्ष रहे तुम द्वारे। वहुरो वाल वैकुठि सिधारे॥
एह मम वचन वृथा नही जांनो। ईस सरूप वाल पहिचानो॥
सुनि साईदास परिम सुष पावैं। गुहजि बाति किस हूं नि बतावे॥
करि है मनि ही मै प्रणामा। निश दिन, करे प्रभू को ध्याना॥
करि मज्जनि लै वसनि पहिरावै। भूषनि सकल प्रेम सो लावैं॥
व्यजन अनिक करावे पाना। प्रीति करै बहू विवध विधाना॥
वर्स अष्ट के भए क्रपाला। क्षौर कर्म कीयो तिह काला॥
करि इसनानि सभा वैठायों। भूषनि वसनि दास लै आयों॥
पीति पागि प्रभ सीस विराजै। तुरिरा कलिगी कनक विराजै॥
कुडिल कानि केसरी जोडा। कनिक जनेऊ केसरि षौडा॥
पीति उपरना कंध विराजे। भूषनि हेम अग मैं छाजे॥
भाल तिलक केसरि का सोहे। तामै तंदल सभै मनि मोहे॥
मुष तंबोल सुदरि सभ अगा। अति अनूप वालक जो सगा॥
कचन ककन करि मै राजै। हेम जडित नगि हाथ विराजै॥
रसना सोहे अव्रृत बानी। माधोदास सुनए मुरि ज्ञानी॥

अडल—सुंदरि अगि अनूप परिम छव पाविहै।
मुपि पराग छवि निर्षत मैन लजावि है॥

मगिल परिम अनूप सषी सभ गाविही
सुंदिर रूप निहारि परिम सुष पावही ।।

चौपाई—

माधोदास सुनो चितु लाई। आगे औरि कथा जो आई।
एक समे बैठे सुष धामा। सांईदास जपते प्रभ नामा।
रामानदि तहा चलि आए। करि दडवत कछु बचन सुनाए।
सो मै कही तोह प्रगिटाई। सुनो तात तुम रिदा लगाई।
रामानदि तवि बचनि उचारे। सुप्रस्थान इकत निहारे।
आज्ञा देहु तात हरिषाई। वसो धाम निज आइस पाई।
द्वादश वर्स रहयों तुम द्वारे। कीए बचन सभ सत तुमारे।
कलप माह चवी औतारा। कहे वेद मै आदि बीचारा।
तिन राम कृष्ण मुप जानो। जो ईहा रहे सो ऊहा पछानो।
भक्त सनेह अधक औतारा। भक्त समान नही कछु प्यारा।
जहा सत को कोऊ सिधारे। धरि औतारि जावो तिह द्वारे।
कार्य होइ सत्त को तहां। सेवों दास होई के तहा।
भक्त जना की टहल कमावो। जनि के कार्ज देरि न लावो।

सोरठा—तजो वेद मिरजाद बीरिसैन अरि नागसुप।
कत्रिला के सुष आद त्याग सत कार्ज करों ।।

चौपाई—

अवि तुम वचिन सनेह औतारा। औरि नही जगि काज हमारा।
अवि मै होवो अतिर ध्याना। आज्ञा देहु सत निहकामा।
साईदास तबि बचिन उचारे। नाथ चलै हम सग तुमारे।
प्रभको त्याग रहे जग माही। ताका ध्रगु जीविन जगि माही।
सुनो सति अवि बचन हमारे। विध के वचिन टारे नही टारे।
कही औध विध ईीहा वितावो। वहुरो मोह मै आइ समावो।
मोहि तोह माहि भिन्न कछु नाही। ईसर सत एक श्रुति गाही।
ताति तोष करि वाहरि आए। वस माह किनू भेद न पाए।
आई चौदश परिम पुनीता। मज्जन चलैन सकल सगि मीता।
पितर सरोवरि करे स्नाना। प्रीति सहत सिमरे भगिवाना।

करि मज्जन सभ वाहरि आए। रामानंदि तवि वचन सुनाए॥
सुनो सति अवि कहो विचारा। जोउ तिस समै भउों व्यविहारा॥
वचिन कहे सभ को प्रगिटाई। सुनो सभी अवि रिदा लगाई॥
तिसी सरोवरि जो नरि न्हावे। मुक्त लेह हरि चर्न बसावे॥
मनि चित लाइ करे इस्नाना। यो मागे सो पावे दाना॥
स्रुति हित धारि वचनि क्रम सेवे। नात काल तव सुभ लेवे॥
केशवि सिमर करे सनाना। लहे सकल सुदर फल नाना॥

लहे मुक्त ज्ञानि वैराग जोग है सिद्ध विद्या पाविही।
धनि अर्थ काम जु सूर सेवे विजै करि गृह आविही॥
करि सभी जगि के काज पूर्ण दुष दारिद गवाविही।
हे सुषी सदा क्रपाल केशवि हरि सिमर टोमडी नाविहै॥

सोरठा—ठाढे नीरि मझारि कहे वचनि प्रगिटाइ नाविहै।
सभ कों करी जुहारि अंतिरि ध्यान भए तवै॥

चौपाई—

कहे वचन सभंही सुन लए। अतरि ध्यानि तवै प्रभु भए॥
भए सोच तवि अपर अपारा। पोज्यो सभै फुनि नीरि मझारा॥
थके विलोक कहू नही पाए। चक्रति भए नगिर चलि आए॥
भेऊ विजोग नही भाषों। मंगल सकल प्रेम सो आषों॥
सांईदास तवि सभ समझाए। आदि कथा सभ भाष सुनाए॥
इसकों वाल नही पहिचानो। पूर्ण व्रह्म सभी मनि जानो॥
सांईदास तवि सभै सुनाई। माधोदास मै तोहि वताई॥

कवित्त—

नात कही सुनी बाति सभै टरि सोक गयो सभ ही सुष पायों॥
आति सनेह विसारि दीए प्रभ कों पहिचानि रिदा ठहराउो॥
जगित विहारि कीए सुभ ही सभ मगल मोदि अनंदि बधायों॥
जानि महात्म टोभडीका सभ ही मिल के तहा सीस निवायों॥

शीदास उवाच—

भक्त करे साईदास अपारा । कह्यों नि जाइ सकल विस्तारा ॥
जोग प्रेम दया की करिणी । मम बुध तुछ जाइ नही वरिणी ॥
निसवासरि प्रभ पकजि ध्याना । हरि सिमरनि विन वाति नि आना
सुति दारा का हित विसरायों । निज मनि लइ प्रभ पकज लायो ॥
छोडि दीए सभ जगि ववहारा । रहे प्रभू को नाम अधारा ॥
आपा परा दोऊ विसराने । जीवि ब्रह्म एको पहचाने ॥
कछुक वर्स जवि गए बिताई । ग्रौरि प्रसग उठो तवि भाई ॥
अमिरिदास पोढो निज ग्रेहा । सुपनि है निहारी सिर बनि देहा ॥
भई पुनीति प्रभाति सुहाई । माति पिता को भाष सुनाई ॥
सुनि माईदास गही तवि मौना । कह्यो वहुरि भ्रम गिने को ना ॥
अमरिदास तवि कही वहोरा । ससानाथ मिटावो मोरा ॥
तुम सर्वज्ञ सकिल जगि ईसा । मोहि निहारियो धरि बिन सीसा ॥
सुनो तात मै तोह सुनावो । सुफनि वाति फल आष बतावो ॥

सांईदास उवाच—

सुफने मैं जो तीर्थ नावै । लहे कष्ट वडि संकटि पावे ॥
भैसा फील वराह निहारे । सर्प डसे इद्र वज्र विदारे ॥
सो नरि जाइ वेगि यम धामा । रहे जगिल नही सुष विश्रामा ॥
माया सुफने मै कोऊ पावे । गृह की संपत्त वेग नसावे ॥
सुफने मै परि नगिर विलको । मिले सभी जेई न विलोके ॥
अविध भोगि जाई तिन द्वारे । काल वली जाइ तिसे सघारे ॥
सुफने मै जिस शत्रु गहे । कष्टि पाइ कै यम पुरि लहै ॥
दुरजनि हते के सिघ गरासे । लहे त्रास होवे उपहासे ॥
दक्षरण कुडि बधू लै धावै । वर्स एक मै यम पुरि जावै ॥
नीरि वुडे के व्रहे पडे । सकटि पडे कैसे नरि मरे ॥
उडे जोऊ नरि निश के माही । तजे देस ससा कछु नाही ॥
बोले निश जो वादि विवादा । आवे कष्ट महा अपराधा ॥
नीच वस्तु जो सुफने षावे । ताकी सपति वेग नसावे ॥
नृपत षाइके लोभ निश करै । तांका तेज निमक मै टरै ॥

मृत्क वस्त निस मांगे कोऊ। अवि गुण वडा जाणीए सोऊ॥
इनि सुफनिन मै जो कोऊ आवे। जपे प्रभू कों दानि कमावे॥
तुमरा सुपन सुनावो पाछे। अवि सुनि सुपन कहे सुति हाछे॥
ईसर को जो सुपन अराधे। ताके सपत निश दिन वाधे॥
सुपन माह गुरि जस दर्लावे। करे अनद सदा सुष पावे॥
पूजे संत विप करे दाना। लहे सुष वहु विवध विधान॥
हेम दान जो सुपने करे। ताके पातक सभ ही टरैं॥
देवी का निश दर्सन पावै। तांके लक्ष पलक मै आवे॥
सुपने मे जो सैनि निहारे। होह मेघ के वार द्वभारे॥
और सुपन है अनिक प्रकारा। सुभ असुभ को लेइ वीचारा॥

काशीदास उवाच—

दो०—सुपन जु आवे किस को भला वुरा पहचाना।
जगि सुपने का एही फल जपे प्रभू कों दान॥

सांईदास उवाच—

अबि भाषो सुति सुपन तुमारा। ताका फल अवि कहो वीचारा॥
सोसि भिन्न और व्याहन जाइ। मास माह यम ताको पाइ॥
ताते सिमरो श्री भगिवाना। यथा जुगित कछु करिहो दाना॥
इह ते होइ सुपन को नास। सुनो ताति सभ सुपनि प्रगास॥
असतति करी चर्न लपटाए। हरि गुनि गावित धाम सिधाए॥
भविन आइ कीनो दिज दाना। जपन लगे तवि नाम निधाना॥
हरि सिमरत हरि ही होइ गए। हरि हरि जन में भिन्न न रहे॥
एक मास प्रभ के गुन गाए। अमरदास वैकुंठि सिधाए॥
माधोदास सुनो चितु लाई। आगे और कथा जो आई॥
सांईदास बैठे स्थाना। प्रभ गुनि गावित कृपा निधाना॥

काशीदास उवाच—

नानकदास तहा चलि आए। रूप कलंदरि का तनि लाए॥
बिजनि सभ सांईदास सिधारे। प्रभ कों अर्पे प्राण अधारे॥
नानक दास तहा चल गए। बिजन सिध वहा सभ भए॥
अंतिर सुध पटि मेले गाति। जनिनानिक इहु बोले वात।

आज्ञा होइ तो आगे आओ। भूष घनी कछु भोजनि पावो।
नानिक कहे एसे भय देषी। एभीह को सति विवेकी।
सांईदास तवि मनि मुसकाए। नानक हमको देषन आए।
बोले तिसी समे सांईदासा। नानिक कहा धरी मनि आसा।
हम तुम एक नगिर के भेदी। ईहा कहावो नानक वेदी।
आयो तुम को वस सुभाव। तुम संतनि सो कीयों दुराव।
गुरि संतन [सो दगा कमावै। सोऊ साधु किहि हेत कहावे।
नानकदास कहै मुसकाई। साईदास तुम धन्न कमाई।
मे तुम कों तुरि देषन आयों। हरि का सति संपूर्ण पायो।

नानक उवाच—

सति मिले की सुनो वडिआई। मिले सति अघ कोटि मिटाई।
गंगा आद सभ तीर्थ न्हावे। कंचनि गिर ले दानि कमावे।
सहस्र बर्स वर्त तप धारे। तीर्थ मे जो अपर अपारे।
लष वर्स लेय दिज भुगतावे। गुह्य जाप के कलप कमावे।
साधे कर्म धेन लष दाना। पूजे केशवि विवध विधाना।
करे ज्ञानि श्रुति निगम वषाने। सभ ही जगित अन्यथा जाने।
एह कार्ज सभ ही करि आवे। संति मिले समफल नही पावे।
हरि गुरि सति भिन्न नही कोई। मिले जिसी कों उधरे सोई।
सो फल मोह प्राप्त भयों। साईदास तुम दर्सन लह्यों।

कांशीदास उवाच —

दो०—ऐसे वचन कहै तबै जन नानक प्रगिटाइ।
क्षत्री वंस मृजाद करि भोजनि कीयो अघाइ।।

चौपाई—

माधोदास सुनो चित लाई। कहो कथा तोह सभ सुषिदाई।
भोजन पाइ जुगिल चलि आए। वैठे मध्य सभा तवि जाए।
चर्चा करी भक्त की भारी। वहुरो उचिरे नाम मुरारी।
सुषिमनी सोदरि नानक गायों। ज्ञान रत्न सांईदास सुनाउो।
भए परस्पर दोऊ अनंदा। गुन गाए प्रभु परिमानंदा।

नानक कह्या वात सुनि लीजै । कछु जनि लहै कछु मोहि दीजै ॥
साईंदास जुग कुभ पुराए । जनि नानक के पास धराए ॥
पाछे कही वाति सभ भावि । किसी सो लेह किस सो पाव ॥
नानक नाम का दोऊ भिगाई । वहु उसमे वहु उस मैं पाई ॥
जुगल वानि परगपरि कीनी । सैली लई कढाही दीनी ॥
नानिक कँहो मोह अस कहावे । विहाह करै श्रीफल लै आवै ॥
अस कहि नानकि विदया भए । महादेव के दर्सन गए ॥
मांधोदास सुनावो तोह । यथा वृद्ध मै आवै मोहि ॥

काशीदास उवाच—

दो०—नानकि जनि विदया भए प्रभू विराजे धाम ।
सलिनापति की सुता जो ता पत जपते नाम ॥

चौपाई—

सिघ गुरु जो तास अहारा । तिस असवारि पिता जो प्यारा ॥
निशि दिन जपते ताको नामा । जांह वग्राद करे विश्रामा ॥
वाणी करी अनक परिकारा । अविर जगित के तजे विवहारा ॥
साधे प्रेम जोगि वैरागा । ज्ञान मौन होए अनुरागा ॥
सदा प्रभू को सिमरनि करे । अविरि वाति कोऊ रिदे न धरे ॥
अैसी भगित देष गिरिधारी । भैजे देव विवान मुरारी ॥
जबै विलोके प्रभ सांईंदासा । प्रभ मिलने की वाढी आसा ॥
होइ प्रसन्न सभ अस वुलाई । सभना कों एह वाति सुनाई ॥
तिना कहा जो आज्ञा होई । करै नाथ हम कार्ज सोई ॥
ल्यावो धेन करे हम दाना । औरि कीजिए सभ सम आना ॥
यद्यपि कर्ण कर्म नि रहे । तदिप कीए वेद जो कहे ॥
माधोदास सुनो चितु लाई । कथा सुनो जो आगे आइो ॥

कांशीदास उवाच—

सोरठा—कही सुतो इह बात सुनो नाथ मोहि विनती ।
कहीश्रुतो इह तात वडा चलत कछु सिष्यलैइ ॥

साईदास उवाच—

सुनो तात एह सिष हमारी। कहों सभै लीजै चितधारी॥
जो मुप कहो सो निश्चे करियो। दुक्रति त्याग सुक्रति चिति धरियो
करियों यथायुक्त कछु दाना। औरि करौ कबिलापत ध्याना॥
दुक्रति सों कबिहूं नही लागो। रविसुति त्रास धार जीया जागो
तीर्थव्रति दिजो को पोषो। गुरि अरि सन प्रीन सो तोषो॥
करि पटि कर्म इष्ट देव सेवो। ईसर को चरिणोदिक लेवो।
करि विंजन हर को भुगितावो। अर्च रास अग्नि तप तावो।
दुष्टन का सगि तियागो। सति चरन मंथ निस दिन लागो
निगम सुनो परिवधू न रावो। सुक्रति सभले रिदे वसावो।
आत्म चीन्हो सहति ज्ञाना। अविर कीए वहि सभ सति माना।
सति सिष्य सभ भाष सुनाई। जगित सिप सुनीए चितु लाई।
करै वडन की निस दिनि सेवा। औरि अराधे देवी देवा।
कार्ज करै वडिन की रीता। सुक्रति करै तजै विपरीता।
मित्र करै सभ ही विध पूरा। सुंदिरु सघी सुधरि नृप सूरा।
स्वार्थ मैं चित भग न करै। आपन ही सो निस दिन डरे।
कुलि के कर्म कबूं नही त्यागे। शत्रू के भविनि निस दिन जागे।
इतिनो को करि मित्र न जाने। साधू सिघ त्रीआ नृप अज्ञाने।
परित्रीआ सो हेतु न लावे। जूया तजो अभप न षावे।
सुरिपति तोषे कर्त कमाई। अग्नि तोष के भोजन पाई।
जो गेही एह लछन करे। तांकी सपत कबू न टरै।

कांशीदास उवाचि—

दो०—लक्ष जु होवे धर्म की तजे नही सुभ काज।
जगत माहि सुषि पाविहे रविसुति होइ मुथाज॥

छन्द—

सुनि तात वात विचार चितधर एही सिष्य कमावनि।
अघ त्याग सुक्रति धार जीमें प्रीति प्रभू लगाविनी॥
मनि वचन कर्म विचारि सुरि दिंसात प्रभू मुन वरियाईए।
जुगल हो सुष रवि सुत न त्रासे एही सिष कमाविए॥

कांशीदास उवाच—

सुनो तावि अवि सभी सुनावो। बात गुप्त तुम भाष बतावों॥
जो मन कुल हो है हरिदामा। ताकी सिध करै सभ आसा॥
इकों त्याग रहे जगि माही। यमपुर दुषीय गति सुष नाही॥
तात बात सभ ही मनि धर्नी। केशव सिमरि करौं सुभ कर्नी॥
अवि मैं चलो प्रभू के द्वारि। ताति सभी लीए चितिधारी॥
सभ ही कीओं तवो प्रनामा। प्रीति सहत ढरे लोचन सामा॥

सुतवाच—

नाथ नाह हम बुद्ध उदारी। रछ्या कीजै सदा हमारी।
वंस सदा प्रभ तुमरी सर्नी। ताकी रछ्या निसि दिनि कर्नी॥
औरि नही कोई ओटि हमारे। ईहा ऊहा प्रभ चर्न तुमारे॥
हमरी बुध नि परिम विशाला। नाथ संभाल करो प्रतपाला॥
प्रभ सहाइ विन स्वास नि आवे। नाथ कहा कोऊ कर्म कमावे॥
ताते सदा वसो हम संगा। दुष्ट जीवि प्रभ तजो न गंगा॥

सुतोवाच—

दो०—कुटल कुचाली दुष्ट जो तौ भी करों न त्याग।
नीरि न वोडे काठ को जानि आपने भाग॥

चौपाई—

बोले तवे प्रभू सांईदासा। करों सदा तुम माह निवासा॥
जैसे गंध वसे कुममाही। औरि जानि आत्म घटि ताही॥
सैल माह जो अग्न बसावै। जलि मै सभ जी दिष्ट न आवे॥
बीज माह जो तरिवरि होई। जौ जगि सति लषे नहि कोई॥
तिउ तुमरे संगि वसे मुरारी। जुगि जुगि रछ्या करे तुमारी॥
जगित तात बिर्था करि जानो। जिउ सुपने की सपत मानो॥
सुति दारा कों सुष कछु नाई। विछुकी जनिनी की न्याई॥
जगित मध्य जो मित्र विचारे। कूप सदेह के देषन हारे॥
माया को जो सुन्दिर जानो। चूडेली की प्रीत पछानो॥

दो० मित्र तुमार जो सभी सो मैं दिवो वताइ।
कहो सभी विस्तार करि तात सुनो चितु लाइ ॥

चौपाई—
मनि है मित्र जो हरि को ध्यावे। श्रवनि मित्र हरि जस सुनि आवे।
चर्न मित्र जो तीर्थ करैं। सीस मित्र प्रभ पंकज परैं।
हाथ मित्र जो धर्म कमावे। नैन मित्र हरि दर्सन पावे।
रसना मित्र जो हरि गुन जाने। देह मित्र हरि टहल पछाने।
औरि मित्र सभ वृथा तुमारे। सति गुर मित्र जो भौजल तारे।
देह मित्र जो एसो करैं। औरि मित्र जाने सो मरे।
एह तुम बचिन रिदे मैं धारो। प्रभ सो प्रीति न कविहूं टारो।
अवि तुम हमरी आज्ञा कीजैं। मही सुधार कुसा तहा दीजैं।
तांके ऊपरि तिल छिटिकावों। साल ग्राम सिला लैय आवो।
गीता श्रुति लैय धरो सिराणे। तुलसी चौरा सन्मुख आने।
कपला नाम गौऊ ले आवो। जो तिस कह्या सोई पहिनावो।
तेल घृत गुडि लून अनाजा। भूपन वसनि पीतांवरि वाजा।
गंगा जल सो कीयो स्नाना। विधवति सहत कीयों सभ दाना।
यद्यप कर्णी कछू नि रही। तद्यपि करी वेदि जो कही।
माधोदास सुनो चितु लाई। कथा कहो जो आगे आई।

कांशीदास उवाच—
दो०—करी मृजादा वस की औरि सभी सुभ काज।
पठे जो देव विबान तवि सकल वस के राज ॥

चौपाई—
होइ सविद तहा अपर अपारा। वेदि पडे तहा दिज धुनिकारा।
एक रवाबी सदा हजूरा। तांको कहयों भाग वर पूरा।
तिन मागयो मै एह वरि पावो। चिषा चढो तौ सविद सुनावों।
एही इछया रिदे हमारे। वृथा होवो वचन तुमारे।
जवि एह सुनी मोन हो गए। तीनि वारि तिस धृग धृग कहे।
क्या तुध मागयो तैं अज्ञानी। तुमरे रहे न देवा पानी।
सकल कथा मै प्रगिटि सुनाई। माधोदास सुनि चितलाई।

दो०—कीनो दानि अपार तवि सभू को कठ लगाइ।
त्याग जगत प्रभ इउ मिल सागिर बूद समाइ ॥

चौपाई—

पाछे करी वेद मिर्जादा। औरि करी सभ कुल की आदा ॥
चदनि की सभ चिषा वनाई। तहा जाय कै देह टिकाई ॥
गियो हाथ लै डूम तमूरा। कीजै बचन प्रभू अवि पूरा ॥
वजै नगारे डुले निशाना। हिए कै वाज पडै सुरि ज्ञाना ॥
होइ सविद तहा अधक अपारा। ढरै नैन जलि सुदरि धारा ॥
उठि वैठे सभ दर्सन पाए। सविद पाच तिनि डूम सुनाए ॥
ऐसी देप जगित सिरि नायो। वचित्र हेति एह चलित्र दिपायों ॥
वहुर देह तिस ठौरि समाई। प्रभ का सिमर अग्न प्रगिटाई ॥
कह्यो न जाइ समा वहिसारा। नभ मै देव करै जैकारा ॥
करि कार्ज सभ भविन सिधाए। नरिहरिदास तिलक वैठाए ॥
कीए कर्म जो श्रुति के आपे। औरि जगत के करि अभिलाषे ॥
जो एह कथा सुने चितु लाई। ताको दुभदा रहे न काई ॥
अवि एहि कथा सपूर्ण भई। जो कोऊ सुने सोऊ फल लई ॥
माधोदास मै तोहि सुनाई। ताका फल सुनि लीजै भाई ॥
पढै जोऊ हित चित लाई। ताके सति गुर सदा सहाई ॥
पढै जोऊ नरि धनि के हेत। ताके लच्छ वधे वहु नेत ॥
सुति दारा हित जो नरि ध्यावे। सो भी तातिकाल फल पावे ॥
जो कोऊ पडै हेत गिरिधारी। ताको देवे मुक्त मुरारी ॥
पढै कष्ट मै जो नर कोई। ताका कष्ट सभी षय होई ॥
जो कोऊ पढै सहज सुभाव। ताके सतिगुरि सदा सहाई ॥
गुरि जनि सोई गुरों की सर्नी। कथा पुनीत सकल तिस वरिणी ॥
माधोदास सुनी तै सारी। तांते पावो मुक्त मुरारी ॥

कवि उवाच—

सोरठा—प्रभ दीजै इह दान मांगो प्रभ करि जोडि के।
रहै रिदे तुम ध्यानि रवि सुति कष्ट निवारियो ॥

चौपाई

अभै राम की आज्ञा पाई। कथा कही तब सभ प्रगिटाई ॥
ऊक चूक सुध करि लीजै। दध मुति की रछ्या करि लीजै ॥
महादास सिमरों गुर पुरा। स्यामदास दर्गाह का सूरा ॥
संतिदास सिमरो औतारा। गुरिबपसदास भौ टार्रानिहारा ॥
सिमरो कृष्णचंद ब्रजिबासी। सदा सहाइ कटै यम फासी ॥
गुरि जनि दास तुमारी आसा। लहै सदा तुम चर्न निवासा ॥

दो०—फागनि वदी जो पंचमी वृहसपतिवार पछान।
अठारा सै उनतीसवा भयों सपूर्ण जानि ॥

दो०—वंसी राम कृपा करो सति गुर भए सहाइ।
कृष्ण चंदि की कृपा सो सकली कही वनाइ ॥

दो०—लेषक श्री सवायां राम श्री काशी लिस वाम।
जो जो पडै सो सुष लहै अति विष्णुपुर वास ॥

श्री रामायनमः श्री संकटा देव्यैनमः सुभंभूआतु लिषी टहलदास।

अथ महादास जन्म साखी

ओं स्वस्ति गणेशायनमः बावे महादास की जन्म साखी लिख्यते ।

दो०—कवलापति को ध्यान धर सिमरो गुरु पद कंज।
श्री कवला को वेनती दीजै बुद्धि प्रचण्ड ॥

चौ०

प्रथमे सिमरो श्री नंदलाला। भगत वछल प्रभ दीन दिआला ॥
सिमरो गणपत आदि बिनायक। एक दंत शुभ सुकृत दायक ॥
धूम्रकेत शशिभाल विराजे। द्वादश नाम विधाता साजे ॥
गुरु चर्ननि को सीस निवावो। जिह प्रसाद निर्मल मति पावों ॥
मानग रुद जगत्त मैं आओ। पूर्ण ब्रह्म सो वेद वताओ ॥
सम्वत् ठारा सैं अरु ठाई। वसंत पचमी तिथ सुपदाई ॥
ता दिन उपजे अधिक हुलासु। करो कथा उर भगत प्रगासु ॥
जगदम्बा जै होहि क्रिपाला। पूर्ण होइ कथा तत काला ॥

दो०—संतदास ने पूछआ स्यामदास प्रति बात।
किस विधि उपजे महादास मोहि सुनावो नाथ ॥

चौ०—

संतदास ने बात उचारी। स्यामदास को कह्यो विचारी ॥
कथा सुनावो मोही क्रिपाला। किस विधि आए जगत दिआला
महादास का जन्म सुनावो। हमरे हिदे आनंद वधावो ॥
स्यामदास तबि कह्यो विचारी। संतदास धन्न बुद्धि तुम्हारी ॥
जैसे तुम पूछी मोह बाता। पार्वती पूछो शिव नाथा ॥
कथा सुनावो शम्भु क्रिपाला। प्रथमे जग जिउ रचयो दियाला ॥
आदि कथा तब शंभु सुनाई। सो मैं कहों तोह समझाई ॥
जनम प्रभ का तिस मैं आवै। जो कोई सुने मुक्ति फल पावै ॥
संतदास अब तोह सुनावो। जन्म कथा अमृत प्रगटावो ॥

दो०—शभु सुनाई उमा को सोई सुनावो तोहि।
सुनो सिष्य चितु लाइ के जो तुमि पूछी मोहि॥

चौ०

तांते करो ब्रह्म को ध्याना। निर्गुण रूप श्री भगवाना॥
षीर शयन सभ सुप को साई। अलप अलेप अभंग गुसाई॥
कीयो न होतो जगत पसारा। रहत प्रभू नव धु धकारा॥
ब्रह्मा विष्णु रुद्र ताहि साजे। सगल स्रष्ट प्रभ माह बिराजे॥

दो०—उठी प्रभू के मन विषे कीजे जगति उपाइ।
एक पलक मै प्रथमी नवषड धरी बनाई॥

चौ०

नाम कवल ब्रह्मा उपजयो। कवल पुष्प पर इस्थित भयो॥
सीसू ते शकर अवतारा। वडो देव देव मैं भारा॥
हिर्दे ते भयो विष्णु सरूपा। सगल देव देव को भूपा॥
सेस नाग जंघन ते भयिउो। पताल लोक को षोजन गयो॥
पुन प्रभ भए वेराट अवतारा। कीयो चरित्र महा अति भारा॥
सीसूं ते सत गगन बनाए। सस अरु भान कटाक्ष सुहाए॥
सात समुद्र उदर विस्तारा। सलता जान प्रभू की नाडा॥
ठारा भार रोमावल जानो। पर्वत सगल सप पहिचानो॥
बावी कुक्ष भया गिर भारी। दाहनी कुक्ष कैलास विचारी॥
पृष्ट प्रभू कचनि गिरधारयो। सात पताल चरण विस्तारयो॥
सत्या की प्रभ भूमी वनाई। कान मैल प्रभ जल मैं पाई॥
चार वेद स्वासन के धारे। कीया वनाइ वनावनि हारे॥

दो०—मैल जु डारी जल विषे उपजे दैत अपार।
हरणाषच मधु कीटक अऊर सकल परवार॥

चौ०

जल मै करे कुतूहल भारी। सुत दारा संग सभ परवारी॥
एक समे सभ वार आए। देषी भूम वहुत सुष पाए॥
मन मै आई ऐसी वाता। एस को ले चलीए जल ताता॥

रवना तब समेटत भए। काछ मार जल मैं ले गए॥
रवन का तिन को एह भार। जइमे कवल लए नर धार॥
नाचे कूदै करै कतूला। देषी भूम अनूप अमोला॥
मन मैं सका कछु न आनै। आप समान किसू नहि जाने॥
जांके रिदे नही भगिवाना। दैत नाम ताही को जाना॥

दो०—दैत प्रभ जो ध्यान धरि मही नही दिष्टाय।
तबहि रिदे महि जानियो लीनो दैत दुराय॥

चौ०—
तब प्रभ भए बराह अवतारा। कीआ अस्थूल महा अति भारा॥
तांकी उपमा कहन न आवे। शिव व्यास सुक सारद गावे॥
सुमेर पर्वत जो पग मैं आवै। चांपि नेक भासिम हो जावे॥
अवर रूपु को कहा बषाने। जिन प्रभु कीआ सोई प्रभु जाने॥
कोप धार तब जल मैं गए। तिन असुरन का छेदत भए॥
दाहने दंत असुर सिधारे। बामे दंत मही ले धारे॥
अवनी तहा विराजत कैसै। चावति लित नरि लागलि जैसै॥
अवनी को ले बाहर आए। सग दोऊ निसाचर ल्याए॥
उमी ठवर लै मही बिछाही। तुचा दुहन की ऊपरि पाई॥
सेस नाग की कुंडलु डारयो। सुमेर पर्वत लय मध्य पधारियो॥
दुहू दिसा भूधर अति भारी। मध्या गिर कैलास विचारी॥
ऐरावनि चहु दिसा ठहिराए। ससि अरि भान दोऊ नभि छाए॥
निसबासरि सो सेवन लगे। भान मयक होय अनुरागे॥
नभ मैं सेवे करै उजिआरा। कीअ प्रभू अति खेल अपारा॥
रुद्र बिष्णु महीप धराए। ब्रह्मा को लै वेद दिपाए॥
ताते सभना आप पछाना। ब्रह्मा विष्णु रुद्र तब जाना॥

दो०—इस विध मही टिकाय कै कीनो बहुर विचार।
आज्ञा ब्रह्मे को दई रच्यो सकल ससारु॥

चौ०—
आज्ञा भई प्रभू की जैसे। रच्यो सृष्ट ब्रह्मा पुन तैसै।
एक पाट कंन्या उपजावे। दूजे ते लै बाल दिषावे।

इस विध रचा जु सृष्ट अपारा चार वरग पुन भए अवतारा
ब्राह्मण मुख ते हर उपजायो। क्षत्री भुज ही ते अपतायो ॥
जघन ते भए वैश अवतारा। चरिनन ते सूद्र वपु धारा ॥
चार वर्ण सभ ही जगु छंदो। जो जिह जान्यो सो तिह लयो ॥
ऐसे सकली सृष्ट पसारी। नाना देव रहे अवतारी ॥
तवि कपिला मुनि माह विचारी। तीन सरूप कीए जु मुरारी ॥
तीनो की जा सेवा करो। तीन रूप हो तिन को वरो ॥
तीन सरूप कीए जग माता। लक्ष्मी ब्रह्माणी रुद्राणी ॥
एस विध तीनो सेवन लागी। सहज सुभाव होय अनुरागी ॥
थरहरि सृष्ट भई अधिक अपारा। इस विध रच्यो सकल संसारा ॥
ब्रह्मा वेद पढन तब लागे। क्षत्री राज करे अनुरागे ॥
मुनवरि तपु करि है अतिभारी। वैस्य वणज की सार विचारी ॥
सूद्र हल जोते कमाना। होइ अनाज सकल सुख माना ॥
सतदास सुनु कथा सुहाटी। आगे अवर सुनो जो बाटी ॥

दो०—इस विध रचीयो उपारजा सुन मन सुख आन ।
श्री गुर चर्न प्रताप ते आगे करो बखान ॥

चौ०—

एक रही प्रभ के मन आसा। सुनो संत सो करो प्रकासा ॥
सागर की प्रभ चित विचारी। महा बली जल निध अति भारी ॥
जो कबहू इसके मन आवे। सकल सृष्ट करि ओर लुडावे ॥
ताते इसका गर्व निवारो। सकल सृष्ट तब सुखी निहारो ॥
एक करो निश्चर के नासा। संसार अति तेज प्रकाशा ॥
ताते अब ही बात बनावो। ब्रह्मा के मन भ्रम उपजावो ॥
ऐसी बात प्रभ के मन आई। ब्रह्मा वेद पढत था भाई ॥
देष वेद उपज्यो हकारा। हम सम विष्णु न रुद्र विचारा ॥
जो हम वेद पढो नही बानी। कवन भाति करि जाह पछानी ॥
बात तब कहते भए। नित काल के बसि हो गए ॥
हिर्दे की जाने जदुराय। प्रभ सपासुर लीयो बुलाय ॥
उस्तति करी प्रभू भगवाना। तोह समान नही बलिवाना ॥

एक काज हमका कर आयो। ब्रह्मा के जा वेद दुरायो।।
चल्यो तबि सपर सुख धाई। ब्रह्मा के पुर पहुतो जाई।।
ब्रह्मा के जाय वेद दुराए। देपे निगम बहुत सुप पाए।।
वेद न देखो किसी को जाय। ऐसी गई दैत मन आइ।।
तीन देस ले वेमुप भयो। ताकू महो की सर्नी गयो।।
यमुना कही तबै यह बाता। जाहु समेर पहि गये ताता।।
गयो दैत सुमेर पहि धाई। दीयो सुमेर समुद्र बताई।।
गयो समुद्र पास अज्ञानी। सकल बात तिन जाय बखानी।।
तबि सागर कह्यो आगे आपु। दीनी वुथ प्रभू विसराय।।
दैत बखूबी सागर मय जाय। ब्रह्मा उठे तबे अकुलाय।।
वेद न देपे अपने पासा। चिंता बडी गयो जु हुलासा।।
तबि सिध ऐसी बात विचारी। हरि सो गर्भ[1] कीयो हम भारी।।
ताते उनका नामु लिपायो। भली करी हरि गर्भ मिटायो।।

दो०—हर वेमुप जो होयगो ताके नही अनद।
जगत माह दुग पात्र हे यमपुर पडीए बद।।

चौ०—
ऐसा कहि ब्रह्मा उठ धाए। नाग लोक तबि पलि महि आए।।
गुरन सहित देपे यदुनाथा। आन चर्न परि नायो माथा।।
उसितिनि करी प्रभू को भारी। देप विरच हसे गिरिधारी।।
सिध सो कही तबे जदुनाथा। कीयो अनिग्रह भए सनाथा।।
तोहु समान सिध देव न कोई। भूत भविष होय न होई।।
आजु पुरी मोहु भई सनाथा। आए तुमरे चर्न विधाता।।
तब विरंच यह बान उचारी। आए अपने काज मुरारी।।
तुम सो गर्व कीयो जदुराई। तबि किन लीने वेद दुराई।।
हरि वेमुप जो होवे नाथा। तातो कवहू नही कुसलाता।।
ताते मोह अनुग्रह कीजे। अब की बार राप मोह लीजे।।
होय प्रसंन कही प्रभ बाता। संपासर हम पठ्यो विधाता।।

---

१. गर्भ<गर्व।

उसको चलो बिलाके जाय। किसी ठौर मय बैठो जाय
तीनो देव मही परि आगे। इस दन सभ मग लिआए।
पूछी मही प्रथम भगवाना। निन सुमेर को लीनो नामा।
तवि हरि कंचन गिर पहि आए। सकल अतत सुमेर सुनाए।
उस्तति करी हेमगिर भारी। नाह निसाचर रच्यो परारी।
आइआ था प्रभु हमरे थोरे। हम पठयो सागर की गोरे।
असा कवन सुनो करतारा। तुमरा बेमुख रावन हारा।
अबृत को प्रभ दूर बिडारे। बिप की गठ बदन मह डारे।

दो०—मही उधारन पग्र दलन समत सदा सहाइ।
तुमरा बेमुप राप के कबहू नही सुख पाय॥

प्रभ की निद्या सुने जो कोई। ब्रहम घात का तिस फल होई।
हरि बेमुख प्रभ जहा बसावे। नस्ट करे तिस बेर न लावे।
ऐसी कही चर्न लपटाना। सागरि ओर चले भगिवाना।
मार्ग अर्ध जबे प्रभ गए। आश्रम एक बिलोकत भए।
सुदर अधक अनू सुहावे। उपिमा ताकी कहन न आवे।
द्रुम वेली तट अधक अनूपा। फूले फूल अनूप सरूपा।
बोले कोकलि मोर चकोरा। चकवी चकवे प्रेमु न थोरा।
केहर मिरिग एक अस्थाना। वेर भाव मित कबहू न ठाना।
अनक भांति के फूल सुहाय। तिन की छब सो मंन लजाय।
तांके मध्य मुनी सर राजे। ताका तेज देष रवि लाजे।
ज्ञानवात सुदर सुर ज्ञानी। ताकी उपमा सुनो भवानी।
हरि सिमरण विन अवर न वाता। तारक मुन तिह नाम विख्याता।
तिस आश्रम प्रभ जी चल आए। देव देत सभ राग सुहाए॥
देष मुनीशर अत सुष पाइयो। जन्म जन्म का त्रास मिटाइयो।
उस्तत करन तवै मुन लागे। गद गद कंठ होइ अनुरागा।
नमो नमस्ते श्री भगवाना। आद पुर्ष परमातम रामा।
नमो नमस्ते आदि सरूपा। मही उधारण कृष्ण अनूपा।
जग उपजावन सकल विनासी। निर्गुन रूप सकल प्रगासी।
सकल सृष्ट मैं जोत तुम्हारा। सभ के निकट सभू ते न्यारा।

उस्तत करो कहा लग तोरी। नाथ अघ मोह मन थोरी ॥
ताते प्रभ दीज इक दाना। रहे रुदे मैं तुमरो ध्याना ॥
तब ऐसे बोले भगवाना। प्रेम भगति मुन दीनी पाना ॥
तुमरे रिदे करो मय वासा। मम सिमरन बिन अवर न आसा ॥
जन्म तोह निकट बसावो। जहा मुन जाहु तहा सग जावो ॥
प्रभ पंकज मुन सीस निवावो। वही ध्यान ले रिदे बसायो ॥
मुन को तोष चले गिरधारी। आए सागर निकट मुरारी ॥
सागर को बोले भगवाना। निसचर देह वेग बलवाना ॥
जलनिधि कह्यो देवो प्रभु कैसे। क्षत्री धर्म होता नहि ऐसे ॥
प्रथमे देषो युद्ध हमारा। जीतो मोह लेहु करतारा ॥
जल निधि गर्ज गयो नभ ओरा। काट्यो स्वास चक्र के जोरा ॥
तीन वार इउ गर्जत भयो। काटत स्वास सभी प्रभु गयो ॥
संतदास सुनीए चित लाई। कहे उमा को शंभू राई ॥

दो०—जितयो सागर इस विधी कीनो बहु सग्राम।
सुनो सिष्य चित लाय के कीए प्रभु जो काम ॥

चौ०—

कंचन गिर को कीयो मथाणा। कछ रूप कीना भगवाना ॥
कचन गिर के तले टिकायो। भुजा प्रभू जी ऊपर पायो ॥
वासक का ले नेत्रा कीनो। ले कर देव को दीनो ॥
दैंत गए तब मुष की ओरा। पूछ देव ने फडी बहोरा ॥
रिडकयो सागर कर विस्तारा। काढे रत्न अमोल अपारा ॥
एरापति सुर सारंग बाजा। सस विष अमृत मथ मणसाजा ॥
धनतर सहत अरंभा आई। कल्प वृक्ष तब आयो भाई ॥
तब सागर मन माह विचारी। आन चर्न की सर्न निहारी ॥
कवला दंत प्रभू के हाथा। फुन चर्नन पर नायो माथा ॥
फुन प्रभ भए मछ अवतारा। सागर मध्य गए करतारा ॥
संषासुर को छेदत भए। वेद आन ब्रह्मे को दए ॥
सषासुर को कह्यो मुरारी। तोरी धुन मोह परम पिआरी ॥
हमरी पूजा जोऊ कमावे। तुमरी धुन बिन विर्था जावे ॥

बहुर रत्न बाटे गिरधारी सुना उमा सो कथो विचारी
सम विष दोनो मोह् विपलायो । अमृत मथ्य न्र असुर पिलायो ॥
चार रत्न सुरपति को दीने । रभा नव सुर मांग [illegible] ॥
चार रत्न राखे [illegible]नाथा । [illegible] ॥
धनतर काढ जगत को दीनो । [illegible] ॥
देव दैत निज गृह को आए । [illegible] ॥

श्लोक सुने कथा जो [illegible] ।
बसे स्वर्ग मे आइ [illegible] ॥
प्रेम भगत को [illegible] ।
दुख [illegible] कथा सुमति [illegible] ॥

चौ०—

बैठे हुते शम्भू कैलासा । जगदम्बा पूछे [illegible] ॥
प्रश्न कीयो तब सुभग भवानी । [illegible] ॥
विष्ण कहो प्रभ कहा बिराजे । [illegible] ॥
सुनो रमा अब तोह् सुनावो । जहा बसे मम ठाकर [illegible] ॥
जग होम हर पूजा होई । तहा बिराजे [illegible] ॥
हर की कथा जहा बिस्तारी । जान रमा तहा बसे [illegible] ॥
कीरत्तन कर संति अनुरागी । तहा प्रभू साक्षात बिराजे ॥
हर मूर्त को धरे बिध्याना । ताके रिदे बसे भगवाना ॥
तीर्थ वर्त संत गुरु पूजा । सुकृत कर्म अवर नही दूजा ॥
ताके रिदे करे हर वासा । सुनो सती हर कथा [illegible] ॥
योगी प्रेम सहित जो ध्यावे । ताके रिदे प्रभु [illegible] पावे ॥
ब्राह्मण बैन देव हितकारी । ताके रिदे बसे गिरधारी ॥
पर उपकार को जो उठ धावे । हर जीवों के रिदे बसावे ॥
समदिष्टि जो होइ समाना । ताके रिदे बसे भगवाना ॥
रामकृष्ण को सिमरे कोई । ताके रिदे सती हर होई ॥
अवर बसे बैकुंठ गुसाई । सुनो रमा जहा बसता नाही ॥
हर की निंद्या संत न सेवा । तहा न बसे देवन को देवा ॥
काम क्रोध सुकृत नहि कोई । सुनो रमा प्रभु तहा न होई ॥

ब्राह्मण येन जल निद्या गात्र। तहा सती हर निकट न आवे ॥
जहा पाप है अधिक अपारा। तहा नही जानो करतारा ॥

दो०—सर्व दुक्रत जहा वमन है तहा वसे हर राइ।
तम सूर्य एक ठउर मे सती नही मिल जाइ ॥

चौ०—

चतुर कह्यो शिव को जग साना। सशा मोह मिटावो नाथा ॥
कैहो बसे बैकुंठ मुरारी। कथा सुनावो सोई विचारी ॥
कैसा धाम सुनावो सोई। संसा मन में रहे न कोई ॥
तैसा सती कवन विध भाषो। जेती बुद्धि मोह तेता भूषो ॥
प्रभ लील्हा कहन न आवे। नारद व्यास शारदा गावे ॥
ढाई लष जोजन विस्तारा। सात पुरी तिस पथ मंझारा ॥
ताके भिन्न भिन्न सुन नामा। सत उडगन विश्रामा ॥
सुर विरच निज धाम बषानो। ताके शिषर स्वर्ग पहिचानो ॥
चार लाष जोजन मग ठानी। पुरी पुरी एती विध जानी ॥
इतिना है तिन का विस्तारा। ताके शिषर वैकुंठ द्वारा ॥
सुनो सती सो कैसो द्वारा। जेती बुद्ध कहो विस्तारा ॥
द्रुम वेली तहा पुष्प अपारा। चले सुगध मुक्त को द्वारा ॥
कंचन को सभ कोट विराजे। मण मुक्ता द्वारन मै राजे ॥
सु दर तट अनूप सुधारा। विगसे कवल अनक परकारा ॥
कचन की सभ पाल सुहाई। ताकी सोभा कही न जाई ॥
कुंदन के सभ भवन अनूपा। लिषे चित्र का परम अनूपा ॥
मण मुकता तहा पचत अपारा। भान मयक कोट उजीआरा ॥
निर्त करै सुर वधू सुहावे। सूर्तवत राग सभ गावे ॥
देव करै सभ जैं जैं वानी। निगम करे उस्तत जु भवानी ॥
सिघासन व्राजे घनश्यामा। आद पुरुष परमात्म रामा ॥
सष चक्र गदा पद्म विराजे। कोट मुकट कोटक छव छाजे ॥
कुंडल कान प्रभू के सोहे। कोट मदन छव निर्षत मोहे ॥
बाजे वजै अनेक परकारा। पीतांवर छव वनी अपारा ॥
चवरे ढाल हर पीठ सुहावे। चवर करे अति सोभा पावे ॥

ाजवान सु दर सुर गिआन। अति अनूप हर भगत सुजान ।।
तव ते चले सुगंध अपारा। कोट मदन छव मोहन हारा ।।
ऐसे चवर ढाल सुर ज्ञानी। ताकी उपमा सुनो भवानी ।।
निसवासर प्रभ जी को सेवे। ध्यान प्रभू का रिदे समेवे ।।
पार्वती को सभु सुनाई। सतदास मै तोह वताई ।।

सो०—कही तवै इह वात पार्वती शिव नाथ को।
मोह सुनावो नाथ कवन समाज वैकु ठ में ।।

चौ०
सरवर द्रुम वेली अस्थाना। कवन पुन्य ते कीओ पिआना ।।
चवर ढाल की कहीए वात। कवन पुन्य कर आयो नाथ ।।
धन्य वुद्धि है सत तुम्हारी। सगली कहो कथा विस्तारी ।।
अठ सठ सगल सरोवर जानो। कवल सेस के फन पहिचानो ।।
क्षीर सयन मै कबहूं न पेषे। होइ विराग प्रभू को देषे ।।
द्रुम वेली सभ वृज ते आए। धरे अवतारा सग ले आए ।।
मरण मुक्ता कला पहिरावे। हेम सोई जो दिज रिदवावे ।।
राग करै गधर्व सुज्ञान। सत प्रभू के देव पहिचान ।।
अव रमा अवध सुनावो तोही। यथा वुद्धि मै आवे मोही ।।
प्रथमे कथा चक्र की जानो। तीस कला भानज की जानो ।।
प्रथमी पर जव चढयो आई। सगल श्रष्ट कर तेज लाई ।।
अवनी दग्ध होन तव लागी। निर्बी मही प्रभु अनुरागी ।।
देव दैत सभ करी पुकारा। दग्ध होत प्रभ सभ ससारा ।।
वीस कला काटी भगवाना। द्वादश राषी जगत समाना ।।
एक कला प्रभ अपनी डारी। बीस कला मानुज की भारी ।।
एक वीस का चक्र वनायो। सो प्रभ अपने हाथ रषायो ।।
ऐसा कीआ प्रभू ने काम। तांको सती सुदरसन मान ।।
अव ही कथा कथा कव की आई। सुनो रमा जो वेद वताई ।।
महा प्रलो जो जग मै आवे। सगल शृष्ट तिस माह समावे ।।
चौरासी सभ जड मै जाई। कर्मवान की नाल सुहाई ।।
दाता तिस के पुत्र समावे। सभ जरनल मै सिद्ध सुहावे ।

पेलदलन मैं अठमठ जाने। पिराग महा हर आप विराजे ॥
तेली काट तरी मैं वामा। तांके सीस सभ परगासा ॥
सगल सृष्ट तिस माह समावे। सुनो मती सो कवल कहावे ॥
सागर मथन गए नंदलाला। पाच जंन्म तहा लीयो गुपाला ॥
गदा प्रभू की ऐसी जान। सगल दैत को नास पछान ॥
पार्वती तब कही वहोरा। संसा नाथ मिटावो मोरा ॥
द्वादस कला रही अधिकाई। सो प्रभ कहो कहा ठहराई ॥
सुनो रमा रवि कला विराजे। सो तुम कहो सगल विध साजे ॥
यारा कला नरक पर डारी। एक कला सम मही उधारी ॥
सुनो रमा अब कथा सुहाई। आगे चवर ढाल की आई ॥

दो०—चवर ढाल की कथा को सुने जोऊ चित लाइ।
हर मूर्त्त तिस रिदे मै सदा रहे विरमाय ॥

चौ०—

सागर मथन गए गिरधारी। मुन जो देषयो पंथ मझारी ॥
तांसो कही हुती भगवाना। मन मुन राषो हमरा ध्याना ॥
ता दिन ते मुन ए ठहराई। हर मूर्त्त लै रिदे वसाई ॥
मन भीतर तिसको न्हउलोवे। पाछे सुंदर चीर पहरावे ॥
कीट मुकट हर को पहरावे। भूषन सगल प्रेम सो लावे ॥
पान फुल्ल सभ मन मै सेवे। अवर सुगध रिदे मै देवे ॥
अनक विजन कर प्रभ भुक्तावे। फुन हर जी को चवर झुलावे ॥
निस दिन ऐसी ही मुन करे। अवर वात न कोऊ रिद धरे ॥
एक दिवस मुन सभ कृत कीनी। फुन पाछे कर चवरी लीनी ॥
चवरी करत गए मुन प्राना। चवर ढाल कीनो भगवाना ॥
अंत समे जो मन मैं आवे। सुन गिरजा तैसो फल पावे ॥
ऐसा जहा सगल विस्तारा। सुनो रंमा वैकुंठ दुयारा ॥
सगल देवते आगे जावे। ले प्रभ जी को चवर झुलावे ॥
सुनो नाथ मन ऊहा समायो। कबहूं जगल माहि नहि आयो ॥
सुन गिरजा मुन कहू न जान। जहां जहां जाए सग भवान ॥
अष्ट अवतार भए भगवाना। सेवे सिहजा मुनी सुजाना ॥

नन भीतर हर को ठहरायो। किर्पानाथ तब नाम कराया ॥
सत्युग त्रेता द्वापर गए। अन्त समे कृष्ण जी भये ॥
धर अवतार असुर सिघारयो। सकल मही को भार उतारयो ॥
क्रीडा करी अनक परकारा। सगली कहो होए बिस्तारा ॥
पूछी तोह अवर सुर गिआना। सनदास सुन कथा सुजाना ॥
अंतरध्यान भये गिरधारी। व्यास देव तहा कथा उचारी ॥
श्री भगवान कथा सुहाई। जो कोई सुने मुक्त फल पाई ॥
व्यास देव वैकुठे गए। जो कोई सुने मुकत फल पाई ॥
तबं प्रभू इउ बोले बानी। आवो व्यास देव सुर गियानी ॥
उस्तत करी व्यास अति भारी। फुन चर्नन की सर्न तिहारी ॥
व्यासदेव तब बोले बानी। रिदा ठहरावो सारग पानी ॥
सास्त्र करे अनेक परकारा। सांत न आवे मोह सुरारी ॥
श्री भागवत मोह सुनावो। ताते व्यास परम सुप पावो ॥
व्यास देव तब कहने लागे। सुनी प्रभ जी ही अनुरागे ॥
सुदर कथा अनूप सुहाई। सुनी सकल प्रभ व्यास सुनाई ॥
ऐसी कथा कही गभोरा। देव मुनी मन रही न धीरा ॥
प्रेम सहित हो व्याकल गए। व्यास देव जग कहते भए ॥
सकल सभा को प्रेम वढायो। कही कथा व्यासे सुपु पायो ॥
उसतति करी चर्न लपटाए। आज्ञा लय निज आसन आए ॥

दो०—व्यास देव सुपु पाइ के गए अपने धाम ॥
चवर ढाल कर जोर के प्रभ को कीयो प्रनाम ॥

चौ०—

कर कृपा बोले भगिवाना। कहो रिदे की सुन सुर ज्ञाना ॥
कहा कामना तुम मनि आई। हमको कहो सकल सुनराई ॥
तुम तो निज आश्रम बैठाए। इच्छा कहा रही सुन गाए ॥
मागो एक प्रभ जी दाना। करो अनुग्रह श्री भगवाना ॥
मांगो सोइ जोइ मन आवे। जिस विधि तुमरा ससा जावे ॥
जो तुम मांगो देवो सोई। संत सप्त है सुन बर मोही ॥
तबै मुनीवर मागन लागा गदगद कठ होइ अनुरागा ॥

अत अनद सों रैं विताही। भई प्रभात पुनीत सुहाई।।
पञाबराय तव विप्र बुलायो। विद्या धरि लिख नाम सुहायो।।
जन्म सभा सभ कीयो विस्तारा। जन्म पत्र का लिखी अपारा।।
लिखी पत्रका पर्म सुहाडी। हर सेवक सहा नाम ठहराडी।।
सकल चिह्नि तिन आप सुनाडी। हो हरि भक्ति वृथा नहि जाडी।।
निसवासरि तवि चिनवनि लागे। कार्तिक मास आय अनुरागे।।
नामकर्ण के विप्र जिवाए। महाबली नबि नाम रागाए।।
पच वर्ष इउ वीते जानो। नवि यह जन्म हमारा मानो।।
पच वर्स जवि और विताए। तात मात सुरपुरी सिधाए।।
एक वर्स जव और वितायो। हम को त्याग प्रभू उठधायो।।
लहाउर मै पहूचे जाय। शाहूकार ने रक्षे लुभाय।।
दआनत राय नाम तिह जानो। दाता सूर सती पहिचानो।।
देख्यो वालक पर्म अनूपा। बुधवान अरु महा सरूपा।।
दोनो कोठी देई वताय। कहेया जाय ऊहा वणज कमाय।।
प्रथमे गये वजीरावादा। कीयो जाय सभ उन के काजा।।
ताते काज करो सभ लागे। सेवे साध होय अनुरागे।।
उठे प्रभात नदी मै नावै। प्रीत सहित दिज साथ जिवाए।।
एक वर्स प्रभ ऊहा वसाए। वहुरो सात धरे मय आए।।
सोई सर्म ऊहा कर्ण लागे। प्रेम प्रमाय होय अनुरागे।।
सिध नदी मय करै सनाना। प्रीत सहित सिमरे भगवाना।।
पहिर रैन के नित उठ जावै। सवा पहि वीते दिन लावै।।
पाच वर्स ऐसी विध करी। प्रेम सहित सिमरे नर हरी।।
एक दिवस सनान सिधाए। नित कर्म सभ जाप कमाए।।
भजन ध्यान करि कीयो प्रनामा। पीठ लगायो पंजा स्यामा।।
अति उकिलाय उठे मनि माही। व्याकुल भए सुर्त कछु नाही।।
भए सुचेत प्रभू को ध्यायो। पिसला जन्म सभी दिष्टायो।।
कृष्ण कृष्ण कय सिमरण लागे। सोए वहुत दिनन के जागे।।
दर्सनु देह कृष्ण कृपाला। करो अनुग्रह श्री नंदलाला।।
तीन वार इउ कहते भए। सिध चीर भूधर चढ गए।।
नामु जला लीआ अति गिरमारा गिरि दे वहे सिध की धारा

तिस गिर के प्रभ ऊपर गए। तीन वार इउ कहते भए॥
दर्सन देह कहयो गिरधारी। कूद परे तबि सिध मझारी॥
सात नदी तहा पर्म सुहाई। नीर अथाह कह्यो नही जाई॥
जल थल पूर रह्यो भगवाना। कठ लगाय लीए घनस्यामा॥
दर्सन कीजै मत हमारा। जैसा चाहे रिदा तुमारा॥
ईहा नही प्रभ हमरे काज। दीजे भूर लोक महाराज॥

दो०—भूधर ते मैं गिरो हा सुनो विने महाराज।
बूडो गहिरे नीर मै ईहा दर्स किह काम॥

चौ०
वचन सभालो श्री नद लाला। भूर लोक मोह कह्यो गुपाला॥
वचन वृथा नही होय तुमारा। संत सप्न करो सनारा॥
जहा तुमारे मन की आस। तिसी ठौड मम चलीए दास॥
तोह समान मोह अवरु न प्यारा। महादास नव नाम तुमारा॥
भूर लोक जो दर्सन पावो। तबि नीर ते बाहर जावो॥
आज्ञा दई प्रभू भगवाना। गए छाड गुर तिस अस्थाना॥
पजा लगे उठ्यो अकुलाय। तिसी ठौड मै वैठे जाय॥
उठ आइए तब नगरी धाय। दीनी कोठी सभी लुटाय॥
साहूकार तकि सभ सुन आए। कोठी देष पर्म दुष पाए॥
पर्जा सभा इकत्र भई। साहूकार पहि चौरी गई॥
तिस मदर मै रह्यो नए। गिलचा कोऊ दात मय देय॥
स्वामी को भीतर बैठायो। द्वारे कुलफ कपाट चढायो॥
उँसी विध करी बाहर आए। आगे पडे प्रभू दिष्टाए॥
वहुड पकड ले अंदर गए। प्रभ बाहर भीतर सम रहे॥
बाज मार तिन सफा बुलाए। षोले कुलफ तब बाहर आए॥
आप प्रभू को नायो माथा। मर्म न जान्यो तुमरो नाथा॥
पांच दिवस जब बीते जाई। साहूकार तबि पहुच्यो आई॥
कोठी देष पर्म दुषु पायो। क्रोध होय तबि वचन सुनायो॥
उँसे वचन तबि कहने लागा। जागे दुष सुष सुफने भागा।
तुम सग क्वन बुरा हम कीना ऐसा दुषु मोह कित तुम दीना

शास्त्र वेद पुराण सुनावे। परि धनि ले जो दान कमावे ॥
कोट मणों का सेरु न होई। ऐसा काज कीयो किति तोही ॥
अवर सुनो मै तोह सुनावो। अघे पाप इक और दतावो ॥
स्वामी का जो वुरा चितावे। धवल कछ अह मही कवावे ॥
करे ध्रोह स्वामी के संगा। होइ नि निर्मल नावे गंगा ॥
कित तुम हमरा दर्व गवाओ। कवन ज्ञान हिरदे मै आयो ॥
सो तुम आप सुनावो मोही। उपजी कवन लहर मन तोही ॥
तुमरा एह न था इतिबारा। ऐसे कोरे काज हमारा ॥
माया की मोह चित गवाई। तुमरी चित बसी मन आई ॥
तू जो बुद्धवान सुर गियान। ऐसा काज कीयो किन जान ॥
येह चिंता अब दूर गवावो। औरा तछ ले कोटो दावो ॥
ऐसी बात कही साहूकार। बुद्धवान अति रिदे उतार ॥

दो०—बोले तब महादास जी सुनो शाह इक बात।
दर्व लीजिए आपना और बैठावो नाथ ॥

चौ०—
बोले तबी प्रभु महादासा। तुमरी अन्न न राषोई मासा ॥
एक लाप तोह गिन दीनो। दो लप जाय पेड मै तीनो ॥
सगल साह मिल अंदर गए। दो लप दर्व देखते भए ॥
मन में उपजयो पर सनोष। ज्ञान्यो निर्मल हर को लोक ॥
उस्तति करी चर्न रज धारे। नाथ रहौ हम संग तुमारे ॥
तुम तो दीदुनी सुग पावो। ग्रह मै बैठे प्रभ को ध्यावो ॥
उस्तत करी चर्न लपटाए। तिन को तो प्रभू वन आए ॥

दो०—तुरे इहा सोइ सविधी संति दास सुन लेह।
चले जु वनि को धाइ के हिरदे अधिक सनेह ॥

चौ०—
वन में विचरे अनक परकारा। कृष्ण कृष्ण कर करह पुकारा ॥
तीन दिवस वन भीतर भए। लगी भूष होइ व्याकल गए ॥
तव ही मन में यह ठहराही। भोजन करो प्रभू दिष्टाई ॥

पीरपंड विच मेवा पावे । निज कर कौर मो भुगतावे ॥
भोजन करो एही परकारा । नहि अनाज सप्त कर आरा ॥
हिरदे की जाने करतारा । आए रूप धार बनजारा ॥
बैल नवं हर निकट उतारे । सुंदर गोडी अपर अपारे ॥
गऊ दुहाय दूध ले आए । बछडो पकड प्रभू बैठाए ॥
पीर पंड विच मेवा पायो । पकड भुजा तब प्रभू बैठायो ॥
अपने हाथ दीए गुण ग्रामा । हठ बिल कीनो तुम महाबाला ॥
अब गुर जी का आप मिटायो । दरशन करो मोह गति पायो ॥
तब प्रभ सकल समाज बुलायो । गोपी गुवार सगल बन छायो ॥
सोना मग रूप मग पाटा । सुंदर बसन पीत वर पाटा ॥
पहरे भूषन अपर अपारा । मणि मोती लगे अनक प्रकारा ॥
निर्त कर अति परम सुहावे । देव बधू छब देख लजावे ॥
आए गुवार प्रभू के कैसे । धरे मदन तन होत न ऐसे ॥
मोर मुकट सिर कृष्ण समाना । सोभा सहस परम सुर जाना ॥
बेली कुंज पुहप बन छाए । सोभा बन्हरे वृक्ष सुहाए ॥

दो०—गोपी गुयार बुलाइ के दीनी रास बनाइ ।
जोडी हलधर बीर की उपमा कही न जाइ ॥

चौ०—

चहु दिस ठाढे सगल गवार । इक इक गोपी मध पधारा ॥
कर कर सगलन गहि लीने । सुंदर सगल प्रेम रस भीने ॥
मध्य बिराजे श्री नंदलाला । मोर मुकट घुघराले बाला ॥
ताकी उपमा कही न जाई । भान पीठ तस रहो दुराई ॥
मस्तक तिलक सुंदर बिराजे । भवां कमान कोट छब छाजे ॥
कुंडल कान कपोल सुहावे । तिल करे छब मैन लजावे ॥
बदन मध्य बत्तीस बिराजे । तिन की दुत दधसुत्त छब लाजे ॥
सुंदर बदन बजती माला । पीति बसन सोहे नंद लाला ॥
स्याम सरीर नग भूषन सोहे । उडन रैन अधारी होवे ॥
रिदा बिसाल काछनी छाजे । छुद्र घटका अति छब बाजे ॥
नाभ कमल पर कच सुहाए । अमृत पीन कवल अली आए ॥

अलसी पुहप रंग छवा छाजे। कैले पात मी पीठ बिराजे ॥
प्रेम कृपाल नैन रतनारे। गुण सो भरे मीन मृग हारे ॥
सुदर बैन बजावन लागे। तीन भग सोहे अनुरागे ॥
पग मै सुदर नूपर बाजे। चर्न कवल सभ तीर्थ राजे ॥
ये मूर्त्त जो रिदे बसावे। सतदास सो जन्म न आवे ॥
कर्ण लगे तव निरत्त अपारा। वर्षे पुहप देव जैंकारा ॥
ऐसी रास रची गिरधारी। अतर अंबोर उडे अति भारी ॥
सीतल मंद सुगध सुहाई। चले समीर प्रेम सुखदाई ॥
पशु पक्षी द्रुम करे जैंकारा। देषो भगत सरूप हमारा ॥
क्रीडा करी अनक परकारी। गोरस चोरो बाल सघारी ॥
जसुधा राधे और बृज बाला। बाबा नंद बडे सभ ग्वाला ॥
इक इक गोपी ग्वार दिषावो। बैन बजाइ सत तृप्तायो ॥
टेढा फैटा दीयो क्रिपाला। कुडल एक तिलक दीयो भाला ॥
दीयो सत को बृज दिपलाई। सतदास सुन कथा सुहाई ॥

दो०—दीए भक्ति को चार फल सौ तुम कहो सुनाइ।
कुंडल फैटा तिल फुन प्रेम भगति हर राइ ॥

चौ०—

धर्म पालक का तिलक लगायो। अर्थो का फैटा पहरायो ॥
कामना का कुंडल दीयो काना। मकत फल का प्रेम पछाना ॥
बहुरे बोले श्री गिरधारी। सुनो सत जी बात हमारी ॥
जाहो सत्त गुर सीस चढायो। बहुरे धाम हमारे आवो ॥
तीर्थ बर्त्त दान मम ध्याना। सत्त गुर बिना किसी नहि काम ॥
कहो सत जहा आज्ञा होई। धारो सीस जा गुर सोई ॥
नर हर पुरी जाह निज दासा। सांईदास के बंस प्रगासा ॥
उज्जल बस सगल सुर गियान। बुधवान हर भगत सुजान ॥
कर्मवान सुदर सुर गियानी। मम निज भक्ति बंस निहकामी ॥
सांईदास तिस कुल उजआरा। जाका जान सगल परकारा ॥
ताके बस भयो अवतारी। बंसीराम है जोत हमारी ॥
ताको जाइ करो प्रणामा मए सपूर्न तुमरे कामा

ताका दरसन परम अनूप। जानो संत हमारा रूप॥
नाती साईदास का जानो। सगल वंश मोह रूप पछानो॥
अब प्रभ कथा सुनावो मोही। साईदास प्रभ कैसे होई॥
सुनो सत इस जगत मझारा। मम बिनु अौर नही कोई न्यारा॥
सगल जगत मोही को जानो। जीव जत द्रुम पसु पहिचानो॥

दो०—सुने संत चित्त लाय के सभ जग हमरा रूप।
अवर नही संसार मै दूजा कोई सरूप॥

चौ०—
सभ जग हमरा रूप पछानो। मो विन अौर नही कोई जानो॥
सर्व जगत मै कीया पछानो। कृष्ण नाम ताही ते जानो॥
सकल मही को करने हारा। ताते गोबिद नाम हमारा॥
अवनी की जो करो प्रतपाला। तिस ते जानो नामु गुपाला॥
सकल जगत के पाप दुरावो। तबि ही हर जी नामु कहावो॥
माया को हम सिरजन हारा। माधव जानो नाम हमारा॥
मधुसी नामा हम दैत सिघारयो। मधुसूदन तव नाम विचारयो॥
सर्व जगत परि रहो कृपाला। ताते जानो नाम दिअ्राला॥
मीन रूप धरि जल निध गयो। मछ नाम ताही ते भयो॥
सकल मही को वोझ उठावो। तांते कछ रूप जु कहावो॥
सुगम रूपु कीयो वलद्वारे। बावनु जानो नाम हमारे॥
मुर नामा मैं राषस मारा। तांते जानो नाम मुरारी॥
पर्सि पकिड छत्री सिघारे। पर्सराम तव नामु हमारे॥
भग्त हेत मय दो वपु धारे। नरसिंह जानो नाम हमारे॥
गोवर्धन मैं हाथ उठायो। गिरधारी तबि नामु कहायो॥
गोकल मैं जन्मु जु धारा। गोकल नाथ तव नामु हमारा॥
श्री भागवत मोह उचारा। तबि भगिवान जो नाम हमारा॥
नही आकार हमारा जानो। निराकार तबि नाम पछानो॥
सकल नरन मैं व्यापन हारा। नारायण तव नामु हमारा॥
कोऊ नही निज पुर को वासी। तांते नामु मोह अवनाशी॥
कबू न होवे काल हमारा। इस ते नाम अकाल विचारा॥

सकल जगत मै जोत पछानो। जोतीस्वरूप नाम तवि जानो ।।
सकल त्रास ते रहो न्यारा। निरभो जानो नामु हमारा ।।
देवकी के ग्रह मौ उपजायो। देवकीनंदन नामु कहायो ।।
धरि औतार असर सिघारे। असुरनिकदन नाम हमारे ।।

दो०—काली के सिर निरति करि पायो बहु बिसराम ।
महादास तब जानीए काली नाथ मोह नाम ।।

चौ०—
मथुरा मै जो कंस सिघारे। कंसनिकदन नाम हमारे ।।
रघकुल मै जो भयो अवतारा। राघो जानो नामु हमारा ।।
कोडी न वसु हमारो जानो। निर्वामी तवि नाम पछानो ।।
रघुकुल मै जो रावण मारे। तवि रघुबीर जो नाम हमारे ।।
कौशल्या को अधक प्यारा। कौशल्या नंदन ना हमारा ।।
सकल भवन मै रहता जानो। सत्त मोह तव नामु पछानो ।।
सकल जगत के करणे हारा। ताते नाम मोह कतारा ।।
भगतो के पाछे उठ धावो। भगत वछल तव नाम कहावो ।।
सकल भवन मै मोह हमारा। ताते प्रभू है नाम हमारा ।।
दीना के सग दआ कमावो। तिस विध दीनानाथ कहाओ ।।
वावा नद को परम पिआरा। नदनंदन तवि नामु हमारा ।।
सकल सृष्ट मै जानो उत्तम। इस ते हमरा नाम नरोत्तम ।।
इंदर ते गोकल जुउबारी। ताते नाम मोह गिरधारी ।।
वन भीतर मैं अत सुख पावो। वनवारी तवि नाम कहावो ।।
गोपीआ के सग क्रीडा ठानो। गोपीनाथ तव नाम पछानो ।।
सकल मही को करो प्रतपाला। वसुधानाम तवि नामु हमारा ।।
नौतन सृष्ट नेत उपजावो। जग उपजावन नामु कहावो।
सकल सृष्ट सभ पल मै नासो। सकल विनासी कहीए तासो।
रमयो सकल रिदे के माही। सभ घट बासी नामु जु ताही।
किसीठौड मै दिष्ट न आवो। सभ ते न्यारा नामु कहावो
द्रुम के संग वाध्ये महतारी। दामोदर तव नामु बिचारी
कवहू उपज न विनसन आवो ताते अच्युत नामु कहावो

नव खंड मैं जो जोत पसारा । जोतवान तव नाम हमारा ॥
कौला ते मय रहो न्यारा । कौलानाथ तव नाम हमारा ॥

दो०—कौलागन को जगत मय और न प्यारो मोहि ।
महादाग कौलापति और सुनावो तोहि ॥

चौ०—
राधा के संग प्रीत कमावो । ताते राधारवन कहावो ॥
सकल प्रण मैं बास विचारो । ताते प्रभ जी नाम विचारो ॥
सकल असुर को देउ विदारी । ताते मेरो नाम परारी ॥
बैकुंठ है मोह पिग्रारा । बैकुंठवासी है नामु हमारा ॥
काली को मै नाथ ले आयो । काली नाथ तव नाम कहायो ॥
जग निद्रा ते रहो न्यारा । गुडा केस तवि नामु हमारा ॥
इंद्रीग्रा के वस कवहू न ग्रावो । रिसीकेस तवि नामु कहावो ॥
बैठ हमाले योगु कमायो । बद्रीनाथ तवि नामु कहायो ॥
वुध दुराव धरो ग्रौतारा । वोध रूप तवि नामु हमारा ॥
सीता सहित शकर त्रिप्तायो । रामनाथ तवि नाम कहावो ॥
दुर के जाय पुरी मैं डारी । द्वारकानाथ तवि नाम विचारी ॥
जरासिंध के युध नसायो । रणछोडराय तव नाम कहायो ॥
चौरासी को मय भुक्नावो । ताते कवर कल्याण कहावो ॥
सागर रिझक सिपामुरु मारा । शेष नरायण नाम हमारा ॥
सर्व स्वर्ग मय वसना जानो । स्वर्गवासी तवि नाम पछानो ॥
ग्रलसी पुहप रग मय धारयो । नामु सावरा मोह उचारयो ॥
घन समान मोरा वपु जानो । कानैया मोह नाम विचारो ॥
एक चर्न मय पनीग्रारा डारा । तव ते बांका नाम हमारा ॥
विचरो सर्व जगत के माही । नाम विहारी जानो ताही ॥
कुंजन मैं जो क्रीडा धारी । ताते जानो कुंजविहारी ॥
सादर रूप मदन ते जानो । मदनमोहन तव नाम पछानो ॥
माया मोह जगत को पाग्रो । ताते मोहन नामु कहायो ।
जूया सगल मोह को जानो । इस ते छल मोह नाम पछानो ॥
चगराई वृज करी ग्रपारा । चवैग्रा तव नाम हमारा ॥

दो०—सकल भवन मैं रह तहो किसू न सग छुहाव ।
महादास इउ जानीए निर्मल मेरो नाम ॥

चौ०

विंद्रावन मैं बैन वजायो। वसीधरि तवि नाम कहावो ॥
गोवन के संग बैन वजावो। मुर्लीधर तवि नाम कहावो ॥
सकल जगत मोह करैं जुहारा। जगवंदन तवि नामु हमारा ॥
सकल भवन को जानो ईसा। ताते जानो नामा जगदीस ॥
विचरो जगत विविध परिकारा। सकल जगत वासी नाम हमारा ॥
सकल जगत के करहो कामा। जगत विलासी मेरो नामा ॥
मथरा मय जो राज कमायो। मथुरावासी नामु कहायो ॥
गोकल धरहो अनेक अवतारा। गोकलवासी नाम हमारा ॥
वृज को त्याग किते नही जावौ। तो वृजवासी नाम कहावौ ॥
जहा नीर तहा हम को जानो। जलनिध वासी नाम पछानो ॥
सकल जगत को करो उधारा। जगत उधारण नाम हमारा ॥
सकल वनन मैं धेन चरावो। वन माली तवि नाम धरावो ॥
विंद्रा वन षस मापन षावो। छछौना तव नाम कहावो ॥
सभति सूषम मो को जानो। ताते छौना नाम पछानो ॥
प्रथमे सगल जगत मैं धारा। सिरिजनहार तव नाम हमारा ॥
जसधा ते दुर माषन षायो। माषन चोर तवि नाम कहायो ॥
सकल घटा मैं वसता जानो। घट प्रगासी तवि नाम पछानो ॥
सकल मही के रचने हारा। गोसांईी तवि नाम हमारा ॥
सकल विश्व मय व्यापत मानो। विहग नाम तवि मोरा जानो ॥
मही उधारण असर मिघारे। तिस ते नामु वराह हमारे।
सकल मुक्त के देवन हारा। ताते नामु मुकंद हमारा।
राधा के सग मोह कमायो। राधावल्लभ नाम कहावो।
संता के सग सदा वसावो। तिस ते सत सहाय कहायो।
सकल संत की टहल कमावो। इस ते सांईदास कहावो।
महादास त्रय गुण ते न्यारा। तां तिरभंगी नामु हमारा

अडल—

इक सौ प्रभु का नाम सुने मनु लाय के।
पावै पर्म पदार्थ हर को ध्याय के॥
दुप दरद अघ संकट नर को ना लगैं।
चौरासी के दुप सुनते भगै॥

चौ०—

मनदास सुन तांह बनावो। आद अंत लौ कथा सुनावो॥
एह सभ नाम कहे गिरधारी। सगल सृष्ट निज रूप दिपारी॥
उस्तकरी चर्न लपटायो। आज्ञा लै नर हर पुर आयो॥
महा दास गुर नगरी आए। कृष्णचंद वैकुंठ सिधाए॥
सत्तगुर पुरी विलोकी आइ। उपमा तांकी कही न जाइ॥
सुंदर भवनु अनूप द्वारे। लिपै चित्रका परम सुधारे॥
बोलें कोकल मोर सुहाए। द्रुम वेली छब कही न जाए॥
फूली अनक भांत फुलवारी। काम वधू देपे छव हारी॥
सुंदर सर मैं कवल सुहावे। गूजे भवर परम सुप पावे॥
सुंदर सुभग बने दरवाजे। मानो आय विधाता साजे॥
तांके मध्य सगल परवारा। ज्ञानवान हर भक्तिह अपारा॥
ऐसी नगरी परम अनूप। वसीराम जहा कृष्ण सरूप॥
गिरदे सभा हस की छाजे। सुरन सहत जिउ शक्त विराजे॥
गावत गुन प्रभ के बहु रंगी। सभा गए महादास त्रिभंगी॥
उस्तत करी चर्न लपटाए। वसीराम ने कठ लगाए॥
आदर सहत निकट बैठायो। श्रवनन मैं हरनाम सुनायो॥
अति अनंद सो विचरण लागे। हर गुण गावत अत अनुरागे॥

दो०—इस बिध कीने काज सभ सत दास सुन लेह।
आए षोजत हम सबै पिछला जान सनेह॥

चौ०—

अब तुम सुनो हमारी बात। ढूढत फिरत हुते दिन रात॥
षोजत गए वजीराबाद निरखे प्रभू भये सम काज॥
चर्नन पर हम सीस निवायो जन्म जन्म का त्रास मिटायो

भए सिष्य तब सेवन लागे। प्रेम भगति मैं प्रभु अनुरागे ॥
बानी करी अनक परकारा। सगली कहो होइ बिसतारा ॥
आठ वर्स हर भगत कमाए। वहुरो प्रभ वैकुंठ सिधाए ॥
चौरी करन प्रभू को लागे। ससा मेट होइ अनुरागे ॥
सतदास तुम अति वडभागी। जिन गुर कथा सुनी अनुरागी ॥
सुनी कथा जो फल होई। तुम को आग सुनायो सोई ॥
तुमरे गृह होवे अवतारा। करहु सगल वंस उजीआरा ॥
दाता सती भगत सुर गियानी। प्रेम भगति जिस रिदे समानी ॥
गुरवषसदास तिस नाम पछानो। जांकी कथा सोई वहु जानो ॥
प्रेम भगति रहे कुल छाई। रिध सिधि तहा टहल कमाई ॥
तुमरा वंस सगल सुप पावे। सत्त होइ इह बृथा न जावे ॥
जिह इछा को सुने सुनावे। तातकाल सोई फल पावे ॥
गुरजन सोई जिसे गुर जान। सतदास सुन कथा सुजान।

दो०—कही कथा सतदास को स्यामदास प्रगटाई।
पढे सुने तिस जगत सुप अत मुकत फल पाई ॥
एकम फगन वदी को बीर वार पहिचान।
ठारा सै अरु ठांहीए भई सपूर्न जान ॥

इति श्रीसत्गुर देव जन्म साषी समाप्तम्।
लिषत बिजानंद गुसांई ते जयकृष्ण गुसांई बंगुले दे विच्च
लिषी सुभमस्तु सर्व जगतां शुभं भवेत ॥

मंगलं लेषकानच्च पठकानां च मंगल।
मंगलं सर्व भूतानां भूम भूपति मंगल ॥
चतुर्वेदं चतुर्यज्ञ चतुर्वर्णं स्तथेवच्चत्रियो संध्या।
त्रियो लोका वर्णानां ब्राह्मणो गुरु ॥

अथ वार अमरदास

ओ स्वस्ती श्री गणेशायनमः

राग सोरठ—वारि—

कोई हरि रूप सुकन पेनु जीते ।
जनिम अगि मनि को अाथ रगना करे ब्रह्म की जोत मिल जाइ ओते । रहाऊ
कर्म अरि भर्म की कोट काइया बनी, भयो मवामु मनु भूपु भारी ।
गाच पाचीस पकर्मो रहे, भर्म की सफा ले सभ विडारी ।
करे आवमुं कछू धर्म माने नही, सूर मनिमा सकिल और धारी ।
चारि युग भ्रम कीए, जनिम जूंनी दीए, सकल ब्रह्मंड विसु गर्भ हारी । १
क्रोधु परिधान तहा कामु कुटवाल करी, लोभ मो दी कटि करसत मेले
मोहु दरिवानि पाकिन मोरचे, दुप अरि सुप रहि निकिट चेले ।
कीयो सरदार हकारि सभ फौजका, वडो पतहांन हठहान पेले ।
लोभ को ब्रटा इथ अगि होमें धरे, भर्म अवी सकल फागु पेले ।
नोप लिप्ला धरी दुर्मत दारु भरी सुर्त अरि निर्त के पाइ गोले ।
बाद त्रिवाद ले भारी दानो धरी, आव रिजक पुदी आन फोले ।
पाप अरि पुनन की वडेरी फिरे, नर्क अरि सर्ग पहिरे संजोले ।
बाध आमीन निआरि होए, वडे रजिमानी नाह जाह तोले ।
उठियां ब्रध सूर रिम मर्म को उपिज के, चढियां रणजीत ले फौज सारी
ज्ञानि बिबेक गुभ विचारु सुभमर्म ले, देआअरि सानि निज गनि निआरी
सील संतोषु चितु पिमा धीर्ज, धर्म नेमु जतु सतु सहिज सफा सारी ।
प्रेम हारां लज गील करी जुगन कों, कोटि के नि कटि जाई विध सवारी
देग चहूं ओरि कहूं लाकी ठोर नाह, उठ्यों विचारि देसू रघलाई ।
सविद पोदिन कीआ, चितु आगे दीआ, धसे गड जाई नौबत बजाई
भयो मुकाबला, आई दोउ फोज का, उठे रण सूर लहा मारि पाई ।
इतिते कामु अरि, अरि सील इतिते, चल्यो द्रष्ट को सैहथीउन चलाई
सहिज की चाल गुरि ज्ञान की ढाल ल सुमत का फेरु लय उनि बचाई

अवगत तलवार सो मारि टुकडे कीयों, काम की लोथ इनि षेत आई।
नाद अनिहदि घुरे बाजत मारू मुरं, क्रोध परि गिमा करि कोप धाई।
होय सनमुप लरे सर कसाके परे, एक ते एक का मुरु समाईया।
कपिट कमनि अरि तीर दुर्बचन का, आन करि लोह उन उसे लाईआ।
निर्प उनिमान निवनि जमि दर्स के, देआ मुष राग उनिमाल पाइआ।
काढ सुभ बचिन का बान तनु छेदउो, क्रोध को मार धर्न लटाइआ।
षेत को जीत के आन मुजरा कीआ, सभा मैं उमे जस निलकु आइआ।
मोह बाबे की की बिध अबि बनी आइ रण सूरआ जोरु पाइआ।
निफलु है ओहु एह सरुमु है जोधा बली, डरियो उहु देपकेउ सेनाआइ
चलयों दे पीठ इह दौर के पहुचिउो लोर गह दत तृण सर्न आइआ।
मोह को बाध के आन चेरा कीआ, देआ करि आदनी टहल लाइआ
चडियो हकारु उति फौज के अति बली काज की लाज बीडा उठाइउों
त्रिगुन हथआर बेकारि कटि बांध के, पहर बपतरि पुदी लर्न धाइउो
बीर बैताल ले पात्र हथि जोगनी, नाथ भैरौ प्रबुलु रत्तु त्रिहाइउो
ब्रह्म के लोक ते सुनित नार्द मुनी किंगुरी पकर ततकाल आइउों।
रुंडि की माल कोई सुबाहन चढ़े, सुष मनाहिर्षं हो नादि बाइउो।
षविर इनि को भई कहत मसलतनई चढियो धीर्जु तेज धर्न धस के।
सत सर्न की ढाल तलबारि लै मर्म की मत्त को संग लै आन ठहके।
परी जबि मार तबि लरह हकारि सिउ, जिउ सूरि रण माह भभके
होय पुरिजे गए हार दोनो परे, प्रीत जस धरि दई एन वह के।
फोरबषत रथसी जाइ होए वसी, गिरउो हंकारु सभ लोकु अह के।
गिरे वहु सूर रण भूप बलवत के, रह गियो लोभु तिन चढति कीनी
वादबेवादि हो हर्ष अरि सोक की सकल की फौज ले साथ कीनी।
चल्यो संतोषु अरि धर्म वुध कटि कलै, दाद प्रोते वहुत साथ लीने।
जाय लशकरि पए काट शसत्र लए, सारभाजी सकल लोक दीनी।
तीर तोपै लरै सूर धर्नी भरै, भयो अंधेर रव जोत छाई।
लोथ परलोथ तरिफे पई, मीन जिउआइ रणषेत कल रुधर भीनी।
वडे दल मारि सिरदार ही रह गए, लोभ की रसत संतोष भारी।
अनाज पानी सकल स्वाद सभ हिर लीए परी अब उनो को आन भा
गए बल टूट तब हार सभ ही पए बाघ मुशका लैई सभा सारी

पकड़ि आगे धरे जाह्र कपन डरे, मिले बुध भूप को करि जुहारी।
आइ करि प्रेम कर जुगल ले नेम को, ध्यान धरि ब्रंह्म की अगन जारी
पाप अरि पल तुरा भूप [illegible], दुर्मत्त पाकिर्ले करि दगध मारी।
पकरि मनुआ लीआ बाध भृष्ट वरा कीआ, आइ पगि लाग भयो दीनहारी
ढाहनी कोट जहा डोलमी भूप की, पोल्ह पटि भेद ख गगनि फारी
कीयो मयदान गह जोत का चांदना, आद अरि अत मित द्रिष्ट आई
जनिम अरि मर्न को मूक झगड़ा पड़ो नर्क अरि स्वर्ग की छुटी धाई
हर्ष अरि शोक ते होय न्यारे रहे, मुर्न अरि निरत लै सभ ववहाई।
जनिम लै अमरदास गुरि वर्न लय, भगित अरि मुकति वग सीस पाई

इति श्री अमरदास वार संपूर्ण शुभं भूयातु॥

अथ वार कांशीदास

अथ वारि बाबे काशीदास लिष्यते ।

सत्यसरूप अवितारि धरि, उपज्यो कल मै आइ ।
सांईदास रचना रची, कौतक दीयो दिषाई ।
नरिहरि के ग्रह जन्मयों, सुदरि सती सपूत ।
टिके बैठा कांशीदासु, जिन रगु दिषाइआ ।
औरि औतारि पाछे पडे, जगि तू हे आइआ ।
जो चरिनी लागे आइ के, सौ मुक्ति पठावा ।
वरिनति कलि होणी कहो, जो वेदा भाष सुणाइआ ।
दिलीओ चलिआ जहागीरु, कशिमीरे धाइआ ।
मजिली मजिली चलिता, लाहौरे आइआ ।
हरिनि मुनारे आइ के, वहु डेरा पाइआ ।
लशिकरि सभ तियारि करि, अशिकारा सिधाइआ ।
पातिशाहु मुषो वोलआ, असबिपानि बुलाइआ ।
जिस दे अगे मिरगु जाइ, सो मारि लिआवो ।
घोडा पिछे मिर्ग दे, पातिशाहु चलावी,
अगो मिर्गु नि आइआ, मुडि बागि सम्हाली ।
बागु जि डिठा पातिशाह, अति वहु हिपाइआ ।
माली वेग बुलाइआ, तिस आप सुणाइआ ।
जी एह हिंदुआ की राषी रहे- तिस वागु लवाइआ ।
वेगि वुलाइओ तिस नू पातिशाह कहाइआ

कलिगी माला मोतिआ, तिस भेटि चाढाइआ।
बहुत रिहंमा पातिशाहु, घरि उठ सिधाइआ।
एह़ मुनीकित पातशाह दी, बेगम सुणा पाई।
पातिशाह ओहु जु कोणु फकीरु हे, जिस दी ते करी वडआई।
एह़ मसानि हे गुरु अर्जन, जिन्हा धुम्य रचाई।
एहु ढिल नि कीजे पातशाह, तिस बन्हि मंगाई।
गुसे होइआ पातिशाह, गोजि मीरि सदाइआ।
तन्ह लिआवो फकीरि नू, डेहरा ढहाई।
जिथे बाणिआ डेहरा तिथे मसीति बणाई।
होरणी किसे नि मेटीए, कलि बुध्य गवाई।
चड़िआ गोजु मीरु, बंदीकी आइआ।
कहीआ थेमे बेलदार, डेहरा जु चाइ ढाए।
जिथे कहीआ तिथे रनु पाक करलाई।
बेलदारि धरि नीा परे, जिन्हा आप गवावे।
गोजि मीरि काशीदास को, कह पठो इठि जाई।
हमे जु मिलडों आइ के, तुरिकनि मिलडों जाइ।
संगत सेवक हाथ जोड के, बेनती कही सुनाइ।
स्वामी तुर्क नि मलडों जाइके, कहा बने कछु आइ।
रे मिले बिना ना रह नाको अो ना आवे लाज।
ताते मिलए जाइ के, सुफले होवे काज।
पातिशाह नो मिलने चले। काशीदास सिधाए।
एह़ पकिर होई मुरार नू, तिस आइ वगारे।
आज्ञा करो मसुंति जी, मैं कहा पुकारे।
लशकरि सभ सफाइ करि, भन्ना जु नगारे।
आज्ञा करो महून जी, धरिती अपुठी पाई।
वरिषा गोलआदी करो, बिजली चमिकाई।
महिली अगि लगाइ के, डेरे जु ढहाई।
मै हना उतेरा रापदा, सुध आप सुणाई।
धीरा होउ मुरारि जी, गुसा नही करिए।
इतिना जोरु नि लाईए, मनि अंदिर जरीए

साडे सिरि ते करिता पुरखु है, भैइ काहे डरीए।
पति रखे गुरु साईंदास, मनि धीरि जु फडए।
असिवधा उठि दोडग्रा, गलि कन्ह सुणाई।
एह फकीरु ना छेडए, सिधु सुता भाई।
कहिश्रा किसे ना मानदा, बरिजे सु लुकाई।

पौडी—

बदी षाने षड रषो, जहागीरि फरिमाइश्रा।
तुसी संगत हो गुरुअर्जने, जिन्हा वरुध्यु उठाइश्रा।
पातशाहु कहे तुसा नाउ फकीरु किउ सदाइश्रा।
तुसी चढि इशकारे षेडदे, असा नामु जपाइश्रा।
बिन करामात नि छडसा, करामात दिषावो।
नही त गरदनि मारिसा, नही ति धर्मु गवावो।
तुसा नामु फकीरु किउ सदाइश्रा, मुषि आप सुनाइश्रा।
बिना करामात न छडसा, सौ जतुनु करावो।
पातशाह ले माला जोरिदे सुटी मैदाने।
करामाति असाडी एस विचि, आप लेहु पछाने।
हाथी घोडे पहलवान, लूटे सभ दाने।
विने नि जाइ उठाईश्रा, सकिले हैराने।
चतिर साल कहे पातशाह, एह साधु मुलू नि छेडणो जाइ।
बारि बारि बेनती कारो, समिझ देषु मनि माह।

पौडी—

राजा आषे चतिरसाल, अवेही नि करीए।
अवेहा साधु न छेडश्रो, मै करिता डरिए।
एन्हा दा रंगु भलेरा दिसदा, अरिजा सभ धरिए।
भै साहिबि दे डरिए पातशाह, किउ अनि आई मरीए।

पौडी

कला उठाई पातशाह राती सपणु नि आवे
सिहजा फडि फडि सटीए महिली अगि समावे।

वाही वधी नूरिजा, सिध रूप दिपावे।
जलि तडिफे विच मगिन्ने, फिर जलु कहूं नि पावे।
कंब्या वहुता पातिशाहु, पेरि उते ते सिरु तल होइओं।

पौडी—

नंगी पैरी पातशाहु आइआ।
नालेवेगम नूरिजा दुहा मीसु निवाइआ।
असा विच होई अवग्या, गलि पलू पाइआ।
देसु मुलुपु कुछु मंग लै, वहु जतुनु कराइआ।

पौड़ी—

जिन्हा विरुधु उठाइआ, सतनि का बुरा न पोजु।
साईदास चरिनी लगो, मुझ सिर पगु धरिए।
पूछो गुरि को सोध, असा न कछु लोडीए।
पातिशाह् किउ तुध बुलाए।
एह् देसु असा नू बहुतु है, मंगा मनि भावे।
तुसा माइआ गर्बु है, असा नामु जपाए।
पातिशाह् फकीरु नि छेडए, मतु मार गवाए।

पौड़ी—

आपे माला उठाइ के, ले फेरनि लागे।
पातशाह् फकुरु न कोई छेडए, आषा तुह् आगे।
बदी पानिओं कढ के, पैन्हाए पगे।
विच गिए दे साध, सगि ले मागे।
पातशाह् अवेही रत्तनि रपीए, कलि सुनी जगे।

पौड़ी—

पातशाह् गर्बु कीआ सो हारआ क्या राजे रानी।
माइआ देप नि भुलु तूं, साध आग विधाणी।
अजिक कलक चोहु दीनी, तजि संग लराणी।
जहागीरु हथि जोड के चरनो लपिटानी।

पौड़ी—

सुइना मोती थालु भरि, लै भेटि चढ़ाई।
असा ना कछु लोडीए, पातशाहु सकिले देहु लुटाई।
माइया देप न भुलु तू, साधु आप सुणाये।
कांशीदास ग्रह उठ चले, सांईदास सहाए।

"इति बावे कांशीदास दीवारि"

अथ धन्ना चरित्र लिष्यते

पौड़ी—

कलिरि धंना गाई चारे, ब्रहमुणु निपिस्यो आई ।
उसि नाइ धोइ पूजा विमथारी, बैठा ध्यानु लगाइ ।
नाइ धोइ वहालआ सुठाकुरु, पास धन्ना वैठा आइ ।
धंन्ना आपे मुण वोड दादा, मेनू चरिनी लाइ ।
ब्रहमुणु आपे सुण वोइ धनआ, तूं अवि की घडी निवाइ ।
चगुहु ठाकुरु तैनू देवा, वडा कोई मुटिआरु ।
सभना दा पिउ मैंरे घरि है, चलु असाडि नाल ।
ब्रहमण दे घरि धंना अइआ, दादा ठाकुरि देहु ।
उसि भाल ढूंडि पसेरी दिनी, लै धनआ ठाकुरु एहु ।
पहिला भेटि चढा जाइ मैंनू, सुफली तेरी सेउ ।
धंने गौंऊ लवेरी दिती, ठाकुरु लैंदो आइआ ।
टोभे तेजाइ लेउ अरभी, भूरा हेठ बिछाइआ ।
नाइ धोइ बहालआ सुठाकुरु, ता घरि सोभता आइआ ।
जा तू पावें ता मैं षावा, धने दिढि चितु आइआ ।
अतिर जामी जानिन हारे, गोबिद भोगु लगाइआ ।
ठाकुरि आपे सुग वोइ धनआ, मैं करा तुम्हारी सेव ।
फेरा हल्ट किआरे छडा, कंम्मु करा मैं एहु ।
गाईआ चारा कंम्य सवारा, जाणा सभे भेउ ।
तुहु मैंनूं तनु मनु धनु अर्पआ, तू निर्भै पैइ सोउ ।
कंमु हवाले हरि दे कीता, धंना घरि नू आइआ ।
अगो तिरिआ पुछनि लगी, कित भरिवासे आइआ ।
अषे किसे नाल वोल आहो, अं पेत वगु पडाइआ ।
दादै असा नाल चंगा कीआ- कामा भला रलाइआ ।

ब्रहमण दे घरि धना आइआ, दादा ठाकुरु मेरा गीआ
कम करे सभ घरि दे दादा, अमा नही कंई सारे।
घरि ते बाहुरु हरि नू सौप्या, लाह सुटे सभ भारे।
दादा ठाकुरि तेरे ओडिओ केउ, मेरे होए मुटिआरे।
ब्रहिमुणु आषे सुण वोइ धनआ, तै जाणआ हरि का भे
निहचलु डोरी तै हरि सो रषी, तैनू मिलआ निरंजन दे
मैनू दरिसु दिपाई धंनआ, मै तेरा गुरदेव।
धना आपे सुण वोइ दादा, मै तैनू दरुसु दिवांई।
ब्रहमणु नू लैवा हरि आइआ, अगे शामु चरेदा गाई।
अहु वेषु पलाही दादा, मै सभे कर्म कराई।
धने नू हरि नजिरी आवे ब्राह्मणनूं दिसे नारी मैं सभे
ब्रहमणु आपे सुण वाइ धन्नआ, तू मैनू दरिसु दिवाइ।
गुरु उधारे सिष्य बाहे, किया सिष्यु उधारे चाइ।
मै भी हा वडिभागी धन्नआ, मैंनूं एह जुडिआ आइ।
मेरा हुदा सुणु वोइ धन्नआ, तू हरि दी पैरी पाइ।
धना आषे सुणो नारइण, मेरे गुरि को दरुसुनु दीजे
जिस दे पिछे मिलआ मैनू, कथा मेरी सुण जीजै।
जे एस झूठी सेउ अरंभी तुसी किरिया करी भीजो।
धना आपे सुणौ नराइण, तू रीझु असाडी रीझे।
ठाकुरि आषे सुण वोइ धनआ, मै इसे नि दर्सना दीजै
एह झूठा परिपची ब्राह्मणु, इनि कर्म बले रे कीरे।
सारा जनुमु गवाइओं अवे, एहदा अजे मनुआ भीजे।
ठाकुरि आषे सुण वोइ धनआ, मै इसे न दरसुनु दीजै
धना आषे सुणो नाराइण, परिबलु तेरी माइआ।
जिन्हा नू तू आप अराधे, तिन्हा कौणु भुलाए राइआ
पूरिण ब्रह्म सनातनि सापी, वडा तेरा है साइआ।
भगिता दा हितकारी ठाकुरि, वेदि पुराणी गाइआ।
मेरे गुरि नू दरिसुनु देई, सरिण तुम्हारी आइआ।
ठाकुरि आषे सुण वोइ धनआ, मैयहां, कृष्ण मुरारे।
जो प्रानी मेरी सरिनी आवे. सो प्रानी मैं तारे।

भगित करे गोढी मै भावे, क्या पुरिष क्या न्यारे।
ब्रह्मण दी हमाइति डाटी, एह् विलषु गुपारे।
धंने दा हरि साथी होइआ, जो आपे सो मंन्ये।
धुक्मिणीआदीआ दिडा चबाए, अगि चुपाए गन्ने।
मिन्नी रोटी साग पकान्ने, छाह् पिआन्ने छन्ने।
मेरे गुरि नूं दरिसनु देई, मे क्रक सुणादा कंन्ने।
ठाकुरि आपे सुण बांह धनआ, मै तेरे वसि परिआ।
जिउ जिउ नचाए तिवै तिउ नचा, तू नाल मेरे है परिआ।
ठाकुरि चतिरभुजि रूपु कीता अबिनाशी,
ता ब्रहमण हरि दा दरिसनु करिआ।
ब्रह्मणि नूं हरि दर्सनु दिता, परिम मनोर्थु पाइआ। धने गुरु तराइआ
गोर्षनाथ मछिन्द्र उधारे, कट संगल दीयो ल्याइआ।
माधो बंसी सांईदास किया, मुक्त पदार्थु पाइआ।
साविलदास गुरां दी क्रपा, चलित्रु धंने दा गाइआ।

परिशिष्ट—१

गुरु परंपरा तथा गुसांई वंशपरंपरा

अथ गुर परनाली लिष्यते

प्रथमे ब्रह्म, ब्रह्म के शिष्य मूल, मूल के शिग प्रकिर्त, प्रकिर्त के शिप बिजाबग, बिजाबंग के शिप ओंकार, ओंकार के शिग महित्तत्त, महित्तत्त के शिप आदिमूल नारायण, आदिमूल नारायग के शिष महालक्ष्मी, महालक्ष्मी के शिप अक्षवासरूप, अक्षवासरूप के शिग उजासमुनि, उजासिमुनि के शिष्य जोत मुनि, जोतमुन के शिष प्रिथ्य-मुनि, प्रिथ्यमुनि के शिष प्रगटि मुनि, प्रगट मुनि के शिष गभीर मुनि गभीर मुन के शिष द्रिगमुनि, द्रिगमुन के शिप अचल मुन, अचल मुन के शिष श्रुत प्रगास, श्रुत प्रगास के शिप नार्दमुन, नार्दमुन के शिग फटिक मुन, फटिक मुन के शिप सत्त मुन, सत्तमुन के शिप वैरागमुन, वैरागमुन के शिष त्याग मुन. त्याग मुन के शिष रहित मुन, रहितमुन के शिष धीर्जमुन, धीर्जमुन के शिप सतोपमुन, संतोप मुन के शिप दया मुन, दयामुन के शिष तुलसीमुन, तुलसीमुन के शिप बृपमुन, बृपमुन के शिष चद्रमुन, चद्रमुन के शिप फीहोमुन, फीहोमुन के शिग महामुन, महामुन के शिष जाइमुन, जाइमुन के शिप पुडरीकक्ष्या, पुडीरकाक्ष्या के शिष पुष्पदेव, पुष्पदेव के शिप रामामिश्र, रामामिश्र के शिप महा-पुराण, महापुराण के शिष विद्याधर चौवे, विद्याधर चौवे के शिप उतासमुन, उतासमुन के शिष जग्यासमुन, जग्यासमुन के शिष प्राण-कुश, प्राणकुश के शिष रामानुज, रामानुज के शिष इतिरामानुजसवृत ।

रामानुज के शिष श्रुतपीपा, श्रुतपीपा के शिष श्रुतधाम, सुतधाम के शिष सुर्त वैदेही, सुर्त वैदेही के शिष मगलमुन, मगलमुन के शिष इति त्रेता सज्ञा।

मगलमुन के शिष प्रतालमुन प्रतालमुन के शिष रिष्ट मुन रिष्ट

मुन के शिप गोपमुन, गोपमुन के शिप कुलतारक, कुलतारक के शिप पद्मलोचन, पद्मलोचन के शिप पद्माचार्य। पद्माचार्य के शिप देवाचार्य, देवाचार्य के शिप गुणाचार्य, गुणाचार्य के शिप बसीधरचार्य, बसीधरचार्य के शिप कृपाचार्य, कृपाचार्य के शिप बिष्णाचार्य, बिष्णाचार्य के शिप अपोत्तमाचार्य, अपोत्तमाचार्य के शिप नरोत्तमाचार्य, नरोत्तमाचार्य के शिप गंगाधरचार्य, गंगाधरचार्य के शिप सदाचार्य, सदाचार्य के शिप रामाचार्य, रामाचार्य के शिप धीरानदि, धीरानदि के शिप देवानंदि, देवानदि के शिप शामानदि, शामानदि के शिप सुर्तानदि, सुर्तानदि के शिप अस्तवानंदि, अस्तवानंदि के शिप अच्युतानदि, अच्युतानदि के शिप पूर्णानदि, पूर्णानदि के शिप सिरीआनदि, सिरीआनंदि के शिप हरीआनदि, हरीआनदि के शिप राघवानदि, राघवानदि के रामानदि, रामानदि के शिप अनंतानदि, अनंतानदि के शिप पर्मानदि, पर्मानदि के शिप मुकन्दास, मुकन्दास के शिप साईदास।

ओं स्वस्ति श्री गणेशायनमः। नाम सरुपि बाबा साईदास जी ॥
बाबेसाईदेपुत्र ५—नरहरदासु[1], अत्रिदासु, त्रिष्णुदासु, गुपानदु, रामानदु
नरहरिदास दे ४—काशीदासु, माधोदासु, भार्थीचदु, लालचदु।
काशीदास दे ३—बिहारीदासु, मुरारी दासु, जुगजीविणी दासु।
बिहारीदासि दे ३—केवलिराम, सांवलदासु, भगोतीरामु।
सांवलदासि दी कुनधीआं २—कालीये, धम्हो।
केविलिराम दे ६—धर्मचदु, हरीरामु, महाराजु, साहबराय हकूमराय नवलराय।

हरीराम दे ४—सोभारामु, शिबरामु, गाभूरामु, लछीरामु।
सोभाराम दा १—किपारामु।
किपाराम दे ३—अभेराम, सांरधा रामु।
अभेराम दे ६—रामकर्न, हरिकर्नु, वकुठिदासु, मथरादासु, बिलासिदासु, द्वारिकादासु।
सरधाराम दे ४—जसकर्न, जयकर्नु, नंदिभदास त्रिलोकिदासु।
शिबिराम दे ५—आतिमारामु आज्ञारामु रत्तीरामु, दैआरामु भोलारा
आज्ञाराम दे ३—धजारामु, बालिरामु, मोतीरामु।

---

१ शब्द अमरदास है

रंगीराम दा २—धनरामु।

दयारामु दे २—हरिनामु, रामकिष्णु।

महाराज दे ५—हरिनरायण, नंदीरामु, दयालिदासु मनिसारामु,
भोलारामु।

हरनरायण दे २—धनिपतु, जसिपति।

धनिपति दे ३—चरणिदासु, प्रेमिदासु, शामिदास।

जसिपति दे २—ऊशिनाकु०, पुसिबधितिराय।

पुसिवमितिराय दा १—धर्मिदासु।

नंदीरामि दे ३—गुजिनिदासु, रामिदासु, गरीबिदासु।

गरीबिदासु दा १—प्रमिधरामु।

रामिदासि दे ३—रतिनदासु, गोपालिदासु, मंगिलिदासु।

रतिनदासि दा १—सुखिबासीरामु।

दयालिदास दे २—गोला, रामिनाथु।

रामिनाथु दा १—जयनंदु।

मनसारामु दा १—रामजसु।

रामजसु दे २—आसानंदु, सदानदु।

भोल्हारामु दे ४—राधेकिष्णु बालकिष्णु रामिकिष्णु।

राधेकिष्ण दा १—भगितरामु।

साहिबराय दे ४—रामि कौरु, मगिरामु, मताबिराग्रा, चौपितिरा।

रामिकौरु दे ३—भगिवानिदासु, बागु, पहलिदासु।

भगिवानिदासि दे २—प्रेमिदासु, अनंतिदासु।

बागि दे ४—सवि सुखु, सुपिलालु, रामिद्यालु, किष्णुद्यालु।

भगितरामि दे २—मस्तिरामु, सहजरामु।

मताबिराय दे २—दध्नारामु, किष्णरूपु।

किष्णरूपु दे २—शामिदासु, निधानुदास,

शामदासि दे २—रामिराख, वछाधारो।

चौपितिरा दे २—लालिदासु, रतनदासु।

रतनदासु दे २—गरीबिदासु, भवानीदासु।

हकूमितिरा दा १—सलामितिरा।

सलामितिरा दे ४ हरिदासु सतिदासु

वचिनिदासि दे २—ब्रिजा नंदु, हरिनंदु।
ब्रिजानंदि दा १—जयनंदु।
जयनंदु दा १—हरिनंदि।
हरिनंदि दा १—जयदासु।
हरिदासि दे २—सेविकिरामु, बालिकिरामु।
सेविकिरामि दा १—सदारामु ॥१॥
मुरारीदासि दे ५—नरंगिरा, दिश्रानितिरा, अनूपिरा, अटिलराय, बीठिलिरा।
दिश्रानितिरा दे ३—हरिजसिरा, किशिणकोर, अत्रितिरा।
हरिजसिरा दे ५—बकेरा, रामिकृष्णु, नरायणदासु, ठाकुरिदासु, रामिदासु।
बकेरा दे २—जयकिष्णु, हरिकिष्णु।
हरिकिष्णु दा १—सदानंदु।
रामकिष्ण दा १—धजारामु।
नरायणदास दे २—रत्नदासु, महादासु।
किष्णकौरि दे ३—बाघिमलु, दयारामु, आज्ञारामु।
बाधिमल्हि दा १—शामिदासु।
शामिदासु दे २—रामि भजु, चंदु।
दयादास दा १—सविश्रालु।
सविश्रालु दे १—रामधनु।
अत्रिरा दे २—लछीमी नरायण, सदानरायण।
लछीमी नरायण दे २—प्रभदिश्रालु, किष्णदिश्रालु।
अनूपिरा दा १—भागिमल्ह।
भागिमल्ह दे २—रामिरा, मनिसारामु।
रामिरा दा १—रामिजसु।
मनिसारामि दा १—लालदासु ॥२॥
जुगिजीविणिदासि दे ३—मिहिर चंदु, दलिपति राय, हरीचंदु।
मिहरचंदु दा १—जोधारामु।
जोधारामु दे २ ब्रिजिनाछु किष्णसहा
किष्णसहा दे २—जय भगिवान

शिविद्यालु दे २—जमुवनु, जयनंदु।
जयभगिवानु दे २—गदानंदु, त्रिजालंदु।
दलिपति रा दा १—हरसहा।
हरसहा दे ५—हकीकिति रामु, गुविंदिरा, देसिमुपी, गुरिवषुरु, भगिवंतु।
हकीकितिरा दे ४—गुरि महा, रामिदासु, जगसिघु, सदोगा।
लालिदासि दे ३—देवीसहा, सुपिंदिआसु, कासू।
कुलिजस दा १—पिडी।
पिडी दे २—ज्वालादासु, मैआदासु।
रामदासि दे ३—दस्सिनदासु, भगिवानिदासु, नरायणदासु।
दस्सिनदासि दा १—मूलिराजु।
मूलिराजु दे २—गुरुदासु मथिरादासु।
भगिवानिदासि दा १—मनिदासु।
नरायणदासि दे २—महादासु, देवीदासु।
जयसिध दा १—वागु।
वागु दे २—निवाहू, गुपालिदासु।
गुविंदिराय दे ५—दयारामु, रामिचंदु, लछिमिनिदासु, गरीबिदासु, रतनदासु।
दआराम दे २—बचुनिदासु, टहिलिदासु।
टहिलिदासु दे २—देवीदासु, बच्चिनदासि।
बच्चिनदासि दा १—रामिजसु।
लछिमिनिदासि दा १—रामरखा।
गरीबिदासि दा १—रामिनाथु।
देसिमुपी दे २—सहजरामु, नरायणदासु।
नरायणदासु दे २—रामिसिघु, किष्णिदआलु।
सहजरामि दे २—अबीरचदु, राधेकिष्णु।
गुरिवषिराय दे ३—रामिकिष्णु, जयकिष्णु, रामिनाथु।
हरीचदि दा १—हकूमितिरा।
हकूमितिरा दे २—वस्तीरामु, लधारामु।
वस्तीराम दा १

३

माधोदास दे धीइ १—पुत्रि ।
भार्थीचदि दा १—बुलाकीदासु ।
बुलाकीदासु दे २—मौवितिरा, गुलाबिरा ।
गुलाबिरा दे १—लजारामु ।
लजारामु दे २—नौनिधिरा, भवानीदासु ।
भवानीदासु दे २—देवीदासु, रामिरखा ।
नौनिधिरा दे २—गिरिधारी, ब्रिजानंदु ।
लालिचंदि दे ३—अगना, माना, बालिकदासु ।
जगिने दे १—जयगुपालु ।
जयगुपालु दा १—ब्रिद्रावनु ।
ब्रिद्रावनु दे ३—गरीबिदासु, फकीरिदासु, रत्निदासु ।
रत्निदासु दा १—अटिल्लिरामु ।
फकीरिदास दा २—बालिकृष्णु, गुरीआ ।
माने दा १—जवेहरी दासु ।
जवेहरिदासु दा १—केसोदासु ।
केसोदासु दी धीइ १—पिंवडीऐ ।।४।।
अविदासु दे २—नारिसिंघु, गोपीनाथु ।
नारिसिंघु दे २—बसंतिरा, कौलापत ।
कौलापत दा १—फिरेचंदु ।
फिरेचंदु दा १—ऊदेरामु ।
उदेरामु दे ३—धनैआ, रूपिनरायरा, किष्णिदासु ।
किष्णिदासु दा १ लालिदासु ।
लालिदासु दा १—जसकर्नु ।
रूपिनरायरा दे २—शामु, हरिदासु ।
हरिदासु दे २—गोकिलिनंदु, बिजानंदु ।
गोपीनाथु दा १—निहालिचंदु ।
निहालिचंदु दा १—रामिचंदु ।
रामिचंदु दा १—साहबिरा ।
विष्णिदासि दे ३ उग्रचंदु कल्यानिदासु भागिमलु ।
ऊग्रिचंदि दा १ चैनिसुखु

चैनिसुखु दे २—नंदिलालु, गुजिरिमलु ।
नंदिलालि दा १—हुंदेरा ।
हुंदेरा दे ३—राजिकौरु, दाशिबिसहा, धनिपतु रामिजगु ।
धनिपति दे २—नानुकु, सुपिनिधानु ।
गुजिरि मलि दे २—रामराय, रामिजी ।
रामिजी दे ३—रामिद्यालु, शविद्यालु, किष्णद्यालु ।
रामिद्यालि दे २—रामिभजु, देवीदासु ।
कल्यानिदासि दा १—ऊतिमिदासु ।
ऊतिमिदासु दा १—गंगारामु ।
गंगारामु दे ५—चेतिनिदासु, प्रीतिमदासु, जग्निनाथु, धीजिरामु, दसिवधीमलु ।
प्रीतिमदास दे २—लाधीरामु, विलाधीरामु ।
विलाधीरामु दे—देअद्यालु, रामनाथु ।
लाधीचंदि दे २—ऊशिनकरा, रामिकिष्णु ।
रामिकिष्णु दा १—सेविकिरामु ।
ऊशनकिराय दे २—हुकिमचंदु, नरायणदासु ।
जग्निनाथि दे ३—ग्यानिदासु, बाहड़ु, मिलिपीराम ।
धीजिरामि दा १—रामिकौरु ।
दसिवंधीमलि दे ३—मजिलिसिरा, बाधिमलु, चंद्रिभानु ।
चन्द्रभानु दा १—सरिधारामु ।
बाधिमलु दा १—किष्णिदासु .
मजिलिसि दा १—भागिमलि ।
भागिमलि दा १—मित्रिसैनु ।
मित्रिसैनु दा १—मगिलि सैन ।
मगिलिसैन दा १—दयारामु ।
दआराम दा १—देवीदासु ॥३॥
सुधानंद के ॥४॥ रामानदु ऊौतारि ॥५॥

संवत् १८५२ मीति असूओ विनि बारिखे १२ वीरिवारि लखे बाविआवे लिखितम रामिकनुं सुभमस्तु ११११११११

परिशिष्ट २

ओं श्री गणेशायनम:

सतगुर बाबा सांईदासायनम. । ओं अंतरराम नरन्तर राम ।
कांशी क्षेत्र अयुध्या धाम गंगा तुलसी शालगराय ।
तत्व निरजन तारक राम ।।
ओं अन्तोगुन पासना से दर वीजंम रामाय हन्नू मुष डाली रोही
मादिष्टो भजता कामदो मणी ।

खतरी—

ओं ह्रीं ह्रां शरीरं रामाय नम: नरसिंघाय नम.,
सत गुर बाबा सांईदासायनम: ।
ओं आद वैराग सनातन धर्म दंड कर्मनडल वैष्नव कर्म ।।
वैशनव कर्म रहे लव लीन तन मन सोधे होवे आधीन ।।
नष सिष्ट दाढी वजर मुंज कपीन मुंज के केस सनकादक ।।
शीषा गुरू राघवा नन्द जी कहे गुरू रामानन्द जी से उचरन्ता
इतना सनकादिक बीज मंत्र समपूरनम ।।

गोदावरी प्रक्रमा, अयुध्या धर्मशाला, चित्रकूट सुख वलास, सीता अष्ट हनुमान परीक्षत, राम देवता राम मंत्र, अचत्य गोत्र, शाषाअन्त रिगवेद, राम गायत्री निरवान. अषाडा शालग्राम, महन्त गलता गादी, छोछा मंत्र, लिंग शरीरग, बयापक चराचरं, सोहं राम नरंजन, चरनं शरनं परपद्ये ।

गुरू मंत्र—ओं अंतर राम नरंतर राम कांशी क्षेत्र अयुध्या धाम तत्व नरंजन तारक राम ।

सारस्वत ब्रह्मन कात्यानी सूत्र शाषा मादयदनी पंच प्रव्र भृगू-
मार्ग उर्ग ी प्राशर-यजुरवेद

परिशिष्ट ३

सात अखाड़े

दग्म्बर, निर्बानी, निर्मोही, पाषी, नरालमबी, बलभदरी, सन्तोखी।

सन्त बाबा सांईदास जी के अस्थान—

धर्मशाल रयासत चबा, बिशनदास जी के कल्यान दास जी। बन्न बावा जिला अमृतसर।

माधोदास, बन्सीदास, महादास—ढोडा, जिला सयालकोट।

काशीदास जी, ब्रिद्राबनदास—शेरपुर, रयासत झालरा पाटन।

कांशीदास, मरारदास—फलौर।

केवलराम, भगवानदास—तरदे, जिला अमृतसर।

श्री गोबन्दपुर—माधोदास, दुरगादास।

लाहौर—राम गलेलादास।

रनधीर, कर्मचद, मनहरदास—फतेपुर।

मुरारीदास, रूपचंद—कशमीर।

मुरारीदास गोपालदास—रामबाग।

लगाया। वह और आगे बढ़ा और उसने देखा कि उन पन्नों के साथ का हस्त-लिखित पूरा ग्रन्थ एक स्थान पर अस्तव्यस्त अवस्था में पड़ा था। उसका हृदय हर्ष से उछल पड़ा। उसने तुरन्त उन पन्नों और ग्रन्थ को कपड़े में बाँधकर सिर पर रख लिया और तेजी से अपने गंतव्य स्थान की ओर चल पड़ा। उस समय भी रह-रहकर कई ध्वस्त घरों और दीवारों की ओट से अल्लाहु अकबर के नारे, दरवाजों के तोड़े जाने की आवाजें और लूट-पाट का शोर-गुल सुनाई दे रहा था। वह वीर पुरुष उस हस्तलिखित ग्रन्थ को सिर पर उठाये शरणार्थी-शिविर में अपने साथियों के पास पहुँच गया।

वे वीर पुरुष गोसाईं हवेलीराम थे, जो आजकल जिला करनाल के [illegible] नामक गाँव मे आबाद है और यह ग्रन्थ, जो इस समय बड़ा सुन्दर रूप लिए आपके हाथ मे सुशोभित है, उसी हस्तलिखित ग्रन्थ या पाण्डुलिपि के मुद्रित सस्करण की एक प्रति है। इस ग्रन्थ की रचना लगभग ५०० वर्ष पूर्व गुरु नानक देव जी महाराज के समकालीन सन्त गोसाईं बाबा साईंदास जी महाराज ने की थी और इसका कुछ भाग उनके उत्तराधिकारियो द्वारा बाद मे रचित हुआ। परन्तु विधि का विधान अत्यन्त विचित्र है। यह ग्रन्थ देश के विभाजन से पहले जब सब सुविधाएँ उपलब्ध थी तब तो प्रकाशित न हो सका था, किसी ने इस ओर ध्यान ही न दिया था और अब ऐसे समय मे जब कोई सुविधा तथा सभावना नजर नही आ रही थी, यह ग्रन्थ शानदार रूप मे प्रकाशित होकर साहित्य जगत को अपनी प्राचीनता, उत्कृष्ट विषय वस्तु और साहित्यिक मूल्यों द्वारा अपनी ओर आकर्षित करने का अवसर प्राप्त कर रहा है।

इस ग्रन्थ के प्रकाशित किये जाने की प्रेरणा कैसे उत्पन्न हुई और इसके प्रकाशित किये जाने के सिलसिले मे किन-किन कठिनाइयो का सामना हुआ—यह एक लम्बी और दिलचस्प कहानी है। प्रथम यह कि यदि गोसाईं हवेलीराम जी प्राणो की बाजी लगाकर इस ग्रन्थ को भीषण साम्प्रदायिक मार-काट के बीच से निकालकर सुरक्षित स्थान पर न पहुँचा देते, तो इसके प्रकाशित किये जाने की प्रेरणा का या प्रकाशित किये जाने का प्रश्न ही पैदा न होता। पर बात यह हुई कि गोसाईं बाबा साईंदास की गद्दी—तोमड़ी साहिब बद्दोकी गोसाइयाँ तो पाकिस्तान के कब्जे मे आ गया और इस गद्दी के लाखो अनुयायी, शिष्य और श्रद्धालुओ को पाकिस्तान छोडकर भारत आना पड़ा। उनसे अपना वह तीर्थ-स्थान और गुरु-दीक्षा-मदिर छिन गया। मन की आध्यात्मिक शान्ति का परम्परागत साधन कोई न रहा। तब परम सन्त और गुरु बाबा साईंदास जी के इस हस्तलिखित ग्रन्थ की ओर उनके अनुयायियों और परम्परागत शिष्यो का ध्यान गया। इन्होंने अपनी गुरु-गद्दी अथवा दीक्षा मंदिर के अभाव की पूर्ति का उपाय इसी ग्रन्थ को समझा इससे इस ग्रन्थ के मुद्रण और प्रकाशन के लिये प्रेरणा पैदा हुई लेकिन यह कोई
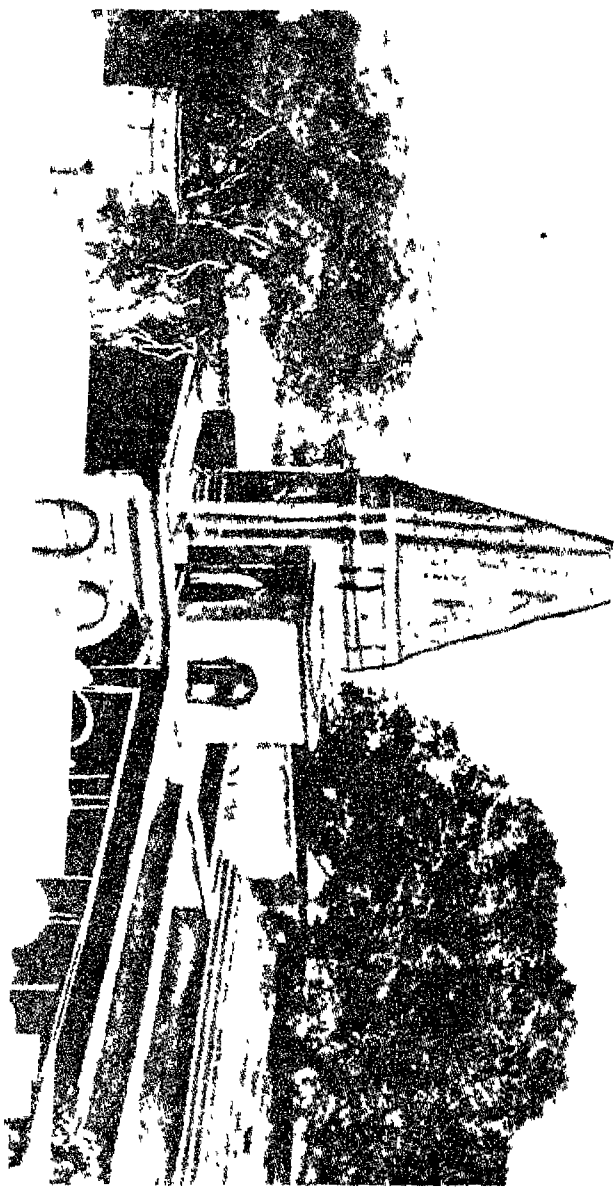
आसान काम न था। क्योंकि यह किसी एक व्यक्ति के बस का नहीं था और गोसाईं-गद्दी के लोग भी अब पाकिस्तान से उजड़ कर आये थे तथा भारत के विभिन्न स्थानों पर आबाद हो गये थे। उनको संगठित करना और उनसे ग्रन्थ के छपवाने के लिये पर्याप्त धन इकट्ठा करना एक बहुत बड़ी समस्या था। अनेक कठिनाइयों का सामना था, पर हमने प्रयत्न छोड़ा नहीं। वहां की गोसाइयों के जो लोग दिल्ली आकर आबाद हुए, वे संगठित हुए और उन्होंने इस ग्रन्थ को, जिसका मौलिक नाम 'ग्रन्थसाहिब' है, छपवाने का कार्यभार डा० बालकृष्ण जी को सौंपा। उन्होंने यथाशक्ति प्रयत्न किये परन्तु सफलता न मिली। पहली कठिनाई तो यह थी कि 'ग्रन्थसाहिब' की पाण्डुलिपि ठीक-ठीक पढ़ने में न आती थी।

एक दिन मेरी माता पुष्पाशर्मा जी डा० बालकृष्ण के यहां गईं। उनको डाक्टर साहिब से मालूम हुआ कि अन्य कठिनाइयों के अतिरिक्त 'ग्रन्थसाहिब' की पाण्डुलिपि के ठीक-ठीक न पढ़े जा सकने की कठिनाई ही इस ग्रन्थ के छपवाने के काम को शुरू ही नहीं होने देती। माता जी उस दिशा में प्रयत्न करने का आश्वासन देकर डा० बालकृष्ण जी से 'ग्रन्थ साहिब' ले आईं।

हम जिस मुहल्ले में रहते हैं, वहां पंजाब से आये हुए महानुभावीय (जयकृष्णी पंथीय) सम्प्रदाय का एक मन्दिर है। इस मंदिर में उस सम्प्रदाय के कई हस्तलिखित ग्रन्थ पड़े हैं। ये सब बातें मेरी माता को मालूम थीं, क्योंकि वे उस मंदिर में कथा-कीर्तन सुनने के लिये जाया करती थीं। उन्होंने उक्त सम्प्रदाय के एक महानुभाव श्री योगीराज शास्त्री से 'ग्रन्थसाहिब' के विषय में चर्चा की। उन्हें हस्तलिखित ग्रन्थ पढ़ने का अच्छा अभ्यास है। श्री योगीराज जी को 'ग्रन्थसाहिब' की पाण्डुलिपि दिखाई गई। वे इसे पढ़कर बहुत प्रभावित हुए। मैंने जब उनसे 'ग्रन्थसाहिब' के कुछ पद और उनकी व्याख्या सुनी, तो मैं भी अत्यन्त प्रभावित हुआ। मैंने महसूस किया कि श्री योगीराज जी ऐसे विद्वान हमारे काम में बड़े सहायक हो सकते हैं और मुझे बड़ी खुशी हुई, जब उन्होंने हर्षपूर्वक हमें सहायता देना स्वीकार कर लिया। इसके बाद 'ग्रन्थसाहिब' के छापने के विषय में डा० बालकृष्ण गोसाईं, श्री महन्त रामेश्वरीदास, बाबू गोपालदास, श्री योगीराज और मैंने मिलकर विचार-विमर्श किया। उस समय हमारे सामने दो बातें आईं। एक यह कि 'ग्रन्थ साहिब' के शुद्ध मूल पाठ के अनुरूप उसकी एक ऐसी प्रतिलिपि तैयार कराई जाय, जो ठीक-ठीक पढ़ी जा सके और छपने के लिये प्रेस में भेजने के योग्य हो। दूसरे यह कि छपवाने के लिये धन का संग्रह किया जाय।

पहली बात के लिये—हम दिल्ली विश्वविद्यालय के 'हिंदी विभाग' के रीडर श्री विजयेन्द्र स्नातक से मिले। निश्चय हुआ कि ग्रंथ साहेब की हाथ से एक प्रतिलिपि (Copy) तैय्यार करवाई जाए। इस बारे में लगभग छः महीने

के परिश्रम से एक व्यक्ति मिले। यह थे पं० साधुराम शास्त्री। पंडित साधुराम ने काम कर देने का वायदा किया। काम चालू हो गया। काम बड़ा धीरे-धीरे चल रहा था। पंडित जी का बीच में ही स्वास्थ्य खराब हो गया और काम अधूरा रह गया। हम जहां से चले थे फिर वहीं आ गये। तभी दैवयोग से श्री योगीराजजी के प्रयत्नों से हमारा यह काम जयकिशन हिंदी टाइपिस्ट ने कर देने का वायदा किया। इस प्रकार चार टाइप कापियां तय्यार हो गईं। हमारा एक काम पूरा हुआ। हम पं० साधुराम शास्त्री तथा श्री जयकिशन हिंदी टाईपिस्ट के बहुत ही आभारी हैं। विशेषकर श्री जयकिशन तो बधाई के पात्र हैं जिन्होंने इस काम को निश्चित समय के भीतर समाप्त कर दिया।

इसके बाद दूसरी बात थी 'रुपया इकट्ठा' करना। इस काम को चालू करने से पहले हमने "सिद्ध बावा साईंदास सेवक संघ" नाम से एक संस्था की स्थापना की थी और अब उसे दिल्ली राज्य सोसाइटी एक्ट के मताहत रजिस्टर्ड करवा लिया गया है। उसका हिसाब किताब बाकायदा तरीके से स्टेट बैंक में खोला गया। इन सब कामों को करने के उपरांत आर्थिक सहायता के लिये हम लोग पंजाब के पुराने परोपकारी नेता श्री डॉ० गोकुलचंद जी नारंग से मिले उन्होंने पहली मुलाकात में यह वचन दिया कि सारा रुपया तो वे नहीं लगा सकते मगर जितना रुपया इस ग्रंथ की छपाई के लिये चाहिये उसका आधा हम लोग इकट्ठा करें। सेवकसंघ की बैठक हुई जिसमें सर्वसम्मत्ति से पास हुआ कि प्रत्येक सदस्य स्वयं २५०) रु० से कम दान नहीं करेगा, साथ ही यह प्रयत्न करेगा कि इतना ही दान और लोगों से दिलवाए। हमारे इस प्रस्ताव का स्वागत हुआ और हमारे इस उद्देश्य की सफलता के लिये निम्नलिखित महानुभावों से नीचे दी गई धन राशि प्राप्त हुई।

१.	श्री गोपालदास गोसाईं	सुपुत्र श्री मायारामजी	रु०	५००.००
२.	,, चिमनलाल बत्रा	,, दीवान चंद बत्रा	,,	५००.००
३.	,, केसरराम नारंग	,, नानकचंद नारंग	,,	५००.००
४.	,, डॉ० बालकृष्ण गुसाईं	,, रामचंद गोसाईं	,,	२५०.००
५.	,, कस्तूरीलाल भास्कर	,, डा० बालकृष्ण गोसाईं	,,	२५०.००
६.	,, कैलाशनाथ भास्कर	,, ,, ,, ,,	,,	२५०.००
७.	श्रीमती फूलावन्ती	धर्मपत्नी रायसाहिब परमानंद गोसाईं	,,	२५०.००
८.	,, पुष्पावती गोसाईं	,, श्री रामनाथ गोसाईं	,,	२५०.००
९.	श्री ओंप्रकाश गोसाईं	सुपुत्र ,, ,, ,,	,,	२५०.००
१०.	,, ओंप्रकाश भास्कर	,, ,, रामरखामल गोसाईं	,,	२५०.००
११.	,, अमरसिंह बजाज	,, ,, ला० जगतराम बजाज	,,	२५०.००
१२	मनोहरलाल तलवार	,, ,, हरिचंद तलवार	,,	२५०.००
१३	बिंद्राबन गोसाईं	श्री गोसाईं		२५०.००

१४. ,, रखाराम गुलाटी ,, ,, गंगाराम गुलाटी ,, २५०.००
१५. ,, डॉ० रघुनाथ भास्कर ,, ,, शिवरामदास गोसाईं ,, २५०.००
१६. ,, धर्मवीर नंदा आदि बंधु ,, ,, रामनाथ नंदा ,, २५०.००
१७ ,, प्रकाशनाथ आदि बंधु ,, ,, ला० ठाकुरदास बहल ,, २५०.००
१८. ,, प्राणनाथ बहल आदि बंधु ,, ,, विशम्बरदयाल बहल ,, २५०.००
१९. श्रीमती पुष्पावती धर्मपत्नी ज्ञानचंद गोसाईं ,, २५०.००

इस प्रकार उपरोक्त धनराशि का संग्रह कर लेने के बाद हम डॉ० गोकुलचंद जी नारंग से मिले। उन्होंने एक सहस्र रु० १०००.०० स्वयं दिया तथा शेष कागज पर लगने वाली राशि रु० १९४०.५० मैसर्स गोकुलचंद रामसहाय मरवाह कानपुर से दिलवाई। कुल २९४०.५० की राशि डॉ० नारंगजी के प्रयत्नों का फल है। इसके अतिरिक्त शेष रुपया छोटी-छोटी रकमों के रूप में 'सेवक संघ' को प्राप्त हुआ, जिससे हम इन आर्थिक मदों को पूरा करने में समर्थ हुए। इस रूप में ग्रंथ साहिब के छपने के दोनों काम पूरा कर लेने पर हमारा ध्यान प्रचार की ओर गया।

इसी बीच "ग्रंथ साहिब" को लेकर श्री योगीराज शास्त्री ने अपने 'थीसिस' के विषय को (Subject) चुना। इसके लिये डॉ० हरभजनसिंह खालसा कालेज के हिंदी के लेक्चरर उनके गाइड बने। उनसे भी ग्रंथ साहिब के बारे में कभी-कभी बातचीत होती रही। उनसे प्राप्त होने वाले सुझावों के लिये हम उनके भी आभारी हैं। डॉ० विजयेन्द्र स्नातक से बार-बार मिलने का मौका तो नहीं आया पर उन्होंने इस काम को प्रारंभ करवाया अतः उनका भी हम आभार मानते हैं।

ग्रंथ साहिब का प्रचार—इस बीच ग्रंथ साहिब की बानियों और सतगुरु सिद्ध बाबा प्राणदास और उनके द्वारा चलाए हुए गुसाईं मत का परिचय देने के लिए श्री रामनाथ कालिया और श्री जगन्नाथ प्रभाकर के प्रयत्नों से समाचारपत्रों (मिलाप, प्रताप, तेज और 'नवभारत टाइम्स' आदि) और आकाशवाणी में समय-समय पर लेख छपे तथा वार्ताएँ प्रसारित हुईं। इन सबका सेवक संघ आभारी है।

अंत में हिंदी प्रिंटिंग प्रेस के संचालक श्री श्यामसुन्दरजी और नेशनल पब्लिशिंग हाउस के मालिक श्री कन्हैयालाल जी के सहयोग के लिये भी मैं उनका शुक्रिया अदा करता हूं।